यीशु मसीह ही सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन हैं।

[1 यूहन्ना]

विषय-सूची

परिचय

यीशु मसीह का सुसमाचार जिसका हम प्रचार करते हैं (1:1-4)

यह पत्र लिखने का उद्देश्य (1:4; 2:1; 5:13)

"परमेश्वर ज्योति है" (1:5-10)

हमें वैसे ही चलना चाहिए जैसे यीशु चले (2:1-6)

अंधकार मिट रहा है और सच्ची ज्योति पहले से ही चमक रही है (2:7-11)

बिना ठोकर खाए भाईचारे का प्रेम (2:10)

"जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है" (2:12-17)

हमें यह पहचानना चाहिए कि यह अंतिम घड़ी है (2:18-25)

हमें हमेशा प्रभु में जीना चाहिए (2:26-29)

परमेश्वर पिता के उस महान प्रेम पर विचार करें जो उन्होंने हमें दिया है (3:1-10)

एक-दूसरे से प्रेम करें (3:11-24)

हम कैसे जान सकते हैं कि हमारे पास पहले से ही अनंत जीवन है? (3:14)

हमें परखना चाहिए (4:1-6)

"प्रिय लोगों, आओ हम एक-दूसरे से प्रेम करें" (4:7-21)

"परमेश्वर से प्रेम करना" (5:1-5)

"परमेश्वर की गवाही" (5:6-12)

"तुम्हारे पास अनंत जीवन है" (5:13-21)

निष्कर्ष

परिचय

2019 की शुरुआत में—लगभग तीन साल पहले—मैंने विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के लिए "एक-दूसरे से प्रेम करो" को अपना आदर्श वाक्य (मोटो) चुना, जहाँ मैं सीनियर पादरी के तौर पर सेवा करता हूँ। इसे अमल में लाने के लिए, मैंने तीन खास लक्ष्य तय किए: कृतज्ञता, क्षमा और त्याग। इसके लिए मुख्य वचन जॉन के सुसमाचार से लिया गया था: "मेरी आज्ञा यह है: एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम करो जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है" (जॉन 15:12)। नए साल के इस आदर्श वाक्य और इन लक्ष्यों को दिल के करीब रखते हुए, मैंने गहराई से सोचा कि बाइबल की 66 किताबों में से कौन-सी किताब इस संदेश को सबसे अच्छी तरह से पेश करेगी। मैंने *1 जॉन* किताब चुनी। लगभग दो साल और नौ महीने की अवधि में—2019 की शुरुआत में *1 जॉन* 1:1–4 (उपदेश का शीर्षक: "यीशु मसीह का सुसमाचार जिसकी हम घोषणा करते हैं") से शुरू करके और रविवार, 26 दिसंबर, 2021 को *1 जॉन* 5:13–21 (उपदेश का शीर्षक: "तुम्हारे पास अनंत जीवन है") पर समाप्त करते हुए—मैंने चर्च के मंच से *1 जॉन* में बताए गए परमेश्वर के वचन का प्रचार किया। उस समय को याद करते हुए, एक दिलचस्प बात समझ में आई। *1 जॉन* पर उपदेशों की श्रृंखला शुरू होने के कुछ ही हफ़्तों बाद, मुझे पता चला कि मेरी शुरुआती सोच—कि यह किताब "एक-दूसरे से प्रेम करो" वाले आदर्श वाक्य के लिए एकदम सही है—पूरी तरह से सही नहीं थी। पहले अध्याय में ही, लेखक, प्रेरित जॉन, सिर्फ़ "नैतिक प्रेम" की नहीं, बल्कि खुद यीशु मसीह की घोषणा कर रहे थे—परमेश्वर के पुत्र, जो सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन हैं (1 जॉन 1:1–3)। एक और भी चौंकाने वाली बात मुझे उस दिन समझ आई जब मैंने *1 जॉन* पर आखिरी उपदेश दिया। अपनी चिट्ठी के आखिरी अध्याय के आखिरी वचन में भी, प्रेरित जॉन ने यीशु मसीह—परमेश्वर के पुत्र, सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन—के बारे में गवाही देना जारी रखा (1 जॉन 5:20)। आखिरकार, जॉन की पहली पत्री (First Epistle of John) एक ऐसी किताब है जो यीशु मसीह के साथ शुरू होती है और उन्हीं पर खत्म होती है; यह एक ऐसी किताब है जो प्रभु को सच्चे परमेश्वर और अनंत

जीवन के रूप में प्रकट करती है। इसी गहरी समझ के साथ मैंने इस किताब का शीर्षक चुना: *यीशु मसीह सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन हैं*। मेरी उम्मीद है कि जो कोई भी यह किताब पढ़ेगा, वह यीशु मसीह के बारे में और उस महान प्रेम के बारे में गहराई से जान पाएगा जो उन्होंने हमारे लिए अपनी जान देकर दिखाया (1 यूहन्ना 3:16)। परमेश्वर का वह अनुग्रह हम सभी के जीवन में भरपूर हो, जो हमें उनके आदेश को मानते हुए एक-दूसरे से सच्चा प्रेम करने की शक्ति देता है (1 यूहन्ना 3:23)।

मैं यीशु को और अधिक जानना चाहता हूँ; मैं उनके विशाल, असीम अनुग्रह और उनके प्रायश्चित के प्रेम को जानने की सच्ची इच्छा रखता हूँ। मेरे जीवन की यही चाहत है—उनके प्रायश्चित के प्रेम को गहराई से जानना।

[नया भजन-संग्रह संख्या 453, "मैं यीशु को और अधिक जानना चाहता हूँ," पद 1 और कोरस]
30 दिसंबर, 2021,

पास्टर जेम्स किम का संदेश
["लेकिन जो बातें मेरे लिए फायदे की थीं, उन्हें अब मैं मसीह के कारण नुकसान समझता हूँ। बल्कि, मैं सब कुछ नुकसान ही मानता हूँ क्योंकि अपने प्रभु यीशु मसीह को जानने का मूल्य सबसे बढ़कर है" (फिलिप्पियों 3:7–8, *समकालीन कोरियाई संस्करण*)]

हम यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते हैं

[1 यूहन्ना 1:1–4]

"जो शुरू से था, जिसे हमने सुना, जिसे हमने अपनी आँखों से देखा, जिसे हमने निहारा और हमारे हाथों ने छुआ—हम जीवन के उस वचन के बारे में बताते हैं। जीवन प्रकट हुआ; हमने उसे देखा है और उसकी गवाही देते हैं, और हम आपको उस अनंत जीवन के बारे में बताते हैं, जो पिता के साथ था और हमारे सामने प्रकट हुआ। हमने जो देखा और सुना है, हम आपको वही बताते हैं, ताकि आप भी हमारे साथ संगति रख सकें। और हमारी संगति पिता और उनके पुत्र, यीशु मसीह के साथ है। हम यह इसलिए लिख रहे हैं ताकि हमारी खुशी पूरी हो सके।"

जब हमने 2019 के नए साल का स्वागत किया, तो हमने अपने चर्च के लिए "एक-दूसरे से प्रेम करो" को अपना आदर्श वाक्य चुना। मुख्य वचन यूहन्ना 15:12 है: "मेरी आज्ञा यह है: एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम करो जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया है।" यीशु ने हमें जो आज्ञा दी है, वह स्पष्ट है: जैसे प्रभु ने हमसे प्रेम किया, वैसे ही हमें भी एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए।

यीशु ने हमसे कैसे प्रेम किया? उन्होंने हमें दोस्त माना और हमारे लिए क्रूस पर अपनी जान दे दी। इससे बड़ा प्रेम और कोई नहीं है (वचन 13)। प्रभु, जिन्होंने हमें इतने बड़े प्रेम से अपनाया, आज भी हमसे कहते हैं: "यदि तुम वह करते हो जिसकी मैं आज्ञा देता हूँ, तो तुम मेरे दोस्त हो" (वचन 14)। हमने इस साल का

आदर्श वाक्य इस सच्ची इच्छा के साथ तय किया कि हम एक ऐसा समुदाय बनें जो प्रभु की आज्ञा का पालन करे और एक-दूसरे से प्रेम करे।

इस आदर्श वाक्य और लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, हमने मंडली के लिए एक साथ मनन करने हेतु 1 यूहन्ना की पुस्तक को चुना। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह पत्र—जिसे प्रेरित यूहन्ना ने बुढ़ापे में लिखा था (और उन्होंने ही वह वचन भी लिखा था जो हमारा आदर्श वाक्य है)—प्रेम के बारे में अनमोल संदेशों से भरा है। उदाहरण के लिए, 1 यूहन्ना 4:7–8 में, प्रेरित यूहन्ना कहते हैं: "प्यारे लोगों, आओ हम एक-दूसरे से प्रेम करें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर की ओर से है, और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है। जो कोई प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।" इसके अलावा, 1 यूहन्ना 4:11 में, वे कहते हैं: "प्यारे लोगों, यदि परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया, तो हमें भी एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए।" 1 यूहन्ना 4:18 में एक ऐसी बात है जिसे मैं व्यक्तिगत रूप से बहुत महत्व देता हूँ और जिस पर गहराई से मनन करता हूँ: "प्रेम में कोई डर नहीं होता, बल्कि परिपूर्ण प्रेम डर को दूर कर देता है। क्योंकि डर का संबंध सज़ा से है, और जो डरता है, वह प्रेम में परिपूर्ण नहीं हुआ है।"

आज से, मैं प्रभु की इच्छा के अनुसार यूहन्ना की सभी पत्रियों—1 यूहन्ना से शुरू करके 2 यूहन्ना और 3 यूहन्ना तक—पर गहराई से मनन करने का इरादा रखता हूँ। मैं सच्चे दिल से प्रार्थना करता हूँ कि जब हम प्रभु के वचन को साझा करेंगे और उस पर मनन करेंगे, तो प्रभु हर पल हम सब पर भरपूर अनुग्रह बरसाएँगे।

जिस किताब का अध्ययन हम आज शुरू करेंगे, यानी 1 यूहन्ना, वह प्रेरित यूहन्ना द्वारा लिखा गया एक पत्र है। ज़बदी का बेटा और याकूब का भाई होने के नाते, यूहन्ना उन मुख्य शिष्यों में से एक था—पतरस के साथ—जिन्होंने यीशु की सबसे करीबी सेवा की। मूल रूप से गलील का रहने वाला एक मछुआरा, वह यीशु की सार्वजनिक सेवा, उनके दुख और उनके शानदार पुनरुत्थान का प्रत्यक्षदर्शी था। वह बाइबल के एक प्रमुख लेखक हैं जिन्होंने न केवल 1 यूहन्ना, 2 यूहन्ना और 3 यूहन्ना लिखीं, बल्कि प्रसिद्ध 'यूहन्ना का सुसमाचार' और 'प्रकाशितवाक्य की पुस्तक' भी लिखीं। प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना क्यों लिखी, इसके उद्देश्य के बारे में 'रिवाइज़्ड कोरियन वर्ज़न' (RKV) की टीका इसे निम्नलिखित दो बिंदुओं में संक्षेप में बताती है। (1) पहला,

इसका उद्देश्य चर्च को—जो विभिन्न गलत शिक्षाओं (जैसे कि नॉस्टिसिज़्म) के कारण गंभीर संकट का सामना कर रहा था—सत्य की नींव पर मज़बूती से स्थापित करना था।

चर्च के इतिहास के संदर्भ में, यहाँ जिस "नॉस्टिसिज़्म" (Gnosticism) का ज़िक्र किया गया है, वह एक मिली-जुली विचारधारा थी जिसमें पूर्वी धर्म, यूनानी दर्शन, थियोसोफ़ी और ईसाई विश्वास का मिश्रण था—और ये सभी आध्यात्मिक ज्ञान (*gnosis*) की खोज पर केंद्रित थे। A.D. 80 और 150 के बीच, यह एक गलत शिक्षा वाला आंदोलन था जिसने शुरुआती चर्च को चुनौती दी और विश्वासियों के लिए धोखे का सबसे शक्तिशाली और खतरनाक रूप पेश किया। प्लेटो जैसे दार्शनिकों से प्रभावित, नॉस्टिसिज़्म दो गलत धारणाओं पर आधारित था। इनमें से एक थी "आत्मा-पदार्थ द्वैतवाद" (spirit-matter dualism), जो आत्मा और भौतिक दुनिया के बीच सख्त अलगाव की बात करती थी। नॉस्टिक लोगों का तर्क था कि पदार्थ मूल रूप से बुरा है जबकि आत्मा अच्छी है। इस खतरनाक विचारधारा के बहुत बुरे नतीजे निकले; आखिरकार लोगों ने यीशु के मानव रूप में आने (Incarnation) और क्रूस पर प्रभु के दुख सहने और मरने की सच्चाई को मानने से इनकार कर दिया। इसी वजह से, नया नियम (New Testament) 'ग्नोस्टिसिज़्म' (Gnosticism) को एक ऐसी मान्यता बताता है जो ईसाइयों को बहुत बुरी तरह गुमराह करती है, और इसके खिलाफ चेतावनी देता है।

ग्नोस्टिक सोच के निशान, जिसने शुरुआती ईसाई धर्म के लिए बड़ा खतरा पैदा किया था, 'प्रकाशितवाक्य' (Book of Revelation) की किताब में भी मिलते हैं। परगमुम की कलीसिया को यीशु द्वारा भेजे गए पत्र में एक फटकार है: "वैसे ही तुम्हारे बीच भी कुछ लोग हैं जो निकोलइयों (Nicolaitans) की शिक्षा को मानते हैं" (प्रकाशितवाक्य 2:15)। "निकोलई" नाम निकोलस से आया है, जो एक शुरुआतीग्नोस्टिक नेता था। हैरानी की बात है कि यह निकोलस यरूशलेम कलीसिया के उन सात सेवकों (deacons) में से एक था जिनका ज़िक्र 'प्रेरितों के काम' (Acts) के छठे अध्याय में है। वह अंताकिया से आया एक नया विश्वासी था जिसने सीधे प्रेरितों से विश्वास सीखा था और सेवक के तौर पर सेवा भी की थी; लेकिन दुख की बात है कि बाद में वह भटक गया और एक गलत शिक्षा वाले पंथ का नेता बन गया।

यूहन्ना की पहली पत्री में, प्रेरित यूहन्ना उन गलत शिक्षा फैलाने वाली ताकतों को सीधे निशाने पर लेते हुए कड़ी चेतावनी देता है जो कलीसिया को हिला रही थीं। 1 यूहन्ना 2:22 में, वह कहता है: "झूठा कौन है? वही जो इनकार करता है कि यीशु ही मसीह है। यही मसीह-विरोधी (antichrist) है, जो पिता और पुत्र का इनकार करता है।" इसके बाद 4:1–3 में, वह विश्वासियों से ज़ोर देकर कहता है कि वे आत्मिक परख करें: "प्यारों, हर आत्मा पर विश्वास न करो, बल्कि आत्माओं को परखो कि क्या वे परमेश्वर की ओर से हैं, क्योंकि दुनिया में बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता निकल आए हैं। तुम परमेश्वर की आत्मा को इस तरह पहचानते हो: हर वह आत्मा जो यह मानती है कि यीशु मसीह शरीर में आया है, वह परमेश्वर की ओर से है, और जो आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। यही मसीह-विरोधी की आत्मा है, जिसके बारे में तुमने सुना था कि वह आने वाली है और अब वह दुनिया में आ चुकी है।"

इस तरह, प्रेरित यूहन्ना ने यह पत्र उन विश्वासियों की रक्षा के लिए लिखा जो गलत विचारधाराओं से बहक रहे थे। पूरी पत्री में एक गहरी चरवाही तड़प झलकती है—एक इच्छा कि कलीसिया को सच्चाई की मज़बूत नींव, यानी यीशु मसीह पर फिर से मज़बूती से खड़ा किया जाए, खासकर तब जबग्नोस्टिसिज़्म जैसी कई गलत शिक्षाओं का हमला हो रहा हो। प्रेरित यूहन्ना ने शुरुआती कलीसिया के लिए जो पत्र आँसुओं के साथ लिखा था, उसका मकसद आज की कलीसिया के लिए भी पूरी तरह से ज़रूरी है। आज हमारी कलीसिया की हालत क्या है? यह पहले से कहीं ज़्यादा गंभीर संकट का सामना कर रही है, क्योंकि इसे अनगिनत गलत विचारों और चालाकी भरी झूठी शिक्षाओं ने घेर रखा है। अगर हमें आज के दौर में आध्यात्मिक संकट का एहसास है, तो हमें इस गंभीर सच्चाई का भी डटकर सामना करना होगा कि प्रभु की कलीसिया को सिर्फ़ सच्चाई की नींव पर ही मज़बूती से खड़ा रहना चाहिए।

आज, शैतान संतों को धोखा देने के लिए चालाकी से सच्चाई में झूठ मिला देता है। इसलिए, हमें ऐसी किसी भी मिली-जुली सोच को सख्ती से ठुकराना होगा जो दुनियादारी से समझौता करती हो। हमें विश्वास के मूल सिद्धांतों की ओर लौटना होगा—वे सिद्धांत जिनके लिए सुधारकों ने अपनी जान जोखिम में डाली थी: *सोला स्क्रिप्चुरा* (सिर्फ़ पवित्र शास्त्र), *सोला फिडे* (सिर्फ़ विश्वास), *सोलस क्रिस्टस* (सिर्फ़ मसीह), *सोला ग्रेशिया* (सिर्फ़ अनुग्रह), और *सोली डियो ग्लोरिया* (सिर्फ़ परमेश्वर की महिमा)।

यही वह साफ़ वजह और ज़रूरी ज़रूरत है कि हम इन दिनों में यूहन्ना की पहली पत्री पर गहराई से मनन करें। जब हम इन शब्दों को पढ़ेंगे और उन्हें अपने दिल में उतारेंगे, तो हम एक बार फिर यीशु मसीह के असली स्वरूप और शुद्ध सुसमाचार की शक्ति के बारे में जानेंगे—ये वे सच्चाइयाँ हैं जिन्हें प्रेरित यूहन्ना ने पूरे जोश के साथ बताने की कोशिश की थी। मेरी दिली उम्मीद है कि मनन करने के इस सफ़र के ज़रिए, हम सब सच्चे वचन पर मज़बूती से खड़े होंगे और प्रभु के ऐसे गवाह बनेंगे जो इस अंधेरी दुनिया के बीच असली सुसमाचार का निडरता से प्रचार करेंगे।

सबसे पहले, आइए हम प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताए गए यीशु मसीह के सुसमाचार पर गौर करें।

आज का अंश—1 यूहन्ना 1:1–2—इस बात की गवाही दो तरह से देता है।

(1) यीशु मसीह का सुसमाचार "जीवन का वचन" है जो "शुरू से" मौजूद था।

1 यूहन्ना 1:1 के पहले हिस्से को देखिए। प्रेरित यूहन्ना यह कहते हुए शुरुआत करते हैं, "जीवन के उस वचन के बारे में जो शुरू से था..." *बाइबल फॉर मॉडर्न रीडर्स* (ह्युंडाई-इन-उई सोंग-ग्योंग) में, इस हिस्से का अनुवाद ज़्यादा आसानी से समझ आने वाले तरीके से किया गया है: "मसीह के बारे में, जीवन का वह वचन जो दुनिया के बनने से पहले भी मौजूद था..."

जब हम प्रेरित यूहन्ना द्वारा कही गई बात "शुरू से" पर विचार करते हैं, तो हमें स्वाभाविक रूप से बाइबल के दो और हिस्से याद आते हैं। पहला है उत्पत्ति 1:1: "शुरू में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की"; दूसरा है यूहन्ना 1:1: "शुरू में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।"

दिलचस्प बात यह है कि इन दो आयतों में जिस "शुरू" (यानी शुरुआत) की बात की गई है, उसके अलग-अलग आध्यात्मिक अर्थ हैं। जहाँ उत्पत्ति 1:1 में "शुरू" का मतलब "समय और स्थान की शुरुआत" है जब परमेश्वर ने भौतिक दुनिया की रचना की, वहीं यूहन्ना 1:1 में "शुरू" का मतलब "समय से परे, अनंत शुरुआत" है जो रची गई दुनिया के अस्तित्व में आने से पहले से मौजूद थी।

तो, आज के पाठ, 1 यूहन्ना 1:1 में प्रेरित यूहन्ना किस "शुरू" की बात कर रहे हैं? यह वही "अनंत शुरुआत" है जिसका ज़िक्र यूहन्ना के सुसमाचार में किया गया है।

इस बात के बारे में हमारी निश्चितता का आधार आयत 2 के दूसरे हिस्से में साफ़ तौर पर लिखा है: "वह पिता के साथ थे और हमारे सामने प्रकट हुए हैं।" यह हिस्सा ज़ोरदार ढंग से गवाही देता है कि यीशु मसीह सच्चे परमेश्वर हैं, जो दुनिया के बनने से पहले से ही पिता परमेश्वर के साथ मौजूद थे। इस संदर्भ में, *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* (ह्युंडाई-इन-उई सोंग-ग्योंग) इस वाक्यांश का अनुवाद साफ़ तौर पर ऐसे करती है: "वह जो दुनिया के बनने से पहले मौजूद थे।" प्रेरित यूहन्ना का यह कहना—"जो शुरू से था"—एक ऐसी "अनंत शुरुआत" की ओर इशारा करता है जो स्वर्ग और पृथ्वी की रचना से भी परे है; यह समय की बस एक शुरुआती बिंदु से कहीं आगे की बात है। यूहन्ना मसीह की अनंतता की घोषणा कर रहे हैं—एक ऐसा स्वभाव जो समय की सीमाओं में बंधा नहीं है। इसके अलावा, यह अनंतता मसीह के परमेश्वर होने (दिव्यता) को मज़बूती से बताती है, और यह साबित करती है कि यीशु मसीह ही सृष्टिकर्ता हैं, न कि कोई ऐसी चीज़ जिसे बनाया गया हो।

यूहन्ना आगे इस अनंत मसीह का वर्णन "जीवन के वचन" के रूप में करते हैं जो "शुरू से" मौजूद था। यूहन्ना 1:1 और 1 यूहन्ना 1:2 में "वह पिता के साथ थे" वाक्यांश के आधार पर, जिस "जीवन के वचन" की गवाही प्रेरित यूहन्ना देते हैं, वह साफ़ तौर पर खुद यीशु मसीह की ओर इशारा करता है। यीशु मसीह खुद ही "जीवन का वचन" हैं।

यूहन्ना 14:6 में, प्रभु ने खुद कहा: "यीशु ने उत्तर दिया, 'मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। मेरे बिना कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता।'" अनंत यीशु मसीह न केवल सृष्टि का वचन (लोगोस) और स्वयं परमेश्वर (यूहन्ना 1:1) हैं, बल्कि वह उस परिपूर्ण "जीवन" (अनंत जीवन) का साक्षात रूप भी हैं जो हमारे पास आया है (यूहन्ना 14:6)।

आखिरकार, प्रेरित यूहन्ना द्वारा घोषित यीशु मसीह का सुसमाचार केवल कोई सिद्धांत या "अच्छी खबर" नहीं है। सुसमाचार का सार यीशु मसीह हैं—वे अनंत परमेश्वर जो स्वयं अनंत जीवन हैं और जो उदारतापूर्वक उस

अनंत जीवन को हमारे साथ साझा करते हैं। प्रेरित यूहन्ना आज जीने वाले हम लोगों को भी सुसमाचार की इस महान सच्चाई की घोषणा करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने तब की थी (1 यूहन्ना 1:3)।

(2) यीशु मसीह का सुसमाचार वह "अनंत जीवन" है जो इस पृथ्वी पर प्रकट हुआ है। आज के पाठ में 1 यूहन्ना 1:2 के पहले हिस्से को देखें। प्रेरित यूहन्ना बार-बार कहते हैं: "यह जीवन प्रकट हुआ; हमने इस अनंत जीवन को देखा है और इसकी गवाही देते हैं, और हम इसे आपको बताते हैं..." *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* इस आयत का अनुवाद इस प्रकार करती है: "यह जीवन दुनिया में प्रकट हुआ है। मसीह को, जो अनंत जीवन हैं, व्यक्तिगत रूप से देखने के बाद, हम उनके बारे में गवाही देते हैं और आपको उनके बारे में बताते हैं।"

यूहन्ना की इस गवाही का आध्यात्मिक महत्व बहुत गहरा है कि "अनंत जीवन" प्रकट हुआ है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर के पुत्र—यीशु मसीह, जो सृष्टि का वचन (लोगोस) और स्वयं अनंत जीवन हैं—एक वास्तविक, भौतिक शरीर धारण करके इस ऐतिहासिक पृथ्वी पर आए। जहाँ आयत 1 ने मसीह के ईश्वरीय स्वरूप की पुष्टि की, वहीं यह आयत स्पष्ट रूप से मसीह की सच्ची मानवीय प्रकृति की घोषणा करती है। प्रेरित यूहन्ना ने इस रहस्यमय और अद्भुत घटना का वर्णन यूहन्ना 1:14 में शानदार ढंग से किया है: "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच रहा, और हमने उसकी महिमा देखी, ऐसी महिमा जैसी पिता के एकलौते पुत्र की होती है, जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण है।" हम इस ऐतिहासिक तथ्य को—कि मसीह, जो वचन हैं, एक मनुष्य बने और हमारे बीच रहे—यीशु मसीह का "देहधारण" (Incarnation) कहते हैं।

देहधारण कोई कल्पना या आध्यात्मिक रूपक नहीं है। यह एक ब्रह्मांडीय घोषणा है कि पुत्र यीशु—त्रिएक परमेश्वर के दूसरे व्यक्ति जिन्होंने पूरे ब्रह्मांड की रचना की—ने हमारे जैसा ही मांस और रक्त का एक पूर्ण मानव शरीर धारण किया और इतिहास में एक वास्तविक मनुष्य बने। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ है कि परमेश्वर-पुत्र ने एक पूर्ण मानवीय प्रकृति—जिसमें आत्मा, प्राण और शरीर शामिल हैं—को अपनाया और हमारी तरह ही एक "सच्चे मनुष्य" बने। डॉ. मार्टिन लॉयड-जोन्स ने इस बात को प्रभावशाली ढंग से इस प्रकार व्यक्त किया:

"यीशु मसीह ने जो धारण किया, वह एक वास्तविक शरीर था। त्रिएक के दूसरे व्यक्ति ने जो धारण किया, वह केवल बाहरी रूप या कोई भ्रम नहीं था, बल्कि एक वास्तविक देहधारण था। यीशु वास्तव में देह में आए। नॉस्टिक विधर्मियों का दावा था कि यीशु के पास केवल शरीर का रूप था—कि भले ही उनके पास शरीर का आकार था, लेकिन वह वास्तव में किसी साये या भूत जैसा था। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। यीशु एक वास्तविक शरीर में आए। वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच रहा।" यह महान रहस्य कैसे संभव हुआ? ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि पवित्र आत्मा ने कुंवारी मरियम के द्वारा यीशु (पुत्र) का जन्म कराया, और साथ ही प्रभु के मानवीय स्वरूप को पवित्र और अलग किया ताकि वह पाप के किसी भी दाग से मुक्त रहे। इस बारे में बाइबल कहती है, "इसलिए जो पवित्र बालक जन्म लेगा, वह परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा" (लूका 1:35), जो मसीह की मानवीय प्रकृति की पूर्णता और पाप-रहित होने की पुष्टि करता है।

प्रेरित यूहन्ना ने मसीह—वह अनंत जीवन जो अवतार लेकर हमारे बीच आए—के बारे में केवल अपने कानों से सुना नहीं था। आज के अंश (1 यूहन्ना 1:1–3) के माध्यम से, वह गंभीरता और बार-बार गवाही देते हैं कि उन्होंने उन्हें अपनी आँखों से "साफ़ और सीधे" देखा और अपने हाथों से "स्पष्ट रूप से" छुआ: "हमने इसे देखा है और इसकी गवाही देते हैं, और हम तुम्हें इस अनंत जीवन के बारे में बताते हैं" (पद 2); "जो हमने देखा और सुना है, वही हम तुम्हें बताते हैं" (पद 3)। जैसा कि *समकालीन कोरियाई संस्करण* (Hyundaein-ui Seonggyeong) इसका अनुवाद करता है, यूहन्ना पूरे विश्वास के साथ विश्वासियों को सुसमाचार की गवाही देते हैं और उसका प्रचार करते हैं; यह विश्वास मसीह—जो अनंत जीवन हैं—को देखने के उनके व्यक्तिगत अनुभव से उपजा है। प्रेरित द्वारा सुसमाचार का प्रचार केवल सिद्धांतों या विचारों का आदान-प्रदान नहीं था, बल्कि उन "ऐतिहासिक तथ्यों" के बारे में एक स्पष्ट स्वीकारोक्ति थी जिन्हें उन्होंने व्यक्तिगत रूप से देखा और सुना था।

इस बिंदु पर, एक तथ्य है जिस पर हमें स्पष्ट और दृढ़ता से ध्यान देना चाहिए। प्रेरित यूहन्ना ने अपनी जान जोखिम में डालकर जिस यीशु मसीह के सुसमाचार की गवाही दी, उसका मूल सार क्या है? उनके द्वारा प्रचारित सुसमाचार यह सत्य है कि यीशु मसीह "जीवन का वचन" हैं जो "शुरू से" अस्तित्व में थे (पद 1) और साथ ही, "अनंत जीवन" (पद 2) हैं जो मानवीय शरीर धारण करके पृथ्वी पर प्रकट हुए। यह एक शानदार घोषणा है जिसमें यीशु मसीह की पूर्ण दिव्यता और पूर्ण मानवीय प्रकृति, दोनों शामिल हैं।

प्रेरित यूहन्ना द्वारा यीशु की मानवीय प्रकृति का—उनकी दिव्यता के समान ही—इतने ज़ोरदार ढंग से प्रचार करने का एक कारण था। ऐसा इसलिए था क्योंकि शुरुआती कलीसिया के लिए खतरा बने नॉस्टिक (Gnostic) विधर्मी केवल यीशु की दिव्यता को मानते थे, जबकि उनकी सच्ची मानवीय प्रकृति को पूरी तरह से नकारते थे। उनका मानना था कि सारा पदार्थ मूल रूप से बुरा है और ईश्वर पूरी तरह पवित्र हैं; इसलिए, उनका तर्क था कि कोई दिव्य सत्ता भौतिक शरीर—जो स्वभाव से पदार्थ है—धारण नहीं कर सकती। नतीजतन, उनका कहना था कि यीशु की मानवता—उनका भौतिक स्वरूप—वास्तविक नहीं थी, बल्कि केवल एक भ्रम या आभास था जो गायब होने से पहले आँखों के सामने दिखाई दिया।

इन नॉस्टिक (Gnostic) संप्रदायों में एक प्रमुख सिद्धांत "डोसेटिज़्म" (Docetism) है। इस विचार को मानने वालों ने इस ऐतिहासिक तथ्य को सिरे से नकार दिया कि मसीह हाड़-मांस के वास्तविक मानवीय शरीर में आए थे। उन्होंने सिखाया कि यीशु का शरीर केवल एक मतिभ्रम या भ्रम था, जिसने देखने वालों की आँखों में एक भौतिक रूप होने का झूठा आभास पैदा किया।

यह कितना बेतुका और खतरनाक दावा है! यह शैतान का एक स्पष्ट धोखा था—एक दुर्भावनापूर्ण झूठ जिसका उद्देश्य प्रभु के लहू से खरीदी गई शुरुआती कलीसिया को नष्ट करना और धोखे के माध्यम से संतों को बर्बादी की ओर ले जाना था।

2 यूहन्ना 1:7 में, प्रेरित यूहन्ना इन धोखेबाज़ आत्माओं के खिलाफ कड़ी चेतावनी देते हैं: "बहुत से धोखेबाज़, जो यह स्वीकार नहीं करते कि यीशु मसीह शरीर में आए, दुनिया में निकल गए हैं। ऐसा कोई भी व्यक्ति धोखेबाज़ और मसीह-विरोधी (antichrist) है।" इनकी तरह, दुनिया में अनगिनत धोखेबाज़ दुर्भावनापूर्ण ढंग से उस अटूट तथ्य को नकारते हैं कि यीशु मसीह वास्तविक शरीर में आए थे—यानी, वे प्रभु की सच्ची मानवता को नकारते हैं।

शैतान का यह हमला शुरुआती कलीसिया तक ही सीमित नहीं रहा। तथाकथित "ऐतिहासिक यीशु" (Historical Jesus) पर बहस, जिसने आधुनिक धर्मशास्त्र की दुनिया को बुरी तरह हिलाकर रख दिया था, इसी हमले की एक कड़ी है। सुसमाचार के अलौकिक इतिहास को कमजोर करने की कोशिश करने वाले

उदारवादी धर्मशास्त्रियों ने यीशु के ऐतिहासिक अस्तित्व के तथ्य को तोड़-मरोड़ दिया है या नकार दिया है, यहाँ तक कि उन्हें मानवता द्वारा गढ़ी गई केवल एक "कल्पना" (myth) करार दिया है।

अपने बेबुनियाद तर्कों को पुष्ट करने के लिए, जिस पहली घटना को उन्हें नकारना पड़ा, वह थी यीशु का कुंवारी से जन्म (Virgin Birth)। यह ठीक नॉस्टिक लोगों के दावों से मेल खाता है; पदार्थ को बुरा मानने के कारण, उन्होंने भी अवतार (Incarnation) के रहस्य का पुरजोर विरोध किया—वह सत्य कि मसीह कुंवारी मरियम के माध्यम से शरीर में पैदा हुए थे।

हालाँकि, हमारा दृष्टिकोण अलग है। हर रविवार अपनी उपासना में, हम 'अपोस्टल्स क्रीड' (प्रेरितों के विश्वास-सार) के ज़रिए अपने विश्वास को पूरी तरह से स्वीकार करते हैं: "मैं यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ, जो परमेश्वर के एकलौते पुत्र और हमारे प्रभु हैं; वे पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आए और कुंवारी मरियम से जन्मे।" जिस यीशु मसीह में हम विश्वास करते हैं, वे सचमुच मनुष्य हैं—जो बिना किसी पाप के शरीर में इस धरती पर आए—और साथ ही वे जीवित परमेश्वर के पुत्र भी हैं जो पूरी सृष्टि पर राज करते हैं। दूसरे शब्दों में, हम बिना किसी शक के यीशु की पूर्ण दिव्यता और पूर्ण मानवता, दोनों में विश्वास करते हैं।

इसके अलावा, यीशु मसीह का वह सुसमाचार जिसमें हम विश्वास करते हैं, उस व्यक्ति पर केंद्रित है जिनके बारे में प्रेरित पौलुस ने रोमियों 1:3–4 में बताया है: "उनके पुत्र के विषय में, जो शारीरिक रूप से दाऊद के वंश से जन्मे और पवित्रता की आत्मा के अनुसार सामर्थ्य के साथ परमेश्वर के पुत्र ठहराए गए—मृतकों में से जी उठने के द्वारा"—हमारे प्रभु यीशु मसीह।

वह अटल सत्य जिसे हम मजबूती से थामे हुए हैं, वह 1 कुरिन्थियों 15:3–4 में मिलता है। आज, हम विश्वास के साथ इस नकारे न जा सकने वाले ऐतिहासिक तथ्य और उनके प्रायश्चित की शक्ति को स्वीकार करते हैं: कि "मसीह पवित्रशास्त्र के अनुसार हमारे पापों के लिए मरे, दफ़नाए गए, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन फिर जी उठे।"

परमेश्वर का कभी न बदलने वाला वचन, जिस पर हम भरोसा करते हैं, यह घोषणा करता है: "प्रभु यीशु पर विश्वास कर, तो तू उद्धार पाएगा—तू और तेरा घराना" (प्रेरितों के काम 16:31)। प्रभु यीशु पर विश्वास के ज़रिए उद्धार का तोहफ़ा पाने के बाद—जो पूरी तरह से परमेश्वर की कृपा से मिला है—हमें अब वैसे ही जीना चाहिए जैसा प्रेरित यूहन्ना आज के वचन में बताते हैं। यानी, हमें एक ऐसे गवाह के तौर पर जीना चाहिए जो निडर होकर यीशु मसीह—जो "जीवन का वचन" और "अनंत जीवन" हैं—और उनके सुसमाचार की गवाही दे और उसका प्रचार करे (1 यूहन्ना 1:1–3)। हमें सिर्फ़ कानों से सुनी हुई धार्मिक जानकारी बाँटने के बजाय प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए बुलाया गया है—जिनसे हम व्यक्तिगत रूप से मिले हैं और जिन पर हमने अपने जीवन में विश्वास किया है।

सुसमाचार का प्रचार करने की ज़िम्मेदारी निभाने के लिए, हमें सबसे पहले "सुसमाचार की आशा से डगमगाना नहीं" चाहिए (कुलुस्सियों 1:23)। इसके अलावा, प्रेरित पौलुस की तरह, हमें "जितना हो सके" सुसमाचार का प्रचार करने की गहरी इच्छा रखनी चाहिए (रोमियों 1:15)। उससे भी बढ़कर, हमारा जीवन ही एक संदेश बन जाना चाहिए। जब हम अपने रोज़मर्रा के जीवन में "मसीह के सुसमाचार के योग्य" जीते हुए सुसमाचार का प्रचार करते हैं (फिलिप्पियों 1:27), तो प्रभु की शक्ति प्रकट होती है, और बहुत से लोगों को यीशु मसीह का चेला बनाने का काम आगे बढ़ता है (प्रेरितों के काम 14:21)।

तीमुथियुस की तरह, जिसने पौलुस के साथ मिलकर सुसमाचार की सेवा वैसे ही की जैसे एक बच्चा पिता की सेवा करता है (फिलिप्पियों 2:22), हम सभी को ऐसे सहयोगी बनना चाहिए जो खुशी-खुशी यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए मेहनत करें और खुद को समर्पित करें। ऐसा इसलिए है क्योंकि उद्धार पाए हुए विश्वासी का जीवन सिर्फ़ सुसमाचार को जानने से पूरा नहीं होता; यह तभी पूरा होता है जब हम उस सुसमाचार के अनुसार जीने और उसका प्रचार करने के लिए आगे बढ़ते हैं।

आखिर में, आइए हम प्रेरित यूहन्ना द्वारा हमें यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के पीछे के मुख्य मकसद पर गौर करें। आज के वचन—1 यूहन्ना 1:3–4—में प्रेरित यूहन्ना सुसमाचार के प्रचार के मकसद को दो पहलुओं

में समझाते हैं। हम इन दो उद्देश्यों पर गहराई से सोच सकते हैं: एक 'वर्टिकल' उद्देश्य (जो परमेश्वर से जुड़ा है) और दूसरा 'हॉरिजॉन्टल' उद्देश्य (जो दूसरे विश्वासियों से जुड़ा है)।

(1) वर्टिकल उद्देश्य: हमें परमेश्वर पिता और उनके पुत्र, यीशु मसीह के साथ "सच्ची संगति" का आनंद लेने में सक्षम बनाना।

आज के पाठ में 1 यूहन्ना 1:3 को देखें। प्रेरित यूहन्ना सुसमाचार का प्रचार करने का पहला कारण इस प्रकार बताते हैं: "हम तुम्हें वह बताते हैं जो हमने देखा और सुना है, ताकि तुम भी हमारे साथ संगति कर सको। और हमारी संगति पिता और उनके पुत्र, यीशु मसीह के साथ है।" *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* (Hyundaein-ui Seonggyeong) इस आयत को और सरल शब्दों में बताती है: "हम तुम्हें वह बताते हैं जो हमने देखा और सुना है ताकि तुम भी हमारे साथ संगति कर सको। हमारी संगति वह संगति है जो हम पिता और उनके पुत्र, यीशु मसीह के साथ साझा करते हैं।"

जैसा कि प्रेरित यूहन्ना ने पहले आयत 1 और 2 में ज़ोर दिया था, वह कौन था जिसे उन्होंने अपने कानों से सुना, अपनी आँखों से स्पष्ट रूप से देखा और अपने हाथों से छुआ? वह कोई और नहीं बल्कि पुत्र, यीशु मसीह थे—"जीवन का वचन" जो शुरू से अस्तित्व में था और "अनंत जीवन" जो इस दुनिया में शरीर धारण करके आया था।

विश्वासियों के लिए मसीह के इस महान सुसमाचार का प्रचार करने के पीछे यूहन्ना का मुख्य उद्देश्य हमें त्रिएक परमेश्वर के साथ गहरी और शुद्ध संगति का आनंद लेने में सक्षम बनाना था। यह संगति उन विश्वासियों के लिए सबसे शानदार सौभाग्य है जिन्होंने सुसमाचार को समझा है। प्रिय संतों, आखिर वह "संगति" या "मेल-मिलाप" क्या है जिसके बारे में हम अक्सर बात करते हैं? मेरा मानना है कि "संगति" उन शब्दों में से एक है जिसका आज चर्च में सबसे अधिक गलत इस्तेमाल और तुच्छीकरण किया गया है, और इसने अपना मूल, गहरा आध्यात्मिक महत्व खो दिया है।

बहुत से ईसाई संगति को हल्के में लेते हैं, इसे केवल "मेल-जोल" (समान सोच वाले लोगों के साथ समय बिताना) या चर्च के भीतर सामाजिक "गतिविधियों" की एक श्रृंखला के रूप में देखते हैं। वे साधारण बातचीत—जैसे

स्वादिष्ट भोजन साझा करना, शौक पर चर्चा करना, या सुखद बातचीत का आनंद लेना—को सच्ची आध्यात्मिक संगति समझ लेते हैं।

हालाँकि, मसीही संगति कभी भी सतही मानवीय रिश्तों या आयोजित कार्यक्रमों तक सीमित नहीं रहती है। जेरी ब्रिजेस, जो *द परसूट ऑफ़ होलीनेस* (पवित्रता की खोज) जैसी कई आध्यात्मिक बेस्टसेलर किताबों के लेखक हैं, उन्होंने फेलोशिप (आपसी संगति) का सार इस तरह बताया है: "फेलोशिप एक रिश्ता है, कोई गतिविधि नहीं।"

आज के वचन, 1 यूहन्ना 1:3 में, प्रेरित यूहन्ना बताते हैं कि यीशु मसीह के पूरी तरह से परमेश्वर और इंसान होने की बात बताने का उनका मकसद यही था कि "आपकी भी हमारे साथ संगति हो।" फिर भी, यूहन्ना यहीं नहीं रुकते; वे इस संगति की रहस्यमयी और शानदार सच्चाई भी बताते हैं: "हमारी संगति पिता के साथ और उनके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।"

प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताई गई इस संगति का मुख्य मकसद साफ है। यह परमेश्वर पिता और उनके एकलौते पुत्र, यीशु मसीह के साथ सीधी, व्यक्तिगत संगति रखने से कम कुछ नहीं है।

आखिरकार, यूहन्ना का मकसद संतों को यीशु मसीह के बारे में गवाही देना था—जो सुसमाचार का मुख्य सार है—ताकि जो लोग यह संदेश सुनें, वे भी यीशु पर अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करें, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने किया था, और त्रिएक परमेश्वर के साथ शानदार संगति में शामिल हों।

तो फिर, प्रेरित यूहन्ना इतनी शिद्दत से क्यों चाहते थे कि सभी संत परमेश्वर पिता और पुत्र, यीशु मसीह के साथ गहरी संगति रखें? कारण साफ है: वे अच्छी तरह जानते थे कि प्रभु के साथ उस पवित्र रिश्ते में ही वे भी उस "सच्चे जीवन"—यानी "अनंत जीवन"—का भरपूर आनंद ले सकते थे, जिसका अनुभव और अधिकार उन्हें खुद मिला था।

1 यूहन्ना 5:11–13 जीवन के बारे में इस सच्चाई की साफ गवाही देता है: "और गवाही यह है: कि परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके पास जीवन नहीं है। मैंने ये बातें तुम्हें इसलिए लिखी हैं जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, ताकि तुम जान सको कि तुम्हारे पास अनंत जीवन है।"

प्यारे संतों, अगर आप सच में यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, तो परमेश्वर का जीवन पहले से ही आपके अंदर धड़क रहा है। आपके पास अनंत जीवन है। यीशु मसीह का सुसमाचार सुनकर—जो खुद "जीवन का वचन" और "अनंत जीवन" हैं (1 यूहन्ना 1:1–2)—और प्रभु को अपनाकर, आप उस सच्चे अनंत जीवन के अधिकारी बन गए हैं जिसे परमेश्वर पिता ने अनुग्रह के उपहार के रूप में दिया है (रोमियों 6:23; 1 यूहन्ना 5:11–13)। प्रेरित यूहन्ना, जिन्होंने पहले ही इस अनंत जीवन का पूरा आनंद लिया था, ने निडर होकर यीशु मसीह—जीवन के वचन—का प्रचार किया। उनका एकमात्र उद्देश्य यह था कि जो कोई भी उनका संदेश सुने, वह यीशु मसीह पर विश्वास करे और परमेश्वर पिता तथा उनके पुत्र यीशु मसीह के साथ उसी शानदार संगति में शामिल हो, जिसका अनुभव उन्होंने स्वयं किया था। दूसरे शब्दों में, उनकी दिली इच्छा थी कि वे "हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन" (रोमियों 6:23)—जो परमेश्वर द्वारा मुफ्त में दिया गया अनुग्रह का उपहार है—को पूरी तरह से प्राप्त करें और उसका आनंद लें। प्रेरित यूहन्ना के मिशन का मुख्य उद्देश्य यही था, जिसके लिए उन्होंने सुसमाचार का प्रचार करते हुए अपनी जान जोखिम में डाली।

आज, जब हम यीशु मसीह के सुसमाचार के साथ दुनिया में जाते हैं, तो हमारा उद्देश्य भी यही होना चाहिए। हम केवल चर्च के सदस्यों की संख्या बढ़ाने या धार्मिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए सुसमाचार का प्रचार नहीं करते हैं। बल्कि, हमारा लक्ष्य यह है कि मरती हुई आत्माएँ यीशु मसीह पर विश्वास करें, त्रिएक परमेश्वर के साथ जीवन देने वाली संगति में प्रवेश करें, और हमारे साथ मिलकर अनंत जीवन का आनंद लें।

आप और मैं सचमुच धन्य हैं, क्योंकि हमने पहले ही यीशु मसीह पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास किया है और—हमारे भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा की अगुवाई में—परमेश्वर पिता और उनके पुत्र यीशु मसीह के साथ गहरी संगति का आनंद लेते हैं। अनंत जीवन के आशीर्वाद को प्राप्त करने और उसका अनुभव करने

के बाद, यीशु मसीह—जो जीवन का वचन और स्वयं अनंत जीवन हैं—के सुसमाचार का प्रचार करने में हमारा उद्देश्य स्पष्ट है: जो लोग हमारे माध्यम से इस शुभ समाचार को सुनते हैं, उन्हें परमेश्वर पिता और यीशु मसीह के साथ सच्ची संगति में आने में मदद करना, ठीक वैसे ही जैसे हम आए हैं। ऐसा करके, हम उन्हें हमारे साथ अनंत जीवन के आशीर्वाद में शामिल होने में मदद करते हैं, और इसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाते हैं।

मैं पूरी निष्ठा से आपके—और अपने—लिए प्रार्थना करता हूँ और आशीष देता हूँ कि हम स्वेच्छा से अपने जीवन को इस शानदार और अमूल्य सुसमाचार सेवा के लिए समर्पित करें, और आज आत्माओं के उद्धार के लिए लगन से काम करें। (2) एक क्षैतिज उद्देश्य: यह सुनिश्चित करना कि संतों के बीच सच्ची संगति के माध्यम से हमारा आनंद पूरा हो। आज के वचन, 1 यूहन्ना 1:4 को देखिए। प्रेरित यूहन्ना सुसमाचार का प्रचार करने और यह पत्र लिखने के पीछे के अपने मकसद को बताते हैं: "हम यह इसलिए लिख रहे हैं ताकि हमारी खुशी पूरी हो सके।" *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* में इस वचन का अनुवाद और भी अच्छे ढंग से किया गया है: "हम यह पत्र इसलिए लिख रहे हैं ताकि आपके साथ अपनी भरपूर खुशी साझा कर सकें।" प्रेरित यूहन्ना ने मसीह—जो दुनिया बनने से पहले से मौजूद "जीवन का वचन" थे और जो इस धरती पर आए "अनंत जीवन" थे—के बारे में गवाही दी और यह पत्र लिखा। इसका मुख्य मकसद यह था कि "यीशु मसीह की खुशी" जिसने उनके अपने दिल को भर दिया था, वह इस पत्र को पढ़ने वाले संतों तक भी पहुँचे और उन्हें भी खुशी से भर दे (1 यूहन्ना 1:1–4)।

यह बात गहरी आध्यात्मिक रुचि जगाती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रेरित यूहन्ना ने यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार जिन दो मकसद से किया, वे थे—"हमारे साथ संगति" (वचन 3) और "हमारी खुशी" (वचन 4)। जब हम चुपचाप इस दोहरे मकसद पर मनन करते हैं, तो हम आसानी से समझ सकते हैं कि प्रेरित यूहन्ना खुद परमपिता और उनके पुत्र यीशु मसीह के साथ गहरी संगति का आनंद ले रहे थे, और उनकी आत्मा एक बेमिसाल खुशी से भरी हुई थी।

जॉन उस खुशी को सिर्फ़ अपने तक ही सीमित नहीं रखना चाहते थे। उन्होंने परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र—यीशु मसीह—के साथ गहरे आध्यात्मिक जुड़ाव में पवित्र आत्मा द्वारा दी गई भरपूर खुशी का अनुभव किया था।

अब, उनकी दिली इच्छा थी कि यह खुशी सबमें फैले, ताकि शुरुआती कलीसिया के सभी विश्वासी भाई-बहन—जिन्हें यह पत्र लिखा गया था—भी इसे पा सकें और इसका आनंद ले सकें।

प्यारे संतों, क्या यही सच्ची संगति का सार और प्रेरित पौलुस की उस सलाह का असली रूप नहीं है कि "मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जियो" (फिलिप्पियों 1:27)? दूसरे शब्दों में, हम ईसाइयों के लिए—जिन्होंने यीशु मसीह का सुसमाचार सुना है और उस पर विश्वास किया है—सही जीवन वह है जिसमें हम त्रिएक परमेश्वर के साथ गहरे आध्यात्मिक जुड़ाव के ज़रिए अनंत जीवन का आनंद लें, और साथ ही उस भरपूर खुशी को अपने विश्वासी भाई-बहनों के साथ संगति में साझा करें।

खुशी की यह भरपूरता, जिसका अनुभव हमें अनंत जीवन का स्वाद चखते हुए होता है, इंसानी कोशिशों से कभी पैदा नहीं की जा सकती। यह हम पर तभी आती है जब हम त्रिएक परमेश्वर के प्रेम से—जो स्वर्ग के राज्य की आज्ञा है—एक-दूसरे से सच्चा प्रेम करते हैं। जब हम प्रभु के प्रेम में बने रहते हैं, तो उनकी खुशी हममें बनी रहती है, और हमारी खुशी पूरी हो जाती है (यूहन्ना 15:9–12)। जब हम इस पवित्र खुशी पर मनन करते हैं, तो भजन 293, "जब प्रभु का प्रेम चमकता है," के बोल हमारे दिलों में गहराई से गूंजते हैं: "जब प्रभु का प्रेम चमकता है, खुशी आती है; चिंताएँ और परेशानियाँ दूर हो जाती हैं, और खुशी आती है। यह हमें प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करता है और अंधेरे को दूर करता है; जब प्रभु का प्रेम चमकता है, खुशी आती है। जब प्रभु का प्रेम चमकता है, तो उसकी चमक हमें चारों ओर से घेर लेती है; यहाँ तक कि जब हम दुनिया पर जीत हासिल करते हैं और स्वर्ग जैसा जीवन जीते हैं, तब भी प्रभु का प्रेम चमकता है। वह महान प्रेम—(कोरस) जब वह महान प्रेम मेरे दिल में पूरी तरह चमकता है, तो मैं स्तुति के गीत गाता हूँ; वह महान प्रेम मेरे दिल को शांति और खुशी से भर देता है—वह महान प्रेम।"

आज हम जिस दौर में जी रहे हैं, वह कई तरह की गलत शिक्षाओं के कारण गंभीर संकट का सामना कर रहा है, ठीक वैसे ही जैसे शुरुआती कलीसिया के समय में हुआ था, जब प्रेरित जॉन और चेलों ने ज़बरदस्त आध्यात्मिक लड़ाइयाँ लड़ी थीं। बाइबल में बताए गए सच्चे यीशु मसीह को नकारने वाले "दूसरे सुसमाचार"—

यानी मिला-जुला या झूठा सुसमाचार—विश्वासियों को हर तरफ से गुमराह कर रहे हैं। जैसा कि प्रभु ने भविष्यवाणी की थी, बहुत से ईसाइयों का प्रेम ठंडा पड़ गया है (मत्ती 24:12), और बहुतों ने प्रभु के साथ अपना गहरा, व्यक्तिगत रिश्ता खो दिया है, और अब वे केवल धर्म का बाहरी दिखावा ही बनाए हुए हैं।

जब हम आध्यात्मिक सुस्ती की इस हालत पर विचार करते हैं, तो प्रेरित यूहन्ना द्वारा आँसुओं के साथ लिखा गया 'यूहन्ना का पहला पत्र' आज हमारे लिए बहुत ज़रूरी और असरदार संदेश देता है।

इसलिए, हमें '1 यूहन्ना' के संदेश को मज़बूती से थामे रखना चाहिए और खुद को पूरी तरह से प्रभु की कलीसिया को केवल सच्चाई की नींव पर खड़ा करने के लिए समर्पित करना चाहिए। जैसे-जैसे हम परमेश्वर के महान प्रेम को समझते हैं, हमें प्रभु के साथ अपनी व्यक्तिगत संगति को और गहरा करना चाहिए। सबसे बढ़कर, हमें अपना पूरा दिल और ताकत यीशु मसीह के उस सुसमाचार को स्पष्ट रूप से समझने में लगानी चाहिए जिसका प्रचार करने के लिए हमें बुलाया गया है। प्रेरित यूहन्ना द्वारा प्रचारित यीशु मसीह का सुसमाचार बिल्कुल स्पष्ट है। यह "जीवन के वचन" के बारे में है जो शुरू से ही मौजूद था और उस "अनंत जीवन" के बारे में है जो धरती पर देहधारी रूप में प्रकट हुआ (1 यूहन्ना 1:1–2)। दूसरे शब्दों में, इसमें मसीह के पूर्ण ईश्वरीय स्वरूप और पूर्ण मानवीय स्वरूप, दोनों पर सही विश्वास करना शामिल है।

इसके अलावा, इस सुसमाचार का प्रचार करने में प्रेरित का उद्देश्य दो तरह का था: एक ऊर्ध्वाधर (vertical) उद्देश्य—परमेश्वर पिता और उनके पुत्र यीशु मसीह के साथ गहरी संगति बनाना—और दूसरा क्षैतिज (horizontal) उद्देश्य—संतों के बीच सच्ची संगति के ज़रिए हमें आनंद से भरना (पद 3–4)।

अब जब हम दुनिया में जाते हैं, तो हमें भी मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीना चाहिए। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हम इस स्पष्ट, दोहरे उद्देश्य को अपने मिशन के रूप में अपनाएँ, और ऐसे पवित्र पात्र बनें जो इन अंधेरे समयों में यीशु मसीह के सच्चे सुसमाचार का निडरता से प्रचार करें।

यह पत्र लिखने का मकसद

[1 यूहन्ना 1:4; 2:1; 5:13]

"हम यह इसलिए लिख रहे हैं ताकि हमारी खुशी पूरी हो सके... मेरे प्यारे बच्चों, मैं तुम्हें यह इसलिए लिख रहा हूँ ताकि तुम पाप न करो। लेकिन अगर कोई पाप करता भी है, तो पिता के पास हमारा एक वकील है—यीशु मसीह, जो धर्मी है... मैं ये बातें तुम्हें लिख रहा हूँ जो परमेश्वर के बेटे के नाम पर विश्वास करते हो, ताकि तुम जान सको कि तुम्हें अनंत जीवन मिला है।"

उस साल जब क्रिसमस का समय आया, तो मेरी पत्नी और मैंने अपना-अपना आभार व्यक्त करने के लिए क्रिसमस कार्ड तैयार किए। मेरी पत्नी ने रिश्तेदारों, चर्च के सदस्यों, दोस्तों और अमेरिका में अपनी यूनिवर्सिटी और सेमिनरी के साथियों को कार्ड भेजे। वहीं, मैंने कोरिया में रहने वाले रिश्तेदारों, उन चर्चों के सदस्यों जहाँ मैंने पहले सेवा की थी, और अपनी ऑनलाइन मिनिस्ट्री के ज़रिए मिले साथी विश्वासियों को पत्र भेजे—जिनके साथ मैंने छोटे-छोटे निजी नोट भी लिखे थे। ऐसे आशीष भरे समय में ये पत्र भेजकर मेरा दिल गहरे आभार से भर गया, क्योंकि हम सब मिलकर बालक यीशु के जन्म की खुशी मना रहे थे।

मैं सचमुच आभारी हूँ कि इतने सारे लोगों ने हमारे परिवार के क्रिसमस कार्ड की तस्वीर अपने रेफ्रिजरेटर या दीवारों पर लगाई है, और वे लगातार हमारे परिवार और हमारे चर्च के लिए प्रार्थना करते हैं। कुछ साल पहले, जब मैं स्वर्गीय श्रीमती चोई बुन-नाम से मिलने गया—जो बीमारी से जूझ रही थीं—तो मैंने देखा कि हमारे परिवार के कार्ड की तस्वीर उनके लिविंग रूम में अस्पताल के बिस्तर के पास दीवार पर बहुत संभालकर लगाई गई थी। मैं खुद भी स्वर्गीय श्रीमती इम बोंग-ही और स्वर्गीय डीकन किम डोंग-युन के

बिस्तरों के पास दीवारों पर हमारे परिवार की तस्वीरें लगाता था; वे दोनों नर्सिंग होम में रहते थे। इसके अलावा, सियोह्युन चर्च के सदस्यों में—जहाँ हमने पहले कोरिया में सेवा की थी—ऐसे लोग भी हैं जो हमारे परिवार की तस्वीर अपने रेफ्रिजरेटर पर रखते हैं और जब भी पवित्र आत्मा उन्हें हमारी याद दिलाता है, तो वे इस विदेशी धरती पर हमारे परिवार और चर्च के लिए पूरे दिल से प्रार्थना करते हैं।

इस अनमोल आध्यात्मिक रिश्ते की वजह से, मैं हर साल आभार से भरे दिल के साथ क्रिसमस कार्ड भेजता हूँ। इन कार्डों में उनसे यह दिली गुज़ारिश भी होती है कि वे अपनी प्रार्थनाओं के ज़रिए हमारे परिवार की सुसमाचार की सेवा में अपना योगदान देते रहें। यही वजह है कि मैंने ईमेल और अपनी निजी वेबसाइट के ज़रिए इतने सारे साथी विश्वासियों के साथ अपने परिवार की क्रिसमस की तस्वीर साझा की; मैं कलीसिया के साथ मिलकर धरती पर शिशु यीशु के आगमन की खुशी भरी खबर सुनाना चाहता था और उस स्वर्गीय आनंद को साझा करना चाहता था।

आज के अंशों—1 यूहन्ना 1:4, 2:1, और 5:13—में हम उन स्पष्ट उद्देश्यों को जान सकते हैं जिनके लिए प्रेरित यूहन्ना ने विश्वासियों को यह पत्र लिखा था। इन महान मसीही उद्देश्यों को तीन मुख्य बिंदुओं में संक्षेपित किया जा सकता है।

पहला, यह सुनिश्चित करना कि जो लोग परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, वे निश्चित रूप से जानें कि उन्हें "अनंत जीवन" प्राप्त है।

1 यूहन्ना 5:13 को देखें। पत्र के अंत में, प्रेरित यूहन्ना कहते हैं: "मैं ये बातें तुम्हें लिखता हूँ जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, ताकि तुम जान सको कि तुम्हें अनंत जीवन प्राप्त है।" *समकालीन कोरियाई संस्करण* (Hyundaein-ui Seonggyeong) इस आयत का और भी स्पष्ट अनुवाद करता है: "मैं यह इसलिए लिख रहा हूँ ताकि तुम, जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हो, जान सको कि तुम्हें अनंत जीवन प्राप्त है।"

प्रेरित यूहन्ना द्वारा इस पत्र को लिखने का पहला उद्देश्य यह भरोसा दिलाना था कि जो लोग परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, उन्हें अनंत जीवन पहले ही मिल चुका है। यहाँ एक आध्यात्मिक सत्य है जिसे हमें ध्यान में रखना चाहिए: यीशु में विश्वास के माध्यम से हमें जो "अनंत जीवन" मिलता है, वह केवल मृत्यु के बाद मिलने वाले "आने वाले संसार के अनंत जीवन" तक सीमित नहीं होना चाहिए। अनंत जीवन न केवल दूर के भविष्य का एक वादा है, बल्कि एक ऐसी वास्तविकता भी है जिसका अनुभव और आनंद हम यीशु मसीह के माध्यम से वर्तमान में—कम से कम आंशिक रूप से—अभी और यहीं लेते हैं।

"अनंत जीवन" की अवधारणा यूहन्ना के सुसमाचार और यूहन्ना के पत्रों में सबसे गहराई से प्रकट हुई है। ग्रीक भाषा में, अनंत जीवन को *ज़ोए आयोनियोस* (Zoe Aionios) कहा जाता है। यह शब्द *ज़ोए* (जिसका अर्थ है परमेश्वर का जीवन) और *आयोनियोस* (जिसका अर्थ है अनंत) के मेल से बना है। ऐतिहासिक-धर्मवैज्ञानिक व्याख्या के अनुसार, इस शब्द के दो गहरे अर्थ हैं। पहला, समय के संदर्भ में, इसका अर्थ है "अनंत जीवन जो बिना अंत के बना रहता है।" दूसरा, गुणवत्ता के संदर्भ में, इसका अर्थ है "परमेश्वर का घनिष्ठ, दिव्य जीवन," जो मनुष्यों के सीमित जीवन से अलग है। दूसरे शब्दों में, अनंत जीवन का मतलब सिर्फ़ लंबी उम्र पाना नहीं है—जैसे कि सेहतमंद रहते हुए सौ साल जीना या शारीरिक रूप से अमर हो जाना। बल्कि, यह "जीवन के एक दिव्य गुण" को दर्शाता है, जिसमें परमेश्वर के साथ चलना और उनके स्वभाव और पवित्रता में शामिल होना शामिल है।

जहाँ सिनॉप्टिक गॉस्पेल (मत्ती, मरकुस और लूका) मुख्य रूप से अनंत जीवन को "आने वाले जीवन में मिलने वाले आशीर्वाद" के तौर पर बताते हैं, वहीं यूहन्ना का सुसमाचार और 1 यूहन्ना इसे ज़ोरदार ढंग से "वर्तमान में मिलने वाले जीवन के आशीर्वाद" के रूप में बताते हैं। जो लोग प्रभु पर विश्वास करते हैं, वे सिर्फ़ भविष्य में अनंत जीवन पाने का इंतज़ार करने वाले लोग नहीं हैं; बल्कि वे ऐसे लोग हैं जिनके पास यह जीवन *पहले से ही* है। इसके अलावा, बाइबल इस बात की पुष्टि करती है कि प्रभु के साथ व्यक्तिगत जुड़ाव के ज़रिए, हम अपनी मौजूदा ज़िंदगी की मुश्किलों के बीच भी इस स्वर्गीय आशीर्वाद को भरपूर मात्रा में पा सकते हैं और उसका आनंद ले सकते हैं। तो, आखिर अनंत जीवन का वह आशीर्वाद क्या है जिसका आनंद हम आज इस धरती पर लेते हैं? इसमें स्वर्ग से मिलने वाले वे आध्यात्मिक आशीर्वाद शामिल हैं जो हम पर तब बरसते हैं जब हम अनंत परमेश्वर, उनके पुत्र यीशु मसीह और पवित्र आत्मा के साथ गहरे, व्यक्तिगत संगति (यूहन्ना

17:3) में शामिल होते हैं। अनंत जीवन के जिन आशीर्वादों का अनुभव हम अपनी मौजूदा ज़िंदगी में थोड़ा-बहुत करते हैं, उन्हें तीन मुख्य तरीकों से समझा जा सकता है:

(1) 'पवित्रता' (Sanctification) का अनुग्रह, जिसके ज़रिए हम प्रभु के चरित्र जैसे बनने लगते हैं।

यीशु मसीह में हम जो अनंत जीवन अभी जीते हैं, वह परमेश्वर के दिव्य स्वभाव में शामिल होने वाले जीवन के रूप में प्रकट होता है। हमारे अंदर रहने वाली पवित्र आत्मा की सूक्ष्म अगुवाई में, हम पवित्रता का आनंद महसूस करते हैं क्योंकि हमारा चरित्र और जीवन दिन-ब-दिन प्रभु की छवि को और ज़्यादा दर्शाते हैं।

(2) हमारे दिलों में उंडेला गया 'प्रेम' का सामर्थ्य।

यह परमेश्वर के उस पवित्र प्रेम को पाना है जो पवित्र आत्मा के ज़रिए हमारे दिलों में उंडेला गया है। जब हम पूरे दिल से परमेश्वर से प्रेम करते हुए और अपने पड़ोसियों से खुद की तरह प्रेम करते हुए जीते हैं—और इस काम में उस उमड़ते हुए प्रेम से प्रेरणा लेते हैं—तो हम धरती पर रहते हुए ही स्वर्ग के आनंद का अनुभव करने लगते हैं।

(3) परमेश्वर की 'शांति', जो दुनिया नहीं दे सकती।

हालाँकि जिस दुनिया में हम रहते हैं, वह बंटवारे और झगड़ों से भरी है और उसमें सच्ची शांति का अभाव दिखता है, फिर भी जो लोग यीशु मसीह पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करते हैं, उन्हें एक विशेष अधिकार मिलता है। अनंत जीवन के वरदान के रूप में, पृथ्वी पर रहते हुए हम परमेश्वर की अलौकिक शांति को भरपूर मात्रा में पाते हैं और उसका आनंद लेते हैं—यह ऐसी शांति है जो सांसारिक परिस्थितियों से कहीं बढ़कर है।

अगर प्रेरित यूहन्ना का '1 यूहन्ना' लिखने का मुख्य मकसद यह पक्का करना था कि जो लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, उनके पास अनंत जीवन है (1 यूहन्ना 5:13), तो फिर 'यूहन्ना का सुसमाचार' लिखने का

मकसद क्या था, जिसे उन्होंने पहले लिखा था? यूहन्ना 20:31 इसका कारण इस तरह बताता है: "लेकिन ये बातें इसलिए लिखी गई हैं ताकि तुम विश्वास करो कि यीशु ही मसीह है, परमेश्वर का पुत्र है, और विश्वास करने से तुम्हें उसके नाम में जीवन मिले।"

इन दोनों हिस्सों की ध्यान से तुलना करने पर एक दिलचस्प आध्यात्मिक निष्कर्ष निकलता है। जहाँ प्रेरित यूहन्ना ने 'यूहन्ना का सुसमाचार' इसलिए लिखा ताकि जो लोग अभी तक यीशु को नहीं जानते थे, वे "सुसमाचार पर विश्वास करें और अनंत जीवन (मुक्ति) पाएं," वहीं उन्होंने '1 यूहन्ना' इसलिए लिखा ताकि जिन्होंने प्रभु को पहले ही अपना उद्धारकर्ता मान लिया था, वे "यह समझ सकें कि उनके पास पहले से ही अनंत जीवन है (भरोसा)।" दूसरे शब्दों में, अगर 'यूहन्ना का सुसमाचार' जीवन का दरवाज़ा खोलने वाला निमंत्रण है, तो '1 यूहन्ना' उस अनंत जीवन की गारंटी है जिसका आनंद वे लोग लेते हैं जो उस दरवाज़े से अंदर आए हैं।

यहाँ एक बहुत बड़ी सच्चाई है जिसे हमें मजबूती से थामे रखना चाहिए: यह सच्चाई कि यीशु मसीह—जो हमारा अनंत जीवन है—खुद ही सत्य है। बाइबल कहती है, "वह सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन है" (1 यूहन्ना 5:20)। प्रभु ही "जीवन का वचन" है जो सृष्टि से पहले मौजूद था (1 यूहन्ना 1:1) और "अनंत जीवन" है जो इतिहास में शरीर धारण करके प्रकट हुआ (पद 2)।

संक्षेप में, यीशु मसीह "अनंत जीवन का वचन" है। इसलिए, बाइबल मजबूती से पुष्टि करती है कि सत्य के कभी न बदलने वाले वचन के द्वारा, उन लोगों को अनंत जीवन *पहले ही* दे दिया गया है जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हैं।

प्रिय संतों, यदि आप यीशु मसीह पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करते हैं, तो डगमगाएं नहीं। परमेश्वर का अनंत जीवन आपके भीतर पहले से ही जीवित और सक्रिय है। दूसरी बात, इसका मकसद उन लोगों को, जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, पाप से मुक्त पवित्र जीवन जीने के काबिल बनाना है।

1 यूहन्ना 2:1 पर विचार करें। गहरी आध्यात्मिक चिंता के साथ, प्रेरित यूहन्ना विश्वासियों से कहते हैं: "मेरे प्यारे बच्चों, मैं तुम्हें यह इसलिए लिख रहा हूँ ताकि तुम पाप न करो। लेकिन अगर कोई पाप करता भी है, तो पिता

के सामने हमारा एक वकील है—यीशु मसीह, जो धर्मी है।" *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल* इस आयत का अनुवाद और भी आसान और साफ़ तरीके से करती है: "विश्वास में मेरे बच्चों, मैं यह पत्र इसलिए लिख रहा हूँ ताकि तुम पाप न करो। फिर भी, अगर कोई पाप करता है, तो यीशु मसीह हैं, जो धर्मी हैं और पिता के सामने हमारी पैरवी करते हैं।"

प्रेरित यूहन्ना के इस पत्र को लिखने का दूसरा मकसद यीशु मसीह में विश्वास रखने वालों को पाप करने से रोकना है। यहाँ हमें एक ज़रूरी बात ध्यान में रखनी चाहिए: 1 यूहन्ना में बताए गए "पाप" का मतलब परमेश्वर की आज्ञाओं को न मानना और कानून के खिलाफ काम करना है (1 यूहन्ना 3:4)।

तो फिर, बाइबल में बताई गई "परमेश्वर की आज्ञाएँ" क्या हैं? वे हैं—परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करना और एक-दूसरे से सच्चे दिल से प्रेम करना, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने हमारे लिए मिसाल कायम की है (1 यूहन्ना 3:23)।

बाइबल एक कड़ी चेतावनी देती है: अगर कोई व्यक्ति मुँह से तो प्रभु पर विश्वास करने का दावा करता है, लेकिन परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करता, तो वह व्यक्ति झूठा है और उसमें सच्चाई नहीं है (1 यूहन्ना 2:4)। केवल वे ही लोग जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और उनका पालन करते हैं, सचमुच परमेश्वर को जानते हैं (1 यूहन्ना 2:3) और सचमुच उससे प्रेम करते हैं (1 यूहन्ना 5:3; तुलना करें यूहन्ना 14:21)। इसके विपरीत, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन न करना और उन्हें न मानना इस बात को दिखाता है कि व्यक्ति को परमेश्वर का सच्चा ज्ञान नहीं है और वह उससे प्रेम नहीं करता; ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर का स्वभाव ही प्रेम है (1 यूहन्ना 4:16)। जो व्यक्ति प्रभु के वचन का पालन करता है, उसी में परमेश्वर का प्रेम सचमुच पूर्णता तक पहुँचता है (1 यूहन्ना 2:5)।

बाइबल कहती है, "इससे हम जानते हैं कि हम उसमें हैं" (1 यूहन्ना 2:5)। चूँकि "परमेश्वर ज्योति है" (1 यूहन्ना 1:5), इसलिए जो लोग प्रभु में बने रहते हैं, वे स्वाभाविक रूप से ज्योति का फल लाते हैं। यदि कोई व्यक्ति "ज्योति में" होने का दावा करता है, फिर भी अपने भाई से घृणा करता है, तो वह उस व्यक्ति से अलग नहीं है जो

अंधकार में रहता है (1 यूहन्ना 2:9)। इसके अलावा, "जो कोई अपने भाई से प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर का नहीं है" (1 यूहन्ना 3:10) और वह मृत्यु में बने रहने की गंभीर आध्यात्मिक स्थिति में रहता है (1 यूहन्ना 3:14)।

यूहन्ना यहीं नहीं रुकता, बल्कि एक और गंभीर सच्चाई के बारे में चेतावनी देता है: "जो कोई अपने भाई से घृणा करता है, वह हत्यारा है, और तुम जानते हो कि किसी भी हत्यारे में अनंत जीवन नहीं होता" (1 यूहन्ना 3:15)। इसके विपरीत, जिस व्यक्ति की आत्मा में परमेश्वर का अनंत जीवन बसता है और काम करता है, वह अपने भाई से बहुत प्रेम करता है। वास्तव में, जो अपने भाई से प्रेम करता है, वही सच्चाई का है (1 यूहन्ना 3:19)। जैसा कि *बाइबल फॉर मॉडर्न मैन* में अनुवाद किया गया है: "जो कोई अपने भाई से प्रेम करता है, वह ज्योति में रहता है, इसलिए उसमें ऐसी कोई बात नहीं होती जिससे वह ठोकर खाए" (1 यूहन्ना 2:10)।

क्योंकि जो लोग इस तरह से अपने भाइयों से प्रेम करते हैं, वे आध्यात्मिक रूप से दोषरहित होते हैं, इसलिए उन्हें परमेश्वर के सिंहासन के सामने सच्ची हिम्मत मिलती है (1 यूहन्ना 3:21)। नतीजतन, उन्हें आखिरकार "वह सब कुछ मिलेगा जो वे मांगेंगे" (1 यूहन्ना 3:22)—ऐसा इसलिए है क्योंकि हम प्रभु की अनमोल आज्ञाओं का पालन करते हैं और चुपचाप अपने रोज़मर्रा के जीवन में वे काम करते हैं जो उन्हें पसंद हैं।

जो लोग पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, वे प्रभु में बने रहते हैं, और प्रभु उनके दिलों में वास करते हैं (1 यूहन्ना 3:24)। हम इस रहस्यमय मिलन के बारे में केवल अस्पष्ट भावनाओं के आधार पर अंदाज़ा नहीं लगाते; बल्कि, "हम जानते हैं कि वह पवित्र आत्मा के द्वारा हममें वास करते हैं जो उन्होंने हमें दिया है" (1 यूहन्ना 3:24)। क्योंकि प्रभु ने हमें पवित्र आत्मा—सत्य की आत्मा—दिया है, इसलिए हम पूरे भरोसे के साथ उस अद्भुत आध्यात्मिक सच्चाई को जान पाते हैं कि हम परमेश्वर में रहते हैं और परमेश्वर हममें वास करते हैं (1 यूहन्ना 4:13)।

प्रेरित यूहन्ना ने 'यूहन्ना की पहली पत्री' इसलिए लिखी ताकि हम पाप करने से बचें। फिर भी, उन्हें इंसानी कमज़ोरियों का अच्छी तरह से एहसास था। इसलिए, वे सुसमाचार के दिलासे की ज़ोरदार घोषणा करते हैं: भले ही हम पाप करें, हमारे पास "यीशु मसीह, जो धर्मी हैं," मौजूद हैं, जो पिता परमेश्वर के सामने हमारे लिए पूरी तरह से पैरवी करते हैं (1 यूहन्ना 2:1)।

प्रभु केवल सिंहासन के दाहिने हाथ से शब्दों के ज़रिए हमारी पैरवी नहीं करते हैं। यीशु मसीह ने व्यक्तिगत रूप से अपने शरीर को "प्रायश्चित" के रूप में अर्पित किया ताकि न केवल हमारे पापों का, बल्कि पूरी दुनिया के पापों का भी प्रायश्चित हो सके (1 यूहन्ना 2:2)। यह वह शानदार समाचार है जिसे प्रेरित यूहन्ना ने यह पत्र लिखते समय आँसुओं के साथ संतों तक पहुँचाने की कोशिश की: वह अटूट सच्चाई कि यीशु मसीह—जो प्रायश्चित का बलिदान बने—के अनमोल लहू की बदौलत, हमारे सभी पाप हमेशा के लिए माफ कर दिए गए हैं (1 यूहन्ना 2:12)।

सुसमाचार द्वारा घोषित प्रेम का सच्चा सार यही है: "प्रेम यह है: यह नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, बल्कि यह कि उन्होंने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा" (1 यूहन्ना 4:10)। प्रायश्चित की इस महान कृपा के कारण, हमें अंधेरी दुनिया में भी निराश होने की ज़रूरत नहीं है; इसके बजाय, हम उस जीवित आशा के साथ जी सकते हैं जो केवल मसीह में मिलती है (1 यूहन्ना 3:3)। जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* बताती है, "जो कोई पाप करता है, वह परमेश्वर के नियम को तोड़ता है, और नियम तोड़ना ही पाप है" (1 यूहन्ना 3:4)। फिर भी, पवित्र यीशु—जिनमें पाप का कोई अंश नहीं था—इतिहास में "हमारे पापों को दूर करने के लिए" आए (1 यूहन्ना 3:5)। क्रूस पर बहाया गया यीशु का अनमोल "लहू" हमें "सभी पापों से शुद्ध करता है" (1 यूहन्ना 1:7)।

इसलिए, जब हम पाप करते हैं, तो हमें डरकर छिपने या खुद को दोषी मानने की ज़रूरत नहीं है। हमें बस सच्चे दिल से प्रभु के पास जाने और उनके सामने घुटने टेकने की ज़रूरत है। "यदि हम अपने पापों को मान लेते हैं, तो परमेश्वर, जो विश्वासयोग्य और धर्मी है, हमारे पापों को क्षमा करेगा और हमें हर तरह की अधार्मिकता से शुद्ध करेगा" (1 यूहन्ना 1:9)। क्षमा के इस भरोसेमंद वादे का आश्वासन ही इस पत्र को लिखने के पीछे यूहन्ना के दूसरे उद्देश्य का सही निष्कर्ष है।

तीसरा, यह सुनिश्चित करना है कि प्रभु द्वारा दी गई स्वर्गीय खुशी हमें पूरी तरह से भर दे।

1 यूहन्ना 1:4 को देखें। प्रेरित यूहन्ना अपने पत्र को लिखने का तीसरा उद्देश्य इस प्रकार बताते हैं: "हम यह इसलिए लिखते हैं ताकि हमारी खुशी पूरी हो सके।" *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* इस आयत का और भी प्रभावशाली अनुवाद करता है: "हम यह पत्र आपको भरपूर खुशी में शामिल करने के लिए लिख रहे हैं।"

इस स्वर्गीय खुशी के हमारी आत्माओं में एक उठती हुई लहर की तरह भरने के लिए, एक ज़रूरी आध्यात्मिक शर्त है: हमारे भीतर परमेश्वर पिता और उनके पुत्र यीशु मसीह के साथ एक जीवंत और सच्ची "सहभागिता" (मेल-मिलाप) का होना (1 यूहन्ना 1:3)।

परमेश्वर पिता, जिनके साथ हमारी गहरी सहभागिता है, वे अपने मूल स्वभाव में "प्रेम" हैं (1 यूहन्ना 4:8, 16)। इसलिए, परमेश्वर—जो प्रेम हैं—के साथ सच्ची सहभागिता का अर्थ है इस दुनिया में "एक-दूसरे से प्रेम" करने वाला जीवन जीना, और यह उस पवित्र प्रेम से प्रेरित होकर करना जो उनसे बहता है (1 यूहन्ना 4:7)।

तो फिर, हमें कैसे प्रेम करना चाहिए? "क्योंकि परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया, इसलिए हमें भी एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए" (1 यूहन्ना 4:11)। यह एक स्वर्गीय प्रेम है जिसे इस सच्चाई से परिभाषित किया गया है कि "उन्होंने हमारे लिए अपना जीवन दिया, और हमें भी अपने भाइयों के लिए अपना जीवन देना चाहिए" (1 यूहन्ना 3:16)। हमें मुसीबत में पड़े साथी विश्वासियों के लिए अपना दिल बंद नहीं करना चाहिए, बल्कि अपने पड़ोसियों से सचमुच, "कामों और सच्चाई से" प्रेम करना चाहिए (1 यूहन्ना 3:17–18)।

इस पूर्ण प्रेम में डर के लिए कोई जगह नहीं है। इसके विपरीत, परमेश्वर का पूर्ण प्रेम उस डरावने अंधेरे को पूरी तरह से दूर कर देता है जो हमारी आत्माओं पर भारी पड़ता है (1 यूहन्ना 4:18)। कामों में दिखाए गए इस प्रेम के बिना, हमारी संगति दिखावा है। जैसा कि *बाइबल फॉर मॉडर्न मैन* चेतावनी देती है: "जो कोई परमेश्वर से प्रेम करने का दावा करता है, फिर भी अपने भाई से नफरत करता है, वह झूठा है। जो व्यक्ति उस भाई से प्रेम नहीं कर सकता जिसे वह देखता है, वह उस परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकता जिसे वह नहीं देखता" (1 यूहन्ना 4:20)।

हमारे प्रभु—आनंद का स्रोत और वे जिनके साथ हमारी संगति है, यीशु मसीह—"सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन" हैं (1 यूहन्ना 5:20)। यीशु, जो यह अनंत जीवन हैं, "जीवन का वचन" हैं जिन्होंने पूरी सृष्टि की रचना की

(1 यूहन्ना 1:1–2)। और पवित्र आत्मा—जो हमारे लिए विनती करते हैं और हमसे संगति करते हैं, हमें पिता परमेश्वर और पुत्र यीशु से जुड़ने और रोज़ाना पवित्र संगति में शामिल होने में सक्षम बनाते हैं—वे और कोई नहीं बल्कि "सच्चाई" हैं (1 यूहन्ना 5:6)।

आखिरकार, यूहन्ना द्वारा घोषित "पूर्ण आनंद" स्वर्ग का एक "फल" है जो हमारी आत्माओं पर तब आता है जब—पवित्र आत्मा (जो सच्चाई हैं) में और यीशु मसीह (जो जीवन हैं) के माध्यम से—हम पिता परमेश्वर (जो प्रेम हैं) के साथ पूरी तरह एक हो जाते हैं और अपने भाइयों से खुद की तरह प्रेम करते हैं।

यूहन्ना की पहली पत्री के माध्यम से, प्रेरित यूहन्ना महान सच्चाइयों की घोषणा करते हैं: "पिता परमेश्वर प्रेम हैं" (1 यूहन्ना 4:8), "पुत्र यीशु अनंत जीवन हैं" (1 यूहन्ना 5:20), और "पवित्र आत्मा सच्चाई हैं" (1 यूहन्ना 5:6)।

इस तरह त्रिएक परमेश्वर के महिमामयी स्वरूप की गवाही देते हुए, यूहन्ना बताते हैं कि इस पत्र को लिखने का तीसरा उद्देश्य और कुछ नहीं बल्कि "यह है कि हमारा आनंद पूरा हो" (1 यूहन्ना 1:4)। हमारी आत्माओं में आने वाली यह भरपूर खुशी, पिता परमेश्वर (जो प्रेम हैं) और पुत्र यीशु (जो अनंत जीवन हैं) के साथ गहरी संगति से मिलने वाला एक स्वर्गीय आशीर्वाद है। और यह अद्‌भुत संगति हमारे जीवन में केवल पवित्र आत्मा—जो 'सत्य की आत्मा' हैं—की संगति के द्वारा ही हकीकत बनती है।

पवित्र आत्मा हमारे दिलों में आते हैं और हमें आत्मा का सुंदर पहला फल—'प्रेम'—पैदा करने में समर्थ बनाते हैं (गलातियों 5:22)। उस स्वर्गीय प्रेम से हमें थामे रखकर, वे हमें प्रभु द्वारा दिए गए राज्य के उस आदेश का खुशी-खुशी पालन करने की शक्ति देते हैं—यानी, 'परमेश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करना जैसे हम खुद से करते हैं।'

इसलिए, हमें निष्ठापूर्वक उस संकरे रास्ते पर चलना चाहिए जिस पर यीशु चले थे, और ठीक वैसा ही करना चाहिए जैसा उन्होंने तब किया था जब उन्होंने कहा था, "मैंने अपने पिता की आज्ञाओं का पालन किया है और उनके प्रेम में बना हुआ हूँ।" हमें भी प्रभु की आज्ञाओं का पूरी तरह पालन करके यीशु के परिपूर्ण प्रेम में बने

रहना चाहिए (यूहन्ना 15:10)। जिस मकसद से प्रभु ने पृथ्वी पर हमें यह आज्ञा सिखाई और बताई, वह साफ है: "मैंने ये बातें तुमसे इसलिए कही हैं ताकि मेरी खुशी तुममें बनी रहे, और तुम्हारी खुशी पूरी हो जाए" (यूहन्ना 15:11)। जब हम प्रेम की आज्ञा का पालन करने के लिए सत्य की पवित्र आत्मा पर निर्भर होते हैं, तो पवित्र आत्मा हमें उस अनंत जीवन के रोमांच का अनुभव कराते हैं—भले ही थोड़ा-बहुत ही सही—जो स्वर्ग में पूरी तरह से महसूस होगा, जबकि हम अभी भी इस थकी-हारी पृथ्वी पर जी रहे हैं। वे प्रभु की खुशी को हमारी अपनी खुशी बना देते हैं, और आखिर में हमारी आत्माओं को उस पवित्र, स्वर्गीय 'खुशी' से लबालब भर देते हैं, जैसे समुद्र की उमड़ती हुई लहरें हों।

जिस मकसद से प्रेरित यूहन्ना ने यह पहला पत्र लिखा—आंसुओं और प्रेम के साथ—वह साफ है। पहला, यह पक्का करना कि अनंत जीवन हममें—जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं—पहले से ही जीवित और सक्रिय है। दूसरा, हमें पवित्रता और शुद्धता का जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करना, इस पृथ्वी पर पाप से दूर रहना, और उस जीवन को जीना जो उन लोगों के लिए सही है जिनके पास वह अनंत जीवन है। तीसरा, त्रिएक परमेश्वर के साथ संगति के ज़रिए हमारी आत्माओं को स्वर्गीय खुशी से भरना—जैसे उमड़ती हुई लहरें हों।

“परमेश्वर ज्योति है”

[1 यूहन्ना 1:5–10]

“यह वह संदेश है जो हमने उससे सुना है और तुम्हें बताते हैं: परमेश्वर ज्योति है; उसमें ज़रा भी अंधकार नहीं है। अगर हम कहें कि हमारी उसके साथ संगति है, फिर भी अंधकार में चलें, तो हम झूठ बोलते हैं और सच्चाई के अनुसार नहीं जीते। लेकिन अगर हम ज्योति में चलें, जैसे वह ज्योति में है, तो हमारी एक-दूसरे के साथ संगति होती है, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सारे पापों से शुद्ध करता है। अगर हम कहें कि हम पाप-रहित हैं, तो हम खुद को धोखा देते हैं और सच्चाई हममें नहीं है। अगर हम अपने पापों को मान लें, तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है और हमारे पापों को क्षमा करेगा और हमें सारी अधार्मिकता से शुद्ध करेगा। अगर हम कहें कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम उसे झूठा ठहराते हैं और उसका वचन हममें नहीं है।”

हमारे चर्च के लगभग 39 साल के इतिहास को याद करते हुए, मुझे कम से कम एक ऐसा मौका याद आता है जब बिजली पूरी तरह चली गई थी, और हमें सुबह की प्रार्थना सभा मोमबत्ती की रोशनी में करनी पड़ी थी। उस समय प्रार्थना-स्थल को रोशन करने वाली मोमबत्तियाँ वे ऊँची वेदी वाली मोमबत्तियाँ नहीं थीं जो हम आम तौर पर देखते हैं; बल्कि, वे छोटी, चपटी 'टी-लाइट्स' (tea lights) थीं—वैसी मोमबत्तियाँ जिनका इस्तेमाल आमतौर पर दावत की मेज़ों या खाने की जगह को सजाने के लिए किया जाता है। हालाँकि हमने अंधकार को दूर करने के लिए पल्पिट और कम्युनियन टेबल पर ऐसी कई छोटी मोमबत्तियाँ जलाई थीं, फिर भी मुझे धुंधली-सी याद है कि कैसे उनकी पतली लौ उस विशाल, अंधेरे प्रार्थना-स्थल के हर कोने को पूरी तरह रोशन करने में नाकाम रही थी।

मत्ती 5:14 में, यीशु गंभीरता से हमसे कहते हैं, “तुम दुनिया की ज्योति हो।” इसके बाद वे हमारे मिशन के बारे में एक आज्ञा देते हैं। “इसी तरह, अपनी ज्योति को दूसरों के सामने चमकाओ, ताकि वे तुम्हारे अच्छे कामों को देख सकें और स्वर्ग में तुम्हारे पिता की महिमा कर सकें।” (पद 16)

यहाँ “इसी तरह” का क्या अर्थ है? जैसा कि *समकालीन कोरियाई बाइबिल* (Contemporary Korean Bible) में कहा गया है, इसका मतलब है कि कोई भी व्यक्ति दीया जलाकर उसे कटोरे से नहीं ढकता। हमें उस दीये को स्टैंड पर रखना चाहिए ताकि वह घर में मौजूद सभी लोगों पर रोशनी डाले (पद 15)।

ठीक वैसे ही जैसे सुबह के समय प्रार्थना-स्थल को कई छोटी मोमबत्तियों से भी पूरी तरह रोशन नहीं किया जा सका था, वैसे ही जिस दुनिया में हम रहते हैं, वह आध्यात्मिक रूप से बहुत अंधेरी है। तो फिर, प्रभु द्वारा बताई गई "दुनिया की रोशनी" के तौर पर हमें कैसे जीना चाहिए—सिर्फ़ अपने घरों और चर्चों में ही नहीं, बल्कि इस अंधेरी दुनिया के बीच भी उनकी रोशनी कैसे फैलानी चाहिए? इसका जवाब पाने के लिए, मैं नीतिवचन अध्याय 13 में बताए गए तीन खास आध्यात्मिक सिद्धांतों पर गहराई से सोचना चाहूँगा।

पहला, हमें अपने "मुँह" (अपनी बातों) से इस दुनिया को रोशन करना चाहिए।

खास तौर पर, इस अंधेरी दुनिया में रोशनी फैलाने के लिए हमें अपने मुँह का इस्तेमाल कैसे करना चाहिए?

हमें सबसे पहले झूठ से पूरी तरह नफ़रत करनी चाहिए (नीतिवचन 13:5) और सिर्फ़ सच में खुशी मनाकर प्रभु की रोशनी फैलानी चाहिए। हमें हमेशा अपने होंठों से सिर्फ़ सच बोलना चाहिए। बाइबल साफ़ तौर पर कहती है: "झूठ बोलने वाले होंठ प्रभु को घिनौने लगते हैं, लेकिन जो लोग सच बोलते हैं, वे उसे पसंद आते हैं" (नीतिवचन 12:22)। परमेश्वर झूठ बोलने वाले होंठों से नफ़रत करते हैं, फिर भी वे उन लोगों से प्यार करते हैं और खुश होते हैं जो सच्चाई से काम करते हैं। इसलिए, हमें हर तरह के झूठ को छोड़ देना चाहिए और सिर्फ़ सच बोलना चाहिए। हमें धोखे और बुराई से भरी इस दुनिया पर नेक लोगों की रोशनी—यानी ईमानदारी—फैलाानी चाहिए। इसके अलावा, हमारे सच्चे होंठ "अच्छी दवा" की तरह होने चाहिए जो घायल

आत्माओं को ठीक करते हैं (नीतिवचन 12:18)। हमें हिम्मत हारे हुए लोगों के दिलों को खुश करना चाहिए और प्यार भरे, दयालु शब्द कहकर उनकी ताकत को फिर से जगाना चाहिए (नीतिवचन 12:25)।

एक कदम और आगे बढ़ते हुए, हमें अपने ईमानदार होंठों का इस्तेमाल उन लोगों को बचाने के लिए करना चाहिए जो बर्बाद हो रहे हैं (नीतिवचन 12:6)। हमें परमेश्वर से मिली स्वर्गीय समझ से प्रेरित होकर अपने पड़ोसियों को जीवन की बातें ईमानदारी से सिखानी चाहिए। ऐसा करते हुए, हमें ऐसे आध्यात्मिक मार्गदर्शक बनना चाहिए जो दूसरों को बहुत ज़्यादा आध्यात्मिक फ़ायदा पहुँचाएँ और भटकती हुई आत्माओं को उद्धार के रास्ते पर ले जाएँ। यही परमेश्वर को खुश करने वाले आशीष का ज़रिया बनने का राज़ है।

दुनिया को रोशन करने वाली बातचीत का तरीका बनाए रखने के लिए, हमें अपने मुँह पर पहरा देना चाहिए और अपनी आत्मा की रक्षा करनी चाहिए। नीतिवचन 13:3 एक गंभीर चेतावनी देता है: "जो अपने मुँह पर पहरा देता है, वह अपनी जान बचाता है, लेकिन जो बिना सोचे-समझे बोलता है, वह बर्बादी को बुलावा देता है।" हमें हर पल अपने होंठों पर सावधानी से काबू रखना चाहिए। कम शब्दों में बात करना और संयम बरतना ही सच्ची समझदारी है। नीतिवचन 10:19 में भी कहा गया है, "बहुत बोलने में पाप की कमी नहीं होती, लेकिन जो अपने होंठों पर काबू रखता है, वह बुद्धिमान है।" परमेश्वर से मिलने वाली आत्मिक समझ के साथ, हमें अपने होंठों पर पूरा काबू रखना चाहिए—यानी बहुत ज़्यादा बोलने से बचना चाहिए जिससे गलतियाँ हो सकती हैं—और सुसमाचार के सच्चे माध्यम बनकर दुनिया को रोशन करना चाहिए।

दूसरी बात, हमें अपने "जीवन" (अपने कामों) के ज़रिए इस दुनिया को रोशन करना चाहिए। इस अंधेरी दुनिया में अपने कामों से प्रभु की रोशनी दिखाने के लिए, हमें सबसे पहले हर काम में लगन और मेहनत दिखानी चाहिए (नीतिवचन 13:4)। बाइबल के अनुसार, विश्वास का असली मतलब यह नहीं है कि हम इस दुनिया में अमीर हैं या गरीब, बल्कि यह है कि हम परमेश्वर के सामने मेहनती जीवन जीते हैं या आलसी जीवन। धर्मग्रंथ सिखाते हैं कि विश्वासियों को ईमानदारी और मेहनत की मिसाल बनकर रोशनी की तरह चमकना चाहिए।

इसके अलावा, हमें ईमानदारी अपनाकर प्रभु की रोशनी फैलानी चाहिए (नीतिवचन 13:6)। एक विश्वासी की ईमानदारी सिर्फ़ इंसानी नैतिकता से नहीं, बल्कि ऐसे दिल से आती है जो परमेश्वर का डर मानता है। परमेश्वर के आदेशों का आदर और उनसे डरने की भावना ही हमें ईमानदारी के रास्ते पर ले जाती है (नीतिवचन 13:13)। भजन संहिता 33:4 कहती है, "क्योंकि प्रभु का वचन सही और सच्चा है; वह अपने हर काम में सच्चा है।" इस वचन को मानते हुए, हमारे रोज़मर्रा के सभी काम और हरकतें परमेश्वर की नज़र में सच्ची और ईमानदार होनी चाहिए।

साथ ही, हमें समझदारी से काम लेकर इस दुनिया को रोशन करना चाहिए। विश्वासियों को अज्ञानता या भावनाओं के बजाय परमेश्वर के आत्मिक ज्ञान के आधार पर हर मामले में सही समझ रखनी चाहिए और काम करना चाहिए (नीतिवचन 13:16)। इस तरह, नीतिवचन 13:14 के अनुसार, हमें लगन से प्रभु की शिक्षा—जो "जीवन का स्रोत" है—उन पड़ोसियों को सिखानी और बतानी चाहिए जो निराशा में डूबे हैं: "बुद्धिमान की शिक्षा जीवन का स्रोत है, जो इंसान को मौत के फंदों से बचाती है" (नीतिवचन 13:14)। जब हम समझदारी भरा और मसीह पर केंद्रित जीवन जिएंगे, तभी हमारे आस-पास के बहुत से दुखी पड़ोसी मौत के अंधेरे साये से निकलकर हमेशा के जीवन की रोशनी में आ पाएँगे। तीसरी बात, हमें एक ऐसे जीवन के ज़रिए इस दुनिया में उम्मीद की रोशनी फैलानी चाहिए जिसमें हमारे दिल की इच्छाएँ पूरी होती हैं।

नीतिवचन 13:12 को देखिए। बाइबल संतों की उम्मीद के स्वभाव का बहुत सुंदर वर्णन करती है: "उम्मीद पूरी होने में देरी होने से दिल बीमार हो जाता है, लेकिन पूरी हुई इच्छा जीवन का पेड़ होती है।" जब भविष्य की जिन उम्मीदों के लिए हम प्रार्थना करते हैं, उन्हें पूरा होने में उम्मीद से ज़्यादा समय लगता है, तो कभी-कभी हम थक और निराश महसूस कर सकते हैं। फिर भी, हमें निराशा को दूर करना चाहिए और वफ़ादार, वाचा निभाने वाले परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखना चाहिए।

जब हम हिम्मत न हारते हुए प्रार्थना के ज़रिए बीज बोते हैं, और परमेश्वर के वादों का इंतज़ार करते हुए विश्वास बनाए रखते हैं, तो प्रभु निश्चित रूप से उस उम्मीद को पूरा करेंगे जो उन्होंने हमें अपने सही समय पर दी है। हमें ऐसे गवाह बनना चाहिए जो अपने जीवन में परमेश्वर के इस काम को देखें और महसूस करें।

इस दुनिया के उन लोगों के लिए जो अंधेरे में भटक रहे हैं और जिन्होंने सारी उम्मीद खो दी है, किसी संत का प्रार्थना का जवाब पाना और किसी सच्ची इच्छा का पूरा होना, अपने आप में सुसमाचार का एक शक्तिशाली संदेश बन जाता है। एक बंजर दुनिया के बीच हरे-भरे "जीवन के पेड़" की तरह, परमेश्वर हमारी सच्ची इच्छाओं को पूरा करके इस अंधेरी दुनिया में पवित्र उम्मीद की रोशनी को तेज़ी से चमकाएँगे। आज के वचन, 1 यूहन्ना 1:5 में, बाइबल हमें एक बहुत ही बुनियादी सच्चाई बताती है: "यह वह संदेश है जो हमने उससे सुना है और तुम्हें बताते हैं: परमेश्वर ज्योति है; उसमें ज़रा भी अंधेरा नहीं है।" यह शानदार घोषणा सुसमाचार का एक स्पष्ट संदेश है जिसे प्रेरित यूहन्ना ने सीधे पुत्र, यीशु मसीह से सुना था। यहाँ, यूहन्ना परमेश्वर पिता के पवित्र स्वभाव के बारे में दोहरी सच्चाई की घोषणा करते हैं—एक ऐसी सच्चाई जिसके दो पहलू एक-दूसरे से अलग नहीं किए जा सकते। इस गहरी सच्चाई के दो स्तंभ इस प्रकार हैं: पहला, उनके स्वरूप की घोषणा—कि "परमेश्वर ज्योति है"; और दूसरा, उनकी पूर्णता की पुष्टि—कि "परमेश्वर में, जो ज्योति है, ज़रा भी अंधेरा नहीं है।"

जब हम ज्योति के रूप में परमेश्वर के पवित्र स्वभाव पर विचार करते हैं, तो हमें यीशु के वे शब्द याद आते हैं जो उन्होंने यूहन्ना 9:5 में कहे थे: "जब तक मैं दुनिया में हूँ, मैं दुनिया की ज्योति हूँ।" प्रेरित यूहन्ना ने खुद प्रभु को अपनी धरती पर सेवा के दौरान खुद को "दुनिया की ज्योति" कहते हुए सुना था और इसे यूहन्ना के सुसमाचार में ईमानदारी से लिखा था। बाद में, बुढ़ापे में, उन्होंने 1 यूहन्ना 1:5 में एक कदम और आगे बढ़कर गंभीरता से कहा कि "परमेश्वर ज्योति है।"

आज हमारे लिए इस सच्चाई में क्या सीख है? बात यह है कि जब पिता परमेश्वर—जिनका मूल स्वरूप ही पूर्ण ज्योति है—ने पुत्र यीशु को इस पापी दुनिया में भेजा, तो यीशु उसी दिव्य स्वरूप के साथ "दुनिया की ज्योति" बनकर आए। यूहन्ना के सुसमाचार के पहले अध्याय में, यीशु मसीह का परिचय 'वचन' के रूप में देने के बाद—जो शुरू से मौजूद थे, परमेश्वर थे, और सभी चीज़ों के रचनाकार थे (यूहन्ना 1:1–3)—प्रेरित यूहन्ना ने तुरंत इस पवित्र सच्चाई की घोषणा की: "उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी" (यूहन्ना 1:4)।

यहाँ, हमें सुसमाचार का एक अद्‌भुत सार मिलता है जो यूहन्ना के सुसमाचार और यूहन्ना की पहली पत्री, दोनों में दिखाई देता है। प्रेरित यूहन्ना, जिन्होंने 1 यूहन्ना 1 में बहुत अच्छे ढंग से यीशु मसीह को "जीवन का वचन" बताया जो "शुरू से था" (1 यूहन्ना 1:1) और "अनंत जीवन" (पद 2) था, वे यूहन्ना के सुसमाचार में घोषणा करते हैं कि यही जीवन "मनुष्यों की ज्योति" है। आखिरकार, इसका मतलब यह है कि यीशु मसीह—अनंत जीवन का वचन—वह सच्ची ज्योति हैं जो हमारी आत्माओं को जीवन देती है।

यूहन्ना के सुसमाचार के पहले अध्याय में, प्रेरित यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के मिशन का ज़िक्र करते हुए इस बात की कई तरह से गवाही देते हैं। बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना खुद 'ज्योति' नहीं था; बल्कि, उसे सिर्फ़ यीशु मसीह की गवाही देने के लिए भेजा गया था—जो "सच्ची ज्योति है, जो दुनिया में आने वाले हर इंसान को रोशनी देती है" (यूहन्ना 1:9; तुलना करें यूहन्ना 1:8)। प्रेरित बताते हैं कि पूरी दुनिया के सामने प्रभु—सच्ची ज्योति—की गवाही देकर, बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना ने यह पक्का करने की कोशिश की कि सभी लोग यह गवाही सुनें और यीशु मसीह पर विश्वास करके उद्धार पाएँ (यूहन्ना 1:7)।

'ज्योति का यह महान सिद्धांत' (theology of light), जो यूहन्ना के सुसमाचार और यूहन्ना की पहली पत्री, दोनों में छाया हुआ है, उसे आज हमारे विश्वास के लिए साफ़ तौर पर इस तरह बताया जा सकता है:

परमेश्वर पिता ही आदि 'ज्योति' है।
परमेश्वर का पुत्र, यीशु, 'सच्ची ज्योति', 'दुनिया की ज्योति' और 'सभी लोगों की ज्योति' है, जो हमारे पास आया है।
बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना ने, एक गवाह के तौर पर, ईमानदारी से इस ज्योति की गवाही दी—जो हर किसी पर चमकने के लिए दुनिया में आई थी—और सभी लोगों को यीशु मसीह पर विश्वास करने के लिए प्रेरित किया।

1 यूहन्ना 1:5 के पहले हिस्से में—जो आज हमारे सामने है—प्रेरित यूहन्ना घोषणा करते हैं, "परमेश्वर ज्योति है।" इसके ठीक बाद, आयत के दूसरे हिस्से में, वह एक गंभीर सच्चाई जोड़ते हैं: "उसमें ज़रा भी अंधकार

नहीं है।" तो फिर, इस बात का असली मतलब क्या है कि परमेश्वर में, जो पूरी तरह ज्योति है, ज़रा भी अंधकार नहीं है? ज्योति और अंधकार के बीच साफ़ अंतर दिखाकर, प्रेरित यूहन्ना परमेश्वर के बेदाग और पवित्र स्वभाव पर ज़ोर देते हैं। आइए अब हम उस लेख को देखें और उन दो आध्यात्मिक अर्थों को समझें जो यूहन्ना ने "ज्योति" और "अंधकार" के तौर पर बताए हैं। (1) जीवन और मृत्यु

यूहन्ना 1:4 में, प्रेरित यूहन्ना ने इस जीवन को ऐसे परिभाषित किया: "यह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।" इसके अलावा, 1 यूहन्ना 1:1–2 में, उन्होंने बार-बार गवाही दी कि यीशु, जो पुत्र है, "जीवन का वचन" और "अनंत जीवन" है।

यूहन्ना के इस संदर्भ में देखने पर, इस बात का पहला मतलब साफ़ हो जाता है कि परमेश्वर—जो ज्योति है—में कोई अंधकार नहीं है। "ज्योति" का अर्थ है प्रभु द्वारा दिया गया भरपूर अनंत जीवन, जबकि "अंधकार" का अर्थ है उस भयानक अनंत मृत्यु से, जो उन लोगों का इंतज़ार कर रही है जिन्होंने परमेश्वर से मुँह मोड़ लिया है। परमेश्वर ज्योति हैं, और वे पूरी तरह जीवन से भरे हुए हैं; उनमें मृत्यु की छाया का एक प्रतिशत भी नहीं हो सकता।

(2) सत्य और झूठ

ज्योति और अंधकार बुनियादी आध्यात्मिक स्थितियों के मामले में भी एक-दूसरे के विपरीत हैं। आज का वचन, 1 यूहन्ना 1:6, यह चेतावनी देता है: "यदि हम कहते हैं कि हमारी उनके साथ संगति है, फिर भी अंधकार में चलते हैं, तो हम झूठ बोलते हैं और सत्य पर नहीं चलते।" इस वचन के आधार पर, "ज्योति" परमेश्वर के पूर्ण सत्य को दर्शाती है, जबकि "अंधकार" झूठ—यानी शैतान के धोखे—को दर्शाता है।

तो फिर, वह कौन है जो अंधकार में रहता है और "झूठ" बोलता है? 1 यूहन्ना 2:22 उनकी पहचान को स्पष्ट रूप से उजागर करता है: "झूठा कौन है? वह जो इस बात से इनकार करता है कि यीशु ही मसीह है। ऐसा व्यक्ति मसीह-विरोधी है—जो पिता और पुत्र दोनों का इनकार करता है।" अंततः, इस भयानक अंधकार का असली स्वरूप गलत और धर्म-विरोधी शिक्षाओं में पड़ना है—परमेश्वर (जो सत्य हैं) के साथ चलने का दावा

करना, जबकि असल में इस बात से इनकार करना कि यीशु ही मसीह हैं, और परमेश्वर पिता तथा यीशु पुत्र के बीच के मिलन का विरोध करना।

(3) प्रेम और घृणा

इसके अलावा, यूहन्ना की पत्रियों में बताई गई ज्योति और अंधकार विश्वास करने वाले के आपसी रिश्तों के स्वभाव में भी अंतर दिखाते हैं। 1 यूहन्ना 2:9 में, प्रेरित यूहन्ना दृढ़ता से कहते हैं, "जो कोई ज्योति में होने का दावा करता है, लेकिन अपने भाई या बहन से घृणा करता है, वह अभी भी अंधकार में है।" इस संदर्भ में, 'ज्योति' का अर्थ है प्रेम—जो परमेश्वर का मूल स्वभाव है—जबकि 'अंधकार' का अर्थ है घृणा—एक ऐसा स्वभाव जो परमेश्वर से दूर हो गया है।

1 यूहन्ना 2:9 और 11 में दी गई गंभीर चेतावनियों पर विचार करें: "जो कोई ज्योति में होने का दावा करता है, लेकिन अपने भाई या बहन से घृणा करता है, वह अभी भी अंधकार में है... लेकिन जो कोई अपने भाई या बहन से घृणा करता है, वह अंधकार में है और अंधकार में ही चलता है। वे नहीं जानते कि वे कहाँ जा रहे हैं, क्योंकि अंधकार ने उन्हें अंधा कर दिया है।" जो लोग परमेश्वर के साथ संगति होने का घमंड तो करते हैं, लेकिन अपने भाइयों से घृणा करते हैं, वे केवल खुद को धोखा दे रहे हैं कि वे ज्योति में हैं; असल में, उन पर अंधकार का शासन है। नफ़रत का अंधेरा एक ऐसी घातक आध्यात्मिक अंधेपन की स्थिति को दिखाता है जो विश्वास करने वाले की आध्यात्मिक दृष्टि को पूरी तरह से धुंधला कर देता है, और उन्हें बर्बादी की ओर ले जाता है, बिना उन्हें यह एहसास हुए कि वे कहाँ जा रहे हैं।

(4) धार्मिकता और बुराई/अधार्मिकता

यहाँ, हमें "अपने भाई से नफ़रत करने वाले"—यानी अंधेरे में चलने वाले—का एक मुख्य ऐतिहासिक उदाहरण मिलता है। प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 3:12 में कैन की पहचान मानवता के पहले हत्यारे के रूप में की है: "कैन की तरह मत बनो, जो उस बुरे (शैतान) का था और जिसने अपने भाई की हत्या कर दी। और उसने उसकी हत्या क्यों की? क्योंकि उसके अपने काम बुरे थे और उसके भाई के काम धार्मिक थे।"

इस अंश के आधार पर, अगर हम एक बार फिर रोशनी और अंधेरे के असली स्वरूप को परिभाषित करें, तो "रोशनी" उस धार्मिकता को दर्शाती है जो परमेश्वर के मानकों के अनुरूप है, जबकि "अंधेरा" उस बुराई को दर्शाता है जो शैतान की है। 1 यूहन्ना 1:9 में इस्तेमाल किए गए शब्दों में, इसे "अधार्मिकता" कहा जा सकता है, जो पूरी पवित्रता के विपरीत है।

कैन अपने छोटे भाई हाबिल के प्रति ईर्ष्या और नफ़रत के अंधेरे में डूबा हुआ था; आखिरकार वह उस बुरे (शैतान) का हो गया और बर्बादी के रास्ते पर चल पड़ा। जैसे अंधेरा अधार्मिकता और बुराई का फल देता है, वैसे ही रोशनी निश्चित रूप से धार्मिकता का फल देती है।

इससे पहले, 1 यूहन्ना 1:5 में, प्रेरित यूहन्ना ने परमेश्वर के बारे में दोहरी सच्चाई बताई थी। इसके अलावा, यूहन्ना 12:36 में, उन्होंने उन लोगों को—जो यीशु मसीह (सच्ची रोशनी और दुनिया की रोशनी) पर विश्वास करते हैं—"रोशनी की संतान" कहा है। दूसरे शब्दों में, हम सभी जिन्होंने सुसमाचार पर विश्वास किया है और उद्धार पाया है, रोशनी की संतान हैं। तो फिर, रोशनी की संतान को इस अंधेरी दुनिया में कैसे जीना चाहिए? 1 यूहन्ना 1:6–10 पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं जीवन जीने के तीन खास तरीकों पर विचार करना चाहता हूँ और उनसे आध्यात्मिक सबक सीखना चाहता हूँ।

पहला, रोशनी की संतान की परमेश्वर के साथ सच्ची "सहभागिता" होती है, जो स्वयं रोशनी है।

कृपया आज का अंश, 1 यूहन्ना 1:6–7 देखें। प्रेरित उस संगति की सच्चाई के बारे में बताते हैं जिसका आनंद ज्योति की संतानों को लेना चाहिए: "यदि हम कहें कि हमारी उसके साथ संगति है और फिर भी अंधकार में चलें, तो हम झूठ बोलते हैं और सच्चाई के अनुसार नहीं जीते। लेकिन यदि हम ज्योति में चलें, जैसे वह ज्योति में है, तो हमारी एक-दूसरे के साथ संगति होती है, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सभी पापों से शुद्ध करता है।"

प्रिय संतों, क्या आप सचमुच परमेश्वर के साथ गहरी संगति का आनंद लेते हैं? प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताई गई इस 'संगति' का सार क्या है? इसका अर्थ केवल सामान्य सामाजिक मेल-जोल या इंसानी दोस्ती नहीं है, बल्कि पवित्र शास्त्र में बताई गई पवित्र 'सहभागिता' है।

हमें इसका सही जवाब प्रेरितों के काम 2:42 में मिलता है: "वे प्रेरितों की शिक्षा और संगति में लगे रहे..." यहाँ 'संगति' के लिए अनुवादित मूल ग्रीक शब्द *कोइनोनिया* (Koinonia) है। यह गहरा शब्द बाइबिल की संगति के दो मुख्य अर्थों को समेटे हुए है:

पहला, साझा करना: इसका अर्थ है त्रिएक परमेश्वर के साथ आत्मिक अनुग्रह में 'मिलकर साझा करना'।
दूसरा, बांटना: इसका अर्थ है प्रभु से मिले प्रेम और अनुग्रह को कलीसिया के अन्य सदस्यों को 'खुले दिल से देना'।

यहाँ बाइबिल की एक दिलचस्प बात है। प्रेरितों के काम 2:42 के मूल ग्रीक पाठ में, 'संगति' शब्द से पहले निश्चित आर्टिकल (definite article) आता है। दूसरे शब्दों में, यह सामान्य अर्थ में संगति की बात नहीं करता, बल्कि खास तौर पर '*उस* संगति' की बात करता है।

ऐतिहासिक-धार्मिक व्याख्या के अनुसार, यहाँ '*उस* संगति' का अर्थ विशेष रूप से 'पवित्र आत्मा की संगति' है। आज के वचन की भाषा में कहें तो, परमेश्वर के साथ संगति असल में पवित्र आत्मा के साथ एक गहरी सहभागिता है जो हमारे भीतर वास करता है।

पेंतेकोस्त के दिन पवित्र आत्मा के शक्तिशाली उंडेले जाने के बीच, लगभग 3,000 नए विश्वासियों ने पश्चाताप किया और प्रभु की ओर लौटे; कलीसिया के भीतर उन्होंने जिस सच्चाई को पूरी तरह से साझा किया, वह और कुछ नहीं बल्कि उनके दिलों में मौजूद पवित्र आत्मा ही था। नतीजतन, शुरुआती यरूशलेम की कलीसिया पवित्र आत्मा के साथ गहरी सहभागिता—यानी आत्मा की संगति—में पूरे दिल से समर्पित हो सकी। आज के समय में रहने वाले हम लोगों को भी अपना जीवन पवित्र आत्मा के साथ इस पवित्र संगति के लिए समर्पित करना चाहिए। तो, प्रेरित यूहन्ना द्वारा आयत 6 और 7 में बताए गए "परमेश्वर के साथ संगति"

का असल में क्या मतलब है और यह कैसे दिखाई देती है? यूहन्ना विश्वासियों की आध्यात्मिक स्थितियों में अंतर दिखाने के लिए "यदि" शब्द का इस्तेमाल करते हुए दो काल्पनिक स्थितियाँ बताते हैं।

(1) पहली स्थिति: एक झूठी संगति जिसमें कथनी और करनी में मेल नहीं होता: "यदि हम कहें कि हमारी परमेश्वर के साथ संगति है, फिर भी अंधकार में चलें..." (आयत 6a)

परमेश्वर की संतान होने के नाते—जो स्वयं ज्योति है—और सुसमाचार को मानने वाले विश्वासियों के रूप में, हमें ज्योति में चलना चाहिए और परमेश्वर के साथ गहरी संगति रखनी चाहिए। फिर भी, कई बार हम अंधकार में चलते हैं। हम एक विरोधाभासी स्वभाव दिखाते हैं: आदतवश झूठ बोलना, अपने भाइयों के प्रति मन में नफरत रखना, और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अधर्म के काम करना या पाप से समझौता करना।

अगर हमारी ज़िंदगी अंधकार के ऐसे कामों से भरी है, तो प्रेरित यूहन्ना एक कड़ी चेतावनी देते हैं: हम "झूठ बोलने और सच्चाई पर न चलने" की स्थिति में आ गए हैं, और अपने विश्वास के बारे में सिर्फ़ ज़बानी बातें कर रहे हैं (आयत 6b)। ऐसा इसलिए है क्योंकि सच्ची संगति सिर्फ़ मुँह से कहने से साबित नहीं होती, बल्कि इंसान के जीने के तरीके से साबित होती है।

(2) दूसरी स्थिति: सच्ची संगति जो सच्चाई के अनुसार जीती है: "यदि हम ज्योति में चलें, जैसा कि वह ज्योति में है..." (आयत 7a)
तो फिर, "ज्योति में चलने" का असली मतलब क्या है? पिछली आयत (आयत 6) के संदर्भ में देखें तो, ज्योति में चलने का मतलब सिर्फ़ नैतिक कोशिश करना नहीं है; इसका मतलब है "सच्चाई पर चलना"—यानी झूठ को छोड़कर रोज़मर्रा की ज़िंदगी में सच्चाई के अनुसार जीना।

प्रेरित यूहन्ना गवाही देते हैं कि समुदाय के भीतर एक-दूसरे के साथ सच्ची "सहभागिता" तभी होती है जब हम परमेश्वर में बने रहते हैं—जो ज्योति हैं—और उसी ज्योति में चलते हैं जैसे यीशु मसीह चलते हैं। इसके अलावा, वे बताते हैं कि जब हम उस पूर्ण ज्योति के सामने खड़े होते हैं, तो हमारी कमियां और कमजोरियां

"उनके पुत्र यीशु के लहू" की प्रायश्चित करने वाली शक्ति से ढक जाती हैं, "जो हमें सभी पापों से शुद्ध करता है" (पद 7b)। जब हम ज्योति में चलते हैं, तभी सुसमाचार का अनुग्रह हमारे जीवन में वास्तविकता बनता है।

प्रिय संतों, मसीह में विश्वासियों के साथ पूरी क्षैतिज (horizontal) सहभागिता साझा करने से पहले एक आध्यात्मिक प्राथमिकता है जिसे पूरा करना आवश्यक है। जैसा कि प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 1:3 में कहा है, पिता परमेश्वर और उनके पुत्र यीशु मसीह के साथ एक ऊर्ध्वाधर (vertical) सहभागिता सबसे पहले हमारे भीतर मजबूती से स्थापित होनी चाहिए। जब हम इस ऊर्ध्वाधर सहभागिता की नींव पर खड़े होते हैं, तभी हम एक-दूसरे के साथ सच्ची क्षैतिज सहभागिता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि विश्वास की सच्ची सहभागिता हमेशा त्रिएक परमेश्वर के साथ सहभागिता से उत्पन्न होती है। प्रभु के साथ हमारी गहरी सहभागिता के भीतर, हमें स्वाभाविक रूप से संतों के बीच सुंदर सहभागिता की ओर बढ़ना चाहिए, जिसमें पवित्र आत्मा हमारा मार्गदर्शन करता है।

इस दोहरी सहभागिता—जो ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज दोनों को समाहित करती है—के केंद्र में "वह सहभागिता" (The Fellowship) है। जैसा कि पहले बताया गया है, प्रेरितों के काम 2:42 का मूल ग्रीक पाठ "सहभागिता" शब्द के सामने एक निश्चित आर्टिकल (definite article) रखता है; यह विशिष्ट "सहभागिता" पवित्र आत्मा के नेतृत्व वाली पवित्र *कोइनोनिया* (koinonia) को दर्शाती है।

इसलिए, इस दोहरी सहभागिता की मुख्य कुंजी पवित्र आत्मा का कार्य है। पवित्र आत्मा हमें सुसमाचार की सच्चाई में भागीदार बनने में सक्षम बनाता है, जिससे हम पिता परमेश्वर और पुत्र परमेश्वर के साथ गहरे और घनिष्ठ संबंध का आनंद ले सकते हैं। इसके अलावा, वह हमें उस सच्चाई के आनंद में बने रहने से आगे बढ़कर बांटने वाले जीवन की ओर ले जाता है—उस प्रेम और सच्चाई को उदारतापूर्वक विश्वास में उन भाई-बहनों के साथ साझा करना जिनसे हम प्रभु में मिले हैं। बाइबिल द्वारा परिभाषित सच्ची *कोइनोनिया* (सहभागिता) की शक्ति ठीक इसी साझा करने और बांटने में निहित है।

अंततः, इस पूर्ण सहभागिता—ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज दोनों—को बनाए रखने का रहस्य केवल अमूर्त अवधारणाओं में नहीं है। इसे व्यावहारिक कामों में दिखना चाहिए: हर पल अपनी बातचीत में झूठ को पूरी तरह से नकारना और चुपचाप अपने जीवन के हर पहलू में प्रभु के सत्य के अनुसार जीना (1 यूहन्ना 1:6)।

1 यूहन्ना 1:7 के दूसरे भाग में, प्रेरित यूहन्ना सुसमाचार का एक शानदार संदेश देते हैं। वे वादा करते हैं कि यदि हम यीशु की तरह ज्योति में चलते हैं, तो न केवल हमारी एक-दूसरे के साथ संगति होती है, बल्कि "उनके पुत्र यीशु का लहू हमें सभी पापों से शुद्ध करता है।"

यहाँ, हमारे सामने एक महत्वपूर्ण सवाल आता है: "क्या हमें क्रूस पर बहाए गए यीशु के बहुमूल्य लहू के द्वारा अपने सभी पापों की क्षमा पहले ही नहीं मिल चुकी है?" 1 यूहन्ना 2:12 स्पष्ट रूप से कहता है: "हे बच्चों, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ क्योंकि उनके नाम के कारण तुम्हारे पाप क्षमा कर दिए गए हैं।" इस वचन के अनुसार, हममें से जो लोग यीशु मसीह पर उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करते हैं, उन्हें अपने पापों की हमेशा के लिए क्षमा मिल चुकी है। हमारी स्थिति पूरी तरह से अंधकार से बदलकर ज्योति की संतान होने की हो गई है।

तो फिर, प्रेरित यूहन्ना इस अंश में भविष्य की ओर इशारा करते हुए और लगातार चलने वाली प्रक्रिया के लहजे में क्यों बात करते हैं, यह कहते हुए कि यीशु का लहू विश्वासियों को उनके सभी पापों से *शुद्ध करेगा*? इसका अर्थ यह है कि, हमारे दैनिक जीवन में, हमें पापों की क्षमा का अनुग्रह पाने की सच्ची और निरंतर आवश्यकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि, भले ही हमारी स्थिति "ज्योति की संतान" जैसी हो गई है, फिर भी हम इस पृथ्वी पर पाप करते हुए जीते हैं। ऐसे कई क्षण आते हैं जब हम ज्योति की संतान के रूप में जीने में विफल रहते हैं और इसके बजाय अंधकार में चलते हैं।

1 यूहन्ना 2:9 में प्रेरित यूहन्ना द्वारा कही गई तीखी बात पर विचार करें: "जो कोई यह दावा करता है कि वह ज्योति में है लेकिन अपने भाई या बहन से घृणा करता है, वह अभी भी अंधकार में है।" जैसा कि यह कठोर वचन कहता है, यीशु पर विश्वास करने के बावजूद, हम अक्सर अपने साथी विश्वासियों से ईर्ष्या और घृणा करके अंधकार का पाप करते हैं। हमारे जीवन में इसी अशुद्धता और कमजोरी के कारण हमें क्षमा पाने के

लिए प्रतिदिन यीशु मसीह के नाम के सामने आना चाहिए—ठीक वैसे ही जैसे किसी व्यक्ति ने स्नान तो कर लिया हो, लेकिन उसे अभी भी अपने पैर धोने की आवश्यकता हो। जब हम यीशु के पीछे चलने और ज्योति में बने रहने की कोशिश करते हैं, तो परमेश्वर के पुत्र यीशु का लहू लगातार हमें न केवल हमारे पिछले पापों से, बल्कि हमारे वर्तमान जीवन में किए गए हर पाप और अपराध से भी धोकर शुद्ध करता है (1 यूहन्ना 1:7)।

जब हम पिता परमेश्वर और पुत्र यीशु के साथ गहरे, ऊर्ध्वाधर (vertical) संबंध में बने रहते हैं, तो पवित्र आत्मा हमें अपने साथी विश्वासियों के साथ क्षैतिज (horizontal) संबंध को बहाल करने में सक्षम बनाता है। इसके अलावा, वह हमें अंधेरे के उन कामों के बारे में बताता है जो पवित्र त्रिएक परमेश्वर के साथ इस संगति के अनुकूल नहीं हैं। यदि हम उस ज्योति में ईमानदारी से अपने पापों को स्वीकार करते हैं और पश्चाताप करते हैं, तो प्रभु का बहुमूल्य लहू एक बार फिर हमारी आत्माओं को सभी पापों और अधर्म से पूरी तरह साफ और शुद्ध कर देगा।

दूसरा, ज्योति की संतानें आत्म-धोखे के आध्यात्मिक भ्रम को दृढ़ता से अस्वीकार करती हैं।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 1:8 को देखें। प्रेरित यूहन्ना हमारे भीतर छिपे आध्यात्मिक पाखंड के बारे में चेतावनी देता है: "यदि हम दावा करते हैं कि हम पाप-रहित हैं, तो हम खुद को धोखा देते हैं और सच्चाई हममें नहीं है।" मसीह के लहू से शुद्ध हुई ज्योति की संतानों को सच्चाई का पालन करने वाला होना चाहिए। हमें दृढ़ता से झूठ को त्यागना चाहिए और परम सत्य की खोज में जीना चाहिए। फिर भी, आज हमारे जीवन की वास्तविकता क्या है? हम बहुत आसानी से एक-दूसरे को धोखा देते हैं। हालाँकि हमें साथी विश्वासियों के साथ प्रभु के प्रेम से व्यवहार करते समय स्पष्ट सच्चाई दिखानी चाहिए, लेकिन इसके बजाय हम अपने पापी आंतरिक स्वरूप और शर्मनाक वास्तविकताओं को छिपाने पर तुले रहते हैं। जबकि हमारे दिल काले लालच से भरे होते हैं, हम पाखंडपूर्ण ढंग से दुनिया के सबसे पवित्र लोगों का दिखावा करते हैं।

यह स्थिति उस "दोहरे मन" को दर्शाती है जिसे परमेश्वर सबसे अधिक नापसंद करता है (भजन संहिता 119:113)। यह चापलूसी भरी बातें करने और साथ ही ऐसे दिल को रखने का जीवन है जो बाहरी दिखावे से बिल्कुल अलग होता है (भजन संहिता 12:2)। जैसा कि *समकालीन कोरियाई संस्करण* चेतावनी देता है,

ऐसे आध्यात्मिक रूप से दोहरे मन वाले लोग विश्वास में जड़ नहीं जमा पाते; वे अपने सभी कामों में अस्थिर हो जाते हैं और इधर-उधर डगमगाते रहते हैं (याकूब 1:8)।

एक और भी गंभीर बात यह है कि हम झूठ बोलने को बहुत हल्के में लेते हैं, और अंततः उस स्थिति में पहुँच जाते हैं जहाँ हम खुद को भी धोखा देने लगते हैं। परमेश्वर के वचन को सुनना और उसे अपने जीवन में अमल में न लाना आध्यात्मिक आत्म-धोखे का एक भयानक रूप है। याकूब 1:22 इस बात पर ज़ोर देता है: "सिर्फ़ वचन को सुनो मत, और खुद को धोखा मत दो। जो उसमें कहा गया है, उसे करो।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* में कहा गया है, हमें इस गलतफ़हमी से जागना होगा कि सिर्फ़ वचन सुनने से हमारा विश्वास मज़बूत हो जाता है। हमें ऐसे लोग बनना चाहिए जो सुनी हुई बातों को चुपचाप अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अपनाएँ। बाइबल गंभीरता से चेतावनी देती है कि अगर धार्मिक जोश के साथ परमेश्वर के सत्य का पालन न किया जाए, तो यह असल में खुद को धोखा देने जैसा है। इसलिए, ज्योति की संतान होने के नाते, हमें दिखावे को छोड़कर पूरी तरह ईमानदार होना चाहिए—परमेश्वर के सामने, दूसरों के सामने और खुद के सामने।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 1:8 में, प्रेरित यूहन्ना एक और गंभीर बात कहते हैं: "अगर हम कहें कि हममें कोई पाप नहीं है, तो हम खुद को धोखा देते हैं और सत्य हममें नहीं है।" प्यारे संतों, इस दुनिया में कौन यह कहने की हिम्मत करेगा, "मैं पाप-रहित हूँ"? कौन पूरे भरोसे के साथ कह सकता है कि उसने कभी एक भी पाप नहीं किया? (1 यूहन्ना 1:10) सिर्फ़ परमेश्वर—जो पूरी तरह ज्योति हैं और जिनमें ज़रा भी अंधकार नहीं है—ही पाप-रहित हैं और पाप के दाग से पूरी तरह मुक्त हैं (1 यूहन्ना 1:5)। 1 यूहन्ना 3:5 साफ़ तौर पर इस बात की गवाही देता है: "लेकिन तुम जानते हो कि वह इसलिए आए ताकि हमारे पापों को दूर कर सकें। और उनमें कोई पाप नहीं है।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* में अनुवाद किया गया है, यीशु हमारे पापों को मिटाने के लिए इस दुनिया में आए, और उनमें कोई पाप नहीं है। प्रेरित यूहन्ना घोषणा करते हैं कि सिर्फ़ यीशु, जो परमेश्वर के पुत्र हैं, ही निष्कलंक हैं।

लेकिन हम अलग हैं। हम ऐसे पापी इंसान हैं जो किसी भी तरह से यह दावा नहीं कर सकते कि हम पाप-रहित हैं। रोमियों 3:23 इंसानों की हालत को साफ़ तौर पर बताता है: "क्योंकि सबने पाप किया है और

परमेश्वर की महिमा से दूर हो गए हैं।" इसी तरह, रोमियों 5:12 'मूल पाप' (original sin) के सिद्धांत को बताता है: "इसलिए, जैसे एक आदमी के ज़रिए दुनिया में पाप आया, और पाप के ज़रिए मौत आई, और इस तरह मौत सभी लोगों तक पहुँची, क्योंकि सबने पाप किया।"

इस पाप की जड़ें बहुत गहरी हैं। भजन संहिता 51:5 में, दाऊद ने पछतावे भरे दिल से माना: "सचमुच मैं जन्म से ही पापी था, जब मेरी माँ ने मुझे गर्भ में धारण किया, तभी से मैं पापी था।" हम जन्म के समय से ही पापी थे; असल में, माँ के गर्भ में हमारे बनने के पल से ही हम पापी स्वभाव के साथ पैदा हुए थे। बाइबल साफ़ तौर पर कहती है कि "सभी लोग"—बिना किसी अपवाद के—पाप के बंधन में हैं। इसलिए, धरती पर कोई भी इंसान परमेश्वर की अदालत में खड़े होकर यह दावा नहीं कर सकता कि "मैं पाक-साफ़ हूँ।" जैसा कि प्रेरित ने बताया है, ऐसा दावा करना आध्यात्मिक रूप से खुद को धोखा देने का एक बुरा तरीका है (1 यूहन्ना 1:8)।

तो फिर, हम जो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, कैसे आसानी से यह दावा कर सकते हैं कि हम पाप-रहित हैं? बाइबल साफ़ सिखाती है कि "परमेश्वर ज्योति है" (1 यूहन्ना 1:5)। अगर हम, जो उस संपूर्ण ज्योति की उपस्थिति में रहते हैं, गुप्त अंधकार में चलते रहते हैं—यानी पापी जीवन जीते रहते हैं—तो वह गंदा अंधकार उस पवित्र ज्योति के सामने कैसे छिपा रह सकता है?

जब हम ज्योति में चलने में नाकाम रहते हैं और बार-बार अंधकार की ओर कदम बढ़ाते हैं, तो परमेश्वर—जो स्वयं ज्योति है—पवित्र आत्मा की रोशनी का इस्तेमाल करके हमारे हर छिपे हुए पाप को उजागर कर देते हैं। अगर उस चेतावनी देने वाली ज्योति के बावजूद, हम ढोंग का सहारा लेकर ज़िद करते हैं और कहते हैं कि "मैं पाप-रहित हूँ," तो हम झूठे बन जाते हैं और खुद को धोखा देते हैं; और पवित्र आत्मा—जो सच्चाई की आत्मा है—हमारे भीतर रहने के लिए जगह नहीं पा पाएगी।

आज का वचन, 1 यूहन्ना 1:10, एक गंभीर आध्यात्मिक सच्चाई बताता है: "अगर हम कहें कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम परमेश्वर को झूठा ठहराते हैं और उनका वचन हमारे अंदर नहीं है।" *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल* इस वचन का अनुवाद और भी सीधे तरीके से करती है: "अगर हम कहें कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम परमेश्वर को झूठा ठहराते हैं, और उनका वचन हमारे अंदर नहीं है।"

अगर हम यह कहने की हिम्मत करते हैं कि "मैंने कभी पाप नहीं किया है," तो हम सिर्फ़ खुद को ही धोखा नहीं दे रहे होते; हम अनादर का एक भयानक काम करते हैं, और तुरंत सच्चे परमेश्वर को—जिनमें ज़रा भी अंधकार नहीं है—"झूठा" ठहरा देते हैं। यूहन्ना 8:44 में, प्रेरित यूहन्ना ने कहा कि शैतान ही वह है जो "झूठा और झूठ का पिता" है। परमेश्वर निश्चित रूप से झूठे नहीं हैं। बल्कि, जब हम इंसान अपने पाप से इनकार करते हैं, तो हम आध्यात्मिक विद्रोह का काम करते हैं, परमेश्वर की सच्चाई की गंभीर घोषणा को नकारते हैं और उन्हें झूठा मानते हैं।

इसके अलावा, 1 यूहन्ना 1:10 चेतावनी देता है कि "उनका वचन हमारे अंदर नहीं है।" इससे पहले, वचन 8 के आखिरी हिस्से में, प्रेरित ने कहा था, "सच्चाई हमारे अंदर नहीं है"; यहाँ वचन 10 में, वह उसी बात को और विस्तार से बताते हुए कहते हैं, "उनका वचन हमारे अंदर नहीं है।" दूसरे शब्दों में, जिस पल कोई व्यक्ति अपने पाप से इनकार करता है और दावा करता है कि उसने कोई उल्लंघन नहीं किया है, तो प्रभु—जो परमेश्वर का वचन और स्वयं सच्चाई हैं—हमारे दिलों में अपनी जगह खो देते हैं। हम शैतान की संतानों जैसा रवैया अपना लेते हैं, जिनमें ज़रा भी सच्चाई नहीं होती।

प्रिय संतों, जो परमेश्वर के साथ रहते हैं—जो ज्योति हैं—उन्हें सही मायने में "ज्योति की संतान" कहा जाता है। ज्योति की संतानें खुद को धोखा देने वाले आध्यात्मिक भ्रम का शिकार नहीं होतीं। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर का वचन—जो सच्चाई है—हमारे अंदर रहता है और काम करता है (1 यूहन्ना 1:8)। जो विश्वासी सचमुच ज्योति की संतान बन गए हैं, वे केवल परमेश्वर का वचन सुनते नहीं हैं और उसे भूल नहीं जाते; बल्कि, वे उसे पूरे जोश के साथ अपने रोज़मर्रा के जीवन में अमल में लाते हैं (याकूब 1:22)। इसके अलावा, वे

दिखावे का मुखौटा उतार फेंकते हैं, झूठ से दूर रहते हैं, और प्रभु में सच्चाई के मार्ग पर चलकर ज्योति का पवित्र फल उत्पन्न करते हैं (1 यूहन्ना 1:6)।

प्रिय संतों, जो प्रभु—जो स्वयं पूर्ण ज्योति हैं—के साथ रहते हैं, हम वास्तव में "ज्योति की संतान" हैं। इसलिए, ज्योति की संतान होने के नाते, हमें हर तरह का दिखावा और पाखंड त्याग देना चाहिए और परमेश्वर, दूसरों और स्वयं के प्रति पूरी तरह ईमानदार रहना चाहिए। जब हम प्रभु के साथ, जो ज्योति हैं, घनिष्ठ संगति रखते हैं, तो पवित्र आत्मा का सटीक प्रकाश अंधकार के गुप्त कार्यों और शर्मनाक पापों को उजागर करता है जो पहले छिपे हुए थे। ऐसे क्षणों में, हमें कठोर हृदय के साथ "मुझमें कोई पाप नहीं है" या "मैंने कभी कोई पाप नहीं किया है" जैसे बहाने बनाकर खुद को धोखा नहीं देना चाहिए। इसके बजाय, हमें अपनी गलतियों को वैसे ही प्रकाश में लाना चाहिए जैसी वे हैं और ईमानदारी से उन्हें स्वीकार करना चाहिए। जब हम बिना छिपाए अपने पापों को पूरी तरह स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर—जो विश्वासयोग्य और धर्मी हैं—बहुमूल्य लहू की सामर्थ्य से हमारे सभी पापों को क्षमा कर देंगे और हमारी आत्माओं को हर प्रकार के अधर्म से पूरी तरह शुद्ध कर देंगे (1 यूहन्ना 1:9)।

तीसरी बात, ज्योति की संतानें परमेश्वर के सामने ईमानदारी से अपनी गलतियों और पापों को स्वीकार करती हैं।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 1:9 को देखिए। प्रेरित यूहन्ना हमें पापों की क्षमा के विषय में एक अद्‌भुत प्रतिज्ञा सुनाते हैं: "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें हर प्रकार के अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।" जैसा कि *कंटेम्पररी बाइबल* (ह्युंडई-इनुई सोंगग्योंग) में अनुवादित है, "यदि हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर, जो विश्वासयोग्य और धर्मी हैं, हमारे पापों को क्षमा करेंगे और हमें हर प्रकार के अधर्म से शुद्ध करेंगे।"

मैंने अपने पूरे जीवन में इस शानदार प्रतिज्ञा को कभी नहीं भुलाया। मैंने पहली बार कॉलेज के दिनों में इस वचन को याद किया था। उस समय, मैंने एक पास्टर के नेतृत्व में शिष्यत्व बाइबल अध्ययन में भाग लिया था, जो हमारे कैंपस में आए थे। मुझे और अन्य साथी विश्वासियों को सिखाते समय, धर्मशास्त्र का जो बुनियादी

ढांचा उन्होंने सबसे पहले हमारे मन में बिठाया, वह था "पांच आश्वासन" (Five Assurances)। ये पाँच भरोसे, जो विश्वास का आधार हैं, इस प्रकार हैं:

मुक्ति का भरोसा (1 यूहन्ना 5:11–12): "और गवाही यह है: परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके पास जीवन नहीं है।"

प्रार्थना का उत्तर मिलने का भरोसा (यूहन्ना 16:24): "अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा है। माँगो और तुम्हें मिलेगा, और तुम्हारी खुशी पूरी हो जाएगी।"

मार्गदर्शन का भरोसा (नीतिवचन 3:5–6): "अपने पूरे मन से प्रभु पर भरोसा रखो और अपनी समझ पर निर्भर न रहो; अपने सभी कामों में उसे मानो, और वह तुम्हारे रास्तों को सीधा कर देगा।"

जीत का भरोसा (1 कुरिन्थियों 10:13): "तुम पर कोई ऐसी परीक्षा नहीं आई है जो इंसानों के लिए आम न हो। और परमेश्वर सच्चा है; वह तुम्हें तुम्हारी सहनशक्ति से ज़्यादा परीक्षा में नहीं पड़ने देगा। लेकिन जब तुम परीक्षा में पड़ोगे, तो वह उससे निकलने का रास्ता भी देगा ताकि तुम उसे सह सको।" माफ़ी का भरोसा (1 यूहन्ना 1:9): "अगर हम अपने पापों को मान लेते हैं, तो वह सच्चा और न्यायपूर्ण है और हमारे पापों को माफ़ कर देगा और हमें हर तरह की बुराई से शुद्ध करेगा।"

जब से मैंने कॉलेज कैंपस में इन पाँच भरोसे वाले वचनों को सीखा और दिल में उतारा—और एक पादरी के तौर पर अपनी विश्वास की यात्रा के दौरान—तब से मुझे गहराई से एहसास हुआ है कि असल ज़िंदगी के लिए इनमें से हर एक वचन कितना वास्तविक और ज़रूरी है। जब ये भरोसे अटूट रहते हैं, तभी एक विश्वासी दुनिया के अंधेरे पर जीत हासिल कर सकता है और रोशनी की संतान के तौर पर हिम्मत से जीत सकता है।

इन पाँच भरोसे की बातों में से, जिस पर मैंने हाल के समय में सबसे ज़्यादा मनन किया है और गहराई से सोचा-समझा है, वह है "मार्गदर्शन का भरोसा," जो नीतिवचन 3:5–6 में मिलता है। बहुत ज़्यादा आध्यात्मिक संघर्ष और सोच-विचार के बाद, मुझे एक गहरा आध्यात्मिक सच पता चला: परमेश्वर पर पूरे मन से भरोसा करने में सबसे बड़ी रुकावट मेरी अपनी समझ और बुद्धि पर निर्भर रहने की पुरानी और सूक्ष्म आदत थी। मुझे यह दुखद एहसास हुआ कि मैं जितना ज़्यादा अपनी समझ पर भरोसा करने की आदत के अनुसार जीता था, उतना ही मैं घमंड के खतरे में पड़ता जाता था—खुद को बुद्धिमान समझने लगता था (नीतिवचन 3:7)। उदाहरण के लिए, अगर मेरे अपने विचारों और योजनाओं के अनुसार कोई प्रोजेक्ट सफल हो जाता, तो मैं निश्चित रूप से परमेश्वर के बजाय अपनी समझ पर ज़्यादा भरोसा करने लगता, और आखिरकार इस भ्रम का शिकार हो जाता कि मैं बुद्धिमान हूँ। ऐसी स्थिति में, मैं कभी भी परमेश्वर पर पूरी तरह भरोसा करने की स्थिति में नहीं आ पाता था। जब मैं परमेश्वर के वचन के सामने अपने अहंकार को तोड़ने के लिए संघर्ष कर रहा था, तो मैंने अपनी मनन-चिंतन की डायरी में एक पक्के संकल्प के साथ यह बात लिखी: "आज भी, मैं अपनी समझ पर भरोसा नहीं करता। मैं उन चीज़ों को भी कृतज्ञता के साथ स्वीकार करता हूँ जो मेरे विचारों, योजनाओं, तरीकों या समय के अनुसार नहीं होतीं। क्योंकि इन बाधाओं के ज़रिए, मैं पूरी तरह बेबस होने की स्थिति में पहुँच जाता हूँ, जहाँ मेरे पास प्रभु पर पूरी तरह भरोसा करने के अलावा कोई चारा नहीं बचता। हे प्रभु, केवल आप पर भरोसा करते हुए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप अपनी भलाई की इच्छा को पूरी तरह से पूरा करें—अपने विचारों और योजनाओं के अनुसार, और अपने सही समय पर।"

हालाँकि मैं हाल ही में मार्गदर्शन के इस भरोसे को सीखने के लिए प्रशिक्षण ले रहा हूँ, लेकिन कॉलेज के दिनों में जब पहली बार मेरा सामना इन पाँच भरोसे की बातों से हुआ, तो सबसे बड़ी रुकावट जो मेरे सामने आई, वह थी 'मुक्ति का भरोसा' (1 यूहन्ना 5:11–12)। हालाँकि बाइबल स्पष्ट रूप से वादा करती है कि "जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है" (1 यूहन्ना 5:12), फिर भी लंबे समय तक मुझे यह पक्का यकीन नहीं हो पाया कि मुझमें सच्चा विश्वास है या नहीं। इसका मुख्य कारण यह था कि मैं परमेश्वर के सामने बार-बार वही पाप करता रहता था। जब भी मैं अपराध-बोध से टूट जाता, तो मैं अपने मन में अनगिनत बार 1 कुरिन्थियों 10:13 को दोहराता—वह वचन जो 'जीत के भरोसे' के बारे में है। मैं अपने अंदर मौजूद उस आदत बन चुके पाप के खिलाफ़ लड़ाई में जीतना चाहता था। फिर भी, जब मैं इस ज़बरदस्त आध्यात्मिक

लड़ाई में बार-बार हारता और लड़खड़ाता रहा, तो जीत के भरोसे वाला वह वचन भी मेरे लिए बहुत ज़्यादा आध्यात्मिक बेचैनी और भारी बोझ का कारण बन गया।

यह बुरा चक्र खत्म नहीं हुआ। पाप की बेड़ियों में जकड़े होने के कारण, मेरा 'प्रार्थना का जवाब मिलने का भरोसा' भी कमज़ोर पड़ने लगा। ऐसा इसलिए था क्योंकि, अनगिनत बार रोते हुए प्रार्थना करने के बावजूद—इतनी शिद्दत से कि मानो खून के आँसू बह रहे हों—और भगवान से इस आदत बन चुके पाप से छुटकारा दिलाने की गुहार लगाने के बाद भी, मेरी ज़िंदगी में कोई बदलाव नहीं आया और भगवान की तरफ़ से कोई जवाब नहीं मिला, बस खामोशी ही रही। इसका भयानक नतीजा क्या हुआ? मुझे अपने पापों की माफ़ी का ज़रा भी भरोसा नहीं था। मैं एक दुखद चक्र में फँसा हुआ था; हर बार पाप करने के बाद मैं कभी न खत्म होने वाले अपराध-बोध और खुद से गहरी नफ़रत की दलदल में डूबता चला जाता था। फिर भी, उस गहरी निराशा के बीच, जिस शानदार सहारे ने मेरी आत्मा को बचाया, वह वही वचन है जो आज हमारे सामने है—1 यूहन्ना 1:9: "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें हर तरह की अधार्मिकता से शुद्ध करने में सच्चा और न्यायपूर्ण है।"

इस वचन में, प्रेरित यूहन्ना कहते हैं, "यदि हम अपने पापों को मान लें..." तो फिर, "हमारे पाप"—जिन पर यूहन्ना इतना ज़ोर देते हैं—असल में किस ओर इशारा करते हैं? ज़ाहिर है, हमारा पहला ध्यान दुनिया में की जाने वाली अलग-अलग नैतिक और चारित्रिक गलतियों की ओर जाता है—ऐसे काम जो भगवान के आदेशों का उल्लंघन करते हैं। हालाँकि, एक अलग तरह का पाप भी था—जो छिपा हुआ और बुनियादी था—जिसके ज़रिए प्रेरित यूहन्ना यह पत्र लिखते समय सभी विश्वासियों के दिलों को झकझोरना चाहते थे।

इन शब्दों के गहरे अर्थ को जानने की उत्सुकता में, मैंने 1 यूहन्ना 1:5–10 के वचन को बार-बार पढ़ा। ऐसा करते हुए, मैंने इस बात पर गहराई से विचार किया कि कैसे वचन 6, 8 और 10 "यदि" (शर्त बताने वाले शब्द) के ज़रिए आपस में जुड़े हुए हैं।

"यदि हम कहें कि हमारी उसके साथ संगति है, और हम अंधकार में चलें, तो हम झूठ बोलते हैं और सच्चाई पर नहीं चलते" (वचन 6)।

"यदि हम कहें कि हममें कोई पाप नहीं है, तो हम खुद को धोखा देते हैं, और सच्चाई हममें नहीं है" (वचन 8)। "यदि हम दावा करें कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम उसे झूठा ठहराते हैं और उसका वचन हममें नहीं है" (वचन 10)।

जब हम वचन 9 में बताए गए पाप-स्वीकार करने के अनुग्रह (grace) को ध्यान में रखते हुए इन तीन गंभीर चेतावनियों पर मनन करते हैं, तो आखिरकार हम उस "पाप" के असली स्वरूप को समझ पाते हैं जिसकी ओर प्रेरित यूहन्ना इशारा कर रहे हैं। सबसे पहले, यह पाखंड का पाप है—यानी हमारी बातों और हमारे जीवन के बीच का अंतर (पद 6)।

ऊपर से तो यह दिखाना कि आप ईश्वर के साथ गहरे जुड़ाव में हैं, लेकिन असल में गुप्त अंधेरे में रहना और काम करना, अपने आप में एक भयानक पाप है। यह एक ऐसे झूठे व्यक्ति का जीवन है जो ईश्वर और संतों, दोनों को धोखा देता है; यह आध्यात्मिक धोखे का एक रूप है—सच्चाई जानने के बावजूद उसके अनुसार न जीना।

दूसरा, यह हठ या ज़िद का पाप है—अपने ही पाप को पूरी तरह से नकारना (पद 8 और 10)।

ऐसा व्यवहार करना जैसे आप बेदाग़ हों, या बेशर्मी से यह कहकर पाप से इनकार करना कि "मैंने कभी कोई पाप नहीं किया," जॉन द्वारा बताए गए सबसे घातक पापों में से एक है। ऐसी ज़िद—अपने पापी स्वभाव को स्वीकार करने से इनकार करना और पाखंड के मुखौटे के पीछे छिपना—आखिरकार व्यक्ति को अनादर के भयानक पाप की ओर ले जाती है, जिससे सच्चे ईश्वर को ही झूठा ठहराया जाता है।

आखिरकार, सुसमाचार (गॉस्पेल) द्वारा परिभाषित सबसे भयानक पाप कमजोरी के क्षण में की गई कोई गलती या ठोकर नहीं है। बल्कि, यह पाखंड ही है: आध्यात्मिक अहंकार में डूबे रहने के साथ-साथ पाप को छिपाते और नकारते रहना, और वह भी उस ईश्वर के सामने अपनी बुराई का ईमानदारी से सामना किए बिना, जो पूर्ण प्रकाश है।

तो फिर, ऐसी क्या चीज़ है जो हमें अपने किए गए पापों को ईमानदारी से स्वीकार करने से रोकती है और हमें बार-बार पाखंड के मुखौटे के पीछे छिपकर उन्हें नकारने पर मजबूर करती है? हम ईश्वर के सामने अपने पापों को खुलकर "स्वीकार" क्यों नहीं करते? मुझे इस परेशान करने वाले सवाल का जवाब 1 जॉन 2:11 में मिला: "लेकिन जो कोई अपने भाई से नफरत करता है, वह अंधेरे में है और अंधेरे में चलता है, और उसे नहीं पता कि वह कहाँ जा रहा है, क्योंकि अंधेरे ने उसकी आँखों को अंधा कर दिया है।" हमारे पापों को स्वीकार न कर पाने का मूल कारण यह है कि पाप के अंधेरे ने, चुपके से अंदर आकर, हमारी आध्यात्मिक दृष्टि को पूरी तरह से अंधा कर दिया है।

बाइबल लगातार हमें अपने भाइयों से प्रेम करने के लिए कहती है। हालाँकि, जिस क्षण हम उस आज्ञा का उल्लंघन करते हैं और उसे नहीं मानते, हम प्रकाश से बाहर निकल जाते हैं, अंधेरे में फंस जाते हैं, और अंधेरे वाले काम करने लगते हैं। उस बिंदु से, हम अपनी आध्यात्मिक दिशा की समझ खो देते हैं और हमें पता नहीं चलता कि हम कहाँ जा रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि नफरत के काले पाप ने हमें अंधा कर दिया है। ठीक वैसे ही जैसे शारीरिक दृष्टि खोने पर चीज़ों को देखने की क्षमता पूरी तरह खत्म हो जाती है, अंधेरे में चलने से वह न्यूनतम आध्यात्मिक समझ भी खत्म हो जाती है जो पाप को पाप के रूप में पहचानने और स्वीकार करने के लिए ज़रूरी है। नतीजतन, लोग बुरे पाप करते हैं फिर भी हिम्मत से कहते हैं, "मुझमें कोई पाप नहीं है"; अपने पाप को न देख पाने के कारण, वे ऐसी बुरी हालत में पहुँच जाते हैं जहाँ उन्हें पाप कबूल करने की ज़रूरत ही महसूस नहीं होती।
तो फिर, "परमेश्वर के साथ संगति का दावा करते हुए अंधकार में चलने"—जिस व्यवहार के खिलाफ प्रेरित यूहन्ना ने चेतावनी दी थी (1 यूहन्ना 1:6)—का असल मतलब क्या है? पूरे हिस्से के संदर्भ में, इसे दो तरह से समझाया जा सकता है।

पहला, यह परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने से ज़िद के साथ इनकार करना है।

1 यूहन्ना 2:4 साफ-साफ कहता है: "जो कोई कहता है, 'मैं उसे जानता हूँ,' लेकिन उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता, वह झूठा है, और उस व्यक्ति में सच्चाई नहीं है।" एक ऐसा जीवन जो प्रभु के वचन को मानने से इनकार करता है—भले ही होंठों से परमेश्वर को जानने का दावा करे—वह खुद अंधकार में चलने का सबूत है।

दूसरा, यह आध्यात्मिक अंधेपन की एक ऐसी हालत है जिसमें दिल में किसी भाई से नफ़रत की जाती है। और साफ कहें तो, अंधकार में चलने का मतलब है किसी साथी विश्वासी से नफ़रत करना। 1 यूहन्ना 2:9 और 11 इस बात की गंभीरता को बताते हैं और चेतावनी देते हैं। "जो कोई ज्योति में होने का दावा करता है लेकिन अपने भाई या बहन से नफ़रत करता है, वह अभी भी अंधकार में है... जो कोई अपने भाई या बहन से नफ़रत करता है, वह अंधकार में है और अंधकार में ही चलता है। उसे पता नहीं होता कि वह कहाँ जा रहा है, क्योंकि अंधकार ने उसे अंधा कर दिया है।"

आखिरकार, नफ़रत और आज्ञा न मानने का अंधकार सिर्फ़ एक नैतिक कमी नहीं है; यह एक डरावनी आध्यात्मिक गुलामी है जो हमारी आध्यात्मिक आँखों को अंधा कर देती है और हमें पाप कबूल करने की उस जगह तक भी नहीं पहुँचने देती जहाँ हम माफ़ी का अनुग्रह पाते हैं। जो लोग ऐसे अंधकार में चलते हैं, वे परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ते हैं, फिर भी आध्यात्मिक रूप से अंधे बने रहते हैं और अपने पापों को कबूल नहीं कर पाते। लेकिन, जो लोग ज्योति में चलते हैं, वे अलग होते हैं (1 यूहन्ना 1:7)। ज्योति की संतानें ईमानदारी से परमेश्वर के सामने अपनी गलतियों और पापों को कबूल करती हैं। जो लोग ज्योति में चलते हैं, वे पाप कबूल करने की जगह पर आने के लिए तैयार क्यों होते हैं? इसलिए क्योंकि वे ईमानदारी से अपने गंदे पापों को पहचानते हैं, जो प्रभु—जो कि पूर्ण ज्योति है—की रोशनी में पूरी तरह उजागर हो जाते हैं। इसके अलावा, पहचाने गए इन पापों को कबूल करने का पक्का राज़—बिना पाखंड के उन्हें छिपाने या उनसे इनकार करने की कोशिश किए—पापों की माफ़ी के उस पक्के भरोसे में छिपा है जो उनके अंदर बहता है। ज्योति की संतानें पूरी तरह से विश्वास करती हैं कि परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह का बहुमूल्य लहू उन्हें सभी पापों और अधर्म से शुद्ध करता है, और कोई निशान नहीं छोड़ता (1 यूहन्ना 1:7, 9)। 1 यूहन्ना 1:9 में दिए गए वादे पर बिना किसी शक के भरोसा करते हुए, वे बिना डरे परमेश्वर के सिंहासन के पास जाते हैं: "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह सच्चा और धर्मी है और हमारे पापों को क्षमा करेगा और हमें सभी अधर्म से शुद्ध

करेगा।" जब हम अपनी गलतियों को मानते हैं, तो परमेश्वर—अपने सच्चे और धर्मी स्वभाव के कारण—खुशी-खुशी हमारे सभी पापों को क्षमा कर देते हैं। तो फिर, एक धर्मी परमेश्वर हमें—पापियों को—एक ही पल में सभी अधर्म से कैसे शुद्ध कर सकते हैं, सिर्फ इसलिए कि हम अपने पापों को मानते हैं?

इसका शानदार जवाब इस बात में है कि यीशु मसीह, हमारे धर्मी वकील, खुद वह "प्रायश्चित" बने जिन्होंने हमारे पापों का बोझ उठाया (1 यूहन्ना 2:1–2)। 1 यूहन्ना 4:10 प्यार के इस गहरे रहस्य को शानदार ढंग से बताता है: "प्यार इसमें है, कि हमने परमेश्वर से प्यार नहीं किया, बल्कि उसने हमसे प्यार किया और अपने पुत्र को हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए भेजा।" यीशु मसीह—हमारे प्रायश्चित—की शारीरिक मृत्यु और बहाए गए लहू के द्वारा, परमेश्वर ने हमें पूरी तरह से अपने साथ मिला लिया है, भले ही हम स्वभाव से क्रोध के पात्र थे। आखिरकार, उन्होंने हमें शानदार लोगों—पवित्र, बेदाग और दोषरहित—में बदल दिया है और हमें पवित्र परमेश्वर के सिंहासन के सामने निडरता से खड़ा किया है (कुलुस्सियों 1:22)। यह क्षमा की शक्ति और सुसमाचार की महान सामर्थ्य है जिसे ज्योति में चलने वाले लोग हर दिन महसूस करते हैं जब वे पाप स्वीकार करने की जगह पर आते हैं।

प्रिय संतों, अब मैं आज के मनन को समाप्त करना चाहता हूँ। जिस परमेश्वर पर हम विश्वास करते हैं, वह शानदार ज्योति है। परमेश्वर में, जो पूर्ण ज्योति है, अंधेरे की ज़रा सी भी परछाई नहीं हो सकती। और हम, जिन्हें यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू से बचाया गया है, उसी ज्योति के परमेश्वर की सम्मानित संतानें हैं।

ज्योति की संतानों के रूप में, हमें त्रिएक परमेश्वर के साथ संगति—एक गहरा और शुद्ध मेल-मिलाप—का शानदार सौभाग्य मिला है। अगर हम सच में परमेश्वर के साथ संगति में हैं, जो स्वयं ज्योति है, तो हमारे कदम स्वाभाविक रूप से अंधकार से हटकर सच्चाई की ज्योति की ओर बढ़ने चाहिए। इसके अलावा, ज्योति की संतानें परमेश्वर के सामने पाखंड का मुखौटा पहनकर और यह दावा करके खुद को धोखा नहीं देतीं कि "मुझमें कोई पाप नहीं है।" यदि कोई ज्योति की संतान होने का दावा तो करता है, लेकिन गुप्त रूप से अंधकार में रहता है, नफ़रत और आज्ञा न मानने की आदत बनाए रखता है, तो वह झूठ बोलने का पाप

करता है—परमेश्वर और दूसरे विश्वासियों, दोनों को धोखा देता है—और जो सच्चाई वह जानता है, उसके अनुसार काम न करके कानून तोड़ने का गंभीर पाप भी करता है।

इसलिए, ज्योति की संतान होने के नाते, जब भी हम अपनी कमज़ोरी के कारण लड़खड़ाते हैं, तो हमें अपनी गलतियों को छिपाना नहीं चाहिए, बल्कि परमेश्वर के सामने—जो ज्योति है—उन्हें खुले तौर पर और बिना किसी हिचकिचाहट के स्वीकार करना चाहिए। क्योंकि हमें भरोसा है कि जब हम ईमानदारी से अपने पापों को मानते हैं, तो विश्वासयोग्य और धर्मी परमेश्वर—हमारे प्रायश्चित के बलिदान, यीशु मसीह के गुणों को देखते हुए—खुशी-खुशी हमारे सभी पापों को क्षमा कर देंगे और हमारी आत्मा को हमारे चारों ओर फैली हर प्रकार की अधार्मिकता से पूरी तरह शुद्ध कर देंगे। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी सच्चाई के इस वादे को मज़बूती से थामे रखें, पाखंड और अंधकार को दृढ़ता से त्याग दें, और ज्योति स्वरूप परमेश्वर की पवित्र संतान के रूप में हर दिन निडर होकर जीवन जिएँ।

हमें वैसे ही चलना चाहिए जैसे यीशु चले।

[1 यूहन्ना 2:1–6]

"मेरे प्यारे बच्चों, मैं तुम्हें ये बातें इसलिए लिख रहा हूँ ताकि तुम पाप न करो। लेकिन अगर कोई पाप करता भी है, तो पिता के पास हमारा एक वकील है—धर्मी यीशु मसीह। वह हमारे पापों का प्रायश्चित है, और न केवल हमारे पापों का, बल्कि पूरी दुनिया के पापों का भी। और इससे हम जानते हैं कि हम उसे जान गए हैं, अगर हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। जो कोई कहता है 'मैं उसे जानता हूँ' लेकिन उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता, वह झूठा है और उसमें सच्चाई नहीं है; लेकिन जो कोई उसके वचन का पालन करता है, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध होता है। इससे हम जान सकते हैं कि हम उसमें हैं: जो कोई कहता है कि वह उसमें बना रहता है, उसे उसी तरह चलना चाहिए जैसे वह चला।"

प्यारे संतों, हमारे लिए—जो यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता मानते हैं—इस दुनिया में मसीही के तौर पर जीने का असल में क्या मतलब है? अपनी कालजयी क्लासिक किताब *द इमिटेशन ऑफ़ क्राइस्ट* (मसीह का अनुकरण) में, थॉमस ए केम्पिस इस बारे में एक ज़बरदस्त चुनौती पेश करते हैं: "जो कोई मेरे पीछे चलता है, वह अंधकार में नहीं चलेगा (यूहन्ना 8:12 देखें)।" इन शब्दों के ज़रिए, प्रभु हमें उत्साहित करते हैं कि अगर हम सचमुच उनसे सीखना चाहते हैं और मूर्ख दिल की गुलामी से आज़ाद होना चाहते हैं, तो हमें मसीह के जीवन और उस रास्ते का अनुकरण करना चाहिए जिस पर वे खुद चले थे। इसलिए, हर पल यीशु मसीह के जीवन पर गहराई से सोचना ही सबसे पहली चीज़ है जो हमें करनी चाहिए। इस बात को ध्यान में रखते हुए, जब आप यीशु मसीह के जीवन पर गहराई से सोचते हैं—तो आपके दिल में क्या आता है कि हमें सबसे

पहले किस बात पर विचार करना चाहिए? गॉस्पेल गीत "द पाथ द लॉर्ड वॉक्ड" (वह रास्ता जिस पर प्रभु चले)—एक ऐसा गीत जिसे मैं लंबे समय से अपने विश्वास की गवाही के तौर पर गाना पसंद करता हूँ—के दिल को छू लेने वाले बोल मेरे मन में आए: *वह रास्ता जिस पर प्रभु चले—क्रूस का रास्ता—एक अकेला और भारी रास्ता; गोलगोथा की ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी, प्रभु का थका-हारा रूप। हे मेरे प्रभु, मुझे माफ़ कर दे;* आपने पापियों के लिए दुख सहा—वह रास्ता जिसे आपने इस दुनिया में जीवन लाने के लिए चुना था।* यह भजन मेरे दिल को इतना गहराई से छूता है क्योंकि जब भी मैं प्रभु के जीवन पर मनन करता हूँ, तो क्रूस का वह प्यार—जिस पर वे चुपचाप आज्ञाकारी होकर चले—मेरी आत्मा पर एक गहरी छाप छोड़ जाता है।

यीशु पर विश्वास करने का मतलब सिर्फ़ उनके नाम को होंठों से पुकारना या मन में कोई काल्पनिक विचार रखना नहीं है। इसका मतलब है क्रूस के उस अकेले और नेक रास्ते पर चुपचाप चलना जिस पर वे चले थे। मत्ती 7:13 में, प्रभु ने अपने शिष्यों से उस रास्ते के बारे में बात की जिस पर उन्हें चलना चाहिए: "सँकरे फाटक से प्रवेश करो। क्योंकि विनाश की ओर ले जाने वाला फाटक चौड़ा और रास्ता बड़ा है, और बहुत से लोग उससे होकर जाते हैं।" हमें उस चौड़े रास्ते को हिम्मत से ठुकराना चाहिए जो आध्यात्मिक आराम की तलाश करता है। इसके बजाय, हमें अपने-अपने हिस्से का क्रूस उठाना चाहिए, पूरी तरह से खुद को नकारना चाहिए, और प्रभु के पीछे-पीछे उस ऊबड़-खाबड़, सँकरे रास्ते पर—दुख के उस रास्ते पर जो जीवन की ओर ले जाता है—भरोसे के साथ चलना चाहिए।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:6 में, बाइबल हम सभी के लिए, जो प्रभु का अनुसरण करते हैं, विश्वास का एक बहुत ही गंभीर मानक तय करती है: "जो कोई यह दावा करता है कि वह उसमें रहता है, उसे वैसे ही चलना चाहिए जैसे यीशु चले थे।" *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) इस आयत का अनुवाद और भी सहज और प्रभावशाली ढंग से करता है: "जो लोग परमेश्वर में रहने का दावा करते हैं, उन्हें ठीक वैसे ही जीना चाहिए जैसे यीशु जिए थे।" आज, इस कभी न बदलने वाले सच पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं "हमें ठीक वैसे ही चलना चाहिए जैसे यीशु चले थे" विषय के तहत 1 यूहन्ना 2:1–6 में पाए गए दो आध्यात्मिक पाठों पर गहराई से विचार करके अनुग्रह का संदेश साझा करना चाहता हूँ।

पहला, हमें उन लोगों के विश्वास की असली प्रकृति को पहचानना चाहिए जो "प्रभु में रहने" का दावा करते हैं।

प्रेरित यूहन्ना कहते हैं कि जो विश्वासी परमेश्वर में रहने का दावा करते हैं, उन्हें ठीक वैसे ही जीना चाहिए जैसे यीशु जिए थे, और उनके नक्शेकदम पर चलना चाहिए। तो फिर, उस व्यक्ति की खास विशेषताएँ क्या हैं जिसे प्रेरित "उसमें रहने वाला"—यानी एक सच्चा विश्वासी—बताते हैं?

एक गॉस्पेल गीत है जिसका शीर्षक है "Abide in Me" (मुझमें बने रहो), जिसे हम अपने चर्च में एक साथ गाते और स्वीकार करते थे। इसके बोल का मुख्य संदेश कुछ इस तरह है: "मुझमें बने रहो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ—वही जो सभी मुश्किलों के बीच तुम्हारी रक्षा करता है। डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारी मदद करूँगा; निराश मत हो, क्योंकि मैं तुम्हारा हाथ थामे रहूँगा। मैंने तुम्हें तुम्हारे नाम से बुलाया है; तुम मेरे हो—तुम मेरे हो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मैं तुम्हें अनमोल और सम्मानित मानता हूँ; मैं प्रभु हूँ, और मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।" मुझे यह भजन गाने में इसलिए बहुत अच्छा लगता है क्योंकि इसकी हर पंक्ति में पुराने नियम (Old Testament) की दो आयतें समाई हुई हैं जो मेरी आत्मा को जगाती हैं। जब भी मैं निराश या थका हुआ महसूस करता था, इन शब्दों ने मुझे बहुत ज़्यादा आध्यात्मिक शक्ति और स्वर्गीय शांति दी। ये आयतें यशायाह 41:10 और यशायाह 43:1 और आयत 4 के पहले हिस्से में मिलती हैं।

(1) उनकी उपस्थिति और सर्वशक्तिमान मदद का वादा: "डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ; निराश मत हो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मैं तुम्हें मज़बूत करूँगा और तुम्हारी मदद करूँगा; मैं अपने धर्मी दाहिने हाथ से तुम्हें थामे रहूँगा" (यशायाह 41:10)।

जब मैं इन आयतों के साथ इस भजन के संदेश पर गहराई से मनन करता हूँ, तो मेरे अंदर एक ऐसा साहस पैदा होता है जो दुनिया नहीं दे सकती। सिर्फ़ यह बात कि हम परमेश्वर में बने रहते हैं, हमें कभी न डरने या निराश न होने का हर कारण देती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरा परमेश्वर—पूरे ब्रह्मांड का रचयिता—अभी मेरे साथ है, मेरी कमज़ोरी में मेरी मदद कर रहा है और अपने धर्मी, शक्तिशाली दाहिने हाथ से मुझे थामे हुए और मज़बूत कर रहा है।

(2) उनके लहू की कीमत से खरीदा गया एक अनमोल और सम्मानित बच्चा: "लेकिन अब, प्रभु यह कहते हैं—वह जिसने तुम्हें रचा, याकूब, वह जिसने तुम्हें बनाया, इस्राएल: 'डरो मत, क्योंकि मैंने तुम्हें छुड़ाया है; मैंने तुम्हें तुम्हारे नाम से बुलाया है; तुम मेरे हो।' ... चूँकि तुम मेरी नज़र में अनमोल और सम्मानित हो, और क्योंकि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ..." (यशायाह 43:1, 4a)। भजन के बोल—"मैंने तुम्हें नाम से बुलाया है; तुम मेरे हो; मैं तुम्हें कीमती और सम्मानित मानता हूँ"—यशायाह 43 के इस अंश पर आधारित हैं। यह बात कि परमेश्वर ने अनगिनत लोगों के बीच मुझे याद किया और मुझे "नाम से" बुलाया, और यह कि उन्होंने पूरी दुनिया के सामने यह घोषणा की कि "तुम मेरे हो," मेरी आत्मा को बहुत सुकून और राहत देती है। यह अंश उम्मीद का एक मज़बूत सहारा है, खासकर तब जब मैं ज़िंदगी के बोझ तले खुद को बहुत मामूली महसूस करता हूँ और खुद को कीमती या सम्मानित नहीं देख पाता। हालाँकि मैं कमज़ोर हूँ, परमेश्वर ने मुझे लहू की कीमत देकर खरीदा है—उन्होंने अपने इकलौते बेटे, यीशु मसीह को, जिन्हें वे सबसे ज़्यादा प्यार करते थे, क्रूस पर प्रायश्चित के बलिदान के रूप में दे दिया। इस तरह, प्रभु की नज़र में, हम इतने कीमती और सम्मानित हैं कि दुनिया में किसी भी चीज़ से हमारी तुलना नहीं की जा सकती। क्रूस पर किए गए प्रायश्चित के काम पर आधारित परमेश्वर का हमारे बारे में यह नज़रिया ही उस महान शक्ति का स्रोत है जो हमें हर दिन उठने और आगे बढ़ने में मदद करता है।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:6 में, प्रेरित यूहन्ना कहते हैं, "जो कोई यह दावा करता है कि वह उसमें रहता है, उसे वैसे ही चलना चाहिए जैसे यीशु चले थे।" तो फिर, आध्यात्मिक रूप से "उसमें रहने" का क्या मतलब है?

जब मैंने इस वचन पर गहराई से मनन किया, तो मुझे स्वाभाविक रूप से यूहन्ना 15 में बताई गई "अंगूर की बेल की कहानी" याद आई, जिसे भी प्रेरित यूहन्ना ने ही लिखा था। खासकर यूहन्ना 15:4–5 के शब्द इसका साफ़ जवाब देते हैं: "मुझमें बने रहो, और मैं तुममें बना रहूँगा। जब तक कोई डाली अंगूर की बेल से जुड़ी नहीं रहती, वह नहीं..." जैसे कोई डाली तब तक फल नहीं दे सकती जब तक वह बेल से जुड़ी न रहे, वैसे ही तुम भी तब तक फल नहीं दे सकते जब तक तुम मुझमें न रहो। मैं अंगूर की बेल हूँ; तुम डालियाँ हो। यदि तुम मुझमें बने रहते हो और मैं तुममें, तो तुम बहुत फल लाओगे; मुझसे अलग होकर तुम कुछ नहीं कर

सकते। यूहन्ना 15:4 में, प्रेरित यूहन्ना ने लिखा, "मुझमें बने रहो," और आज के अंश, 1 यूहन्ना 2:6 में, उन्होंने लिखा, "उसमें रहता है।" "बने रहने" (abide) का मूल अर्थ और "रहने" (lives) का भाव यहाँ पूरी तरह से मेल खाते हैं। दूसरे शब्दों में, प्रेरित यूहन्ना इन दोनों पत्रों के ज़रिए ज़ोर देकर एक ऐसे जीवन की बात कर रहे हैं जो प्रभु में बसा हुआ और स्थित हो। इसलिए, 1 यूहन्ना 2:6 में "उसमें बने रहना" का मतलब "प्रभु में बने रहना" ही है। इसे अंगूर की बेल के दृष्टांत से समझें: जैसे जीवन का रस पाने के लिए एक टहनी बेल से कसकर जुड़ी रहती है, वैसे ही प्रभु में जीने का मतलब है उनसे लगातार जुड़े रहना। इसका मतलब है कि कभी भी प्रभु से दूर न होना और हर पल उनके साथ चलना।

प्रेरित यूहन्ना इस सच्चाई पर इतना ज़ोर क्यों देते हैं, यह साफ़ है: जब हम यीशु मसीह के चेले बनकर प्रभु में बने रहते हैं, तभी हम जीवन के भरपूर फल ला सकते हैं। इसके विपरीत, अगर हम प्रभु में बने रहने में नाकाम रहते हैं और उनसे अलग होकर जीते हैं—अपनी समझ या ताकत पर भरोसा करते हैं—तो हम आध्यात्मिक रूप से कमज़ोर हो जाते हैं और कुछ भी करने में असमर्थ हो जाते हैं (यूहन्ना 15:5)।

प्यारे संतों, क्या आप जानते हैं कि एक्वेरियम में मछलियाँ कभी-कभी पानी से बाहर क्यों कूदती हैं? बायोलॉजिकल स्टडीज़ से पता चलता है कि इसके तीन मुख्य कारण हैं। पहला, ऐसा तब होता है जब पानी में ज़िंदा रहने के लिए ज़रूरी घुली हुई ऑक्सीजन कम हो जाती है; ऐसी हालत में, मछली सतह पर आकर हाँफ सकती है, अपने गलफड़े (gills) बाहर निकाल सकती है और मुँह खोल सकती है, और आखिर में बाहर कूद सकती है। दूसरा, वे शिकार करने या शिकारी से बेताब होकर भागने के लिए कूद सकती हैं। तीसरा, ऐसा स्किन की बीमारी या शरीर पर हानिकारक चीज़ों के होने की वजह से हो सकता है। वे अपने शरीर से चिपकी बाहरी चीज़ों को हटाने के लिए अपने शरीर को हवा में उछालती हैं। कारण चाहे जो भी हो, एक बात साफ़ है: पानी से बाहर कूदने वाली मछली की किस्मत में दर्दनाक मौत ही लिखी होती है। जैसे कहावत है कि मछली पानी के बिना ज़िंदा नहीं रह सकती, वैसे ही यीशु मसीह में विश्वास रखने वाला व्यक्ति भी अगर खुद को प्रभु से—जो जीवन का स्रोत हैं—अलग कर ले, तो वह आध्यात्मिक रूप से जीवित नहीं रह सकता और न ही फल ला सकता है। प्रभु ने साफ़ कहा था: "मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते" (यूहन्ना 15:5)।

लेकिन, अगर हम इन शब्दों को सुसमाचार (Gospel) के शानदार नज़रिए से देखें, तो एक अद्भुत बदलाव आता है। अगर हम प्रभु—जो सच्ची दाखलता (vine) हैं—से मज़बूती से जुड़े रहते हैं, तो हमें उनमें सब कुछ करने की शक्ति मिलती है। प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पियों 4:13 में जीत के इस रहस्य को शानदार ढंग से बताया है: "मैं उसकी मदद से सब कुछ कर सकता हूँ जो मुझे शक्ति देता है।" यहाँ एक ज़रूरी बात है जिसे हमें गलत नहीं समझना चाहिए: इस आयत का ज़ोर इंसानी क्षमता या कामयाबी पर नहीं है—यानी इस सोच पर कि "मैं कुछ भी कर सकता हूँ।" इस घोषणा का असली नायक "वह है जो मुझे शक्ति देता है।" जब प्रभु, जो सारी शक्ति का स्रोत हैं, हमारी आत्माओं को स्वर्गीय शक्ति देते हैं, तभी हम दुनिया के हालात से विचलित नहीं होते। चाहे भरपूर और कामयाब समय हो या मुश्किल और तंगी का समय, हम संतोष का महान रहस्य सीखते हैं—सिर्फ़ प्रभु में संतुष्टि पाना (फिलिप्पियों 4:11–12)। इसलिए, आज के वचन (1 यूहन्ना 2:6) में जिस व्यक्ति का ज़िक्र है जो "उसमें रहता है," वह एक सच्चा उपासक है जिसने अपनी शक्ति और समझ को पूरी तरह छोड़ दिया है, प्रभु को अपने जीवन का सागर बना लिया है और पूरी तरह से उनमें बसता है।

तो फिर, हम कैसे पक्का कर सकते हैं कि हम सच में प्रभु में बने हुए हैं? आज का वचन, 1 यूहन्ना 2:5, विश्वास की सबसे पक्की कसौटी बताता है: "लेकिन अगर कोई उसके वचन को मानता है, तो परमेश्वर का प्रेम सच में उसमें पूरा हो जाता है। इसी से हम जानते हैं कि हम उसमें हैं।" जैसा कि *Bible for Modern Man* में अनुवाद किया गया है: "जो कोई परमेश्वर के वचन को मानता है, उसमें परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हो जाता है। इससे हम जानते हैं कि हम उसमें हैं।" हम प्रभु में बने रहने वाले सच्चे चेले हैं या नहीं, यह इस बात से तय हो सकता है कि क्या हमारा जीवन "प्रभु के वचन को मानता है।" अगर हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में सचमुच प्रभु के वचन को मान रहे हैं, तो यही वह जीवन का सबूत है जो दिखाता है कि हम प्रभु से मज़बूती से जुड़े हुए हैं। बाइबल कहती है कि जो व्यक्ति प्रभु में रहने का दावा करता है (पद 6), वह स्वाभाविक रूप से प्रभु के वचन का पालन करता है; और जो व्यक्ति उस वचन का पालन करता है, उसके हृदय में ही परमेश्वर का प्रेम वास्तव में पूर्णता तक पहुँचता है (पद 5)। दूसरे शब्दों में, प्रभु में रहने का अर्थ है ऐसी स्थिति जिसमें किसी व्यक्ति के भीतर परमेश्वर का प्रेम वास्तव में पूर्णता तक विकसित हुआ हो।

यह गहरा रहस्य तब और भी स्पष्ट हो जाता है जब हम इसे यूहन्ना 15:9–10 में दर्ज प्रभु के वचनों के साथ देखते हैं: "जैसे पिता ने मुझसे प्रेम किया, वैसे ही मैंने तुमसे प्रेम किया है; मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी

आज्ञाओं का पालन करोगे, तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे, ठीक वैसे ही जैसे मैंने अपने पिता की आज्ञाओं का पालन किया है और उनके प्रेम में बना हुआ हूँ।" इन महान वचनों में, प्रेरित यूहन्ना सुसमाचार के केंद्र में स्थित तीन आध्यात्मिक स्थितियों को पूरी तरह से जोड़ता है और उन्हें एक-समान बताता है:

पहला, वह जो प्रभु में बना रहता है...
दूसरा, वह निश्चित रूप से प्रभु के वचन का पालन करने वाला होता है; और
तीसरा, जो प्रभु के वचन का पालन करता है, वही प्रभु के प्रेम में बना रहता है।

ये तीनों मिलकर एक ही, अटूट वास्तविकता बनाते हैं। एक सच्चा विश्वासी जो प्रभु में बना रहता है, वह खुशी के साथ प्रभु के वचन का पालन करता है और उसे अपने जीवन में अपनाता है। और आज्ञाकारिता के उस मार्ग पर चलने से, परमेश्वर का प्रेम उसकी आत्मा में पूर्णता तक पहुँचता है (1 यूहन्ना 2:5–6)। एक महान आशीष—जिसे दुनिया नहीं दे सकती—यीशु मसीह के उस वफादार शिष्य के हृदय में होती है जो चुपचाप उनके वचन का पालन करता है और पूरी तरह से परमेश्वर के प्रेम को जीता है। यह वही आनंद है जिसका वादा प्रभु ने किया था—उनका अपना आनंद, एक उमड़ता हुआ स्वर्गीय आनंद—जो आत्मा की गहराइयों को भर देता है (यूहन्ना 15:11)।

प्रियजनों, जैसा कि हमने पहले ही इस पर गहराई से मनन किया है, प्रेरित यूहन्ना द्वारा इस पहली पत्री को लिखने का 'क्षैतिज' (horizontal) उद्देश्य स्पष्ट है: "हम यह इसलिए लिखते हैं ताकि हमारा आनंद पूरा हो जाए" (1 यूहन्ना 1:4)। इसके अलावा, उनकी पत्री का मूल 'ऊर्ध्वाधर' (vertical) उद्देश्य संतों को परमेश्वर पिता और उनके पुत्र, यीशु मसीह के साथ गहरी संगति का आनंद लेने में सक्षम बनाना था (1 यूहन्ना 1:3)। आखिरकार, यीशु मसीह के बारे में गवाही देने का जॉन का मकसद—जो सुसमाचार का मुख्य सार है—यह था कि जो लोग यह संदेश सुनें, वे यीशु पर विश्वास करें और त्रिएक परमेश्वर के साथ एक खास संगति में शामिल हों। उनकी दिली इच्छा थी कि सभी संत उस सच्चे "जीवन"—यानी "अनंत जीवन"—को पाएं और उसका आनंद लें, जिसका अनुभव और अधिकार उन्हें खुद मिला था।

जॉन द्वारा सुनाए गए सुसमाचार का मकसद "परमेश्वर के साथ संगति" (पद 3) और "भरपूर आनंद" (पद 4) है, और यह बात हमें बहुत उम्मीद देती है। पिता परमेश्वर और पुत्र यीशु के साथ अपनी सीधी संगति में, प्रेरित जॉन ने पवित्र आत्मा—जो सच्चाई का आत्मा है—द्वारा दिए गए स्वर्गीय आनंद का अनुभव किया। फिर उनकी इच्छा थी कि वह आनंद सब तक पहुँचे, ताकि शुरुआती कलीसिया के सभी भाई-बहन—जो यह पत्र पढ़ेंगे—भी उसे पा सकें और उसमें शामिल हो सकें। इस तरह, 1 यूहन्ना 2:6 के पहले हिस्से में बताए गए लोगों की असली पहचान साफ हो जाती है—"जो कोई उसमें बने रहने का दावा करता है"। वे ऐसे लोग हैं जो प्रभु में मजबूती से बने रहते हैं और ऐसे वफादार चेले हैं जो पिता परमेश्वर और पुत्र यीशु के साथ गहरी संगति के ज़रिए खुशी-खुशी उनकी बात मानते हैं। जो लोग प्रभु में बने रहते हैं और उनकी बात मानते हैं, उनके दिलों में परमेश्वर का प्रेम पूरी तरह से सिद्ध हो जाता है, और प्रभु द्वारा वादा किया गया स्वर्गीय आनंद आखिरकार समुद्र की लहरों की तरह उमड़ पड़ता है। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं रोज़ उनके साथ चलें, अनुग्रह का यह उपहार पाएँ, और उनके दिए आनंद से भरपूर जीवन जिएँ।

दूसरी बात, एक सच्चा विश्वासी जो प्रभु में बना रहता है, वह वैसे ही चलता है जैसे यीशु चले थे।

1 यूहन्ना 2:6 के दूसरे हिस्से में, प्रेरित जॉन विश्वास का एक व्यावहारिक सिद्धांत मज़बूती से बताते हैं: "उसे वैसे ही चलना चाहिए जैसे वह चले थे।" तो फिर, "वैसे ही चलना जैसे वह चले थे" का असली आध्यात्मिक अर्थ क्या है?

एक बात है जिसे मैं व्यक्तिगत रूप से बहुत पसंद करता हूँ: "आप किस तरह के इंसान हैं, यह इस बात से कहीं ज़्यादा ज़रूरी है कि आप किस तरह का काम करते हैं।" यह बात हमें याद दिलाती है कि हमारे विश्वास में, हमारा "होना" (हमारा व्यक्तित्व) हमारे दिखाई देने वाले "काम" से कहीं ज़्यादा बुनियादी और महत्वपूर्ण है। क्योंकि सच्चा काम ज़बरदस्ती की कोशिश का मामला नहीं है; बल्कि, यह उस नए स्वभाव और पहचान का स्वाभाविक परिणाम होना चाहिए जिसे परमेश्वर ने हमारे भीतर गढ़ा है। इसलिए, प्रभु या संतों के लिए "मैं क्या कर रहा हूँ" जैसे सतही सवालों पर ध्यान देने के बजाय, मैं पूरी ईमानदारी से अपने विश्वास के अनुसार जीना चाहता हूँ और इस मूल सवाल को थामे रखना चाहता हूँ: "इस पवित्र परमेश्वर के सामने अभी मैं कौन हूँ?" साथ ही, मुझे उम्मीद है कि जब भी मेरे होंठों के शब्द मेरे जीवन के कामों से मेल नहीं खाएँगे, तो पवित्र

आत्मा लगातार मेरी आत्मा में एक पवित्र तड़प और पछतावे की भावना जगाएगा। अगर मैं अपने होंठों से परमेश्वर और पड़ोसी के प्रति प्रेम की बातें करता रहूँ, लेकिन असल में प्रभु के वचन का उल्लंघन करूँ और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में किसी भाई के प्रति मन में नफ़रत रखूँ, तो मुझे अपने दिल में एक तीखी टीस और अपनी गलती का एहसास होना चाहिए; क्योंकि ऐसी भावनाएँ एक जीवित आध्यात्मिक अंतरात्मा का सबूत हैं।

प्रभु के दिखाए रास्ते और एक विश्वासी के अस्तित्व के स्वरूप पर इस तरह मनन करते हुए, मैं सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान भजन संहिता 23 से 31 पढ़ रहा था। मैंने भजन संहिता 22:1 के संदर्भ में भजन संहिता 23:4 पर गहराई से विचार किया। क्रूस पर दाऊद का महान स्वीकारोक्ति-वचन और मसीह की दर्द भरी पुकार रहस्यमय ढंग से आपस में जुड़े हुए थे: "भले ही मैं मौत की छाया की घाटी से होकर गुज़रूँ, मैं किसी बुराई से नहीं डरूँगा, क्योंकि तू मेरे साथ है; तेरी लाठी और तेरी छड़ी मुझे दिलासा देती हैं" (भजन संहिता 23:4)। "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मुझे बचाने से इतना दूर क्यों है, मेरी पीड़ा भरी पुकार से इतना दूर क्यों है?" (भजन संहिता 22:1)। जब मैंने दाऊद के इन दो भजनों पर मनन किया, तो मुझे यीशु की वह दर्द भरी पुकार याद आई जो उन्होंने क्रूस पर कही थी और जिसका ज़िक्र मत्ती 27:46 में मिलता है: "एली, एली, लेमा सबक्तनी?"—जिसका अर्थ है, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" वहाँ, गोलगोथा में क्रूस पर—जो "मौत की छाया की घाटी" का चरम रूप था—परमेश्वर पिता द्वारा पूरी तरह त्याग दिए जाने और मुँह फेर लिए जाने के बावजूद, पुत्र यीशु ने पूरी दुनिया के पापों का बोझ उठाया। मत्ती के इस अंश पर ध्यान करते हुए, मेरे मन में एक गहरा आध्यात्मिक सवाल उठा: उस असहनीय पीड़ा और अकेलेपन के बीच, जब उनके शरीर और आत्मा से जीवन-शक्ति का हर कतरा निकल रहा था, तब हमारे प्रभु को कौन-सा स्वर्गीय सुकून मिला?

इस पवित्र चिंतन के दौरान, एक खास अंश ने मेरे दिल को गहराई से छू लिया: यशायाह 53:11 में मसीहा के बारे में की गई भविष्यवाणी—"वह अपनी आत्मा की पीड़ा को देखेगा और संतुष्ट होगा..." परमेश्वर पिता ने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह की उस दिल दहला देने वाली "आत्मा की पीड़ा" को देखा—जिन्होंने खुद हमारे सारे पापों का बोझ उठाया और क्रूस की घोर शर्म और पीड़ा सहते हुए प्राण त्याग दिए। उस प्रायश्चित की पूर्णता को देखकर, पिता अंततः "संतुष्ट" हुए। मुझे पूरा यकीन है कि क्रूस पर रहते हुए हमारे प्रभु को

यही सबसे बड़ा सुकून मिला था। क्रूस पर परमेश्वर पिता द्वारा त्याग दिए जाने के उस ब्रह्मांडीय अकेलेपन और पीड़ा के बीच भी, यीशु ने जो गहरा सुकून महसूस किया, वह उस संतुष्टि का आध्यात्मिक अहसास था जो उन्हें पिता की इच्छा (मुक्ति) के प्रति अपनी पूरी आज्ञाकारिता—यहाँ तक कि मृत्यु तक—से पिता को पूरी तरह संतुष्ट करने से मिली थी।

1 यूहन्ना 2:6 के दूसरे हिस्से में—जो आज हमारा मुख्य वचन है—प्रेरित यूहन्ना हमारे विश्वास के लिए एक स्पष्ट दिशा-निर्देश देते हैं: "जो कोई यह दावा करता है कि वह उसमें रहता है, उसे वैसे ही चलना चाहिए जैसे यीशु चले थे।" दूसरे शब्दों में, जो लोग प्रभु में बने रहते हैं, उनका स्वाभाविक कर्तव्य है कि वे ठीक वैसे ही जीवन जिएं जैसा यीशु ने जिया था। तो, अगर हमें अपना जीवन यीशु की तरह जीना है, तो सबसे ज़रूरी बात क्या है? हमें उस सेवा-कार्य के सार को सही ढंग से समझना होगा जो प्रभु ने पृथ्वी और स्वर्ग, दोनों जगह किया। पूरी बाइबल के संदर्भ में, हमारे प्रभु यीशु मसीह की सेवा को दो मुख्य पहलुओं से देखा जा सकता है: (1) पहला, वह ऐतिहासिक सेवा जो यीशु ने अतीत में इस पृथ्वी पर आने पर की थी; और (2) दूसरा, वह महिमामयी सेवा जो यीशु अभी भी परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ पर कर रहे हैं।

(1) अतीत की सेवा: क्रूस पर प्रायश्चित का बलिदान और प्रेम का उदाहरण

1 यूहन्ना 2:2 को देखें, जो आज हमारा मुख्य वचन है। प्रेरित यूहन्ना प्रायश्चित की उस महान घटना की घोषणा करते हैं जिसे प्रभु ने इतिहास में हमारे लिए पूरा किया: "वह हमारे पापों के लिए प्रायश्चित का बलिदान है, और न केवल हमारे पापों के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के पापों के लिए भी।" जैसा कि *समकालीन कोरियाई संस्करण* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) इसका अनुवाद करता है, प्रभु व्यक्तिगत रूप से न केवल हमारे पापों के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के पापों के लिए मेल-मिलाप का बलिदान बने। पादरी जॉन मैकआर्थर की व्याख्या के अनुसार, यहाँ "प्रायश्चित" (propitiation) शब्द का अर्थ है "संतुष्टि"—यानी परमेश्वर का न्याय पूरी तरह से संतुष्ट हो गया। दूसरे शब्दों में, अपना लहू बहाकर और एक निष्कलंक बलिदान के रूप में—जैसे फसह का मेमना—क्रूस पर मरकर, यीशु ने परमेश्वर की उस पवित्र और न्यायपूर्ण मांग को पूरी तरह से संतुष्ट किया कि पाप की सज़ा मिलनी ही चाहिए (मैकआर्थर)।

1 यूहन्ना 4:10 में, प्रेरित यूहन्ना क्रूस पर हुए इस बदले में किए गए प्रायश्चित (substitutionary atonement) को सुसमाचार का शिखर भी बताते हैं: "प्रेम यह है: यह नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, बल्कि यह कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के लिए प्रायश्चित के बलिदान के रूप में अपने पुत्र को भेजा।" परमेश्वर द्वारा अपने एकलौते पुत्र, यीशु को हमारे घिनौने पापों की कीमत चुकाने के लिए प्रायश्चित के बलिदान के रूप में इस पृथ्वी पर भेजने के पीछे एकमात्र मुख्य कारण क्या था? यह हमारे लिए परमेश्वर के असीम प्रेम के अलावा और कुछ नहीं था। बाइबल बताती है कि क्रूस की घटना ही—कोई और काम नहीं—प्रेम का असली रूप है। इसलिए, इस शिक्षा को अमल में लाने का मतलब है कि "हमें वैसे ही चलना चाहिए जैसे यीशु चले," यानी प्रेम का जीवन जीना, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु ने जिया। जिस तरह प्रभु ने हमसे प्रेम किया, हमारे सभी पापों का बोझ उठाया, और—पिता की इच्छा का पालन करते हुए—हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए क्रूस पर खुद को बलिदान के रूप में अर्पित किया, उसी तरह हमें भी प्रेम के उस मार्ग पर चलना चाहिए।

पहला, हमें पूरे दिल से परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए।
परमेश्वर के प्रति सच्चा प्रेम ऐसे जीवन से दिखता है जो, यीशु (पुत्र) के जीवन की तरह, परमेश्वर पिता की इच्छा का पूरी तरह पालन करने के लिए रोज़ाना अपने विचारों और अपनी मर्ज़ी को वश में करता है।

दूसरा, हमें प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार अपने पड़ोसियों से सच्चे दिल से प्रेम करना चाहिए।

जब हम अपने पड़ोसियों से प्रेम करते हैं, तो हमें ईमानदारी से "मेल-मिलाप की सेवा" (2 कुरिन्थियों 5:18) को पूरा करना चाहिए जो परमेश्वर ने हमें बिना किसी शर्त के सौंपी है। हमें परमेश्वर द्वारा सौंपे गए "मेल-मिलाप के संदेश" (2 कुरिन्थियों 5:19) को उन पड़ोसियों तक हिम्मत के साथ पहुँचाना चाहिए जो भटक रहे हैं; हमें ऐसे शांतिदूत बनना चाहिए जो सुसमाचार के ज़रिए टूटे हुए रिश्तों को जोड़ें और अपने साथी विश्वासियों के साथ मिल-जुलकर रहें (1 थिस्सलुनीकियों 5:13)।

(2) उनकी वर्तमान सेवा: हमारी ओर से स्वर्गीय दरबार में पैरवी करना

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:1 को देखें। प्रेरित यूहन्ना उस शानदार सेवा के बारे में गवाही देते हैं जो प्रभु इस समय स्वर्गीय सिंहासन के दाहिने हाथ पर हमारे लिए कर रहे हैं: "मेरे प्यारे बच्चों, मैं तुम्हें यह इसलिए लिख रहा हूँ ताकि तुम पाप न करो। लेकिन अगर कोई पाप करता है, तो पिता के सामने हमारा एक वकील है—यीशु मसीह, जो धर्मी है।" जैसा कि *समकालीन कोरियाई बाइबल* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) में कहा गया है, भले ही हम कमज़ोर हों और पाप कर बैठें, यीशु मसीह, जो धर्मी हैं, हमारे साथ हैं और पिता के सामने हमारा बचाव करते हैं। यहाँ "Advocate" (वकील या पक्षसमर्थक) के तौर पर अनुवादित शब्द का मूल ग्रीक शब्द वही है जो "Helper" (मददगार या *Paraclete*) का है; इस शब्द का इस्तेमाल जॉन 16:7 में पवित्र आत्मा के लिए किया गया है। इसका शाब्दिक अर्थ है "मदद के लिए पास बुलाया गया व्यक्ति," जो एक ऐसी ईश्वरीय उपस्थिति को दर्शाता है जो विश्वास करने वाले के साथ-साथ चलती है। इस शब्द का अंतिम समय (eschatological) और कानूनी महत्व और भी खास है: यह एक ऐसे "बचाव पक्ष के वकील" (defense attorney) की ओर इशारा करता है जो परमेश्वर के न्याय-आसन के सामने आरोपी की मदद करता है।

प्यारे संतों, ज़रा उस पल की कल्पना करें जब हम परमेश्वर पिता की अदालत में खड़े हों, जो पवित्र और न्यायपूर्ण हैं। प्रकाशितवाक्य 12:10 में, प्रेरित जॉन शैतान को "हमारे भाइयों पर दोष लगाने वाला" बताते हैं—एक ऐसा अभियोजक जो हमारे खिलाफ आरोप लगाता है। भले ही हमने यीशु मसीह के नाम से अपने पापों को मान लिया है, और परमेश्वर—जो विश्वासयोग्य और न्यायपूर्ण हैं—ने हमारे सभी पापों को क्षमा कर दिया है और हमें हर तरह के अधर्म से शुद्ध किया है (1 जॉन 1:9), फिर भी शैतान लगातार हमारी गलतियों को खोदकर निकालता है और न्याय करने वाले परमेश्वर के सामने हमें पापी ठहराता है। वह लगातार हमें दोषी ठहराता है और हम पर आरोप लगाता है, ताकि हमें निराशा में धकेल सके। फिर भी, आध्यात्मिक संकट के उस पल में, यीशु मसीह—जो अनंत महायाजक और धर्मी हैं—हमारे बेहतरीन बचाव वकील के तौर पर सामने आते हैं। न्याय करने वाले परमेश्वर पिता के सामने, प्रभु शैतान द्वारा लगाए गए हर आरोप को खारिज कर देते हैं और आज भी मज़बूती से हमारा बचाव करते हैं।

प्यारे संतों, तो फिर, हमारे बचाव वकील यीशु स्वर्गीय अदालत में हमारा पक्ष कैसे रखते हैं? परमेश्वर पिता—जो पवित्र, न्यायपूर्ण और सबके न्यायकर्ता हैं—के सामने, क्या वे उन शानदार निशानों को नहीं दिखाएंगे जो

कीलों और भाले से बने थे, जब उन्होंने हमारे सभी पापों का बोझ अपने ऊपर लिया और क्रूस पर अपनी जान दी? (जॉन 20:27; प्रकाशितवाक्य 5:9, 13:8) पूरे ब्रह्मांड में प्रायश्चित का इससे ज़्यादा स्पष्ट या पक्का सबूत और कोई नहीं है। जब वे अपने ही इकलौते बेटे के प्रायश्चित वाले लहू के निशानों को देखते हैं, तो न्यायकर्ता परमेश्वर पिता भला आपको और मुझे दोषी कैसे ठहरा सकते हैं? इसीलिए प्रेरित पौलुस ने रोमियों 8:1 में एक शानदार आज़ादी की घोषणा की: "इसलिए, जो मसीह यीशु में हैं, उनके लिए अब कोई दंड नहीं है।" इसके अलावा, रोमियों 8:33–34 में, वह एक ज़बरदस्त घोषणा करते हैं जो शैतान के आरोपों का मज़ाक उड़ाती हुई लगती है: "परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर कौन कोई आरोप लगाएगा? परमेश्वर ही उन्हें धर्मी ठहराता है। तो फिर कौन है जो दंड देता है?" जैसा कि बाइबल का *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* बताता है, चूँकि हमें धर्मी ठहराने वाला स्वयं परमेश्वर है—जो पूरी सृष्टि का स्वामी है—तो कौन हमें फिर से पापी कहने और हम पर आरोप लगाने की हिम्मत करेगा? प्रभु के कीमती लहू की उपस्थिति में शैतान द्वारा लगाया गया कोई भी आरोप पूरी तरह से बेअसर हो जाता है और उसका कोई निशान नहीं बचता। इसलिए, जब हम अपनी कमज़ोरी के कारण पाप कर बैठते हैं, तो हमें निराशा में नहीं डूबना चाहिए और न ही डरकर छिपना चाहिए; बल्कि, हमें धर्मी यीशु मसीह की ओर देखना चाहिए—जो परमेश्वर पिता के सामने हमारे उत्तम वकील हैं (1 यूहन्ना 2:1)। हमें ईमानदारी से अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए (1 यूहन्ना 1:9), और उस लहू-रंजित सुसमाचार पर पूरा भरोसा रखना चाहिए—यह सच्चाई कि वे स्वयं हमारे पापों के लिए प्रायश्चित का उत्तम बलिदान बने। तब, परमेश्वर, जो विश्वासयोग्य और धर्मी हैं, अपने वादे के अनुसार हमारे सभी पापों को क्षमा कर देंगे और हमारी आत्माओं को उन सभी बुराइयों और अधर्म से शुद्ध करेंगे जो हमें घेरे हुए हैं।

पापों की क्षमा का अनुग्रह पाने के बाद, विश्वास करने वाले के कदम स्वाभाविक रूप से प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने वाले जीवन की ओर बढ़ने चाहिए (1 यूहन्ना 2:3)। यदि परमेश्वर की पवित्र क्षमा का अनुभव करने के बाद भी हम अपने पुराने तरीकों को नहीं छोड़ते और इसके बजाय उनकी आज्ञाओं का अनादर और उल्लंघन करते रहते हैं, तो हम खुद को केवल झूठा साबित करते हैं जो केवल होंठों से प्रभु को जानने का दिखावा करते हैं—यह इस बात का सबूत है कि सच्चाई हमारे भीतर नहीं है (1 यूहन्ना 2:4)। इसके विपरीत, जब हम खुशी-खुशी परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो हम अपने जीवन से यह पुष्टि करते हैं कि हम वास्तव में उन्हें जानते हैं (1 यूहन्ना 2:3)। दूसरे शब्दों में, केवल आज्ञाकारिता के जीवन के माध्यम

से ही हम परमेश्वर की केवल सैद्धांतिक समझ से आगे बढ़कर उस परमेश्वर को जान पाते हैं—अधिक निश्चितता और व्यक्तिगत अनुभव के साथ—जो हमारे जीवन में सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। जब हम प्रभु के वचन का पूरी तरह से पालन करते हैं, तभी परमेश्वर का परिपूर्ण प्रेम हमारे दिलों में पूरी तरह से महसूस होता है (1 यूहन्ना 2:5)।

प्रिय संतों, मैं आज के मनन को समाप्त करना चाहता हूँ। जो लोग यीशु मसीह में जीने का दावा करते हैं, उन्हें ठीक वैसे ही चलना चाहिए जैसे वह चले थे। जैसे एक डाली अंगूर की बेल से मजबूती से जुड़ी रहती है, वैसे ही हमें जीवन के स्रोत, प्रभु से मजबूती से जुड़े रहना चाहिए। हमें कभी भी प्रभु से दूर नहीं होना चाहिए, बल्कि हर पल उनके साथ चलना चाहिए। एक सच्चा विश्वासी जो प्रभु में बना रहता है, वही है जो उनके वचन का पालन करता है। जब हम खुशी-खुशी उनके वचन को मानते हैं और उस पर चलते हैं, तो परमेश्वर का परिपूर्ण प्रेम हमारे भीतर खूबसूरती से पूरा होता है। संक्षेप में, जो प्रभु में बना रहता है वह आज्ञाकारी व्यक्ति होता है जो उनके वचन का पालन करता है, और जो उनके वचन का पालन करता है, वही प्रभु के प्रेम में बना रहता है। यीशु के उस शिष्य के जीवन में, जो आज्ञाकारिता के कदमों से परमेश्वर के प्रेम को पूरा करता है, प्रभु द्वारा वादा की गई खुशी एक बड़ी लहर की तरह उमड़ पड़ती है। नतीजतन, उनके जीवन में जीवन के पेड़ के फल—पवित्र आत्मा के फल—की भरपूर फसल लगती है।

तो, वे कौन से खास काम और सेवाएँ थीं जिन्हें करने के लिए हमें—जो उनमें बने रहते हैं—बुलाया गया है?

(1) सबसे पहले, इतिहास में प्रभु ने हमारे लिए जो काम किया, वह था हमारे सभी पापों का बोझ उठाना और क्रूस पर प्रायश्चित के बलिदान के रूप में मरने के लिए अपना लहू बहाना।

क्योंकि परमेश्वर हमसे बहुत प्यार करते थे, इसलिए उन्होंने अपने इकलौते बेटे, यीशु को क्रूस पर एक बलिदान के रूप में—पास्का के मेमने की तरह—दे दिया। हमारे सभी पापों की सज़ा खुद सहकर, यीशु ने परमेश्वर की उस पवित्र और न्यायपूर्ण माँग को पूरी तरह से पूरा किया कि पाप की सज़ा मिलनी ही चाहिए। जो विश्वासी क्रूस के इस महान प्रेम को गहराई से समझते हैं, वे खुशी-खुशी प्रभु की दोहरी आज्ञा का पालन

करते हैं: पूरे दिल से परमेश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसियों से वैसे ही प्रेम करना जैसे वे खुद से करते हैं। इसके अलावा, परमेश्वर द्वारा सौंपे गए मेल-मिलाप के संदेश के साथ, वे दुनिया में मेल-मिलाप की सेवा को ईमानदारी से पूरा करते हैं।

(2) दूसरी बात, प्रभु इस समय जो काम कर रहे हैं—स्वर्गीय सिंहासन के दाहिने हाथ बैठकर—वह परमेश्वर पिता के सामने हमारी पूरी तरह से रक्षा करने की सेवा है, जब भी हम अपनी कमज़ोरी में पाप करते हैं।

जब हम परमेश्वर की पवित्र अदालत में खड़े होते हैं, तो शैतान—जो दोष लगाने वाला है—चालाकी से हमारी गलतियों और पापों को मरोड़-मरोड़कर परमेश्वर (न्यायाधीश) के सामने हमारे खिलाफ आरोप लगाता है और हमें दोषी ठहराने की कोशिश करता है। उस अहम आध्यात्मिक पल में, धर्मी यीशु मसीह हमारे बेहतरीन बचाव वकील के तौर पर सामने आते हैं। क्रूस पर लगी कीलों के शानदार निशानों को सबूत के तौर पर पेश करते हुए, प्रभु खुद परमेश्वर पिता (न्यायाधीश) के सामने हमारा बचाव करते हैं।

इसलिए, जो लोग मसीह यीशु में हैं, उनके लिए कोई सज़ा नहीं है—एक बार भी नहीं। चूँकि परमेश्वर—जो पूरी कायनात के सर्वोच्च शासक हैं—ने हमें पहले ही धर्मी घोषित कर दिया है, तो कौन हमें पापी कहने और फिर से सज़ा देने की हिम्मत करेगा? शैतान के सभी आरोपों को प्रभु के कीमती लहू ने हमेशा के लिए बेअसर कर दिया है। मेरी दिली प्रार्थना है कि हम सब प्रायश्चित की इस महान कृपा और उनकी मध्यस्थता की शक्ति पर पक्का विश्वास करें; कि हम हर दिन प्रभु—जो सच्ची दाखलता हैं—से मज़बूती से जुड़े रहें; और कि हम पूरे भरोसे के साथ आज्ञाकारिता और प्रेम का जीवन जिएं, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने जिया था।

अंधेरा छंट रहा है, और सच्ची रोशनी पहले से ही चमक रही है।

[1 यूहन्ना 2:7–11]

"प्यारे लोगों, मैं तुम्हें कोई नया हुक्म नहीं लिख रहा हूँ, बल्कि वही पुराना हुक्म लिख रहा हूँ जो तुम्हें शुरू से मिला था। पुराना हुक्म वही वचन है जो तुमने सुना है। साथ ही, यह एक नया हुक्म भी है जो मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, जो उसमें और तुममें सच है, क्योंकि अंधेरा छंट रहा है और सच्ची रोशनी पहले से ही चमक रही है। जो कोई कहता है कि वह रोशनी में है और अपने भाई से नफ़रत करता है, वह अब भी अंधेरे में है। जो अपने भाई से प्यार करता है, वह रोशनी में रहता है, और उसके ठोकर खाने का कोई कारण नहीं होता। लेकिन जो अपने भाई से नफ़रत करता है, वह अंधेरे में है और अंधेरे में चलता है, और उसे नहीं पता कि वह कहाँ जा रहा है, क्योंकि अंधेरे ने उसकी आँखें अंधी कर दी हैं।"

प्यारे संतों, आपकी नज़र में, क्या हमारा विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च प्रभु के प्यार से भरपूर समुदाय है? क्या आप हमारे चर्च में यीशु मसीह के गर्मजोशी भरे प्यार को पूरी तरह महसूस करते हैं?

जब हमने साल 2019 की शुरुआत की, तो हमने “एक-दूसरे से प्यार करो” का आदर्श वाक्य अपनाया। इसे अपनी ज़िंदगी में उतारने के लिए, हमने तीन खास लक्ष्य तय किए: धन्यवाद देना, माफ़ करना और त्याग करना। आज्ञाकारिता के इस संकल्प को ध्यान में रखते हुए, हर रविवार जब हम परमेश्वर को अपना चढ़ावा भेंट करते हैं, तो पूरी मंडली एक आवाज़ में गॉस्पेल गीत “Love Is Always Patient” (प्यार हमेशा धीरज रखता है) गाती है। हर हफ़्ते चढ़ावे के समय के लिए इस भजन को चुनने के पीछे एक साफ़ पादरी-संबंधी कारण है। ऐसा इसलिए है क्योंकि चढ़ावे के पल में—जब मंडली परमेश्वर को अपनी कीमती भौतिक भेंटें देती है—हम बार-बार अपने दिलों की गहराई से एक पवित्र प्रतिज्ञा करना चाहते थे कि “परमेश्वर के सामने आखिर तक एक-दूसरे से प्यार करेंगे।” इसके बोल इस प्रकार हैं: प्यार धीरज रखता है और दयालु है; यह जलन नहीं रखता, शेखी नहीं बघारता, या घमंड से काम नहीं करता। प्यार असभ्य नहीं है, अपना स्वार्थ नहीं ढूँढ़ता, आसानी से गुस्सा नहीं करता, और सच्चाई के साथ खुश होता है। प्यार सब कुछ सहता है, उम्मीद रखता है, विश्वास करता है और डटा रहता है; प्यार हमेशा एक जैसा रहता है। विश्वास, उम्मीद और प्यार दुनिया के अंत तक बने रहते हैं, और इन तीनों में सबसे बड़ा प्यार है। ये बोल बाइबिल के मशहूर "प्रेम के अध्याय"—1 कुरिन्थियों 13—पर आधारित हैं। इसलिए, जब हम हर रविवार को अपने दसवें अंश और भेंट के साथ यह स्वीकारोक्ति करते हैं, तो इसके साथ एक विनम्र रवैया और पक्का इरादा भी होना चाहिए—सिर्फ़ गाना गाने से कहीं आगे बढ़कर—कि "हम परमेश्वर के वचन, 1 कुरिन्थियों 13 में बताए गए प्रेम के नियम का पूरी तरह पालन करेंगे।" आज हमारे लिए ऐसी स्वीकारोक्ति और संकल्प इतना ज़रूरी क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि, जैसा कि प्रभु ने मत्ती 24:12 में अंतिम समय के बारे में चेतावनी दी थी, हम एक ऐसी ठंडी रात जैसे दौर में जी रहे हैं जहाँ "अधर्म बढ़ रहा है और बहुत से लोगों का प्रेम ठंडा पड़ रहा है।"

आज भी, जब मैं रविवार की आराधना के दौरान मंडली के साथ यह भजन गाता हूँ, तो यह पंक्ति "प्रेम सब कुछ सहता है, आशा रखता है, विश्वास करता है और धीरज धरता है" मेरे दिल में गहराई तक उतर जाती है। खासकर, "प्रेम आशा रखता है और विश्वास करता है" शब्द मेरी आत्मा को बहुत सुकून और ताकत देते हैं। इस गहरी, दिल से निकली भावना का कारण शायद मेरे आस-पास के वे विश्वासी भाई-बहन हैं जो अभी अनदेखी मुश्किलों और दर्द से गुज़र रहे हैं। यह मेरे दिल से निकली एक पादरी की प्रार्थना से उपजा है—एक ऐसी प्रार्थना कि, जब वे बहुत मुश्किल हालात का सामना कर रहे हों, जहाँ हर रास्ता बंद लगता हो और

उम्मीद की कोई गुंजाइश न दिखे, तब भी विश्वासयोग्य परमेश्वर उनमें एक अटूट, स्वर्गीय विश्वास भर दे; ऐसा विश्वास जैसा विश्वास के पिता अब्राहम का था, जिन्होंने "निराशा में भी आशा के साथ विश्वास किया" (रोमियों 4:18)।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:8 में, प्रेरित यूहन्ना हमें एक शानदार नए युग में बुलाते हैं और एक महान सत्य बताते हैं: "मैं तुम्हें फिर से एक नई आज्ञा लिख रहा हूँ, जो उसमें और तुममें सच है, क्योंकि अंधेरा छँट रहा है और सच्चा प्रकाश पहले से ही चमक रहा है।" *कंटेम्पररी कोरियन वर्ज़न* इस वचन का अनुवाद और भी साफ़ तरीके से करता है: "हालाँकि, मैं तुम्हें फिर से एक नई आज्ञा लिख रहा हूँ। क्योंकि अंधेरा छँट रहा है और सच्चा प्रकाश पहले से ही चमक रहा है, इसलिए वह आज्ञा मसीह और तुम दोनों के लिए सच है।" जब मैंने इन शब्दों पर गहराई से विचार किया, तो मैं इस घोषणा से बहुत प्रभावित हुआ कि "अंधेरा छँट रहा है और सच्चा प्रकाश पहले से ही चमक रहा है।" प्रभु से मिली आध्यात्मिक समझ से प्रेरित होकर, मैंने इस वचन पर दो मुख्य पहलुओं से गहराई से मनन किया है।

सबसे पहले, हमें इस शानदार घोषणा के असली अर्थ पर गहराई से सोचना चाहिए: "अंधेरा छंट रहा है और सच्चा प्रकाश पहले से ही चमक रहा है।"

प्रेरित यूहन्ना कहते हैं कि आध्यात्मिक रात खत्म हो रही है और जीवन की एक नई और बड़ी सुबह हो चुकी है। तो फिर, प्रेरित द्वारा इतने ज़ोर से बताए गए "सच्चे प्रकाश के चमकने" का हमारे उद्धार के इतिहास में क्या खास मतलब है? मैंने दो नज़रियों से इस शानदार घोषणा के अर्थ को गहराई से समझाने की कोशिश की है।

पहला सवाल यह है कि प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताए गए "सच्चे प्रकाश" का असल में क्या मतलब है, और वह "अंधेरा" क्या है जो इसके ठीक उलट है।

जब हम यहाँ "सच्चे प्रकाश" की बात करते हैं, तो हमें स्वाभाविक रूप से परमेश्वर के उस वर्णन की याद आती है जिसमें कहा गया है कि उनमें "ज़रा भी अंधेरा नहीं है"—एक ऐसा सच जिस पर हमने 1 यूहन्ना 1:5 में मनन किया था। फिर भी, प्रेरित कहते हैं कि यह सच्चा प्रकाश इस दुनिया में "पहले से ही चमक रहा है"

(1 यूहन्ना 2:8)। इस ऐतिहासिक चमक के संदर्भ में देखें तो, यूहन्ना जिस सच्चे प्रकाश की बात करते हैं, वह परमेश्वर के पुत्र—यीशु मसीह—की ओर इशारा करता है, जो शरीर धारण करके इस धरती पर आए थे। इसकी पुष्टि यूहन्ना 1:9 की घोषणा से साफ़ होती है: "वह सच्चा प्रकाश जो हर इंसान को रोशनी देता है, दुनिया में आ रहा था।" इस वचन के आधार पर, यह साफ़ हो जाता है कि 1 यूहन्ना 2:8 में बताए गए "सच्चे प्रकाश" का मतलब खुद यीशु मसीह, यानी परमेश्वर के पुत्र से है, जो दो हज़ार साल पहले मानव इतिहास के बीच आए थे।

तो फिर, प्रेरित यूहन्ना ने सिर्फ़ "प्रकाश" कहने के बजाय जान-बूझकर "सच्चा प्रकाश" शब्द का इस्तेमाल क्यों किया? मुझे इसका आध्यात्मिक आधार 2 कुरिन्थियों 11:14 में मिला। *समकालीन कोरियाई संस्करण* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) यह चेतावनी देता है: "इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है। यहाँ तक कि शैतान भी खुद को प्रकाश के स्वर्गदूत का रूप दे लेता है।" यूहन्ना ने अपनी पत्री में यीशु मसीह को "सच्चा प्रकाश" इसलिए कहा ताकि वे शैतान के धोखे का जवाब दे सकें, जो चालाकी से "प्रकाश के स्वर्गदूत" का रूप धर लेता है। उस समय चर्च को हिला देने वाली शैतान की गलत शिक्षाओं और ताकतों ने हमेशा सच्चे प्रकाश का रूप धरकर विश्वासियों को धोखा देने की कोशिश की। प्रभु और ऐसी नकली या भेष बदलने वाली रोशनी के बीच साफ अंतर बताने के लिए, यूहन्ना ने घोषणा की कि यीशु मसीह ही एकमात्र और पूर्ण "सच्चा प्रकाश" हैं, जो हमेशा के लिए अंधेरे की ताकतों को खत्म करने में सक्षम हैं। क्योंकि ये धोखेबाज "झूठी रोशनी" विश्वासियों को गुमराह कर रही थीं, प्रेरित यूहन्ना ने घोषणा की कि परमेश्वर ही "सच्चा प्रकाश" है। यदि "सच्चा प्रकाश" का अर्थ पुत्र, यीशु मसीह है, तो उनका विरोध करने वाली "झूठी रोशनी" का अर्थ शैतान और मसीह-विरोधी (एंटीक्राइस्ट) की ताकतें हैं। 1 यूहन्ना 2:18 और 22 इस धोखे की सच्चाई को साफ-साफ उजागर करते हैं: "हे बच्चों, यह आखिरी घड़ी है; और जैसा कि तुमने सुना है कि मसीह-विरोधी आ रहा है, अभी भी कई मसीह-विरोधी आ चुके हैं; इससे हम जानते हैं कि यह आखिरी घड़ी है... झूठा कौन है, सिवाय उसके जो इस बात से इनकार करता है कि यीशु ही मसीह है? यही मसीह-विरोधी है, जो पिता और पुत्र का इनकार करता है।" जब प्रेरित यूहन्ना ने यह पत्र लिखा, तो चर्च समुदाय के भीतर और बाहर कई मसीह-विरोधी पहले ही सामने आ चुके थे और सच्चाई को कमजोर कर रहे थे। इन "आखिरी दिनों" की भीषण आध्यात्मिक लड़ाई से पूरी तरह वाकिफ होने के नाते, उन्होंने विश्वासियों को इन झूठी रोशनी से बचाने के लिए यीशु मसीह को एकमात्र "सच्चा प्रकाश" के रूप में जोरदार ढंग से घोषित किया।

इसके अलावा, जब मैं आज के वचन (1 यूहन्ना 2:8) में "सच्चे प्रकाश" और "अंधेरे" के बीच के अंतर पर विचार करता हूँ, तो मुझे प्रकाश और अंधेरे के उन चार आध्यात्मिक पहलुओं की याद आती है जिनकी हमने पहले 1 यूहन्ना 1:5–10 के माध्यम से गहराई से जांच की थी। (1) जीवन और मृत्यु: प्रकाश अनंत जीवन है, जबकि अंधेरा अनंत मृत्यु है (यूहन्ना 1:4; 1 यूहन्ना 1:1–2)।
(2) सच्चाई और झूठ: प्रकाश परमेश्वर की सच्चाई है, जबकि अंधेरा शैतान का झूठ है (1 यूहन्ना 1:6)।
(3) प्रेम और घृणा: प्रकाश प्रभु का प्रेम है, जबकि अंधेरा पापपूर्ण घृणा है (1 यूहन्ना 2:9, 11)। (4) धार्मिकता और अधार्मिकता: प्रकाश परमेश्वर की धार्मिकता है, जबकि अंधकार बुराई और अधार्मिकता है (1 यूहन्ना 1:9; 3:12)।

ऐसे में, जब प्रेरित यूहन्ना ने आज के अंश में कहा कि "सच्चा प्रकाश पहले से ही चमक रहा है," तो इन चार पहलुओं में से कौन सा पहलू उनके मन में सबसे ज़्यादा था? यह तीसरा अंतर है: "प्रेम और घृणा।" इसका खास कारण बाद के वचनों—1 यूहन्ना 2:9–11—में मिलता है, जहाँ प्रेरित यूहन्ना उन लोगों की आध्यात्मिक स्थितियों में अंतर पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो अपने भाइयों से प्रेम करते हैं और जो उनसे घृणा करते हैं; वे विस्तार से दिखाते हैं कि सच्चे प्रकाश का फल सबसे बढ़कर "प्रेम" है।

मैंने प्रेरित यूहन्ना की इस घोषणा के मुक्ति-संबंधी ऐतिहासिक महत्व पर गहराई से विचार करने के लिए एक कदम और आगे बढ़ाया कि अंधकार "मिट रहा है" और सच्चा प्रकाश "पहले से ही चमक रहा है।"

सबसे पहले, इस संदर्भ में "मिटने" (passing away) वाली क्रिया का असल अर्थ क्या है? वही ग्रीक क्रिया 1 यूहन्ना 2:17 में भी आती है: "संसार और उसकी इच्छाएँ मिट जाती हैं, लेकिन जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह हमेशा जीवित रहता है।" जैसा कि *बाइबल फॉर मॉडर्न पीपल* में अनुवाद किया गया है, यह संसार—और इसके लिए इंसानी लालच—एक धुंध की तरह है जो आखिरकार मिट जाएगी। यहाँ ध्यान देने वाली एक धर्म-संबंधी बात यह है कि "मिटने" वाली क्रिया वर्तमान निरंतर काल (present continuous tense) में है। दूसरे शब्दों में, 1 यूहन्ना 2:8 में यह कथन कि "अंधकार मिट रहा है," एक आध्यात्मिक सच्चाई को दर्शाता है: कि यह संसार और इसकी ओर निर्देशित इच्छाएँ, इसी क्षण, लगातार बिखर रही हैं और खत्म होने की ओर बढ़ते हुए गायब हो रही हैं।

प्रेरित यूहन्ना ने जिन "दुनिया" और "इच्छाओं" की पहचान की है, वे असल में क्या हैं? वे ठीक वही हैं जिनका ज़िक्र 1 यूहन्ना 2:16 में "दुनिया की हर चीज़" के तौर पर किया गया है—यानी, "शरीर की लालसा, आँखों की लालसा और जीवन का घमंड।" इसलिए, यह घोषणा कि "अंधेरा मिट रहा है," जीत का एक बहुत शानदार ऐलान है। यह एक महान सुसमाचार की घोषणा है कि पाप का राज्य—जिस पर शैतान और मसीह-विरोधी (झूठी रोशनी) का राज था—और उसके साथ-साथ शरीर की लालसा, आँखों की लालसा और जीवन का घमंड, जो उस राज में पनपे थे, और साथ ही हमेशा की मौत, झूठ, नफ़रत और अधर्म का पूरा काला सिस्टम, जिसने कभी हमें पाप की सज़ा में फँसाया था, वे सब सच्चे प्रकाश के आने से इसी पल पूरी तरह खत्म हो रहे हैं और मिट रहे हैं।

तो फिर, अंधेरे की ताकतें और उनकी इच्छाओं के सिस्टम इसी पल इतनी पक्की तरह से क्यों मिट रहे हैं? इसकी मुख्य वजह यह है कि यीशु मसीह—जो "सच्चा प्रकाश" हैं—अंधेरे पर अपना प्रकाश डाल रहे हैं, जैसा कि प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:8 में बताया था। जब प्रकाश आता है, तो अंधेरा अपने-आप हट जाता है। तो फिर, प्रेरित के इस बयान का कि सच्चा प्रकाश "पहले से ही चमक रहा है," मुक्ति के इतिहास के नज़रिए से क्या खास मतलब है? यूहन्ना 1:4–5 इस रहस्य की गवाही देता है: "उसमें जीवन था, और वह जीवन सारे इंसानों के लिए प्रकाश था। प्रकाश अंधेरे में चमकता है, और अंधेरा उस पर हावी नहीं हो सका।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्ज़न* में इसका अनुवाद किया गया है, मसीह में जीवन था, और यह जीवन इंसानियत के लिए प्रकाश था। हालाँकि यह प्रकाश अंधेरे के बीच ज़ोरदार ढंग से चमका, लेकिन अंधेरे ने न तो उस प्रकाश की ताकत को पहचाना और न ही उसे निगलने की हिम्मत की। यीशु मसीह, जो सच्चा प्रकाश हैं—"इंसानों का प्रकाश" (1 यूहन्ना 1:4) और "दुनिया का प्रकाश" (यूहन्ना 9:5)—वे खुद दो हज़ार साल पहले इतिहास की इस अंधेरी दुनिया में आए थे। प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 1:2 में गहरे जज़्बात के साथ इस आध्यात्मिक सच्चाई को माना और कहा, "यह जीवन ज़ाहिर हुआ।" दूसरे शब्दों में, यीशु मसीह—जो सच्चा प्रकाश हैं—पृथ्वी पर हमारे लिए आने से पहले ही पिता परमेश्वर के साथ अनंत जीवन के रूप में हमेशा से मौजूद थे। पहले मनुष्य आदम की नाफ़रमानी के कारण हमेशा के लिए क्रोध और अंधकार में नष्ट होने के लिए अभिशप्त, पापियों से भरी इस दुनिया में, इकलौते पुत्र यीशु मसीह जीवन का प्रकाश लेकर आए।

आज के वचन (1 यूहन्ना 2:8) के दूसरे हिस्से में, प्रेरित यूहन्ना एक कदम और आगे बढ़कर कहते हैं, "सच्चा प्रकाश पहले से ही चमक रहा है।" यहाँ एक आध्यात्मिक सच्चाई है जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए: "पहले से ही चमक रहा है" क्रिया—ठीक उसी तरह जैसे "अंधकार मिट रहा है" वाक्यांश, जिस पर हमने पहले मनन किया था—मूल ग्रीक भाषा में वर्तमान काल (present tense) में है। इस काल का आध्यात्मिक महत्व बहुत गहरा है। जिस तरह अंधकार का राज्य अभी भी ढह रहा है और अपने अंत की ओर बढ़ रहा है, उसी तरह यीशु मसीह—जो दो हज़ार साल पहले सच्चे प्रकाश के रूप में इस दुनिया में आए थे—सिर्फ़ थोड़ी देर के लिए चमके और फिर गायब नहीं हो गए। यहाँ तक कि अब भी, जब वे अपने पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद सिंहासन के दाहिने हाथ बैठे हैं, प्रभु लगातार हमारी सूखी, रेगिस्तान जैसी हकीकतों और हमारी आत्मा की गहरी घाटियों में अनंत जीवन का सच्चा प्रकाश चमका रहे हैं। हम इस युग के धन्य लोग हैं, जो हर दिन उसी प्रकाश के सहारे जी रहे हैं। दूसरी बात, कृपा के इस युग में जहाँ सच्चा प्रकाश लगातार चमकता है, हमें गंभीरता से यह पहचानना होगा कि कौन सचमुच प्रकाश का है और कौन अंधकार में है।

प्रेरित यूहन्ना सच्चे प्रकाश के इस युग में रहने वाले विश्वासियों की आध्यात्मिक स्थितियों में स्पष्ट अंतर बताते हुए एक सवाल उठाते हैं। आज, जब प्रकाश तेज़ी से चमक रहा है, तो परमेश्वर द्वारा पहचाने गए सच्चे "प्रकाश की संतान"—जो अंधकार में अंधे हैं और शैतान के अधिकार में हैं—उनसे अपने जीवन के सबूतों के आधार पर कैसे अलग दिखते हैं? आज का बाइबल पाठ, 1 यूहन्ना 2:9–11, उस विश्वासी के जीवन को ठीक से परखता है जो रोशनी और अंधेरे के बीच की सीमा पर खड़ा है: "जो कोई कहता है कि वह रोशनी में है, लेकिन अपने भाई या बहन से नफ़रत करता है, वह अभी भी अंधेरे में है। जो कोई अपने भाई और बहन से प्यार करता है, वह रोशनी में रहता है, और उनमें ऐसी कोई चीज़ नहीं होती जिससे वे ठोकर खाएँ। लेकिन जो कोई अपने भाई या बहन से नफ़रत करता है, वह अंधेरे में है और अंधेरे में ही चलता-फिरता है। उन्हें पता नहीं होता कि वे कहाँ जा रहे हैं, क्योंकि अंधेरे ने उन्हें अंधा कर दिया है।" यह पत्र पाने वाले यहूदी ईसाइयों को संबोधित करते हुए, प्रेरित यूहन्ना रोशनी की संतानों और अंधेरे की संतानों के बीच साफ़ फ़र्क बताते हैं; वे उस "पुरानी आज्ञा" को—जिसे वे शुरू से जानते थे—एक शक्तिशाली "नई आज्ञा" के रूप में नए सिरे से बताते हैं (1 यूहन्ना 2:7–8)।

प्रेरित ने बुढ़ापे में प्यार की इस आज्ञा को इतनी गहराई और दिल से महसूस की गई गंभीरता के साथ क्यों लिखा? ऐसा इसलिए था क्योंकि उस समय के विश्वासियों को एक ऐसी सच्चाई का सामना करना पड़ रहा था जहाँ अंधेरे का राज्य ढह रहा था, जबकि यीशु मसीह—जो सच्ची रोशनी हैं—की महिमा उनके जीवन पर चमक रही थी। इसलिए, यूहन्ना की दिली इच्छा थी कि संत—उस शानदार रोशनी के आगमन के अनुरूप—पाखंड का मुखौटा उतार फेंकें और रोशनी की संतानों के रूप में, एक ऐसे जीवन की ओर बढ़ें जो पूरी तरह से "एक-दूसरे से प्यार करने" पर आधारित हो (1 यूहन्ना 3:23)।

तो फिर, प्रेरित यूहन्ना की इतनी ज़बरदस्त इच्छा क्यों थी कि संत रोशनी की संतानों के रूप में एक-दूसरे से पूरे दिल से प्यार करते हुए जिएँ? इस पाठ के संदर्भ के पीछे तीन मुख्य पादरी-संबंधी कारण हैं।

पहला, ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर का प्यार हमारे भीतर पूरा होता है।

जो लोग यीशु मसीह—सच्ची रोशनी और अनंत जीवन—पर विश्वास करते हैं, और इस तरह परमेश्वर के साथ सीधा संबंध (1 यूहन्ना 1:6) बनाए रखते हैं और प्रभु की आज्ञाओं का पूरी तरह पालन करते हैं (1 यूहन्ना 2:3, 5), वे अपने पड़ोसियों से भी खुद की तरह प्यार करने लगते हैं। आज्ञाकारिता के इस रास्ते पर चलने से, परमेश्वर का पूर्ण प्यार आखिरकार विश्वासी के दिल में पूरा होता है (1 यूहन्ना 2:5)।

दूसरा, ऐसा इसलिए है क्योंकि स्वर्गीय आनंद हमें लबालब भर देता है। जब हम प्रेम की आज्ञा का पालन करते हैं, तो परमेश्वर का पवित्र आनंद—जो दुनिया नहीं दे सकती—समुदाय और व्यक्ति की आत्मा में लहरों की तरह उमड़ता और बहता है (1 यूहन्ना 1:4)।
तीसरी बात, ऐसा इसलिए है क्योंकि यह पृथ्वी पर रहते हुए ही स्वर्ग के अनंत जीवन का अनुभव करने का एक ज़रिया बनता है।
ऐसे प्रेम में जिया गया जीवन विश्वास की सबसे शानदार सच्चाई है; यह हमें उस परिपूर्ण अनंत जीवन का अनुभव करने देता है—भले ही आंशिक रूप से—जिसका आनंद हम स्वर्ग में लेंगे; हम इस बंजर और थकी हुई पृथ्वी पर ही उसे एक ठोस सच्चाई के रूप में महसूस कर पाते हैं (1 यूहन्ना 1:4)।

यही मुख्य कारण है कि प्रेरित यूहन्ना ने यहूदी ईसाइयों को प्रेम के इस नियम—जो पुरानी और नई दोनों आज्ञाएँ हैं—के बारे में बार-बार ज़ोर दिया और लिखा। क्योंकि जो जीवन अपने भाई को अपने ही जीवन की तरह अपनाता है और उससे प्रेम करता है, वही "उस शिष्य का जीवन" जीने का एकमात्र तरीका है जो ठीक वैसा ही करता है जैसा यीशु ने किया था (1 यूहन्ना 2:6)—एक ऐसा विचार जिस पर हमने पहले भी मनन किया था। आज, यूहन्ना हमें प्यार से प्रोत्साहित करते हैं—ऐसे दौर में जब प्रेम कम होता जा रहा है—कि हम साहसपूर्वक प्रेम के मार्ग पर चलें, जो सच्ची ज्योति का फल है।

फिर भी, अनुग्रह के इस युग में जब सच्ची ज्योति इतनी तेज़ी से चमक रही है, आज हमारे सामने कौन सी दुखद समस्या है? आज का वचन, 1 यूहन्ना 2:9, हमारे छिपे हुए धार्मिक पाखंड को स्पष्ट रूप से उजागर करता है: "जो कोई ज्योति में होने का दावा करता है लेकिन अपने भाई या बहन से नफ़रत करता है, वह अभी भी अंधकार में है।" जैसा कि *समकालीन कोरियाई संस्करण* में अनुवाद किया गया है, जो व्यक्ति ज्योति में रहने का दावा तो करता है लेकिन असल में अपने भाई से नफ़रत करता है, वह केवल गहरे और स्पष्ट अंधकार में फँसा हुआ व्यक्ति है। इस बिंदु पर, हमें 1 यूहन्ना 2:6 में बताए गए उस गंभीर मानक की फिर से याद आती है, जिस पर हमने पहले गहराई से विचार किया था: "जो कोई उसमें रहने का दावा करता है, उसे वैसे ही चलना चाहिए जैसे यीशु चले थे।" इन दो वचनों के बीच के संबंध पर गहराई से मनन करने का मुख्य कारण वचन 9 में की गई घोषणा है: "ज्योति में रहने का दावा करना।" दूसरे शब्दों में, जो व्यक्ति अपने होंठों से यह स्वीकार करता है कि वह यीशु मसीह में रहता है (वचन 6), उसे ज्योति में रहने वाला व्यक्ति भी होना चाहिए (वचन 9)। और अगर कोई सच में रोशनी में रहता है, तो उसे स्वाभाविक रूप से ठीक वैसे ही जीना चाहिए जैसे यीशु मसीह—जो सच्ची रोशनी हैं—जीए थे (वचन 6)।

प्यारे संतों, तो फिर, यीशु मसीह के जीवन जीने के तरीके का असल में क्या मतलब है? क्या प्रभु ने हमसे—और विश्वास रखने वाले अनगिनत भाई-बहनों से—प्यार किया या हमसे नफ़रत की? हमें लग सकता है कि इस सवाल का जवाब तो बिल्कुल साफ़ और ज़ाहिर है। जैसा कि पूरी दुनिया जानती है, हमारे प्रभु ने अपने भाइयों से इतना गहरा प्यार किया कि उन्होंने क्रूस पर अपनी जान दे दी। तो फिर, हमें—जो यीशु में जीने

पर गर्व करते हैं और जिन्हें रोशनी की संतान कहा जाता है—आज इस दुनिया में कैसा व्यवहार करना चाहिए? क्या यह सही नहीं है कि हम भी अपने भाइयों से पूरे दिल से प्यार करें, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने किया था? अफ़सोस की बात है कि यह साफ़ है कि शुरुआती कलीसिया के उन यहूदी ईसाइयों में, जिन्हें प्रेरित यूहन्ना का पत्र मिला था, ऐसे ढोंगी लोग थे जो बाहर से तो रोशनी में जीने का दावा करते थे, लेकिन मन ही मन अपने साथी विश्वासियों के प्रति जलन और नफ़रत रखते थे (वचन 9)। यह दुखद आध्यात्मिक विरोधाभास आज भी आधुनिक कलीसिया में और हमारे अपने दिलों में लगातार चल रहा है।

(1) उस व्यक्ति का ढोंग जो अभी भी अंधेरे में चलता है

प्यारे संतों, अगर हम अपने होंठों से यह मानते हैं कि हम प्रभु में रहते हैं, फिर भी—रोशनी की संतान के तौर पर उनकी आज्ञाओं को मानते हुए अपने पड़ोसियों से प्यार करने के बजाय—हम जलन और नफ़रत से भरा जीवन जीते हैं, तो हमारी असली आध्यात्मिक सच्चाई क्या है? आज का अंश, 1 यूहन्ना 2:7–11, हमें इस मामले के बारे में दो गंभीर सच सिखाता है।

"जो कोई रोशनी में होने का दावा करता है लेकिन किसी भाई या बहन से नफ़रत करता है, वह अभी भी अंधेरे में है।" (1 यूहन्ना 2:9, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)

इसके अलावा, जो व्यक्ति रोशनी में रहने का दावा करता है लेकिन किसी भाई से नफ़रत करता है, वह अभी भी अंधेरे की ताकत के साये में चल रहा है। वचन 11 का पहला हिस्सा देखिए: "जो कोई भाई से नफ़रत करता है, वह अंधेरे में है और अंधेरे में चलता है..." *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* इसे इस तरह बताता है: "जो व्यक्ति भाई से नफ़रत करता है, वह अभी भी अंधेरे में है और अंधेरे में जी रहा है।"

आइए 1 यूहन्ना 1:5–6 को याद करें, जिस पर हमने पहले मनन किया था। चूँकि परमेश्वर ज्योति है और उसमें ज़रा भी अंधकार नहीं है, इसलिए यदि हम परमेश्वर के साथ संगति का दावा करते हैं और फिर भी अंधकार में चलते हैं, तो हम झूठ बोल रहे हैं और सच्चाई का पालन नहीं कर रहे हैं। इस धार्मिक सिद्धांत को अध्याय 2 की आयतों 9 और 11—जो आज हमारा मुख्य विषय है—पर लागू करने पर हम देखते हैं कि यदि हम

ज्योति में बने रहने का दावा करते हैं लेकिन अपने भाई से प्रेम नहीं करते—और इसके बजाय उससे घृणा करते हैं—तो हम अंधकार में ही रहते हैं; हम केवल अंधकार में रहने वाले पाखंडी हैं। यह एक गंभीर पाप है: परमेश्वर के सामने झूठ बोलना और सच्चाई का अनादर करना।

प्रेरित यूहन्ना 1 यूहन्ना 4:20 में इस सच्चाई को ज़ोर देकर दोहराते हैं: "यदि कोई कहता है, 'मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ,' और फिर भी अपने भाई से घृणा करता है, तो वह झूठा है। क्योंकि जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता, जिसे उसने देखा है, वह परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकता, जिसे उसने नहीं देखा है।" *समकालीन कोरियाई बाइबिल* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) के सीधे शब्दों में कहें तो: "जो कोई परमेश्वर से प्रेम करने का दावा करता है लेकिन अपने भाई से घृणा करता है, वह झूठा है। जो व्यक्ति अपने सामने मौजूद भाई से प्रेम नहीं कर सकता, वह उस परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकता जिसे उसने नहीं देखा है।"

(2) जो व्यक्ति ज्योति में होने का दावा करता है लेकिन अपने भाई से घृणा करता है, वह नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है, क्योंकि अंधकार ने उसकी आँखों को अंधा कर दिया है।

समकालीन कोरियाई बाइबिल 1 यूहन्ना 2:11 के उत्तरार्ध में इस दुखद आध्यात्मिक वास्तविकता का वर्णन इस प्रकार करती है: "...क्योंकि अंधकार ने उसकी आँखों को अंधा कर दिया है, इसलिए वह नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है।"

प्रिय संतों, यदि हमारी शारीरिक आँखें अंधी हो जाएँ तो हमारे जीवन का क्या होगा? क्या पूरी दुनिया में कोई ऐसा व्यक्ति है जो सही दिशा-ज्ञान के साथ अपनी मंज़िल की ओर सीधा चल सके, जबकि उसके सामने सब कुछ घोर अंधकार हो? अंधों के लिए दुखद वास्तविकता यह है कि वे किसी की पूरी मदद या मार्गदर्शन के बिना ठीक से एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते।

यूहन्ना 1:5 में, प्रेरित यूहन्ना ने घोषणा की, "ज्योति अंधकार में चमकती है, और अंधकार ने उसे नहीं हराया है।" फिर, आज के वचन—1 यूहन्ना 2:11—में वह बताते हैं कि जो कोई अपने भाई से नफ़रत करता है, वह आध्यात्मिक रूप से अंधा है; वह उसी अंधेरे की कैद में है और अंधा हो चुका है। जब हम इन दोनों वचनों

को जोड़ते हैं, तो उन लोगों की मुख्य समस्या यह होती है जो कहते तो हैं कि वे ज्योति में रहते हैं, लेकिन अपने भाइयों से नफ़रत करते हैं; असल में वे यीशु मसीह को—जो स्वयं ज्योति हैं—न तो सच में जानते हैं और न ही उनका अनुभव करते हैं। और साफ़ तौर पर कहें तो, जो लोग मुँह से तो कहते हैं कि वे यीशु—जो ज्योति हैं—में बने हुए हैं, लेकिन अपने साथी विश्वासियों से नफ़रत करते हैं, वे प्रभु के स्वभाव में मौजूद अनंत जीवन को समझ नहीं पाते (यूहन्ना 1:4–5)।

जो संत सच में यीशु मसीह—सच्ची ज्योति—में बने रहते हैं, उन्हें उनमें पाए जाने वाले अनंत जीवन की भरपूर शक्ति मिलती है और वे स्वाभाविक रूप से अपने पड़ोसी से वैसे ही गहरा प्रेम करने लगते हैं जैसे वे खुद से करते हैं। लेकिन, जो व्यक्ति अपने भाई से नफ़रत करता है, उसके पास जीवन की वह ज्योति नहीं होती। उनके प्रेम के मार्ग से भटकने और बिना किसी मकसद के इधर-उधर घूमने का कारण कुछ और नहीं, बल्कि बस यह है कि पाप के अंधेरे ने उनकी आत्मा की आँखों को पूरी तरह से अंधा कर दिया है (1 यूहन्ना 2:11)। इसके विपरीत, हमारा जीवन कैसा होता है जब हम सिर्फ़ मुँह की बातों से आगे बढ़कर सच में प्रभु में बने रहते हैं और ज्योति की संतान के तौर पर प्रेम की आज्ञा मानकर अपने पड़ोसियों की सेवा करते हैं? जैसा कि 1 यूहन्ना 2:10 कहता है, "जो कोई अपने भाई से प्रेम करता है, वह ज्योति में बना रहता है, और उसमें ठोकर खाने का कोई कारण नहीं होता।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल* कहती है, जो व्यक्ति अपने भाई से प्रेम करता है, वह ज्योति की जीवंतता में चलता है; इसलिए, उसकी आत्मा या जीवन में शर्मनाक अंधेरे या ठोकर खाने का कोई निशान नहीं होता।

प्यारे संतों, अगर हम मुँह से तो कहते हैं कि हम यीशु पर विश्वास करते हैं और उनमें बने हुए हैं, लेकिन अपने भाइयों और बहनों से प्रेम नहीं कर पाते—या इससे भी बुरा, उनके प्रति नफ़रत रखते हैं—तो क्या यह सही नहीं होगा कि हमारी आत्मा की गहराई में एक पवित्र एहसास और अंतरात्मा की चुभन महसूस हो? यह बात न केवल कलीसिया में साथी विश्वासियों पर लागू होती है, बल्कि घर पर भी—जो हमारी सबसे कीमती कार्यस्थली और सुरक्षित स्थान है। पति-पत्नी को एक-दूसरे का बहुत आदर और प्रेम करना चाहिए, और माता-पिता व बच्चों को एक-दूसरे से पूरी तरह प्रेम करना चाहिए; और यह सब प्रभु के क्रूस के प्रेम के द्वारा होना चाहिए। फिर भी, अगर हम आज्ञा नहीं मानते... अगर हम प्रभु की आज्ञा को नहीं मानते और अपने

"परिवार" — यानी हमारे सबसे करीबी पड़ोसी, जिन्हें खुद परमेश्वर ने एक साथ जोड़ा है — से प्यार करने के बजाय उनसे नफ़रत और नाराज़गी रखते हैं, तो यह स्वाभाविक है — और आध्यात्मिक रूप से पक्का है — कि हमारे दिलों में भारी बोझ और ठोकर खाने का एहसास बना रहेगा। अगर हम आज्ञा न मानने का ऐसा पाप करते हैं और फिर भी हमें अंदर से कोई एहसास नहीं होता, तो क्या यह इस बात का सबूत नहीं है कि हमारी आत्माएँ बुरी तरह सुन्न हो गई हैं और हमारा ज़मीर बहुत कठोर हो गया है?

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:10 में, प्रेरित यूहन्ना साफ़ तौर पर कहते हैं: "जो कोई अपने भाई से प्रेम करता है, वह ज्योति में बना रहता है, और उसमें ठोकर खाने का कोई कारण नहीं होता।" तो, उस आशीष का असली मतलब क्या है — "ठोकर खाने का कोई कारण न होना" (या "ठोकर खाने का कोई मौका न होना") — जो विश्वासियों को तब मिलती है जब वे प्रेम के मार्ग पर चलते हैं? इसे पूरी तरह समझने के लिए, हमें यूहन्ना के सुसमाचार से तीन वचनों को देखना होगा, जिन्हें उसी लेखक, प्रेरित यूहन्ना ने लिखा है:

"यीशु ने यह जानते हुए कि उनके चेले इस बात पर शिकायत कर रहे थे, उनसे कहा, 'क्या इससे तुम्हें ठेस पहुँचती है?'" (यूहन्ना 6:61)

"यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या दिन में बारह घंटे नहीं होते?'" "अगर कोई दिन में चलता है, तो वह ठोकर नहीं खाता, क्योंकि वह इस दुनिया की रोशनी को देखता है।" (यूहन्ना 11:9)

"मैंने ये बातें तुमसे इसलिए कही हैं, ताकि तुम ठोकर न खाओ।" (यूहन्ना 16:1)

जब हम यूहन्ना के सुसमाचार में प्रभु के इन शब्दों को आज के वचन से जोड़ते हैं, तो 1 यूहन्ना 2:10 में कही गई बात—"ठोकर खाने का कोई कारण न होना"—का एक गहरा आध्यात्मिक अर्थ निकलता है: यानी अपनी आत्मा में कोई "ठोकर की रुकावट" न होना, या अंधेरे के कारण "ठोकर न खाना" (यानी रास्ते से न भटकना या गिरना)। दूसरे शब्दों में, यह एक भरोसा है कि जो लोग सच्चे दिल से अपने भाइयों से प्यार करते हैं—और जिन्हें प्रभु, जो सच्ची ज्योति हैं, की मदद मिलती है—वे ज्योति में चलते हैं; इस तरह, वे शैतान द्वारा

बिछाए गए नफ़रत के जाल में नहीं फंसते और कभी भी आध्यात्मिक रूप से ठोकर न खाने का आशीर्वाद पाते हैं। सचमुच, प्रेम ही वह सबसे सुरक्षित ढाल है जो विश्वास करने वाले की आत्मा की रक्षा करती है।

इस दौर में जी रहे विश्वासियों, अभी हमारे दिलों की हालत क्या है? क्या हम सचमुच परमेश्वर के सामने ईमानदारी से जी रहे हैं, और ठोकर खाने के किसी भी कारण से मुक्त हैं? क्या हम विश्वास के संकरे रास्ते पर सीधे चल रहे हैं—बिना किसी अंधेरी रुकावट के—और पूरी तरह से यीशु मसीह (जो सच्ची ज्योति हैं) में बने हुए हैं और अपने साथी विश्वासियों से सच्चा प्रेम कर रहे हैं? या फिर, भले ही हम गर्व से कहते हों कि हम ज्योति की संतान हैं, लेकिन हमारा अंदरूनी मन... क्या आप अपनी आत्मा पर भारी बोझ लिए जी रहे हैं, और लगातार किसी के लिए बुरा सोच रहे हैं या नफ़रत कर रहे हैं? हमें क्रूस की ज्योति में अपने दिलों की गहराई की ईमानदारी से जांच करनी चाहिए कि कहीं हम नफ़रत की अंधेरी बेड़ियों में बंध तो नहीं गए हैं, अपनी आध्यात्मिक दृष्टि तो नहीं खो बैठे हैं, और अनजाने में ही बर्बादी के दलदल में तो नहीं गिर रहे हैं।

प्रिय संतों, मैं आज के मनन को यहीं समाप्त करना चाहता हूँ। यीशु मसीह—जो सच्ची ज्योति और अनंत जीवन हैं और जो शुरू से ही परमेश्वर पिता के साथ थे—वे खुद इस पाप से भरी अंधेरी दुनिया में इंसान के रूप में आए। उस शानदार सच्ची ज्योति के आने से, अंधेरे का वह साम्राज्य जिसने कभी इस धरती को ढका हुआ था—वह इसी पल भी ढह रहा है और खत्म हो रहा है क्योंकि वह अपने अंत की ओर बढ़ रहा है। शैतान और मसीह-विरोधी (एंटी-क्राइस्ट) द्वारा चलाई जा रही इस दुनिया की बुरी व्यवस्थाएँ; शरीर की लालसा, ... की लालसा... आंखें, और जीवन का वह घमंड जिसने हमें पाप की मज़दूरी का गुलाम बना दिया था; और दुखद अनंत मृत्यु, झूठ, नफ़रत और अन्याय की सभी काली ताकतें—ये सब सच्ची ज्योति के चमकने से हमेशा के लिए टूटकर खत्म हो रही हैं। इसलिए, सच्ची ज्योति की संतान होने के नाते, जो यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता मानती है, हमें प्रभु की स्वर्गीय आज्ञा का पालन करना चाहिए और अपने पड़ोसियों से सच्चे दिल से प्यार करना चाहिए। जब हम, जिन्हें यीशु मसीह में विश्वास के ज़रिए पहले से ही अनंत जीवन मिला है, प्रभु के वचन के अनुसार एक-दूसरे से प्यार करते हैं, तो उनके वादे के अनुसार स्वर्गीय आनंद समुद्र की उमड़ती लहरों की तरह हमारे अंदर भर जाएगा। इसके अलावा, हम उस अनंत जीवन की सच्चाई का

अनुभव करने का अद्भुत आशीर्वाद पाएंगे—भले ही थोड़ा-बहुत ही सही—जो स्वर्ग में पूरी तरह से साकार होगा, और वह भी इसी बंजर धरती पर।

हालाँकि, अगर हम ज़ुबान से तो पूरे भरोसे के साथ कहते हैं कि हम ज्योति में रहते हैं, लेकिन विश्वास के रास्ते से मुड़ जाते हैं... अगर हम अपने भाई-बहनों के प्रति जलन और नफ़रत रखते हैं, तो हम ठंडे अंधेरे में फँसे हुए दयनीय धार्मिक लोगों के अलावा और कुछ नहीं रह जाते। जो कोई भी मसीह की देह के किसी साथी सदस्य से नफ़रत करता है, वह अंधेरे के काम कर रहा है; ऐसा व्यक्ति सच्चाई को नकारता है और परमेश्वर और इंसान दोनों के सामने बुरे झूठ का सहारा लेता है। इसके अलावा, क्योंकि नफ़रत के भयानक अंधेरे ने आत्मा की आँखों को पूरी तरह से अंधा कर दिया है, इसलिए इंसान आध्यात्मिक अंधेपन की हालत में गिर जाता है—उसे पता ही नहीं चलता कि वह कहाँ चल रहा है या तेज़ी से बर्बादी की ओर बढ़ रहा है। यह पाखंड का स्पष्ट सबूत है, जो दिखाता है कि उसने अपने जीवन में सच्ची ज्योति, यीशु मसीह को न तो सच में जाना है और न ही उनसे मुलाकात की है।

अगर हमने सच में प्रभु—सच्ची ज्योति—का अनुभव किया है और उन्हें जाना है, तो हमारा जीवन "प्रेम के फल" से भरा होना चाहिए। जो लोग यीशु मसीह में जीने का दावा करते हैं, उन्हें ठीक वैसे ही चलना चाहिए जैसे वे चले थे। दूसरे शब्दों में, जैसे यीशु ने हमसे इतना प्यार किया कि हमें बचाने के लिए क्रूस पर अपनी जान दे दी, वैसे ही हमें भी अपने पड़ोसियों और साथी विश्वासियों से—जो प्रभु ने हमें सौंपे हैं—अपने पूरे जीवन और दिल से प्यार करना चाहिए। जैसे-जैसे हम प्रेम के इस संकरे रास्ते पर मज़बूती से चलते हैं, हमारी आत्माएँ सच्ची आज़ादी का अनुभव करेंगी और शैतान द्वारा हमें गिराने के लिए बिछाए गए किसी भी जाल से सुरक्षित रहेंगी; हम बिना ठोकर खाए ज्योति के शानदार जीवन का आनंद लेंगे, जो परमेश्वर के सामने शर्मिंदगी की किसी भी वजह से मुक्त होगा। सिंहासन के सामने या दूसरों के सामने। इन आखिरी दिनों में, मैं प्रभु के नाम से पूरी निष्ठा से प्रार्थना करता हूँ कि हम पाखंड और नफ़रत के अंधेरे को दृढ़ता से दूर करें, क्रूस के प्रेम को पूरी तरह से अपनाएँ और सच्चे प्रकाश की संतान के रूप में विजयी जीवन जिएँ—हर दिन बिना लड़खड़ाए और बिना दूसरों को गिराए चलें।

बिना ठोकर के भाईचारे का प्यार

[1 यूहन्ना 2:10]

"जो कोई अपने भाई से प्रेम करता है, वह ज्योति में बना रहता है, और उसमें ठोकर खाने का कोई कारण नहीं होता।"

प्यारे संतों, हम कितनी बार सब्त के दिन प्रभु के पवित्र स्थान पर पवित्र स्तुति और आराधना करने आते हैं, फिर भी—यह जानते हुए भी कि कोई ऐसी बात है जिसके कारण कोई भाई हमसे नाराज़ हो सकता है (मत्ती 5:23)—हम उस साथी सदस्य से मेल-मिलाप किए बिना ही मंदिर के आँगन में बस आराधना करते रह जाते हैं? रविवार की सुबह पवित्र स्थान पर जाते समय भी, पति-पत्नी छोटी-छोटी बातों पर झगड़ सकते हैं, या बच्चों के साथ अप्रिय भावनाएँ हो सकती हैं। चर्च में कदम रखते ही, हम अक्सर परमेश्वर की दिखावटी स्तुति और आराधना करते हैं—ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे सब कुछ ठीक हो—जबकि दूसरे विश्वासियों के साथ हमारे रिश्तों में अनसुलझे, अजीब तनाव होते हैं। फिर भी, भौतिक भेंट या आराधना के तरीके से पहले, यीशु जीवन के प्रति एक गंभीर रवैये की मांग करते हैं: "पहले जाकर अपने भाई से मेल-मिलाप कर, और फिर आकर अपनी भेंट चढ़ा" (मत्ती 5:24)। क्या हम सचमुच प्रभु की इस गंभीर आज्ञा का पालन कर रहे हैं?

अफ़सोस की बात है कि चर्च समुदाय के भीतर भी—जिसे प्रभु के लहू से खरीदा गया है—हमेशा ऐसे लोग होते हैं जिनके रिश्ते असहज या तनावपूर्ण होते हैं। हम कभी-कभी मानवीय स्वभाव के पाखंड को देखते हैं:

पवित्र स्थान में हाथ मिलाने, शांति की शुभकामनाओं का आदान-प्रदान करने और एक साथ आराधना करने के लिए इकट्ठा होना, जबकि हमारे दिलों में गहरी, लंबे समय से चली आ रही नाराज़गी होती है। इसके माध्यम से, हमें एक दुखद सीमा का एहसास होता है: कि मनुष्यों का स्वार्थी और चंचल प्रेम वास्तव में कमज़ोर, अपर्याप्त और कभी भी पूरी तरह से भरोसेमंद नहीं होता है। इसलिए, हमें कभी भी अपने अहंकार या भावनाओं के बल पर प्रेम करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। हमें एक-दूसरे को केवल *अगापे*—ऊपर से उंडेले गए परमेश्वर के पवित्र प्रेम—के साथ अपनाना चाहिए। केवल तभी जब पवित्र आत्मा, जो हमारे दिलों में वास करती है, प्रेम का फल (गलातियों 5:22) उत्पन्न करती है, हम परमेश्वर के अलौकिक प्रेम के माध्यम से अपने साथी विश्वासियों को सच्चे दिल से क्षमा कर सकते हैं और उनसे प्रेम कर सकते हैं। जब भाई पवित्र आत्मा में इस तरह एक-दूसरे को अपनाते हैं, तो हम चर्च की पवित्र एकता को मजबूती से बनाए रख सकते हैं—एक ऐसी एकता जो अन्यथा कमज़ोर होती है। आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:10 में दिए गए पवित्र सिद्धांत के आधार पर, मैं इस महान और उम्मीद जगाने वाले मिशन को "बिना किसी रुकावट के भाईचारे का प्यार" कहना चाहता हूँ।

लेकिन, अगर हमारे दिलों में भाईचारे के प्यार को लेकर कोई अजीब भावना या रुकावटें अभी भी हैं, तो ऐसी रुकावटों की जड़ें कहाँ हैं? इसका मुख्य कारण यह है कि हमारे साथी विश्वासियों के प्रति हमारे दिलों में "नफ़रत" घर कर गई है (1 यूहन्ना 2:11)। हो सकता है कि हम सिर्फ़ दिखावे के लिए अपने भाइयों से प्यार करने का दावा करें, लेकिन हमें खुद को परखना चाहिए कि कहीं हम अंदर ही अंदर उनसे नफ़रत करने का पाप तो नहीं कर रहे हैं। प्रेरित यूहन्ना इस नफ़रत के कारण आत्मा पर पड़ने वाले बुरे असर को तीन पहलुओं में बाँटकर एक गंभीर सीख देते हैं। सच्चाई के इस आईने के सामने खड़े होकर, हम परमेश्वर की आवाज़ सुनना चाहते हैं।

पहला, जो अपने भाई से नफ़रत करता है, वह अभी भी अंधेरे में रहता है।

आज का वचन, 1 यूहन्ना 2:11, यह चेतावनी देता है: "लेकिन जो कोई अपने भाई से नफ़रत करता है, वह अंधेरे में है और अंधेरे में चलता है, और उसे पता नहीं होता कि वह कहाँ जा रहा है, क्योंकि अंधेरे ने उसकी आँखें अंधी कर दी हैं।" परमेश्वर ज्योति है, और उसमें ज़रा भी अंधेरा नहीं है (1 यूहन्ना 1:5)। इसलिए, अगर

हम मुँह से तो परमेश्वर के साथ पवित्र संगति का दावा करते हैं, लेकिन अपने सामने मौजूद भाई से प्यार करने के बजाय उससे नफ़रत करते हैं, तो हम बस अंधेरे में चल रहे हैं और झूठ बोल रहे हैं (1 यूहन्ना 1:6)। जो व्यक्ति ऐसी झूठी नफ़रत का शिकार होता है, वह अंधेरे में भटकता रहता है और पूरी तरह से दिशा और मंज़िल का होश खो बैठता है (2:11)।

पाप का अंधेरा उस व्यक्ति की आध्यात्मिक दृष्टि को पूरी तरह से अंधा कर देता है जो अपने भाई से नफ़रत करता है। इसका बुरा नतीजा यह होता है कि वे न तो क्रूस पर दिखाए गए परमेश्वर के प्यार को देख पाते हैं और न ही उसे अपने दिल में महसूस कर पाते हैं। वे न केवल सच्चाई पर चलने में असमर्थ होते हैं, बल्कि उसके अनुसार जीने की पवित्र इच्छा भी खो देते हैं। भले ही वे बाइबल की इस शिक्षा को समझें कि "अपने साथी सदस्य से खुद की तरह प्यार करो," लेकिन नफ़रत से काला पड़ा दिल न केवल भाई को दूर धकेलता है, बल्कि दूसरे व्यक्ति द्वारा दिखाए गए प्यार और माफ़ी के सच्चे भावों को भी ज़िद के साथ ठुकरा देता है। आखिरकार, जो व्यक्ति खुद को रोशनी में रहने वाला बताता है लेकिन अपने भाई से नफ़रत करता है, वह ठंडे अंधेरे में ही फंसा रहता है (पद 9)। परमेश्वर का सच्चा प्यार कभी उसके दिल में नहीं बसता (पद 5), और वह पवित्र जीवन के वे फल नहीं ला पाता जो रोशनी की संतान में दिखने चाहिए। इसके बजाय, अपने पड़ोसी के प्रति यह दिखावटी नफ़रत एक जानलेवा पाप बन जाती है जो परमेश्वर की महिमा को मिट्टी में मिला देती है और उनके पवित्र नाम को धूमिल करती है।

दूसरी बात, अपने भाई से नफ़रत करना हत्या करने के बराबर है। 1 यूहन्ना 3:15 पर गौर करें: "जो कोई अपने भाई से नफ़रत करता है, वह हत्यारा है, और आप जानते हैं कि किसी भी हत्यारे में अनंत जीवन नहीं होता।" दुनिया का हमसे नफ़रत करना कोई अजीब बात नहीं है (3:13); एक तरह से, यह बिल्कुल सामान्य बात हो सकती है। लेकिन जो बात सचमुच अजीब है, वह यह है कि एक भाई दूसरे भाई से नफ़रत करे, जबकि एक-दूसरे से प्यार करना ही असल में सामान्य बात है। बाइबल भाई के प्रति ऐसी नफ़रत को साफ तौर पर "हत्या" बताती है। क्या यह चौंकाने वाली बात नहीं है? हम आमतौर पर हत्या का मतलब चाकू या बंदूक जैसे हथियार से किसी की जान लेना समझते हैं, फिर भी प्रेरित यूहन्ना चेतावनी देते हैं कि भाई के प्रति नफ़रत का भाव ही हत्या के बराबर है। जब हम छठे हुक्म—"तू हत्या न करना" (निर्गमन 20:13)—को नए नियम में यीशु द्वारा दिए गए हुक्म—"अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख" (मरकुस 12:31)—की रोशनी

में देखते हैं, तो यह साफ हो जाता है कि भाई से प्यार करने के बजाय उससे नफ़रत करना असल में उसकी हत्या करने से अलग नहीं है। हम अक्सर भाई से नफ़रत करने के काम को बहुत हल्के में लेते हैं, जबकि हम इतना गंभीर पाप कर रहे होते हैं। हमें खुद को परखना चाहिए कि कहीं हमारे दिल कठोर तो नहीं हो गए हैं, जिससे हम परमेश्वर के सामने हत्या के पाप के लिए पछतावा करने में देरी कर रहे हैं।

हमारे लिए प्रभु के प्रायश्चित बलिदान के आधार पर, बाइबल विश्वास करने वाले का सही कर्तव्य बताती है: "उसने हमारे लिए अपनी जान दे दी। और हमें भी भाइयों के लिए अपनी जान देनी चाहिए" (1 यूहन्ना 3:16)। इसके अलावा, यूहन्ना 15:13 में, प्रेरित यूहन्ना प्रभु की बात को दोहराते हुए प्रेम को परिभाषित करते हैं: "इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे दे।" जब हम कमज़ोर और बिना उम्मीद के थे (रोमियों 5:6), पाप के गुलाम बनकर जी रहे थे (वचन 8), और परमेश्वर के दुश्मन की तरह व्यवहार कर रहे थे (वचन 10), तब यीशु मसीह ने हमारे लिए अपना लहू बहाया और क्रूस पर अपनी जान दी। ऐसा करके, परमेश्वर ने इतिहास के बीचों-बीच हमारे लिए अपने अपार प्रेम को स्पष्ट रूप से दिखाया। इसलिए, क्रूस से पक्के हुए उस प्रेम को पाने के बाद, अब हमें भी अपने भाइयों से पूरे दिल से प्रेम करना चाहिए—अपनी भावनाओं के आधार पर नहीं, बल्कि परमेश्वर के प्रेम के द्वारा। हमें अपने जीवन के माध्यम से दुनिया को परमेश्वर के उस जीवित प्रेम को दिखाना और साबित करना चाहिए। हमें कभी भी परमेश्वर की नज़र में हत्या जैसा भयानक आध्यात्मिक पाप करने की बुरी हालत में नहीं रहना चाहिए—बाहर से धार्मिकता का दिखावा करना जबकि अंदर ही अंदर अपने भाइयों से जलन और नफ़रत करना।
तीसरी बात, जो लोग अपने भाइयों से नफ़रत करते हैं, वे सचमुच परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकते।

1 यूहन्ना 4:20 विश्वास की इस ज़रूरी सच्चाई को गंभीरता से बताती है: "यदि कोई कहे, 'मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ,' और अपने भाई से नफ़रत करे, तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता जिसे उसने देखा है, वह परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकता जिसे उसने नहीं देखा है।" असल में, यह एक आध्यात्मिक सिद्धांत है जो पूरी तरह से स्पष्ट है और सामान्य समझ पर आधारित है, जिसे समझने के लिए किसी गहरे धार्मिक ज्ञान की ज़रूरत नहीं है। हम कैसे दावा कर सकते हैं कि हम पवित्र परमेश्वर से सच्चे दिल से प्रेम करते हैं—जिन्हें हमने कभी नहीं देखा—जब हम उस साथी विश्वासी को ही गले नहीं लगा सकते जिसे हम रोज़ देखते हैं? फिर भी, अफ़सोस की बात है कि हम अक्सर सामान्य समझ वाली इस सच्चाई को हल्के में

लेते हैं, इसकी सीमाओं को पार करते हैं और विश्वास का विरोधाभासी जीवन जीते हैं। हम अनदेखे परमेश्वर की स्तुति और आराधना में पूरे जोश से हाथ उठाते हैं, आँसुओं के साथ उनके प्रति अपना प्रेम ज़ाहिर करते हैं, फिर भी हम बहुत आसानी से अपने ठीक सामने खड़े साथी विश्वासी को परखते और उनकी आलोचना करते हैं। हम अपने भाइयों से नफ़रत करते हैं और उनकी बुराई करते हैं, उन्हें माफ़ करने में बिल्कुल भी इच्छा नहीं दिखाते। इसका बुरा नतीजा क्या होता है? हम बाहर से तो ऐसे विश्वासी लगते हैं जो परमेश्वर से बहुत प्रेम करते हैं, फिर भी हम अपने भाइयों से बेरुखी से मुँह मोड़कर पाखंडी स्वभाव दिखाते हैं। लेकिन, बाइबल में सिखाया गया सच्चा विश्वास कभी भी ऐसा प्यार नहीं होता जो इस तरह बंटा हुआ हो; परमेश्वर के लिए सीधा (ऊपर की ओर) प्यार और अपने पड़ोसी के लिए प्यार (आस-पास के लोगों के लिए प्यार) एक-दूसरे से न अलग होने वाली, एक ही सच्चाई है। जैसे बिना पहिए के गाड़ी आगे नहीं बढ़ सकती, वैसे ही अगर परमेश्वर के प्यार में भाई के लिए प्यार शामिल न हो, तो वह बाइबल में बताया गया सच्चा विश्वास कभी नहीं हो सकता।

बाइबल में सिखाया गया सच्चे प्यार का सिद्धांत साफ़ है: हम खुशी-खुशी अपने पड़ोसियों से प्यार करते हैं क्योंकि हम सच्चे दिल से परमेश्वर से प्यार करते हैं, और हम अपने पड़ोसियों से खुद की तरह प्यार करके अपनी ज़िंदगी से परमेश्वर के लिए अपना प्यार पूरी तरह दिखाते हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के लिए प्यार और पड़ोसी के लिए प्यार एक पवित्र और अटूट बंधन बनाते हैं। अगर हम सच में परमेश्वर से प्यार करते हैं, तो हमें उस भाई से भी प्यार करना चाहिए जो हमारे सामने है। साथ विश्वास करने वालों से प्यार करना ही परमेश्वर के लिए अपने प्यार को ज़ाहिर करने और पक्का करने का एकमात्र पक्का तरीका है। इसलिए, जिस भाई को हम देख सकते हैं, उससे नफ़रत करना किसी भी तरह से परमेश्वर से प्यार करने वाला जीवन नहीं है। और कड़े शब्दों में कहें तो, अपने भाई से नफ़रत करना परमेश्वर से नफ़रत करने के बराबर है। जो अपने भाई से नफ़रत करता है, वह सच में परमेश्वर से प्यार नहीं करता, और अंधेरे की उस हालत में पवित्र परमेश्वर से प्यार करना नामुमकिन है।

हम प्रभु द्वारा बताए गए उस ठंडे और अंधेरे भरे आखिरी समय में जी रहे हैं, जब "अधर्म बढ़ जाएगा और बहुतों का प्रेम ठंडा पड़ जाएगा" (मत्ती 24:12)। जहाँ इंसानी और स्वार्थी प्रेम समय के साथ कमज़ोर होकर खत्म हो जाता है, वहीं हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम कभी खत्म नहीं होता; बल्कि, यह हर गुज़रते दिन के साथ और बढ़ता जाता है (भजन संहिता 117:2)। मेरी प्रार्थना है कि ऊपर से मिलने वाले उस अनंत और असीम

प्रेम से सराबोर होकर, हम अपने भाई-बहनों को पूरे दिल से माफ़ करें और उनसे प्रेम करें। जब हम प्रभु के प्रेम के साथ अपने साथी विश्वासियों को अपनाते हैं, तो हमारे अंदर कोई अंधेरी रुकावट या ज़मीर का बोझ नहीं रह जाता। मेरी दिली इच्छा है कि हम उस बुरी पाखंडी सोच को पूरी तरह छोड़ दें—जिसमें हम पवित्र स्थान पर होंठों से तो पवित्र स्तुति और आराधना करते हैं, लेकिन दिल में किसी भाई के लिए नफ़रत रखते हैं और निंदा का भारी, चुभने वाला बोझ ढोते हैं। हम हर पल अपने अहंकार को त्यागकर मेल-मिलाप को बढ़ावा दें, "बिना किसी रुकावट के भाईचारे का प्रेम" वाला जीवन जिएं जो परमेश्वर और इंसानों के सामने शर्मिंदा न हो, और—प्रभु के नाम में—सच्चे उपासक बनकर जीत हासिल करें जो उन्हें खुशी देते हैं।

“सिर्फ़ वही जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है”

[1 यूहन्ना 2:12–17]

“हे बच्चों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि उसके नाम की वजह से तुम्हारे पाप माफ़ कर दिए गए हैं। हे पिताओं, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम उसे जानते हो जो शुरू से है। हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुमने उस बुरे पर जीत हासिल की है। हे बच्चों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम पिता को जानते हो। हे पिताओं, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम उसे जानते हो जो शुरू से है। हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम मज़बूत हो, और परमेश्वर का वचन तुममें बना रहता है, और तुमने उस बुरे पर जीत हासिल की है। दुनिया या दुनिया की चीज़ों से प्यार मत करो। अगर कोई दुनिया से प्यार करता है, तो उसमें पिता का प्यार नहीं है। क्योंकि दुनिया में जो कुछ भी है—शरीर की लालसा, आँखों की लालसा, और ज़िंदगी का घमंड—वह पिता की ओर से नहीं, बल्कि दुनिया की ओर से है। और दुनिया और उसकी लालसाएँ खत्म हो रही हैं; लेकिन जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह हमेशा बना रहता है।”

प्यारे संतों, शायद ही कोई ऐसा मसीही हो जो विश्वास का जीवन जी रहा हो और जिसने कभी इस सवाल पर गंभीरता से न सोचा हो कि “परमेश्वर की इच्छा क्या है?” सच तो यह है कि हममें से जो भी प्रभु का अनुसरण करते हैं, उनके लिए परमेश्वर की इच्छा को समझना और उसके अनुसार जीना ही वह अहम बात है जो हमारे विश्वास की सफलता या विफलता तय करती है। फिर भी, हमारे सामने आने वाली आत्मिक सच्चाई के बारे में सबसे बड़ी चुनौती क्या है? चुनौती यह है कि जहाँ हमारे नए जन्म पाए हुए दिल परमेश्वर की भली इच्छा

को समझने और सिर्फ़ उसी के अनुसार जीने की सच्ची चाहत रखते हैं, वहीं हमारा भ्रष्ट और कमज़ोर शरीर बार-बार हमारी अपनी पापी इच्छा पर ज़ोर देता है और अपने विचारों व सुविधा के अनुसार जीने की चाहत रखता है। जब हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में "मेरी इच्छा" और "परमेश्वर की इच्छा" के बीच ज़बरदस्त टकराव होता है, तो हमें क्या करना चाहिए? उदाहरण के लिए, अगर परमेश्वर की साफ़ इच्छा यह है कि हम अपने दुश्मनों से भी उतना ही गहरा प्यार करें जितना हम खुद से करते हैं, लेकिन हमारे टूटे हुए स्वभाव की इच्छा यह हो कि हम उस पड़ोसी से प्यार करने के बजाय उससे जलन रखें और नफ़रत करें, तो हमें किसका पक्ष लेना चाहिए? उस आध्यात्मिक मोड़ पर, हमें पूरी तरह आज्ञाकारी होने की प्रार्थना करनी चाहिए—वही प्रार्थना जो यीशु ने जैतून के पहाड़ पर गेथसेमनी में, क्रूस पर चढ़ाए जाने से एक रात पहले, खून की बूंदें बहाते हुए की थी—और उसे पूरे दिल से परमेश्वर के सामने रखना चाहिए: "...फिर भी मेरी इच्छा नहीं, बल्कि आपकी इच्छा पूरी हो" (मत्ती 26:39)। भले ही इसमें हमारे स्वभाव के टूटने और हमारी अपनी इच्छा के बिखरने का दर्द हो, हमें यीशु मसीह के नक्शेकदम पर चलना चाहिए, जिन्होंने पिता परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए क्रूस पर अपनी जान देने तक आज्ञा मानी (फिलिप्पियों 2:8)। मेरी दिली इच्छा है कि मैं अपनी ज़िद और शारीरिक इच्छाओं को प्रभु के क्रूस पर पूरी तरह से कील से जड़ दूँ और एक सच्चे चेले का जीवन जीऊँ जो मृत्यु तक प्रभु की इच्छा का पालन करता है।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:17 में, प्रेरित यूहन्ना कहते हैं: "दुनिया और उसकी इच्छाएँ खत्म हो जाती हैं, लेकिन जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह हमेशा जीवित रहता है।" इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं "जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है" उसके बारे में पाँच बातों पर विचार करना चाहता हूँ।

पहला, जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह यीशु मसीह को जानता है। कृपया आज के वचन को देखें—1 यूहन्ना 2:13 का पहला भाग और वचन 14 का मध्य भाग: "हे पिताओ, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ क्योंकि तुम उसे जानते हो जो शुरू से है... हे पिताओ, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ क्योंकि तुम उसे जानते हो जो शुरू से है।" संतों, आज दुनिया के लोग यीशु के बारे में क्या कहते हैं? वे उन्हें केवल एक महान नैतिक शिक्षक, किसी धर्म के संस्थापक या एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक व्यक्ति मानते हैं। कुछ लोग तो यीशु को इंसानों द्वारा बनाई गई एक कहानी या किंवदंती से ज़्यादा कुछ नहीं मानते। तो फिर, आप और मैं सच में यीशु को क्या मानते हैं और क्या स्वीकार करते हैं? मत्ती 16 में, जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के इलाके में पहुँचे, तो उन्होंने

अपने चेलों से एक गंभीर सवाल पूछा: "लोग मनुष्य के पुत्र के बारे में क्या कहते हैं?" (मत्ती 16:13)। चेलों ने लोगों की आम राय बताई: "कुछ कहते हैं यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, कुछ एलिय्याह, और कुछ यिर्मयाह या नबियों में से कोई एक" (वचन 14)। फिर, प्रभु ने उनके अंतर्मन से एक सीधा और व्यक्तिगत सवाल पूछा: "लेकिन तुम मुझे क्या मानते हो?" (पद 15)। उस पल, साइमन पीटर ने यह स्वीकार किया: "आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र" (पद 16)। पीटर की यह स्वीकारोक्ति इंसानी समझ या सोच का नतीजा नहीं थी, बल्कि स्वर्ग में पिता परमेश्वर द्वारा सीधे तौर पर प्रकट की गई एक आध्यात्मिक सच्चाई थी (पद 17)। तो, यीशु मसीह—जिन्हें पिता परमेश्वर ने आज हमारी आध्यात्मिक आँखें खोलकर हमारे सामने प्रकट किया है—आपके और मेरे लिए कौन हैं? क्या हम सचमुच जीवन के उस प्रभु को जानते हैं और उनकी सेवा करते हैं, जो शुरुआत से ही अस्तित्व में हैं?

1 यूहन्ना 2:13 के पहले हिस्से और पद 14 के बीच में, प्रेरित यूहन्ना एक खास बात को दो बार दोहराकर उस पर ज़ोर देते हैं—यह एक अनोखा तरीका है। मुख्य संदेश यह है: "हे पिताओं, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम उसे जानते हो जो शुरुआत से ही है।" तो, प्रेरित यूहन्ना जिस "उस व्यक्ति" की बात कर रहे हैं जो "शुरुआत से ही है," वह कौन है? जैसा कि हमने पहले ही गहराई से मनन किया है, वह सृष्टि से पहले से मौजूद मसीह हैं—जिनकी ओर प्रेरित ने 1 यूहन्ना 1:1 में इशारा किया था; वह "जीवन का वचन" हैं जो शुरुआत से ही अस्तित्व में हैं (1 यूहन्ना 1:1–2)। जैसा कि पादरी जॉन मैकआर्थर अपनी टीका में बताते हैं, यूहन्ना के यह पत्र लिखने का मुख्य कारण स्पष्ट है: पत्र पाने वालों में से जो लोग आध्यात्मिक रूप से परिपक्व हैं—जिन्हें उनके लंबे समय के विश्वास के कारण "पिता" कहा गया है—वे पहले से ही यीशु मसीह को व्यक्तिगत रूप से और गहराई से जानते हैं, और समय के अनंत रचयिता, उनके साथ चलते हैं। तो, आखिर यह यीशु मसीह—जिन्हें आध्यात्मिक रूप से परिपक्व ये "पिता" अपने जीवन के अनुभवों से जानते हैं—हमारे लिए कौन हैं?

(1) यीशु मसीह वह "पूर्ण प्रायश्चित बलिदान" हैं जिन्होंने हमारे सभी पापों की कीमत चुकाई है (1 यूहन्ना 2:2)।

हमारे पापों की भारी कीमत चुकाने के लिए, प्रभु को क्रूस पर फसह के मेमने के रूप में पूरी तरह से बलिदान किया गया; उन्होंने अपना लहू बहाया और हमारे लिए अपनी जान दी। ऐसा करके, उन्होंने पवित्र परमेश्वर पिता की उन माँगों को पूरी तरह से पूरा किया और संतुष्ट किया, जो अपने न्याय के कारण पाप की सज़ा देने के लिए बाध्य थे।

(2) यीशु मसीह वह "धर्मी वकील" हैं जो आज भी परमेश्वर पिता के सामने हमारा पक्ष रखते हैं (1 यूहन्ना 2:1)।

जब हम पवित्र परमेश्वर की स्वर्गीय अदालत में खड़े होते हैं, तो शैतान—वह दोष लगाने वाला जिसने दिन-रात हमारे भाइयों पर दोष लगाया (प्रकाशितवाक्य 12:10)—न्यायाधीश परमेश्वर के सामने हम पर आरोप लगाता है। वह तरह-तरह के झूठ गढ़ता है ताकि ऐसा लगे कि हम अभी भी पाप की कैद में हैं।

भले ही हमने क्रूस के कीमती लहू पर भरोसा करके अपने पापों को मान लिया है, और परमेश्वर—जो विश्वासयोग्य और धर्मी है—ने हमारे सभी पापों को क्षमा कर दिया है और हमें हर तरह के अधर्म से शुद्ध किया है (1 यूहन्ना 1:9), फिर भी शैतान लगातार हमें दोषी ठहराने की कोशिश करता है। उन मुश्किल पलों में, यीशु—हमारे वकील और हमेशा के लिए बचाव करने वाले—न्यायाधीश परमेश्वर के सामने अपने लहू से सने हाथों को दिखाकर पूरी तरह से हमारा बचाव करते हैं। आध्यात्मिक रूप से परिपक्व विश्वासी वे हैं जो प्रभु के प्रायश्चित और वकालत की इस कृपा को गहराई से समझते और अनुभव करते हैं।

प्रिय संतों, जो लोग इस तरह से परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, उन्हें यीशु मसीह का सच्चा और गहरा ज्ञान होता है, जो शुरू से ही अस्तित्व में हैं। इसके अलावा, जो विश्वासी प्रभु को पूरी तरह से जानता है, वह केवल ज्ञान तक ही सीमित नहीं रहता; वे हर पल यीशु मसीह के साथ एक शानदार और ऊँचे स्तर की संगति का आनंद लेते हैं (1 यूहन्ना 1:3)। दूसरे शब्दों में, क्योंकि जो लोग परमेश्वर की इच्छा का पालन करते हैं, वे त्रिएक परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संगति में रहते हैं, इसलिए उन्हें पक्का विश्वास होता है—भले ही वे अपनी कमजोरी के कारण लड़खड़ा जाएँ—कि परमेश्वर के पुत्र यीशु का कीमती लहू उनकी आत्माओं को सभी पापों और

अधर्म से शुद्ध करता है (पद 7)। इसके अलावा, जो लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, वे गवाह के रूप में जीते हैं और दुनिया के सामने यीशु मसीह के आनंदमय सुसमाचार का निडरता से प्रचार करते हैं—एक ऐसा संदेश जिसे उन्होंने व्यक्तिगत रूप से जाना और अनुभव किया है (पद 5)। वे आज्ञाकारिता की स्थिति में भी खड़े रहते हैं, और प्रभु द्वारा ठहराई गई पवित्र आज्ञाओं को मानते और उन पर चलते हैं (2:3)। संक्षेप में, जो सच्चे विश्वासी परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, वे अपने परमेश्वर प्रभु से अपने पूरे दिल, आत्मा और मन से प्रेम करते हैं, और वे अपने पड़ोसियों से भी उतनी ही शिद्दत से प्रेम करते हैं, जितना वे खुद से करते हैं (मत्ती 22:37, 39)। नतीजतन, आज्ञाकारिता के इस सफ़र के आखिर में, स्वर्ग का आनंद और पवित्र खुशी—जो परमेश्वर की ओर से ऊपर से मिलती है—दिन-ब-दिन उनकी आत्माओं में लहरों की तरह उमड़ती रहती है (1 यूहन्ना 1:4)।

दूसरी बात, जो लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, वे सचमुच पिता परमेश्वर को जानते हैं।

आज के वचन में 1 यूहन्ना 2:14 के पहले हिस्से को देखिए। प्रेरित यूहन्ना विश्वास में नए लोगों—यानी आध्यात्मिक बच्चों—से कहते हैं, "हे बच्चों, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है क्योंकि तुम पिता को जानते हो।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* (ह्युंडाई-इन-उई सोंग-ग्योंग) में अनुवाद किया गया है, प्रेरित के यह पत्र लिखने का एक मुख्य कारण यही है कि हम "पिता परमेश्वर को गहराई से जानते हैं।"

प्यारे संतों, क्या आपने कभी अपने विश्वास के जीवन में, पूरी दुनिया के रचयिता परमेश्वर पिता को अपनी आँखों से देखने की गहरी इच्छा महसूस की है? यीशु के बारह शिष्यों में से एक, फिलिप्पुस, भी ऐसी ही पवित्र इच्छा से भरा हुआ था। खुद को रोक न पाने के कारण, उसने यीशु से विनती की: "हे प्रभु, हमें पिता को दिखा, बस इतना ही हमारे लिए काफी है" (यूहन्ना 14:8)। यह एक पूरी और सच्ची इच्छा थी—एक ऐसी भावना कि अगर वह बस एक बार पिता को देख ले, तो उसे और कुछ नहीं चाहिए। जवाब में, यीशु ने फिलिप्पुस की आध्यात्मिक अज्ञानता पर दुख जताते हुए यह अद्भुत सच बताया: "फिलिप्पुस, मैं इतने समय से तुम्हारे साथ हूँ, फिर भी तुम मुझे नहीं जानते? जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है; तुम कैसे कह सकते हो, 'हमें पिता को दिखा'?" (पद 9)। इससे पहले, यूहन्ना 14:7 में, प्रभु ने अपने शिष्यों को यही आध्यात्मिक रहस्य

बताया था: "अगर तुम मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जानते। अब से, तुम उन्हें जानते हो और उन्हें देख भी चुके हो।" यीशु की इस महान घोषणा से मिलने वाली सीख साफ है। परमेश्वर पिता, आत्मा होने के नाते, ऐसे नहीं हैं जिन्हें इंसानी आँखों से सीधे देखा जा सके। हालाँकि, क्योंकि यीशु मसीह—इकलौते पुत्र—इस धरती पर सच्चे प्रकाश के रूप में आए और पिता को पूरी तरह से प्रकट किया, इसलिए जिन लोगों ने व्यक्तिगत रूप से पुत्र यीशु का गहरा अनुभव किया है, वे *पहले से ही* परमेश्वर पिता को देखने और जानने की महिमा का आनंद ले रहे हैं। केवल वे ही जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, विश्वास के उस स्थान पर खड़े होते हैं जहाँ वे परमेश्वर पिता को पूरी तरह जानते हैं और यीशु मसीह के माध्यम से उनके साथ घनिष्ठ संगति में चलते हैं। जैसा कि हमने पहले ही गहराई से मनन किया है, 1 यूहन्ना 2:12–14 का अंश बार-बार हमें बताता है: "तुम उसे जानते हो जो शुरू से है।" यह महान घोषणा पुष्टि करती है कि संत—जिन्हें यह पत्र सबसे पहले मिला था—पहले से ही उस मसीह को व्यक्तिगत रूप से जानते थे और उनके साथ चलते थे, जो सृष्टि से पहले से मौजूद थे। इसके अलावा, पुत्र यीशु मसीह को सच में जानने का मतलब है परमेश्वर पिता को पूरी तरह जानना, जिन्होंने यीशु मसीह को इस धरती पर भेजा था। आयत 14 के पहले हिस्से में, प्रेरित यूहन्ना पूरे यकीन के साथ इस आध्यात्मिक रिश्ते पर ज़ोर देते हैं: "हे बच्चों, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है क्योंकि तुम पिता को जानते हो।" आखिरकार, जो सच्चे विश्वासी सुसमाचार की सच्चाई में बने रहते हैं, वे न केवल यीशु मसीह—जो सच्ची ज्योति हैं—को गहराई से जानते हैं, बल्कि उनके ज़रिए परमेश्वर पिता—जो इकलौते बेटे के पिता हैं—को जानने का खास सौभाग्य भी पाते हैं। तो फिर, परमेश्वर पिता का वह खास स्वरूप क्या है जिसके बारे में प्रेरित यूहन्ना हमें इस पत्री में बताते हैं? पवित्र शास्त्र पिता के पवित्र स्वरूप के बारे में दो मुख्य बातें बताता है।

(1) परमेश्वर पिता पूरी तरह से "ज्योति" हैं।

1 यूहन्ना 1:5 पर गौर करें: "यह वह संदेश है जो हमने उनसे सुना है और तुम्हें बताते हैं, कि परमेश्वर ज्योति है और उनमें ज़रा भी अंधकार नहीं है।" प्रेरित यूहन्ना बताते हैं कि परमेश्वर पिता पवित्र ज्योति हैं, जिनमें ज़रा भी अंधकार या बुराई की हल्की सी भी परछाई नहीं है। ज्योति का यह बुनियादी स्वरूप इतिहास में बेटे, यीशु के ज़रिए पूरी तरह से दिखाई दिया। प्रभु ने यूहन्ना 8:12 और 9:5 में इन शब्दों से अपनी पहचान बताई:

"मैं दुनिया की ज्योति हूँ। जो कोई मेरे पीछे चलेगा, वह अंधकार में नहीं चलेगा, बल्कि उसे जीवन की ज्योति मिलेगी," और "जब तक मैं दुनिया में हूँ, मैं दुनिया की ज्योति हूँ।" दूसरे शब्दों में, हालाँकि हम पिता को ज्योति के रूप में जानते हैं, लेकिन यीशु मसीह—जो सच्ची ज्योति बनकर इस धरती पर आए—के ज़रिए ही हम उनकी पवित्रता और धार्मिकता को अनुभव के साथ जान पाते हैं।

(2) परमेश्वर पिता असीम 'प्रेम' हैं।

1 यूहन्ना 4:16 (और 4:8) पर गौर करें: "और इसलिए हम जानते हैं और उस प्रेम पर भरोसा करते हैं जो परमेश्वर हमसे करते हैं। परमेश्वर प्रेम है। जो कोई प्रेम में रहता है, वह परमेश्वर में रहता है, और परमेश्वर उसमें रहते हैं।" पिता के ज्ञान के बारे में एक और बड़ी सच्चाई, जैसा कि 1 यूहन्ना में बताया गया है, यह है कि परमेश्वर का मूल स्वरूप ही 'प्रेम' है। इसके अलावा, परमेश्वर ने इस प्रेम को सिर्फ़ एक सोच या खोखले शब्दों तक सीमित नहीं रखा; उन्होंने अपने इकलौते बेटे, यीशु मसीह को इस पापी दुनिया में 'प्रायश्चित' के रूप में भेजकर इसे पक्के तौर पर साबित किया (1 यूहन्ना 4:9–10)। प्रभु ने अपना शरीर इसलिए चीरा और अपना लहू इसलिए बहाया ताकि हमारे बुरे पापों का प्रायश्चित हो सके (पद 10)।

इस अपार प्रेम की गहराई का अनुभव हमें सबसे ज़्यादा यूहन्ना 3:16 में दिए गए वादे से होता है—जो ईसाई सुसमाचार का मुख्य आधार है: "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, बल्कि अनंत जीवन पाए।" परमेश्वर पिता हमसे इतना प्रेम करते थे कि उन्होंने पूरे मन से अपने एकलौते पुत्र को क्रूस की वेदी पर बलिदान के रूप में दे दिया। उनकी पवित्र इच्छा यह है कि जो कोई प्रभु को उद्धारकर्ता के रूप में मानता है, वह अंधकार के विनाश में न पड़े, बल्कि भरपूर मात्रा में अनंत जीवन पाए और उसका आनंद ले—एक ऐसा जीवन जिसमें त्रिएक परमेश्वर के साथ संगति हो। जो लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, उन्हें प्रभु के बहुमूल्य लहू और क्रूस के द्वारा यह सौभाग्य मिलता है कि वे परमेश्वर पिता को—जो पवित्र ज्योति और अनंत प्रेम हैं—पूरी तरह से जान सकें और पूर्ण उद्धार का भरोसा रख सकें।

प्रिय संतों, जो लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, वे सचमुच परमेश्वर पिता को जानते हैं, जिन्होंने उनकी खातिर अपने एकलौते पुत्र को बिना किसी संकोच के दे दिया। इसके अलावा, जो संत पिता को सही ढंग से जानते हैं, वे हर दिन परमेश्वर के साथ शानदार और गहरी संगति का आनंद लेते हैं (1 यूहन्ना 1:3)। जो लोग प्रभु के साथ चलते हैं, वे सारे पाखंड को त्याग देते हैं और ज्योति में ईमानदारी से चलते हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे स्वयं ज्योति में हैं (पद 7)। दूसरे शब्दों में, क्योंकि जो लोग परमेश्वर की इच्छा का पालन करते हैं, वे सच्ची ज्योति में बने रहते हैं और अपने भाई-बहनों से खुद की तरह प्रेम करते हैं, इसलिए उनकी आत्मा या अंतःकरण में ठोकर खाने या बुराई का कोई कारण नहीं रह जाता (2:10)। और अपने साथी विश्वासियों के प्रति गहरे प्रेम के कारण, वे स्वर्ग के आनंद और पवित्र खुशी का अनुभव करते हैं, जो परमेश्वर की ओर से उनके दिलों में लगातार भरती रहती है (1:4)।

तीसरी बात, जो लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, वे शैतान के सभी धोखों को तोड़ देते हैं और उस दुष्ट पर विजय प्राप्त करते हैं।

कृपया आज के पाठ में 1 यूहन्ना, अध्याय 2 के पदों 13 और 14 के बाद वाले हिस्सों को देखें। प्रेरित यूहन्ना आध्यात्मिक लड़ाई के बीच खड़े युवाओं से कहते हैं: "हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुमने उस दुष्ट पर जीत हासिल कर ली है... हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम मज़बूत हो, और परमेश्वर का वचन तुममें बना हुआ है, और तुमने उस दुष्ट पर जीत हासिल कर ली है।" जैसा कि *समकालीन कोरियाई बाइबिल* कहती है: "हे युवाओं, मैं यह पत्र इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम परमेश्वर के वचन पर दृढ़ता से खड़े रहे हो और शैतान पर विजय प्राप्त की है।" अच्छी बात यह है कि हमारे चर्च का नाम "विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च" है। मेरी सच्ची और भावुक प्रार्थना है कि हमारा चर्च—अपने नाम में निहित आध्यात्मिक वादे के अनुरूप—एक ऐसा समुदाय बने जहाँ हर सदस्य अपने भ्रष्ट स्वभाव, पाप के प्रलोभनों, दुनिया की बुरी प्रवृत्तियों, शैतान की शक्ति और मृत्यु के भय के विरुद्ध लड़ते हुए, हर दिन विजयी और आत्मविश्वासी बने।

चर्च कोई ऐसा क्रूज़ शिप नहीं है जो दुनिया में आराम और सुख-सुविधा की तलाश में हो। चूँकि यीशु मसीह ने क्रूस पर शैतान का सिर कुचल दिया है और मृत्यु की शक्ति पर विजय प्राप्त कर ली है, इसलिए हमें उस

पूर्ण विजय के भरोसे को मज़बूती से थामे रखना चाहिए और "योद्धा ईसाइयों" का जीवन जीना चाहिए, जो यहाँ पृथ्वी पर ज़ोरदार आध्यात्मिक लड़ाई लड़ते हैं। हमें हवा की ताकतों के विरुद्ध एक पवित्र आध्यात्मिक संघर्ष की घोषणा निडर होकर करनी चाहिए। इस अर्थ में, चर्च समुदाय पवित्र सैनिकों का एक समूह है जो अंधकार की ताकतों के विरुद्ध आगे बढ़ रहा है, और यीशु मसीह—हमारे सेनापति, जिन्होंने मृत्यु की शक्ति पर विजय प्राप्त कर ली है और अनंत जीत हासिल की है—उनकी अगुवाई कर रहे हैं।

यदि हमें इस दुनिया में ऐसा आत्मविश्वासी और योद्धा ईसाई जीवन जीना है, तो हमें क्या तैयारी करनी चाहिए और हमें कैसे आगे बढ़ना चाहिए? आध्यात्मिक लड़ाई की अग्रिम पंक्ति में बुलाए गए क्रूस के योद्धा सैनिकों के लिए, सबसे ज़रूरी और आवश्यक चीज़ "परमेश्वर के पूरे हथियार" (Whole Armor of God) के अलावा और कुछ नहीं है—वे आध्यात्मिक सुरक्षात्मक उपकरण और हथियार जो स्वयं परमेश्वर ने प्रदान किए हैं। इफिसियों 6:11–13 में इस आध्यात्मिक कवच की ज़रूरत बताई गई है जिसे हमें पहनना चाहिए: "परमेश्वर का पूरा कवच पहनो, ताकि तुम शैतान की चालों का सामना कर सको। क्योंकि हमारी लड़ाई हाड़-मांस के लोगों से नहीं, बल्कि शासकों, अधिकारियों, इस अंधेरी दुनिया की ताकतों और स्वर्गीय स्थानों में मौजूद बुराई की आध्यात्मिक ताकतों से है। इसलिए परमेश्वर का पूरा कवच पहनो, ताकि जब बुराई का दिन आए, तो तुम डटे रह सको, और सब कुछ करने के बाद भी खड़े रह सको।" तो फिर, बाइबल में बताए गए "परमेश्वर के पूरे कवच" की खास बातें क्या हैं? इफिसियों 6:14–17 के आधार पर, उस आध्यात्मिक कवच को—जिसे हमें, यानी क्रूस के सैनिकों को, रोज़ाना पहनना और अपनाना चाहिए—छह मुख्य हिस्सों में बांटा जा सकता है।

सच्चाई की बेल्ट: परमेश्वर के वचन की अटूट सच्चाई से अपने मन और जीवन को मज़बूती से बांधना।

धार्मिकता की छाती-ढाल: एक सुरक्षा कवच जो शैतान के दोषारोपण से दिल की रक्षा करता है।

शांति के सुसमाचार के जूते: लड़ाई के लिए तैयार रहने वाले जूते, ताकि कभी भी और कहीं भी अच्छी खबर सुनाई जा सके।

विश्वास की ढाल: एक शक्तिशाली ढाल जो बुरे व्यक्ति द्वारा चलाए गए शक और डर के जलते हुए तीरों को बुझा देती है।

मुक्ति का हेलमेट: सिर का कवच जो मुक्ति की पक्की उम्मीद के साथ मन और आत्मा की रक्षा करता है।

आत्मा की तलवार: परमेश्वर के पूरे कवच में एकमात्र हमला करने वाला हथियार—जीवित और सक्रिय "परमेश्वर का वचन"।

जो सैनिक इस आध्यात्मिक कवच से पूरी तरह लैस हो जाते हैं, उनके लिए बाइबल जीत बनाए रखने के लिए सबसे शक्तिशाली आध्यात्मिक शक्ति के बारे में एक आखिरी सलाह देती है। जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्ज़न* में कहा गया है, हमें "हर समय आत्मा में रहकर हर तरह की प्रार्थना और विनती करनी चाहिए" (पद 18)। केवल वे ही जो आध्यात्मिक रूप से सतर्क और सावधान रहते हैं, और जो इस अंधेरे युग में अपने साथ लड़ रहे विश्वास वाले सभी भाई-बहनों के लिए आँसू बहाते हुए प्रार्थना करते हैं, वे यीशु—हमारे सेनापति—के वफादार सैनिकों के रूप में गर्व से खड़े हो पाएँगे; यीशु ही बुरे व्यक्ति को हराते हैं और जीतते हैं।

एक भजन है जिसे हम शायद ही कभी गाते हों लेकिन शायद पहचानते हों: "फाइट द डेविल" (नया भजन संग्रह नंबर 348)। उस भजन के पहले और दूसरे पद के बोल कुछ इस तरह हैं: (पद 1) “शैतान से लड़ो, हे पाप से शुद्ध हुए भाई; उन दुष्ट दुश्मन सेनाओं के खिलाफ बहादुरी से लड़ो। न्याय का दिन और विनाश का दिन तुम्हारी आँखों के सामने तेज़ी से आ रहा है।” (पद 2) “शैतान से लड़ो, हे पाप से शुद्ध हुए भाई; क्या शोर मचाती हुई वे भीड़ एक भयानक दुश्मन सेना नहीं है? सभी डरावने और गंदे पापों को त्याग दो, और प्रभु यीशु को मज़बूती से थामे रखो।” ये बोल याकूब 4:7 की बातों की याद दिलाते हैं: “शैतान का सामना करो, और वह तुमसे भाग जाएगा।” तो फिर, यह "शैतान" कौन है? यूहन्ना 8:44 को देखिए: “तुम अपने पिता, शैतान की संतान हो और तुम अपने पिता की इच्छाओं को पूरा करना चाहते हो। वह शुरू से ही हत्यारा रहा है और

सच पर नहीं टिका, क्योंकि उसमें कोई सच्चाई नहीं है। जब वह झूठ बोलता है, तो वह अपनी ही भाषा बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है।"

आइए आज के वचन पर फिर से विचार करें—खासकर 1 यूहन्ना 2:13 और 14 के आखिरी हिस्सों पर। प्रेरित यूहन्ना नौजवानों से गंभीरता से कहता है, "तुमने उस दुष्ट पर जीत हासिल कर ली है।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) में इसका अनुवाद किया गया है, यह पत्र पाने वाले विश्वासी वे विजेता हैं जिन्होंने परमेश्वर के वचन पर मज़बूती से खड़े रहकर "शैतान" पर पहले ही जीत हासिल कर ली है। 1 यूहन्ना 3:8 और 10 में, प्रेरित यूहन्ना शैतान के असली स्वभाव को साफ-साफ बताता है—वही दुश्मन जिससे युवा विश्वासियों ने लड़ाई लड़ी और जीत हासिल की: "जो पाप करता है वह शैतान का है, क्योंकि शैतान शुरू से ही पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसी मकसद से आया था, ताकि शैतान के कामों को नष्ट कर सके... इससे परमेश्वर की संतान और शैतान की संतान की पहचान होती है: जो कोई नेकी का काम नहीं करता वह परमेश्वर का नहीं है, और न ही वह जो अपने भाई से प्यार नहीं करता।" यहाँ, प्रेरित एक गंभीर अंतर बताता है और इंसानों को दो समूहों में बांटता है: "परमेश्वर की संतान" और "शैतान की संतान।" फिर वह परमेश्वर की संतान को सख्ती से समझाता है: "कोई तुम्हें धोखा न दे" (1 यूहन्ना 3:7)।

शैतान की संतान—यानी वे जो उसके हैं—स्वभाव से ऐसे लोग होते हैं जो लगातार पाप में डूबे रहते हैं और नेकी का काम नहीं करते। यूहन्ना के विचारों के अनुसार, धर्मग्रंथ में बताए गए "नेकी का काम न करने" का सबसे बड़ा सबूत बस यही है कि इंसान अपने सामने मौजूद भाई से प्यार नहीं करता। इसके उलट, परमेश्वर की संतान—जो क्रूस के कीमती लहू से नए सिरे से पैदा हुई है—अलग होती है। प्रभु की नेकी से ढके होने के कारण, वे पाप के गुलाम बनकर नहीं रहते, और न ही वे आदत के तौर पर या लगातार पाप करते हैं (आयतें 7, 9)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की संतानें शैतान की बेड़ियों में बंधकर अपने भाइयों से नफ़रत करने जैसे विनाशकारी पाप में नहीं लगी रहतीं। बेशक, परमेश्वर की संतानें भी कमज़ोरी के पलों में या शैतान के लगातार धोखे में आकर लड़खड़ा सकती हैं और अपने दिलों में किसी भाई से नफ़रत करने या उसे बुरा-भला कहने का पाप कर सकती हैं। फिर भी, शैतान की संतानों से यही मुख्य अंतर है: सच्चे विश्वास करने

वाले ज़्यादा देर तक अंधेरे में नहीं रहते। जिस पल हमें नफ़रत के पाप का एहसास होता है, हम रोशनी में आ जाते हैं और ईमानदारी से अपनी गलतियाँ मान लेते हैं (1:9)। ऐसा करने पर, हमें यीशु मसीह के नाम से पूरा प्रायश्चित और माफ़ी मिलती है और हम उसका आनंद लेते हैं; वही हमारे पापों का प्रायश्चित करने वाला बलिदान बना (2:12)। इसके अलावा, पवित्र आत्मा की शक्ति से हम पाखंड का मुखौटा उतार फेंकते हैं और—शैतान के उन धोखों को हिम्मत से तोड़कर जिनकी वजह से हम कभी लड़खड़ाए थे—हम रोशनी वाली जगह पर लौट आते हैं जहाँ हम अपने साथी विश्वासियों से सच्चे दिल से प्यार करते हैं। पवित्र बहाली की यह मज़बूती जीत का पक्का सबूत है, जो दिखाती है कि युवा विश्वासियों ने दुष्ट को पैरों तले रौंद दिया है और उस पर जीत हासिल की है।

तो फिर, किस शक्ति से परमेश्वर की नई ज़िंदगी पाने वाली संतानें शैतान की चालाक सत्ता से लड़ सकती हैं और उसे हरा सकती हैं? हम शैतान के उन प्रलोभनों को कैसे तोड़ सकते हैं जो लगातार हमें अपने भाइयों से ईर्ष्या और नफ़रत करने के लिए उकसाते हैं? 1 यूहन्ना 2:14 का बाद वाला हिस्सा आध्यात्मिक युद्ध में पक्की और कभी न हारने वाली जीत का राज़ बताता है: "हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ क्योंकि तुम मज़बूत हो, और परमेश्वर का वचन तुममें बना रहता है, और तुमने उस दुष्ट पर जीत हासिल की है।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल* बताती है, एकमात्र मास्टर-की जो हमें शैतान के नफ़रत भरे आग के तीरों को रोकने और विजयी होने में मदद करती है, वह यह है कि "हम आध्यात्मिक रूप से मज़बूत हैं और परमेश्वर का जीवित वचन हमारे भीतर रहता है।" यहाँ, "मज़बूत" होने का मतलब यह नहीं है कि हमारे पास बहुत ज़्यादा समझदारी या अच्छा चरित्र है। बल्कि, चूँकि परमेश्वर का जीवित, सक्रिय और शक्तिशाली वचन हमारे भीतर रहता है, इसलिए हम उसी वचन की शक्ति से मज़बूत बनते हैं। इसके अलावा, यह तथ्य कि परमेश्वर का वचन हमारे भीतर रहता है, इस बात का सबूत है कि हमारा विश्वास—बिना किसी शक के उस वचन पर हमारा भरोसा—अटल है। केवल वे विश्वासी जिन्होंने वचन को अपने भीतर बसा लिया है, उनमें शैतान का सामना करने के लिए ज़रूरी आध्यात्मिक ताकत होती है। इसलिए, 1 यूहन्ना 5:4 में, प्रेरित यूहन्ना मज़बूती से कहते हैं कि हमारा विश्वास ही वह साधन है जिससे हमें अंतिम जीत मिलती है और हम दुनिया और शैतान को हराते हैं: "क्योंकि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह दुनिया पर जीत हासिल करता है। और यही वह जीत है जिसने दुनिया पर जीत हासिल की है—हमारा विश्वास।"

परमेश्वर की हर संतान के पास दुनिया पर जीत हासिल करने का अधिकार है। और उस जीत का आधार—जो इस अंधेरी दुनिया और शैतान की चालों पर हमेशा के लिए जीत हासिल करती है—सिर्फ़ प्रभु यीशु में हमारे विश्वास में ही मिलता है। जब मैं इस पवित्र आध्यात्मिक युद्ध के गीत के बारे में सोचता हूँ, तो भजन 357, "उठो, हे विश्वासियों," के शानदार बोल मेरे दिल को गहराई से छू जाते हैं:

उठो, हे विश्वासियों, और अपनी ताकत को एक करो,
इस दुनिया के सभी शैतानों को गिराने और नष्ट करने के लिए।
अपने सामने बढ़ रहे दुश्मन से लड़ो और उसे जीतो;
प्रभु यीशु में विश्वास की शक्ति से, हम दुनिया पर जीत हासिल करते हैं।

शैतान के धोखे के कारण पूरी इंसानियत गहरे पाप में गिर गई है;
सच्चाई से लैस होकर, आइए हम लगातार प्रार्थना करें।
जब हम निडर होकर आगे बढ़ते हैं, उस पर भरोसा और निर्भरता रखते हुए,
प्रभु यीशु में विश्वास की शक्ति से, हम दुनिया पर जीत हासिल करते हैं।
जो अंत तक जीतते हैं, उन्हें वह सफ़ेद वस्त्र देता है
और अनंत जीवन का आशीर्वाद—एक सचमुच खुशी की बात।
इस अंधेरी दुनिया से ऊपर स्वर्गीय शहर तक,
प्रभु यीशु में विश्वास की शक्ति से, हम दुनिया पर जीत हासिल करते हैं।

(कोरस)
विश्वास जीतता है, विश्वास जीतता है;
प्रभु यीशु में विश्वास दुनिया पर जीत हासिल करता है। जब हम परमेश्वर के सत्य के वचन को मज़बूती से थामे रहते हैं, सचमुच प्रभु पर भरोसा करते हैं, और निडर होकर आगे बढ़ते हैं, तो पवित्र आत्मा हमें वचन की तलवार और विश्वास की ढाल का उपयोग करके शैतान के सभी प्रलोभनों का सामना करने में सक्षम बनाएगा। मेरी दिली उम्मीद है कि हम सब दुनिया की नफ़रत पर जीत हासिल करें और अंततः प्रभु यीशु में विश्वास की शक्ति के माध्यम से प्रेम की जीत कराएँ।

प्यारे संतों, विश्वास की ही अंततः जीत होती है। केवल प्रायश्चित में विश्वास—उद्धारकर्ता के रूप में प्रभु यीशु मसीह पर भरोसा करना—ही हमें इस अनैतिक, पापी दुनिया और शैतान की सभी ताकतों को पैरों तले कुचलने और जीत हासिल करने में सक्षम बनाता है। हालाँकि शैतान लगातार हमें अपने विश्वासी भाई-बहनों से ईर्ष्या और नफ़रत करने के लिए उकसाता और बहकाता रहता है, लेकिन उस ज़बरदस्त धोखे को तोड़ने और जीत हासिल करने का एकमात्र ज़रिया हमारा विश्वास है (1 यूहन्ना 5:4)। इस आध्यात्मिक लड़ाई में हिम्मत न हारने का पक्का आधार क्या है? वह यह है कि त्रिएक परमेश्वर—हमारे विश्वास का केंद्र जो हमारे भीतर वास करते हैं—उस "दुनिया में मौजूद" (शैतान) से कहीं ज़्यादा महान और शक्तिशाली हैं, जो कलीसिया और संतों को नष्ट करना चाहता है (4:4)। उस प्रभु पर भरोसा करके जिसने पहले ही जीत हासिल कर ली है, हम निश्चित रूप से दिन-ब-दिन शैतान के ख़िलाफ़ लड़ाई में जीतेंगे। मुझे पूरी उम्मीद है कि हम सब परमेश्वर के वचन पर मज़बूती से खड़े रहेंगे और प्रभु की आज्ञा मानकर अपने पड़ोसियों से खुद की तरह सच्चा प्रेम करते हुए, अपने दिलों को उस स्वर्गीय आनंद से भर लेंगे जो परमेश्वर हम पर बरसाते हैं (1:4)।

चौथी बात, जो लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, वे कभी भी इस अंधेरी दुनिया या इससे जुड़ी चीज़ों से प्यार नहीं करते।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:15 को देखिए। प्रेरित यूहन्ना दुनिया के लिए हमारे अंदर सुलग रहे लालच पर कड़ी रोक लगाते हैं: "दुनिया या दुनिया की किसी भी चीज़ से प्यार न करो। अगर कोई दुनिया से प्यार करता है, तो उसमें पिता का प्यार नहीं है।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल* कहती है, हमें दुनिया या उससे जुड़ी नाशवान चीज़ों से प्यार नहीं करना चाहिए। जिस पल कोई दुनिया को अपने प्यार का केंद्र बनाता है, उस पल परमेश्वर पिता के लिए सच्चा प्यार उसके दिल में नहीं रह सकता। यहाँ एक स्पष्ट आध्यात्मिक सच्चाई है जिसे हमें याद रखना चाहिए: जिस दुनिया में हम रहते हैं, वह विश्वासियों के लिए मजे करने की जगह नहीं है, बल्कि सुसमाचार फैलाने का एक मैदान है—एक ऐसी जगह जहाँ हमें सुसमाचार का कर्ज चुकाना है।

हमें इस पापी दुनिया के मूल्यों से समझौता नहीं करना चाहिए, न ही दुनिया से प्यार करना चाहिए और न ही इसके तौर-तरीकों को अपनाना चाहिए। याकूब 4:4 इसके खिलाफ कड़ी चेतावनी देता है: "क्या तुम नहीं जानते कि दुनिया से दोस्ती करना परमेश्वर से दुश्मनी करना है? इसलिए, जो कोई दुनिया का दोस्त बनना चाहता है, वह खुद को परमेश्वर का दुश्मन बना लेता है।" खुद को दुनिया के साथ जोड़ना आध्यात्मिक व्यभिचार और बगावत का काम है—यह परमेश्वर का सीधा विरोध है। स्वर्ग के पवित्र बच्चों के तौर पर, हमें इस दुनिया में फंसी और मर रही आत्माओं को यीशु मसीह के क्रूस का सुसमाचार मेहनत से सुनाना चाहिए। क्योंकि जो लोग दुनिया का हिस्सा बनकर रहते हैं, वे पाप के मुद्दे को सुलझा नहीं पाते और आखिर में उन्हें हमेशा की सज़ा का सामना करना पड़ता है। हमें उन दुखी आत्माओं पर दया करनी चाहिए और दुनिया से प्यार करने के बजाय, खुद को सुसमाचार के ज़रिया बनने देना चाहिए ताकि उन्हें बचाया जा सके।

आज के वचन—1 यूहन्ना 2:15—में प्रेरित यूहन्ना एक बार फिर विश्वासियों को उनके आध्यात्मिक कर्तव्य के बारे में याद दिलाते हैं: "दुनिया या दुनिया की किसी भी चीज़ से प्यार न करो। अगर कोई दुनिया से प्यार करता है, तो उसमें पिता का प्यार नहीं है।" तो फिर, वह मुख्य कारण क्या है जिसकी वजह से हमें इस दुनिया और इसकी चीज़ों से प्यार करने से इतनी मज़बूती से इनकार करना चाहिए और दूर रहना चाहिए? प्रेरित 1 यूहन्ना 5:19 में इसके पीछे की आध्यात्मिक सच्चाई को साफ़ तौर पर बताते हैं: "हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के हैं, और पूरी दुनिया उस दुष्ट के नियंत्रण में है।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* में इसका अनुवाद किया गया है, ऐसा इसलिए है क्योंकि "हम परमेश्वर के हैं, जबकि पूरी दुनिया शैतान के अधिकार में है।" हालाँकि हम पवित्र परमेश्वर के हैं, लेकिन जिस दुनिया में हम रहते हैं, वहाँ की प्रचलित मूल्य-प्रणालियाँ और संस्कृतियाँ शैतान के नियंत्रण में काम करती हैं। इसलिए, परमेश्वर की संतान के लिए ऐसी दुनिया में शामिल होना एक असंभव विरोधाभास है जो शैतान के शासन में चलती है।

तो फिर, "दुनिया की वे कौन-सी खास बातें" हैं जिन्हें हमें शैतान के प्रभुत्व वाली इस दुनिया में रहते हुए कभी भी बर्दाश्त नहीं करना चाहिए या उनसे प्यार नहीं करना चाहिए? आयत 16 में, प्रेरित यूहन्ना तीन तीखी परिभाषाओं के ज़रिए उनके बुरे स्वरूप को उजागर करते हैं: "क्योंकि दुनिया की हर चीज़—शरीर की लालसा, आँखों की लालसा, और जीवन का घमंड—पिता से नहीं, बल्कि दुनिया से आती है।" आखिरकार, शैतान के शासन वाली इस दुनिया का सार तीन इच्छाओं की गुलामी के अलावा और कुछ नहीं है: शरीर की

लालसा, आँखों की लालसा, और जीवन का घमंड। ऐसा कोई भी लालच पवित्र परमेश्वर पिता की ओर से अच्छी चीज़ के रूप में नहीं आता; बल्कि, यह गिरी हुई दुनिया और शैतान के धोखे से पैदा हुआ ज़हर है। इसके अलावा, यह दुनिया—और इसे उकसाने वाली चकाचौंध भरी इच्छाएँ—आखिरकार ऐसी क्षणभंगुर चीज़ें हैं जो प्रभु के सच्चे प्रकाश के सामने धुएँ की तरह बिना किसी निशान के गायब हो जाएँगी (2:17)। इसलिए, परमेश्वर पिता की पूरे दिल से आराधना और प्रेम करने वाले विश्वासियों के रूप में, हमें इस सीमित, नाशवान दुनिया की इच्छाओं से अपना लगाव दृढ़ता से तोड़ना होगा। पवित्र शास्त्र गंभीरता से चेतावनी देता है कि यदि हम अपने दिलों में इस दुनिया की इच्छाओं को पालते हैं और उनसे प्यार करते हैं, तो हमारे भीतर परमेश्वर पिता के लिए सच्चे प्रेम के रहने की कोई जगह नहीं है (आयत 15)।

हमारी सच्चाई क्या है? यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू से बचाए जाने के बाद—और परमेश्वर पिता का पवित्र प्रेम हमारे भीतर गहराई से बह रहा है—अब हम शरीर की सांसारिक इच्छाओं, आँखों की लालसा, या जीवन के घमंड की चाह नहीं रखते। इसके बजाय, प्रभु की स्वर्गीय आज्ञा का पालन करते हुए, हम अपने परमेश्वर से पूरे मन, प्राण और बुद्धि से प्रेम करने और अपने पड़ोसियों से भी खुद की तरह ही सच्चे दिल से प्रेम करने के जीवन की ओर बढ़ते हैं (मत्ती 22:37–39)। जब हम दुनिया से अपना नाता तोड़ लेते हैं और आज्ञाकारिता के इस संकरे रास्ते पर मज़बूती से चलते हैं, तो परमेश्वर का उत्तम प्रेम हमारी आत्माओं और जीवन में बहुत ही सुंदर और भरपूर तरीके से पूरा होता है (1 यूहन्ना 2:5)।

प्यारे संतों, हमें कभी भी इस अंधेरी दुनिया या इससे जुड़ी नाशवान चीज़ों से प्रेम नहीं करना चाहिए। इस दुनिया की हर चीज़—शरीर की इच्छाएँ, आँखों की लालसा और जीवन का घमंड—आखिरकार एक भ्रम के अलावा कुछ नहीं है, जो सच्ची रोशनी के सामने धुंध की तरह गायब हो जाने वाली है। चूँकि हमारे पवित्र परमेश्वर पिता का प्रेम पहले से ही हमारे भीतर बह रहा है, इसलिए हमें दुनिया के प्रति लालच को पूरी तरह छोड़ देना चाहिए और केवल परमेश्वर की भली इच्छा को पूरा करने के लिए मज़बूती से खड़े रहना चाहिए।

हमारे लिए परमेश्वर की स्पष्ट इच्छा प्रभु द्वारा दी गई राज्य की आज्ञा है: अपने परमेश्वर से पूरे मन, प्राण और बुद्धि से प्रेम करना और अपने पड़ोसियों से भी खुद की तरह सच्चे दिल से प्रेम करना। जैसे-जैसे हम चुपचाप

आज्ञाकारिता के इस संकरे रास्ते पर चलते हैं, मुझे पूरी उम्मीद है कि परमेश्वर द्वारा ऊपर से बरसाया गया राज्य का आनंद हमारे दिलों में लहरों की तरह उमड़ पड़ेगा (1 यूहन्ना 1:4)।

पाँचवीं बात, जो लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, उन्हें सुसमाचार का यह भरोसा होता है कि यीशु मसीह के नाम से उनके सभी पाप पूरी तरह से माफ़ कर दिए गए हैं।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:12 को देखें। प्रेरित यूहन्ना नए सिरे से जन्मे सभी विश्वासियों को इस शानदार उद्धार की नींव के बारे में बताते हैं: "हे छोटे बच्चों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि उसके नाम के कारण तुम्हारे पाप माफ़ कर दिए गए हैं।" जैसा कि *कंटेम्परेरी कोरियन वर्शन* में अनुवाद किया गया है, प्रेरित खुशी के साथ यह पत्र लिखते हैं क्योंकि "यीशु के नाम में तुम्हारे पापों को पूरी तरह से माफ़ी मिल गई है।" यहाँ, हमें सुसमाचार के उन गंभीर वादों को फिर से याद करना चाहिए जिन्हें हमने अपने पिछले मनन के दौरान समझा था। अगर हम दावा करते हैं कि परमेश्वर के साथ हमारी पवित्र संगति है, फिर भी अपने भाइयों से ईर्ष्या और नफ़रत करते रहते हैं, तो हम अंधेरे में चल रहे हैं; हम परमेश्वर के सामने झूठ बोल रहे हैं और सच्चाई का विरोध करके गंभीर पाप कर रहे हैं। बाइबल के अनुसार, अंधेरे में चलने का मतलब है आज्ञा न मानना—यानी प्रभु की आज्ञाओं को नज़रअंदाज़ करना—और आध्यात्मिक रूप से अंधेपन की स्थिति में होना, जिसमें अपने भाई के प्रति नफ़रत होती है (पद 4, 9, 11)। हालाँकि, जो लोग बुरे अंधेरे में फँसे रहते हैं और अपने पापों को नहीं मानते, उनके उलट, रोशनी की सच्ची संतानें—जो रोशनी में चलती हैं—ईश्वर के सामने ईमानदारी से अपनी गलतियाँ मानती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो संत रोशनी में चलते हैं, वे पवित्र आत्मा की साफ़ रोशनी में सामने आए गंदे पापों को छिपाते नहीं हैं; बल्कि, वे ईमानदारी से उनका सामना करते हैं। वह बड़ा रहस्य जो उन्हें कृपा के सिंहासन के पास जाने और अपने पहचाने गए पापों के लिए बिना किसी बहाने या इनकार के उन्हें स्वीकार करने में मदद करता है, वह है उनके दिलों में पापों की माफ़ी का पक्का भरोसा। रोशनी की संतानें इस बात पर पूरा भरोसा रखती हैं कि परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का कीमती लहू उनके सभी पापों और अधर्म को बिना कोई निशान छोड़े धो देता है (1:7)। जब हम अपनी गलतियों को छिपाने के बजाय उन्हें पूरी तरह मान लेते हैं, तो वफ़ादार और धर्मी परमेश्वर—1 यूहन्ना 1:9 के वादे के अनुसार—हमारे सभी पापों को माफ़ कर देते हैं और हमें शुद्ध करते हैं। वह कानूनी आधार जिस पर धर्मी

परमेश्वर हमारी स्वीकारोक्ति को स्वीकार करते हैं और तुरंत माफ़ी देते हैं, वह साफ़ है: ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु मसीह, जो पाप-रहित और धर्मी महायाजक हैं, ने व्यक्तिगत रूप से हमारे सभी पापों का बोझ उठाया और क्रूस पर पापों का प्रायश्चित करने वाला उत्तम बलिदान बने (2:1–2)। जो लोग सचमुच परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, वे हर पल इस कीमती लहू की सामर्थ्य पर भरोसा करते हैं ताकि वे अपने अपराध-बोध को दूर कर सकें और पूरी माफ़ी की खुशी में निडर होकर चल सकें।

आज के अंश, 1 यूहन्ना 2:12 में, प्रेरित यूहन्ना एक बार फिर सुसमाचार की पक्की नींव की घोषणा करते हैं: "हे छोटे बच्चों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि उसके नाम की वजह से तुम्हारे पाप माफ़ कर दिए गए हैं।" यहूदी ईसाइयों को यह पत्र लिखने के पीछे प्रेरित यूहन्ना का धार्मिक उद्देश्य बिल्कुल साफ़ है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे न केवल यीशु मसीह—सच्ची ज्योति—और परमेश्वर पिता को पूरी तरह जानते हैं, बल्कि जीवित और प्रभावशाली वचन पर भी मज़बूती से खड़े हैं, और बुराई करने वाले, यानी शैतान के सभी धोखों पर निडरता से जीत हासिल करते हैं (पद 13–14)। अपनी आध्यात्मिक पहचान के मामले में यह बड़ी जीत हासिल करने वाले विश्वासियों को देखते हुए, प्रेरित उन्हें ज़ोरदार सलाह देते हैं कि वे कभी भी इस अंधेरी दुनिया या इससे जुड़ी नाशवान चीज़ों से प्यार न करें।

यही वह ठोस कारण है कि हमें दुनिया से जोड़ने वाले लालच के बंधनों को मज़बूती से तोड़ देना चाहिए: परमेश्वर पिता के प्रति पवित्र प्रेम पहले से ही नए सिरे से जन्मे विश्वासियों के दिलों में बहता है। इसके विपरीत, इस दुनिया में जो कुछ भी हमें लगातार लुभाता है—शरीर की वासना, आँखों की वासना और जीवन का घमंड—वह पवित्र परमेश्वर की ओर से कोई अच्छा उपहार नहीं है; बल्कि, यह शैतान के अधिकार वाली गिरी हुई दुनिया से निकला हुआ एक ज़हर है (पद 15–16)। यह दुनिया, अपनी आकर्षक लगने वाली इच्छाओं के साथ, आखिरकार एक भ्रम के अलावा और कुछ नहीं है जो परमेश्वर की सच्ची रोशनी के सामने—कोहरे की तरह—बिना किसी निशान के गायब हो जाएगा (पद 17)। यह वह शानदार दिलासा है जिसे प्रेरित यूहन्ना ने यह पत्र लिखते समय संतों के मन में बिठाने की कोशिश की थी। हमारी आत्माओं को यीशु मसीह के अनमोल नाम के द्वारा पहले ही पूरी और हमेशा के लिए माफ़ी मिल चुकी है (पद 12)। क्योंकि परमेश्वर ने हमसे—जो स्वभाव से क्रोध के पात्र थे—इतना गहरा प्रेम किया, इसलिए उन्होंने खुद अपने एकलौते बेटे, यीशु मसीह को

हमारे सभी पापों के प्रायश्चित के लिए इस धरती पर भेजा (4:10)। यीशु, जो हमारे लिए पापों का संपूर्ण प्रायश्चित बने (2:2), स्वर्ग के सिंहासन के दाहिने हाथ पर हमारे धर्मी वकील के रूप में खड़े हैं और स्वर्गीय अदालत में हमारा पूरी तरह से बचाव करते हैं, तब भी जब हम अपनी कमज़ोरी के कारण पाप करते हैं (पद 1). इसलिए, हमें अंधेरे में छिपने या डर में जीने की ज़रूरत नहीं है। हमें बस उस वादे वाले वचन को मज़बूती से थामे रखना है और अनुग्रह के सिंहासन के पास जाना है: "यदि हम अपने पापों को मान लेते हैं, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें हर तरह की अधार्मिकता से शुद्ध करने में सच्चा और न्यायपूर्ण है" (1:9)। पापों की क्षमा के इस शानदार भरोसे के साथ, मैं पूरी उम्मीद करता हूँ कि हम चेलों का धन्य जीवन जी सकें—दुनिया की क्षणभंगुर इच्छाओं को साहसपूर्वक ठुकराते हुए और परमेश्वर की भली और अनंत इच्छा को पूरा करने के लिए दृढ़ता से आगे बढ़ते हुए।

प्रिय संतों, हमारे सभी पाप आखिरकार यीशु मसीह के अनमोल नाम के द्वारा हमेशा के लिए क्षमा कर दिए गए हैं। प्रभु, जो पवित्र हैं और जिनमें पाप का कोई अंश नहीं है, हमारे बुरे पापों को मिटाने के लिए खुद इस धरती पर आए (3:5)। हमारे सभी पापों का बोझ उठाकर और क्रूस की वेदी पर अपना लहू बहाकर, उन्होंने हमारे सभी अपराधों और पापों को पूरी तरह मिटा दिया। इसलिए, यीशु मसीह में विश्वास रखने वाले ईसाई होने के नाते, हमें पापों की क्षमा का अटूट भरोसा है। इसी भरोसे के साथ और प्रभु की आज्ञाओं का ईमानदारी से पालन करते हुए, हम एक पवित्र लोग हैं जिन्होंने अपना जीवन अपने पड़ोसियों और साथी विश्वासियों से खुद की तरह प्रेम करने के लिए समर्पित किया है—ठीक वैसे ही जैसे प्रभु ने हमसे इतना प्रेम किया कि उन्होंने हमारे लिए अपना जीवन दे दिया।

हालाँकि, अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी की आध्यात्मिक लड़ाई के बीच, हम अक्सर—अपनी इच्छा के विरुद्ध—प्रभु की पवित्र आज्ञाओं को तोड़ने और अपने दिलों में अपने भाई-बहनों के प्रति नफ़रत पालने की दुखद विफलता का अनुभव करते हैं। हम एक ऐसे आध्यात्मिक विरोधाभास में फँस जाते हैं जहाँ, हम अपने होंठों से तो पवित्रता के मार्ग पर चलने का दावा करते हैं, लेकिन असल में बुराई की काली शक्ति के अधीन गुलाम की तरह जीते हैं (2:9)। यह आध्यात्मिक पाखंड के अलावा और कुछ नहीं है: परमेश्वर के साथ गहरी संगति का दावा करना—जिनमें ज़रा भी अंधकार नहीं है—जबकि हम सक्रिय रूप से अंधकार के कामों में लगे रहते हैं, और परमेश्वर तथा मनुष्य दोनों के सामने आदतवश झूठ बोलकर सुसमाचार की सच्चाई को नकारते

हैं (1:6)। निराशा के उसी क्षण में, बाइबल हमें एक बार फिर क्षमा का महान वादा सुनाती है: "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है और हमारे पापों को क्षमा करेगा और हमें हर तरह के अधर्म से शुद्ध करेगा" (1:9)। जब हम पाखंड का मुखौटा उतार फेंकते हैं, रोशनी में कदम रखते हैं, और ईमानदारी से अपने अंधकार को स्वीकार करते हैं, तो धर्मी परमेश्वर—अपने वादे के अनुसार—यीशु के लहू के द्वारा हमें हर तरह के अधर्म से शुद्ध कर देते हैं। आज भी, हम केवल यीशु मसीह के नाम की शक्ति के द्वारा पूरी क्षमा की कृपा से ढके हुए हैं (2:12)। और जो लोग रोशनी की सच्ची संतान हैं, और जिन्हें क्षमा की कृपा मिली है, वे केवल शब्दों तक ही सीमित नहीं रहते।

सच्चे पश्चाताप से उपजे पवित्र जीवन के प्रमाण के तौर पर, हम पूरे दिल से एक बार फिर प्रभु की आज्ञाओं का पालन करते हैं, और हमें दिए गए भाई-बहनों को अपनाते हुए और उनसे प्रेम करते हुए आगे बढ़ते हैं—उनसे अंत तक प्रेम करते हैं। जैसे-जैसे हम दुनिया की इच्छाओं और लालच से नाता तोड़कर शांति से माफ़ी और प्यार के इस संकरे रास्ते पर चलते हैं, मेरा मानना है कि स्वर्ग की भरपूर खुशी और पवित्र आनंद—जो त्रिएक परमेश्वर की ओर से हम पर बरसता है—हर दिन हमारे दिलों में लहरों की तरह उमड़ेगा। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हम सब दुनिया के क्षणभंगुर प्रलोभनों को दृढ़ता से ठुकरा दें, यीशु के कीमती लहू की शक्ति से रोज़ाना सुसमाचार का भरोसा पाएँ, और पूरी तरह से परमेश्वर की अच्छी और अनंत इच्छा को पूरा करते हुए विजयी जीवन जीएँ।

प्रिय संतों, अब मैं वचन पर आज के मनन को समाप्त करता हूँ। जीवन के उस मोड़ पर जहाँ मेरी इच्छा और परमेश्वर की इच्छा का ज़बरदस्त टकराव होता है, मुझे भजन 549, "हे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो," में कही गई दिल की बात याद आती है, जो मेरे दिल में गहराई तक उतर जाती है:

"हे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो; मैं अपना तन-मन पूरी तरह तुझे सौंपता हूँ। इस दुनिया के सुख-दुख में मेरा मार्गदर्शन कर; मेरे जीवन की बागडोर संभाल और अपनी इच्छा पूरी होने दे।"

"हे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो; घोर संकट में भी मेरा हौसला न टूटे। तू भी कभी रोया था; मेरे जीवन की बागडोर संभाल और अपनी इच्छा पूरी होने दे।"

"हे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो; मैं अपने सारे काम तुझे सौंपता हूँ और शांति से स्वर्गीय नगर की ओर बढ़ता हूँ। चाहे मैं जीऊँ या मरूँ, तेरी इच्छा पूरी हो। आमीन।"

यह बात आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:17 में बताए गए सुसमाचार के मुख्य संदेश से पूरी तरह मेल खाती है: "दुनिया और उसकी इच्छाएँ खत्म हो जाएँगी, लेकिन जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह हमेशा जीवित रहेगा।" जैसा कि *समकालीन कोरियाई संस्करण* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) वादा करता है, भले ही यह दुनिया और इससे जुड़ी इंसानी इच्छाएँ धुंध की तरह गायब हो जाएँगी, लेकिन जो लोग परमेश्वर की अच्छी इच्छा पूरी करते हैं, वे स्वर्ग के राज्य का जीवन पाकर हमेशा जीवित रहेंगे।

इसी सच्चाई को केंद्र में रखते हुए, मैंने आज पाँच शानदार आध्यात्मिक पड़ावों पर मनन किया है जो यह बताते हैं कि "परमेश्वर की इच्छा पूरी करने वाले" होने का असल मतलब क्या है:

पहला, जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह सच में यीशु मसीह को जानता है।

दूसरा, जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह परमेश्वर पिता को सही ढंग से जानता है। तीसरा, जो व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह शैतान के धोखे को तोड़ता है और बुराई पर जीत हासिल करता है।

चौथा, जो व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह इस अंधेरी दुनिया या दुनिया की चीज़ों से प्रेम नहीं करता। पांचवां, जो लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं, उन्हें यह भरोसा होता है कि यीशु के नाम से उनके सभी पाप क्षमा कर दिए गए हैं।

जबकि दुनिया की इच्छाएं क्षणभंगुर होती हैं, परमेश्वर की इच्छा पूरी करने वाले का जीवन अनंत होता है। मैं प्रभु के नाम से पूरी निष्ठा से प्रार्थना करता हूं कि हम सब साहसपूर्वक इस दुनिया की क्षणभंगुर मूल्यों को त्याग दें, प्रतिदिन अपनी समझ और अपनी इच्छा को प्रभु के क्रूस के चरणों में समर्पित करें, और दृढ़तापूर्वक केवल परमेश्वर की भली और अनंत इच्छा को पूरा करते हुए अंततः अंतिम विजय प्राप्त करें।

हमें यह समझना चाहिए कि हम आखिरी दिनों में जी रहे हैं।

[1 यूहन्ना 2:18–25]

"हे बच्चों, यह आखिरी घड़ी है; और जैसा कि तुमने सुना था कि मसीह-विरोधी (antichrist) आने वाला है, अभी भी कई मसीह-विरोधी आ गए हैं। इससे हम जानते हैं कि यह आखिरी घड़ी है। वे हमारे बीच से तो गए, लेकिन असल में वे हमारे नहीं थे; क्योंकि अगर वे हमारे होते, तो वे हमारे साथ ही रहते; लेकिन वे चले गए, ताकि यह दिखाया जा सके कि वे सभी हमारे नहीं हैं। लेकिन तुम्हें उस पवित्र जन से अभिषेक मिला है, और तुम सब जानते हो। मैंने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा है कि तुम सच नहीं जानते, बल्कि इसलिए कि तुम उसे जानते हो, और इसलिए कि कोई भी झूठ सच से नहीं आता। झूठा कौन है, सिवाय उसके जो इस बात से इनकार करता है कि यीशु ही मसीह है? यही मसीह-विरोधी है, जो पिता और पुत्र दोनों का इनकार करता है। जो कोई पुत्र का इनकार करता है, उसके पास पिता नहीं है; जो पुत्र को मानता है, उसके पास पिता भी है। जहाँ तक तुम्हारी बात है, जो तुमने शुरू से सुना है, उसे अपने अंदर बनाए रखो। अगर जो तुमने शुरू से सुना है वह तुम्हारे अंदर बना रहता है, तो तुम भी पुत्र और पिता में बने रहोगे। यही वह वादा है जो उसने खुद हमसे किया है: अनंत जीवन।"

प्यारे संतों, आपने शायद अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अक्सर "आखिरी दिनों" (the last days) के बारे में सुना होगा। मैंने एक बार आज के युवाओं की भाषा की आदतों के बारे में एक लेख में सचमुच निराशाजनक कहानी पढ़ी थी। इसमें एक ऐसी स्थिति का वर्णन था जहाँ एक किशोर, अपने माता-पिता के साथ बातचीत

के दौरान परेशान होकर, तुरंत एक दोस्त को टेक्स्ट मैसेज भेजता है। मैसेज में केवल शुरुआती अक्षर "ㅁㅊ" (m-ch) और "ㅈㄹ" (j-r) थे। क्या आप इन छोटे शुरुआती अक्षरों के पीछे का असली मतलब जानते हैं? शर्म की बात है कि "ㅁㅊ" का मतलब था "पागल!" (*michin*), और "ㅈㄹ" का मतलब था "बकवास!" (*jiral*)। दूसरे शब्दों में, इस किशोर ने उन माता-पिता के लिए बेतहाशा अपशब्दों से भरे टेक्स्ट मैसेज भेजे, जिन्होंने उन्हें जन्म दिया और पाला-पोसा—ऐसी बातें कहते हुए, जैसे "मेरे मम्मी-पापा पागल हैं" या "मम्मी-पापा कमीनों जैसा बर्ताव कर रहे हैं।" इस निराशाजनक सच्चाई का सामना करते हुए—जहाँ माता-पिता और बच्चे के बीच के बुनियादी कर्तव्य और पवित्र रिश्ते टूट चुके हैं—हम बस आह भरकर यही कह सकते हैं, "सचमुच, ये आखिरी दिन हैं!" सिर्फ आम लोग ही नहीं; हम ईसाई भी, जब समय के बुरे चलन को देखते हैं, तो अक्सर कहते हैं, "ये आखिरी दिन हैं।" दुनिया की हालत देखकर—जहाँ नैतिकता खत्म हो गई है और सबसे पवित्र इंसानी प्यार भी ठंडा पड़ रहा है—हमें लगता है कि यीशु के दोबारा आने का समय बहुत करीब है। जब हम ईसाई इस तरह "आखिरी दिनों" की बात करते हैं, तो यह दुनिया की बुराई पर सिर्फ़ अफ़सोस जताने से कहीं ज़्यादा है; इसमें एक गहरा धार्मिक विश्वास शामिल है कि इंसानी इतिहास में यीशु मसीह का शानदार दूसरा आगमन करीब आ रहा है।

प्यारे संतों, क्या आप सच में मानते हैं कि जिस दौर में हम अभी जी रहे हैं, वह "आखिरी दिन" हैं—वह समय जब यीशु का दोबारा आगमन होने वाला है? जब भी मैं सुसमाचारों और पत्रियों में बताए गए आखिरी दिनों के बारे में सोचता हूँ, तो 2 तीमुथियुस 3:1–5 के शब्द—जिन्हें प्रेरित पौलुस ने विश्वास में अपने बेटे तीमुथियुस को आँसू बहाते हुए लिखा था—मेरे दिल पर गहरा असर करते हैं: "पर यह जान लो: आखिरी दिनों में बहुत मुश्किल समय आएगा। लोग खुद से प्यार करने वाले, पैसे के लालची, डींगें मारने वाले, घमंडी, अपशब्द कहने वाले, माता-पिता की बात न मानने वाले, एहसान न मानने वाले, अपवित्र, बिना प्यार के, माफ़ न करने वाले, बुराई करने वाले, बिना संयम के, बेरहम, अच्छाई से नफ़रत करने वाले, धोखेबाज़, जल्दबाज़, अहंकारी, और परमेश्वर के बजाय सुख-विलास से प्यार करने वाले होंगे—वे दिखावा तो भक्ति का करेंगे, लेकिन उसकी शक्ति को नकार देंगे। ऐसे लोगों से दूर रहो।" ये गंभीर शब्द उस बुराई की सच्चाई को उजागर करते हैं जो

आखिरी दिनों में इंसानी दिलों में और पूरे इतिहास में ज़हरीले मशरूम की तरह पनपेगी, और इसमें चरित्र से जुड़े उन्नीस खास संकेतों का ज़िक्र किया गया है। आखिरी दिनों में आध्यात्मिक और नैतिक गिरावट के 19 लक्षण: खुद से प्यार करना / पैसे से प्यार करना / डींगें मारना / घमंड / बुराई करना / माता-पिता की बात न मानना / एहसान न मानना / अपवित्रता / स्वाभाविक प्यार की कमी / माफ़ न करने की भावना / बुराई/बैर-भाव / संयम की कमी / क्रूरता / अच्छाई को नापसंद करना / धोखा देना / जल्दबाजी / अहंकार / परमेश्वर से ज़्यादा सुख-सुविधाओं से प्यार करना / धार्मिकता का दिखावा करना लेकिन उसकी शक्ति को न मानना।

पहले, जब भी मुझे ये उन्नीस लक्षण दिखाई देते थे, तो मैं सिर्फ़ कुछ मुख्य पापों पर ध्यान देता था, जैसे खुद से प्यार करना, पैसे से प्यार करना और माता-पिता की बात न मानना। लेकिन, जब हम ईमानदारी से अपनी मौजूदा सच्चाई का सामना करते हैं और इस हिस्से पर विचार करते हैं, तो हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि ये उन्नीस भयानक लक्षण हमारे समुदायों, हमारे परिवारों और हमारे अपने अंदर बहुत साफ़ तौर पर दिखाई दे रहे हैं।

आज कितने ही ईसाई रविवार को पवित्रता का धार्मिक दिखावा करते हैं, फिर भी हफ़्ते भर बिना किसी शक्ति के जीवन जीते हैं और सुसमाचार की शक्ति को पूरी तरह नकार देते हैं? क्या हमने अपनी पवित्रता खो दी है और संयम की कमी के कारण, शारीरिक संतुष्टि और सुख-सुविधाओं की तलाश में भटक गए हैं? क्या हम परमेश्वर और दूसरों के सामने अहंकार और घमंड से भरे हुए हैं—अपनी डींगें मारते हैं, साथी विश्वासियों के प्रति कोई प्यार नहीं दिखाते, और छोटी-छोटी शिकायतों या नाराज़गी को भी क्रूस के पास सुलझाने से इनकार करके नफ़रत पालते हैं? क्या हम अच्छे मूल्यों को तुच्छ समझते हैं, तुरंत फ़ायदे के लिए भरोसा तोड़ते हैं और जल्दबाजी में काम करते हैं? आध्यात्मिक सुन्नपन और नैतिक गिरावट की यह सच्चाई इस बात का पक्का सबूत है कि हम जिस दौर में जी रहे हैं, वह आखिरी दिनों का गहरा अंधेरा है और प्रभु—हमारे दूल्हे—का दोबारा आना बहुत जल्द होने वाला है।

जब हम पूरी बाइबल में उद्धार के इतिहास के संदर्भ की जाँच करते हैं, तो प्रभु की वापसी की घोषणा करने वाले बड़े-बड़े लक्षण—जो इंसानी दिल की बुराई से कहीं आगे हैं—पाँच मुख्य आध्यात्मिक और उद्धार-इतिहास से जुड़े बदलावों के रूप में दिखाई देते हैं:

1. राज्य का सुसमाचार बिना किसी भेदभाव के सभी देशों और लोगों को सुनाया जाता है (मत्ती 24:14)।
2. यहूदियों की पूरी संख्या—जिनके दिल कभी कठोर हो गए थे—आखिरकार कलीसिया में शामिल हो जाती है, जिससे अन्यजातियों की संख्या पूरी हो जाती है (रोमियों 11:25)। 3. जो लोग कभी सुसमाचार (Gospel) पर विश्वास करते थे और जो चर्च थे, उनमें बड़े पैमाने पर धर्म-त्याग (विश्वास छोड़ना) की घटना होती है; वे प्रलोभन और परमेश्वर के वचन की कमी से पैदा हुई आध्यात्मिक भूख के आगे झुक जाते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 2:3)।
4. "अधर्म का मनुष्य"—यानी एंटीक्राइस्ट (मसीह-विरोधी) की ताकतें—अपनी असली पहचान ज़ाहिर करता है, सच्चाई का विरोध करता है और भारी उथल-पुथल मचाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:3–4)।
5. दुनिया भर में अकाल, भूकंप और युद्ध की अफ़वाहें जारी रहती हैं, जिससे इतिहास की सबसे बड़ी मुसीबत या 'महा-क्लेश' (Great Tribulation) की स्थिति पैदा होती है (मत्ती 24:7–8)।

जब हम इन आध्यात्मिक संकेतों और ब्रह्मांडीय घटनाओं को विश्वास की नज़र से देखते हैं, तो हम बेफिक्र धार्मिक जीवन की नींद से जागने के लिए प्रेरित होते हैं।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:18 में, प्रेरित यूहन्ना गंभीरता से लिखते हैं: "हे बालको, यह अंतिम घड़ी है; और जैसा कि तुमने सुना था कि एंटीक्राइस्ट (मसीह-विरोधी) आने वाला है, अभी भी कई एंटीक्राइस्ट आ चुके हैं; इससे हम जानते हैं कि यह अंतिम घड़ी है।" इन शब्दों के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना अपना पत्र पाने वाले मसीहियों को दो मुख्य आध्यात्मिक सच्चाइयाँ बताते हैं।

पहली बात "आखिरी दिनों" के बारे में की गई घोषणा है।

इस लेख में, प्रेरित बार-बार "आखिरी दिनों" की आध्यात्मिक सच्चाई पर ज़ोर देते हैं—वे कहते हैं, "यह आखिरी घड़ी है," और "इससे हमें पता चलता है कि यह आखिरी घड़ी है।" पहली सदी ईस्वी में जिन विश्वासियों को यह पत्र मिला, और साथ ही हम जो लगभग 2,000 साल बाद जी रहे हैं, हमारे लिए "अंत का समय" या "आखिरी दिन" जैसे शब्दों से कभी-कभी भ्रम हो सकता है कि असल में किस दौर की बात हो रही है। हालाँकि, बाइबल स्पष्ट रूप से आखिरी दिनों की शुरुआत के समय को बताती है। यह गवाही देती है कि यह दौर "पहले आगमन" के साथ ही पूरी तरह शुरू हो गया था—वह पल जब परमेश्वर के एकलौते पुत्र, यीशु मसीह, इस दुनिया में आए—जो शुरू से ही तय की गई उद्धार की योजना के अनुसार था। 1 पतरस 1:20 इसकी पुष्टि करता है: "वह दुनिया की नींव रखे जाने से पहले ही जाने जाते थे, लेकिन आपके लिए इन आखिरी दिनों में प्रकट किए गए।" इसके अलावा, इब्रानियों 1:1–2 पुराने नियम के नबियों के दौर से नए नियम के दौर में हुए उद्धार-संबंधी ऐतिहासिक बदलाव की गवाही देता है, जहाँ परमेश्वर अपने पुत्र के ज़रिए बात करते हैं: "पुराने समय में, परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से नबियों के ज़रिए कई बार और अलग-अलग तरीकों से बात की, लेकिन इन आखिरी दिनों में, उन्होंने हमसे अपने पुत्र के ज़रिए बात की है..." इस सच्चाई का क्या मतलब है? इसका मतलब है कि जहाँ पुराने नियम के दौर में परमेश्वर ने नबियों के ज़रिए उद्धार का संदेश आंशिक रूप से दिया था, वहीं नए नियम के दौर में उन्होंने अपने पुत्र, यीशु मसीह को धरती पर भेजा और उनके ज़रिए उद्धार की अंतिम, पूरी सच्चाई को प्रकट किया।

सचमुच। "आखिरी दिन" यीशु मसीह के पहले आगमन के साथ शानदार ढंग से शुरू हुए, और वे केवल यीशु मसीह के दूसरे आगमन के ज़रिए ही अपने अंतिम अंजाम और पूरा होने तक पहुँचेंगे। दूसरे शब्दों में, बाइबल में बताए गए "आखिरी दिन" उस विशाल "कलीसिया के युग" की ओर इशारा करते हैं, जो यीशु के पहले आगमन से लेकर उनके लौटने के दिन तक फैला हुआ है। प्रेरित यूहन्ना ने बार-बार अपने पाठकों को इन आखिरी दिनों की गंभीर सच्चाई की याद क्यों दिलाई? ऐसा "मसीह-विरोधी" (Antichrist) के लगातार बने रहने वाले स्वभाव के कारण है, जो हमेशा घात लगाए बैठा रहता है और हमारे आध्यात्मिक विश्वास को नष्ट करने की कोशिश करता है। दूसरी बात, सिर्फ़ वही लोग "एंटीक्राइस्ट" (मसीह-विरोधी)—यानी आखिरी दिनों की आध्यात्मिक सच्चाई—को पूरी तरह समझ सकते हैं जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:18 को फिर से देखें। आखिरी दिनों के विषय पर बात शुरू करते हुए, प्रेरित यूहन्ना हमारी आध्यात्मिक समझ को जगाने के लिए एक ज़बरदस्त चेतावनी देते हैं: "हे बच्चों, यह आखिरी घड़ी है; और जैसा कि तुमने सुना था कि एंटीक्राइस्ट आने वाला है, अभी भी कई एंटीक्राइस्ट आ चुके हैं; इससे हम जानते हैं कि यह आखिरी घड़ी है।" प्रेरित यूहन्ना विश्वास रखने वाले उन बच्चों को याद दिलाते हैं जो यह पत्र पढ़ रहे हैं कि वे पहले से ही उस चेतावनी से अच्छी तरह वाकिफ़ थे—उन्होंने पहले ही सुना था—कि एक दिन एंटीक्राइस्ट आएगा। जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) में इसका अनुवाद किया गया है, प्रेरित गंभीरता से बताते हैं कि वे लोग—जिन्हें कभी दूर के, धुंधले भविष्य की बात मानकर नज़रअंदाज़ कर दिया गया था—वे वर्तमान में "हर जगह आ चुके हैं।"

पहली सदी ईस्वी में, जब यूहन्ना यह पत्र लिख रहे थे, तब चर्च समुदाय और उनके प्यारे भाई-बहन पहले से ही कई झूठी रोशनी और एंटीक्राइस्ट की ताकतों से घिरे हुए थे; ये ताकतें ज़ोरों पर थीं और सच्चाई में ज़बरदस्त रुकावट डाल रही थीं। इस खतरनाक आध्यात्मिक स्थिति को देखने के बाद, प्रेरित ने संतों को झूठ से बचाने के लिए यह पत्र भेजा। तो फिर, हम ईसाई—जो ऐसे दौर में जी रहे हैं जहाँ सच्ची रोशनी पहले से ही चमक रही है, फिर भी हम एंटीक्राइस्ट के धोखे के शिकार हो सकते हैं—इस व्यक्ति को कैसे देखें? इस लेख में बताए गए आध्यात्मिक रहस्यों को समझने के लिए, हमें प्रेरित यूहन्ना की घोषणा में पाए जाने वाले तीन मुख्य सवालों और सिद्धांतों पर गहराई से विचार और मनन करना होगा।

(1) एंटीक्राइस्ट का ऐतिहासिक स्वरूप: धोखे का इतिहास जो पहली सदी में शुरू हुआ

हम अक्सर "एंटीक्राइस्ट" के बारे में सिर्फ़ एक डरावने व्यक्ति के तौर पर सोचते हैं जो मानव इतिहास के बिल्कुल आखिर में आएगा—शायद हमारे ही समय में जब यीशु की वापसी करीब होगी, या भविष्य में किसी समय। हालाँकि, बाइबल में बताई गई आध्यात्मिक सच्चाई हमारी धारणाओं से अलग है। पहली सदी में लिखते हुए—जब प्रभु की मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद प्रेरित सक्रिय रूप से सेवा कर रहे थे—प्रेरित यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से कहा, "यह अंतिम घड़ी है... अभी भी कई मसीह-विरोधी आ चुके हैं" (1 यूहन्ना 2:18)।

इस घोषणा से मिलने वाली ज़बरदस्त चेतावनी साफ़ है: मसीह-विरोधी (Antichrist) का धोखा और उससे जुड़ी आध्यात्मिक लड़ाई भविष्य की कोई दूर की घटना नहीं है; वे पहली सदी में शुरुआती कलीसिया के बीच पहले से ही मौजूद एक कठोर सच्चाई थे, जब नया नियम लिखा जा रहा था। हम अंत के समय के उस युद्ध-क्षेत्र में जी रहे हैं जो पहले ही शुरू हो चुका है।

(2) एकवचन और बहुवचन का रहस्य: अंत के समय का स्वरूप और हर जगह झूठे शिक्षक

1 यूहन्ना 2:18 की एक ही आयत में, प्रेरित यूहन्ना "मसीह-विरोधी" (antichrist) शब्द का इस्तेमाल दो बार करते हैं। एक दिलचस्प बात यह है कि इस शब्द के इस्तेमाल में साफ़ फ़र्क है: पहले एकवचन में (मसीह-विरोधी) और फिर बहुवचन में (मसीह-विरोधी)।
जैसा कि पादरी जॉन मैकआर्थर की बेहतरीन व्याख्या बताती है, एकवचन और बहुवचन के बीच का यह फ़र्क मुक्ति-इतिहास के नज़रिए से बहुत गहरा महत्व रखता है।

मसीह-विरोधी (एकवचन): जब प्रेरित ने शुरू में एकवचन रूप का इस्तेमाल किया, तो उनके मन में एक खास व्यक्ति था—जिसकी भविष्यवाणी धर्मग्रंथ में की गई थी—जो अंत के समय में कलीसिया के ख़िलाफ़ खड़ा होगा।

मसीह-विरोधी (बहुवचन): इसके विपरीत, दूसरी बार—बहुवचन का इस्तेमाल करते हुए—उन बहुत-सी झूठी ताकतों और लोगों की ओर इशारा किया गया है, जिन्होंने प्रेरित यूहन्ना के समय से ही कलीसिया को परेशान किया है और चालाकी से संतों को धोखा दिया है। दूसरे शब्दों में, बहुवचन "मसीह-विरोधी" में वे गलत शिक्षा देने वाले विचारक शामिल हैं जिन्होंने शुरुआती कलीसिया को अंदर तक हिला दिया था, साथ ही वे "झूठे शिक्षक" और "धोखेबाज़" भी शामिल हैं जो—आज भी—सच्चाई को तोड़-मरोड़कर पेश करते हैं और भेड़ का भेस धरकर झुंड का शिकार करते हैं।

(3) मसीह-विरोधी की पहचान: सच्चाई का विरोध करने वालों का असली स्वरूप

तो फिर, मसीह-विरोधी और उसके साथियों की असल पहचान क्या है, जिनके ख़िलाफ़ प्रेरित यूहन्ना 1 यूहन्ना 2:18 में इतनी कड़ी चेतावनी देते हैं? 1 यूहन्ना 2:18–25 के संदर्भ में, प्रेरित इन बुरी ताकतों—जो कलीसिया को अस्थिर करने की कोशिश कर रही थीं—के असली रूप को दो खास बातों के ज़रिए उजागर करते हैं। (a) प्रेरित यूहन्ना के अनुसार, मसीह-विरोधी (Antichrist) और उनके मानने वालों की पहली मुख्य विशेषता है "झूठा जुड़ाव और विश्वास का त्याग।" आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:19 पर गौर करें: "वे हमारे बीच से तो चले गए, लेकिन वे हमारे नहीं थे; क्योंकि अगर वे हमारे होते, तो वे हमारे साथ ही रहते; लेकिन उनके चले जाने से यह साबित हो गया कि उनमें से कोई भी हमारा नहीं था।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल* में इसका अनुवाद है: "वे हमारे बीच से चले गए क्योंकि वे हमारे नहीं थे। अगर वे हमारे होते, तो वे हमारे साथ ही रहते।"

यूहन्ना जिन मसीह-विरोधियों का पर्दाफ़ाश करते हैं, उनके बारे में चौंकाने वाली सच्चाई यह है कि वे बाहरी लोग नहीं थे—यानी ऐसे गैर-यहूदी जो हमेशा से कलीसिया से बाहर रहे हों। वे ऐसे लोग थे जिन्होंने कभी प्रेरित यूहन्ना और उनके पत्र को पाने वालों के साथ मिलकर आराधना की थी और यीशु मसीह पर विश्वास का दिखावा किया था। लेकिन आखिरकार, उन्होंने पाखंड का नकाब उतार दिया, यीशु मसीह पर विश्वास करना छोड़ दिया और सच्चाई की संगति को पूरी तरह से त्याग दिया। विश्वास से मुकरने वाले इन लोगों के बारे में प्रेरित दृढ़ता से कहते हैं कि वे "हमारे नहीं थे," क्योंकि वे कभी भी क्रूस के कीमती लहू से सचमुच नए सिरे से पैदा नहीं हुए थे और न ही कभी यीशु मसीह से जुड़े थे।

जब मैंने उनके चले जाने से जुड़े इस वचन पर गहराई से मनन किया, तो मुझे पुराने नियम में "झूठे नबियों" के घिनौने व्यवहार की याद आई। परमेश्वर ने कभी भी इन झूठे नबियों को अपना सेवक नहीं बुलाया या भेजा था। फिर भी, वे बिना किसी हिचकिचाहट के झूठ बोलते थे और परमेश्वर के नाम पर बोलने का झूठा दावा करके लोगों को धोखा देते थे (यिर्मयाह 14:14; 28:15)। इससे मुझे हमारे विश्वास के चिरस्थायी दुश्मन, शैतान की उत्पत्ति की भी याद आई। पारंपरिक रिफॉर्म्ड धर्मशास्त्र के अनुसार, शैतान मूल रूप से परमेश्वर द्वारा खूबसूरती से बनाए गए स्वर्गदूतों में से एक था। लेकिन, आध्यात्मिक अहंकार के कारण—जिसने उसे सर्वोपरि

परमेश्वर का मुकाबला करने के लिए उकसाया—उसने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह का पाप किया; आखिरकार, वह गिर गया और शैतान बन गया। यशायाह 14:12, जो स्वर्गदूतों के पतन के सिद्धांत का एक अहम बाइबिल आधार है, उसमें मसीह के बारे में एक भविष्यवाणी है: "हे भोर के तारे, सुबह के बेटे, तू स्वर्ग से कैसे गिर गया!" इस "भोर के तारे" (या "सुबह के तारे") के लिए लैटिन शब्द वही नाम है जिसे हम आम तौर पर "लूसीफर" के रूप में जानते हैं। शैतान—जिसे उसके घमंड के कारण धरती पर गिरा दिया गया था—और वे झूठे भविष्यद्वक्ता जिन्होंने परमेश्वर के नाम का गलत इस्तेमाल किया, उनमें क्या समानता है? असल बात यह है कि वे न तो परमेश्वर के थे और न ही उनके, जिन्हें परमेश्वर ने भेजा था।

आज के वचन में बताए गए मसीह-विरोधी (एंटीक्राइस्ट) लोगों का समूह शैतान के इसी तरीके का पालन करता है। बाहर से, वे कलीसियाई समुदाय में भाई-बहन जैसे लगते थे, लेकिन असल में, वे शैतान की संतान थे जो न तो परमेश्वर—सच्ची ज्योति—के थे और न ही पवित्र लोगों के। आखिरकार, घटनाओं का वह क्रम जिसमें उन्होंने कलीसिया छोड़ दी और विश्वास छोड़ने (धर्मत्याग) का रास्ता अपनाया, एक आध्यात्मिक अनिवार्यता थी; ऐसा करके, उन्होंने पूरी दुनिया को दिखा दिया कि उनमें सुसमाचार की सच्चाई नहीं थी।

(b) प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताए गए मसीह-विरोधियों और उनके अनुयायियों की दूसरी मुख्य विशेषता एक ऐसी झूठी मसीही शिक्षा है जो यीशु मसीह के सच्चे स्वरूप को नकारती है। आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:22 पर गौर करें: "झूठा कौन है? वह व्यक्ति जो इस बात से इनकार करता है कि यीशु ही मसीह है। ऐसा व्यक्ति मसीह-विरोधी है—वह जो पिता और पुत्र दोनों को नकारता है।" बाइबिल स्पष्ट रूप से मसीह-विरोधी को ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित करती है जो परमेश्वर पिता और पुत्र, यीशु की शानदार दिव्यता और उनके मिलन को पूरी तरह से नकारता है। वचन 23 आगे कहता है, "जो कोई पुत्र को नकारता है, उसके पास पिता नहीं है।" यह सुसमाचार की पक्की सच्चाई को दिखाता है; क्योंकि जो लोग यीशु—पुत्र और इकलौते जन्मे—को नकारते हैं, उनका परमेश्वर पिता के साथ कोई रिश्ता नहीं हो सकता, जिन्होंने उन्हें भेजा था। इस प्रकार, यह वचन उन जिद्दी लोगों को, जो इस बात से इनकार करते हैं कि यीशु ही मसीह है, "झूठा" और "मसीह-विरोधी" दोनों करार देता है।

1 यूहन्ना 4:3 में, प्रेरित यूहन्ना अंधकार की इस शक्ति के खिलाफ एक चेतावनी देते हैं: "हर वह आत्मा जो यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। यह मसीह-विरोधी (एंटीक्राइस्ट) की आत्मा है, जिसके बारे में तुमने सुना है कि वह आने वाली है और अब भी दुनिया में मौजूद है।" मसीह-विरोधी की आत्मा शैतान की आत्मा है—जो निश्चित रूप से परमेश्वर की नहीं है—और इसकी मुख्य पहचान यह है कि यह यीशु को उद्धार का एकमात्र मार्ग मानने से इनकार करती है। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि मसीह-विरोधी की यह आत्मा पहली सदी ईस्वी में—जब प्रेरित यूहन्ना ने अपना पत्र लिखा था—दुनिया में *पहले से ही* मौजूद और सक्रिय थी। इसके अलावा, धोखे की वह आत्मा हमारे अपने युग में, दो हज़ार साल बाद भी जीवित है और ज़ोर-शोर से काम कर रही है। दूसरे शब्दों में, मसीह-विरोधी की आत्मा एक ऐसा विरोधी है जो 'अंतिम दिनों' की पूरी अवधि के दौरान—यीशु मसीह के पहले आगमन से लेकर उनके दूसरे आगमन के दिन तक—चर्च को कमज़ोर करने के लिए गुप्त रूप से और लगातार काम करती है।

प्रेरित यूहन्ना न केवल 1 यूहन्ना में बल्कि 2 यूहन्ना 1:7 में भी इस मसीह-विरोधी की शिक्षा-संबंधी प्रकृति का स्पष्ट रूप से वर्णन करते हैं: "बहुत से धोखेबाज़, जो यह नहीं मानते कि यीशु मसीह शरीर में आए, दुनिया में निकल गए हैं। ऐसा कोई भी व्यक्ति धोखेबाज़ और मसीह-विरोधी है।" प्रेरित द्वारा पहचाने गए इस "धोखेबाज़"—यानी मसीह-विरोधी—का मुख्य झूठ यह है कि यीशु मसीह शरीर में आए थे, इस बात से इनकार करना। शैतान द्वारा इस्तेमाल किए गए धोखे का सार उन 'ग्नोस्टिक' (Gnostic) विचारधाराओं में निहित है जो उस शानदार 'अवतार' (Incarnation)—यानी इस सच्चाई कि परमेश्वर इंसानी शरीर धारण करके इस धरती पर आए—को नकारती हैं और प्रभु की सच्ची मानवीयता को कमतर बताती हैं। अंततः, मसीह-विरोधी की ताकतें—चाहे प्रभु के देवत्व को नकारकर या उनकी मानवीयता को नकारकर—यीशु मसीह के ज़रिए मिलने वाले पूर्ण उद्धार की शिक्षा को पूरी तरह से खत्म करने की कोशिश करती हैं। जो विश्वासी सच्ची ज्योति के प्रकाश में जीते हैं, उन्हें झूठ की इन आत्माओं का—जो केवल होंठों से ई-भक्ति का दिखावा करती हैं—सामना करना चाहिए और उन्हें हराना चाहिए; इसके लिए उन्हें परमेश्वर के वचन पर आधारित गहरी समझ का इस्तेमाल करना होगा।

प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताए गए इन तीन बाइबिल-संबंधी वचनों को मिलाकर और उन पर मनन करके, हम मसीह-विरोधी के सार को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं। बाइबल के अनुसार, एंटीक्राइस्ट (मसीह-विरोधी) सबसे बड़ा धोखेबाज़ और बहकाने वाला है, जो परमेश्वर और संतों, दोनों को गुमराह करता है। वे उद्धारकर्ता के नाम को मानने से इनकार करते हैं और साफ तौर पर इस बात से मुकर जाते हैं कि नासरत का यीशु ही हमेशा से चुना हुआ "मसीह" है। इसके अलावा, वे "अवतार" (Incarnation) की उस अद्भुत घटना को भी पूरी तरह नकारते हैं—जिसमें परमेश्वर का महिमामय पुत्र इंसानी रूप में धरती पर आया था—और आखिर में वे परमेश्वर पिता को भी नकार देते हैं, जिन्होंने अपने एकलौते पुत्र को भेजा था। इन अंधेरी ताकतों को एक ही बात में कहें तो: एंटीक्राइस्ट कोई और नहीं, बल्कि वही है जो परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह को पूरी तरह नकारता है। एंटीक्राइस्ट और उसके मानने वालों के लिए—जो उद्धार के एकमात्र रास्ते, पुत्र यीशु को पूरी तरह ठुकराते हैं—सिवाय भयानक आध्यात्मिक बर्बादी के और कुछ नहीं है; जैसा कि ईश्वरीय न्याय की घोषणा कहती है, वे अपने सृष्टिकर्ता, परमेश्वर पिता से अलग हो जाते हैं (1 यूहन्ना 2:23)।

इस प्रकार, 1 यूहन्ना 2:18 के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना ने "आखिरी घड़ी" की आध्यात्मिक सच्चाई—यानी अंत के समय के तनाव—और "एंटीक्राइस्ट" के नाम से जाने जाने वाले विरोधी की पहचान के बारे में गंभीरता से बताया। और अब, इस ज़बरदस्त आध्यात्मिक लड़ाई के बीच, प्रेरित चार ऐसे अहम आध्यात्मिक सिद्धांतों को ज़ोरदार ढंग से पेश करते हैं जो हमें इन आखिरी दिनों में जीत हासिल करने में मदद करेंगे—ये सिद्धांत विश्वास रखने वाले उन प्यारे बच्चों के लिए हैं जो यह पत्र पढ़ रहे हैं।

पहला, सच्चे ईसाइयों को पवित्र जन (परमेश्वर) से पवित्र आत्मा का अभिषेक मिला है, जिससे वे हर सच्चाई को पहचान और जान सकते हैं।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:20 को देखें। प्रेरित यूहन्ना धोखे के इस दौर में रहने वाले संतों की पहचान के बारे में एक गहरी बात कहते हैं: "तुम्हें पवित्र जन से अभिषेक मिला है, और तुम सब कुछ जानते हो।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* में इसका अनुवाद है: "तुम्हें पवित्र जन से पवित्र आत्मा मिला है और तुम ये सभी बातें जानते हो।" इस गंभीर घोषणा को सुनकर, हम एक बुनियादी सवाल पूछने पर मजबूर हो जाते हैं:

"परमेश्वर की नज़र में एक ईसाई की असली पहचान क्या है, और इस बात का सबसे पक्का सबूत क्या है कि हम प्रभु के हैं?" 20वीं सदी के महान आध्यात्मिक व्यक्ति फ्रांसिस शेफ़र ने अपनी किताब *द मार्क ऑफ़ द क्रिश्चियन* में ज़ोर देकर कहा कि दुनिया हमें प्रभु के चेले के तौर पर तभी पहचानती है जब हम "एक-दूसरे से दिल से प्यार करते हैं।" दूसरे शब्दों में, इस बात का सबसे साफ़ सबूत कि हम परमेश्वर की संतान हैं, सिर्फ़ ज़ुबानी इकरार नहीं, बल्कि काम से भरा जीवन है—यानी प्रभु की आज्ञाओं को मानते हुए पूरे दिल, ताकत, दिमाग और आत्मा से परमेश्वर से प्यार करना और अपने पड़ोसियों से वैसे ही प्यार करना जैसे हम खुद से करते हैं।

बाइबल सिखाती है कि जब विश्वास करने वाले एक-दूसरे से प्यार करते हैं, तो वे न सिर्फ़ पूरी दुनिया को यह दिखाते हैं कि वे यीशु मसीह के लोग हैं, बल्कि इस बात का सबसे पक्का सबूत भी देते हैं कि परमेश्वर पिता ने परमेश्वर पुत्र, यीशु मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में इस धरती पर भेजा। क्रूस का सामना करते हुए, यीशु ने अपनी महायाजक वाली प्रार्थना की, जो यूहन्ना 17:21 में लिखी है: "हे पिता, जैसे तू मुझमें है और मैं तुझमें हूँ, वैसे ही वे भी हममें एक हों, ताकि दुनिया विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा है।" इस शानदार प्रार्थना का गहरा आध्यात्मिक महत्व साफ़ है: जब पवित्र आत्मा से अभिषेक पाए हुए संत मसीह के सुसमाचार में पूरी तरह एक हो जाएँगे और पवित्र एकता हासिल करेंगे, तभी अंधेरे में फंसी दुनिया यह सच मानेगी और स्वीकार करेगी कि परमेश्वर ने यीशु मसीह को पूरी इंसानियत के उद्धारकर्ता के रूप में भेजा है। पवित्र आत्मा का अभिषेक हमारी आध्यात्मिक आँखें खोलता है, जिससे हम इस एकता और प्यार की असली कीमत पहचान पाते हैं।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:20 में, प्रेरित यूहन्ना एक सच्चे मसीही की खासियत बताते हैं, जो एंटीक्राइस्ट (मसीह-विरोधी) से बिल्कुल अलग है। वह एक सच्चे मसीही की अनोखी, कभी न मिटने वाली आध्यात्मिक पहचान बताते हैं—ऐसा व्यक्ति जो दुनिया के झूठ से डगमगाता नहीं है: "तुम्हारे पास पवित्र जन की ओर से अभिषेक है, और तुम सब कुछ जानते हो।" जैसा कि *कंटेंपररी कोरियन वर्ज़न* में इसका अनुवाद है: "तुम्हें पवित्र जन से पवित्र आत्मा मिला है और तुम ये सब बातें जानते हो।" दूसरे शब्दों में, एक सच्चे संत—जिसे परमेश्वर ने मान्यता दी है—की पहचान यह है कि उन्हें पवित्र परमेश्वर से पवित्र आत्मा मिला है और वे "इन सब बातों" के बारे में पूरी जानकारी और समझ रखते हैं। इस समय, प्रेरित पौलुस के रोमियों 5:5 में कहे गए

अनुग्रह के गहरे शब्द याद आते हैं: "और आशा हमें निराश नहीं करती, क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हमें दिया गया है, परमेश्वर का प्रेम हमारे दिलों में उंडेला गया है।" उस शानदार पल में, जब परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह से हमने यीशु मसीह पर उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास किया और हमारा नया जन्म हुआ, तो परमेश्वर ने न केवल हमें पवित्र आत्मा—सत्य का आत्मा—मुफ़्त में दिया, बल्कि हमारे टूटे हुए दिलों में अपने असीम, क्रूस-केंद्रित प्रेम को एक तेज़ झरने की तरह उंडेल दिया। इस प्रकार, सच्चे मसीही शानदार मंदिर हैं जिन्होंने पवित्र आत्मा को प्राप्त किया है और अब उनमें पवित्र आत्मा का वास है।

तो फिर, "इन सब बातों" की सच्ची उद्धार-संबंधी ऐतिहासिक सच्चाई क्या है, जिनके बारे में प्रेरित यूहन्ना कहते हैं कि सच्चे मसीही—जिन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया है—उन्हें "पहले से ही जानते हैं"? हम इस अंश के संदर्भ में, विशेष रूप से आयत 18 और 19 में, इसका उत्तर स्पष्ट रूप से पा सकते हैं।

पहला, उन्हें इस बात का स्पष्ट अंत-समय संबंधी ज्ञान है कि "यह अंतिम घड़ी है" (आयत 18)।

दूसरा, उन्हें आध्यात्मिक युद्ध के मोर्चे की गहरी समझ है, और वे पहचानते हैं कि "बहुत से मसीह-विरोधी (antichrists) उठ खड़े हुए हैं और पवित्र लोगों को धोखा दे रहे हैं" (आयत 18)।

तीसरा, वे सही ढंग से समझते हैं कि इन अंधेरे, अंतिम दिनों में दिखाई देने वाले बहुत से मसीह-विरोधी असल में यीशु मसीह के नहीं हैं, और न ही वे कभी सच्चे पवित्र लोगों के समुदाय का हिस्सा थे (आयत 19)।

इसके अलावा, जब हम 1 यूहन्ना 2:1–17 में पाए जाने वाले सुसमाचार के व्यापक संदर्भ में इस ज्ञान की गहराई पर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि सच्चे पवित्र लोग—जिन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया है—वे लोग हैं जो अपने जीवन के माध्यम से धर्मी यीशु मसीह को स्पष्ट रूप से जानते हैं और अनुभव करते हैं: वह पवित्र वकील जो स्वर्गीय अदालत में हमारा पक्ष रखता है और वह परिपूर्ण प्रायश्चित बलिदान जिसने हमारे सभी पापों का बोझ उठाया (आयत 1–2)। जबकि दुनिया मानवीय बुद्धि से सुसमाचार के रहस्य को नहीं समझ सकती, जो लोग पवित्र आत्मा से अभिषेक किए गए हैं, वे अपनी आत्मा में क्रूस के इस महान रहस्य को पहले से ही स्पष्ट रूप से जानते हैं और विजेताओं के रूप में जीते हैं। सच्चे ईसाई, जिन्हें उस पवित्र व्यक्ति

से पवित्र आत्मा का अभिषेक मिला है और जो सचमुच यीशु मसीह को जानते हैं, वे केवल अमूर्त विचारों को ही नहीं मानते, बल्कि प्रभु की आज्ञाओं का ईमानदारी से पालन और अभ्यास भी करते हैं (पद 3–5)। अपने सामने मौजूद भाइयों से पूरे दिल से प्रेम करके, वे अपने जीवन और आत्मा में परमेश्वर के परिपूर्ण प्रेम को खूबसूरती से पूरा होते देखने का आनंद लेते हैं (पद 5, 10)।

इसके अलावा, सच्चे विश्वासी सुसमाचार के प्रकाश में परमेश्वर पिता को स्पष्ट रूप से जानते हैं; क्योंकि परमेश्वर का जीवित और शक्तिशाली वचन उनमें पूरी तरह से बसा हुआ है, इसलिए वे दुष्ट, यानी शैतान के सभी धोखों पर विजय पाने में सक्षम होते हैं (पद 13–14)। नतीजतन, वे न तो इस सीमित, पापपूर्ण संसार या उससे जुड़ी नाशवान चीजों का लालच करते हैं और न ही उनसे प्रेम करते हैं (पद 15)। वे बस चुपचाप परमेश्वर की भली इच्छा को पूरा करते हुए आगे बढ़ते रहते हैं, जो हमेशा बनी रहती है (पद 17)। संक्षेप में कहें तो, "वे सभी बातें" जिन्हें सच्चे ईसाई—जैसा कि आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:20 में बताया गया है—पवित्र आत्मा के माध्यम से जानते हैं, वे उद्धार के पूर्ण सत्य के अलावा और कुछ नहीं हैं; स्वयं भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा उन्हें यह सिखाती है और समझने में सक्षम बनाती है (पद 27)। 1 यूहन्ना 2:27a का *समकालीन कोरियाई संस्करण* (Hyeondaein-ui Seonggyeong) पवित्र आत्मा के भीतर वास करने की इस रहस्यमय सेवा की गवाही इस प्रकार देता है: "क्योंकि मसीह द्वारा आप पर पवित्र आत्मा उंडेला गया है, इसलिए आपको किसी से कुछ भी सीखने की आवश्यकता नहीं है। पवित्र आत्मा ही आपको सब कुछ सिखाता है..."

तो फिर, उन "सभी बातों" का सार क्या है जो परमेश्वर पवित्र आत्मा हमें हर पल सिखाते हैं, जब हम अंत के समय की उथल-पुथल भरी लहरों से गुज़र रहे होते हैं? जब हम यूहन्ना 14:26 पर ध्यान देते हैं—जिसे उसी लेखक, प्रेरित यूहन्ना ने लिखा है—तो हमें बहुत स्पष्ट रूप से पवित्र उत्तर मिलता है: "लेकिन सहायक, पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से भेजेंगे, वह तुम्हें सब कुछ सिखाएगा, और उन सभी बातों को तुम्हें याद दिलाएगा जो मैंने तुमसे कही थीं।" इस शानदार वादे का अर्थ स्पष्ट है। पवित्र आत्मा—सच्चाई के सहायक—द्वारा संतों को दिए जाने वाले सभी ज्ञान का आधार सांसारिक विद्वत्ता या नई रहस्यमयी थ्योरी नहीं है। बल्कि, यह जीवन के वे शब्द हैं जो पुत्र, यीशु मसीह ने पृथ्वी पर रहते हुए अपने शिष्यों से व्यक्तिगत रूप से कहे थे, और क्रूस और पुनरुत्थान के माध्यम से पूरी हुई सुसमाचार की संपूर्ण सच्चाई है। पवित्र आत्मा लगातार हमारे रास्ते को

रोशन करते हैं, जिससे हम संकट के समय में प्रभु के शब्दों को याद कर पाते हैं और उन शब्दों के अनुसार अपने भाइयों से प्रेम करने और दुनिया पर विजय पाने की शक्ति पाते हैं। नतीजतन, अभिषेक प्राप्त संत एंटीक्राइस्ट (मसीह-विरोधी) की चालाक झूठी शिक्षाओं और धोखे से विचलित नहीं होते; मसीह के शब्दों पर दृढ़ रहकर, वे अंततः अंतिम विजय प्राप्त करते हैं।

परमेश्वर पवित्र आत्मा, जो हमारे भीतर वास करते हैं, हमें मसीह के बारे में सब कुछ सिखाते हैं, और विशेष रूप से जीवन के उन शब्दों को याद दिलाते हैं जो यीशु ने पृथ्वी पर कहे थे। प्रभु के नाम में मेरी यही हार्दिक प्रार्थना है कि आप और मैं पवित्र आत्मा (सच्चाई के सहायक) द्वारा सिखाए गए यीशु के सभी शब्दों को दिन-प्रतिदिन विनम्रता से सीखें और उनके प्रति पूरी आज्ञाकारिता में जिएं।

दूसरा, सच्चे ईसाई वे हैं जो सुसमाचार की अटूट "सच्चाई" को स्पष्ट रूप से जानते हैं और उसे अपनाए हुए हैं। आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:21 को देखें। प्रेरित यूहन्ना उन संतों से यह घोषणा करते हैं जो अंत के समय में जी रहे हैं—एक ऐसा समय जो धोखा देने वाली आत्माओं से भरा है: "मैं तुम्हें इसलिए नहीं लिख रहा हूँ कि तुम सच्चाई को नहीं जानते, बल्कि इसलिए कि तुम उसे जानते हो, और इसलिए कि सच्चाई से कोई झूठ नहीं निकलता।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* में इसका अनुवाद किया गया है: "मैं आपको यह इसलिए नहीं लिख रहा हूँ कि आप सच्चाई से अनजान हैं, बल्कि इसलिए कि आप सच्चाई को जानते हैं और समझते हैं कि झूठ सच्चाई से नहीं निकलता।" प्रेरित संतों को आध्यात्मिक रूप से अज्ञानी नहीं मानते; जिन्हें पवित्र आत्मा का अभिषेक मिला है, वे पहले से ही जानते हैं कि सच्चाई क्या है। यहाँ, हमें एक सच्चे ईसाई की दूसरी शानदार पहचान मिलती है—जो इस बात का सबसे पक्का सबूत है कि हम मसीह की संतान हैं। वह पहचान यह है कि संत के पास स्वर्गीय "सच्चाई" होती है।

व्यक्तिगत रूप से, जब भी मैं सुसमाचार द्वारा बताई गई इस महान "सच्चाई" पर मनन करता हूँ, तो यूहन्ना के सुसमाचार से दो अनमोल वचन—जिन्हें उसी लेखक, प्रेरित यूहन्ना ने लिखा था—गहराई से मेरे मन में आते हैं। एक है यूहन्ना 8:32: "तुम सच्चाई को जानोगे, और सच्चाई तुम्हें आज़ाद करेगी।" दूसरा है यूहन्ना 14:6, जहाँ यीशु गंभीरता से कहते हैं: "मार्ग, सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ..." जब हम इन दोनों वचनों को एक-दूसरे के संदर्भ में देखते हैं, तो सुसमाचार द्वारा बताई गई सच्चाई का असली स्वरूप स्पष्ट हो जाता है: यीशु

मसीह, जो पुत्र हैं, स्वयं ही एकमात्र परम सत्य हैं। इसलिए, जो विश्वासी यीशु को—जो स्वयं सच्चाई हैं—गहराई से और व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, वे उस सच्ची स्वर्गीय आज़ादी का भरपूर आनंद लेते हैं जो प्रभु क्रूस पर अपने प्रायश्चित के बलिदान के द्वारा देते हैं, और उन्हें पाप, मृत्यु और दंड के बंधनों से मुक्त करते हैं।

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में विस्तार से देखा है, प्रेरित यूहन्ना ने अपने पत्रों में प्रकाश और अंधकार के बीच जो मुख्य अंतर बताए हैं, उनमें से एक आध्यात्मिक सिद्धांत यह है कि "सच्चाई पवित्र प्रकाश है, जबकि झूठ गंदा अंधकार है।" जब हम सच्चाई के इस नज़रिए से 1 यूहन्ना 1:5 में बताई गई मूल बात को देखते हैं—कि "परमेश्वर प्रकाश है; उसमें ज़रा भी अंधकार नहीं है"—तो हम एक गहरे धार्मिक निष्कर्ष पर पहुँचते हैं: त्रिएक परमेश्वर, जिन पर हम विश्वास करते हैं, वे स्वयं पूर्ण सत्य हैं, और परमेश्वर पिता—जो स्वयं सत्य हैं—में झूठ का ज़रा सा भी अंश (एक प्रतिशत भी नहीं) नहीं हो सकता, क्योंकि झूठ ही अंधकार का सार और शैतान का धोखा है। जो विश्वासी सच्चाई को अपनाते हैं, वे उस सच्चे परमेश्वर के साथ खड़े होते हैं, जिनमें कोई झूठ नहीं है। इसलिए, परमेश्वर की नई संतान के तौर पर, जो उनके साथ पवित्र संगति का आनंद लेते हैं—जो कि पूर्ण सत्य हैं (पद 6)—हमें ज्योति में चलना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ज्योति में हैं (पद 7)।

ज्योति में चलने का अर्थ है केवल बौद्धिक रूप से सिद्धांतों को जानने से कहीं आगे बढ़ना; इसका मतलब है अपने दैनिक जीवन में "सत्य का पालन करना" (पद 6)। दूसरे शब्दों में, एक सच्चा मसीही—जिसे परमेश्वर अपना मानते हैं—वह नहीं है जो केवल सत्य को सही ढंग से समझता है, बल्कि वह है जो अपने जीने के तरीके से उस सत्य को दिखाता भी है। 3 यूहन्ना 1:4 में, प्रेरित यूहन्ना ने उस सबसे बड़ी आत्मिक खुशी को स्वीकार किया जो एक पास्टर महसूस कर सकता है: "मुझे इससे बड़ी खुशी और कोई नहीं होती कि मैं सुनूँ कि मेरे बच्चे सत्य में चल रहे हैं।" इस तरह सत्य के अनुसार जीने का रहस्य इस बात में छिपा है कि सुसमाचार का सत्य पहले से ही हमारे दिलों में जीवित है और बसा हुआ है (1 यूहन्ना 1:8)। इसके विपरीत, शैतान—हमारा विरोधी—के पास कोई सत्य नहीं है; वह कभी भी सत्य में नहीं टिक सकता और केवल विनाशकारी

झूठ का सहारा लेता है (यूहन्ना 8:44)। हालाँकि, यदि परमेश्वर का सत्य पूरी तरह से हमारे भीतर बसा है, तो हम कभी भी गुप्त अंधकार में नहीं चलेंगे और न ही पाखंडपूर्ण झूठ दोहराएँगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि सच्चे विश्वासी—जो सत्य को जानते हैं और उसका पालन करते हैं—पवित्र आत्मा की ज्योति के माध्यम से उस आत्मिक सच्चाई को स्पष्ट रूप से समझते हैं कि "सत्य से कोई झूठ नहीं निकलता" (1 यूहन्ना 2:21)।

जब प्रेरित यूहन्ना ने अपने पत्र को पाने वालों से कहा, "तुम पहले से ही सत्य को जानते हो," तो वे केवल धार्मिक ज्ञान रखने के लिए उनकी प्रशंसा नहीं कर रहे थे; वे इस बात की पुष्टि कर रहे थे कि वे आज्ञाकारिता का जीवन जी रहे थे और प्रभु की पवित्र आज्ञाओं का पालन कर रहे थे। 1 यूहन्ना 2:4 में दी गई गंभीर चेतावनी पर विचार करें: "जो कोई कहता है, 'मैं उसे जानता हूँ,' लेकिन उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता, वह झूठा है, और सत्य उसमें नहीं है।" इस पद के विपरीत अर्थ पर गहराई से विचार करने से पता चलता है कि यीशु मसीह के सच्चे चेले—जिनमें सत्य जीवित और सक्रिय है—प्रभु की आज्ञाओं को महत्व देते हैं और प्रतिदिन उनका पालन करते हैं; इस प्रकार, वे कभी भी ऐसे झूठे व्यक्ति का जीवन नहीं जीते जिनके शब्द और कार्य एक-दूसरे के विपरीत हों। इसके अलावा, जो लोग प्रभु के वचन का पूरी तरह से पालन करते हैं, उनमें परमेश्वर का प्रेम वास्तव में पूर्णता तक पहुँचता है। और इस पवित्र आज्ञाकारिता के फल से, विश्वास करने वाला व्यक्ति अपने रोज़मर्रा के जीवन में उद्धार के शानदार भरोसे को पूरी तरह से पक्का करता है और उसका आनंद लेता है; वह जानता है कि वह मज़बूती से परमेश्वर से जुड़ा हुआ है और उन्हीं में जी रहा है और सांस ले रहा है (पद 5)।

पवित्र आत्मा, जो हमारा सलाहकार है, न केवल हमें मसीह के बारे में सब कुछ सिखाता है और प्रभु के कहे जीवन के वचनों को याद दिलाता है, बल्कि सच्चाई की आत्मा के रूप में, वह आज हमें—जो कमज़ोर हैं—पूरी सच्चाई की ओर ले जाता है। "लेकिन जब वह, यानी सच्चाई की आत्मा आएगी, तो वह तुम्हें पूरी सच्चाई की ओर ले जाएगी। वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगी; वह वही कहेगी जो वह सुनेगी, और वह तुम्हें बताएगी कि आगे क्या होने वाला है" (यूहन्ना 16:13)। हमें हर पल इस वफादार पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलते हुए पूरी सच्चाई को अपनाना चाहिए। जब हम प्रभु से मुफ्त में मिले सुसमाचार के नियम के अनुसार अपने रोज़मर्रा के जीवन में चुपचाप सच्चाई का पालन करते हैं, तो हमारे प्रभु—हमारे अगुआ—आज्ञाकारिता के उन कदमों को देखते हैं और अपार खुशी से भर जाते हैं (देखें 2 यूहन्ना 1:4)।

तीसरी बात, एक सच्चा ईसाई शुरू से सुने गए जीवन के सुसमाचार को नहीं भूलता, बल्कि उसे अपनी आत्मा के केंद्र में पूरी तरह से बसने देता है।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:24 को देखें। प्रेरित यूहन्ना झूठे मसीह-विरोधियों के धोखे से बचने का सबसे बुनियादी और शक्तिशाली आध्यात्मिक उपाय बताते हैं: "जो तुमने शुरू से सुना है, उसे अपने अंदर बनाए रखो। अगर जो तुमने शुरू से सुना है वह तुम्हारे अंदर बना रहता है, तो तुम भी पुत्र और पिता में बने रहोगे।" जैसा कि *समकालीन कोरियाई संस्करण* इसका अनुवाद करता है: "पक्का करो कि तुम कभी न भूलो जो तुमने शुरू से सुना है। तब तुम भी पुत्र और परमेश्वर पिता में भरपूर जीवन का आनंद लेते हुए जीओगे।" इस महान सलाह को सुनकर, हमारे मन में एक बहुत व्यावहारिक और ज़रूरी सवाल उठता है। सवाल यह है: "परमेश्वर के जीवन देने वाले वचन को—जिसे हमने सुना है—पूरी तरह से अपनी आध्यात्मिक संपत्ति बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए, और कैसे?"

जब मैंने भजन संहिता की पूरी किताब पर गहराई से मनन किया और उसकी व्याख्या की, तो मैंने हमेशा अपने दिल में अनुग्रह के एक खास वचन को संजोकर रखा है—एक ऐसा वचन जो मेरी आत्मा पर एक अमिट, गहरी छाप की तरह अंकित है। भजन संहिता 119:56 में दाऊद का यह कबूलनामा मिलता है: "मेरी यही आदत रही है: मैंने तेरे नियमों का पालन किया है।" जब भी मैं इस बात पर मनन करता हूँ, तो मेरा दिल जोश से भर जाता है। जिस तरह भजनकार ने—अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में परमेश्वर के नियमों को पूरी निष्ठा से मानकर और उन पर चलकर—परमेश्वर के वचन को सिर्फ़ जानकारी से बदलकर अपनी "पूरी संपत्ति" बना लिया, वैसे ही मैं भी एक गहरा सबक सीखता हूँ: मुझे विश्वास का ऐसा जीवन जीना चाहिए जो "वचन के साकार रूप" को दर्शाता हो—जहाँ वचन मेरा स्वभाव और जीवन बन जाए—इसके लिए मुझे सुने हुए वचन को मज़बूती से थामे रखना होगा और हर पल चुपचाप उसका पालन करना होगा। इस तरह, सुने हुए वचन को अपनी आत्मा की सबसे कीमती संपत्ति बनाने के लिए, मैंने भजन संहिता 119:56 के पवित्र संदर्भ से तीन मुख्य आध्यात्मिक सबक लिए हैं जिन्हें क्रूस के एक चेले को ज़रूर अपनाना चाहिए:

(1) पहला, भजनकार ने परमेश्वर के दिए गए वादे वाले वचन को अपनी आत्मा के केंद्र में बसा लिया और उसे कभी नहीं भुलाया।

भजन संहिता 119:49 में, वह कितनी गंभीरता और ज़ोर के साथ प्रभु से पुकारता है: "अपने दास को दिए वचन को याद रख, क्योंकि तूने मुझे आशा दी है।" वह कौन-सी प्रेरणा थी जिसने भजनकार को आँसुओं के साथ प्रार्थना करने और परमेश्वर से अपने वादे वाले वचन को याद रखने के लिए कहने की हिम्मत दी, तब भी जब वह दुख और सताहट की काली रातों से गुज़र रहा था? क्योंकि प्रभु का दिया हुआ वादा ही वह चीज़ थी जिसने उसे एक अटूट, अनंत आशा बनाए रखने में मदद की, तब भी जब हकीकत में हर रास्ता बंद लग रहा था (पद 49)।

जब भी मैं इस हिस्से पर गहराई से सोचता हूँ, तो मुझे रोमियों 4:18 में बताए गए विश्वास के पिता अब्राहम के कभी न मिटने वाले कदमों की याद आती है। अब्राहम के इंसानी हिसाब-किताब और हकीकत की सीमाओं से ऊपर उठकर "हर उम्मीद के खिलाफ" उम्मीद करने और विश्वास करने के पीछे बस एक ही बड़ा राज़ था। ऐसा इसलिए था क्योंकि अपने हालात या माहौल को देखने के बजाय, उन्होंने परमेश्वर के भरोसेमंद वादे को—उस परमेश्वर के वादे को जिसने उन्हें बुलाया था—मजबूती से थामे रखा; और उन्हें बिना किसी शक के पूरा यकीन था कि प्रभु अपनी सर्वशक्तिमान शक्ति से उस वादे को ज़रूर पूरा करेंगे (रोमियों 4:21)। सच तो यह है कि "वादे पर आधारित जीवन" जीना—दुनिया की बेकार उम्मीदों से न भटकना और पूरी तरह से प्रभु के दिए वादों पर टिके रहना—"वचन के साकार होने" की सबसे बड़ी कुंजी है, जहाँ सुना हुआ संदेश इंसान की आत्मा और चरित्र में पूरी तरह बस जाता है। सिर्फ़ वही लोग जो प्रभु के वादों को अपने दिल में बसाते हैं और उन्हें याद रखते हैं, सच में उस वचन की शक्ति को अपनी सबसे कीमती और हमेशा रहने वाली संपत्ति बना सकते हैं।

(2) दूसरी बात, भजनकार को बहुत ज़्यादा दुख के बीच सिर्फ़ परमेश्वर के वचन से ही सांत्वना मिली।

भजन संहिता 119:50 के पहले हिस्से में दुख के समय एक विश्वासी की शानदार गवाही है: "यह वचन मेरे दुख में मेरी सांत्वना है।" कई बार ज़िंदगी में बहुत ज़्यादा दुख और आज़माइशें आती हैं, और दुनिया में कोई

भी सांत्वना नहीं दे पाता—ऐसे समय में इंसान ऐसी निराशाजनक आध्यात्मिक हालत में होता है कि अच्छे इरादे से दी गई इंसानी सांत्वना भी खोखली लगती है और उसे ठुकराना पड़ता है। ठीक ऐसे समय में विश्वासी को लोगों पर निर्भर रहने की आदत छोड़ देनी चाहिए; इसके बजाय, सिर्फ़ प्रभु की भरोसेमंद सांत्वना की तलाश करते हुए, अकेले में संघर्ष करना चाहिए, रोते-बिलखते हुए और सच्चे दिल से विनती करनी चाहिए। जब हम दुनिया का शोर-शराबा शांत करके प्रभु के सामने झुकते हैं, तो वह आखिरकार अपने वचन के जीवन देने वाले वादे से हमारे दिलों को गर्माहट और सांत्वना देते हैं। मेरे पादरी के सफ़र और ज़िंदगी के रास्ते में, एक ऐसी जीवन-रेखा थी जिसने मेरी आत्मा को तब-तब ऊपर उठाया जब भी मैं लड़खड़ाया, गिरा और गहरी निराशा में डूब गया।

मेरे लिए, यूहन्ना 6:1–15 में बताए गए "पाँच रोटियों और दो मछलियों" के वादे ने मेरी पूरी ज़िंदगी में सबसे बड़ी स्वर्गीय सांत्वना और ताकत का स्रोत का काम किया है। उन मुश्किल पलों में—जब मेरे आस-पास कोई मेरी मदद के लिए नहीं था, और जब गहरी आध्यात्मिक निराशा ने इंसानी दिलासे को बेमानी बना दिया था—तब पाँच रोटियों और दो मछलियों के चमत्कार और वादे (जिनसे उन्होंने पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाया और फिर भी खाना बच गया) ने मेरी आत्मा में नई जान डाल दी (भजन संहिता 119:50)। प्रभु ने अपने वचन के ज़रिए मुझे फिर से उठने की ताकत दी; उस शक्ति की बदौलत, मैंने कृपा से भरा जीवन जिया है—एक ऐसे खिलौने की तरह जो हमेशा खुद को सीधा कर लेता है—चाहे मैं कितनी भी बार गिरी हूँ, मैं फिर से उठ खड़ी हुई हूँ।

इतनी गहरी परेशानी के बीच भजनकार का प्रभु के वादे पर भरोसा बनाए रखने का मुख्य कारण यह था कि उन्होंने खुद एक पवित्र आध्यात्मिक पुनरुद्धार का अनुभव किया था—जहाँ वचन ने उनकी मरती हुई आत्मा को वैसे ही जीवित कर दिया जैसे CPR जान वापस लाता है (भजन संहिता 119:50b)। जब हम वचन की अलौकिक शक्ति का अनुभव करते हुए जीते हैं—जो दुख की हर घाटी में हमारी आत्मा को जीवित और जागृत करती है—तो वचन केवल कागज़ पर स्याही नहीं रह जाता, बल्कि हमारे दिलों में बसी एक जीवित सच्चाई बन जाता है। केवल वे ही लोग जो वचन के माध्यम से आध्यात्मिक पुनरुद्धार का अनुभव करते हैं,

खुशी-खुशी प्रभु के नियमों का पालन कर सकते हैं और अंततः उनकी शिक्षाओं को अपनी आत्मा की सबसे कीमती, शाश्वत संपत्ति बना सकते हैं।

(3) तीसरी बात, भजनकार ने ऐसा जीवन जिया जो दुनिया के मज़ाक और सताए जाने के बावजूद कभी भी प्रभु के वचन से दूर नहीं हुआ।

भजन संहिता 119:51 में, दुख की घड़ी में भी हमें उनका अटूट विश्वास और ईमानदारी दिखाई देती है: "अहंकारियों ने मेरा बहुत मज़ाक उड़ाया है, फिर भी मैं तेरी व्यवस्था से नहीं भटका हूँ।" जब उनके आस-पास के अहंकारी लोगों ने उन पर उंगलियाँ उठाईं और परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए उनका अपमान और मज़ाक उड़ाया, तब भी भजनकार ने कभी भी प्रभु के सच्चाई के नियम को नहीं छोड़ा और न ही उससे भटके।

जब भी मैं अटूट विश्वास के इस सिद्धांत पर मनन करती हूँ, तो प्रेरित पतरस की वह महान स्वीकारोक्ति याद आती है जो यूहन्ना 6:68 में दर्ज है। एक समय ऐसा आया जब आध्यात्मिक विश्वास छोड़ने की स्थिति बन गई थी—जब बहुत से लोगों और चेलों को क्रूस और प्रायश्चित के बारे में प्रभु की शिक्षाएँ इंसानी दिमाग से समझना बहुत मुश्किल लगीं, तो वे यीशु से बेरुखी से दूर हो गए और उनके पीछे चलना छोड़ दिया (पद 66)। पीछे बचे बारह चेलों को देखते हुए, यीशु ने एक मर्मस्पर्शी सवाल पूछा: "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?" (पद 67)। उस दिल को छू लेने वाले सवाल के जवाब में, साइमन पीटर ने एक शानदार बात कही जिसने पूरी दुनिया को हिला दिया: "प्रभु, हम किसके पास जाएँ? आपके पास ही अनंत जीवन की बातें हैं" (पद 68)। यह विश्वास का कितना ज़बरदस्त ऐलान है! फिर भी, आज हमारी अपनी ज़िंदगी की सच्चाई क्या है? यह सच में अफ़सोस की बात है कि बहुत से ईसाई, प्रभु की बातों को अपनी इच्छाओं के उलट और मानने में मुश्किल पाते हुए, बहुत आसानी से प्रभु से दूर हो जाते हैं और चर्च—जो उनका शरीर है—को छोड़ देते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वे प्रभु की "अनंत जीवन की बातों" का गहराई से अनुभव नहीं कर पाते, जो आत्मा को मुक्ति देती हैं। नतीजतन, मसीह के उस शुद्ध सुसमाचार पर ध्यान देने के बजाय जो अनंत जीवन देता है, वे आसानी से शैतान के नकली सुसमाचार से प्रभावित हो जाते हैं, जो उन्हें क्षणिक सुखों और मीठे प्रलोभनों से लुभाता है। आज यह एक दुखद आध्यात्मिक सच्चाई है कि यहाँ तक कि पादरी और मंडली के लोग भी

अक्सर सांसारिक समृद्धि का वादा करने वाले सांसारिक संदेशों—जो नाशवान हैं—का प्रचार करते हैं और उन्हें उत्सुकता से सुनते हैं, न कि अनंत जीवन देने वाले उन वचनों को जिनसे आत्मा का नया जन्म होता है।

हालाँकि, इस अंश में भजनकार अलग था। चाहे हालात कितने भी बुरे क्यों न हों—हर तरफ़ से घिरे होने पर भी—या सांसारिक ताक़तों ने कितनी भी ज़ोर से धमकी दी हो या मज़ाक उड़ाया हो, वह प्रभु के दिए गए वादों से कभी नहीं डिगा। उसने अपना ध्यान भटकने नहीं दिया और न ही दुनिया की मीठी, धोखे भरी आवाज़ों पर कान दिया। सच्चाई पर इतनी मज़बूती से खड़े रहने का मुख्य कारण साफ़ है: निराशा के उन पलों में जब रोशनी की एक भी किरण दिखाई नहीं दे रही थी, प्रभु का वादा उम्मीद का सहारा बना; और घोर कठिनाई की हर काली रात में, केवल वचन ने ही उसकी आत्मा में नई जान फूँकी—जो खत्म होने की कगार पर थी—उसे पवित्रता में बहाल किया और सच्ची नई शुरुआत लाई। केवल वे ही जो वचन पर मज़बूती से बने रहते हैं—कभी भी उससे भटकते नहीं, चाहे कितनी भी मुश्किलें क्यों न आएँ—आखिरकार "वचन को अपना बनाने" (personalization of the Word) की स्थिति तक पहुँचते हैं, जहाँ सुना हुआ संदेश उनकी आत्मा की सबसे कीमती संपत्ति बन जाता है। 1 यूहन्ना 2:24 के पहले हिस्से में—जो आज हमारा मुख्य वचन है—प्रेरित यूहन्ना उन विश्वासियों के लिए एक बार फिर आध्यात्मिक चेतावनी देते हैं जो अंधकार के दौर से गुज़र रहे हैं: "जो तुमने शुरू से सुना है, वह तुममें बना रहे।" यहाँ हमारे सामने एक बुनियादी सवाल आता है: "आखिर वह क्या बात थी जो शुरुआती कलीसिया के विश्वासियों ने—और सच तो यह है कि आज आप और मैंने भी—अपने विश्वास के जीवन की शुरुआत में सुनी थी?" इसका शानदार जवाब हमें 1 यूहन्ना 1:1–2 के प्रभावशाली वचनों में साफ़-साफ़ मिलता है, जिन पर हमने पहले भी गहराई से मनन किया है: "जो शुरू से था, जिसे हमने सुना, जिसे हमने अपनी आँखों से देखा, जिसे हमने निहारा और हमारे हाथों ने छुआ—जीवन के वचन के बारे में—वह जीवन प्रकट हुआ; हमने उसे देखा है और उसकी गवाही देते हैं, और हम तुम्हें उस अनंत जीवन के बारे में बताते हैं, जो पिता के साथ था और हमारे सामने प्रकट हुआ।" प्रेरित यूहन्ना के लिखे ये पवित्र शब्द उस सुसमाचार के सार की पूरी तरह से गवाही देते हैं जिसे उद्धार पाए मसीहियों ने अपने दिलों में संजोकर रखा है और जिसे उन्होंने शुरू से ही सुना है। यह दुनिया की सीमित नैतिकता या

दार्शनिक ज्ञान की बात नहीं है। बल्कि, यह "जीवन के वचन" के बारे में है जो "शुरू से"—समय और ब्रह्मांड की रचना से भी पहले—मौजूद था और स्वयं "अनंत जीवन"—पुत्र, यीशु मसीह—के बारे में है, जो मूल रूप से परमेश्वर पिता के साथ महिमा में रहते थे, लेकिन पापियों को बचाने के लिए—जो अन्यथा अनंत मृत्यु की ओर बढ़ रहे थे—मानव रूप में पृथ्वी पर आए। एक वाक्य में कहें तो: विश्वासियों को उनके विश्वास की शुरुआत में जो महान विरासत मिली, वह कोई और नहीं बल्कि यीशु मसीह और उनके क्रूस का सुसमाचार है। प्रेरित यूहन्ना ने बुढ़ापे में अपने प्रिय बच्चों से जो भावुक आग्रह किया था, उसका मूल यही है। यह एक शक्तिशाली मसीही निर्देश है: चाहे झूठे मसीह-विरोधियों का धोखा और इस दुनिया का प्रलोभन कितना भी ज़ोरदार क्यों न हो, विश्वासियों को यीशु मसीह—जो उद्धार की एकमात्र नींव हैं—और उनके पवित्र, लहू से सने सुसमाचार को अपनी आत्मा के केंद्र में हमेशा बसाए रखना चाहिए।

प्यारे संतों, इसलिए हमें यीशु मसीह—जो अनंत जीवन हैं—और उनके सुसमाचार को, जिस पर उनके लहू की मुहर लगी है, हर दिन अपनी आत्मा के केंद्र में गहराई से बसने देना चाहिए। तो फिर, यह पक्का करने के लिए हमें क्या करना चाहिए कि यीशु मसीह, जो सच्ची ज्योति हैं, हमारे जीवन और हमारे भीतर पूरी तरह से बसें? हम इसे पाने का पवित्र तरीका प्रभु के महान "अंगूर की बेल के दृष्टांत" से स्पष्ट रूप से सीखते हैं, जो यूहन्ना अध्याय 15 में दर्ज है। प्रभु ने अपने शिष्यों से जीवन का यह सिद्धांत कहा: "मैं अंगूर की बेल हूँ; तुम डालियाँ हो। यदि तुम मुझमें बने रहो और मैं तुममें, तो तुम बहुत फल लाओगे; मुझसे अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते" (यूहन्ना 15:5)। जैसे परमेश्वर पिता, पुत्र यीशु में बसते हैं, और यीशु परमेश्वर पिता में पूरी तरह से बसते हैं—त्रिएक का एक रहस्यमय मिलन—वैसे ही हम मसीहियों को, बेल की डालियों के रूप में, प्रभु (सच्ची बेल) से बिना एक पल भी अलग हुए मजबूती से जुड़े रहना चाहिए। तभी हम जीवन देने वाला रस पा सकते हैं और पवित्र आत्मा का भरपूर फल ला सकते हैं; यदि हम अपनी समझ पर भरोसा करते हैं और प्रभु से दूर हो जाते हैं, तो हम दयनीय और शक्तिहीन प्राणी बन जाते हैं जो आध्यात्मिक क्षेत्र में कुछ भी हासिल करने में असमर्थ होते हैं।

यीशु ने यूहन्ना 15:7 में इस आध्यात्मिक मिलन के रहस्य को और स्पष्ट किया: "यदि तुम मुझमें बने रहो और मेरे वचन तुममें बने रहें, तो जो चाहो सो माँगो, और वह तुम्हारे लिए किया जाएगा।" यह शानदार अंश हमें

क्या मुख्य शिक्षा देता है? यीशु मसीह को हमारे भीतर पूरी तरह से जीने और बसने देने का एकमात्र तरीका यह है कि उनके वचन—खासकर क्रूस और पुनरुत्थान का सुसमाचार—हमारी आत्मा के केंद्र में बने रहें। वचन का हमारे भीतर बसने का अर्थ है स्वयं प्रभु का हमारे भीतर बसना। इसके अलावा, यह पक्का करने के लिए कि यीशु मसीह का सुसमाचार जो हमने सुना है, हमारे भीतर लगातार बना रहे, हमारे दैनिक जीवन में बदलाव आना चाहिए। जैसा कि प्रेरित पौलुस ने आग्रह किया, हमें मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए (फिलिप्पियों 1:27), और हमें अंधेरे में फंसी और मरती हुई दुनिया में इस जीवन देने वाले सुसमाचार का लगन से प्रचार करके गवाह के मिशन को पूरा करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 9:16)। जब हम अपनी समझ को एक तरफ रखकर यीशु मसीह और उनके सुसमाचार को पूरी तरह से अपने अंदर बसने देते हैं, तो 1 यूहन्ना 2:24 का बाद वाला हिस्सा—जो आज हमारा मुख्य वचन है—हमें एक बहुत बड़ी आशीष का वादा करता है: एक शानदार मिलन का पूरा होना, जिसमें हम हमेशा पुत्र, यीशु और परमेश्वर पिता में बने रहेंगे। जो विश्वासी सुसमाचार को महत्व देते हैं, उन्हें यह अनंत सुरक्षा मिलती है; वे त्रिएक परमेश्वर के पवित्र जीवन में पूरी तरह डूबे रहते हैं।

चौथा, सच्चे ईसाई वे हैं जिनके पास "अनंत जीवन" है, जो सबसे बड़ा उपहार है जिसका वादा प्रभु ने स्वयं हमसे किया है।

1 यूहन्ना 2:25 को देखें। उन विश्वासियों को संबोधित करते हुए जो अपने विरोधियों के सभी धोखों के बावजूद डटे रहे, प्रेरित यूहन्ना उस परम महिमा की घोषणा करते हैं जिसका वादा किया गया था: "और यही वह वादा है जो उन्होंने हमसे किया है—अनंत जीवन।" जैसा कि *कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन* (या इसी तरह के आधुनिक अनुवाद) में कहा गया है, "यह वही अनंत जीवन है जिसका वादा मसीह ने स्वयं हमसे किया था।" यूहन्ना 3:16—जो ईसाई सुसमाचार का मुख्य संदेश है—बताता है कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को इसलिए दिया ताकि हम नष्ट न हों बल्कि अनंत जीवन पाएं, जबकि रोमियों 6:23 पुष्टि करता है कि "परमेश्वर का मुफ्त उपहार हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन है।" जो विश्वासी यीशु मसीह पर भरोसा करते हैं, उनके पास पहले से ही अनंत जीवन का यह पवित्र और शानदार उपहार है। तो फिर, इस "अनंत जीवन" का मुख्य अर्थ क्या है जिसकी घोषणा बाइबिल इतने शानदार ढंग से करती है? यूहन्ना 17:3 में, प्रभु ने अनंत जीवन की अवधारणा को आपसी रिश्ते के संदर्भ में परिभाषित किया: "अनंत जीवन का अर्थ है एकमात्र सच्चे परमेश्वर और यीशु मसीह को जानना, जिन्हें उन्होंने भेजा है।" अनंत जीवन केवल समय का एक क्रम—समय का

कभी न खत्म होने वाला सिलसिला—नहीं है। बल्कि, यह जीवन की एक ऐसी स्थिति को दर्शाता है जिसमें अनंत परमेश्वर और पुत्र, यीशु मसीह को गहराई से जानना और उनके साथ घनिष्ठ, आपसी संगति में रहना शामिल है। जब मैं परमेश्वर के वचन की गहराई में गोता लगा रहा था, तो मैंने इस महान अनंत जीवन की वर्तमान सच्चाई पर यह मनन लिखा: "अनंत जीवन केवल आने वाली दुनिया—यानी स्वर्ग—के लिए ही नहीं है। हमें इसी दुनिया में, जहाँ हम अभी रह रहे हैं, अनंत जीवन का आनंद लेना चाहिए। हालाँकि अनंत जीवन का पूरा अनुभव और आनंद स्वर्ग में ही मिलेगा, लेकिन यह विश्वास की एक ऐसी सच्चाई भी है जिसका कुछ हद तक—एक झलक के रूप में—हमें पृथ्वी पर ही अनुभव करना चाहिए। तो फिर, इस बंजर दुनिया में रहते हुए हम इस अनंत जीवन का स्वाद कैसे चख सकते हैं? यह रोज़ प्रभु में बने रहने (1 यूहन्ना 2:6) और ईमानदारी से उनके वचन को मानने और उस पर चलने से होता है। जब आज्ञाकारिता के द्वारा हमारे भीतर परमेश्वर का प्रेम सिद्ध होता है (1 यूहन्ना 2:5), तो हमारे दिल प्रभु के आनंद से भर जाते हैं—ऐसा आनंद जो दुनिया नहीं दे सकती (यूहन्ना 15:11)। उस आनंद का अनुभव करना ही उस शिष्य का शानदार जीवन है जो पृथ्वी पर ही अनंत जीवन का स्वाद चखते हुए जीता है।"

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:25 में बताए गए महान अनंत जीवन के बारे में न तो यह कोई अमूर्त विचार है और न ही कोई साधारण धारणा। 1 यूहन्ना 1:1–2 में, प्रेरित यूहन्ना ज़ोर देकर कहते हैं कि यह अनंत जीवन कोई और नहीं बल्कि पुत्र, यीशु मसीह हैं, जो इतिहास में प्रकट हुए: "हमने मसीह—जीवन का वचन, जो दुनिया के बनने से पहले से मौजूद था—को सुना है, अपनी आँखों से साफ़ देखा है और व्यक्तिगत रूप से छुआ है। यह जीवन दुनिया में प्रकट हुआ है। मसीह को, जो अनंत जीवन हैं, व्यक्तिगत रूप से देखने के बाद, हम उनके बारे में गवाही देते हैं और आपको उनके बारे में बताते हैं। वह पिता के साथ थे और हमारे सामने प्रकट हुए हैं" (1 यूहन्ना 1:1–2, *समकालीन कोरियाई संस्करण*)। हममें से जो लोग यीशु पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करते हैं, उन सभी के लिए प्रभु का सबसे बड़ा वरदान अनंत जीवन है। और उस अनंत जीवन का मूल सार स्वयं यीशु मसीह हैं। इसलिए, यदि हम प्रभु को अपने जीवन में रखते हैं और हर दिन उनके साथ गहरी संगति का आनंद लेते हैं, तो हम अभी इसी समय स्वर्ग में रहने और अनंत जीवन का आनंद लेने के वरदान के भागीदार बन चुके हैं। जब मैं अनंत जीवन पाने से जुड़े विश्वास के रहस्य पर

मनन करता हूँ, तो "मुक्ति का भरोसा"—उन पाँच मुख्य विश्वासों में से एक जो मेरे कॉलेज के दिनों में शिष्यत्व प्रशिक्षण के दौरान मेरे दिल में गहराई से बैठ गए थे—ज़ोरदार ढंग से मेरे मन में आता है। यह सुसमाचार की शानदार पुष्टि है जो 1 यूहन्ना 5:11–12 में मिलती है: "और गवाही यह है: परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके पास जीवन नहीं है।" अनंत जीवन का सिद्धांत और मुक्ति का भरोसा, जिसे हमें बिना डगमगाए अपने दिलों में मज़बूती से थामे रखना चाहिए, इन आयतों में बहुत स्पष्ट रूप से बताया गया है।

पहला, परमेश्वर ने उन लोगों को पहले ही उपहार के रूप में अनंत जीवन दे दिया है जो यीशु पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करते हैं।

दूसरा, वह अनंत जीवन केवल यीशु मसीह, जो परमेश्वर के पुत्र हैं, में ही मौजूद है।

तीसरा, यह एक गंभीर, आधिकारिक घोषणा है कि जिन लोगों के भीतर पुत्र, यीशु मसीह हैं (जो उन पर विश्वास करते हैं), उनके पास पहले से ही अनंत जीवन है, जबकि जिनके दिलों में परमेश्वर का पुत्र नहीं है (जो उन पर विश्वास नहीं करते), उनके पास उस जीवन का एक प्रतिशत भी नहीं है।

यह हमारी अपनी योग्यता या कोशिशें नहीं हैं, बल्कि केवल यह बात है कि क्या यीशु मसीह हमारे दिलों के केंद्र में राजा के रूप में विराजमान हैं, जो अनंत जीवन के लिए पक्का पैमाना है। यदि हम सचमुच यीशु पर विश्वास करते हैं, जिन्हें हमारी खातिर क्रूस पर चढ़ाया गया था, तो हमें यह भरोसा होना चाहिए कि विश्वासयोग्य परमेश्वर ने हमें पहले ही वादा किया हुआ अनंत जीवन एक "मुफ़्त उपहार" के रूप में दे दिया है। पौलुस, जो गैर-यहूदियों के महान प्रेरित थे, कभी एक बहुत बुरे व्यक्ति थे—जो कानून की धार्मिकता में फँसे हुए थे और प्रभु के खिलाफ "निंदा करने वाले, सताने वाले और हिंसक व्यक्ति" के रूप में काम कर रहे थे (1 तीमुथियुस 1:13)। वह एक दुखी पापी थे जिन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट और दर्द के साथ खुद को "पापियों में सबसे बुरा" माना (आयत 15)। फिर भी, जब उस बुरे व्यक्ति ने भी प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया, तो परमेश्वर ने अपनी कृपा से उन पर अनंत जीवन बरसाया और उन्हें उन लोगों के लिए एक महान उदाहरण के रूप में स्थापित किया जो बाद में प्रभु पर विश्वास करेंगे और अनंत जीवन पाएँगे (आयत 16)। चाहे किसी

व्यक्ति ने अतीत में कितने भी भयानक या जघन्य पाप क्यों न किए हों, यदि वह प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करता है और उन्हें स्वीकार करता है—जिन्होंने क्रूस पर पापों का प्रायश्चित किया—तो वह तुरंत मृत्यु से जीवन में आ जाता है और उसे अनंत जीवन प्राप्त हो जाता है। यह सुसमाचार में पाई जाने वाली क्षमा की अनंत शक्ति और अनंत जीवन की शक्ति है। आज इस पत्र को पढ़ने वाले संतों से, मैं क्रूस की सच्ची ज्योति में एक बार फिर पूछता हूँ: क्या आप सचमुच परमेश्वर के पुत्र, प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं और उन्हें अपनाते हैं, जिन्होंने आपके सभी पापों को मिटा दिया है और जो स्वर्गीय दरबार में आपकी पैरवी करते हैं?

प्रिय संतों, अब मैं आज के मनन को समाप्त करना चाहता हूँ। हमारे सामने जो मुक्ति-संबंधी ऐतिहासिक वास्तविकता है, वह स्पष्ट है। हम उन "अंतिम दिनों" में जी रहे हैं जिनके बारे में प्रभु ने चेतावनी दी थी। अनगिनत मसीह-विरोधी (एंटीक्राइस्ट)—जो कलीसिया को नष्ट करने और संतों को छीनने पर आमादा हैं—पहले ही उठ खड़े हुए हैं और हमारे चारों ओर अंधेरे में तेज़ी से सक्रिय हैं। बाइबल इस मसीह-विरोधी के असली स्वरूप को सबसे बुरे झूठे और धोखेबाज़ के रूप में उजागर करती है जो परमेश्वर और मानवता दोनों को गुमराह करते हैं। वे शैतान की शक्तियाँ हैं जो न केवल नासरत के यीशु को सच्चे "मसीह"—जिन्हें परमेश्वर ने अनंत काल के लिए अभिषेक किया है—के रूप में पूरी तरह से नकारती हैं, बल्कि परमेश्वर पिता और उनके एकलौते पुत्र यीशु को भी अस्वीकार करती हैं, और साथ ही उस रहस्यमय अवतार की बुरी तरह निंदा करती हैं, जिसमें पवित्र परमेश्वर ने मानव रूप में पृथ्वी पर आगमन किया था।

हालाँकि, एंटीक्राइस्ट (मसीह-विरोधी) की विनाशकारी सेना के विपरीत, सच्चे मसीहियों को—जो यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा नए सिरे से जन्मे हैं—एक अटूट स्वर्गीय दर्जा और विशेषाधिकार मिला है। सच्चे विश्वासियों को पवित्र परमेश्वर से पवित्र आत्मा का अभिषेक मिला है, जो उन्हें सारे सत्य को पहचानने और जानने में सक्षम बनाता है। उनके पास दुनिया का नकली ज्ञान नहीं, बल्कि सुसमाचार का पूर्ण और कभी न बदलने वाला सत्य है। वे उस 'जीवन के वचन' को नहीं भूलते जो उन्होंने शुरू से सुना था; इसके बजाय, वे यीशु मसीह को—जो अनंत सुसमाचार का मूल सार हैं—अपनी आत्मा की गहराइयों में पूरी तरह बसने देते हैं। नतीजतन, "अनंत जीवन" की शानदार सच्चाई—जिसे कोई छीन नहीं सकता—सच्चे विश्वासी के भीतर जीवित रहती है और धड़कती है।

अंत के इन अंधकारमय समयों में, जब हर जगह अनगिनत एंटीक्राइस्ट और गलत शिक्षाएँ फैलाने वाली ताकतें उभर आई हैं, और "कोई और यीशु" तथा "कोई और सुसमाचार"—जिनका पवित्र शास्त्र से कोई लेना-देना नहीं है—तेजी से फैल रहे हैं, जिससे कई लोग "कोई और आत्मा" अपना रहे हैं; ऐसे माहौल में, और पाखंड का मुखौटा पहने झूठे पादरियों और शिक्षकों के प्रभाव के बावजूद, मुझे उम्मीद है कि हम सुसमाचार के सत्य पर मजबूती से खड़े रहेंगे। हम गर्व करने वाले सच्चे मसीही हैं जो बिना किसी शक के यह मानते हैं कि यीशु ही मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र हैं, और वे उद्धारकर्ता हैं जिन्होंने मनुष्य का रूप लिया और हमारे लिए क्रूस पर प्राण दिए। आइए अब हम पवित्र आत्मा—सत्य के उस सहायक जो हमारे भीतर वास करते हैं—के कोमल मार्गदर्शन का पालन करें और सुसमाचार के सत्य की अपनी समझ में प्रतिदिन बढ़ें। आइए हम विनम्र बनें, अपनी बुद्धि और इच्छाओं को समर्पित करके उनके वचन के सामने आज्ञाकारिता में घुटने टेकें; विशेष रूप से, आइए हम उस "दोहरे आदेश"—प्रभु द्वारा दिए गए राज्य के सर्वोच्च नियम—का पालन करें: परमेश्वर से पूरे दिल से प्रेम करें और अपने पड़ोसियों तथा साथी विश्वासियों से भी उतनी ही शिद्दत से प्रेम करें जितना हम खुद से करते हैं। जैसे-जैसे हम दुनिया की इच्छाओं को साहसपूर्वक ठुकराते हैं और प्रेम के इस संकरे रास्ते पर दृढ़ता से चलते हैं, त्रिएक परमेश्वर का पवित्र *अगापे* (निस्वार्थ) प्रेम हमारे दिलों में सचमुच, पूरी तरह और खूबसूरती से पूरा होगा। प्रभु का स्वर्गीय आनंद—जो दुनिया नहीं दे सकती—आपकी आत्माओं में लहरों की तरह उमड़ता रहे; और आप ऐसे धन्य विजेता बनें जो निडर होकर जिएं; इस ऊबड़-खाबड़ और थका देने वाली धरती पर, दिन-ब-दिन और पल-पल, उस शानदार अनंत जीवन का थोड़ा-बहुत स्वाद और अनुभव करें जो स्वर्ग में हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। मैं प्रभु के नाम में पूरी निष्ठा से यही प्रार्थना करता हूँ।

हमें हमेशा प्रभु में जीना चाहिए।

[1 यूहन्ना 2:26–29]

"मैं तुम्हें उन लोगों के बारे में ये बातें लिख रहा हूँ जो तुम्हें गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं। जहाँ तक तुम्हारी बात है, जो अभिषेक तुम्हें उससे मिला है, वह तुममें बना हुआ है, और तुम्हें किसी से सीखने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन जैसा कि उसका अभिषेक तुम्हें सब बातों के बारे में सिखाता है और जैसा कि वह अभिषेक सच्चा है, नकली नहीं—ठीक वैसे ही जैसा उसने तुम्हें सिखाया है, तुम उसमें बने रहो। और अब, प्यारे बच्चों, उसमें बने रहो, ताकि जब वह प्रकट हो, तो हम उसके आने पर उसके सामने पूरे भरोसे और बिना किसी शर्म के खड़े हो सकें। यदि तुम जानते हो कि वह धर्मी है, तो तुम यह भी जानते हो कि जो कोई सही काम करता है, वह उसी से जन्मा है।"

यूजीन पीटरसन—जिन्हें अक्सर "पास्टर्स पास्टर" (पादरी के पादरी) कहा जाता है—की किताब *As Kingfishers Catch Fire* पढ़ते समय, मैंने खुद को हमारे विश्वास के जीवन के एक ज़रूरी पहलू पर गहराई से सोचते हुए पाया। मैंने अपने नोट्स में यह लिखा: "अपने विश्वास के संबंध में जिस एक ज़रूरी चीज़ में हमें पूरी तरह डूब जाना चाहिए, वह है परमेश्वर के वचन पर मनन करना। मनन के लिए शांत मन की ज़रूरत होती है; जल्दबाज़ी वाला मन परमेश्वर के वचन पर ठीक से या गहराई से मनन नहीं कर सकता। हमें जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए, बल्कि उसके वचन पर मनन करने का आनंद लेना चाहिए (भजन संहिता 1:2–3)।" व्यक्तिगत रूप से, मेरा मानना है कि वचन पर मनन करने में आनंद पाना विश्वास के जीवन के लिए

बहुत ज़रूरी है। इसके अलावा, हमें सिर्फ़ मनन करने तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए; हमें उस वचन के अनुसार आज्ञाकारी जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए। जैसा कि 1 यूहन्ना 2:5 हमें बताता है, जब हम परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं, तो उसका प्रेम हममें सचमुच सिद्ध हो जाता है, और इसके द्वारा हमें पता चलता है कि हम प्रभु में हैं।

आज के वचन का बाद वाला हिस्सा, 1 यूहन्ना 2:27, यह कहता है: "...उसमें बने रहो, जैसा तुम्हें सिखाया गया है।" *Contemporary Korean Version* इस आयत का अनुवाद इस तरह करता है: "...तुम्हें हमेशा मसीह में जीना चाहिए।" आज इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं "प्रभु में जीने" के सच्चे अर्थ और ऐसे जीवन के परिणामों पर विचार करना चाहता हूँ, और उन आध्यात्मिक सीखों को साझा करना चाहता हूँ जो प्रभु देता है।

सबसे पहले, आइए "प्रभु में जीने" के सच्चे अर्थ पर विचार करें। यह पवित्र आत्मा की शिक्षाओं के अनुसार जिया गया जीवन है, जो हमारे भीतर वास करता है।

आज का वचन, 1 यूहन्ना 2:27, कहता है: "जो अभिषेक तुम्हें उससे मिला है, वह तुममें बना रहता है, और तुम्हें किसी से सिखाए जाने की आवश्यकता नहीं है; बल्कि जैसा उसका अभिषेक तुम्हें सब बातों के विषय में सिखाता है—और वह सत्य है और झूठ नहीं है—वैसे ही तुम उसमें बने रहो जैसा तुम्हें सिखाया गया है" (संशोधित कोरियाई संस्करण)। "क्योंकि तुम पर मसीह द्वारा पवित्र आत्मा उंडेला गया है, इसलिए तुम्हें किसी और से सिखाए जाने की आवश्यकता नहीं है। पवित्र आत्मा तुम्हें सब कुछ सिखाता है। उसकी शिक्षा सत्य है और उसमें कोई झूठ नहीं है। इसलिए, हमेशा मसीह में बने रहो जैसा पवित्र आत्मा ने तुम्हें सिखाया है" (*समकालीन कोरियाई संस्करण*)। जब हम परमेश्वर की कृपा से यीशु मसीह पर विश्वास करने लगे, तो परमेश्वर ने हमें पवित्र आत्मा दिया और हमारे हृदयों में अपना प्रेम उंडेला (रोमियों 5:5)। दूसरे शब्दों में, यदि हम सच्चे ईसाई हैं, तो हम वे सभी हैं जिन्होंने परमेश्वर से पवित्र आत्मा प्राप्त किया है (1 यूहन्ना 2:20)।

तो फिर, पवित्र आत्मा की भूमिका के बारे में बाइबल क्या कहती है? यूहन्ना 15:26 को देखें: "जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूंगा—सत्य का आत्मा जो पिता से निकलता है—वह मेरे

विषय में गवाही देगा" (संशोधित कोरियाई संस्करण)। "वह सहायक जिसे मैं तुम्हारे पास भेजूंगा, सत्य का आत्मा है जो पिता से आता है। जब वह आएगा, तो वह मेरे विषय में गवाही देगा" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। यीशु के वचनों के अनुसार, पवित्र आत्मा "सत्य का आत्मा है जो पिता से निकलता है।" और यही सत्य का आत्मा है जो यीशु के विषय में गवाही देता है। इसके अलावा, यूहन्ना 16:13 में, यीशु ने पवित्र आत्मा की सेवा का वर्णन इस प्रकार किया है: "परन्तु जब सत्य का आत्मा आएगा, तो वह तुम्हें सारे सत्य का मार्ग दिखाएगा; क्योंकि वह अपनी ओर से नहीं कहेगा, बल्कि जो कुछ वह सुनेगा, वही कहेगा; और वह तुम्हें आने वाली बातें बताएगा" (NASB)। "लेकिन जब सच्चाई की आत्मा आएगी, तो वह तुम्हें पूरी सच्चाई की ओर ले जाएगी। वह अपनी सोच के अनुसार नहीं बोलेगी, बल्कि वही कहेगी जो उसने सुना है, और वह तुम्हें उन बातों के बारे में बताएगी जो भविष्य में होंगी" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। सच्चाई की आत्मा, जो हममें से उन लोगों के भीतर रहती है जो यीशु पर विश्वास करते हैं, न केवल यीशु के बारे में गवाही देती है बल्कि हमें "पूरी सच्चाई" की ओर भी ले जाती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पवित्र आत्मा स्वयं सच्चाई है (1 यूहन्ना 5:6)। इसके अलावा, सच्चाई की आत्मा न केवल वही कहती है जो उसने प्रभु से सुना है, बल्कि हमें उन "आने वाली बातों" के बारे में भी विस्तार से सिखाती है जो हमारे सामने घटित होंगी।

1 यूहन्ना 2:20 में—एक ऐसा अंश जिस पर हमने पहले ही मनन किया है—प्रेरित यूहन्ना गवाही देते हैं, "तुम्हारे पास पवित्र जन से अभिषेक है, और तुम सब कुछ जानते हो।" *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* इसका अनुवाद इस प्रकार करता है, "तुमने पवित्र जन से पवित्र आत्मा प्राप्त किया है और ये सभी बातें जानते हो।" प्रेरित यूहन्ना ने अपना पत्र पाने वाले ईसाइयों को स्पष्ट रूप से याद दिलाया कि उस समय प्रचलित मसीह-विरोधी लोगों के विपरीत, सच्चे ईसाई वे हैं जिन्होंने परमेश्वर से पवित्र आत्मा प्राप्त किया है। तो, "इन सभी बातों" (पद 20) से विशेष रूप से क्या तात्पर्य है जिन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त करने वाले सच्चे ईसाई जानते हैं?

पहला, सच्चे ईसाइयों में समय को पहचानने की समझ होती है—वे जानते हैं कि यह अंतिम घड़ी है और कई मसीह-विरोधी पहले ही आ चुके हैं (पद 18)।

दूसरा, वे यीशु मसीह को गहराई से जानते हैं—वह धर्मी जन, जो हमारा वकील है और हमारे पापों के लिए प्रायश्चित का बलिदान है (पद 1–2)।

तीसरा, यीशु की आज्ञाओं का पालन करके (पद 3–5), वे अपने भाइयों और बहनों से प्रेम करते हैं (पद 10) और उस प्रेम के भीतर परमेश्वर के प्रेम को पूर्णता तक पहुँचाते हैं (पद 5)।

चौथा, वे परमेश्वर पिता को घनिष्ठता से जानते हैं और दुष्ट पर विजय प्राप्त करते हैं क्योंकि परमेश्वर का शक्तिशाली वचन उनके भीतर वास करता है (पद 13–14)।

अंत में, वे संसार या संसार की वस्तुओं से प्रेम नहीं करते (पद 15), बल्कि परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हुए जीवन व्यतीत करते हैं (पद 17)। इन सब बातों का सार यह है कि सच्चे ईसाइयों के पास जो ज्ञान होता है—जिन्हें पवित्र आत्मा मिला है—वह असल में उस समझ की बात करता है जो पवित्र आत्मा खुद देता है। 1 यूहन्ना 2:27 इसे *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) में अच्छी तरह समझाता है: "क्योंकि मसीह ने तुम पर पवित्र आत्मा उंडेला है, इसलिए तुम्हें किसी से सीखने की ज़रूरत नहीं है। पवित्र आत्मा तुम्हें सब कुछ सिखाता है..."। इस तरह, पवित्र आत्मा जो "सब कुछ" हमें सिखाता है, उसका मतलब है वे सभी बातें जो यीशु ने पहले अपने चेलों से कही थीं (यूहन्ना 14:26)। आज भी, पवित्र आत्मा हमें वे सब बातें याद दिलाता है जो यीशु ने कही थीं और हमें उन बातों को गहराई से समझने में मदद करता है। आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:27 में, प्रेरित यूहन्ना यह सलाह देता है: "जो अभिषेक तुम्हें उससे मिला है, वह तुममें बना रहता है, और तुम्हें किसी से सीखने की ज़रूरत नहीं है; बल्कि जैसा उसका अभिषेक तुम्हें सब बातों के बारे में सिखाता है—और वह सच है, झूठ नहीं—जैसा उसने तुम्हें सिखाया है, वैसे ही उसमें बने रहो" (रिवाइज़्ड कोरियन वर्शन)। "क्योंकि मसीह ने तुम पर पवित्र आत्मा उंडेला है, इसलिए तुम्हें किसी से सीखने की ज़रूरत नहीं है। पवित्र आत्मा तुम्हें सब कुछ सिखाता है। उसकी शिक्षा सच है और उसमें कोई झूठ नहीं है। इसलिए, हमेशा मसीह में रहो, जैसा पवित्र आत्मा ने तुम्हें सिखाया है" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। जब हम इस वचन को पढ़ते हैं, तो हमें बाइबल की तीन ज़रूरी शिक्षाओं पर ध्यान देना चाहिए।

(1) यह इस बात की घोषणा है कि "क्योंकि पवित्र आत्मा हमारे अंदर रहता है, इसलिए हमें किसी से सीखने की ज़रूरत नहीं है।"

इस बात का मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि कलीसिया को बाइबल सिखाने वालों की—यानी जिन्हें परमेश्वर ने सिखाने का वरदान दिया है—ज़रूरत नहीं है। 1 कुरिन्थियों 12:28 और इफिसियों 4:11 जैसे वचन साफ बताते हैं कि परमेश्वर ने कलीसिया में समुदाय के भले के लिए "पादरियों" और "शिक्षकों" को नियुक्त किया है।

तो फिर, प्रेरित यूहन्ना ने ज़ोर देकर क्यों कहा कि "तुम्हें किसी से सीखने की ज़रूरत नहीं है"? इसका सुराग पिछले वचन, 1 यूहन्ना 2:26 में मिलता है: "मैंने यह तुम्हें उनके बारे में लिखा है जो तुम्हें धोखा देने की कोशिश कर रहे हैं" (रिवाइज़्ड कोरियन वर्शन)। "मैंने यह उन लोगों के बारे में लिखा है जो आपको गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। उस समय, जो लोग यीशु में विश्वास करने वालों को गुमराह और धोखा देना चाहते थे, वे कलीसिया में घुस आए थे। प्रेरित यूहन्ना इन लोगों को "मसीह-विरोधी" (पद 18) और "झूठे" (पद 22) कहते हैं। ये झूठे मसीह-विरोधी, जो अंतिम दिनों में प्रकट हुए, न केवल परमेश्वर पिता और यीशु पुत्र (पद 22) का इनकार करते थे, बल्कि इस बात का भी इनकार करते थे कि यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं (पद 23) और वे शरीर धारण करके इस पृथ्वी पर आए थे (2 यूहन्ना 1:7)। प्रेरित यूहन्ना इन धोखेबाज़ों की झूठी शिक्षाओं के विरुद्ध कड़ी चेतावनी देना चाहते थे। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि चूँकि पवित्र आत्मा पहले से ही विश्वासियों के भीतर वास करता है और असली सच्चाई को जानता है, इसलिए उन झूठे शिक्षकों की धोखे भरी शिक्षाओं पर ध्यान देने या उनके द्वारा गुमराह होने की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है जो सही विश्वास (ऑर्थोडॉक्सी) से भटक गए हैं।

प्रियजनों, पवित्र आत्मा हममें वास करता है जो यीशु में विश्वास करते हैं। इसलिए, सच्चाई से बाहर का कोई भी व्यक्ति हमें सिखा नहीं सकता, और न ही हमें उनसे शिक्षा लेने की आवश्यकता है। यहाँ तक कि जब पास्टर और बाइबल शिक्षक मंच से परमेश्वर के वचन की घोषणा करते हैं, तो अंततः उनके भीतर वास करने वाला पवित्र आत्मा ही उनके होंठों के माध्यम से सीधे हमसे बात करता है। इस प्रकार, हमें सच्चाई से भटकने

वाली किसी भी शिक्षा को अस्वीकार कर देना चाहिए और केवल पवित्र आत्मा की शिक्षा को ही स्वीकार करना चाहिए।

(2) सच्चाई यह है कि हमारे भीतर वास करने वाला पवित्र आत्मा हमें "सब बातें" सिखाता है। इसके अलावा, उसकी शिक्षा पूरी तरह से सच्ची है और उसमें ज़रा भी झूठ नहीं है।

इससे पहले, आयत 20 में, प्रेरित यूहन्ना ने कहा, "तुम्हें उस पवित्र जन से पवित्र आत्मा मिला है और तुम ये सब बातें जानते हो।" क्योंकि हमारे अंदर रहने वाला पवित्र आत्मा हमें सब कुछ सिखाता है (आयत 27), इसलिए हम आध्यात्मिक समझ के ज़रिए इन सभी सच्चाइयों को समझ पाते हैं (आयत 20)। यहाँ हमें एक बात को गहराई से समझना चाहिए कि पवित्र आत्मा जो कुछ भी सिखाता है, वह "सच है और उसमें कोई झूठ नहीं है" (आयत 27)। इसके उलट, इस बात में एक कड़ी चेतावनी भी है: धोखेबाज़ों—यानी मसीह-विरोधी लोगों—की कही या सिखाई गई हर बात सच्चाई से दूर होती है और पूरी तरह झूठ होती है।

तो फिर, मसीह-विरोधी लोग विश्वासियों को धोखा देने के लिए ऐसे झूठ क्यों गढ़ते हैं? यूहन्ना 8:44 असलियत बताता है: "तुम अपने पिता शैतान की संतान हो और अपने पिता की इच्छा पूरी करना चाहते हो। वह शुरू से ही हत्यारा रहा है और सच्चाई पर नहीं टिका, क्योंकि उसमें कोई सच्चाई नहीं है। जब वह झूठ बोलता है, तो वह अपनी ही भाषा बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है।" जैसा कि इन शब्दों से पता चलता है, मसीह-विरोधी की जड़ शैतान है। शैतान शुरू से ही हत्यारा रहा है और उसके स्वभाव में ज़रा भी सच्चाई नहीं है; वह "झूठ का पिता" है और जब भी झूठ बोलता है, तो अपना असली रूप दिखाता है। ठीक इसीलिए प्रेरित यूहन्ना ने अपने पत्र को पढ़ने वालों से ज़ोर देकर कहा: मसीह-विरोधियों—जो झूठ के पिता के हैं और झूठ बोलते हैं—की चिकनी-चुपड़ी और लुभावनी बातों से धोखा न खाएँ, बल्कि सिर्फ़ उस पवित्र आत्मा की सच्ची और बेदाग शिक्षा को सुनें जो हमारे अंदर रहता है।

प्यारे लोगों, पवित्र आत्मा, जो यीशु में विश्वास करने वालों के तौर पर हमारे अंदर रहता है, हमें सारी सच्ची शिक्षा देता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पवित्र आत्मा खुद सच्चाई है (1 यूहन्ना 5:6)। आज भी, सच्चाई का यह आत्मा हमें "सारी सच्चाई" की ओर ले जाता है (यूहन्ना 16:13)। हमारे अंदर रहने वाला पवित्र आत्मा ही हमें

यीशु मसीह के बारे में सबसे साफ़ गवाही देता है, जो खुद सच्चाई है (यूहन्ना 14:26; 15:26)। इसलिए, विश्वासियों के तौर पर, हमें यीशु का गहरा अनुभव करना चाहिए—जिनके बारे में हमारे भीतर रहने वाली सच्चाई की आत्मा गवाही देती है—और नम्रता से सच्चाई की वे सभी बातें सीखनी चाहिए जो पवित्र आत्मा हमें बताती है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारा विश्वास रोज़ बढ़ता है, और हमें ऐसी मज़बूती मिलती है जो शैतान और मसीह-विरोधी (antichrists) द्वारा फैलाए गए झूठ या धोखे भरे लालच से डगमगाती नहीं है। दूसरे शब्दों में, मसीह-विरोधियों और झूठ बोलने वालों—जो शैतान की संतान हैं—के जाल से बचने का एकमात्र तरीका यह है कि हम अपने भीतर मौजूद पवित्र आत्मा की विस्तृत शिक्षाओं पर ध्यान दें। जैसे-जैसे हम अपने दिलों को आत्मा द्वारा बताई गई सच्चाई की बातों से भरते हैं और उन्हें अच्छी तरह सीखते हैं, हम आखिरकार विश्वास की उस चट्टान पर मज़बूती से खड़े हो पाएंगे जो दुनिया पर जीत हासिल करती है।

(3) हमें "हमेशा प्रभु में" जीना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे पवित्र आत्मा हमें सिखाती है।

तो फिर, प्रभु में जीने का असल में क्या मतलब है? बाइबल बताती है कि यह असल में "धार्मिकता का पालन करने वाला जीवन" है। आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:29 को देखें: "यदि तुम जानते हो कि वह धर्मी है, तो तुम यह भी जानते हो कि जो कोई धार्मिकता का पालन करता है, वह उसी से जन्मा है।" यहाँ इस्तेमाल की गई क्रिया "जन्मा"—"उसी से जन्मा"—वही है जिसका इस्तेमाल यीशु ने यूहन्ना 3:7 में निकोदेमुस से बात करते समय किया था: "अचरज न कर कि मैंने तुझसे कहा, 'तुझे फिर से जन्म लेना होगा।'" दूसरे शब्दों में, यह बात कि "जो कोई धार्मिकता का पालन करता है, वह उसी से जन्मा है," उन लोगों की पहचान बताती है जो यीशु मसीह में विश्वास के ज़रिए "फिर से जन्मे" हैं। इसका मतलब है कि जैसे परमेश्वर धर्मी है, वैसे ही फिर से जन्मा विश्वासी भी एक "धर्मी व्यक्ति" बन गया है, जो यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में विश्वास के ज़रिए धर्मी ठहराया गया है (रोमियों 4:25)। इसलिए, जो धर्मी ठहराए गए हैं, उन्हें हमेशा धार्मिकता का पालन करते हुए जीना चाहिए और अपने भीतर रहने वाली पवित्र आत्मा की शिक्षा का पालन करना चाहिए। प्रभु में जीने वाले विश्वासी का यही असली स्वभाव है।

तो फिर, "धार्मिकता का पालन करने" का क्या मतलब है? मत्ती 6:33 के जाने-माने वचन में, यीशु ने कहा: "परन्तु पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।"

यहाँ, जो जीवन परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करता है, वह असल में यीशु मसीह—परमेश्वर के राज्य के धर्मी राजा—की खोज करने वाला जीवन है। प्रभु की धार्मिकता की खोज करने का अर्थ है उस प्रभु के शासन और अधिकार को स्वीकार करना, जो उस राज्य का राजा है। यह परमेश्वर के वचन के प्रति पूरी आज्ञाकारिता का जीवन भी है, जो ऐसे विश्वास से बना रहता है जो यीशु और सुसमाचार के लिए अपनी जान तक देने को तैयार हो (मरकुस 8:35; रोमियों 1:17)। इसके अलावा, परमेश्वर हमसे जिस आज्ञाकारिता की अपेक्षा करता है, उसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है: एक ऐसा जीवन जो परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार और प्रभु यीशु मसीह से जुड़ी सभी सच्चाइयों को निडरता और बिना किसी रुकावट के सिखाने और प्रचार करने में बिताया जाए (लूका 9:2; प्रेरितों के काम 28:31)।

तो फिर, आज के वचन (1 यूहन्ना 2:29) में बताए गए "धार्मिकता का अभ्यास करने" का विशेष अर्थ क्या है? हम 1 यूहन्ना की पूरी किताब के संदर्भ को समझकर इसका गहरा अर्थ जान सकते हैं। वचन 27 का बाद का हिस्सा और वचन 28 का शुरुआती हिस्सा हमें ज़ोर देकर "प्रभु में बने रहने" और "उसमें बने रहने" के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वचन 6 इस बारे में एक महत्वपूर्ण संकेत देता है: "जो कोई यह दावा करता है कि वह उसमें रहता है, उसे वैसे ही चलना चाहिए जैसे यीशु चले थे।" जब हम इन बातों को जोड़ते हैं, तो जवाब साफ हो जाता है। वचन 29 में "धार्मिकता का अभ्यास करने" का अर्थ है ऐसा जीवन जीना (वचन 6) जिसमें हम ठीक वैसे ही काम करें जैसे "धर्मी यीशु मसीह" (वचन 1) ने किया था।

तो फिर, धर्मी यीशु मसीह ने हमारी ओर से क्या किया? जैसा कि हमने पहले ही 1 यूहन्ना 2:1–2 में मनन किया है, प्रभु स्वयं हमारे पापों के लिए प्रायश्चित का बलिदान बने (वचन 2)। इसके अलावा, जब भी हम—जिनका परमेश्वर से मेल-मिलाप हो चुका है—अपनी कमज़ोरी के कारण फिर से पाप करते हैं, तो वह हमारे वकील के रूप में काम करते हैं और पिता परमेश्वर के सामने हमारा पक्ष रखते हैं (वचन 1)। प्रभु ने अतीत में जो भी काम किए हैं और जो अब भी कर रहे हैं, उन सबके पीछे एकमात्र प्रेरणा हमारे लिए उनका 'प्रेम' है। इसलिए, जो लोग यीशु मसीह में बने रहते हैं, उनके लिए "ठीक वैसे ही चलना जैसे वह चले" (वचन 6) का मतलब है उस प्रेम का अनुकरण करना और प्रभु की आज्ञाओं का पालन करते हुए जीवन जीना (वचन 7–11)। ठीक इसीलिए प्रेरित यूहन्ना ने वचन 10 में कहा, "जो अपने भाई से प्रेम करता है, वह ज्योति में बना रहता है, और उसमें ठोकर खाने का कोई कारण नहीं होता।" सचमुच, जो व्यक्ति यीशु की आज्ञा के अनुसार

अपने भाई से प्रेम करता है, वही वह व्यक्ति है जिसके बारे में ये शब्द कहे गए हैं: "परमेश्वर का प्रेम सचमुच उसमें सिद्ध हुआ है; इसी से हम जानते हैं कि हम उसमें हैं" (वचन 5)।

संक्षेप में, 1 यूहन्ना 2:29 में उल्लिखित "जो धार्मिकता का आचरण करता है" वह व्यक्ति है जो मसीह में बना रहता है और प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार अपने भाई से प्रेम करता है। धार्मिकता का आचरण करने वाले जीवन की पहचान अपने पड़ोसी से प्रेम करने में आज्ञाकारिता के ठोस कदमों से होती है। हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि जो लोग इस तरह धार्मिकता का आचरण करते हैं, वे "उससे जन्मे हैं" और धार्मिक परमेश्वर की सच्ची संतान हैं। आइए हम आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:29 के संदेश को अपने दिल में उतारें, जैसा कि *समकालीन कोरियाई बाइबिल* में बताया गया है: "यदि आप जानते हैं कि परमेश्वर धर्मी है, तो यह न भूलें कि जो कोई भी धार्मिकता से जीता है, वह उसकी संतान है।" यीशु मसीह पर विश्वास करने और धर्मी ठहराए जाने के बाद, हम अच्छी तरह जानते हैं कि परमेश्वर धर्मी है। नतीजतन, हमारे जीवन में धार्मिकता का फल दिखना चाहिए। अपने भाई से प्रेम करने और धार्मिकता का आचरण करने वाला जीवन ही "मसीह में बने रहने" और "मसीह में जीने" का सच्चा अर्थ है, जैसा कि वचन 27 और 28 में बताया गया है। अंत में, आइए हम प्रभु में बने रहकर जिए गए जीवन के "परिणाम" पर विचार करें। संक्षेप में, बात यह है कि जब यीशु मसीह लौटेंगे, तो हम बिना किसी शर्म के, पूरे आत्मविश्वास के साथ उनके सामने खड़े हो सकेंगे।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 2:28 को देखें: "और अब, प्यारे बच्चों, उसमें बने रहो, ताकि जब वह प्रकट हो, तो हम उसके आने पर उसके सामने आत्मविश्वास के साथ और बिना शर्म के खड़े हो सकें" (NIV)। प्रेरित यूहन्ना प्रभु में बने रहने का सबसे बड़ा फल बताते हैं: यह घोषणा कि जब प्रभु वापस आएंगे, तो हममें हिम्मत होगी और हम बिना किसी शर्म के उनके सामने खड़े हो सकेंगे (पद 28)।

तो फिर, प्रभु की वापसी के उस आखिरी दिन हम उनके सामने बिना किसी डर या शर्म के, हिम्मत और बेझिझक कैसे खड़े हो सकते हैं? इसका कारण यह है कि जो विश्वासी प्रभु में बने रहते हैं और उनके अनुसार जीते हैं, वे पहले से ही इस धरती पर "पवित्र और बेदाग जीवन" जी रहे हैं। कुलुस्सियों 1:22 में इस बात की स्पष्ट गवाही दी गई है: "लेकिन अब उसने मसीह के शारीरिक शरीर के ज़रिए मौत के द्वारा तुम्हारा मेल-मिलाप कराया है, ताकि वह तुम्हें अपनी नज़र में पवित्र, बेदाग और दोष-मुक्त करके पेश कर सके" (NIV)। जैसा कि प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:2 में कहा है, यीशु मसीह हमारे पापों के लिए प्रायश्चित का बलिदान बने।

क्रूस पर बहाए गए कीमती लहू के ज़रिए हमारा मेल-मिलाप कराने का मुख्य मकसद हमें प्रभु के सामने परिपूर्ण लोगों के रूप में पेश करना है: पवित्र, बेदाग और दोष-रहित (कुलु. 1:22)। इसलिए, जो ईसाई प्रभु में बने रहते हैं, वे ईमानदारी से परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं (1 यूहन्ना 2:5)। सच्चाई का पालन करके, वे अपनी आत्माओं को शुद्ध करते हैं और अपने भाइयों से सच्चे दिल से और जोश के साथ प्रेम करने लगते हैं (1 पतरस 1:22)। इस आज्ञाकारिता के ज़रिए, परमेश्वर का प्रेम आखिरकार हमारे अंदर परिपूर्ण हो जाता है (1 यूहन्ना 2:5)।

जो विश्वासी प्रभु के शासन में रहे हैं और इस धरती पर प्रेम का अभ्यास किया है, उन्हें बड़ी महिमा मिलेगी जब यीशु, जो दूल्हा हैं, वापस आएंगे। प्रभु हमें—अपनी दुल्हन को—अपने सामने एक "महिमामयी कलीसिया, पवित्र और बेदाग, जिसमें कोई दाग या झुर्री या ऐसी कोई चीज़ न हो" के रूप में पेश करेंगे (इफिसियों 5:27)। इसलिए, प्रभु की वापसी के उस महिमामयी दिन, हममें अद्‌भुत हिम्मत होगी और हम उनके सामने विजेताओं के रूप में खड़े होंगे, और कभी शर्मिंदा नहीं होंगे (1 यूहन्ना 2:28)।

मैं अब अपनी बात खत्म करना चाहूंगा। हमें प्रभु में वैसे ही बने रहना चाहिए जैसा हमारे अंदर रहने वाले पवित्र आत्मा ने हमें सिखाया है (1 यूहन्ना 2:27); हमें हमेशा मसीह में अपना जीवन जीना चाहिए। सच्चाई का पवित्र आत्मा केवल यीशु की गवाही देता है (यूहन्ना 15:26) और ईमानदारी से हमें पूरी सच्चाई की ओर ले जाता है (यूहन्ना 16:13)। इसलिए, हमें उन लोगों से सीखने की ज़रूरत नहीं है जो सच्चाई से दूर हैं (1 यूहन्ना 2:27)। क्योंकि अभी भी, इन आखिरी दिनों में, हर जगह ऐसे लोग हैं जो हमें गुमराह करने और धोखा देने की कोशिश कर रहे हैं। झूठ की डरावनी ताकतें बढ़ रही हैं—जो पिता परमेश्वर और पुत्र यीशु (पद 22) का इनकार करती हैं, और इस बात से इनकार करती हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं (पद 23) और वे शरीर धारण करके इस धरती पर आए थे (2 यूहन्ना 1:7)।

हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हमारे अंदर रहने वाला पवित्र आत्मा हमें व्यक्तिगत रूप से सब कुछ सिखाता है (1 यूहन्ना 2:27)। पवित्र आत्मा की शिक्षा पूरी तरह से सच है और उसमें कोई झूठ नहीं है। क्योंकि हमारे अंदर रहने वाला पवित्र आत्मा स्वयं सच्चाई है (1 यूहन्ना 5:6), वह हमें सभी सच्ची शिक्षाओं को समझने में मदद करता है। इसके अलावा, सच्चाई का पवित्र आत्मा लगातार हमें यीशु के बारे में गवाही देता है, जो

मार्ग और सच्चाई है (यूहन्ना 14:26, 15:26)। इसलिए, पवित्र लोगों के रूप में, हमें अपनी नज़रें पूरी तरह से यीशु पर टिकानी चाहिए, जिनके बारे में हमारे अंदर का पवित्र आत्मा गवाही देता है। हमें पवित्र आत्मा द्वारा बताई गई सच्चाई की बातों को विनम्रता से सीखना चाहिए। ऐसा करने से, हम विश्वास में आगे बढ़ते हैं और मज़बूत होते हैं, जिससे हम शैतान और मसीह-विरोधी (Antichrist) द्वारा फैलाए गए झूठ और धोखे भरे प्रलोभनों का डटकर सामना कर पाते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम अपने अंदर रहने वाले पवित्र आत्मा की आवाज़ को ध्यान से सुनकर और सच्चे सुसमाचार को ईमानदारी से सीखकर विश्वास की अटूट चट्टान पर मज़बूती से खड़े रहें।

इसके अलावा, जो जीवन प्रभु में बना रहता है, वह निश्चित रूप से धार्मिकता का पालन करने वाले जीवन के रूप में दिखाई देना चाहिए (1 यूहन्ना 2:29)। हम वे लोग हैं जो परमेश्वर की कृपा से यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा नए सिरे से जन्मे हैं। इसलिए, जैसे धर्मी प्रभु ने काम किया (पद 1), वैसे ही हमारे लिए भी अपने जीवन में धार्मिकता का पालन करना उचित है (पद 6)। धार्मिकता का पालन करने का अर्थ है प्रभु की आज्ञाओं का पालन करते हुए जीना (पद 7–11)। जब हम प्रभु के नियम के अनुसार अपने भाई-बहनों से सच्चा प्रेम करते हैं, तो परमेश्वर का प्रेम हमारे अंदर पूरी तरह से सिद्ध हो जाता है, जिससे यह साबित होता है कि हम प्रभु में बने हुए हैं (पद 5)। प्रभु में बने रहने और विश्वास का जीवन जारी रखने का मुख्य मकसद यह है कि जब हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह वापस आएं, तो हम पूरे भरोसे और बिना किसी शर्म के उनका स्वागत कर सकें (पद 28)। मेरी प्रार्थना है कि हम सब रोज़ प्रभु में बने रहें और पवित्र व बेदाग संतों जैसा जीवन जिएं। उस शानदार दिन, जब हमारे दूल्हे यीशु मसीह वापस आएंगे, हम कलीसिया के रूप में—एक पवित्र और बेदाग दुल्हन की तरह, जिसमें कोई दाग या झुर्री न हो—खुशी-खुशी उनके सामने पेश किए जाएं (इफिसियों 5:27)।

परमेश्वर पिता ने हम पर जो महान प्रेम दिखाया है, उस पर विचार करें।

[1 यूहन्ना 3:1–10]

"देखो, पिता ने हम पर कितना महान प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की संतान कहलाते हैं! और हम सचमुच वही हैं! दुनिया हमें इसलिए नहीं जानती क्योंकि उसने उसे नहीं जाना। प्यारे दोस्तों, अब हम परमेश्वर की संतान हैं, और हम भविष्य में कैसे होंगे, यह अभी तक प्रकट नहीं हुआ है। लेकिन हम जानते हैं कि जब मसीह प्रकट होंगे, तो हम उनके जैसे होंगे, क्योंकि हम उन्हें वैसा ही देखेंगे जैसे वे हैं। जिस किसी में भी यह आशा है, वह खुद को पवित्र करता है, ठीक वैसे ही जैसे वे पवित्र हैं। जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था को तोड़ता है; असल में, पाप व्यवस्था का उल्लंघन है। लेकिन आप जानते हैं कि वे इसलिए प्रकट हुए ताकि हमारे पापों को दूर कर सकें। और उनमें कोई पाप नहीं है। जो कोई उनमें रहता है, वह पाप करता नहीं रहता। जो कोई पाप करता रहता है, उसने न तो उन्हें देखा है और न ही उन्हें जाना है। प्यारे बच्चों, किसी को भी तुम्हें गुमराह न करने दो। जो सही काम करता है, वह धर्मी है, ठीक वैसे ही जैसे वे धर्मी हैं। जो पापपूर्ण काम करता है, वह शैतान का है, क्योंकि शैतान शुरू से ही पाप करता आ रहा है। परमेश्वर के पुत्र के प्रकट होने का कारण शैतान के कामों को नष्ट करना था। जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप करता नहीं रहेगा, क्योंकि परमेश्वर का बीज उनमें बना रहता है; वे पाप करते नहीं रह सकते, क्योंकि वे परमेश्वर से जन्मे हैं। इसी तरह हम जानते हैं कि कौन परमेश्वर की संतान हैं और कौन शैतान की संतान हैं: जो कोई सही काम नहीं करता, वह परमेश्वर की संतान नहीं है, और न ही वह व्यक्ति जो अपने भाई-बहन से प्रेम नहीं करता।"

इंसानी जीवन की व्यर्थता के बीच परमेश्वर की नज़र में सचमुच मूल्यवान जीवन जीने के लिए, हमें प्रभु की दया और प्रेम में संतुष्टि पाना सीखना होगा (भजन संहिता 90:14)। परमेश्वर ने इंसानी दिल में अनंत काल की चाहत रखी है (सभोपदेशक 3:11)। इसलिए, मसीह में नई रचना बनने के नाते, हम सचमुच संतुष्टि का अनुभव तभी कर सकते हैं जब हम परमेश्वर के अनंत प्रेम से एक-दूसरे से प्रेम करते हुए जिएँ। ऐसा करने के लिए, हमें हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम को और गहराई से समझना होगा। यह प्यार उस परम प्रेम से कम नहीं है जो परमेश्वर ने हमारे लिए अपने एकलौते पुत्र, यीशु, को क्रूस पर चढ़ाकर दिखाया (यूहन्ना 3:16; रोमियों 5:6, 8, 10)।

हम इस महान प्रेम के रहस्य पर—जिसमें परमेश्वर ने बिना किसी हिचकिचाहट के अपने एकलौते पुत्र को दे दिया—तीन तरह से विचार कर सकते हैं:

(1) परमेश्वर का प्रेम 'असहाय' लोगों के प्रति है (रोमियों 5:6)।

परमेश्वर का प्रेम इतिहास के मंच पर सही समय पर प्रकट हुआ, जो अनंत काल से तय किया गया था। बाइबल का वाक्यांश "सही समय पर" (वचन 6) यह बताता है कि यीशु मसीह ने अधर्मियों के लिए ठीक उसी समय प्राण दिए जो परमेश्वर ने तय किया था।

(2) परमेश्वर का प्रेम 'पापियों' के प्रति है (रोमियों 5:8)।

1 यूहन्ना 4:9–10 इस प्रेम की गवाही देता है: "परमेश्वर ने हमारे बीच अपना प्रेम इस प्रकार दिखाया: उसने अपने एकलौते पुत्र को दुनिया में भेजा ताकि हम उसके द्वारा जी सकें। प्रेम यह है: ऐसा नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, बल्कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा।"

(3) परमेश्वर का प्रेम 'दुश्मनों' के प्रति है (रोमियों 5:10)।

जब हम अभी भी असहाय थे (वचन 6)—यानी, जब हम अभी भी पापी थे (वचन 8)—तो परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता दुश्मनी का था (वचन 10)। हालाँकि, क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा, यीशु मसीह ने आखिरकार हमें परमेश्वर से मिला दिया। जैसे-जैसे हम परमेश्वर के इस महान प्रेम को गहराई से समझते और महसूस करते हैं, हम पूरे दिल से "परमेश्वर का प्रेम" (भजन 304) गीत गाए बिना नहीं रह सकते: "परमेश्वर का प्रेम बहुत महान है / जिसे न तो ज़बान और न ही कलम बयां कर सकती है; / यह सबसे ऊँचे तारे से भी परे है, / और सबसे गहरे नर्क तक पहुँचता है; / गुनाहगार जोड़े को, जो चिंताओं से दबा था, / बचाने के लिए परमेश्वर ने अपना बेटा दिया; / उसने अपने भटकते बच्चे का मेल कराया, / और उसके पापों को माफ़ किया। (कोरस) हे परमेश्वर के प्रेम, तू कितना समृद्ध और पवित्र है! / कितना असीम और मज़बूत! / तू हमेशा बना रहेगा— / संतों और स्वर्गदूतों का गीत।" इसके विपरीत, जिस पल हम हमारे प्रति परमेश्वर के इस प्रेम पर शक करने लगते हैं, यह सभी आध्यात्मिक समस्याओं की जड़ बन जाता है (मलाकी 1:2)। जिस दिल ने व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के उस पूर्ण प्रेम का अनुभव नहीं किया है—जो क्रूस पर यीशु मसीह के प्रायश्चित बलिदान के ज़रिए प्रकट हुआ था—वह आसानी से डगमगा सकता है और दुनिया के विभिन्न प्रलोभनों और खालीपन का शिकार हो सकता है।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 3:1 में, बाइबल कहती है: "देखो पिता ने हम पर कितना महान प्रेम बरसाया है, कि हम परमेश्वर की संतान कहलाएँ! और हम वही हैं! दुनिया हमें इसलिए नहीं जानती क्योंकि उसने उसे नहीं जाना" (NIV)। "सोचो कि परमेश्वर पिता ने हम पर कितना महान प्रेम दिखाया है। उस महान प्रेम के ज़रिए, हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं। हालाँकि, दुनिया हमें नहीं पहचानती क्योंकि वे पिता को नहीं जानते" (Contemporary Korean Version)। हमें भी, परमेश्वर पिता द्वारा आप पर और मुझ पर दिखाए गए प्रेम की महानता पर गहराई से विचार करना चाहिए। इस वचन को थामे हुए और उस पर मनन करते हुए, मुझे उत्पत्ति (Genesis) से यूसुफ की कहानी याद आई, जिसने कुछ समय पहले सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान मेरे दिल को गहराई से छू लिया था। सत्रह साल की कम उम्र में, यूसुफ को अपने भाइयों की नफ़रत के कारण मौत का सामना करना पड़ा और उसे फ़िरौन के अंगरक्षकों के कप्तान पोतीफ़र के घर में गुलाम के तौर पर बेच दिया गया (उत्पत्ति 37, 39)। फिर भी, दुख-तकलीफों के दौर से गुज़रने के बाद, जब वह तीस साल का हुआ, तो फ़िरौन के सपनों का मतलब बताने के बाद वह सबसे ऊँचे पद—मिस्र के प्रधानमंत्री—

पर पहुँचा (उत्पत्ति 41)। उसकी हैसियत में आया यह ज़बरदस्त बदलाव—एक युवा हिब्रू व्यक्ति का, जो कभी किसी दूसरे देश में सिर्फ़ एक गुलाम था, एक साम्राज्य का प्रधानमंत्री बन जाना—सचमुच हैरान करने वाला है, जब भी मैं इस पर सोचता हूँ।

जब मैंने हैसियत में आए इस अद्‌भुत बदलाव पर विचार किया, तो रोमियों अध्याय 5 की तीन आयतें ज़ोरदार ढंग से मेरे मन में आईं, जिन पर बहुत पहले एक सीनियर पादरी ने ज़ोर दिया था: "क्योंकि जब हम कमज़ोर ही थे, तो सही समय पर मसीह ने अधर्मियों के लिए अपनी जान दी" (रोमियों 5:6)। "लेकिन परमेश्वर हमारे प्रति अपने प्रेम को इस तरह दिखाता है कि जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिए मरा" (आयत 8)। "क्योंकि अगर जब हम दुश्मन थे, तब उसके बेटे की मौत के ज़रिए परमेश्वर से हमारा मेल-मिलाप हुआ, तो मेल-मिलाप होने के बाद, हम उसके जीवन के द्वारा निश्चित रूप से बचाए जाएँगे" (आयत 10)। इन आयतों पर एक-एक करके विचार करते हुए, मुझे एहसास हुआ कि यीशु मसीह में विश्वास के ज़रिए हमें जो हैसियत में बदलाव मिला है, वह यूसुफ के अनुभव किए गए बदलाव से कहीं ज़्यादा महान और शानदार है। हम सिर्फ़ मामूली या दीन गुलाम नहीं थे; हम बुरे, कमज़ोर पापी थे जो परमेश्वर के दुश्मन के तौर पर खड़े थे। हमारी खातिर, यीशु मसीह ने अपना लहू बहाया और अपनी जान दी, जिससे परमेश्वर के साथ हमारा पूरी तरह से मेल-मिलाप हो गया। इस तरह, अब हम परमेश्वर के दुश्मन नहीं रहे, बल्कि उसके पवित्र बच्चे बन गए हैं। जब हम इस सच्चाई का सामना करते हैं कि हमें—आपको और मुझे—बिना किसी कीमत के हैसियत में इतना बड़ा बदलाव मुफ़्त में मिला है, तो हम परमेश्वर के हमारे प्रति अनुग्रह और प्रेम की महानता और अद्‌भुत स्वभाव को माने बिना नहीं रह सकते, और दिल से उनका बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं।

1 यूहन्ना 3:1 के पहले हिस्से में, जो आज का वचन है, प्रेरित यूहन्ना अपने पत्र को पढ़ने वालों से पूरे जोश के साथ कहता है: "देखो पिता ने हमें कैसा प्रेम दिया है, कि हम परमेश्वर की संतान कहलाएँ; और हम हैं भी..." (NKJV)। "सोचो कि पिता परमेश्वर ने हम पर कितना महान प्रेम किया है। उस महान प्रेम के ज़रिए, हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं..." (Contemporary Korean Version)। यूहन्ना यहूदी ईसाइयों से आग्रह करते हैं कि वे परमेश्वर पिता के दिखाए गए महान प्रेम पर गहराई से विचार करें; वे कहते हैं कि इसी अद्‌भुत प्रेम के कारण हम परमेश्वर की संतान बने हैं। इन शब्दों का अर्थ स्पष्ट है: यह बुनियादी बात कि हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं, इस बात का सबसे बड़ा सबूत है कि परमेश्वर पिता ने हम पर कितना असीम प्रेम

बरसाया है। यूहन्ना इस बात पर ज़ोर देते हैं कि हम—जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं—पूरी तरह से समझें कि "परमेश्वर की संतान" कहलाने का सौभाग्य मिलना कितनी बड़ी कृपा है। इसलिए, अगले वचन (वचन 2) के पहले भाग में, वे इस प्रभावशाली सच्चाई को फिर से दोहराते हैं: "प्रिय लोगों, अब हम परमेश्वर की संतान हैं..." (NKJV)। "प्यारे दोस्तों, अब हम परमेश्वर की संतान हैं..." (Contemporary Korean Version)।

तो फिर, आप और मैं परमेश्वर की संतान कैसे बने? हम—जो कभी परमेश्वर के दुश्मन और क्रोध के पात्र थे—उनके पवित्र बेटे और बेटियों के रूप में अपनाए जाने का सम्मान कैसे पा सके? इस अद्भुत रहस्य के धार्मिक अर्थ को स्पष्ट रूप से समझने के लिए, हमें पवित्रशास्त्र में बताई गई कृपा की रूपरेखा—"मुक्ति का क्रम" (*Ordo Salutis*)—को देखना होगा। यह शब्द उस प्रक्रिया को बताता है जिसके द्वारा मसीह में पूरा किया गया मुक्ति का काम, पवित्र आत्मा के काम के ज़रिए पापियों के दिलों और जीवन में व्यक्तिगत रूप से महसूस किया और लागू किया जाता है। बाइबल के अनुसार, कृपा की इस यात्रा को आमतौर पर नौ चरणों में बांटा गया है: (1) बुलाहट, (2) नया जन्म (पुनर्जन्म), (3) मन-परिवर्तन (पश्चाताप), (4) विश्वास, (5) धर्मी ठहराया जाना (न्यायसंगत ठहराया जाना), (6) अपनाए जाना (Adoption), (7) पवित्रीकरण, (8) संतों का दृढ़ बने रहना (Perseverance of the Saints), और (9) महिमा पाना। इनमें से छठा चरण है "अपनाए जाना"—यह शानदार घोषणा कि आप और मैं परमेश्वर की कानूनी संतान बन गए हैं। रोमियों 8:15 इस बात की गवाही देता है: "क्योंकि तुम्हें फिर से डर की गुलामी की आत्मा नहीं मिली, बल्कि तुम्हें अपनाए जाने की आत्मा मिली है, जिसके द्वारा हम पुकारते हैं, 'अब्बा, पिता'" (NKJV)। "तुम्हें गुलामी की ऐसी आत्मा नहीं मिली है जो तुम्हें फिर से डराए, बल्कि पवित्र आत्मा मिली है जो तुम्हें परमेश्वर की संतान बनाती है। इसलिए, पवित्र आत्मा के द्वारा हम परमेश्वर को 'मेरे पिता' कहकर बुलाते हैं।"

अगर हम इसे दूसरी तरफ़ से देखें, तो उस दुखद सच्चाई का पता चलता है जिसका सामना मैंने और आपने यीशु मसीह पर विश्वास करने से पहले किया था। असल में हम डर से कांपने वाले लोग थे, जो "गुलामी की भावना" से बंधे थे और जिससे मन में डर पैदा होता था। दूसरे शब्दों में, हम असल में "पाप के गुलाम" थे और पवित्रता से हमारा कोई नाता नहीं था (रोमियों 6:17, 20)। प्रेरित यूहन्ना ने भी यूहन्ना 8:34 में कहा है कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का गुलाम है। पाप के गुलाम के तौर पर जीते हुए (रोमियों 6:6) और अपने

शरीर में काम करने वाली "पापी इच्छाओं" का पालन करते हुए, हमने सिर्फ़ दुखद फल पाए, जो आखिर में मौत की ओर ले गए (7:5)। उस समय, हमारे आध्यात्मिक पिता परमेश्वर नहीं, बल्कि शैतान थे। यूहन्ना 8:44 हमारी शर्मनाक पुरानी पहचान को साफ़-साफ़ बताता है: "तुम अपने पिता, शैतान के हो, और तुम अपने पिता की इच्छाओं को पूरा करना चाहते हो। वह शुरू से ही हत्यारा था, सच पर नहीं टिका, क्योंकि उसमें कोई सच्चाई नहीं है। जब वह झूठ बोलता है, तो वह अपनी असली भाषा बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है।" संक्षेप में, परमेश्वर की कृपा से यीशु पर विश्वास करने से पहले, हम क्रोध की संतान थे, शैतान—"झूठ का पिता"—के राज में जी रहे थे और उसकी इच्छाओं को पूरा कर रहे थे। और क्योंकि "पाप की मज़दूरी मौत है" (रोमियों 6:23), हम ऐसे लोग थे जिनके पास कोई उम्मीद नहीं थी, और हम हमेशा की बर्बादी और नरक की सज़ा से बच नहीं सकते थे।

फिर भी, मैं और आप—जो कभी उस हालत में थे—अब एक ऐसे जीवन में आ गए हैं जहाँ हम हमेशा के जीवन का आनंद ले सकते हैं। 1 यूहन्ना 2:17 में, प्रेरित यूहन्ना एक शानदार उम्मीद की बात करते हैं: "दुनिया और उसकी इच्छाएँ खत्म हो जाती हैं, लेकिन जो कोई परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह हमेशा बना रहता है।" हम, जो कभी पाप के गुलाम थे और जिनकी किस्मत में हमेशा की मौत लिखी थी, हमें यह हमेशा का जीवन कैसे मिला? यूहन्ना 3:16 इसका एकमात्र जवाब देता है: "क्योंकि परमेश्वर ने दुनिया से इतना प्यार किया कि उसने अपना इकलौता बेटा दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, बल्कि हमेशा का जीवन पाए।" शैतान की संतान के रूप में जन्म लेने और मौत का सामना करने के बाद, हमेशा का जीवन और एक बदली हुई स्थिति पाने का राज़ सिर्फ़ यीशु मसीह में हमारे विश्वास में है। यीशु परमेश्वर के इकलौते बेटे हैं जिनसे परमेश्वर इतना प्यार करते थे कि उन्होंने उन्हें हमारे लिए दे दिया। यूहन्ना 1:12 में, प्रेरित यूहन्ना उन लोगों को मिले शानदार स्वर्गीय अधिकार के बारे में बताते हैं जिनके पास यह विश्वास है: "लेकिन जिन लोगों ने उन्हें अपनाया, जिन्होंने उनके नाम पर विश्वास किया, उन्हें परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया गया।"

1 यूहन्ना 2:29 में—एक ऐसा हिस्सा जिस पर हमने पहले ही विचार किया है—प्रेरित यूहन्ना बेटे होने के इस रहस्य की पुष्टि करते हैं: "अगर आप जानते हैं कि वह धर्मी है, तो आप जानते हैं कि जो कोई भी सही काम करता है, वह उसी से पैदा हुआ है।" "जो कोई भी सही काम करता है, वह उसी से पैदा हुआ है" वाक्यांश

उन विश्वासियों की पहचान को पूरी तरह से बताता है जो यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से फिर से पैदा हुए हैं। जैसे परमेश्वर स्वभाव से ही धर्मी हैं, वैसे ही जो लोग फिर से पैदा हुए हैं, वे "धर्मी लोग" बन गए हैं—यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में विश्वास के माध्यम से एक बार और हमेशा के लिए धर्मी ठहराए गए हैं (रोमियों 4:25)। इसलिए, इस धर्मी स्थिति को प्राप्त करने के बाद, हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जो लगातार धार्मिकता का अभ्यास करे, और हमारे भीतर रहने वाली पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित हो। विशेष रूप से, इसका मतलब है ठीक वैसे ही चलना जैसे "यीशु मसीह, जो धर्मी हैं" (1 यूहन्ना 2:1) चले (1 यूहन्ना 2:6)। दूसरे शब्दों में, हमें प्रभु द्वारा दिए गए प्रेम के आदेश का खुशी-खुशी पालन करते हुए जीना चाहिए (पद 7-11)। संक्षेप में, 1 यूहन्ना 2:29 में बताए गए "धार्मिकता का अभ्यास करने वाले" व्यक्ति का अर्थ है वह व्यक्ति जो प्रभु यीशु मसीह में बना रहता है और प्रभु के आदेशों के अनुसार अपने भाइयों से दिल से प्यार करता है। आज्ञाकारिता का वही जीवन—अपने पड़ोसी से प्यार करना—ही बाइबल में बताई गई धार्मिकता का अभ्यास है। वास्तव में, जो लोग इस तरह धार्मिकता का अभ्यास करते हुए जीते हैं, वे ही "उसी से पैदा हुए" हैं—धर्मी परमेश्वर की सच्ची संतान। इसीलिए प्रेरित यूहन्ना हमें हर दिन उस असीम प्रेम पर गहराई से मनन करने के लिए ज़ोरदार आग्रह करते हैं जो परमेश्वर पिता ने हम पर बरसाया है, सिर्फ़ इस अद्भुत सच्चाई को ध्यान में रखते हुए कि हम "परमेश्वर की संतान" बन गए हैं (3:1)।

(पद 1) परमेश्वर का प्रेम इतना महान है कि इसे न तो जीभ से और न ही कलम से पूरी तरह बताया जा सकता है; यह सबसे ऊँचे तारों से भी परे है और धरती की गहराई तक पहुँचता है। पाप से दागदार आत्मा को बचाने के लिए, उन्होंने अपने पुत्र को प्रायश्चित के बलिदान के रूप में भेजा और हमें क्षमा प्रदान की।
(पद 2) जब मुश्किल समय बीत जाता है और दुनिया की शान-शौकत फीकी पड़ जाती है, और जो लोग प्रभु पर विश्वास नहीं करते वे दुख में चिल्लाते हैं, तब वह उन संतों पर बहुत प्रेम बरसाते हैं जो उस पर भरोसा करते हैं, और हमारे पापों को क्षमा करते हैं—हम ऐसी कृपा को कैसे भूल सकते हैं?
(पद 3) अगर आकाश एक कागज़ का टुकड़ा होता और समुद्र स्याही का बना होता, तब भी हम परमेश्वर के असीम प्रेम को लिख नहीं पाते। कोई परमेश्वर के महान प्रेम के बारे में पूरी तरह कैसे लिख सकता है? अगर उसे स्वर्ग जितना ऊँचा भी ढेर किया जाए, तब भी वह उसमें समा नहीं सकता।

<कोरस> परमेश्वर का महान प्रेम नाप-जोख से परे है; एक ऐसा प्रेम जो कभी नहीं बदलता—हे संतों, आओ हम उसकी स्तुति करें। (नई भजन-पुस्तक संख्या 304, "परमेश्वर का प्रेम")

तो, यदि हम उस अपार प्रेम के कारण "परमेश्वर की संतान" बन गए हैं जो उसने हम पर बरसाया है, तो हमें कैसे जीना चाहिए? जैसा कि हमने पहले 1 यूहन्ना 2:27–28 पर मनन किया था, परमेश्वर की संतान होने का शानदार दर्जा पाने के बाद, हमें "मसीह में" अपना जीवन वास्तव में कैसे जीना चाहिए? आज के वचन—1 यूहन्ना 3:1–10—पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं विश्वास के जीवन और उन आध्यात्मिक शिक्षाओं के पाँच पहलुओं को साझा करना चाहता हूँ जिन्हें हमें प्रभु में अपनाना है।

पहला, परमेश्वर की संतान के रूप में, हमें यह याद रखना चाहिए कि दुनिया हमें इसलिए नहीं पहचानती क्योंकि वे परमेश्वर पिता को नहीं जानते। आज के वचन, 1 यूहन्ना 3:1 को देखें: "देखो पिता ने हमें कैसा प्रेम दिया है, कि हम परमेश्वर की संतान कहलाएँ; और हम हैं भी। दुनिया हमें इसलिए नहीं जानती क्योंकि उसने उसे नहीं जाना" (ESV)। "सोचिए कि परमेश्वर पिता ने हम पर कितना महान प्रेम किया है। उस महान प्रेम के कारण, हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं। हालाँकि, दुनिया हमें इसलिए नहीं पहचानती क्योंकि वे पिता को नहीं जानते" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। इस दुनिया के लोग जो यीशु में विश्वास नहीं करते, वे हमें नहीं जानते। वे उस रहस्यमयी सच्चाई को नहीं समझ सकते कि हम "परमेश्वर की संतान" हैं (पद 1-2)। वे उस आध्यात्मिक भावना को न तो महसूस कर सकते हैं और न ही समझ सकते हैं जो हमें तब होती है जब हम स्वीकार करते हैं कि हमने "गोद लिए जाने की आत्मा" प्राप्त की है और पुकारते हैं, "अब्बा! पिता!" (रोमियों 8:15)। इसका कारण क्या है? जैसा कि 1 यूहन्ना 3:1 के बाद वाले हिस्से में कहा गया है, इसका कारण यह है कि वे "पिता को नहीं जानते।" एक तरह से, यह बिल्कुल स्वाभाविक परिणाम है। चूँकि इस दुनिया के लोग यीशु—परमेश्वर के पुत्र—में विश्वास नहीं करते हैं और इसलिए उन्हें परमेश्वर पिता का कोई आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है, तो वे भला आपकी और मेरी पहचान को उनकी संतान के रूप में कैसे पहचान सकते हैं?

वास्तव में, पहली सदी में भी जब प्रेरित यूहन्ना ने यह पत्र लिखा था, झूठे मसीह-विरोधी हर जगह प्रकट हुए और संतों को धोखा दिया। उन्होंने न केवल परमेश्वर पिता और पुत्र यीशु को पूरी तरह से नकारा (1 यूहन्ना 2:22), बल्कि इस बात से भी इनकार किया कि यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं (पद 23) और यह कि वे शरीर धारण करके इस पृथ्वी पर आए थे (2 यूहन्ना 1:7)। तो फिर, एक अविश्वासी दुनिया—जो परमेश्वर पिता और उनके पुत्र यीशु को नकारती है और जोर-शोर से घोषणा करती है कि वह उन्हें नहीं जानती—हमें कैसे पूरी तरह से समझ सकती है, जो यीशु में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर की संतान बन गए हैं? इसलिए, भले ही दुनिया हमें स्वीकार न करे या हमें गलत समझे, हमें विचलित होने या इसे अजीब मानने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि दुनिया का अस्वीकार करना ही इस बात का सबसे स्पष्ट प्रमाण है कि हम परमेश्वर के हैं।

1 कुरिन्थियों 2:14 इस आध्यात्मिक रहस्य पर स्पष्ट प्रकाश डालता है: “जिस व्यक्ति में आत्मा नहीं है, वह परमेश्वर की आत्मा से आने वाली बातों को स्वीकार नहीं करता बल्कि उन्हें मूर्खता मानता है, और उन्हें समझ नहीं सकता क्योंकि उन्हें केवल आत्मा के माध्यम से ही समझा जा सकता है” (NIV)। प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों को लिखते हुए, "बिना आत्मा वाले व्यक्ति" (यानी वह व्यक्ति जिसमें परमेश्वर की आत्मा नहीं है) और "आत्मिक व्यक्ति" के बीच एक बड़ा अंतर बताया है (1 कुरिन्थियों 2:14–15)। "आत्मिक व्यक्ति," जिसके भीतर पवित्र आत्मा का वास होता है, वह "महिमा के प्रभु" को पहचानता है क्योंकि उसके पास परमेश्वर से मिली बुद्धि होती है (पद 7–8)। इसके विपरीत, "बिना आत्मा वाला व्यक्ति" केवल इस दुनिया की बुद्धि के अनुसार चलता है और परमेश्वर की गहरी बुद्धि से अनजान रहता है; इसी कारण, उन्होंने महिमा के प्रभु को क्रूस पर चढ़ाने जैसी दुखद गलती की (पद 6, 8)। जहाँ इंसानी दिल और बुद्धि महिमा के प्रभु की कल्पना भी नहीं कर सकते थे, वहीं परमेश्वर ने इस गहरे रहस्य को केवल पवित्र आत्मा के ज़रिए हमारे सामने प्रकट किया है (पद 9–10)। पौलुस आगे कहते हैं: "हमें दुनिया की आत्मा नहीं, बल्कि परमेश्वर की ओर से आने वाली आत्मा मिली है, ताकि हम समझ सकें कि परमेश्वर ने हमें क्या-क्या मुफ्त में दिया है" (पद 12)।

इस आध्यात्मिक सिद्धांत को आज ही अपने जीवन में अपनाएँ। हम, जो यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता मानते हैं, हमें दुनिया की आत्मा नहीं, बल्कि परमेश्वर की ओर से आने वाली पवित्र आत्मा मिली है। इसलिए, हम परमेश्वर द्वारा हमें कृपापूर्वक दिए गए पुत्र होने के अधिकार और आध्यात्मिक आशीषों को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं और उनका आनंद ले सकते हैं। इसके विपरीत, जो लोग यीशु पर विश्वास नहीं करते, वे

दुनिया की आत्मा के अधीन रहते हैं और उन्हें परमेश्वर से पवित्र आत्मा कभी नहीं मिली होती। स्वाभाविक रूप से, उनके लिए परमेश्वर द्वारा अपनी कृपा से दिए गए वरदानों को समझना असंभव है। जो लोग अविश्वासी हैं और जिनका नया जन्म नहीं हुआ है, उन्हें पवित्र आत्मा की बातें केवल मूर्खतापूर्ण और बेतुकी लगती हैं। वे सच्चाई को न तो जान सकते हैं और न ही स्वीकार कर सकते हैं क्योंकि उनमें आध्यात्मिक बातों को समझने के लिए आध्यात्मिक दृष्टि का अभाव होता है (पद 14)। अंततः, अविश्वासी दुनिया—जिसमें आध्यात्मिक समझ नहीं है—कभी भी अनंत परमेश्वर पिता को नहीं जान सकती (1 यूहन्ना 3:1)। चूँकि वे पिता को नहीं जानते, इसलिए वे उन लोगों की पहचान भी नहीं कर पाते जो परमेश्वर के अनंत प्रेम के कारण उसकी संतान बन गए हैं।

इब्रानियों 11 में बताए गए विश्वास के नायकों की तरह, हमें अपने जीवन से यह गवाही देनी चाहिए कि यह दुनिया हमारा अनंत विश्राम-स्थान नहीं है। इब्रानी 11:13 इस बात की गवाही देता है: "ये सभी लोग उस बात पर विश्वास करते हुए मरे जिसका परमेश्वर ने उनसे वादा किया था। उन्हें वादा की गई चीज़ें तो नहीं मिलीं, लेकिन उन्होंने उन सबको दूर से देखा और उनका स्वागत किया। उन्होंने स्वीकार किया कि वे इस धरती पर विदेशी और घुमक्कड़ थे" (NLT)। "ये सभी लोग विश्वास के साथ जिए और मरे। उन्हें वादा की गई चीज़ें नहीं मिलीं, लेकिन उन्होंने उन्हें दूर से देखा और आनंदित हुए। और उन्होंने स्वीकार किया कि वे इस दुनिया में थोड़े समय के लिए रहने वाले यात्री मात्र थे" (Contemporary Korean Version)। परिभाषा के अनुसार, 'विदेशी' का अर्थ है वह व्यक्ति जिसके पास किसी दूसरे देश की नागरिकता हो। दूसरे शब्दों में, हम इस धरती के नहीं हैं; हम परमेश्वर के राज्य के अनंत नागरिक हैं। प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पियों 3:20 में हमारी सच्ची निष्ठा को स्पष्ट रूप से घोषित किया: "लेकिन हमारी नागरिकता स्वर्ग में है।" इस धरती पर रहते हुए, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम यात्री हैं। यात्री वह व्यक्ति होता है जो कुछ समय के लिए कहीं और रहने के लिए अपना गृहनगर या निवास स्थान छोड़ देता है। हम यहाँ हमेशा रहने के लिए बसने वाले नहीं हैं, बल्कि "एक देश की तलाश करने वाले" हैं—ऐसे यात्री जो अपने हमेशा के घर की ओर बढ़ रहे हैं (इब्रानियों 11:14)। विश्वास रखने वाले हमारे पूर्वजों की तरह, हम भी एक ऐसे देश की तलाश में हैं जो इस दुनिया का नहीं है (पद 14)। बाइबल गवाही देती है कि हम "एक बेहतर देश—स्वर्गीय देश—की चाहत रखते हैं" (पद 16)। हम परमेश्वर के राज्य के नागरिक हैं, उस नागरिकता को अपने दिलों में लिए हुए हैं, और आध्यात्मिक यात्री हैं जो उस हमेशा रहने वाले "स्वर्गीय शहर" की ओर बढ़ रहे हैं जिसे खुद परमेश्वर ने तैयार किया है (पद

10)। हो सकता है कि दुनिया हमें न पहचाने या न अपनाए क्योंकि हम अलग नागरिकता वाले विदेशी हैं—बस कुछ समय के लिए यहाँ से गुज़रने वाले यात्री। इसलिए, हमें पूरे भरोसे के साथ इस तीर्थयात्रा के रास्ते पर चलना चाहिए और स्वर्ग के सच्चे नागरिकों की तरह जीना चाहिए।

(पद 1) मैं रोज़ ऊपर की ऊँचाइयों की ओर बढ़ता हूँ; पूरे दिल और लगन से, मैं हर दिन प्रार्थना करता हूँ। (पद 4) मैं इस ऊबड़-खाबड़, खड़ी चढ़ाई वाले रास्ते पर संघर्ष करते हुए आगे बढ़ता हूँ; मैं फिर से प्रार्थना करता हूँ—हे प्रभु, मेरा मार्गदर्शन कर।

<कोरस> हे प्रभु, मेरे दिल को थामे रख और मुझे वहीं बनाए रख; एक ऐसी जगह जहाँ रोशनी और प्यार हमेशा बना रहे। [नया भजन संग्रह नं. 491, “ऊँचे स्थान की ओर बढ़ना”]

दूसरी बात, परमेश्वर की संतान होने के नाते, जब भविष्य में यीशु वापस आएंगे, तो हम उनके जैसे बन जाएंगे और उन्हें वैसा ही देखेंगे जैसे वे असल में हैं।

हालाँकि हमने परमेश्वर की संतान होने का शानदार दर्जा पा लिया है, लेकिन यह अंत नहीं है; हमारे पास भविष्य के लिए एक उम्मीद है जो अभी पूरी होनी बाकी है। आज का वचन, 1 यूहन्ना 3:2, कहता है: "प्यारे लोगों, अभी हम परमेश्वर की संतान हैं; और अभी यह पता नहीं चला है कि हम क्या बनेंगे, लेकिन हम जानते हैं कि जब वे प्रकट होंगे, तो हम उनके जैसे होंगे, क्योंकि हम उन्हें वैसा ही देखेंगे जैसे वे हैं" (NKJV)। "प्रिय दोस्तों, हम अभी परमेश्वर की संतान हैं। हमें अभी नहीं पता कि हम क्या बनेंगे, लेकिन जब यीशु प्रकट होंगे, तो हम उनके जैसे बन जाएंगे और उन्हें वैसा ही देखेंगे जैसे वे असल में हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। एक ईसाई की सबसे बड़ी उम्मीद यीशु मसीह का दोबारा आना है। जो लोग इस उम्मीद को संजोकर रखते हैं, उनके लिए सच्चा धैर्य उस जीवन में मिलता है जो यीशु की वापसी के लिए प्रार्थना करता है, उम्मीद करता है और इंतज़ार करता है। क्या सच में आपके अंदर ऐसी पवित्र उम्मीद है?

जो संत यीशु के दोबारा आने का इंतज़ार करते हैं, वे उन लोगों की तरह निराशा में दुखी नहीं होते जो विश्वास नहीं करते और अपनों की मौत के समय जिनके पास कोई उम्मीद नहीं होती। जैसा कि 1 थिस्सलुनीकियों 4:13–14 में कहा गया है, ऐसा इसलिए है क्योंकि हमें पक्का विश्वास है कि यीशु मरे और फिर जी उठे।

इसके अलावा, क्योंकि हमें विश्वास है कि जब परमेश्वर वापस आएंगे, तो वे अपने साथ उन्हें भी लाएंगे जो यीशु में सो गए हैं (मर गए हैं), इसलिए हम मौत के समय भी जी उठने की उम्मीद देखते हैं। इसलिए, परमेश्वर के बच्चे जो उनकी वापसी की उम्मीद करते हैं और उसके लिए तैयारी करते हैं, वे जानते हैं कि इस धरती पर जीवन ही सब कुछ नहीं है। क्योंकि हम उस शानदार दिन का इंतज़ार करते हैं, इसलिए हम आज अपना जीवन "उम्मीद में खुशी मनाते हुए, मुश्किलों में धैर्य रखते हुए और प्रार्थना में लगातार लगे रहते हुए" (रोमियों 12:12) जी पाते हैं। जिस दिन हम प्रभु के रूप में बदल जाएंगे और उन्हें आमने-सामने देखेंगे, वही दिन हमारे लिए सुकून और जीत का स्रोत है।

जब हम शुरुआती चर्च और यीशु के दोबारा आने की उसकी उम्मीद के बारे में सोचते हैं, तो सबसे पहले थिस्सलुनीका का चर्च याद आता है। वे "उम्मीद का एक शानदार समुदाय" थे जो भारी सतावट और मुश्किलों के बीच भी प्रभु की वापसी का अटूट इंतज़ार करते थे। 1 थिस्सलुनीकियों 1:9–10 उनके ज़बरदस्त विश्वास की गवाही देता है: "क्योंकि वे खुद हमारे बारे में बताते हैं कि आपके बीच हमारा कैसा स्वागत हुआ, और कैसे आप मूर्तियों को छोड़कर परमेश्वर की ओर मुड़े ताकि जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा कर सकें, और स्वर्ग से उनके बेटे का इंतज़ार कर सकें, जिसे उन्होंने मरे हुओं में से जिलाया—वही यीशु जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है।" प्रेरित पौलुस से सुसमाचार सुनने से पहले, थिस्सलुनीका के विश्वासी गैर-यहूदी थे जो मूर्तियों की पूजा करते थे। उस समय, वे एक ऐसे अंधेरे धार्मिक जीवन में डूबे हुए थे जिसमें यौन अनैतिकता और मूर्तिपूजा से जुड़ी शराब की पार्टियाँ शामिल थीं। हालाँकि, जब मसीह का सुसमाचार उन तक पहुँचा, तो उनमें एक अद्‌भुत बदलाव आया। उन्होंने अपनी मूर्तियों को पूरी तरह से त्याग दिया और परमेश्वर की ओर मुड़ गए। नतीजतन, वे पूरी तरह से पवित्र उपासकों में बदल गए जो केवल जीवित और सच्चे परमेश्वर का आदर करते थे और उनके वचन का पालन करते थे। उनका विश्वास सिर्फ़ मूर्तियों को छोड़ने तक ही सीमित नहीं रहा; यह एक ऐसी उम्मीद में बदल गया जो स्वर्ग से यीशु के दोबारा आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी (पद 10)। थिस्सलुनीके की कलीसिया के विश्वासियों ने बहुत सारी मुश्किलों के बावजूद पवित्र आत्मा से मिली खुशी के साथ परमेश्वर के वचन को अपनाया। नतीजतन, वे उन लोगों की श्रेणी में आ गए जो प्रभु की नकल करते हैं और सुसमाचार प्रचारकों के उदाहरण का पालन करते हैं (पद 6)। जिस मुख्य शक्ति ने उन्हें हर मुश्किल से उबरने और प्रभु जैसा बनने में मदद की, वह थी: परमेश्वर का वचन। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में मज़बूती से थामे रखा और अपनाया—बड़ी तकलीफों के बावजूद पवित्र

आत्मा में खुशी पाई—इसलिए वे आखिरकार प्रभु के आगमन के पवित्र गवाह बन पाए। हम भी, जो 1 यूहन्ना में बताई गई प्रभु के स्वरूप में बदलने की उम्मीद रखते हैं, हमें भी उनके ही समान प्रभु के वचन के ज़रिए प्रभु की नकल करते हुए जीवन जीना चाहिए।

प्रियजनों, पवित्र आत्मा का अद्भुत काम तब सबसे ज़्यादा चमकता है जब हम बहुत ज़्यादा दुख और दर्द से गुज़र रहे होते हैं। मुश्किलों के बीच, पवित्र आत्मा हमारे अंदर परमेश्वर के वचन के लिए गहरी चाहत पैदा करता है और हमें उसे विनम्रता से अपने दिलों में अपनाने के लिए प्रेरित करता है। इसके अलावा, वह हमें परमेश्वर की ज़ाहिर की गई इच्छा का पूरी तरह से पालन करने की आध्यात्मिक शक्ति देता है। इस प्रक्रिया के ज़रिए, पवित्र आत्मा हमें दुख की भट्टी में वचन के द्वारा ढालता है, हमें पवित्र करता है और आखिरकार हमें प्रभु जैसा बनाता है। रोमियों 8:29 में, प्रेरित पौलुस कहते हैं, "क्योंकि जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जाना, उन्हें उसने पहले से ही यह ठहराया कि वे उसके पुत्र के स्वरूप में ढलें।" *ह्युंडई-इन-उई सोंग-ग्योंग* (आधुनिक कोरियाई बाइबल) इसका स्पष्ट अनुवाद करती है: "परमेश्वर ने जिन्हें पहले से जाना, उन्हें पहले से ही ठहराया ताकि वे उसके पुत्र के स्वरूप जैसे बन सकें।" इस अंश में, तीन मुख्य शब्द हैं जिन पर हमें ध्यान देना चाहिए: "पहले से जानना" (foreknowledge), "पहले से ठहराना" (predestination), और "उसके पुत्र के स्वरूप में ढलना" (being conformed to the image of His Son)। इसके पीछे एक गहरा आध्यात्मिक कारण है कि परमेश्वर के इन तीन संप्रभु कार्यों को रोमियों 8:29 में एक साथ बताया गया है। यह रहस्य तब खुलता है जब हम इस आयत पर पिछली आयतों—खासकर आयत 28 और उससे भी पहले की आयत 18—के संदर्भ में विचार करते हैं। परमेश्वर ने हमें ये शब्द यह भरोसा दिलाने के लिए दिए कि "हमारे वर्तमान दुख उस महिमा के सामने कुछ भी नहीं हैं जो हममें प्रकट होगी" (आयत 18)। इसके अलावा, वह चाहते थे कि हम समझें कि हमारे दुख के बीच भी, इस वादे का अंतिम लक्ष्य कि "सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं" (आयत 28), यह है कि हम प्रभु के स्वरूप में ढल जाएं (आयत 29)। तो फिर, हमारे उद्धार के संबंध में परमेश्वर के इन तीन महान कार्यों का विशेष महत्व क्या है? इस लेख के माध्यम से, मैं इस गहरी कृपा की कड़ी को कदम-दर-कदम समझना चाहूंगा।

(1) जॉन स्टॉट और जॉन मरे ने "पहले से जानना" (foreknowledge) के बारे में बहुत गहरी बात कही है कि बाइबिल में "जानना" शब्द का इस्तेमाल लगभग "प्यार करना" के अर्थ में किया गया है। दूसरे शब्दों में, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जाना, वे वही लोग हैं जिनसे उसने अनंत काल से पहले ही प्यार किया था।

परमेश्वर का यह पहला काम बताता है कि उसने खुद अपने लोगों को चुना और उनसे प्यार किया। इसलिए, जो लोग परमेश्वर के मकसद के अनुसार बुलाए गए हैं, उनके लिए सब कुछ भलाई के लिए ही काम करता है (रोमियों 8:28)।

(2) "पहले से तय करना" (Predestination) का मतलब है परमेश्वर का पहले से ही कुछ तय कर देना या "पहले से नियुक्त करना"।

परमेश्वर का यह दूसरा काम दिखाता है कि उसने हमारी अनंत नियति (destiny) को पहले से ही तय और निश्चित कर दिया है। और वह आखिरी नियति—जिसे उसने तय और निश्चित किया है—और कुछ नहीं बल्कि "यीशु मसीह के स्वरूप में ढलना" है। दूसरे शब्दों में, हमारी ज़िंदगी की सभी घटनाएँ भलाई के लिए इसलिए काम करती हैं क्योंकि यह पूरी प्रक्रिया हमें सक्रिय रूप से मसीह के पूर्ण परिपक्व स्वरूप जैसा बना रही है। हमें इसी पवित्र मकसद के लिए चुना गया और हमसे प्यार किया गया, और हमें इसी लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए पहले से तय किया गया था।

(3) "उसके बेटे के स्वरूप में ढलना" वह आखिरी मंज़िल है जिसकी ओर परमेश्वर के ऊपर बताए गए दो काम—"पहले से जानना" (पहले से प्यार करना) और "पहले से तय करना" (पहले से नियुक्त करना)—निर्देशित हैं।

वह एकमात्र मकसद जिसके लिए परमेश्वर ने हमसे पहले से प्यार किया और हमें चुना, और जिसके लिए उसने पवित्रता से हमारी नियति तय की, वह यह है कि हम आखिरकार यीशु मसीह के महिमामय स्वरूप को पूरी तरह से अपना सकें। आज के वचन, 1 यूहन्ना 3:2 में, प्रेरित यूहन्ना एक बार फिर संतों के भविष्य के बारे में घोषणा करता है: "हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की संतान हैं; और अभी यह ज़ाहिर नहीं हुआ है कि हम

क्या होंगे, लेकिन हम जानते हैं कि जब वह प्रकट होगा, तो हम उसके जैसे होंगे, क्योंकि हम उसे वैसा ही देखेंगे जैसा वह है" (NKJV)। "प्यारे दोस्तों, हम अभी परमेश्वर की संतान हैं। हम अभी नहीं जानते कि भविष्य में हम क्या बनेंगे, लेकिन जब यीशु प्रकट होगा, तो हम भी उसके जैसे बन जाएँगे और उसके असली स्वरूप को देखेंगे" (Contemporary Korean Version)। पहली और दूसरी आयत में, प्रेरित यूहन्ना उस शानदार दर्जे की पुष्टि करते हैं जो हमें पहले ही मिल चुका है—यानी "परमेश्वर की संतान" होने का दर्जा—और यह सब परमेश्वर पिता के हम पर किए गए महान प्रेम के कारण है। इसके तुरंत बाद, वे भविष्य की ओर देखते हैं और उस परम "आशा" को सामने लाते हैं जो हमें प्रभु के बारे में रखनी चाहिए (आयत 3)। इस आशा का मुख्य आधार यह वादा है कि जब भविष्य में यीशु फिर से प्रकट होंगे, तो हम पूरी तरह से प्रभु के स्वरूप को अपना लेंगे और उन्हें आमने-सामने देखेंगे, ठीक वैसे ही जैसे वे वास्तव में हैं (आयत 2)।

यहाँ एक दिलचस्प बात पर ध्यान देना ज़रूरी है। इससे पहले, 1 यूहन्ना 2:28 में, यूहन्ना ने प्रभु में बिताए गए जीवन के परिणाम के बारे में बात की थी: "...ताकि जब वे प्रकट हों, तो हमें भरोसा हो और उनके आने पर हमें उनके सामने शर्मिंदा न होना पड़े" (NKJV)। "तब, जब मसीह फिर से आएंगे, तो हम बिना किसी शर्म के पूरे भरोसे के साथ उनसे मिल सकेंगे" (Contemporary Korean Version)। यह निश्चित रूप से कोई संयोग नहीं है कि प्रेरित यूहन्ना ने 2:28 में "प्रभु के आने" की बात ज़ोर देकर कही और फिर 3:2 में "प्रभु के प्रकट होने" पर फिर से ज़ोर दिया, जिससे यह विषय और भी मज़बूत हो गया। जब हम इन दोनों अंशों पर एक साथ मनन करते हैं, तो हमें वह पवित्र और भविष्य से जुड़ी सीख मिलती है जो प्रेरित यूहन्ना ने अपनी पहली पत्री में पढ़ने वालों को दी है। इससे हमें उस असली मकसद का पता चलता है जिसके लिए हमें इस धरती पर जीना है: प्रभु की इच्छा का पालन करना, धार्मिकता का अभ्यास करना और एक-दूसरे से प्रेम करने की आज्ञा को मानना। हमारा लक्ष्य यह है कि प्रभु की वापसी के उस शानदार दिन हम उनके पूर्ण स्वरूप में हों, स्वर्गीय साहस पाएं और बिना किसी शर्म के एक दुल्हन की तरह उनके सामने खड़े हों। जब भविष्य में प्रभु प्रकट होंगे, तो हम उनके शानदार और असली स्वरूप को आमने-सामने देखेंगे, और हमारे बीच कोई पर्दा नहीं होगा (आयत 2)। प्रभु के दोबारा आने की वही दिल को छू लेने वाली आशा ही वह आध्यात्मिक कारण है जिसकी वजह से हमें आज धार्मिकता का अभ्यास करना चाहिए और अपनी पवित्रता की पूरी लगन से रक्षा करनी चाहिए। जब हम इस शानदार वादे पर गहराई से सोचते हैं, तो 1 कुरिन्थियों 13:12 के शब्द हमारे दिलों में ज़ोरदार ढंग से गूंजते हैं: "क्योंकि अभी हम आईने में धुंधला देखते हैं, लेकिन तब आमने-सामने देखेंगे। अभी मैं थोड़ा-बहुत जानता हूँ, लेकिन तब मैं वैसे ही जानूँगा जैसे मैं भी जाना जाता हूँ" (NKJV)।

"क्योंकि अभी हम साफ़-साफ़ नहीं देख पाते, जैसे आईने में देख रहे हों, लेकिन तब हम आमने-सामने देखेंगे; अभी मैं केवल थोड़ा-बहुत जानता हूँ, लेकिन तब मैं पूरी तरह से जानूँगा, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर मुझे जानते हैं" (Contemporary Korean Version)। प्यारे लोगों, जिस दिन प्रभु इस दुनिया में लौटेंगे, हम आखिरी तुरही की आवाज़ पर पलक झपकते ही बदल जाएँगे (1 कुरिन्थियों 15:51)। इस तरह, हम यीशु मसीह के शानदार स्वरूप में पूरी तरह ढल जाएँगे (1 यूहन्ना 3:2)। हमेशा बने रहने वाले, कभी न बदलने वाले सत्य के संसार में, हम प्रभु के तेजस्वी, सच्चे स्वरूप को देखेंगे—आईने में धुंधली परछाई की तरह नहीं, बल्कि साफ़-साफ़, आमने-सामने (1 यूहन्ना 3:2; 1 कुरिन्थियों 13:12)।

हम—जो कभी शर्मिंदा करने वाले पापी थे—प्रभु के बारे में इतनी बड़ी उम्मीद रख सकते हैं (1 यूहन्ना 3:3), यह पूरी तरह से परमेश्वर की कृपा और उस असीम प्रेम के कारण है जो पिता परमेश्वर ने हम पर भरपूर मात्रा में बरसाया है (1 यूहन्ना 3:1)। इसलिए, हमें उस शानदार दिन के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, उसकी उम्मीद करनी चाहिए और उसका इंतज़ार करना चाहिए जब हम प्रभु के सामने खड़े होंगे। इसके अलावा, आज जब हम अपना जीवन जी रहे हैं, तो हमारी सबसे सच्ची इच्छा और एकमात्र प्रार्थना यही होनी चाहिए कि "हम यीशु जैसे बनें।" भजन 452 के बोल, "मेरी सभी इच्छाएँ और प्रार्थनाएँ," जो इस दिल से निकली बात को पूरी तरह से बयां करते हैं, हमारी आत्मा में गहराई से गूंजते हैं: "मेरी सभी इच्छाएँ और प्रार्थनाएँ यीशु जैसा बनने की हैं; / उनका स्वरूप पाने के लिए, मैं इस दुनिया के खजानों में से कुछ भी नहीं रोकता। (कोरस) मैं यीशु जैसा बनना चाहता हूँ, जिन्होंने मुझे बचाया; / इसी पल मेरे दिल में आओ और मुझे अपने स्वरूप में ढाल लो।"

वैसे, क्या आप इन दिनों अपने हाथ ठीक से धो रहे हैं? हमें अपने हाथ अच्छी तरह क्यों धोने चाहिए? इसका कारण क्या है? मुझे एक ऑनलाइन लेख मिला जिसमें ऑस्ट्रेलिया की यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यू साउथ वेल्स के रिसर्चर्स द्वारा मेडिकल स्टूडेंट्स के साथ किए गए एक छोटे, दिलचस्प एक्सपेरिमेंट के बारे में बताया गया था। नतीजों से पता चला कि स्टूडेंट्स औसतन हर घंटे तेईस बार अपने चेहरे को छूते थे। खास बात यह है कि इनमें से 44% मामलों में वे सीधे म्यूकस मेम्ब्रेन (जैसे मुँह, नाक और आँखें) को छूते थे। यह खतरनाक है क्योंकि मुँह और नाक ही वे मुख्य रास्ते हैं जिनसे हर तरह के बैक्टीरिया और वायरस हमारे शरीर में घुसते हैं। वैसे तो चेहरे को बिल्कुल न छूना ही सबसे अच्छा है, लेकिन चूँकि हम अक्सर अनजाने में ऐसा करते हैं, इसलिए अपनी सेहत बनाए रखने के लिए सही तरीके से हाथ धोना बहुत ज़रूरी है। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल

द्वारा पब्लिश *हार्वर्ड हेल्थ लेटर* के अनुसार, अच्छी तरह से हाथ धोने से—यानी साबुन और बहते पानी से हर कोने को साफ़ करते हुए दो बार "हैप्पी बर्थडे" गाना गाने जितना समय लेकर—90% बैक्टीरिया खत्म हो जाते हैं। पिछले हफ़्ते, मैंने हमारे चर्च की किचन और रेस्टरूम में कुछ पोस्टर लगाए—जिन्हें मेरी पत्नी ने प्यार से बनाया था—जिनमें हाथ धोने का सही तरीका दिखाया गया है, और मैं खुद भी उन स्टेप्स को फ़ॉलो करने की पूरी कोशिश कर रहा हूँ। हमारी रूटीन की एक खास बात यह है कि आम "हैप्पी बर्थडे" गाने के बजाय, हम कीटाणुओं को धोते समय "जीसस लव्स मी" (यीशु मुझसे प्यार करते हैं) भजन गाते हैं।

तीसरी बात, जो लोग परमेश्वर के महान प्रेम के कारण उनके बच्चे बन गए हैं, उन्हें खुद को वैसे ही पवित्र करना चाहिए जैसे यीशु पवित्र हैं।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 3:3 में, प्रेरित यूहन्ना पवित्र संत के कर्तव्य के बारे में बताते हैं: "जिस किसी में भी यह आशा है, वह खुद को वैसे ही पवित्र करता है जैसे वे पवित्र हैं" (NKJV)। "जो कोई भी मसीह में यह आशा रखता है, उसे खुद को साफ़ रखना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यीशु साफ़ हैं" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। क्या आप जानते हैं कि लोहार चाँदी से मैल कैसे हटाता है? (नीतिवचन 25:4) चाँदी को भट्टी में रखकर बहुत तेज़ और झुलसा देने वाली गर्मी दी जाती है, तब जाकर अशुद्धियाँ—यानी मैल—अलग होने लगती हैं। हालाँकि, जो अशुद्धियाँ लंबे समय से धातु से चिपकी होती हैं, वे एक ही बार में आसानी से नहीं हटतीं। बिना दाग-धब्बे वाली शुद्ध चाँदी पाने के लिए, धातु को पिघलाने की प्रक्रिया से गुज़रना पड़ता है, जिसमें उसे बार-बार तेज़ गर्मी दी जाती है। एक लोहार अपनी मनचाही शुद्ध चांदी पाने के लिए कड़ी मेहनत—दमघोंटू गर्मी और पसीने से तर-बतर होने—से कभी पीछे नहीं हटता।

नीतिवचन 17:3 में यही प्रक्रिया हमारी आत्माओं पर लागू होती है: "चांदी के लिए मूषा और सोने के लिए भट्ठी है, लेकिन प्रभु दिल की परख करते हैं।" इस वचन का गहरा आध्यात्मिक महत्व है। जिस तरह एक लोहार चांदी को शुद्ध करने के लिए बार-बार आग में डालता है, उसी तरह परमेश्वर कभी-कभी हमारे दिलों को शुद्ध करने के लिए हमें "दुख की भट्ठी" से गुजारते हैं (यशायाह 48:10)। वे हमें परीक्षाओं और दुखों की भट्ठी

से गुजरने देते हैं ताकि सांसारिक पापों की अशुद्धियों और शरीर की उन लगातार इच्छाओं को दूर किया जा सके जो मैल की तरह हमसे चिपकी रहती हैं, और इस तरह हमें उनसे पूरी तरह मुक्त किया जा सके।

पुराने नियम के पात्र अय्यूब, इस तरह के विश्वास का एक बेहतरीन उदाहरण हैं। अपने दुख के बीच, उन्होंने अय्यूब 23:10 में यह शानदार घोषणा की: "लेकिन वह मेरे रास्ते को जानता है; जब वह मेरी परख कर लेगा, तो मैं सोने की तरह निखर कर बाहर आऊंगा।" तो फिर, परमेश्वर हमें दुख की भट्ठी से क्यों गुजारते हैं, ठीक वैसे ही जैसे चांदी से मैल को अलग किया जाता है? इसका जवाब नीतिवचन 25:4 के बाद वाले हिस्से में मिलता है: "...और सुनार के लिए एक पात्र तैयार हो जाएगा।" परमेश्वर का हमें दुख में डालने और अंततः शुद्ध, निखरे हुए सोने की तरह बाहर लाने का मुख्य उद्देश्य हमें ऐसे पात्रों के रूप में ढालना है जो प्रभु की दृष्टि में सबसे उपयोगी हों। 2 तीमुथियुस 2:21 इस उद्देश्य को स्पष्ट करता है: "इसलिए, यदि कोई व्यक्ति खुद को इन बुराइयों से शुद्ध करता है, तो वह सम्मान का पात्र बनेगा, पवित्र और स्वामी के लिए उपयोगी, और हर अच्छे काम के लिए तैयार होगा।"

परमेश्वर हमें शुद्ध करता है, हमें प्रभु के इस्तेमाल के लायक बनाता है, और आखिर में हमें आशीष का ज़रिया बनाता है जिनका इस्तेमाल प्रभु अपने सबसे खास मकसद के लिए करते हैं। नेक कामों के लिए हमारा इस्तेमाल करने की अपनी इच्छा में, प्रभु हमें सिर्फ़ दुख-तकलीफ की भट्टी में नहीं छोड़ते; बल्कि आखिर में वे हमें परमेश्वर के पवित्र "वचन" (नीतिवचन 30:5) से धोकर शुद्ध करते हैं। उस वचन की शुद्धता के बारे में भजन संहिता 12:6 में कहा गया है: "...मिट्टी की भट्टी में सात बार तपाए गए चांदी की तरह शुद्ध।" जैसे हम अनदेखे वायरस से बचने के लिए भजन गाते हुए अपने हाथों को अच्छी तरह धोते हैं, वैसे ही प्रभु परमेश्वर के वचन से—जो पूरी तरह शुद्ध और बेदाग है, जिसमें कोई अशुद्धि नहीं है—हमारे पापी दिलों के हर कोने को शुद्ध करते हैं। हमें खुद को उस पवित्र हाथ को सौंप देना चाहिए जो अपने वचन के ज़रिए हमें धोता और शुद्ध करता है।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 3:3 में, प्रेरित यूहन्ना एक बार फिर विश्वासियों को उनके जीवन के सही नज़रिए के बारे में समझाते हैं: "जिस किसी में भी यह उम्मीद है, वह खुद को शुद्ध करता है, ठीक वैसे ही जैसे वह शुद्ध है" (NKJV)। "जो कोई भी मसीह में यह उम्मीद रखता है, उसे खुद को शुद्ध रखना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यीशु शुद्ध हैं" (Contemporary Korean Version)। इन शब्दों का असली मतलब क्या है? पिता परमेश्वर

से बेपनाह प्यार पाकर और उनकी संतान बनकर, हम—जब यीशु वापस आएंगे—उनके जैसे ही पूर्ण रूप में बदल जाएंगे और उन्हें वैसा ही देखेंगे जैसे वे हैं (पद 2-3)। इसका मतलब है कि जो कोई भी इस शानदार उम्मीद को संजोता है, उसे धरती पर रहते हुए खुद को शुद्ध रखना चाहिए और अपने जीवन को बेहतर बनाना चाहिए, यीशु की शुद्धता के उदाहरण का पालन करते हुए—वे दूल्हे जिनसे वे एक दिन मिलेंगे।

तो, आखिर "यीशु की शुद्धता" क्या है जिसका हमें अनुकरण करना है? हमें इसका जवाब अगले वचनों, 1 यूहन्ना 3:4-5 में मिलता है: "जो कोई भी पाप करता है, वह व्यवस्था का उल्लंघन भी करता है; पाप व्यवस्था का उल्लंघन है। आप जानते हैं कि वे पापों को दूर करने के लिए आए थे, और उनमें कोई पाप नहीं है।" यह अंश एक नज़र में ही यीशु की शुद्धता के सार को उजागर करता है। यह इस घोषणा में मिलता है कि "उनमें कोई पाप नहीं है" (पद 5)—यानी, यीशु मसीह का पूरी तरह से पाप-रहित होना। दूसरे शब्दों में, प्रभु की पूर्ण पवित्रता—जिसमें कोई दाग या धब्बा नहीं है—और पाप से उनकी पूरी आज़ादी ही प्रेरित यूहन्ना द्वारा ज़ोर दी गई "यीशु की पवित्रता" (पद 3) का सार है। जो लोग प्रभु से मिलने की उम्मीद रखते हैं, उन्हें यीशु के इस बेदाग चरित्र का अनुकरण करना चाहिए और दुनिया की गंदगी से खुद को बचाना चाहिए।

प्रियजनों, हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह में एक भी पाप नहीं है (1 यूहन्ना 3:5)। पूरी बाइबल इस महान सत्य की एकमत गवाही देती है। इब्रानियों 4:15 हमारे प्रभु के बारे में यह घोषणा करता है: "क्योंकि हमारे पास ऐसा महायाजक नहीं है जो हमारी कमज़ोरियों के प्रति सहानुभूति न रख सके, बल्कि वह हर तरह से हमारी तरह परखा गया है, फिर भी पाप-रहित है।" इसके अलावा, 1 पतरस 2:22 प्रभु के बेदाग चरित्र का गुणगान करता है: "उन्होंने कोई पाप नहीं किया, और उनके मुँह में कोई छल नहीं पाया गया" (संशोधित नया कोरियाई संस्करण)। "मसीह ने कोई पाप नहीं किया, और उनके मुँह में कोई छल नहीं है" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। प्रेरित पौलुस भी, 2 कुरिन्थियों 5:21 में, इस पाप-रहित प्रभु द्वारा किए गए प्रायश्चित के रहस्य के बारे में अंतर को बहुत स्पष्ट रूप से समझाते हैं: "परमेश्वर ने उन्हें, जो पाप नहीं जानते थे, हमारी ओर से पाप बना दिया, ताकि हम उनमें परमेश्वर की धार्मिकता बन सकें" (संशोधित नया कोरियाई संस्करण)। "परमेश्वर ने हमारे पाप मसीह पर डाल दिए—जो पाप नहीं जानते थे—ताकि हम मसीह में परमेश्वर के सामने धर्मी माने जा सकें" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। इस प्रकार, यीशु वह पवित्र व्यक्ति हैं जो न तो पाप जानते थे, न ही उन्होंने कोई पाप किया, और मूल रूप से वे किसी भी पाप से मुक्त हैं। जब यह पूर्ण और पवित्र प्रभु

महिमा के साथ फिर से प्रकट होंगे, तो हम अंततः उनके जैसे बन जाएँगे और उनके महिमामय सच्चे स्वरूप को पूरी तरह से देख पाएँगे (1 यूहन्ना 3:2)। ठीक इसीलिए बाइबल कहती है, "जिस किसी में भी यह आशा है, वह खुद को शुद्ध करता है, ठीक वैसे ही जैसे वे शुद्ध हैं" (पद 3)। एक पाप-रहित दूल्हे से मिलने की तैयारी कर रही दुल्हन की तरह, हमें अपने दैनिक जीवन में पाप से दूर रहना चाहिए और प्रभु के बेदाग चरित्र का अनुकरण करते हुए खुद को शुद्ध रखना चाहिए। प्रेरित यूहन्ना द्वारा कहे गए 1 यूहन्ना 3:3 के शब्द हमें तीन गहरे आध्यात्मिक रहस्य बताते हैं, जो हमारे उद्धार के अतीत, वर्तमान और भविष्य को समेटे हुए हैं। (1) यह अंश उस "भविष्य की आशा" को दर्शाता है जिसे हम यीशु के लौटने पर साकार होते देखेंगे।

जब आखिरी तुरही फूंकी जाएगी, तो हम पलक झपकते ही बदल दिए जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:51)। प्रभु हमारे साधारण, दीन शरीरों को बदल देंगे और उन्हें अपने महिमामय शरीर जैसा बना देंगे (फिलिप्पियों 3:21)। वह महिमामय शरीर एकदम सही और दोषरहित होगा—जिसमें पाप करने की कोई गुंजाइश नहीं होगी और जो पाप से पूरी तरह अछूता होगा, ठीक यीशु की तरह। प्रभु के बारे में हमारी यही सबसे बड़ी अंतिम आशा है।

(2) यह अंश उस "अतीत की कृपा" की पुष्टि करता है जो विश्वासियों को क्रूस पर किए गए प्रायश्चित के काम के ज़रिए मिली है।

यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान पर विश्वास करने वालों के तौर पर, हम बपतिस्मा के ज़रिए पहले ही उनके साथ दफनाए जा चुके हैं और उनकी मृत्यु में उनके साथ जुड़ चुके हैं (रोमियों 6:4)। जैसा कि *ह्युंडाई-इनुई सोंगग्योंग* (समकालीन कोरियाई बाइबिल) बताती है, हम "वे लोग हैं जो पाप के लिए मर चुके हैं" (पद 2)। और स्पष्ट रूप से कहें तो, क्योंकि हमारा "पुराना स्वरूप" यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था, इसलिए हमारा "पाप का शरीर" मर चुका है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि हम अब पाप के गुलाम बनकर नहीं रहेंगे (पद 6)। प्रेरित पौलुस रोमियों 6:7 में आज़ादी की इस घोषणा को स्पष्ट करते हैं: "जो कोई पाप के लिए मर चुका है, वह पाप से आज़ाद हो गया है।"

(3) यह अंश हमारे "वर्तमान जीवन" के बारे में एक गंभीर सवाल उठाता है—जो अतीत की कृपा (जो पहले ही मिल चुकी है) और भविष्य की आशा (जो अभी पूरी होनी बाकी है) के बीच स्थित है।

भले ही हम पाप के लिए मर चुके हैं, लेकिन जब तक यीशु लौटकर हमें महिमामय और पाप-रहित स्वरूप में नहीं बदल देते, तब तक हमें इस धरती पर कैसे जीना चाहिए? पौलुस के धर्मशास्त्र की मुख्य बातों के अनुसार, सवाल यह है: परमेश्वर के लोगों को "कलीसिया के युग" में—यानी उस समय में जो "पहले ही हो चुका है" और "जो अभी होना बाकी है" के बीच आता है—कैसे चलना चाहिए?

आज बहुत से ईसाई इस सवाल को गलत समझते हैं। वे इस बात को—कि उन्हें यीशु पर विश्वास के ज़रिए "पहले ही" उद्धार मिल चुका है—परमेश्वर के वचन की अवज्ञा करने की छूट मान लेते हैं। वे एक गलत विश्वास में पड़ जाते हैं जहाँ पाप से डरने के बजाय, वे बेझिझक पाप करते हैं। फिर भी, फिलिप्पियों 2:12 एक चेतावनी देता है: "इसलिए, मेरे प्यारों, जैसा कि तुमने हमेशा आज्ञा मानी है—न केवल मेरी उपस्थिति में, बल्कि अब मेरी अनुपस्थिति में और भी ज़्यादा—डर और कांपते हुए अपने उद्धार को पूरा करो।" "अपने उद्धार को पूरा करने" के आदेश का मतलब निश्चित रूप से इंसानी अच्छे कामों या कर्मों से उद्धार पाना नहीं है (इफिसियों 2:8–9)।

बाइबल में बताए गए उद्धार का स्वरूप कई पहलुओं वाला है, जिसमें अतीत, वर्तमान और भविष्य शामिल हैं।

अतीत में उद्धार (धर्मी ठहराया जाना): परमेश्वर की कृपा से, जिस पल हम यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, हमें उद्धार मिल जाता है (1 यूहन्ना 5:12–13)।

भविष्य में उद्धार (महिमा पाना): यीशु के दोबारा आने के दिन, हम अपने उद्धार के शानदार पूरा होने का अनुभव करेंगे (रोमियों 10:9)।

वर्तमान में उद्धार (पवित्रता): यह अतीत और भविष्य के बीच के समय में जीते हुए "अपने उद्धार को पूरा करने" का रोज़ का आदेश है (फिलिप्पियों 2:12)।

वर्तमान में "अपने उद्धार को पूरा करने" का मतलब है धरती पर अपना जीवन ऐसे जीना जो उन लोगों के लिए सही हो जिन्हें पहले ही अनंत जीवन मिल चुका है। यह दुनिया से अलग जीवन जीने का बुलावा है—ऐसा जीवन जो स्वर्ग के राज्य के नागरिकों के योग्य हो। स्वर्ग के नागरिक के योग्य जीवन का सार उस दोहरे आदेश का पालन करना है—जो परमेश्वर के राज्य का मुख्य नियम है—कि "परमेश्वर से प्रेम करो और अपने पड़ोसी से प्रेम करो" (मत्ती 22:37–39)।

अद्भुत बात यह है कि हमें यह पवित्र आज्ञाकारिता केवल अपनी ताकत से हासिल नहीं करनी है। जैसा कि फिलिप्पियों 2:13 हमें बताता है, परमेश्वर स्वयं हमारे भीतर काम करते हैं। परमेश्वर विश्वासियों के मन में अच्छा करने की पवित्र इच्छा डालते हैं और साथ ही उस इच्छा को पूरा करने की ताकत और क्षमता भी देते हैं। हमें "प्रेम" का फल—जो आत्मा का पहला फल है (गलातियों 5:22–23)—पैदा करने में सक्षम बनाकर, हमारे भीतर रहने वाली पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर से और अपने पड़ोसियों से खुद की तरह प्रेम करने के लिए प्रेरित करती है। पवित्रता का असली रहस्य यही है: "पहले से हो चुके" और "अभी नहीं हुए" के बीच के तनाव में जीना, और साथ ही खुद को पवित्र बनाए रखना—ठीक वैसे ही जैसे हम रोज़ अपने हाथ धोते हैं।

अगर हम पाप के लिए मर चुके हैं—यानी यीशु के साथ क्रूस पर दफ़नाए जा चुके हैं (रोमियों 6:4–5)—तो हमें इस धरती पर तब तक कैसे जीना चाहिए जब तक यीशु वापस नहीं आते और हम अचानक शानदार, पाप-रहित शरीरों में बदल नहीं जाते (1 कुरिन्थियों 15:51; फिलिप्पियों 3:21; 1 यूहन्ना 3:2)? 1 यूहन्ना 2:29 के शब्द, जिन पर हमने पहले ही गहराई से मनन किया है, एक स्पष्ट मार्गदर्शन देते हैं: "अगर आप जानते हैं कि वह धर्मी है, तो आप यह भी जानते हैं कि जो कोई धार्मिकता का काम करता है, वह उसी से जन्मा है" (NKJV)। "अगर आप जानते हैं कि परमेश्वर धर्मी है, तो यह न भूलें कि जो लोग धार्मिकता से जीते हैं, वे सभी उसकी संतान हैं" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। यह घोषणा कि "जो कोई धार्मिकता का काम करता है, वह उसी से जन्मा है," उन विश्वासियों की शानदार पहचान को उजागर करती है जो यीशु मसीह में विश्वास के

द्वारा नए सिरे से जन्मे हैं। जैसे परमेश्वर धर्मी है, वैसे ही हम भी "धर्मी लोग" बन गए हैं—यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं (रोमियों 4:25)। इसलिए, धर्मी लोगों को अपने जीवन के हर पहलू में धार्मिकता का पालन करना चाहिए और अपने भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का अनुसरण करना चाहिए। प्रभु में एक विश्वासी के जीवन का यही सच्चा अर्थ है।

तो, इस कलीसिया के युग में रहने वाले हमारे लिए "धार्मिकता का अभ्यास करने" का व्यावहारिक अर्थ क्या है? जैसा कि मत्ती 6:33 में कहा गया है, हमें सबसे पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करनी चाहिए। हमें यीशु—परमेश्वर के राज्य के धर्मी राजा—की खोज करनी चाहिए और ऐसा जीवन जीना चाहिए जो "यीशु मसीह, जो धर्मी है" (1 यूहन्ना 2:1) के कार्यों को दर्शाता हो (पद 6)। प्रभु के समान कार्य करने का अर्थ है उनके द्वारा दिए गए पवित्र आदेशों का पूरी तरह से पालन करते हुए जीना (पद 7–11)। मत्ती 22:37–40 में, यीशु ने प्रेम के उस दोहरे आदेश को स्पष्ट रूप से सिखाया जिसका पालन हमें जीवन भर करना है: "यीशु ने उससे कहा, ‘तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन, अपनी सारी आत्मा और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रखना।’ यह पहला और बड़ा आदेश है। और दूसरा इसके समान है: ‘तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।’ इन्हीं दो आदेशों पर सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की बातें टिकी हैं।" जब हम इन दो महान आदेशों को 1 यूहन्ना के नज़रिए से देखते हैं, तो उस "धार्मिकता" का स्वरूप और भी स्पष्ट हो जाता है जिसका अभ्यास विश्वासियों को करना चाहिए।

(1) धार्मिकता का अभ्यास करने का अर्थ है प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे मन, आत्मा और बुद्धि से प्रेम करना।

1 यूहन्ना के नज़रिए से इसका अर्थ है 1 यूहन्ना 2:15–17 में दी गई बातों का पालन करते हुए जीना। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ है "संसार या संसार की किसी भी चीज़" से प्रेम न करना—विशेष रूप से, "शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा और जीवन का घमंड।" यह संसार और इसकी इच्छाएँ अंततः समाप्त हो जाएँगी और मिट जाएँगी। इसलिए, स्वयं को वैसे ही शुद्ध करना जैसे यीशु शुद्ध हैं, एक पवित्र संकल्प है जिसके द्वारा हम संसार की क्षणभंगुर इच्छाओं को साहसपूर्वक अस्वीकार करते हैं और केवल परमेश्वर की

अनंत इच्छा के अनुसार जीवन जीते हैं। (2) धार्मिकता का अभ्यास करने का अर्थ है अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम करना।

1 यूहन्ना के नज़रिए से देखने पर, इस आदेश का अर्थ है 1 यूहन्ना 2:3–11 में दी गई बातों का पूरी तरह से पालन करते हुए जीवन जीना। यूहन्ना का संदेश स्पष्ट है: प्रभु को जानने वाले लोगों के रूप में, हमें अपने भाइयों से पूरे दिल से प्रेम करना चाहिए और उनसे घृणा नहीं करनी चाहिए। जो व्यक्ति यीशु की आज्ञा मानता है और अपने भाई-बहनों से प्रेम करता है, उसके हृदय में "परमेश्वर का प्रेम सचमुच सिद्ध हो जाता है" (1 यूहन्ना 2:5)। क्योंकि ऐसा व्यक्ति अंधकार से निकलकर प्रभु की अद्भुत ज्योति में जी रहा है, इसलिए उसके भीतर या उसके जीवन में ऐसी कोई रुकावट नहीं होती जो उसके विवेक को ठोकर खिलाए या उसे गिरने का कारण बने (पद 10)। यह वह धार्मिक फल है जो एक विश्वासी को पवित्र आत्मा का अनुसरण करते हुए, "पहले से ही" और "अभी नहीं" के बीच के तनाव में जीते हुए उत्पन्न करना चाहिए।

फिर भी, हमारी वास्तविकता क्या है? क्योंकि हम हमेशा पवित्र आत्मा से भरे नहीं रहते, इसलिए हम अक्सर अपने पड़ोसियों—अपने भाइयों—से प्रेम करने में विफल रहते हैं और इसके बजाय उनसे घृणा करने का पाप कर बैठते हैं, भले ही हमारे भीतर का पवित्र आत्मा हमें सिखाता और मार्गदर्शन करता है (पद 11)। ऐसे क्षणों में, हमें परमेश्वर के सामने अपने पापों को ठीक वैसे ही स्वीकार करने में संकोच नहीं करना चाहिए जैसे वे हैं। 1 यूहन्ना 1:9 में दिए गए उस महान वादे पर विचार करें, जो क्षमा का आश्वासन देता है: "यदि हम अपने पापों को मान लेते हैं, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें हर प्रकार के अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है" (NKJV)। हमें विश्वास के साथ उस सुसमाचार के सत्य को थामे रखना चाहिए कि धर्मी यीशु मसीह (2:1)—जो पिता परमेश्वर के सामने हमारे वकील हैं—हमारे पापों के लिए प्रायश्चित बने, और हमें पाप-स्वीकारोक्ति के स्थान पर आना चाहिए (पद 2; 1:9)। यहाँ "प्रायश्चित" (propitiation) शब्द का अर्थ "संतुष्टि" है, जो परमेश्वर के न्याय की पूर्ण पूर्ति को दर्शाता है। दूसरे शब्दों में, क्रूस पर एक ही बार बलिदान होकर—फसह के मेमने के रूप में—यीशु ने परमेश्वर की उस पवित्र और कठोर माँग को पूरी तरह से संतुष्ट कर दिया कि पाप की सजा मिलनी ही चाहिए।

जब हम प्रायश्चित की इस कृपा पर भरोसा करते हुए अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो विश्वासयोग्य और धर्मी परमेश्वर हमारे सभी पापों को क्षमा कर देता है और हमें हर प्रकार के अधर्म से शुद्ध करता है, ठीक जैसा उसने वादा किया था। फिर भी, कृपा के इस स्थान के पीछे एक बहुत ही सूक्ष्म और खतरनाक आध्यात्मिक जाल छिपा होता है। भले ही परमेश्वर ने हमारे पापों को स्वीकार करने के कारण हमारे अपराधों को मिटा दिया है और हमें शुद्ध कर दिया है (1:9), शैतान यह भ्रम पैदा करता है कि पाप अभी भी हममें मौजूद है और वह न्यायकर्ता परमेश्वर के सामने हम पर दोष लगाता है। कल्पना कीजिए कि हम परमेश्वर की अदालत में खड़े हैं, और शैतान अभियोक्ता (prosecutor) के रूप में हमें पापी ठहराते हुए पवित्र और न्यायपूर्ण न्यायाधीश परमेश्वर के सामने हमारे खिलाफ आरोप लगा रहा है। जैसा कि प्रकाशितवाक्य 12:10 में कहा गया है, शैतान वह "आरोप लगाने वाला" है जो दिन-रात हमारी बुराई करता है और हम पर आरोप लगाता है। जब हम परमेश्वर की अदालत में शैतान के झूठे आरोपों को सुनते हैं, तो हमें उस माफ़ी के प्रति अपने भरोसे को कभी नहीं डगमगाने देना चाहिए जो हमें पहले ही मिल चुकी है। इसके बजाय, हमें विश्वास की नज़रों से यीशु मसीह को देखना चाहिए—जो पिता परमेश्वर के सामने हमारे एकमात्र वकील और आरोपी के लिए "बेहतरीन बचाव पक्ष के वकील" हैं। हमें अपने दिलों में 1 यूहन्ना 1:9 की घोषणा को भी हिम्मत के साथ दोहराना चाहिए, जो शैतान के आरोपों को बेअसर करने वाला सबसे बड़ा बचाव है: "यदि हम अपने पापों को मान लेते हैं, तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है और हमारे पापों को क्षमा करेगा और हमें हर तरह की अधार्मिकता से शुद्ध करेगा।"

(पद 1) क्या आप मेमने के उस लहू से धुले हैं जो आत्मा को शुद्ध करता है?
क्या आपको उस शक्ति पर पूरा भरोसा है जो गंदे पापों को सफ़ेद बना देती है?
(पद 4) अभी प्रभु के सामने पाप से सने कपड़ों को उतार दें,
और उस अनमोल लहू से बर्फ़ से भी ज़्यादा सफ़ेद हो जाएँ जो झरने की तरह बहता है।
<कोरस>
क्या आप यीशु के लहू से धुले हैं?
क्या आपके दिल के सारे पाप धुलकर साफ़ हो गए हैं?

(नई भजन-संहिता संख्या 259, "क्या आप लहू से धुले हैं?")

चौथा, परमेश्वर की संतान होने के नाते, हमें सतर्क रहना चाहिए ताकि कोई हमें गुमराह न कर सके।

प्रेरित यूहन्ना अपने "बच्चों" को मज़बूत और गंभीर लहजे में आध्यात्मिक रूप से सतर्क रहने का आदेश देते हैं। आज के वचन, 1 यूहन्ना 3:7 के पहले हिस्से को देखें: "हे छोटे बच्चों, कोई तुम्हें धोखा न दे..." (संशोधित नया कोरियाई मानक संस्करण)। "बच्चों, किसी को भी तुम्हें धोखा न देने दो..." (समकालीन कोरियाई संस्करण)। अफ़सोस की बात है कि आज के चर्च के माहौल में, हम अक्सर "अंधे के द्वारा अंधे को रास्ता दिखाए जाने" (मत्ती 15:14) का दुखद नज़ारा देखते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि कई बार आध्यात्मिक रूप से अंधे नेता—जिन्होंने परमेश्वर के सच्चे ज्ञान को त्याग दिया है और उनके वचन और आज्ञाओं को भुला दिया है (होशे 4:6)—मंच पर खड़े होते हैं। वे धर्मग्रंथों को बहुत मनमाने और बाइबल के सिद्धांतों के खिलाफ तरीके से तोड़-मरोड़कर पेश करते हैं और सिखाते हैं। ऐसा करते हुए, वे गलत शिक्षाओं से अपने अनुयायियों के मन में गलत बातें भर देते हैं, जिससे वे सच्चाई के बजाय किसी व्यक्ति का आँख बंद करके अनुसरण करने लगते हैं और विनाश की ओर खिंचे चले जाते हैं। खासकर इन अंतिम दिनों में, हमें सही-गलत को पहचानने की अपनी समझ को तेज करना होगा और पवित्र आत्मा की आवाज़ पर ध्यान देना होगा ताकि हम अपनी आत्मा को झूठी शिक्षाओं के हवाले न कर दें।

आध्यात्मिक रूप से अंधे इन अगुओं और बिना सोचे-समझे उनका अनुसरण करने वालों—दोनों के सामने जो सच्चाई है, वह वास्तव में बहुत खतरनाक है। जैसा कि प्रेरित पौलुस ने बताया, भले ही वे परमेश्वर के लिए बहुत जोश दिखाते हों, लेकिन असल में यह एक नकली जोश है जिसमें सही आध्यात्मिक ज्ञान की कमी होती है (रोमियों 10:2)। बिना सच्चे ज्ञान के जोश में आकर इंसान अक्सर जल्दबाजी में गलत रास्ते पर चल पड़ता है (नीतिवचन 19:2)। आखिरकार, अगुवा और अनुयायी दोनों का दुखद अंत होता है; इस गलत रास्ते पर चलते हुए वे परमेश्वर के खिलाफ ऐसा पाप कर बैठते हैं जिसे सुधारा नहीं जा सकता। वे सभी परमेश्वर के जीवित वचन का अनादर करते हैं और आज्ञा न मानने का रास्ता चुनते हैं। और भी चिंता की बात यह है कि बाइबल के सिद्धांतों के खिलाफ शिक्षाओं से अंधे होकर, वे पूरे जोश के साथ दावा करते हैं कि वे अंधे विश्वास और पक्के यकीन के साथ परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं—जबकि उनकी सेवा का मकसद वह सच्चा परमेश्वर नहीं है जिसके बारे में धर्मग्रंथों में बताया गया है। वे अपनी ही कल्पना से बनाई गई चीज़—एक "ऐसा परमेश्वर जो बाइबल के अनुसार नहीं है"—की पूजा करते हैं; यह मूर्तिपूजा का पाप करने के बराबर है, और परमेश्वर

को मूर्तिपूजा से सबसे ज़्यादा नफ़रत है (यशायाह 10:11)। इस मूर्तिपूजा की जड़ में अहंकार का गंभीर पाप छिपा होता है। यह अहंकार एक बढ़े हुए घमंड के रूप में सामने आता है जो डींगें मारता है, "मैं एक बुद्धिमान व्यक्ति हूँ" (यशायाह 9:13)। यह परमेश्वर की महिमा को हड़पने जैसा काम है, जिसमें इंसान दावा करता है, "मैंने यह महान कार्य अपने ही हाथों की ताकत और अपनी ही बुद्धि से पूरा किया है" (यशायाह 10:13)। भले ही हम प्रभु के हाथों में केवल छोटे और कमज़ोर औज़ार हैं, फिर भी हम हिम्मत करके अपनी डींगें मारते हैं और ऐसे व्यवहार करते हैं मानो हम बहुत महत्वपूर्ण हों, यहाँ तक कि उनकी उपस्थिति में भी (यशायाह 10:15)।

हममें, जो इस तरह आध्यात्मिक घमंड से फूले हुए हैं, प्रभु यशायाह की पुस्तक के माध्यम से एक कठोर और गंभीर चेतावनी देते हैं: "क्या कुल्हाड़ी उस व्यक्ति के विरुद्ध डींग मार सकती है जो उससे लकड़ी काटता है? क्या आरी उस व्यक्ति के विरुद्ध खुद को बड़ा समझ सकती है जो उससे लकड़ी चीरता है? मानो कोई छड़ी उसे चलाने वाले को ही चला सकती हो, या कोई लाठी उसे ही उठा सकती हो जो लकड़ी का नहीं है" (यशायाह 10:15)। प्रभु के औज़ारों के रूप में, हमें आभारी होना चाहिए जब वह हमारा उपयोग करते हैं, और उतनी ही कृतज्ञता के साथ—उनकी सर्वोच्चता को स्वीकार करते हुए—उन्हें भी स्वीकार करना चाहिए जब वह हमें कुछ समय के लिए अलग रख देते हैं। फिर भी, असंतोष और लालच की कैद में फँसे हुए, हम पाखंडी होंठों से कलीसिया और अपने साथी विश्वासियों के विरुद्ध अंतहीन शिकायतें और आलोचनाएँ करते हैं। नतीजतन, परमेश्वर का भयंकर क्रोध हमारी ओर मुड़ता है, और न्याय के परमेश्वर अंततः दंड का कोड़ा उठाएँगे (यशायाह 9:12, 17, 21; 10:4, 25)। परमेश्वर हमारे विरोधियों और शत्रुओं को आध्यात्मिक रूप से उकसाएँगे ताकि वे हम पर बिना दया के प्रहार करें (यशायाह 9:11)। जैसा कि पवित्र शास्त्र चेतावनी देते हैं, परमेश्वर हमें जगाने के लिए छड़ी और लाठी का उपयोग करके हम पर प्रहार करेंगे (यशायाह 10:24)। फिर भी, यदि हम आध्यात्मिक संवेदनहीनता में डूबे रहते हैं—उस परमेश्वर के पास लौटने से इनकार करते हैं जो हम पर प्रहार करते हैं और उनकी शरण में नहीं आते (9:13)—तो परमेश्वर अंततः एक ही झटके में उन आध्यात्मिक रूप से अंधे नेताओं को काट डालेंगे जो समुदाय को बर्बादी की ओर ले जा रहे हैं (पद 14, 16)। यह उस समुदाय का दुखद अंत है जो झूठ से धोखा खा चुका है और घमंड में डूबा हुआ है।

इसलिए, हमें समझदारी से काम लेना चाहिए और उन धोखेबाज़ नेताओं से सावधान रहना चाहिए जो भेड़ की खाल ओढ़कर हमारी आत्माओं को फँसाने आते हैं (मरकुस 13:5)। हमें उन लोगों से सख्ती से बचना चाहिए जो धर्मग्रंथ की व्याख्या सिर्फ़ अपने फ़ायदे के लिए करते हैं और बाइबल के खिलाफ़ समृद्धि और झूठे सुसमाचार का प्रचार करते हैं। अंत के समय के संकेतों के बारे में बात करते हुए, प्रभु ने चेतावनी दी थी, "बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे और बहुत से लोगों को धोखा देंगे" (मत्ती 24:11)। हमें कभी भी उनके गलत नेतृत्व का आँख बंद करके पालन नहीं करना चाहिए और न ही उनके साथ मिलकर हमेशा के विनाश की खाई में गिरने की त्रासदी का सामना करना चाहिए।

बाइबल साफ़ तौर पर कहती है कि धोखा देने वाले और धोखा खाने वाले, दोनों ही बर्बाद हो जाएँगे (यशायाह 9:16)। चाहे हमें किसी भी तरह के लालच या दबाव का सामना करना पड़े, हमें सच्चाई—यानी जीवन के रास्ते—से भटकना नहीं चाहिए (याकूब 5:19)। हमें प्रेरित पौलुस की उन बातों को गंभीरता से लेना चाहिए जो उन्होंने कुरिन्थ के विश्वासियों से रोते हुए कही थीं: "मुझे डर है कि जिस तरह हव्वा को साँप की चालाकी ने धोखा दिया था, कहीं उसी तरह तुम्हारा मन भी मसीह के प्रति तुम्हारी सच्ची और शुद्ध भक्ति से भटक न जाए" (2 कुरिन्थियों 11:3)। यह पक्का करने के लिए कि हमारा दिल मसीह के प्रति उस सच्ची और शुद्ध भक्ति से एक कदम भी न भटके, हमें लगातार परमेश्वर के वचन रूपी आईने में खुद को परखना चाहिए। झूठ से भरी इस दुनिया में, जब हम अपने अंदर बसने वाली पवित्र आत्मा की आवाज़ सुनेंगे, तभी हम धोखे की लहरों से ऊपर उठ पाएँगे और हमेशा की सच्चाई पर मज़बूती से खड़े रह पाएँगे। 1 यूहन्ना 3:7 के पहले हिस्से में—जो आज हमारा मुख्य वचन है—प्रेरित यूहन्ना एक बार फिर अपने "बच्चों" को चेतावनी देते हैं: "हे छोटे बच्चों, कोई तुम्हें धोखा न दे..." (NKJV)। उन्होंने पहले ही 1 यूहन्ना 2:26 में एक कड़ी चेतावनी दी थी, जिसमें उन्होंने अपनी चिट्ठी पाने वालों से कहा था, "मैंने यह तुम्हें उनके बारे में लिखा है जो तुम्हें धोखा देने की कोशिश कर रहे हैं।" तो फिर, ये "धोखेबाज़" कौन हैं जिनके खिलाफ़ बाइबल इतनी सख्ती से चेतावनी देती है? यूहन्ना की बातों पर गौर करने से उनकी असली पहचान साफ़ हो जाती है। सबसे पहले, वे असल में "झूठे" हैं (1 यूहन्ना 2:22)। दूसरी बात, वे "मसीह-विरोधी" (antichrists) हैं जो न केवल साफ तौर पर इस बात से इनकार करते हैं कि यीशु ही मसीह है, बल्कि वे हमेशा रहने वाले "पिता और पुत्र" को भी नहीं मानते (वचन 22)।

कलीसिया को हिला देने वाले कई मसीह-विरोधियों की सच्चाई का सामना करते हुए, प्रेरित यूहन्ना ने गंभीरता से कहा, "यह आखिरी घड़ी है" (वचन 18)। इसके अलावा, ये धोखा देने वाले लोग खतरनाक "बुरे" और "दुष्ट" हैं जो पवित्र लोगों को रास्ते से भटकाने पर तुले हुए हैं (वचन 13-14)। और इन दुष्ट लोगों के पीछे असली आध्यात्मिक उकसाने वाला छिपा है: "शैतान"। 1 यूहन्ना 3:8 और 10 इस आध्यात्मिक लड़ाई की असली प्रकृति को इस तरह बताते हैं: "जो पाप करता है वह शैतान का है, क्योंकि शैतान शुरू से ही पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसी मकसद से प्रकट हुआ, ताकि शैतान के कामों को नष्ट कर सके... इससे परमेश्वर की संतान और शैतान की संतान की पहचान होती है: जो कोई धार्मिकता का काम नहीं करता, वह परमेश्वर का नहीं है, और न ही वह जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता।" इस हिस्से में, प्रेरित यूहन्ना इंसानों को सख्ती से दो गुटों में बांटते हैं: "परमेश्वर की संतान" और "शैतान की संतान"। परमेश्वर की संतानों को मजबूती से यह कहने के बाद कि "कोई तुम्हें धोखा न दे" (वचन 7), यूहन्ना तुरंत और साफ तौर पर उन लोगों की खासियतें बताते हैं जो शैतान के हैं। शैतान की संतान वे हैं जो लगातार पाप करते हैं; खास बात यह है कि वे "ऐसे लोग हैं जो धार्मिकता का काम नहीं करते।" इसके अलावा, यूहन्ना की पूरी पत्री के संदर्भ में, "धार्मिकता का काम न करना" —एक मुहर की तरह— "अपने भाई से प्रेम न करने" से अटूट रूप से जुड़ा है। दूसरे शब्दों में, मसीह-विरोधी की धोखा देने वाली आत्मा के वश में होने का सबूत सिर्फ नैतिक कमियों के रूप में नहीं, बल्कि "प्रेम की कमी" के रूप में दिखता है, जो इंसान को अपने भाई से नफरत करने और समुदाय को तोड़ने की ओर ले जाता है।

इन शब्दों के ज़रिए, हमें साफ तौर पर समझना चाहिए कि ऐसा धोखा आखिर कहाँ ले जाता है। जो लोग तरह-तरह के झूठ बोलकर पवित्र लोगों को धोखा देते हैं और परेशान करते हैं, उनका मकसद हमें परमेश्वर के खिलाफ एक भयानक पाप करने के लिए उकसाना होता है। और उस निर्णायक पाप का सार, जैसा कि यूहन्ना ने बताया है, ठीक यही है कि हम अपने भाई से प्रेम करने के बजाय उससे नफरत करने लगें। इस तरह, 1 यूहन्ना 3:10 में "जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता" का ज़िक्र करने के बाद, प्रेरित यूहन्ना आयत 15 में इस पाप की गंभीरता को और साफ़ करते हुए कहते हैं कि "जो कोई अपने भाई से घृणा करता है, वह हत्यारा है।" असल में, यूहन्ना ने पिछले अध्याय (अध्याय 2) की आयतों 9 और 11 में "अपने भाई से घृणा करने वाले" की बुरी सच्चाई के बारे में पहले ही कड़ी चेतावनी दे दी थी। बात साफ़ है: जो व्यक्ति अपने भाई से घृणा करता है, वह आत्मिक अंधकार में फँसा रहता है और उसी अंधेरे में बिना किसी मकसद के भटकता हुआ जीवन जीता है। जैसा कि *ह्युंडाई-इनुई सोंगग्योंग* (आधुनिक कोरियाई बाइबल) में कहा गया है, वे

आत्मिक अंधेपन की हालत में पहुँच जाते हैं जहाँ "अंधेरे ने उनकी आँखों को अंधा कर दिया है, इसलिए उन्हें यह भी पता नहीं होता कि वे कहाँ जा रहे हैं" (2:11)।

फिर भी, कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने भाइयों से घृणा करने के इस आत्मिक अंधकार में जीते हुए भी ज़ोर-शोर से कहते हैं, "परमेश्वर के साथ हमारी संगति है" या "परमेश्वर के साथ हमारा गहरा मेल-मिलाप है।" 1 यूहन्ना 1:6 में, प्रेरित यूहन्ना ऐसे लोगों का असली चेहरा सबके सामने लाते हैं। उनका व्यवहार पाप से भरे अंधेरे जीवन को जारी रखने के अलावा और कुछ नहीं है—एक खुला झूठ जो परमेश्वर और खुद उन्हें भी धोखा देता है। यूहन्ना जीवन के इस दोहरेपन की कड़ी निंदा करते हैं: "अगर हम दावा करते हैं कि परमेश्वर के साथ हमारी संगति है, फिर भी पाप से भरा अंधेरा जीवन जीते हैं, तो हम झूठ बोल रहे हैं और झूठे हैं; हम सच्चाई के अनुसार नहीं जी रहे हैं" (आयत 6, *ह्युंडाई-इनुई सोंगग्योंग*)। संक्षेप में, यह एक गंभीर चेतावनी है कि धोखे से प्रेरित होकर अपने भाई से घृणा करने वाला जीवन इस बात का सबूत है कि व्यक्ति झूठा विश्वासी है जिसने सच्चाई को छोड़ दिया है, चाहे वह मुँह से कुछ भी कहे। प्रिय लोगों, हमें कभी भी ऐसे झूठे नहीं बनना चाहिए जो सच्चाई से मुँह मोड़ लेते हैं। हमें पाप की छाया में फँसे रहकर अंधेरे वाला जीवन नहीं जीना चाहिए। हमें उस पाखंडी पाप से पक्के तौर पर छुटकारा पाना चाहिए जिसमें हम मुँह से तो परमेश्वर के साथ पवित्र संगति का दावा करते हैं, लेकिन रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अपने भाइयों और बहनों से बेरहमी से घृणा करते हैं। जब हम परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं मानते और अपने भाइयों से नफ़रत करने का पाप करते हैं, तो सबसे ज़्यादा खुशी शैतान को होती है (3:8)। ऐसा जीवन प्रभु में बने रहने वाला जीवन नहीं है; यह एक बुरा काम है जो हमारे व्यवहार से मसीह का इनकार करता है (2:22)। "धोखा देने वालों" का यही मुख्य मकसद होता है कि वे पवित्र लोगों को गुमराह करें (पद 26)। वे चाहते हैं कि हम सिर्फ़ होंठों से यीशु को मानें, जबकि अपने जीवन में पवित्र आत्मा की शिक्षाओं को न मानें (पद 27) और प्रभु के लहू से स्थापित प्रेम की महान आज्ञा को ठुकरा दें। इसलिए, हमें शैतान की उन कोशिशों के प्रति बहुत सावधान रहना चाहिए जिनसे वह हमारे दिलों और दिमागों को धोखा देने का मौका ढूंढता है।

शैतान लगातार धोखे का इस्तेमाल करता है ताकि मसीह के प्रति हमारे दिलों को दूषित कर सके और हमारी पवित्र आत्माओं को मैला कर सके (2 कुरिन्थियों 11:3)। अगर धोखे की ज़हरीली खरपतवार हमारे दिलों में जड़ जमा लेती है, तो हम आध्यात्मिक रूप से भटक जाते हैं और परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए जीवन के रास्ते को नहीं पहचान पाते (भजन संहिता 95:10)। हमें हमेशा परमेश्वर के वचन पर मज़बूती से खड़े रहना

चाहिए और शैतान के सभी धोखों को हराने के लिए लड़ना चाहिए (1 यूहन्ना 2:14)। इस आध्यात्मिक लड़ाई में जीत हासिल करने के लिए, हमें रोज़ाना मसीह के बारे में अपने ज्ञान और व्यक्तिगत अनुभव में बढ़ना चाहिए—जो जीवन का वचन है और जो शुरू से ही मौजूद है (1:1–2)। हमें यीशु मसीह के साथ गहरी, अटूट संगति और एकता का आनंद लेना चाहिए, जो अनंत जीवन है (पद 3)। इसके अलावा, हमें प्रभु की दी हुई शानदार रोशनी में जीना चाहिए और उन भाइयों और बहनों के साथ सच्ची, प्रेमपूर्ण संगति रखनी चाहिए जिनसे हम उनमें मिले हैं (पद 7)। हमारे अंदर रहने वाले पवित्र आत्मा की सूक्ष्म शिक्षाओं से प्रेरित होकर, हमें प्रभु की आज्ञाओं का पूरी तरह से पालन करना चाहिए और अपने पड़ोसियों से खुद की तरह प्रेम करना चाहिए। अब हमें शैतान की संतानों के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर की अनमोल संतानों के रूप में जीना चाहिए (3:1–2)। पवित्र आज्ञाकारिता का यह जीवन-मार्ग उस व्यक्ति के जीवन का सबसे सुंदर और मूल्यवान सबूत है जिसे परमेश्वर पिता का अपार प्रेम मिला है।

पांचवीं बात, परमेश्वर की संतान होने के नाते, हमें पृथ्वी पर ऐसा जीवन जीना चाहिए जिसमें हम धार्मिकता का पालन करें।

प्रेरित यूहन्ना उस जीवन का सबसे स्पष्ट प्रमाण बताते हैं जो परमेश्वर की पवित्र संतानों में दिखना चाहिए। आज के वचन में 1 यूहन्ना 3:7 का बाद वाला हिस्सा देखें: "...जो धार्मिकता का काम करता है, वह धर्मी है, ठीक वैसे ही जैसे वह धर्मी है" (NKJV)। "...जो व्यक्ति सही काम करता है, वह धर्मी व्यक्ति है, ठीक यीशु की तरह" (Contemporary Korean Version)। यीशु में विश्वास के द्वारा नया जन्म पाने के बाद, हमें धार्मिकता का पालन करने वाले जीवन की ओर बढ़ना चाहिए और यीशु मसीह का अनुकरण करना चाहिए, जो स्वभाव से ही धर्मी हैं। धार्मिक जीवन जीने का यह नज़रिया स्वर्ग के नागरिकों की उन प्राथमिकताओं से पूरी तरह मेल खाता है जिनके बारे में यीशु ने सुसमाचारों में सिखाया था।

प्रभु ने हमसे कहा कि हम पृथ्वी पर जीवित रहने और आराम-सुविधाओं के बारे में चिंता या परेशानी न करें—यह न पूछें कि "हम क्या खाएंगे? क्या पिएंगे? क्या पहनेंगे?" (मत्ती 6:31)। ऐसी भौतिक चिंताएं और जुनून केवल वे चीजें हैं जिनके पीछे अविश्वासी दुनिया—यानी वे लोग जो परमेश्वर को नहीं जानते—भागती है (वचन 32)। स्वर्ग में हमारे दयालु पिता पहले से ही जानते हैं कि हमें इन सभी चीजों की आवश्यकता है। इसलिए,

हममें से जो लोग सांसारिक चिंताओं में बंधे हैं, उनके लिए प्रभु स्वर्ग के नागरिकों की सही आध्यात्मिक प्राथमिकता को गंभीरता से बताते हैं: "परन्तु पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, तो ये सब चीजें भी तुम्हें मिल जाएंगी" (वचन 33)। परमेश्वर की संतान के रूप में, आपके और मेरे जीवन की प्राथमिकता स्पष्ट है: हमें इस दुनिया के नाशवान भोजन की नहीं, बल्कि केवल परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करनी है। परमेश्वर के राज्य के राजा—यीशु मसीह—के उत्तम शासन में जीना और अपने जीवन में धार्मिकता का पालन करना, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु ने किया था, वह शानदार मार्ग है जिस पर हमें, उनकी संतान के रूप में, चलना है।

प्रियजनों, आखिर वह "परमेश्वर का राज्य" क्या है जिसे खोजने के लिए प्रभु हमें बुलाते हैं? मूल रूप से, इसका अर्थ है परमेश्वर का सर्वोच्च शासन और अधिकार। पूरे सुसमाचारों में, बाइबिल परमेश्वर के राज्य के रहस्य की गवाही देती है। लूका 11:20 पर विचार करें: "परन्तु यदि मैं परमेश्वर की उंगली से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम तक आ पहुंचा है" (NIV)। जैसा कि यह आयत बताती है, जब लगभग 2,000 साल पहले यीशु मसीह ने धरती पर अवतार लिया और परमेश्वर की शक्ति से अंधकार की ताकतों को दूर किया, तो परमेश्वर का राज्य धरती पर *पहले ही* ज़बरदस्त तरीके से आ चुका था। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का राज्य एक ऐसा अनुग्रह है जो हमारी आध्यात्मिक सच्चाई में *पहले ही* शुरू हो चुका है—एक ऐसी सच्चाई जिसकी जड़ें अतीत में हैं। इसीलिए यीशु ने लूका 17:21 में साफ़ तौर पर कहा: "...परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है।"

फिर भी, बाइबल परमेश्वर के राज्य के भविष्य में पूरी तरह से स्थापित होने की भी बात करती है। लूका 10:9 और 11 में ये शब्द दर्ज हैं: "...परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ गया है" और "...यह जान लो: परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है।" इसके अलावा, 'लास्ट सपर' (अंतिम भोज) के समय, यीशु ने लूका 22:18 में भविष्य में होने वाले इस शानदार आगमन के बारे में पहले ही बता दिया था: "क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, जब तक परमेश्वर का राज्य नहीं आ जाता, तब तक मैं अंगूर की बेल का फल फिर कभी नहीं पीऊँगा" (NIV)। "अब से, जब तक परमेश्वर का राज्य नहीं आ जाता, तब तक मैं अंगूर की बेल का फल नहीं पीऊँगा" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। इस प्रकार, बाइबल परमेश्वर के राज्य की घोषणा कई दृष्टिकोणों से करती है, जिसमें अतीत और भविष्य दोनों शामिल हैं। दूसरे शब्दों में, विश्वास करने वाले के भीतर परमेश्वर का राज्य *पहले ही* शुरू

हो चुका है, फिर भी यह एक तरह के तनाव की स्थिति में भी है, क्योंकि यह *अभी तक* अपने अंतिम पूर्ण रूप तक नहीं पहुँचा है। यह ठीक उसी "मुक्ति के तीन-स्तरीय स्वरूप" से मेल खाता है जिस पर हमने पहले चिंतन किया था: जिस क्षण हम यीशु पर विश्वास करते हैं, हम *पहले ही* बचा लिए जाते हैं (अतीत काल; 1 यूहन्ना 5:13); जब प्रभु वापस आएँगे तो हम अपने शरीरों की पूरी मुक्ति का अनुभव करेंगे (भविष्य काल; रोमियों 8:23); और इसलिए, आज हमारे जीवन की सच्चाई में, हमें डर और कांपते हुए अपनी मुक्ति को पूरा करना होगा (वर्तमान काल; फिलिप्पियों 2:12)। इसी तरह, परमेश्वर का राज्य हमारे भीतर आ चुका है, और साथ ही यह एक शानदार उम्मीद भी बना हुआ है जिसे पूरी तरह से साकार होना बाकी है।

तो फिर, इस "पहले ही" और "अभी तक नहीं" के बीच के लंबे समय में हमें कैसे जीना चाहिए? हमें मत्ती 6:33 में दिए गए आदेश पर ध्यान देना चाहिए और हर दिन सबसे पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करनी चाहिए। इसका मतलब है एक ऐसा जीवन जीना जो खुशी-खुशी प्रभु यीशु मसीह—जो राज्य के सच्चे राजा हैं—के पवित्र नियमों और शासन को अपनाता है। यह पवित्रता का जीवन है जिसमें हम अपनी जिद्दी इच्छा और अहंकार को त्याग देते हैं, पूरी तरह से प्रभु के वचन के अधीन हो जाते हैं, और अपनी ताकत के बजाय पवित्र आत्मा से मिली शक्ति से जीते हैं। स्वर्ग के नागरिक की यही सच्ची पहचान है—परमेश्वर की संतान के रूप में जीना जो "धार्मिकता का पालन करता है।" आज के वचन में—खासकर 1 यूहन्ना 3:7 के दूसरे भाग में—प्रेरित यूहन्ना विश्वास करने वाले के सही जीवन-तरीके को फिर से बताते हैं: "...जो धार्मिकता का पालन करता है, वह धर्मी है, ठीक वैसे ही जैसे वह धर्मी है" (NKJV)। "...जो व्यक्ति सही काम करता है, वह धर्मी है, ठीक यीशु की तरह" (Contemporary Korean Version)। 1 यूहन्ना 2:29 में "धार्मिकता का पालन करने वाले" के स्वभाव के बारे में बताने के बाद, यूहन्ना यहाँ 3:7 में उस सच्चाई पर ज़ोर देते हैं। इसका मतलब है कि जो व्यक्ति यीशु की धार्मिकता का अनुकरण करके धार्मिकता का पालन करता है, वह सचमुच परमेश्वर का व्यक्ति है जिसे धर्मी घोषित किया गया है। तो, हमारे रोज़मर्रा के जीवन में "धार्मिकता का पालन करने" का खास मतलब क्या है? इसका मतलब है ठीक वैसे ही काम करना जैसे "धर्मी यीशु मसीह" ने किया (1 यूहन्ना 2:6) और प्रभु द्वारा छोड़ी गई पवित्र आज्ञाओं का पूरी तरह से पालन करते हुए जीवन जीना (वचन 7–11)। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब है यीशु द्वारा सिखाई गई महान दोहरी आज्ञा का पालन करना: अपने पूरे दिल, आत्मा और मन से अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करना, और अपने पड़ोसियों से खुद की तरह प्रेम करना (मत्ती 22:37–40)।

हमने पहले ही इस बात पर गहराई से मनन किया है कि प्रेम की यह दोहरी आज्ञा 1 यूहन्ना के व्यापक संदर्भ में कैसे फल लानी चाहिए:

(1) धार्मिकता का पालन करने का मतलब है दुनिया की क्षणभंगुर इच्छाओं को ठुकराना और परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना।

इसका मतलब है इस क्षणभंगुर दुनिया—या शरीर की लालसा, आँखों की लालसा और जीवन के अहंकार—के पीछे भागकर नहीं, बल्कि परमेश्वर की अनंत इच्छा को पूरा करते हुए जीना (1 यूहन्ना 2:15–17)। ऐसा इसलिए है क्योंकि, जैसा कि प्रेरित पौलुस ने कहा है, "परमेश्वर की इच्छा तो यह है कि तुम पवित्र बनो" (1 थिस्सलुनीकियों 4:3)। (2) धार्मिकता का पालन करने का अर्थ है अपने भाइयों से सच्चे दिल से प्रेम करना और उनसे नफ़रत न करना।

जब हम प्रभु की आज्ञा का पालन करते हैं और अपने भाइयों और बहनों से सच्चे दिल से प्रेम करते हैं, तो परमेश्वर का प्रेम हमारे भीतर पूरी तरह से विकसित हो जाता है (1 यूहन्ना 2:5)। तब हमें अपने जीवन से यह भरोसा मिलता है कि हम सचमुच उसमें बने हुए हैं। इसके विपरीत, जो लोग इस पवित्र धार्मिकता का पालन नहीं करते—यानी, जो अपने सामने मौजूद भाई से प्रेम करने के बजाय उससे नफ़रत करते हैं—वे "परमेश्वर की संतान नहीं हैं," चाहे वे अपनी ज़बान से कुछ भी कहें (3:10, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)। ऐसे लोगों का यही हश्र होता है जो सच्चाई और प्रेम की ज्योति से दूर हो गए हैं।

प्रिय लोगों, परमेश्वर पिता ने हम पर जो असीम प्रेम बरसाया है, उसके कारण हम बुरे पापियों से बदलकर "परमेश्वर की अनमोल संतान" बन गए हैं (1 यूहन्ना 3:1)। परमेश्वर की संतान होने का शानदार सौभाग्य पाकर, अब हमें यीशु मसीह—परमेश्वर के धर्मी पुत्र—को अपने जीवन का आदर्श बनाना चाहिए। उनकी आज्ञाकारिता के नक्शेकदम पर चलते हुए, हमें पृथ्वी पर वैसे ही ईमानदारी से जीना चाहिए जैसे यीशु मसीह ने जिया था (2:1, 6)।

हमारे उद्धारकर्ता यीशु ने परमेश्वर पिता की सर्वोच्च इच्छा के सामने पूरी तरह से समर्पण कर दिया। उन्होंने हमारी जगह हमारे घिनौने पापों का बोझ उठाया और मृत्यु तक आज्ञाकारी रहे, और क्रूस पर अपना जल और लहू बहा दिया। प्रभु के कड़वे दुख और मृत्यु के इस रास्ते पर चुपचाप चलने का केवल एक ही कारण था: वे परमेश्वर पिता से सबसे ज़्यादा प्रेम करते थे—अपने पूरे दिल, प्राण और मन से—और साथ ही, वे आप और मुझ जैसे कमज़ोर लोगों से अपने जीवन से भी ज़्यादा प्रेम करते थे। इस तरह, यीशु ने स्वयं क्रूस पर "प्रेम की दोहरी आज्ञा"—परमेश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से प्रेम करना—को पूरी तरह से पूरा किया। और व्यक्तिगत रूप से वह उदाहरण स्थापित करने के बाद ही उन्होंने हमें प्रेम की उस पवित्र दोहरी आज्ञा को सौंपा।

इसलिए, आइए अब हम खुशी-खुशी इस दोहरी आज्ञा का पालन करें—जिसे प्रभु ने अपने ही लहू से लिखा है—अपनी ताकत या इच्छा से नहीं, बल्कि हमारे भीतर रहने वाले पवित्र आत्मा की शक्ति से। मैं प्रभु के नाम से सच्चे दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी एक धन्य जीवन जिएँ: ऐसा जीवन जो पवित्रता बनाए रखने के लिए इस दुनिया की क्षणभंगुर इच्छाओं को त्याग दे, और जो हमारे सामने मौजूद भाई-बहनों से सच्चा प्रेम करके परमेश्वर की संतानों के योग्य धार्मिकता का पूरी तरह से पालन करे।

अब मैं इस लंबे चिंतन को समाप्त करना चाहता हूँ। परमेश्वर पिता के असीम प्रेम के कारण, हम उनकी अनमोल संतान बन गए हैं। परमेश्वर की संतान होने के नाते, हमें स्वर्ग के पवित्र लोगों के लिए उन पाँच मार्गदर्शक सिद्धांतों को अपने दिलों में गहराई से बसा लेना चाहिए जिन पर हमने आज चर्चा की है।

पहला, आइए हम हमेशा उस आध्यात्मिक सच्चाई को याद रखें कि अविश्वासी दुनिया हमें इसलिए नहीं जानती या गलत समझती है क्योंकि वे हमारे अनंत पिता को नहीं जानते।

दूसरा, आइए हम दृढ़ता से विश्वास करें कि जब हमारे प्रभु यीशु मसीह महिमा के साथ फिर से प्रकट होंगे, तो हम उनके निष्कलंक स्वरूप में बदल जाएँगे और उनके तेजस्वी, सच्चे रूप को आमने-सामने देखेंगे।

तीसरा, उस पवित्र 'दूसरे आगमन' की आशा को संजोते हुए, आइए हम खुद को पवित्र और शुद्ध करें—ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने किया था—हर दिन परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की शुद्ध करने वाली आग में।

चौथा, अंत के इन समयों में जब दुश्मन किसी को निगलने की ताक में दहाड़ते हुए शेर की तरह घूम रहा है, आइए हम सतर्क और सावधान रहें ताकि कोई झूठी शिक्षा या दुनिया की लुभावनी बातें हमारी आत्माओं को गुमराह न कर सकें।

पाँचवाँ, परमेश्वर की सच्ची संतान होने के नाते, आइए हम धार्मिकता का जीवन जिएँ और हर पल और हर जगह यीशु के शासन के अधीन रहें।

परमेश्वर की संतान होने और उनके असीम प्रेम को पाने के बाद, इस धरती पर हमें जिस धार्मिकता को दिखाना है, उसका स्वरूप स्पष्ट है: यह प्रेम की दोहरी आज्ञा का पालन करना है—एक ऐसी आज्ञा जिसे स्वयं प्रभु ने क्रूस पर अपने शरीर के बलिदान के द्वारा पूरा किया। हमारी बाकी ज़िंदगी पूरे दिल, आत्मा और मन से अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करने और अपने पड़ोसियों व भाई-बहनों से खुद की तरह प्रेम करने की एक आशीषपूर्ण यात्रा बनी रहे। मैं प्रभु के नाम से पूरी निष्ठा से प्रार्थना करता हूँ कि जब हमारे दूल्हे, यीशु, वापस आएँ, तो हम उनके सामने एक पवित्र और निष्कलंक दुल्हन—यानी कलीसिया—के रूप में खुशी-खुशी स्थापित हो सकें।

एक-दूसरे से प्यार करो

[1 यूहन्ना 3:11-24]

"क्योंकि शुरू से ही तुमने यही संदेश सुना है कि हमें एक-दूसरे से प्यार करना चाहिए। हमें कैन जैसा नहीं बनना चाहिए, जो शैतान का था और जिसने अपने भाई की हत्या कर दी थी। और उसने उसकी हत्या क्यों की? क्योंकि उसके अपने काम बुरे थे और उसके भाई के काम नेक थे। भाइयों, इस बात से हैरान मत होना कि दुनिया तुमसे नफ़रत करती है। हम जानते हैं कि हम मौत से निकलकर ज़िंदगी में आ गए हैं क्योंकि हम भाइयों से प्यार करते हैं। जो प्यार नहीं करता, वह मौत में ही रहता है। जो कोई अपने भाई से नफ़रत करता है, वह हत्यारा है, और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनंत जीवन नहीं होता। प्यार को हम इसी से जानते हैं कि उसने हमारे लिए अपनी जान दे दी, और हमें भी भाइयों के लिए अपनी जान देनी चाहिए। लेकिन अगर किसी के पास दुनिया की चीज़ें हों और वह अपने भाई को ज़रूरत में देखे, फिर भी उसके लिए अपना दिल बंद कर ले, तो परमेश्वर का प्यार उसमें कैसे रह सकता है? प्यारे बच्चों, आओ हम सिर्फ़ बातों या ज़ुबान से नहीं, बल्कि कामों और सच्चाई से प्यार करें। इसी से हम जानेंगे कि हम सच्चाई के हैं और उसके सामने अपने दिल को तसल्ली देंगे; क्योंकि जब भी हमारा दिल हमें दोषी ठहराता है, तो परमेश्वर हमारे दिल से बड़ा है, और वह सब कुछ जानता है। प्यारों, अगर हमारा दिल हमें दोषी नहीं ठहराता, तो परमेश्वर के सामने हमें भरोसा होता है; और हम जो कुछ भी माँगते हैं, उससे पाते हैं, क्योंकि हम उसकी आज्ञाएँ मानते हैं और वही करते हैं जो उसे पसंद है। और उसकी आज्ञा यह है कि हम उसके बेटे यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और एक-दूसरे से प्यार करें, जैसा उसने हमें आज्ञा दी है। जो कोई उसकी आज्ञाएँ मानता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें। और इसी से हम जानते हैं कि वह हममें बना रहता है, उस आत्मा के द्वारा जो उसने हमें दी है।" दोस्तों, क्या आप एक-दूसरे से दिल से प्यार करते हुए जीने की इच्छा नहीं रखते—ऐसे प्यार से जो ज़िंदगी को बेहतर बनाए, न कि बिगाड़े? यीशु मसीह में विश्वास रखने वाले दूल्हा-दुल्हन

परमेश्वर के सामने एक पवित्र शादी की रस्म निभाते हैं और परमेश्वर—जो उनका गवाह है—और बहुत सारे मेहमानों के सामने एक-दूसरे के साथ ज़िंदगी बिताने की गंभीर कसम खाते हैं। फिर भी, अफ़सोस की बात है कि परमेश्वर के सामने उस कसम को निभाने की पवित्र ज़िम्मेदारी के बावजूद, कई जोड़ों का एक-दूसरे के लिए प्यार समय के साथ कमज़ोर और कड़वा हो जाता है, और वे अपने वादे को पूरा नहीं कर पाते। उन्हें उस प्यार के धीरे-धीरे कमज़ोर और ठंडा पड़ने का दुखद अनुभव होता है, जो कभी—उनकी शादी के दिन—दुनिया में सबसे ज़्यादा जोशीला लगता था। इसका मुख्य कारण क्या है? इसका कारण यह है कि एक जोड़े के तौर पर उनका जीवन "प्रभु-केंद्रित" नहीं रहा।

अगर कोई जोड़ा पूरी तरह से प्रभु पर केंद्रित जीवन जीता है, तो वे रोज़मर्रा की ज़िंदगी में प्रभु के उस त्यागमयी प्रेम—जो क्रूस पर ज़ाहिर हुआ था—को धीरे-धीरे और गहराई से महसूस करेंगे और समझेंगे। उस अनुग्रह से प्रेरित होकर, वे स्वाभाविक रूप से अपने जीवनसाथी की कद्र करेंगे और उनसे प्रेम करेंगे, क्योंकि उनके भीतर प्रभु का अलौकिक प्रेम उमड़ रहा होगा। जैसे-जैसे समय बीतता है, उनका पुराना स्वभाव टूटता है और धीरे-धीरे प्रभु के चरित्र जैसा बनने लगता है, जिससे वे एक-दूसरे को स्वर्गीय प्रेम से अपना पाते हैं—ऐसा प्रेम जो समय के साथ और भी समृद्ध और गहरा होता जाता है। आखिरकार, एक जोड़े के प्रेम के सामने केवल दो रास्ते होते हैं। एक रास्ता है "धीरे-धीरे बदलने वाले प्रेम" का, जहाँ जोड़ा हर दिन प्रभु के सच्चे और अटूट प्रेम का अनुभव करता है, और इस तरह ईश्वर के सामने ली गई कसम के अनुसार आखिर तक एक-दूसरे से वफ़ादारी से प्रेम करता है। दूसरा रास्ता है "धीरे-धीरे कमज़ोर होने वाले प्रेम" का—ऐसा प्रेम जिसे केवल दिमाग से या अज्ञानता में जाना जाता है, बिना दिल में प्रभु के प्रेम को सचमुच महसूस किए। यह केवल दुनिया के स्वार्थी और शर्तों वाले प्रेम पर निर्भर करता है, और समय के साथ अंततः पतन और निराशा की ओर ले जाता है। इसमें कोई बीच का रास्ता नहीं है; या तो यह होगा या वह। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हमारे विश्वासी परिवार आध्यात्मिक लापरवाही और धीरे-धीरे कमज़ोर होने वाले प्रेम का शिकार न बनें, बल्कि ऐसे धन्य जोड़े बनें जो जीवन भर एक-दूसरे की कद्र करें और प्रेम करें—ऐसा प्रेम जो धीरे-धीरे बदलता और निखरता रहे, क्योंकि हम हर दिन परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा के द्वारा नए सिरे से ढाले जाते हैं।

इससे पहले, 1 यूहन्ना 3:1–10 के अंश के माध्यम से, हमने परमेश्वर पिता द्वारा हमें दिए गए प्रेम की असीम गहराई को गहराई से समझा था। हमने उस शानदार रहस्य को जाना कि उस महान प्रेम और अनुग्रह के परिणामस्वरूप, हम—जो कभी शैतान की संतान थे—पवित्र "परमेश्वर की संतान" बन गए हैं (पद 1–2)। इसके अलावा, हमने पवित्र शास्त्र से पाँच आध्यात्मिक बातें सीखीं कि परमेश्वर की संतान होने के नाते, इस धरती पर रहते हुए हमें मसीह में कैसे जीना और बने रहना चाहिए:

1. यह समझना कि दुनिया हमें इसलिए नहीं जानती क्योंकि वह हमारे अनंत पिता को नहीं जानती (वचन 1)।

2. यह याद रखना कि जब यीशु फिर से प्रकट होंगे, तो हम उनके स्वरूप जैसे हो जाएँगे और उनके महिमामय, सच्चे रूप को आमने-सामने देखेंगे (वचन 2)।

3. उस दिन की आशा की ओर देखना और अपने रोज़मर्रा के जीवन में खुद को पवित्र बनाना, ठीक वैसे ही जैसे पाप-रहित यीशु पवित्र हैं (वचन 3)।

4. उन झूठी शिक्षाओं के प्रति सावधान और सतर्क रहना जो इन आखिरी दिनों में हमारी आत्माओं को गुमराह कर सकती हैं—एक ऐसा समय जो दुष्ट और झूठ की आत्मा से भरा हुआ है (वचन 7)। 5. स्वर्ग के लोगों के लिए उचित कर्तव्य के रूप में, जीवन के हर पहलू में पूरी तरह से धार्मिकता का पालन करते हुए जीना (वचन 7)।

यहाँ जिस मुख्य बात पर हमें ध्यान देना है, वह पाँचवाँ मुख्य विषय है: "धार्मिकता का पालन करने वाला जीवन।" बाइबल में, धार्मिकता का पालन करने का अर्थ है "धर्मी यीशु मसीह" के नक्शेकदम पर चलना, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने किया (2:1, 6)। यह उस जीवन के ठोस फल को दर्शाता है जो अपने विचारों और जिद्दी इच्छा को एक तरफ रखकर केवल प्रभु की पवित्र आज्ञाओं का पालन करने के लिए जिया जाता है (वचन 7–11)। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ है अपने रोज़मर्रा के जीवन में ईमानदारी से "प्रेम की दोहरी आज्ञा" का पालन करना—वह महान आज्ञा जिसे यीशु ने अपने पूरे अस्तित्व के साथ पूरा किया और हमें सौंपा: अपने

पूरे दिल, आत्मा और मन से प्रभु अपने परमेश्वर से प्रेम करना, और अपने पड़ोसी से खुद की तरह प्रेम करना (मत्ती 22:37–40)।

अपनी पिछली चेतावनियों और सीखों के बाद, प्रेरित यूहन्ना आज के अंश—1 यूहन्ना 3:11—में घोषणा करते हैं कि "हमें एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए।" वचन 18 में, वह आग्रह करते हैं, "प्यारे बच्चों, आओ हम केवल शब्दों या बातों से नहीं, बल्कि कामों और सच्चाई से प्रेम करें," और वचन 23 में, वह फिर से कहते हैं, "एक-दूसरे से प्रेम करो, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने हमें आज्ञा दी थी।" इन बार-बार दी गई सीखों से एक साफ़ बात पता चलती है: जिन्हें परमेश्वर पिता का असीम प्रेम मिला है, उन्हें एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए (पद 1, 11, 18, 23)। इस हिस्से की बनावट के आधार पर, प्रेरित यूहन्ना की इस सीख को दो मुख्य पहलुओं से देखा जा सकता है। पहला हिस्सा, जो 1 यूहन्ना 3:12–15 तक है, उन लोगों की आध्यात्मिक रूप से बुरी हालत की निंदा करता है जो एक-दूसरे से प्रेम नहीं करते बल्कि "अपने भाई से नफ़रत करते हैं" (पद 15)।

दूसरा हिस्सा, जिसमें पद 16–24 शामिल हैं, उस विश्वासी की शानदार सच्चाई को दिखाता है जो—मसीह के प्रेम का अनुकरण करते हुए—"उनकी आज्ञाओं को मानता है" (पद 24); यानी, वह जो परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करता है और दूसरों से वैसे ही प्रेम करता है जैसा उन्होंने आज्ञा दी थी।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 3:23 के शब्दों पर गहराई से विचार करें: "और उनकी आज्ञा यह है: कि हम उनके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और एक-दूसरे से प्रेम करें, जैसा उन्होंने हमें आज्ञा दी थी" (NKJV)। "परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करना और एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम करना जैसा मसीह ने आज्ञा दी थी—परमेश्वर की आज्ञा मानने का असल मतलब यही है" (Contemporary Korean Version)। यह घोषणा दिखाती है कि "यीशु मसीह पर विश्वास करना" और "यीशु मसीह की आज्ञाओं का पालन करना" एक ही सिक्के के दो पहलू हैं—जो एक-दूसरे से अलग नहीं किए जा सकते। प्रेरित यूहन्ना विश्वास और आज्ञापालन को अटूट रूप से जोड़ते हैं।

आज के पाठ, 1 यूहन्ना 3:12 में, प्रेरित यूहन्ना एक सख्त और गंभीर चेतावनी देते हैं: "कैन की तरह मत बनो, जो शैतान का था और जिसने अपने भाई की हत्या कर दी। और उसने उसकी हत्या क्यों की? क्योंकि उसके अपने काम बुरे थे और उसके भाई के काम नेक थे।" बाइबल हमें साफ-साफ बताती है: "तुम्हें कभी भी कैन जैसा नहीं बनना चाहिए।" कैन उस त्रासदी का उदाहरण है जो तब शुरू हुई जब एक इंसान ने पहली बार अपने भाई से नफ़रत की और आखिरकार उसका खून बहाया। जब हम अपने भाई के प्रति नफ़रत को बिना रोके बढ़ने देते हैं, तो हो सकता है कि—बिना जाने ही—हम कैन के उसी रास्ते पर चलने लगें जिसके खिलाफ बाइबल इतनी सख्ती से चेतावनी देती है।

तो, कैन नाम का यह बाइबिल का पात्र कौन था? जैसा कि उत्पत्ति (Genesis) की किताब बताती है, वह आदम—पहले इंसान—का सबसे बड़ा बेटा था और ज़मीन पर खेती करता था (उत्पत्ति 4:1–2)। उसका छोटा भाई, हाबिल, चरवाहा था (पद 2)। जब फसल काटने का समय आया, तो एक अहम घटना हुई जिसने उनकी ज़िंदगी की दिशा तय कर दी: "कुछ समय बाद कैन ने ज़मीन की उपज में से कुछ फल प्रभु को भेंट के तौर पर चढ़ाए। और हाबिल भी एक भेंट लाया—अपने झुंड के पहले जन्मे जानवरों में से कुछ के मोटे हिस्से। प्रभु ने हाबिल और उसकी भेंट को पसंद किया, लेकिन कैन और उसकी भेंट को पसंद नहीं किया" (पद 3–5)। जब परमेश्वर ने उसकी भेंट स्वीकार नहीं की, तो कैन के दिल में अंधेरा छाने लगा। वह इतना गुस्से में था कि उसका चेहरा उतर गया (पद 5), और आखिरकार, जब वह खेत में अपने छोटे भाई हाबिल के साथ अकेला था, तो उसने उस पर हमला किया और उसे मार डाला (पद 8)। इस तरह, कैन मानव इतिहास का पहला हत्यारा और अपने ही भाई को खत्म करने वाला एक भयानक भाई-हत्यारा बन गया।
प्रेरित यूहन्ना उत्पत्ति 4 की इस दुखद घटना को सामने लाते हैं और आज के पाठ, 1 यूहन्ना 3:12 में उस अपराध के पीछे छिपी आध्यात्मिक सच्चाई को साफ-साफ बताते हैं: "कैन की तरह मत बनो, जो शैतान का था और जिसने अपने भाई की हत्या कर दी। और उसने उसकी हत्या क्यों की? क्योंकि उसके अपने काम बुरे थे और उसके भाई के काम नेक थे।" प्रेरित यूहन्ना के हमें काईन जैसा न बनने का कड़ा आदेश देने का असली कारण यह है कि काईन "शैतान का था।" यहाँ शैतान का होने का मतलब है शैतान के अधिकार और शक्ति के अधीन होना। काईन का अपने भाई हाबिल को मारना कोई अचानक आया विचार नहीं था, बल्कि उसकी आध्यात्मिक स्थिति का नतीजा था—यानी वह पहले से ही शैतान का था। चूँकि वह शैतान का था,

इसलिए उसके सभी विचार और काम बुरे ही थे। आखिरकार, अपने भाई हाबिल—जिसके काम नेक थे—की अच्छाई को बर्दाश्त न कर पाने के कारण, वह जलन और गुस्से से भर गया और उसने अपने भाई की जान ले ली (पद 12)। इसलिए, प्रेरित यूहन्ना हमें सलाह देते हैं कि जब हम यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो कभी भी काईन के रास्ते पर न चलें। क्योंकि अगर हम अपने भाइयों के प्रति नफ़रत और जलन को अपने अंदर पनपने देते हैं, तो—बिना जाने ही—हम अपने दिल के दरवाज़े शैतान के लिए खोल देते हैं और वैसा ही करते हैं जैसा काईन ने किया था।

हमें एक कदम और आगे बढ़कर उस आध्यात्मिक प्रक्रिया को गहराई से समझना चाहिए कि काईन क्यों उस नफ़रत पर काबू नहीं पा सका जो चुपके से उसके मन में घर कर गई थी और जिसके कारण उसने अपने ही भाई पर हथियार उठाया। बेशक, काईन असल में शैतान का था और उसके काम बुरे थे (पद 12)। फिर भी, उत्पत्ति 4:7 में परमेश्वर की चेतावनी पर ध्यान देने से इस दुखद घटना की जड़ें साफ-साफ समझ आती हैं: "यदि तू भला करे, तो क्या तू ग्रहण न किया जाएगा? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर घात लगाए बैठा है; उसकी इच्छा तेरी ओर है, पर तुझे उस पर प्रभुता करनी है।" "पाप द्वार पर घात लगाए बैठा है" वाली बात एक डरावनी तस्वीर दिखाती है—जैसे कोई बाघ या शेर अपने शिकार पर झपटने के लिए घात लगाकर बैठा हो। जब परमेश्वर ने हाबिल की भेंट स्वीकार की लेकिन काईन की भेंट ठुकरा दी, तो काईन का चेहरा उतर गया और वह भयंकर गुस्से से भर गया (पद 5-6)। काईन के दिल की खतरनाक हालत को जानते हुए, परमेश्वर खुद उसे चेतावनी देने आए: "पाप अभी तुम्हारे दिल के दरवाज़े पर घात लगाए बैठा है। वह तुम्हें निगलने के लिए बेताब है, लेकिन तुम्हें उसके आगे झुकना नहीं है; तुम्हें उस पर काबू पाना है!" (पद 7)। लेकिन दुख की बात है कि काईन गुस्से और जलन के बढ़ते सैलाब को काबू नहीं कर सका। उसने पाप पर काबू पाने के परमेश्वर के दयालु आदेश को नज़रअंदाज़ किया और आखिर में खेत में अपने भाई हाबिल की हत्या जैसा भयानक काम कर डाला (पद 8)। यही आध्यात्मिक हार का असली रूप है। जैसा कि 1 पतरस 5:8 में चेतावनी दी गई है, शैतान दहाड़ते हुए शेर की तरह घूमता रहता है और किसी को निगलने की ताक में रहता है। कैन शैतान के लालच पर काबू पाने में नाकाम रहा—जो उसके दिल के दरवाज़े पर शेर की तरह घात लगाए बैठा था—और इसके बजाय पूरी तरह से पाप के वश में हो गया। नतीजतन, वह दुश्मन, यानी शैतान का गुलाम बन गया और अपने ही भाई की हत्या जैसे भयानक पाप का ज़रिया बन गया।

कैन के मन में पल रहे गहरे गुस्से का फायदा उठाकर, शैतान ने उसके दिल में अपने भाई को मारने का विनाशकारी विचार डाल दिया (यूहन्ना 13:2)। यह एक गंभीर सच्चाई है कि जब हम किसी भाई के प्रति अपनी नफ़रत पर काबू नहीं रख पाते, तो हम भी अपने दिल के दरवाज़े पर घात लगाए बैठे पाप रूपी शिकारी जानवर की चपेट में आ सकते हैं और शैतान का शिकार बन सकते हैं।

जब हम शैतान के असली स्वभाव को अच्छी तरह समझ लेते हैं, तो कैन के अपराध के पीछे की ताकतें और भी साफ़ हो जाती हैं। शैतान के स्वभाव के बारे में, यूहन्ना 8:44 यह पक्की गवाही देता है: "तुम अपने पिता, शैतान की संतान हो और तुम अपने पिता की इच्छाओं को पूरा करना चाहते हो। वह शुरू से ही हत्यारा रहा है, उसने सच्चाई का साथ नहीं दिया, क्योंकि उसमें कोई सच्चाई नहीं है। जब वह झूठ बोलता है, तो वह अपनी ही भाषा बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है।" जैसा कि यह अंश बताता है, शैतान एक ऐसा प्राणी है जो पूरी तरह से अपनी "इच्छाओं" के अनुसार काम करता है। दिलचस्प बात यह है कि कैन नाम का अर्थ—वह व्यक्ति जो शैतान का गुलाम बन गया—"प्राप्ति" या "अधिकार" है। जैसा कि उसके नाम से पता चलता है, कैन मूल रूप से बहुत ज़्यादा अधिकार जमाने की भावना, जुनून और जलन से प्रेरित व्यक्ति था। कैन, जो अपनी मर्ज़ी के अनुसार पूरी दुनिया पर अधिकार करना और उसे नियंत्रित करना चाहता था, उसके अहंकार को तब ज़बरदस्त चोट पहुँची जब परमेश्वर ने उसके छोटे भाई हाबिल की उपासना को स्वीकार कर लिया लेकिन उसकी अपनी भेंट को ठुकरा दिया। उसके बढ़े हुए अहंकार ने इतनी गहरी नाराज़गी और जलन को जन्म दिया कि उसका चेहरा ही बदल गया, और आखिर में मामला इतना बिगड़ गया कि उसने अपने ही सगे भाई की हत्या कर दी। अपने नाम के अर्थ के अनुसार, उसने यहाँ तक कि परमेश्वर के अधिकार को भी अपना बताने की कोशिश की; जब चीजें उसकी मर्जी के मुताबिक नहीं हुईं, तो उसने शैतान—जो झूठ का पिता है—के लालच का अनुकरण किया और मानवता का पहला हत्यारा बन गया। इसलिए, प्रेरित यूहन्ना उन संतों को गंभीरता से आग्रह करता है जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं और प्रभु की नई आज्ञा के अनुसार जीते हैं: "कैन जैसे मत बनो।" हमें कैन की तरह शैतान—उस दुष्ट—के सामने अपना दिल नहीं सौंपना चाहिए, और न ही हमें ऐसी स्थिति में आना चाहिए जहाँ हम अपने साथ विश्वास करने वाले भाइयों से ईर्ष्या करें, उनकी निंदा करें और आध्यात्मिक रूप से उनकी हत्या कर दें। प्रभु के राज्य की खोज के लिए अपने अधिकार की भावना और जिद्दी इच्छा को त्यागना ही कैन की त्रासदी से बचने और सच्चे प्रेम का समुदाय बनाने का एकमात्र तरीका है।

जब मैं प्रेरित यूहन्ना की सख्त आज्ञा—"कैन जैसे मत बनो"—पर विचार करता हूँ, तो मुझे उस क्लासिक चेतावनी की याद आती है जो चर्च के इतिहास में गूँजती रही है: "कुरिन्थियों जैसे मत बनो।" यह कुरिन्थियों के जीवन का अनुकरण न करने की सलाह है, जो सांसारिक संस्कृति से दूषित थे और यौन अनैतिकता और व्यभिचार का जीवन जीते थे। इसी तरह, आज के अंश—1 यूहन्ना 3:12—का संदेश स्पष्ट है: यीशु मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में मानने और उनके प्रति समर्पित होने के नाते, हमें कैन की तरह आध्यात्मिक अंधकार का शिकार नहीं होना चाहिए—एक-दूसरे से ईर्ष्या करना, लालच रखना और अंततः नफरत के कारण भाई की हत्या करने का घातक पाप करना। यूहन्ना ने पहले कहा था, "जो पाप करता है वह शैतान का है, क्योंकि शैतान शुरू से ही पाप करता आया है" (1 यूहन्ना 3:8)। हमें कैन की तरह शैतान का एजेंट बनने और पाप के रास्ते पर चलने से दृढ़ता से इनकार करना चाहिए।

यहूदा 1:11 उन लोगों को कड़ी चेतावनी देता है जो अवज्ञा के इस रास्ते पर चलते हैं: "उन पर हाय! क्योंकि वे कैन के रास्ते पर चले हैं।" इसलिए, हमें कैन के बुरे रास्ते के बजाय, जो बर्बादी की ओर ले जाता है, धर्मी हाबिल के रास्ते को चुनना चाहिए। जैसा कि इब्रानियों 11:4 गवाही देता है, विश्वास के कारण ही हाबिल ने परमेश्वर को कैन की तुलना में "अधिक उत्तम बलिदान" चढ़ाया। परमेश्वर को खुश करने वाली "बेहतर उपासना" करने वाले उपासक बनने के लिए, हमें मत्ती 5:23-24 में प्रभु की आवाज़ को हल्के में नहीं लेना चाहिए: "इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तुझे याद आए कि तेरे भाई को तुझसे कोई शिकायत है, तो अपनी भेंट वेदी के सामने छोड़ दे और चला जा। पहले अपने भाई से मेल-मिलाप कर, और फिर आकर अपनी भेंट चढ़ा।" बाइबल हमें सिखाती है कि जब हम परमेश्वर की पवित्र उपासना करने की तैयारी कर रहे हों, और हमें कोई ऐसी बात याद आए जिससे किसी भाई या बहन को हमसे कोई शिकायत हुई हो, तो हमें तुरंत अपनी उपासना रोक देनी चाहिए। सीख यह है कि भेंट को वेदी पर छोड़ दें, उस भाई या बहन के पास जाएँ, अपना दिल खोलें, और परमेश्वर के सामने आने से पहले मेल-मिलाप कर लें। दूसरे शब्दों में, सच्ची उपासना केवल "प्यार के रिश्ते" में ही पूरी होती है, जहाँ हम अपने भाइयों और बहनों से सच्चा प्यार करते हैं और उनसे मेल-मिलाप रखते हैं। अगर हम साथी विश्वासियों के साथ दुश्मनी और झगड़ा करते हैं—चाहे घर पर हो या समुदाय में—और इस तरह पड़ोसियों से प्यार करने की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं, फिर भी उपासना में पवित्रता का दिखावा करते हैं और मुँह से कहते हैं कि हम परमेश्वर से प्यार

करते हैं, तो ऐसी उपासना निश्चित रूप से वह नहीं है जो प्रभु चाहते हैं। यह कैन की पाखंडी भेंट से अलग नहीं है। परमेश्वर के लिए सच्चा प्यार हमारे बगल में रहने वाले पड़ोसी से प्यार करने के व्यावहारिक काम से साबित होता है। प्रभु द्वारा दिखाए गए पवित्र प्यार (1 यूहन्ना 2:6) के नक्शेकदम पर चलते हुए, हमें भी ऐसा जीवन जीना चाहिए जो हमेशा धार्मिकता का पालन करे (3:10)। परमेश्वर की सच्ची संतान होने का सबूत केवल इसी बात में है कि हम अपने सामने मौजूद भाई से सच्चे दिल से प्यार करें।

दूसरी बात, जो व्यक्ति "अपने भाई से नफ़रत करता है" — यानी प्रभु की आज्ञा के अनुसार एक-दूसरे से प्रेम नहीं करता — वह अजीब बात है कि दुनिया उसे अपना मानती है और उससे प्रेम करती है।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 3:13 को देखिए। प्रेरित यूहन्ना उन विश्वासियों को, जिन्हें दुनिया के विरोध का सामना करना पड़ता है, इन शब्दों से प्रोत्साहित करते हैं: "मेरे भाइयों, अगर दुनिया तुमसे नफ़रत करती है, तो हैरान मत होना।" आप इस सच्चाई को कैसे देखते हैं कि अविश्वासी दुनिया हमसे — यानी आपसे और मुझसे — नफ़रत करती है क्योंकि हम मसीही हैं? ज़ाहिर है, कोई भी बिना किसी कारण के दूसरों की नफ़रत का पात्र नहीं बनना चाहता। हर किसी से पहचान और प्यार पाना इंसानी फ़ितरत है, चाहे वे विश्वासी हों या अविश्वासी। फिर भी, बाइबल कहती है कि अविश्वासी दुनिया का हमसे नफ़रत करना पूरी तरह से स्वाभाविक — और असल में, अपरिहार्य — है। यूहन्ना 15:18 और 23 में, यीशु ने इस नफ़रत की जड़ को साफ़ तौर पर बताया है: "अगर दुनिया तुमसे नफ़रत करती है, तो याद रखो कि उसने मुझसे पहले नफ़रत की थी... जो मुझसे नफ़रत करता है, वह मेरे पिता से भी नफ़रत करता है।" दुनिया की हमसे नफ़रत हमारे निजी आकर्षण या चरित्र की वजह से नहीं है; बल्कि, वे उस प्रभु से नफ़रत करते हैं जो हमारे अंदर वास करते हैं, और प्रभु से नफ़रत करना वैसा ही है जैसे परमेश्वर पिता से नफ़रत करना, जिन्होंने उन्हें भेजा था। जैसा कि पहले 1 यूहन्ना 2:22 में बताया गया है, दुनिया इस बात से इनकार करती है कि यीशु ही मसीह हैं और वह परमेश्वर पिता और यीशु पुत्र, दोनों को ही नकारती है। इसीलिए दुनिया हम पर — यानी उन लोगों पर जो परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करते हैं और उनके पीछे चलते हैं — स्वाभाविक रूप से नफ़रत और विरोध ज़ाहिर करती है।

इसलिए, जब दुनिया हमसे नफ़रत करती है और हमें नकारती है, तो हमें हैरान या परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। इसके विपरीत, अगर हम सच्चे मसीही हैं, तो दुनिया की नफ़रत हमारे लिए सम्मान का प्रतीक है।

यीशु ने यूहन्ना 15:19 में इसका मुख्य कारण बताया है: "अगर तुम दुनिया के होते, तो दुनिया तुमसे अपने लोगों जैसा प्यार करती। लेकिन तुम दुनिया के नहीं हो, बल्कि मैंने तुम्हें दुनिया में से चुन लिया है। इसीलिए दुनिया तुमसे नफ़रत करती है।" इसके अलावा, यूहन्ना 17:14 और 16 में दर्ज अपनी महायाजकीय प्रार्थना में, प्रभु ने इस सच्चाई को फिर से दोहराया: "मैंने उन्हें तेरा वचन दिया है और दुनिया उनसे नफ़रत करती है, क्योंकि वे दुनिया के नहीं हैं, ठीक वैसे ही जैसे मैं दुनिया का नहीं हूँ।" अगर हम दुनिया के होते, तो दुनिया हमें अपना मानती और आसानी से प्यार और स्वागत करती। लेकिन, प्रभु ने हमें कृपा करके दुनिया से अलग बुलाया है, और अब हमारी नागरिकता दुनिया जैसी नहीं रही। दुनिया हमसे नफ़रत इसलिए करती है क्योंकि हम अब प्रभु की संपत्ति बन गए हैं, न कि दुनिया के। इसे दूसरी तरफ़ से सोचें: अगर आप यीशु पर विश्वास करने का दावा करते हैं, फिर भी दुनिया से कोई नफ़रत नहीं झेलते—बल्कि उसके साथ पूरी तरह मिल-जुलकर रहते हैं और उसका पूरा साथ पाते हैं—तो यह एक खतरनाक संकेत हो सकता है कि आप अभी भी दुनिया के ही हैं। जिस पल हम प्रभु की आज्ञाओं को छोड़ देते हैं और अपने भाइयों से नफ़रत करते हैं, हम प्रभु के स्वभाव से दूर हो जाते हैं और दुनिया जैसे बन जाते हैं। ठीक इसीलिए दुनिया उन्हें अपनाती है और उनसे प्यार करती है जो प्रभु के शासन को ठुकराते हैं और अपने भाइयों से नफ़रत करते हैं।

जब हम सुसमाचार और प्रेरित यूहन्ना द्वारा लिखी गई पत्रियों की शिक्षाओं को मिलाते हैं, तो हमें 1 यूहन्ना 3:13 में दी गई मज़बूत सलाह के पीछे का गहरा कारण समझ आता है: "मेरे भाइयों, अगर दुनिया तुमसे नफ़रत करे तो हैरान मत होना।" इस कारण को एक वाक्य में कहें तो: दुनिया हमसे नफ़रत इसलिए करती है क्योंकि हम अब उसके नहीं रहे। प्रभु की महान कृपा से केवल उन्हीं का होने के लिए चुने जाने के कारण, दुनिया स्वाभाविक रूप से हमें ठुकराती है और दूर धकेलती है। 1 यूहन्ना 2 में, प्रेरित यूहन्ना दो बड़े अंतरों के ज़रिए प्रभु के लोगों और दुनिया के लोगों के बीच की साफ़ सीमा को समझाते हैं।

(1) पहला अंतर मन के "सत्य" और होंठों के "झूठ" के बीच है।

प्रेरित यूहन्ना प्रभु के लोगों को ऐसे लोगों के रूप में बताते हैं जिनके अंदर सच्चाई है, जबकि दुनिया के लोगों को झूठा बताते हैं। 1 यूहन्ना 2:4 की गंभीर चेतावनी पर गौर करें: "जो कोई कहता है, 'मैं उसे जानता हूँ,' लेकिन उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता, वह झूठा है, और उस व्यक्ति में सच्चाई नहीं है" (NIV)। सबसे

पहले, हमें उन लोगों के "झूठ" पर विचार करना चाहिए जो दुनिया के हैं। यूहन्ना 8:44 शैतान को "झूठा और झूठ का पिता" बताता है। हालाँकि, 1 यूहन्ना 2:4 उन लोगों को भी "झूठा" कहता है जो परमेश्वर को जानने की बड़ी-बड़ी बातें तो करते हैं, लेकिन उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते।

इन दोनों वचनों के बीच के आध्यात्मिक संबंध पर विचार करें। जो शैतान—झूठ के पिता—से पैदा हुए हैं और दुनिया के हैं, वे आध्यात्मिक रूप से ढोंगी हैं; वे परमेश्वर पर विश्वास करने और उसे जानने का दिखावा तो करते हैं, लेकिन कभी भी उसके वचन का पालन नहीं करते। जबकि एक संत जो सचमुच परमेश्वर को जानता है, वह वचन के अनुसार आज्ञाकारी जीवन जीता है, वहीं जो लोग परमेश्वर को जानने का दावा तो करते हैं पर उसकी आज्ञाओं की अनदेखी करते हैं, वे खुद को दुनिया का झूठा व्यक्ति साबित करते हैं। इसके विपरीत, सच्चे संत—जो दुनिया के दाग-धब्बों से दूर और पूरी तरह प्रभु के हैं—वे हैं जिनके भीतर सच्चाई गहराई से बसी होती है। दूसरे शब्दों में, क्योंकि वे सचमुच प्रभु को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, इसलिए वे खुशी-खुशी उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं (1 यूहन्ना 2:3)। जो संत वचन का पालन करते हैं, उनके दिलों में शाश्वत सत्य मजबूती से स्थापित होता है। इस प्रकार, जो लोग प्रभु की आज्ञाओं का ईमानदारी से पालन करते हैं और सच्चाई को महत्व देते हैं, उनके जीवन में "परमेश्वर का प्रेम सचमुच सिद्ध होता है" (पद 5)। और प्रेम के इस फल के माध्यम से, हमें अपने उद्धार का पक्का सबूत मिलता है—यह भरोसा कि हम प्रभु में बने हुए हैं।

(2) दूसरी बात, जो लोग प्रभु के हैं वे "ज्योति में" बने रहते हैं, जबकि जो लोग दुनिया के हैं वे "अंधकार में फँसे" होते हैं।

प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताया गया दूसरा अंतर "ज्योति" और "अंधकार" से संबंधित है। यूहन्ना कहते हैं कि जो लोग प्रभु के हैं वे ज्योति में हैं, जबकि दुनिया के लोग अंधकार में फँसे हुए हैं। 1 यूहन्ना 2:9 में दी गई कड़ी बात पर विचार करें: "जो कोई कहता है कि वह ज्योति में है और अपने भाई से नफरत करता है, वह अभी भी अंधकार में है" (संशोधित कोरियाई संस्करण)। "यदि आप ज्योति में रहने का दावा करते हैं लेकिन अपने भाई से नफरत करते हैं, तो आप अभी भी अंधकार में जी रहे हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। पद 4 में उन लोगों के झूठ को उजागर करने के बाद जो "परमेश्वर को जानने का दावा तो करते हैं लेकिन उसकी

आज्ञाओं का पालन नहीं करते," प्रेरित यूहन्ना पद 9 में उन लोगों के पाखंड पर कड़ा प्रहार करते हैं जो "ज्योति में होने का दावा करते हैं फिर भी अपने भाई से नफरत करते हैं।"

इन दो पदों के क्रम को देखते हुए, हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि यूहन्ना का पत्र पाने वाले समुदाय में ऐसे लोग थे जो बड़ी-बड़ी बातें करते थे—दावा करते थे कि "मैं परमेश्वर को गहराई से जानता हूँ" या "मैं सच्चाई की ज्योति में रहता हूँ"—जबकि असल में वे परमेश्वर की आज्ञाओं को कुचलते थे और अपने भाई-बहनों के प्रति ईर्ष्या और नफरत रखते थे। फिर भी, क्या यह शर्मनाक व्यवहार केवल पहली सदी की शुरुआती कलीसिया की ही समस्या थी? आज की नाज़ुक आधुनिक कलीसिया में कितने ही ईसाई यह तो कहते हैं कि "मैं प्रभु को जानता हूँ" या "मैं प्रभु से बहुत प्रेम करता हूँ," लेकिन अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में उसकी आज्ञाओं को तोड़ते हैं—अपने पड़ोसियों से प्रेम करने के बजाय उनकी बुराई करते हैं और उनसे नफरत करते हैं? शर्म की बात है कि ऐसी विरोधाभासी बातें और पाखंड हमारी अपनी ज़िंदगी में भी अनगिनत बार दोहराए जाते हैं।

हम इफिसियों 5:8 में दी गई पवित्र आज्ञा से अच्छी तरह वाकिफ हैं: "क्योंकि एक समय तुम अंधकार थे, लेकिन अब तुम प्रभु में ज्योति हो। ज्योति की संतान के समान चलो।" अपनी पहचान के लिहाज़ से, हम अंधकार के शासन से आज़ाद हो चुके हैं और प्रभु में ज्योति बन गए हैं। फिर भी, हमें दुख के साथ इस बात पर विचार करना चाहिए कि क्या हम ज्योति की संतान के समान चलने में नाकाम हो रहे हैं और इसके बजाय अंधकार की आदतों के अनुसार जी रहे हैं—जैसे कि यीशु पर विश्वास करने से पहले हमारा "पुराना स्वभाव" था। बाइबल में बताए गए "अंधकार में चलने वालों" की तरह चलने का असल मतलब क्या है? प्रेरित यूहन्ना के अनुसार, इसका मतलब अपने भाई से नफरत करने के अलावा और कुछ नहीं है (1 यूहन्ना 2:9)। 1 यूहन्ना 2:11 इस नफरत के आध्यात्मिक नतीजों के बारे में एक डरावनी चेतावनी देता है: "लेकिन जो कोई अपने भाई से नफरत करता है, वह अंधकार में है और अंधकार में चलता है, और उसे पता नहीं होता कि वह कहाँ जा रहा है, क्योंकि अंधकार ने उसकी आँखों को अंधा कर दिया है।" जो व्यक्ति अपने भाई से नफरत करता है, उसने सिर्फ़ कोई नैतिक गलती नहीं की है; वह आध्यात्मिक रूप से अंधा हो गया है—अंधकार के घने पर्दे के पीछे फँस गया है—और एक ऐसी दयनीय, आध्यात्मिक रूप से खोई हुई आत्मा बन गया है जो यह

भी नहीं समझ पाती कि वह किस दिशा में चल रही है। यह अंधकारमय स्थिति—जिसकी पहचान प्रभु के शासन को नकारने और अपने भाई के प्रति नफ़रत से होती है—दुनिया के लोगों का असली स्वभाव है; दुनिया इन्हें अपना मानकर गले लगाती और प्यार करती है (3:13)। जब हम नफ़रत के अंधकार को बने रहने देते हैं, तो "ज्योति की संतान" कहलाने के बावजूद, हम दुनिया के साथ जुड़ने की त्रासदी का शिकार हो जाते हैं।

आज के पाठ में प्रेरित यूहन्ना के कहे शब्द—1 यूहन्ना 3:13, "हे मेरे भाइयों, यदि दुनिया तुमसे नफ़रत करे तो हैरान न होना"—हमें याद दिलाते हैं कि मसीहियों के प्रति अविश्वासी दुनिया की दुश्मनी एक स्वाभाविक आध्यात्मिक नतीजा है। तो फिर, दुनिया हमसे इतनी ज़ोरदार नफ़रत क्यों करती है और हमें क्यों ठुकराती है? यूहन्ना 3:19 इंसान के आध्यात्मिक स्वभाव में मौजूद अंधेरे पर कड़ा आरोप लगाता है: "फैसला यह है: दुनिया में रोशनी आई, लेकिन लोगों ने रोशनी के बजाय अंधेरे को पसंद किया क्योंकि उनके काम बुरे थे।" अविश्वासियों के विश्वासियों से नफ़रत करने का मुख्य कारण यह है कि वे रोशनी से ज़्यादा अंधेरे से प्यार करते हैं। जो लोग अंधेरे से प्यार करते हैं, उनके लिए रोशनी की संतानों का पवित्र जीवन बिल्कुल भी आरामदायक नहीं होता। जैसा कि इफिसियों 5:11 बताता है, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने वाले संत का जीवन चुपचाप दुनिया के "अंधेरे के बेकार कामों" को "फटकारता" और बेनकाब करता है। जैसे घने अंधेरे में चमकती तेज़ रोशनी हर छिपी हुई गंदगी और असली रूप को दिखा देती है, वैसे ही रोशनी की संतानों का अलग जीवन एक आईने की तरह काम करता है, जो दुनिया के गुप्त पापों और काले कामों को सबके सामने ले आता है। क्योंकि वे अपने बुरे कामों के बेनकाब होने से नफ़रत करते हैं, इसलिए अंधेरे की संतानें स्वाभाविक रूप से रोशनी की संतानों से नफ़रत करती हैं और उन्हें ठुकराती हैं। यूहन्ना इसी आध्यात्मिक संघर्ष की बात करता है और हमें दिलासा देता है कि दुनिया की नफ़रत से हैरान न हों (1 यूहन्ना 3:13)।

हमारे विषय के संदर्भ में इस सच्चाई पर विचार करें। अजीब बात है कि जो व्यक्ति प्रभु की नई आज्ञा को छोड़ देता है और "अपने भाई से नफ़रत करता है" (पद 15), वही व्यक्ति दुनिया को अपना लगता है और दुनिया उससे प्यार करती है (पद 13)। दुनिया के उसे बर्दाश्त करने और उससे प्यार करने का कारण साफ़ है। ऐसा इसलिए है क्योंकि, जैसा कि 1 यूहन्ना 3:10 में गंभीरता से कहा गया है, "जो कोई अपने भाई से प्यार नहीं करता, वह परमेश्वर का नहीं है।" दूसरे शब्दों में, वह दिखाता है कि वह परमेश्वर की संतानों के स्वभाव से भटक गया है और दुनिया जैसी ही आध्यात्मिक नागरिकता रखता है। आखिरकार, क्योंकि यह दुनिया

परमेश्वर की नहीं है, इसलिए यह आपसे और मुझसे नफ़रत करती है—हमसे, जिन्हें उसका पवित्र प्यार मिला है (1 यूहन्ना 3:1–2, 13)। 1 यूहन्ना 3:10 की कड़वी भाषा में कहें तो, वे स्वभाव से ही "शैतान की संतान" हैं। शैतान की संतान में एक ऐसा आध्यात्मिक DNA होता है जो उन्हें परमेश्वर की संतानों से ईर्ष्या और दुश्मनी रखने के लिए मजबूर करता है। वे कभी भी ऐसी नेकी का काम नहीं करते जिससे परमेश्वर खुश हों, और न ही वे अपने साथ रहने वाले भाई से प्रेम करते हैं (पद 10)। नतीजतन, वे लगातार परमेश्वर की उन सच्ची संतानों पर हमला करते हैं जो नेकी का काम करती हैं और अपने भाइयों से प्रेम करती हैं। फिर भी, यह याद रखें: यदि हम उनके जैसे बनने लगें—यानी नेकी का काम न करें और अपने बीच के भाई से नफ़रत करें—तो हम असल में यह साबित कर देते हैं कि हम इस दुनिया के हैं। जो व्यक्ति अपने भाई से नफ़रत करता है, उसे केवल इस भ्रष्ट दुनिया का प्रेम और मेहमाननवाज़ी मिलती है, और वह एक ऐसी दुखद पहचान बना लेता है जो "परमेश्वर की संतान" कहलाने के पवित्र पद के अनुकूल नहीं है।

प्रिय लोगों, हम वे हैं जिनसे परमेश्वर सबसे ज़्यादा प्रेम करते हैं। हम पवित्र संतानें हैं जो पूरे भरोसे के साथ उनकी बेटियाँ और बेटे बन गए हैं, क्योंकि हमें पिता परमेश्वर का अपार प्रेम मिला है, जिन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के अपने इकलौते बेटे को दे दिया (पद 1–2)। इसलिए, परमेश्वर की संतान होने के नाते, हमें—स्वर्ग के नागरिकों के अनुकूल मूल्यों और प्रभु के लहू से स्थापित नई आज्ञा के अनुसार—"एक-दूसरे से प्रेम करना" चाहिए (पद 11)। जब हम प्रभु की इच्छा का पालन करते हुए, एक-दूसरे से दिल से प्रेम करते हैं और मिल-जुलकर रहते हैं, तो यह अंधेरी दुनिया हमारे प्रति अपनी दुश्मनी और नफ़रत ज़ाहिर कर सकती है। फिर भी, दुनिया के ठुकराने से निराश या विचलित होने का हमारे पास कोई कारण नहीं है। यह सच कि दुनिया हमें नहीं जानती और हमसे नफ़रत करती है, असल में इस बात का सबसे साफ़ सबूत है कि हम अब दुनिया के नहीं रहे, बल्कि पवित्र प्रभु की संपत्ति बन गए हैं। अगर दुनिया हमसे इसलिए नफ़रत करती है क्योंकि हम परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे खुद से करते हैं, तो हमें इसे अजीब नहीं समझना चाहिए; बल्कि, हमें इसे एक सामान्य बात मानकर स्वीकार करना चाहिए और इसे स्वर्ग के सम्मान का एक शानदार निशान समझना चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम—जिन्हें परमेश्वर का महान प्रेम मिला है और जो उनकी अनमोल संतानें बन गए हैं—अब हिम्मत के साथ उस भ्रष्ट जीवन को छोड़ दें जो दुनिया के साथ समझौता करता है। मैं प्रभु के नाम पर दिल से प्रार्थना करता हूँ कि उनके वचन का

पूरी तरह पालन करके और एक-दूसरे से सच्चे दिल से प्रेम करके, आप स्वर्ग के ऐसे शानदार नागरिक बनें जो इस अंधेरी दुनिया की "पवित्र नफ़रत" को सह सकें। तीसरी बात, जो कोई प्रभु की आज्ञा के अनुसार एक-दूसरे से प्रेम करने के बजाय अपने भाई से नफ़रत करता है, वह मौत की हालत में रहता है।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 3:14 को देखिए। प्रेरित यूहन्ना विश्वासियों को मिलने वाले अनंत जीवन और नफ़रत से होने वाली आध्यात्मिक बर्बादी के बीच साफ़ फ़र्क बताते हैं: "हम जानते हैं कि हम मौत से जीवन में आ गए हैं क्योंकि हम भाइयों से प्रेम करते हैं। जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता, वह मौत में रहता है" (NKJV)। "हम जानते हैं कि क्योंकि हम अपने भाइयों से प्रेम करते हैं, इसलिए हम मौत से बच गए हैं और हमें अनंत जीवन मिल चुका है। लेकिन, जो व्यक्ति प्रेम नहीं करता, वह मौत में ही रहता है" (Contemporary Korean Version)।

क्या आप जानते हैं कि कैलिफ़ोर्निया, USA में कम से कम मज़दूरी (minimum wage) का इतिहास क्या रहा है? 1980 के दशक में, कैलिफ़ोर्निया में कम से कम मज़दूरी सिर्फ़ $3.10 प्रति घंटा थी। लेकिन, जैसे-जैसे समय बीता और आर्थिक हालात—जिनमें रहने का खर्च भी शामिल है—बदले, इस मज़दूरी में लगातार बदलाव किए गए। ज़ाहिर है, जो मज़दूर कड़ी मेहनत करते हैं, वे अपनी मेहनत का सही मेहनताना पाने के हकदार हैं। बाइबल मालिक की सामाजिक ज़िम्मेदारी और न्याय के महत्व के बारे में कड़ी चेतावनी देती है। व्यवस्थाविवरण 24:15 में यह हुक्म दिया गया है कि किराए पर रखे गए मज़दूर को "उसकी मज़दूरी उसी दिन, सूरज डूबने से पहले" दी जाए। इसके पीछे दिल को छू लेने वाली वजह क्या है? वजह यह है कि "वह गरीब है और बेसब्री से उस मज़दूरी का इंतज़ार कर रहा है।" एक आधुनिक अनुवाद इस हुक्म की गंभीरता को साफ़ तौर पर बताता है: "सूरज डूबने से पहले उसे उसकी मज़दूरी दे दो। क्योंकि वह गरीब है, उसे उस पैसे की तुरंत ज़रूरत है। अगर तुम उसे उसी दिन पैसे नहीं देते, तो वह तुम्हारे ख़िलाफ़ प्रभु से फ़रियाद करेगा, और तुम पाप के दोषी ठहरोगे" (व्यवस्थाविवरण 24:15)। काम के बदले सही मेहनताना पाने का यह सिद्धांत नए नियम (New Testament) के दौर में भी जारी रहा। पहली सदी में, प्रेरित पौलुस के समय में, रोमन सैनिकों को राज्य की सैन्य सेवा के लिए नियमित वेतन मिलता था—ठीक वैसे ही जैसे आज सैनिकों को सरकार से वेतन मिलता है। पहली सदी के इन रोमन सैनिकों को मिलने वाला मेहनताना कई तरह का होता था: एक दिन का राशन, कपड़े या नकद भुगतान। बाइबल इस मेहनताने को—यानी मेहनत या सेवा

के बदले मिलने वाले सही इनाम को—"मज़दूरी" कहती है। प्रेरित पौलुस, जो मेहनत के बदले इनाम या फल पाने की बात को अच्छी तरह समझते थे, उन्होंने रोम के विश्वासियों को लिखते समय रोमियों 6:23 के पहले हिस्से में इस सिद्धांत को आध्यात्मिक रूप से लागू किया: "क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है।" यहाँ, हमें बाइबल में बताए गए "मृत्यु" शब्द के ज़रूरी महत्व और छिपे हुए अर्थ को गहराई से समझना चाहिए। धर्मशास्त्र आम तौर पर मृत्यु की अवधारणा को तीन अलग-अलग पहलुओं में बाँटता है।

(1) पहला अर्थ है "आध्यात्मिक मृत्यु।"

बाइबल में, आध्यात्मिक मृत्यु का मतलब है पवित्र परमेश्वर से पूरी तरह अलग हो जाना, जो जीवन का स्रोत हैं। उत्पत्ति की किताब में बताए गए पहले इंसान, आदम ने वफादार और वाचा निभाने वाले परमेश्वर के सर्वोच्च आदेश का सीधे तौर पर उल्लंघन किया। उस उल्लंघन के पल में, उसकी आत्मा आध्यात्मिक रूप से मर गई, और वह परमेश्वर से बुरी तरह अलग हो गया। इस एक इंसान, आदम की विफलता ने मानव इतिहास में दुख-मुसीबतों का सैलाब ला दिया। रोमियों 5:12 में, प्रेरित पौलुस इस 'मूल पाप' के दूरगामी असर को समझाते हैं: "इसलिए, जैसे एक मनुष्य के द्वारा पाप दुनिया में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस तरह मृत्यु सभी लोगों तक पहुँची, क्योंकि सबने पाप किया।" आदम से पैदा हुई सभी इंसानी नस्लों को उस मूल पाप के घातक असर के कारण आध्यात्मिक मृत्यु की विरासत मिली।

जन्म से ही, हम सब जीवन देने वाले परमेश्वर से अलग और हमेशा के लिए दूर हो गए थे। रोमियों 5 में, प्रेरित पौलुस तीन खास शब्दों का इस्तेमाल करके यह साफ तौर पर बताते हैं कि परमेश्वर से अलग हुए इन पापियों की आध्यात्मिक हालत कितनी दयनीय और बेबस थी। पहला, हम "कमज़ोर" थे (बिना किसी ताकत के)—परमेश्वर के क्रोध से खुद को बचाने में पूरी तरह असमर्थ (रोमियों 5:6)।

दूसरा, हम "पापी" थे—हमने परमेश्वर के नियम को तोड़ा था और कानून तोड़ने का काम किया था (आयत 8)।

तीसरा, हम "दुश्मन" थे—परमेश्वर के शासन के खिलाफ बगावत करने वाले और स्वभाव से उनके विरोधी (आयत 10)।

इफिसियों 2:1 एक ही वाक्य में इंसानियत की असली हालत—कमज़ोर, पापी और परमेश्वर के दुश्मन के तौर पर अलग-थलग—को गंभीरता से बताती है: "उसने तुम्हें जीवित किया, जो अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।" स्वभाव से हम आध्यात्मिक रूप से मरे हुए थे—अपने अपराधों और पापों के कारण मौत की वजह से पहले ही ठंडे पड़ चुके थे—और खुद से रोशनी की ओर एक भी कदम बढ़ाने में असमर्थ थे।

(2) दूसरी बात, बाइबल में जिस "मौत" की बात की गई है, उसका मतलब शारीरिक मौत है।

यहाँ, शारीरिक मृत्यु का अर्थ उस घटना से है जब हमारी सांसारिक ज़िंदगी के अंत में भौतिक शरीर और आत्मा अलग हो जाते हैं। धर्मनिरपेक्ष चिकित्सा विज्ञान के नज़रिए से, शारीरिक मृत्यु को मुख्य रूप से सांस और दिल की धड़कन के रुकने के तौर पर परिभाषित किया जाता है। हालाँकि, बाइबल के अनुसार शारीरिक मृत्यु की असली परिभाषा केवल सांस रुकने से कहीं आगे की बात है; यह उस पल को दर्शाती है जब आत्मा, जो हमारे भीतर रहती थी, भौतिक शरीर रूपी "तंबू" से निकलकर अलग हो जाती है। इसका सबसे पवित्र और उत्तम उदाहरण यीशु मसीह का क्रूस पर अंतिम सांस लेना है। लूका 23:46 में प्रभु के अंतिम क्षणों का वर्णन है: "यीशु ने ऊँची आवाज़ में पुकारा, 'हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।' यह कहकर उन्होंने अंतिम सांस ली।" बाइबल में बताई गई शारीरिक मृत्यु केवल जैविक क्रियाओं का रुकना नहीं है, बल्कि आत्मा और शरीर का अलग होना है—यानी शरीर से आत्मा का निकल जाना। जब यह पवित्र अलगाव होता है, तो भौतिक शरीर उसी मिट्टी में मिल जाता है जिससे वह बना था, जबकि उद्धार पाई हुई आत्मा को पिता—जीवन के प्रभु—अपनी गोद में ले लेते हैं और वह अनंत स्वर्ग में प्रवेश करती है।

(3) तीसरी बात, बाइबल के नज़रिए से मृत्यु का अर्थ "अनंत मृत्यु" है, जो पूरी तरह से विनाश है।

यह "दूसरी मृत्यु" की ओर इशारा करता है, जिसके बारे में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक (Rev. 20:6, 11, 14; 21:8) में गंभीरता से बताया गया है। तो फिर, इस दूसरी मृत्यु की असलियत क्या है जिसके बारे में प्रकाशितवाक्य चेतावनी देता है? यह उन सभी अविश्वासियों के लिए अनंत सज़ा की अंतिम अवस्था है जो अंततः यीशु मसीह के प्रायश्चित के काम को ठुकरा देते हैं, विश्वास करने से इनकार करते हैं और परमेश्वर की इच्छा का विरोध करते हैं। यह अंतिम मृत्यु एक दुखद सज़ा है—जो 'महान श्वेत सिंहासन के न्याय' के बाद दी जाती है—जिसमें व्यक्ति जीवन के स्रोत, परमेश्वर से हमेशा और पूरी तरह से अलग हो जाता है और आग और जलती हुई गंधक की झील में डाल दिया जाता है।

जब प्रेरित पौलुस ने रोमियों 6:23 में गंभीरता से कहा कि "पाप की मज़दूरी मृत्यु है," तो "मृत्यु" शब्द में व्यापक अर्थों में वे तीनों बाइबल-सम्मत अर्थ शामिल थे जिनकी हमने अब तक चर्चा की है। दूसरे शब्दों में, पाप की जो सही कीमत और सज़ा (मज़दूरी) हमें चुकानी पड़ती है, उसमें ये सभी स्थितियाँ शामिल हैं: आध्यात्मिक मौत (परमेश्वर से रिश्ता टूटना), शारीरिक मौत (आत्मा और शरीर का अलग होना), और हमेशा की मौत (नरक की कभी न खत्म होने वाली सज़ा)। पाप का आखिरी नतीजा मौत की यह भयानक, तीन तरह की कड़ी है।

मौत के उस भयानक, तीन तरह के रूप को ध्यान में रखते हुए, जिसके बारे में हमने अभी बात की है, आज के वचन, 1 यूहन्ना 3:14 में कही गई साफ़ और ज़ोरदार बात पर फिर से गौर करें: "हम जानते हैं कि हम मौत से ज़िंदगी में आ गए हैं क्योंकि हम अपने भाइयों से प्यार करते हैं। जो अपने भाई से प्यार नहीं करता, वह मौत में ही रहता है" (NKJV)। "हम जानते हैं कि क्योंकि हम अपने भाइयों से प्यार करते हैं, इसलिए हम मौत से बच गए हैं और हमें पहले से ही हमेशा की ज़िंदगी मिल गई है। लेकिन, जो प्यार नहीं करते, वे मौत में ही रहते हैं" (Contemporary Korean Version)। इस हिस्से के संदर्भ में, प्रेरित यूहन्ना इंसानों को साफ़ तौर पर दो अलग-अलग समूहों में बाँटता है। एक समूह में "परमेश्वर की संतानें" हैं। प्रभु से जन्म लेने के कारण, वे खुशी-खुशी नेकी का काम करते हैं (1 यूहन्ना 3:10) और वैसे ही चलते हैं जैसे नेक यीशु मसीह चले थे (2:6)। वे ही हैं जो प्रभु के लहू से लिखे गए नए हुक्म को मानते हुए, खुशी-खुशी "एक-दूसरे से प्यार करते हैं" (3:11)। दूसरे समूह में "शैतान की संतानें" हैं। ये वे लोग हैं जो कभी भी ऐसी नेकी नहीं चाहते जिससे परमेश्वर खुश हो, और न ही वे अपने पास रहने वाले भाई से प्यार करते हैं (वचन 10)। प्रेरित यूहन्ना

परमेश्वर की संतानों को—जो पहली स्थिति में हैं—तसल्ली देता है और भरोसा दिलाता है कि क्योंकि वे अपने भाइयों से प्यार करते हैं, इसलिए वे मौत से ज़िंदगी में आ गए हैं (वचन 14)। इसके उलट, वह शैतान की संतानों पर—जो परमेश्वर के नहीं हैं और दूसरी स्थिति में हैं—सख़्ती से आरोप लगाता है और कहता है कि "जो प्यार नहीं करते," वे अभी भी "मौत की उस बुरी हालत में रहते हैं" (वचन 14)।

इस फ़र्क को गहराई से समझें। परमेश्वर की संतानें, जिन्हें मसीह में हमेशा की ज़िंदगी का तोहफ़ा पहले ही मिल चुका है, उस ज़िंदगी के स्वभाव के अनुसार अपने भाइयों से प्यार करती हैं। इसके उलट, शैतान की संतानें, जो अभी भी अंधेरे के साये में जी रही हैं, अपने भाइयों से प्यार नहीं करतीं, बल्कि मौत की राह पर चलती हैं। वे सिर्फ़ प्यार न करने तक ही सीमित नहीं रहतीं; कैन की तरह, वे अपने भाइयों से जलने लगती हैं, और आखिर में नफ़रत और बर्बादी की ओर बढ़ जाती हैं (वचन 15)। इसलिए, जो कोई भी प्रभु की पवित्र आज्ञा को ठुकराता है—यानी साथी विश्वासियों और भाइयों से प्यार करने के बजाय अपने दिल में जलन और नफ़रत पालता है—उसे सावधान हो जाना चाहिए। ऐसा व्यक्ति "मौत के साये में जी रहा होता है।" उनकी आध्यात्मिक हालत बहुत बुरी होती है: वे आध्यात्मिक रूप से मरे हुए होते हैं, जीवन के स्रोत परमेश्वर से अलग हो चुके होते हैं; उनकी किस्मत में एक दुखद शारीरिक मौत लिखी होती है जो आत्मा और शरीर को अलग कर देती है; और उन्हें हमेशा की "दूसरी मौत" का सामना करना पड़ता है—यानी 'महान श्वेत सिंहासन' के न्याय की आग के बीच परमेश्वर से हमेशा के लिए अलग हो जाना। भाई के प्रति नफ़रत बर्बादी का पक्का सबूत है—इस बात का सबूत कि इंसान मौत की इस तीन-स्तरीय जंजीर में जकड़ा हुआ है और लगातार नरक की सज़ा की ओर बढ़ रहा है।

दोस्तों, बाइबल हमें बताती है कि जहाँ "पाप की मज़दूरी मौत है," वहीं "परमेश्वर का वरदान"—यानी वह मुफ़्त तोहफ़ा जो वह देता है—"हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन" है (रोमियों 6:23)। हालाँकि एक इंसान—पहले आदम—की नाफ़रमानी से दुनिया में पाप आया और उसके नतीजे में मौत सभी लोगों तक फैल गई (5:12), लेकिन परमेश्वर का मुफ़्त तोहफ़ा—"हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन"—एक दूसरे इंसान—दूसरे आदम, या आखिरी आदम, हमारे प्रभु यीशु मसीह—के क्रूस पर मौत तक आज्ञाकारी रहने के

ज़रिए "बहुत से लोगों तक पहुँचा" है (वचन 15)। परमेश्वर की संतान होने के नाते, जिनके पास यह अनंत जीवन है, हमें इस धरती पर रहते हुए डर और कांपते हुए अपने उद्धार को पूरा करना चाहिए, जैसा कि फिलिप्पियों 2:12 में बताया गया है। दूसरे शब्दों में, जब प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पी के विश्वासियों से कहा कि "अपने उद्धार को पूरा करो," तो उनका मतलब था कि उन्हें "अपने अनंत जीवन को जीना चाहिए"—यानी, ऐसे लोगों की तरह जीना चाहिए जिनके पास अनंत जीवन है। तो, अनंत जीवन पाने वाले व्यक्ति की तरह जीने का क्या मतलब है? इसका मतलब है स्वर्ग के नागरिक (फिलिप्पियों 3:20) और स्वर्गीय राज्य के सदस्य के तौर पर जीना। स्वर्गीय राज्य के सदस्य के तौर पर जीने का मतलब है यीशु की "दोहरी आज्ञा"—स्वर्ग का नियम—का पालन करना: अपने पूरे दिल, आत्मा और मन से प्रभु परमेश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसियों से वैसे ही प्रेम करना जैसे हम खुद से करते हैं (मत्ती 22:37-39)। फिलिप्पियों 2:13 हमें बताता है कि परमेश्वर ही हमारे अंदर यह काम करते हैं; यानी, परमेश्वर हमें अच्छा करने की इच्छा और उसे पूरा करने की शक्ति, दोनों देते हैं। पवित्र आत्मा हमारे अंदर प्रेम का फल पैदा करते हैं (गलातियों 5:22-23), जिससे हम परमेश्वर और अपने पड़ोसियों, दोनों से प्रेम कर पाते हैं। पवित्र आत्मा की अगुवाई में अपने भाई-बहनों से प्रेम करके, हम दिखाते हैं कि हम मौत से पार हो चुके हैं और हमें पहले से ही अनंत जीवन मिल चुका है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब अपने जीवन में इसे दिखा सकें (1 यूहन्ना 3:14, *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल*)।

चौथा, जो कोई एक-दूसरे से प्रेम करने की प्रभु की आज्ञा के बजाय किसी भाई से नफ़रत करता है, वह हत्यारा है।

1 यूहन्ना 3:15 इस बारे में साफ़ चेतावनी देता है: "जो कोई अपने भाई से नफ़रत करता है, वह हत्यारा है, और तुम जानते हो कि किसी भी हत्यारे में अनंत जीवन नहीं होता।" *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल* और भी साफ़ तौर पर कहती है, "जो कोई भाई से नफ़रत करता है, वह हत्यारा है।" क्या प्रभु के प्रेम से अपने परिवार, साथी विश्वासियों और पड़ोसियों से प्रेम करने के मामले में हमारा मन सच में साफ़ है? कई बार ऐसा होता है कि रविवार की सुबह प्रार्थना-सभा में जाते समय भी, पति-पत्नी आपस में झगड़ रहे होते हैं या माता-पिता की अपने बच्चे से अनबन हो रही होती है। यह जानते हुए भी कि कोई भाई हमसे नाराज़ है (मत्ती 5:23), हम मन में अजीब भावनाएँ और बिगड़े हुए रिश्तों को बिना सुलझाए ही साथी विश्वासियों के साथ स्तुति और आराधना करते हैं। यीशु साफ़ कहते हैं: आराधना करने से पहले, हमें "पहले जाकर अपने भाई से मेल-मिलाप करना चाहिए, और फिर आकर अपना भेंट चढ़ाना चाहिए" (पद 24)। क्या हम इस बात का पूरी तरह पालन कर

रहे हैं? कलीसिया में बहुत से लोग एक साथ बैठते हैं—ऊपर-ऊपर से हाथ मिलाते और अभिवादन करते हैं—जबकि अंदर ही अंदर अजीब या बिगड़े हुए रिश्तों को छिपाए रखते हैं। इंसानी प्यार की यही सीमा और कमजोरी है। इंसानी प्यार, जो शर्तों पर आधारित होता है, उस पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता। इसलिए, हमें अपनी ताकत से नहीं, बल्कि सिर्फ़ परमेश्वर के प्यार से प्यार करना चाहिए। जब हमारे अंदर रहने वाली पवित्र आत्मा प्यार का फल पैदा करती है, तभी हम कलीसिया में सच्ची एकता पा सकते हैं। 1 यूहन्ना 2:10 इस तरह के प्यार को "बिना ठोकर के भाईचारे का प्यार" कहता है। अगर अभी कोई रुकावट हमें किसी भाई से प्यार करने से रोक रही है, तो इसकी सिर्फ़ एक वजह है: भाई से नफ़रत का अंधेरा अभी भी हमारे दिलों में बसा हुआ है (वचन 11)।

बाइबल कहती है कि जो कोई अपने भाई से नफ़रत करता है, वह अंधेरे में फँसा हुआ है। 1 यूहन्ना 2:11 इस आध्यात्मिक सच्चाई को साफ़-साफ़ बताता है: "जो कोई अपने भाई से नफ़रत करता है, वह अंधेरे में है और अंधेरे में चलता है, और उसे नहीं पता कि वह कहाँ जा रहा है, क्योंकि अंधेरे ने उसकी आँखें अंधी कर दी हैं..." "...उसकी आँखें अंधी कर दी हैं।" परमेश्वर ज्योति है, और उसमें ज़रा भी अंधेरा नहीं है (1:5)। इसलिए, अगर हम दावा करते हैं कि परमेश्वर के साथ हमारी संगति है, फिर भी अपने भाई से नफ़रत करते हैं, तो हम बस अंधेरे में चल रहे हैं और झूठ बोल रहे हैं (वचन 6)। नफ़रत का अंधेरा हमारी समझ को कमज़ोर कर देता है, जिससे हम यह नहीं देख पाते कि हम कहाँ जा रहे हैं (2:11)। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम अंधे हो गए हैं। जब कोई आध्यात्मिक रूप से अंधा होता है, तो वह न तो परमेश्वर के प्यार को देख सकता है और न ही महसूस कर सकता है। आखिर में, भले ही कोई सच्चाई में बने रहना चाहे, वह उसे अमल में लाने की क्षमता खो देता है। हालाँकि मन यह मान सकता है कि भाई से प्यार करना ज़रूरी है, लेकिन नफ़रत से भरा दिल न केवल प्यार करने में नाकाम रहता है, बल्कि दूसरे के बढ़ाए हुए प्यार के हाथ को भी ठुकरा देता है। जो कोई पूरे भरोसे के साथ दावा करता है कि वह "ज्योति में" है, जबकि वह अपने भाई से नफ़रत करता है, तो वह ऐसा व्यक्ति है जो कभी भी सचमुच अंधेरे से बाहर नहीं निकला है (2:9)। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर का प्यार उनमें पूरी तरह से नहीं आया है (वचन 5)। "ज्योति की संतान" कहलाने के लायक न होने पर भी, ऐसा व्यक्ति परमेश्वर की महिमा को छिपाने का पाप बार-बार करता रहता है।

आज का वचन, 1 यूहन्ना 3:15, साफ़ तौर पर दिखाता है कि किसी विश्वासी के मन में नफ़रत का पाप कितना जानलेवा और डरावना होता है: "जो कोई अपने भाई से नफ़रत करता है, वह हत्यारा है, और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनंत जीवन नहीं होता।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* में इसका अनुवाद किया गया है: "जो कोई भाई से नफ़रत करता है, वह हत्यारा है। तुम जानते हो कि हत्यारे में अनंत जीवन नहीं होता।" इस बुरी दुनिया के लिए—जो परमेश्वर को नहीं जानती—हमसे नफ़रत करना कोई अजीब बात नहीं है (वचन 13)। उद्धार के इतिहास के नज़रिए से, ऐसी घटना को पूरी तरह स्वाभाविक भी माना जा सकता है। फिर भी, जो बात सचमुच अजीब और दुखद है, वह यह है कि कलीसिया के भीतर भाई—जो मसीह के कीमती लहू के द्वारा एक परिवार बन गए हैं—एक-दूसरे से जलन और नफ़रत करते हैं, जबकि एक-दूसरे से प्रेम करना ही सबसे ज़रूरी नियम है। बाइबल साफ़ तौर पर कहती है कि भाई से नफ़रत करने की यह अंदरूनी स्थिति असल में "हत्या" है। क्या यह बात सचमुच चौंकाने वाली और सोचने पर मजबूर करने वाली नहीं है? आम दुनिया में, हत्या का मतलब है कोई बाहरी काम जिससे किसी दूसरे व्यक्ति की शारीरिक जान ले ली जाती है, जैसे चाकू या बंदूक का इस्तेमाल करके। लेकिन, प्रेरित यूहन्ना बताते हैं कि दिखाई देने वाले अपराधों के अलावा, दिल का वह "नज़रिया" जो भाई से नफ़रत करता है, वह भी हत्या करने के बराबर ही है।

दस आज्ञाओं में से छठी आज्ञा, जिसे हम अच्छी तरह जानते हैं, साफ़ तौर पर कहती है: "तू हत्या न करना" (निर्गमन 20:13)। अगर हम पुराने नियम के इस कानून को नए नियम में प्रभु द्वारा बताई गई दूसरी सबसे बड़ी आज्ञा—प्रेम का नियम जो कहता है, "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख" (मरकुस 12:31)—के साथ जोड़कर गहराई से समझें, तो हम एक साफ़ आध्यात्मिक नतीजे पर पहुँचते हैं। अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम न करना—और इसके बजाय अपने दिल में नफ़रत रखना—सिर्फ़ चरित्र की कमी नहीं है; यह एक गंभीर पाप है जो सीधे तौर पर छठी आज्ञा का उल्लंघन करता है और भाई की आध्यात्मिक "हत्या" के बराबर है। जब मैंने इस गंभीर शिक्षा पर मनन किया, तो मुझे यीशु की वह ज़बरदस्त बात याद आई जो उन्होंने 'पहाड़ पर दिए गए उपदेश' (मत्ती 5:28) में कही थी, जहाँ उन्होंने व्यवस्था (कानून) की असल बात को गहराई से समझाया था: "लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई किसी औरत को बुरी नज़र से देखता है, उसने अपने दिल में ही उसके साथ व्यभिचार (गलत शारीरिक संबंध) कर लिया है।" प्रभु ने सिखाया कि

व्यभिचार सिर्फ़ बाहरी काम से तय नहीं होता; बल्कि किसी को बुरी नीयत या वासना भरी नज़र से देखना ही (होशे 5:4; यहेजकेल 6:9) दिल में व्यभिचार करने के बराबर है। इसके पीछे यही आध्यात्मिक सिद्धांत काम करता है: वासना भरा दिल असल में व्यभिचारी दिल होता है। इसी तरह, जिस काले दिल में अपने भाई के लिए नफ़रत होती है, वह परमेश्वर की नज़र में एक हत्यारे का दिल होता है (1 यूहन्ना 3:15)। दिल के इस पाप की सबसे डरावनी बात यह है कि अगर अंदर छिपे नफ़रत के ज़हर को रोका न जाए, तो यह धीरे-धीरे बढ़ सकता है और एक ऐसे विनाशकारी अपराध का रूप ले सकता है जिससे सचमुच किसी भाई की जान चली जाए। ठीक इसीलिए प्रेरित यूहन्ना ने आज के वचन (1 यूहन्ना 3:12) में कैन की उस दुखद घटना का ज़िक्र किया—जो अपने ही भाई हाबिल को मारकर पहला हत्यारा बना था—और सभी विश्वासियों को ज़ोरदार चेतावनी दी: "कैन जैसे मत बनो।" कैन की हत्या की भयानक घटना भी अपने भाई के प्रति जलन और नफ़रत के एक छोटे से बीज से ही शुरू हुई थी। इसलिए, बाइबल सख्ती से चेतावनी देती है कि जो कोई अपने भाई से नफ़रत करता है, वह परमेश्वर की नज़र में हत्यारे से अलग नहीं है, और जिसके दिल में ऐसी जानलेवा, नफ़रत भरी हत्या की भावना हो, उसकी आत्मा में स्वर्ग के राज्य का अनंत जीवन कभी नहीं बस सकता (1 यूहन्ना 3:15)। प्यारे संतों, हममें से जो लोग यीशु मसीह पर विश्वास के ज़रिए अनंत जीवन पा चुके हैं, उन्हें प्रभु की उस महान दोहरी आज्ञा का खुशी-खुशी पालन करना चाहिए—एक ऐसा नियम जो हमारी ऊँची पहचान के अनुकूल है। हमारा फ़र्ज़ है कि हम अपने पूरे दिल, आत्मा और मन से अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करें, और पूरे जोश और लगन के साथ अपने पड़ोसी से भी वैसे ही प्रेम करें जैसे हम खुद से करते हैं (मत्ती 22:37–39)। फिर भी, हमें इस सच्चाई का गंभीरता से सामना करना होगा कि जो लोग इस गंभीर आज्ञा को नहीं मानते—अपने भाइयों से प्यार करने से इनकार करते हैं और मन में कड़वी नफ़रत रखते हैं, और इस तरह परमेश्वर के सामने "मन में हत्या" करने का पाप करते रहते हैं (1 यूहन्ना 3:15)—उनके दिलों में स्वर्ग के अनंत जीवन के लिए कोई जगह नहीं होती। अनंत जीवन की शक्ति से रहित जीवन अपने भाइयों के प्रति आध्यात्मिक रूप से सुन्न हो जाता है, और अंततः—केन की तरह—असली, कभी न सुधरने वाले और जानलेवा अपराधों की ओर ले जाता है। जो कोई भी प्रभु के नियम का अनादर करता है और "अपने भाई से नफ़रत करता है," वह परमेश्वर की नज़र में स्पष्ट रूप से एक "हत्यारा" है। इस प्रकार, जो व्यक्ति भाई से प्यार करने में विफल रहता है—नफ़रत से अंधा होकर मन में ही हत्या कर बैठता है—वह धार्मिकता का बाहरी दिखावा करने के बावजूद आध्यात्मिक "मृत्यु" की छाया में रहता है (पद 14)। ऐसे व्यक्ति का जीवन

परमेश्वर का नहीं, बल्कि "बुरी दुनिया" का होता है (पद 13), और उनके द्वारा किया गया हर काम परमेश्वर की नज़र में बुराई के अलावा और कुछ नहीं होता (पद 12)।

इसलिए, हमें अपने भाइयों के प्रति नफ़रत और ईर्ष्या के पापों को—जो हमारे भीतर गहराई में छिपे होते हैं—कभी भी मामूली या महत्वहीन नहीं समझना चाहिए। हमें परमेश्वर के सामने पश्चाताप करने और खुद को विनम्र बनाने में कभी भी देरी या टालमटोल नहीं करनी चाहिए, भले ही हम अपने कठोर और ज़िद्दी दिलों के कारण आध्यात्मिक हत्या का पाप कर रहे हों। हमें प्रभु के सामने ईमानदारी से अपने भीतर के अंधेरे और घावों को स्वीकार करना चाहिए, और तुरंत अनुग्रह के सिंहासन के पास जाकर पछतावे भरे दिल से अपना पाप मानकर पश्चाताप करना चाहिए। हमें 1 यूहन्ना 1:9 में दिए गए उस भरोसेमंद वादे को—जो हमारी आत्माओं के लिए एक लंगर की तरह है—मज़बूती से थामे रखना चाहिए, जो हमें पूरी तरह से शुद्ध होने का भरोसा दिलाता है: "यदि हम अपने पापों को मान लेते हैं, तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी है और हमारे पापों को क्षमा करेगा और हमें हर तरह की अधार्मिकता से शुद्ध करेगा।" जब हम अपने अपराधों को छिपाते नहीं हैं बल्कि उन्हें पूरी तरह से क्रूस के सामने रख देते हैं, तो विश्वासयोग्य और धर्मी प्रभु अपने कीमती लहू की कीमत पर हमारे पापों को पूरी तरह से क्षमा कर देते हैं और नफ़रत से दागदार हमारे दिलों को तुरंत हर तरह की अधार्मिकता से शुद्ध कर देते हैं। परमेश्वर की सच्ची संतानें, क्षमा का अनुग्रह पाकर, केवल शब्दों से आगे बढ़कर आज्ञाकारिता का जीवन जीती हैं और प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार एक-दूसरे से सच्चे दिल से प्यार करती हैं। जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* में बताया गया है, प्यार करने का यह तरीका वह सही आध्यात्मिक कर्तव्य है जो पूरी दुनिया को साबित करता है कि हम परमेश्वर की धार्मिक संतानें हैं (3:10)। जब हम अपनी इच्छा को दबाकर पूरे दिल से अपने भाई-बहनों को माफ़ करते हैं और उनसे प्यार करते हैं, तो हमें यह भरोसा मिलता है—जो हमारे जीवन के पवित्र फलों में दिखता है—कि हम मौत के अंधेरे से बाहर निकल चुके हैं और हमें स्वर्ग का अनंत जीवन मिल चुका है (पद 14)।

प्यारे संतों, तो फिर हम अपने अंदर की नफ़रत और अंधेरे को कैसे दूर कर सकते हैं और सच्चे प्यार की उस जगह पर कैसे खड़े हो सकते हैं जो परमेश्वर को खुश करता है? 1 यूहन्ना 3:16-18 में दी गई गहरी बात पर ध्यान देते हुए, आज हम उन लोगों के सच्चे स्वभाव पर गहराई से सोचना चाहते हैं जो—जैसा कि 1 यूहन्ना

2:24 में गवाही दी गई है—पूरी तरह से उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। उन सच्चे चेलों के जीवन में कौन-सी पवित्र खूबियाँ होती हैं जो प्रभु की गंभीर आज्ञा मानकर अपने भाई-बहनों से उतना ही गहरा प्यार करते हैं जितना वे खुद से करते हैं? इस लेख में सुसमाचार के क्रम का पालन करते हुए, मैं एक ऐसे विश्वासी के जीवन की जाँच करना चाहता हूँ जो प्यार के इस शानदार नियम का पालन तीन खास आध्यात्मिक पहलुओं से करता है, और इस तरह प्रभु की स्वर्गीय शिक्षाओं को हमारे दिलों में बसाता है।

पहला, जो लोग प्रभु की आज्ञा के अनुसार एक-दूसरे से प्यार करते हैं, वे इतने त्यागी होते हैं कि खुशी-खुशी अपने भाइयों के लिए अपनी जान दे देते हैं।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 3:16 को देखें। प्रेरित यूहन्ना सच्चे मसीही प्यार की परिभाषा इस तरह बताते हैं: "उसने हमारे लिए अपनी जान दे दी। इससे हम प्यार को जानते हैं, कि हमें भी भाइयों के लिए अपनी जान देनी चाहिए।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* (ह्युंडाई-इन-उई सोंग-ग्योंग) में कहा गया है: "यीशु के हमारे लिए अपनी मर्ज़ी से जान देने के ज़रिए, हम सच में समझ पाए हैं कि प्यार क्या है। इसलिए, हमारे लिए भी यह सही है कि हम अपने भाइयों के लिए अपनी जान दें।" प्यारे लोगों, दुनिया की दिखावटी बातों को हटाकर, बाइबिल के अनुसार सच्चा "प्यार" क्या है? बेशक, जब हम ईसाई "प्रेम" शब्द के बारे में सोचते हैं, तो सबसे पहले हमारे मन में 1 कुरिन्थियों 13 के मशहूर "प्रेम अध्याय" में बताए गए सुंदर नैतिक गुण आते हैं। मैं उन पवित्र गुणों की बात कर रहा हूँ—लंबे समय तक धैर्य और दया दिखाना; जलन और घमंड से दूर रहना; हर बात पर भरोसा करना, उम्मीद रखना और डटे रहना (1 कुरिन्थियों 13:4–7)। फिर भी, जब मैं आज के वचन—1 यूहन्ना 3:16—में दिए गए गंभीर आदेश पर मनन करता हूँ, तो मुझे लगता है कि यूहन्ना 15:12–14 में प्रभु की दिल को छू लेने वाली आवाज़ मेरे अंदर और भी ज़ोर से गूँजती है, जो 1 कुरिन्थियों 13 के गुणों से कहीं बढ़कर है: "मेरा आदेश यह है: एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम करो जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया है। इससे बड़ा प्रेम और कोई नहीं हो सकता कि कोई अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे। अगर तुम वह करते हो जो मैं कहता हूँ, तो तुम मेरे दोस्त हो।" प्रभु हमें सिर्फ़ अपनी भावनाओं या सीमाओं के आधार पर प्रेम करने का आदेश नहीं देते, बल्कि "एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम करने को कहते हैं जैसे मैंने अपनी जान देकर तुमसे प्रेम किया।"

तो, अगर हमें प्रभु के इस अहम वचन का पूरी तरह से पालन करना है, तो सबसे ज़रूरी बात क्या है? वह है यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर दिखाए गए उस अद्‌भुत प्रेम को अपनी आत्मा की गहराई से समझना। यीशु, जो परमेश्वर के निष्पाप पुत्र थे, ने हम सभी के पापों का बोझ अपने ऊपर ले लिया—हम जो कभी क्रोध के पात्र थे—और हमें बचाने के लिए क्रूस की वेदी पर अपना कीमती जीवन, लहू और पानी पूरी तरह से अर्पित कर दिया। जब हम पवित्र आत्मा की रोशनी में उस एकलौते पुत्र के प्रेम की रहस्यमयी और विशाल "चौड़ाई, लंबाई, ऊँचाई और गहराई" को गहराई से समझते हैं—जिन्होंने चारों तरफ से घिरे होने की निराशा के बीच क्रूस पर यह प्रायश्चित का काम पूरा किया (इफिसियों 3:18–19)—तब जाकर हम अपने अहंकार और स्वार्थ को तोड़ने में सक्षम हो पाते हैं; तभी हम उस शानदार प्रेम की ओर पहला कदम उठा सकते हैं—ऐसा प्रेम जो प्रभु के बलिदान वाले प्रेम के साथ हमारे साथी विश्वासियों को गले लगाता है और उनके लिए अपनी जान तक देने को तैयार रहता है।

1 यूहन्ना 3:16 के पहले हिस्से में—जो आज हमारा मुख्य वचन है—प्रेरित यूहन्ना ने प्यार की शुरुआत को साफ़ तौर पर बताया है: "उन्होंने हमारे लिए अपनी जान दे दी। इसी से हम प्यार को जानते हैं।" सिर्फ़ एक ही आधार है जिस पर प्रेरित यूहन्ना, शुरुआती कलीसिया के विश्वासियों और आज हम लोगों ने प्यार के असली स्वरूप को समझा है: वह यह है कि पवित्र यीशु मसीह ने हमारी जगह क्रूस पर बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी जान दे दी। इस मौके पर, रोमियों 5:8 का संदेश—जो सुसमाचार में एक शानदार सहारा है—हमारे दिलों में ज़ोरदार ढंग से गूंजता है: "लेकिन परमेश्वर हमारे प्रति अपने प्यार को इस तरह दिखाता है कि जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिए मरे।" क्रूस की वेदी पर, पुत्र यीशु मसीह ने हमारे सभी बुरे पापों का बोझ एक साथ उठाया—न सिर्फ़ इंसानों के पूर्वजों से मिला मूल पाप, बल्कि वे पाप भी जो हमने अतीत में किए, जो हम अभी कर रहे हैं, और यहाँ तक कि वे पाप भी जो हम अपनी कमज़ोरी के कारण भविष्य में करेंगे। उन्होंने खुद अपने शरीर में उस अनंत और भयानक ईश्वरीय न्याय को सहा, जिसके हक़दार हम पापी नरक की सज़ा के तौर पर थे। ऐसा करके, परमेश्वर ने इतिहास के बीचों-बीच हमारे लिए अपने अनंत और ब्रह्मांडीय प्यार को पूरी तरह और बिना किसी शक के दिखाया। परमेश्वर—जो स्वभाव से पवित्र और धर्मी है, और इसलिए पाप से पूरी तरह नफ़रत करता है और उसे ज़रूर न्याय करके मिटाता है—ने यीशु मसीह की

क्रूस पर हुई बेमिसाल मौत के ज़रिए पूरी दुनिया के सामने हमारे लिए अपने गहरे प्यार को साफ़ और निश्चित रूप से ज़ाहिर किया है: हम पापी जो अनंत सज़ा और मौत के हक़दार थे। इसलिए, जो लोग "प्रभु की आज्ञा के अनुसार एक-दूसरे से प्यार करते हैं"—जैसा कि आज के वचन, 1 यूहन्ना 3:16 में बताया गया है—उनके जीवन का नज़रिया साफ़ हो जाता है। जो लोग पहले ही उस कीमती लहू के बेहिसाब कर्जदार बन चुके हैं, वे सच्चे विश्वासी स्वाभाविक रूप से क्रूस के उस प्यार को अपनी प्रेरणा मानते हैं और त्याग और आज्ञाकारिता के जीवन में आगे बढ़ते हैं, जहाँ वे "खुशी-खुशी अपने भाइयों के लिए अपनी जान भी दे देते हैं।"

प्यारे संतों, सुसमाचार के दायरे में एक-दूसरे से सचमुच प्यार करने का मतलब है खुद को मिटाना और खुशी-खुशी एक-दूसरे के लिए त्याग करना। इफिसियों 5:2 का *समकालीन कोरियाई संस्करण* (ह्युंडई-इन-उई सोंग-ग्योंग) एक शिष्य के इस कर्तव्य को इस प्रकार बताता है: "मसीह ने हमसे प्रेम किया और परमेश्वर के लिए एक सुगंधित भेंट और बलिदान के रूप में खुद को हमारे लिए दे दिया। उसी तरह, तुम्हें भी उनका अनुकरण करना चाहिए और प्रेम का जीवन जीना चाहिए।" यीशु मसीह ने हमारी अनंत मुक्ति के लिए गोलगोथा में क्रूस पर अपना महान जीवन पूरी तरह से बलिदान कर दिया। प्रभु ने इतनी भयानक शर्म और पीड़ा क्यों सही? इसका एकमात्र कारण यह था कि यीशु—हमारे अनंत अच्छे चरवाहे—हमसे, यानी अपनी भेड़ों से, असीम गहराई से प्रेम करते थे। यूहन्ना अध्याय 10 में गूंजती प्रभु की स्पष्ट आवाज़ को सुनें: "मैं अच्छा चरवाहा हूँ। अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना जीवन देता है... मैं भेड़ों के लिए अपना जीवन देता हूँ... मैं अपना जीवन देता हूँ..." (यूहन्ना 10:11, 15, 17)। बेशक, मानवता की मुक्ति के महान उद्देश्य को पूरा करने के लिए, परमेश्वर पिता की इच्छा थी कि उनका पुत्र, यीशु मसीह, "कुचला जाए और कमजोरी सहे" (यशायाह 53:10)। फिर भी, पुत्र यीशु को केवल मजबूरी में आगे नहीं ले जाया गया; बल्कि, उन्होंने अपनी इच्छा से उस "झुंड" के लिए अपना जीवन देने की दिली इच्छा की जिससे वे प्रेम करते थे (यूहन्ना 10:18)। परमेश्वर पिता—जो मुझसे प्रेम करते हैं—की भली इच्छा को पूरा करने के लिए, यीशु ने पूरी आज्ञाकारिता दिखाई, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु तक (फिलिप्पियों 2:8), और साथ ही अपनी भेड़ों के लिए अपने ज्वलंत *अगापे* प्रेम के कारण "अपनी इच्छा से" बलिदान की वेदी पर अपना जीवन अर्पित किया। प्रभु की इस प्रायश्चित को इतनी सक्रियता से पूरा करने की क्षमता का रहस्य इस बात में निहित था कि उनके पास अपना जीवन देने और उसे फिर से वापस लेने का अधिकार था (यूहन्ना 10:18)। वह अंतिम उद्देश्य जिसके लिए अच्छे चरवाहे ने परमेश्वर पिता द्वारा उन्हें सौंपी गई कीमती भेड़ों के लिए स्वेच्छा से अपना जीवन दिया, वास्तव

में महिमामय है। इसका उद्देश्य उन "भेड़ों" को—जो पाप में मर रही थीं—"जीवन पाना, और उसे बहुतायत से पाना" (यूहन्ना 10:10) के योग्य बनाना था। इसे एक वाक्य में कहें तो: अच्छे चरवाहे यीशु मसीह ने अपनी मर्ज़ी से अपनी जान दी ताकि वे अपनी प्यारी भेड़ों को "अनंत जीवन" (ऐसा जीवन जो कभी खत्म न हो) दे सकें। इस तरह उन्होंने उनकी पूरी तरह से रक्षा की ताकि शैतान के किसी भी आरोप या हमले के बावजूद वे "कभी नष्ट न हों" (वचन 28)।

प्यारे संतों, प्रभु की नई आज्ञा मानने वाला और दूसरों से सच्चा प्यार करने वाला सच्चा चेला सिर्फ़ ज़ुबानी बातें नहीं करता; बल्कि वे सबसे बड़ा बलिदान देने के लिए तैयार रहते हैं, "अपने भाइयों के लिए अपनी जान देने को तैयार रहते हैं" (1 यूहन्ना 3:16)। जैसे यीशु मसीह ने हमें बचाने के लिए क्रूस पर अपनी जान दे दी, वैसे ही सुसमाचार के अनुसार यह सही है कि हम भी—जो पहले से ही उस कीमती लहू के ऋणी हैं—अपने प्यारे भाइयों और बहनों के लिए अपनी जान देने को तैयार रहें। प्रभु ने प्यार की सीमा इस तरह बताई है: "इससे बड़ा प्यार किसी का नहीं हो सकता कि कोई अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे" (यूहन्ना 15:13)। बेशक, अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में आज्ञाकारिता का इतना बड़ा काम करना—अपनी जान देना—आसान नहीं है। इसलिए, बड़े-बड़े नारों तक सीमित रहने के बजाय, हमें बलिदान का आध्यात्मिक अनुशासन शुरू करना चाहिए—अपने भाइयों और बहनों की खातिर अपने समय और अपनी मर्ज़ी का त्याग करना—और इसकी शुरुआत रोज़मर्रा की ज़िंदगी की छोटी-छोटी बातों से करनी चाहिए। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हम सब बलिदान के ज़रिए अपने प्यार को परिपूर्ण करें: मजबूरी या कर्तव्य की भावना से नहीं, बल्कि उद्धार की खुशी से उपजे स्वेच्छापूर्ण दिल और विनम्र रवैये के साथ; और आखिरकार पवित्र खुशी के उस स्तर तक पहुँचें जहाँ हमें अपनी सबसे कीमती चीज़ें दूसरों के साथ बाँटने में भी खुशी मिले। दूसरी बात, जो लोग प्रभु की आज्ञा के अनुसार एक-दूसरे से प्यार करते हैं, वे अपनी संपत्ति दूसरों के साथ बाँटते हैं और इस तरह ज़रूरतमंद भाइयों की ज़रूरतों को पूरा करते हैं।

आज का वचन, 1 यूहन्ना 3:17, भौतिक चीज़ों के बारे में हमारे विश्वास के रवैये को परखता है: "अगर किसी के पास भौतिक चीज़ें हैं और वह किसी भाई को ज़रूरत में देखता है लेकिन उसके लिए अपना दिल बंद कर लेता है, तो परमेश्वर का प्यार उसमें कैसे रह सकता है?" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* में अनुवाद किया गया है, अगर कोई व्यक्ति बहुत अमीर है, लेकिन मुसीबत में फँसे अपने भाई की मदद करने

के बजाय उसकी अनदेखी करता है, तो क्या उसे सच में परमेश्वर से प्यार करने वाला विश्वासी कहा जा सकता है? प्यारे संतों, तो क्या हमारे लिए परमेश्वर से धन-दौलत की आशीष माँगना गलत है? क्या बहुत सारा धन-दौलत होने से हमारी खुशी की गारंटी मिल जाती है? उपदेशक (Ecclesiastes) की किताब के अध्याय 6 की आयत 3 और 6 में, "खुशी" शब्द—जिसके पीछे हम अक्सर भागते हैं—इस संदर्भ में आया है: "भले ही कोई व्यक्ति सौ बच्चों का पिता बने और कई साल जिए... फिर भी उसकी आत्मा ऐसी खुशी से संतुष्ट नहीं होती... भले ही वह दो बार हज़ार साल जिए, फिर भी उसे कोई खुशी नहीं मिलती..." (उपदेशक 6:3, 6)। यहाँ एक दिलचस्प धार्मिक बात यह है कि अंग्रेज़ी अनुवादों में उपदेशक के लेखक द्वारा इस्तेमाल किए गए "खुशी" शब्द को "समृद्धि" (prosperity) के रूप में दिखाया गया है—एक ऐसा शब्द जो भौतिक प्रचुरता को दर्शाता है। उपदेशक के संदर्भ में, "समृद्धि" का अर्थ है परमेश्वर की सर्वोच्च कृपा से मिलने वाली धन-दौलत की आशीष (आयत 2)। दूसरे शब्दों में, यह स्पष्ट है कि परमेश्वर हमें जो भौतिक आशीषें देते हैं, वे हमारे जीवन में शांति और खुशी लाने का एक कीमती ज़रिया भी हैं। हालाँकि, परमेश्वर से भरपूर भौतिक आशीषें न मिलने का मतलब यह नहीं है कि किसी का जीवन दुखी है। विश्वास के जीवन का सबसे ज़रूरी और अहम पहलू यह नहीं है कि किसी के पास धन-दौलत है या नहीं, बल्कि यह है कि क्या सृष्टिकर्ता परमेश्वर अभी हमारे साथ है, भले ही हालात रेगिस्तान जैसे हों।

हम उत्पत्ति (Genesis) अध्याय 39 में बताए गए यूसुफ के उतार-चढ़ाव भरे जीवन से अच्छी तरह वाकिफ हैं। हालाँकि यूसुफ ने गुलामी में बेचे जाने और बिना किसी कसूर के जेल में डाले जाने जैसी बुरी हालत का सामना किया, फिर भी बाइबिल बार-बार उसे ऐसा व्यक्ति बताती है जो "समृद्ध" हुआ और जिसे "आशीष" मिली। इसके पीछे एक ही बड़ा राज़ था: प्रभु यूसुफ के साथ थे। त्रिएक परमेश्वर का हमारे साथ चलना ही सबसे बेहतरीन समृद्धि और सबसे बड़ी खुशी है जिसका अनुभव एक विश्वासी कर सकता है। परमेश्वर से भौतिक आशीषें पाना और उनका आनंद लेना वाकई शुक्रगुज़ारी और खुशी की बात है। फिर भी, एक बहुत ज़रूरी आध्यात्मिक बात है जिसे हमें कभी नहीं भूलना चाहिए: सिर्फ़ धन-दौलत का मालिक होना ही काफ़ी नहीं है; असली आशीर्वाद तो यह है कि हम परमेश्वर की मर्ज़ी के अनुसार उस धन को सही तरीके से पाएँ और उसका आनंद लें। धन तभी सच में आशीर्वाद बनता है जब उसे मुट्ठी में कसकर बंद रखने के बजाय, सुसमाचार के प्रचार और भलाई के कामों में सही ढंग से इस्तेमाल करने की आध्यात्मिक समझ और मज़बूत विश्वास हो।

उपदेशक 5:19 उस बेहतरीन प्रबंधन के आशीर्वाद के बारे में बताता है जो परमेश्वर विश्वास करने वाले को देता है: "इसके अलावा, जब परमेश्वर किसी को धन-दौलत और संपत्ति देता है, और उनका आनंद लेने, अपनी किस्मत को स्वीकार करने और अपनी मेहनत से खुश रहने की क्षमता देता है—तो यह परमेश्वर का उपहार है।" इस एक छोटे से वचन में, बुद्धिमान राजा सुलैमान हमें परमेश्वर और धन के रिश्ते के बारे में चार गहरी आध्यात्मिक बातें बताते हैं।

पहला, धन-दौलत की सभी आशीषें केवल परमेश्वर से ही मिलती हैं।
दूसरा, परमेश्वर विश्वास करने वाले की सच्ची मेहनत और परिश्रम के ज़रिए भौतिक आशीषें देते हैं।
तीसरा, परमेश्वर न केवल धन देते हैं, बल्कि जीवन भर उस धन का सही ढंग से आनंद लेने की समझ भी देते हैं।
चौथा, हमें जो कुछ मिला है, उसे आभारी मन से स्वीकार करने, उसका आनंद लेने और उसमें खुश होने का नज़रिया ही परमेश्वर की ओर से मिला एक शानदार और मुफ़्त उपहार है।

हालाँकि, अगले अध्याय—उपदेशक 6—में राजा सुलैमान अफ़सोस जताते हुए कहते हैं कि उन्होंने एक भयानक "दुर्भाग्य" देखा है जो मानव इतिहास में छाया हुआ है (6:1)। वह दुर्भाग्य और कुछ नहीं, बल्कि "इंसानी दिल पर भारी बोझ डालने वाला दर्द" था। उन्होंने जो सबसे दुखद स्थिति देखी, वह एक आध्यात्मिक बीमारी थी: बाहरी तौर पर बहुत कुछ होने के बावजूद अपनी आत्मा की सच्ची खुशी को न देख पाना और हमेशा असंतुष्ट रहना। तो फिर, वह कौन व्यक्ति है—जो संतुष्टि से अनजान है और दुनिया भर की दौलत होने के बावजूद खुद ही दुख को बुलावा देता है? बाइबल साफ़ तौर पर बताती है कि वह ऐसा व्यक्ति है जिसे "परमेश्वर से धन-दौलत की भरपूर आशीष मिली है, फिर भी उसे उस आशीष का सही ढंग से आनंद लेने का सौभाग्य नहीं मिला है" (पद 2)। लालच और भौतिक चीज़ों की गुलामी में फंसी ज़िंदगी कभी खुशी नहीं पा सकती—भले ही कोई सौ बच्चों का पिता बने, अपने परिवार को फलते-फूलते देखे और दो हज़ार साल की लंबी उम्र का आनंद ले (पद 3, 6)। अगर कोई परमेश्वर के दिए धन को जमा करके रखता है, उसे सिर्फ़ अपने और अपनी शारीरिक इच्छाओं के लिए बंद करके रखता है, और परमेश्वर या अपने पड़ोसी के लिए एक पैसा भी सही ढंग से इस्तेमाल नहीं करता, तो उस व्यक्ति का जीवन धुंध की तरह बेकार और दुखद

होता है। इसलिए, विश्वास करने वाले के लिए सच्ची आशीष—धन की मात्रा से कहीं ज़्यादा ज़रूरी—"आनंद लेने की आशीष" है: यानी प्रभु की इच्छा के अनुसार उस धन का आनंद लेने और उसे दूसरों में बांटने की क्षमता।

इस धरती पर सचमुच मूर्ख और दुर्भाग्यशाली वे लोग हैं जो ब्रह्मांड के स्वामी परमेश्वर से मिली भरपूर दौलत होने के बावजूद, उसका सही ढंग से आनंद नहीं ले पाते। भले ही वे अपनी भौतिक चीज़ों का "आनंद" लें, लेकिन ऐसी ज़िंदगी जो शरीर की इच्छाओं और इस नाशवान दुनिया के बेकार सुखों में उन्हें बेतहाशा खर्च करने में बीतती है, वह बहुत ही दुखद होती है। वे उस दौलत का—जिसे उन्होंने इतनी ज़ोर-शोर से पकड़ रखा है—परमेश्वर में पवित्र आनंद का एक पल भी क्यों नहीं महसूस कर पाते? 'उपदेशक' (Ecclesiastes) की किताब के लेखक अध्याय 5:13 में मानव इतिहास में चल रहे गहरे आध्यात्मिक विरोधाभास को उजागर करते हैं और उस पर सवाल उठाते हैं: "मैंने सूरज के नीचे एक बहुत बुरी बात देखी है: दौलत जमा करना जो उसके मालिक के नुकसान का कारण बनती है।" मूर्ख अमीर लोग अपनी भरपूर दौलत के बीच भी सच्चा सुकून क्यों नहीं पा पाते? इसका मुख्य कारण यह है कि वे अपनी कीमती चीज़ों की इतनी सख्ती से रक्षा करते हैं कि असल में उन्हें नुकसान ही पहुँचता है। खुद को नुकसान पहुँचाकर और अपनी आत्मा को बर्बाद करके दौलत से चिपके रहने से ज़्यादा मूर्खतापूर्ण और क्या हो सकता है? दौलत को इतनी ज़ोर से पकड़ने—यहाँ तक कि वह उनके लिए ज़हर बन जाती है—का मूल कारण साफ है: वे परमेश्वर (जो जीवन का स्वामी है) और अपने पड़ोसियों के जीवन से ज़्यादा पैसे और भौतिक चीज़ों से प्यार करते हैं। बेजान सोना-चाँदी किसी इंसान के अनंत जीवन से ज़्यादा कीमती कैसे हो सकता है? पारंपरिक धर्मशास्त्र के दिग्गज डॉ. पार्क युन-सन ने लालच से पैदा हुए इस अंधेपन के बारे में एक गंभीर चेतावनी दी थी: "अपनी ज़िंदगी उन चीज़ों के लिए समर्पित करना सचमुच नुकसानदेह है जिन्हें कोई कभी हमेशा के लिए अपना नहीं बना सकता।" अपनी नेक ज़िंदगी और पूरे दिल को भौतिक चीज़ों—जो धुंध की तरह क्षणभंगुर हैं और जिन्हें कभी सचमुच अपनी मुट्ठी में नहीं रखा जा सकता—के लिए समर्पित करने से बड़ी कोई आध्यात्मिक मूर्खता नहीं है। और भी दुखद बात यह है कि जिस दौलत की रक्षा के लिए इंसान ने इतनी कड़ी मेहनत की—और इस दौरान हर तरह की शर्म और नुकसान सहा—वह अचानक आई दुनियावी आपदाओं या किस्मत के तूफ़ानों के कारण

एक पल में खो सकती है। राजा सुलैमान ने इतिहास में कई बार इस सच्चाई को देखा: लोग घोर गरीबी में पहुँच जाते हैं, खाली हाथ रह जाते हैं और अपने प्यारे बच्चों को देने के लिए भी उनके पास कुछ नहीं बचता (पद 14)। इसलिए, सभोपदेशक 5:15–16 में, सुलैमान दुनिया के सामने इंसानी ज़िंदगी की गंभीर और बेकार सच्चाई बताता है: "जैसे वह अपनी माँ के गर्भ से नंगा आया था, वैसे ही नंगा वापस जाएगा; और अपनी मेहनत से वह कुछ भी ऐसा नहीं ले जा पाएगा जिसे वह अपने हाथ में ले जा सके। और यह भी एक बहुत बुरी बात है—कि जैसे वह आया था, वैसे ही जाएगा। और जिसने हवा के लिए मेहनत की, उसे क्या फ़ायदा हुआ?"

सुसमाचार में बताई गई ज़िंदगी की पक्की सच्चाई साफ़ है। इंसान इस दुनिया में खाली हाथ आता है और आखिर में नंगा और खाली हाथ ही चला जाता है। हम चाहे कितनी भी मेहनत करें—पसीना बहाएँ और खून-पसीना एक कर दें—या धरती पर रहते हुए किले की दीवारों की तरह अपनी दौलत का ढेर लगा लें, मौत की नदी पार करते समय हम एक पैसा भी साथ नहीं ले जा सकते। तो फिर, अपनी आत्मा की दृष्टि को बर्बाद करके और अपने ज़मीर को भ्रष्ट करके भौतिक दौलत का पहाड़ खड़ा करने का क्या फ़ायदा? क्या फ़ायदा अगर कोई अपनी दौलत का सच में आनंद न ले सके, और किसी अचानक आई मुसीबत के कारण सब कुछ रातों-रात खो दे? बाइबल उस मूर्ख अमीर आदमी के लिए सचमुच बहुत बुरे और डरावने अंत की बात करती है जो अपने ही लालच का गुलाम बन गया था: "वह अपने सारे दिन अंधेरे में, बहुत परेशानी, बीमारी और गुस्से के साथ खाता-पीता है" (वचन 17)। वह अपनी ज़िंदगी अपने पैसे की रखवाली करने की ज़रूरत में कैद होकर बिताता है, जबकि उसकी आत्मा के अंदर परेशानी, बीमारी और अधूरी इच्छाओं का गुस्सा ही रह जाता है—जिससे उसकी आत्मा मुरझाकर सड़ जाती है। आखिर में, उस मूर्ख अमीर आदमी की ज़िंदगी हवा को पकड़ने की बेकार और व्यर्थ कोशिश के अलावा कुछ नहीं होती—एक ऐसी कोशिश जो नामुमकिन है। इसके उलट, सच्चे विश्वासियों की ज़िंदगी—जो पूरे दिल से परमेश्वर की उपासना और प्रेम करते हैं और जिन पर परमेश्वर ने ज्ञान बरसाया है—पूरी तरह से अलग होती है। परमेश्वर इन धन्य रखवालों को न केवल दौलत और प्रचुरता देता है, बल्कि उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार उन भौतिक आशीषों को सही ढंग से बाँटने और उनका सच में आनंद लेने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान भी देता है (वचन 19)। यहाँ एक गहरी आध्यात्मिक सच्चाई है जिसे हमें अपनी आत्मा में गहराई से उतारना चाहिए: परमेश्वर न केवल हमें बहुत सारी दौलत पाने

की शक्ति देता है, बल्कि वह हमें उस दौलत का सच में आनंद लेने और उसे सार्थक रूप से बाँटने की आध्यात्मिक समझ और क्षमता भी देता है। तो फिर, जिन विश्वासियों को धन-दौलत की इतनी भरपूर आशीषें मिली हैं, उन्हें अपने जीवन में सचमुच उनका आनंद कैसे लेना चाहिए? हमें प्रभु द्वारा दिए गए नए आदेश के अनुसार एक-दूसरे से गहरा प्रेम करना चाहिए, और ज़रूरतमंद भाइयों की ठोस मदद करने के लिए खुशी-खुशी अपने पास मौजूद भौतिक संसाधनों को उनके साथ बांटना चाहिए। आज का वचन, 1 यूहन्ना 3:17, हमें सच्चे आध्यात्मिक आनंद की परख करने का एक तरीका बताता है: "अगर किसी के पास भौतिक संपत्ति है और वह किसी ज़रूरतमंद भाई को देखता है, लेकिन उसके प्रति अपना दिल बंद कर लेता है, तो परमेश्वर का प्रेम उसमें कैसे रह सकता है?" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* (ह्युंडाई-इन-उई सोंग-ग्योंग) इसे साफ-साफ कहता है, प्रेरित यूहन्ना हमारे पाखंड की कड़ी निंदा करते हैं: "अगर आपके पास बहुत धन है, फिर भी आप किसी गरीब भाई को देखते हैं और उसकी मदद नहीं करते, तो आप परमेश्वर से प्रेम करने का दावा कैसे कर सकते हैं?" जो लोग—काफी सांसारिक धन होने के बावजूद—भूखे और बेसहारा साथी विश्वासियों की अनदेखी करते हैं और अपने दिलों के दरवाज़े मजबूती से बंद कर लेते हैं, उनके बारे में बाइबल एक डरावना आरोप लगाती है: वे "वे लोग हैं जो अपने लिए धन तो जमा करते हैं, लेकिन परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं हैं" (लूका 12:21)। वे मूर्ख अमीर लोग हैं जो अपना धन जमा करके रखते हैं, उसे पानी के ठहरे हुए तालाब की तरह बेकार पड़ा रहने देते हैं, और यह सब सिर्फ़ अपने भ्रष्ट स्वार्थ के लिए करते हैं। नीतिवचन 28:22 भी इस लालच की प्रकृति को साफ-साफ दिखाता है: "एक स्वार्थी व्यक्ति केवल धन जमा करने में लगा रहता है, और उसे इस बात का पता नहीं होता कि गरीबी जल्द ही उस पर आ पड़ेगी।" फिर भी, इन स्वार्थी और मूर्ख अमीर लोगों के विपरीत, सच्चे विश्वासी—जिन्होंने यीशु मसीह द्वारा दिखाए गए क्रूस के अपार प्रेम को अपनी आत्मा में जाना और महसूस किया है, जिन्होंने हमें बचाने के लिए "हमारे लिए अपनी जान दे दी"—एक बिल्कुल अलग रास्ते पर चलते हैं (1 यूहन्ना 3:16)। यह समझते हुए कि उन्हें मिली भौतिक आशीषें उनकी अपनी संपत्ति नहीं हैं, बल्कि पूरी तरह से परमेश्वर की कृपा हैं, वे खुशी-खुशी उस धन का इस्तेमाल एक पवित्र साधन के रूप में करते हैं ताकि वे अपने पड़ोसियों से प्रेम कर सकें और अपने साथी विश्वासियों की आत्माओं को नई ज़िंदगी दे सकें। हमें सुसमाचार के आईने में 2 कुरिन्थियों 12:15 में बताए गए पवित्र मिल-जुलकर रहने के उस भाव का सामना करना चाहिए, जिसे प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थ के संतों को बहुत गहरे जज़्बे के साथ लिखा था: "मैं तुम्हारी आत्माओं के लिए खुशी-खुशी खर्च करूँगा और खुद को भी खर्च कर दूँगा; अगर मैं तुमसे ज़्यादा प्यार करता हूँ, तो क्या मुझे कम प्यार मिलना चाहिए?" जैसा कि

समकालीन कोरियाई संस्करण (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) में बताया गया है, पौलुस गंभीरता से कहते हैं कि अगर वह संतों की आत्माओं को बचा सकते हैं और उन्हें विश्वास में मज़बूती से खड़े रहने में मदद कर सकते हैं, तो वह खुशी-खुशी न केवल अपनी संपत्ति बल्कि अपना शरीर और जीवन भी वेदी पर चढ़ा देंगे। प्रभु के प्रेम के प्रति आभारी होकर, उन्होंने न केवल अपने प्यारे भाइयों और बहनों की खातिर अपने सभी कीमती भौतिक संसाधनों का खुलकर इस्तेमाल किया, बल्कि खुशी-खुशी खुद को भी शांति-बलि की तरह अर्पित कर दिया। पौलुस, वह सुसमाचार प्रचारक जो उस कलीसिया की खातिर भौतिक संसाधनों के पूरे लेन-देन का ज़रिया बने जिससे वे प्यार करते थे, ने सुसमाचार के आध्यात्मिक नियमों के अनुसार एक धन्य समृद्धि का अनुभव किया: अपनी सेवा-कार्य में अत्यधिक कठिनाई और उत्पीड़न सहने के बावजूद, उन्हें फिलिप्पी के संतों के गहरे प्रेम और समर्पण के माध्यम से—ठीक तब जब उन्हें इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी—बहुत प्रोत्साहन और मदद मिली (फिलिप्पियों 4:14)। केवल वे ही लोग—जो परमेश्वर द्वारा दी गई भौतिक आशीषों को जमा करके रखने के बजाय प्रेम में दूसरों तक बहने देते हैं—जीवन भर उस सच्ची स्वर्गीय बहुतायत का आनंद ले सकते हैं जो परमेश्वर और समुदाय प्रदान करते हैं। फिलिप्पी के संतों का जीवन, जिन्होंने प्रेरित पौलुस को भौतिक सहायता दी थी, इस "आनंद की आशीष" को दिखाने वाला एक सुंदर उदाहरण है। उन्होंने न केवल तब पौलुस के मिशन कार्य का समर्थन किया जब वह पहली बार "सुसमाचार की शुरुआत" में मकिदुनिया से निकले थे, बल्कि उन्होंने उन्हें भरपूर मदद भी भेजी—कम से कम दो बार—जब वह थिस्सलुनीके में सेवा कर रहे थे (पद 15-16)। इतना ही नहीं। जब यरूशलेम की मुख्य कलीसिया के संतों को अत्यधिक सूखे और अकाल के कारण भारी कठिनाई का सामना करना पड़ा, तो मकिदुनिया और अखैया क्षेत्रों के गैर-यहूदी विश्वासियों ने खुशी-खुशी और उदारतापूर्वक राहत के लिए चंदा इकट्ठा किया। पौलुस प्रेम का यह उपहार यरूशलेम ले गए और ज़रूरतमंद संतों की ईमानदारी से सेवा की (रोमियों 15:25-26, 31)।

जो लोग सुसमाचार और अपने साथी विश्वासियों की भलाई के लिए परमेश्वर से मिली भौतिक चीज़ों को उदारता से दूसरों तक पहुँचाते हैं, उनके लिए भजन संहिता 112:9 एक शानदार आध्यात्मिक वादा करती है: “उसने गरीबों को खुलकर दिया है; उसकी धार्मिकता सदा बनी रहती है, और वह प्रभाव और सम्मान वाला व्यक्ति होगा।” जब हम अपने हाथों में मौजूद भौतिक चीज़ों को छोड़ते हैं—यानी उन्हें जमा करके रखने के

बजाय ज़रूरतमंदों को उदारता से देते हैं—तो वे नेक काम धरती पर धुंध की तरह गायब नहीं होते; बल्कि, वे परमेश्वर के राज्य की जीवन की पुस्तक में "हमेशा" के लिए दर्ज हो जाते हैं। प्रेरितों के काम 10 में बताए गए रोमन सेना के "इतालवी दल" के सूबेदार (centurion) कॉर्नेलियस का जीवन इस वादे के पूरे होने का बेहतरीन उदाहरण है। हालाँकि वह गैर-यहूदी था, फिर भी वह परमेश्वर का भय मानता था और प्रार्थना व प्रेम करने वाला व्यक्ति था, जो "लोगों को उदारता से दान देता था और हमेशा परमेश्वर से प्रार्थना करता था" (प्रेरितों के काम 10:1–2)। पवित्र शास्त्र गवाही देता है कि कॉर्नेलियस के दान और प्रार्थना के समर्पित काम कभी खोए या भुलाए नहीं गए, बल्कि "परमेश्वर के सामने एक यादगार के रूप में पहुँचे" (वचन 4)। अपने भौतिक संसाधनों को दूसरों तक पहुँचाकर और इस तरह पिता को प्रसन्न करके, कॉर्नेलियस ने अंततः पूरे यहूदी राष्ट्र की बहुत प्रशंसा पाई और एक आशीष प्राप्त, प्रभावशाली व्यक्ति बन गया जिसका बहुत से लोग गहरा सम्मान करते थे (वचन 22)। यही बात लूका 7 में बताए गए एक और रोमन सूबेदार के बारे में भी सच थी। वह यहूदी लोगों से सच्चा प्रेम करता था—जो उस राष्ट्र के थे जिस पर रोम का शासन था—और उसने उनकी आध्यात्मिक शरणस्थली के रूप में काम आने वाले एक पवित्र आराधनालय (synagogue) के निर्माण के लिए व्यक्तिगत रूप से धन भी दिया (लूका 7:2, 5)। इन वफादार पूर्वजों से हमें जो आध्यात्मिक सीख मिलती है, वह स्पष्ट है: सच्चे विश्वासी जिन्हें परमेश्वर ने धन-संपत्ति का आशीर्वाद दिया है, वे कभी भी अपनी संपत्ति को केवल अपने लिए जमा करके नहीं रखते। चूँकि मैं पैसे से ज़्यादा साथी विश्वासियों के जीवन को महत्व देता हूँ और अपने निजी स्वार्थ से ऊपर परमेश्वर के राज्य को रखता हूँ, इसलिए मुझे सौंपी गई संपत्ति का उपयोग मैं ज़रूरतमंद भाइयों की ठोस मदद करने और परमेश्वर की कलीसिया को मज़बूत करने के लिए करता हूँ। सचमुच, एक ऐसे प्रबंधक (steward) का जीवन जो पवित्रता के साथ भौतिक चीज़ों का आनंद लेता है और उन्हें दूसरों तक पहुँचाता है, एक वास्तव में आशीष प्राप्त जीवन है जो हमेशा के लिए परमेश्वर के सामने पहुँचता है।

प्रिय संतों, आइए हम प्रभु द्वारा दिए गए नए आदेश के अनुसार एक-दूसरे से सच्चा प्रेम करें; आइए हम खुशी-खुशी अपनी संपत्ति उन भाई-बहनों के साथ बांटें जो गरीबी और तंगी का सामना कर रहे हैं, ताकि उन्हें भौतिक मदद मिल सके (1 यूहन्ना 3:17)। नीतिवचन 14:24 धन के प्रति विश्वास रखने वाले के नज़रिए के बारे में एक शानदार वादा करता है: "बुद्धिमानों का धन उनका मुकुट है, लेकिन मूर्खों की मूर्खता केवल

मूर्खता ही पैदा करती है।" परमेश्वर ने हमारी मेहनत और अपनी कृपा से हमें जो धन सौंपा है, उसे हमें केवल सांसारिक इच्छाओं तक सीमित नहीं रखना चाहिए; बल्कि, हमें एक अच्छे प्रबंधक की तरह आध्यात्मिक समझ के साथ इसका प्रबंधन करना चाहिए। हमें अपने आस-पास के भूखे, नंगे और ज़रूरतमंद लोगों की मदद के लिए हाथ बढ़ाना चाहिए और सचमुच अपना प्यार उनके साथ बांटना चाहिए। मेरा मानना है कि जब हम बांटने के इस नियम का पालन करते हैं, तो वह सीमित धन—जो अन्यथा धरती पर धुंध की तरह गायब हो जाता—परमेश्वर के राज्य की वेदी पर एक सुगंधित बलिदान के रूप में चढ़ाया जाता है; तब यह शानदार ढंग से एक "स्वर्गीय मुकुट" में बदल जाता है जो उस शानदार दिन हमारे सिर पर हमेशा चमकेगा जब हम प्रभु के सामने खड़े होंगे।

तीसरी बात, जो लोग प्रभु की आज्ञा के अनुसार एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, वे केवल शब्दों और बातों से ही नहीं, बल्कि "कामों और सच्चाई" से प्रेम करते हैं। आज का वचन, 1 यूहन्ना 3:18, ऐसे दौर में जी रही हर कलीसिया से आग्रह करता है जहाँ प्रेम कम होता जा रहा है कि वे प्रेम के सबसे शक्तिशाली और व्यावहारिक रूप को अपनाएं: "प्यारे बच्चों, आओ हम केवल शब्दों या बातों से नहीं, बल्कि कामों और सच्चाई से प्रेम करें।" जैसा कि *समकालीन कोरियाई संस्करण* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) कहता है: "बच्चों, आओ हम केवल शब्दों से प्रेम न करें, बल्कि अपने कामों के द्वारा सच्चे दिल से प्रेम करें।" जब मैं पादरी की सेवा के कठिन रास्ते पर चलता हूँ, तो अक्सर मैं भजन 463, "मैं एक विश्वासी बनना चाहता हूँ" (Sinja Doegi Wonhamnida) को बड़े जोश के साथ गाता हूँ, और इसके बोलों को अपनी आत्मा की सबसे सच्ची प्रार्थना बनाता हूँ। भजन की उस मार्मिक स्वीकारोक्ति के अनुसार, मेरी जीवन भर की एकमात्र आशा—जिसे केवल खोखले शब्दों से नहीं बल्कि पूरी सच्चाई से व्यक्त किया गया है—यह पुकार है कि मैं प्रभु के सामने सचमुच "एक विश्वासी बनूँ," अपने पूरे दिल से "अपने भाइयों से प्रेम करूँ," अंधकार को दूर करूँ और "पवित्र बनूँ," और अंततः "यीशु जैसा बनूँ," जिसने मुझे बचाया। मुझे यकीन है कि आज के संतों—यानी आप लोगों—के दिल मेरे दिल से अलग नहीं हैं। यीशु मसीह जैसा बनने और अपने भाइयों से सच्चा प्यार करने के लिए—जैसा कि यह भजन कहता है—हमें सबसे पहले परमेश्वर और दूसरों के सामने "सच्चे ईसाई" के तौर पर नया जन्म लेना होगा—ऐसे लोग जिनमें झूठ का ज़रा भी अंश न हो। अकेलेपन में प्रभु की सच्चाई पर मनन करते हुए, मैंने एक बार दिल से एक छोटी सी बात लिखी थी जिसका शीर्षक था "मैं एक सच्चा ईसाई बनना चाहता हूँ": "अनंत काल के नज़रिए से देखें तो, 'इंसान के बेटे' (यीशु) के दुखों में शामिल होना—यानी सिर्फ़ क्रूस

की सच्चाई बताना, नफ़रत, बहिष्कार और बदनामी का सामना करना और अपना नाम खराब होने देना—दुनिया से बहुत ज़्यादा तारीफ़ और पहचान पाने और दिखावे व झूठ पर बनी घटिया खुशहाली का मज़ा लेने से कहीं ज़्यादा बेहतर और आशीष वाला है (लूका 6:22, 26 देखें)।"

फिर भी, मुझे एक दुखद एहसास होता है जिससे मेरे मुँह से गहरी आह निकलती है: क्या हम पादरी—जो परमेश्वर के पवित्र वचन का प्रचार करते हैं—अपनी सच्चाई खो चुके हैं? क्या हम भी दूसरों की राय की बहुत ज़्यादा परवाह करते हुए, बड़ी आसानी से झूठ बोलने के आदी हो गए हैं? पादरी जो जंग-मिन की किताब *Suffering Is a Gift* (दुख एक तोहफ़ा है) पढ़ते समय, मैं एक गहरी सीख पर काफी देर तक रुका रहा; उस सीख ने हमारे खोखले और रटे-रटाए धार्मिक जीवन के छिपे हुए पाखंड को किसी सुए की तरह भेद दिया: "जो लोग अपना नाम बनाना चाहते हैं, उनमें सच्चा इंसान मिलना मुश्किल है, और जो लोग दूसरों को सिखाना चाहते हैं, उनमें विनम्र इंसान मिलना मुश्किल है।" जैसा कि यह गहरी बात बताती है, अगर हम आखिरी दिनों के आध्यात्मिक अंधेरे में अपनी इज़्ज़त बढ़ाने के लालच और दूसरों से सम्मान पाने की चाहत में अंधे हो जाते हैं, तो वह सच्ची "ईमानदारी" जिसे परमेश्वर स्वीकार करता है, कभी भी हमारी आत्मा में नहीं बस सकती। जो विश्वासी 'सच्ची ज्योति' की उपस्थिति में रहते हैं, उन्हें प्रभु के क्रूस के पास अपने अहंकार और घमंड को पूरी तरह से तोड़ देना चाहिए। जब हम एक विनम्र स्थिति से सेवा करते हैं—जहाँ हमारे अपने नाम छिपे होते हैं और केवल प्रभु का नाम ही प्रकट होता है—तभी हम केवल शब्दों और बातों के दिखावे को त्यागकर अपने साथी विश्वासियों को "काम और सच्चाई" वाला सच्चा, सुसमाचार-केंद्रित प्रेम दिखा सकते हैं।

प्रिय संतों, क्या आपने कभी किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचते हुए अपने दिल की गहराइयों से "सच्चे प्रेम के आँसू" बहाए हैं जिसे आप बहुत प्यार करते हैं? दिसंबर 2018 के अंत में, मैंने "सच्चे प्रेम के आँसू" शीर्षक से एक छोटा सा चिंतन लिखा था, जिसमें मेरी आत्मा की एक गहरी बात व्यक्त की गई थी: "आज, मैंने किसी की आँखों में आँसू आते देखे। हालाँकि मैं उन आँसुओं में छिपी गहरी कहानियों और अर्थों को पूरी तरह से नहीं समझ सकता, लेकिन मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि वे सच्चे और निश्छल प्रेम की अभिव्यक्ति हैं। एक माँ के अपने प्यारे बच्चे के लिए बहाए गए आँसू—वे आँसू जो लगातार और सच्ची प्रार्थना के दौरान बहाए

जाते हैं—कभी भी व्यर्थ नहीं जाएँगे। परमेश्वर निश्चित रूप से, अपने सही समय और अपनी सर्वोच्च योजना के अनुसार, हमारे बच्चों के जीवन में अपनी पवित्र इच्छा को पूरा करेंगे। इसीलिए हम कभी हिम्मत नहीं हारते; इसके बजाय, हम उम्मीद बनाए रखते हैं और अपने विश्वासयोग्य प्रभु के काम की प्रतीक्षा करते हैं।" हमें भी शायद वे पल याद हों जब हम परमेश्वर के सामने घुटने टेककर—दिल को छू लेने वाली सच्ची लगन से प्रार्थना करते हुए और आँसू बहाते हुए—अपने प्यारे बच्चों, दिल के करीब साथी विश्वासियों या खोई हुई आत्माओं के लिए प्रार्थना करते थे। किसी आत्मा को बचाने के लिए सच्ची प्रार्थना और पीड़ा में बहाए गए ऐसे आँसू पूरी तरह से दिखावे या झूठ से मुक्त होते हैं; क्योंकि आँसू आत्मा की सबसे ईमानदार भाषा होते हैं, जो केवल शब्दों और बातों के खोखले दिखावे से परे होते हैं। दूसरे शब्दों में, यदि कोई सच्चा संत है जो प्रभु की आज्ञा के अनुसार अपने भाइयों से काम और सच्चाई से प्रेम करता है, तो उसे अनिवार्य रूप से पवित्र आँसुओं की इस स्थिति तक पहुँचना ही होगा। उसे प्रिय आत्माओं की ओर से परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़ा होना होगा और दिल की गहराइयों से सच्ची प्रार्थना के आँसू लगातार बहाने होंगे।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 3:18 में, प्रेरित यूहन्ना एक बार फिर संतों की बेपरवाह अंतरात्माओं को एक संदेश देते हैं: "हे बच्चों, आओ हम केवल शब्दों या बातों से नहीं, बल्कि काम और सच्चाई से प्रेम करें।" तो, प्रेरित यूहन्ना के इस दिल से निकले आग्रह—"हम सिर्फ़ शब्दों से नहीं, बल्कि अपने कामों से सच्चे दिल से प्यार करें"—के पीछे क्या आध्यात्मिक कारण था, जब उन्होंने यह पत्र लिखा? हम इसके पहले की बातों से आसानी से इसका जवाब समझ सकते हैं। जैसा कि आयत 17 में चेतावनी दी गई है, शुरुआती कलीसिया में कुछ स्वार्थी विश्वासी थे जिनके पास बहुत सारी सांसारिक दौलत थी, फिर भी उन्होंने गरीबी और तंगी से जूझ रहे भाइयों के लिए अपने दिल के दरवाज़े बंद कर रखे थे। कलीसिया में एक आध्यात्मिक विरोधाभास था: लोग होंठों से तो प्यार की बातें करते थे, लेकिन असल ज़िंदगी में अपने सामने मौजूद भाइयों से मुँह मोड़ लेते थे और उनसे नफ़रत करते थे (2:11, 3:10, 15)। इसके अलावा, कामों और सच्चाई से प्यार करने के प्रेरित के ज़ोरदार बुलावे के पीछे मुक्ति-इतिहास का और भी गहरा आधार है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु मसीह—जो "जीवन का वचन" हैं और शुरू से ही परमेश्वर पिता के साथ थे—ने खुद इंसानी रूप लिया और हम पापियों की खातिर इस दुनिया में आए (1:1–2; 2 यूहन्ना 1:7)। हमारे प्रभु ने हमसे सिर्फ़ शब्दों से प्यार नहीं किया। उन्होंने हमारे सभी पापों और उनकी सज़ा का प्रायश्चित करने के लिए क्रूस पर खुद को एक आदर्श 'प्रायश्चित बलिदान' के रूप में पेश किया (1 यूहन्ना 2:2), और उन्होंने उद्धार के लिए पिता की इच्छा को पूरा

करने के लिए पूरी तरह से आज्ञा मानी—यहाँ तक कि क्रूस पर अपनी जान भी दे दी (आयत 17)। चूँकि प्रभु ने पहले हमसे अपने पूरे अस्तित्व और अपनी जान से प्यार किया, इसलिए प्रेरित यूहन्ना 1 यूहन्ना 4:11 में एक विश्वासी के जीवन के सही कर्तव्य के बारे में बताते हैं: "क्योंकि परमेश्वर ने हमसे इतना प्यार किया, इसलिए हमें भी एक-दूसरे से प्यार करना चाहिए।" क्रूस का वह प्यार जिसे प्रभु ने खुद दिखाया, अपने आप में "काम और सच्चाई" से दिखाए गए प्यार की सबसे ऊँची मिसाल थी।

जब मैंने गहरे प्यार के इस सिद्धांत पर मनन किया, तो प्रेरित याकूब की वह ज़ोरदार बात याद आई जो उन्होंने अपनी पत्री में पूरी कलीसिया से कही थी: "ठीक वैसे ही, अगर विश्वास के साथ काम न हों, तो वह विश्वास मरा हुआ है... जैसे आत्मा के बिना शरीर मरा हुआ है, वैसे ही कामों के बिना विश्वास भी मरा हुआ है" (याकूब 2:17, 26; तुलना करें 2:14, 20)। प्रेरित याकूब की यह सच्चाई प्यार के मामले में भी उतनी ही लागू होती है। जैसे बिना काम के विश्वास एक मरा हुआ विश्वास है जो बचा नहीं सकता, वैसे ही बिना व्यावहारिक कामों के प्यार भी बस एक "मरा हुआ प्यार" है—बिना आत्मा के एक खाली खोल। दूसरे शब्दों में, एक-दूसरे से दिल से प्यार करने की प्रभु की पवित्र आज्ञा (1 यूहन्ना 3:11) को पूरी तरह न मानकर सिर्फ़ होंठों और ज़बान से प्यार भरी बातें कहना, असल में झूठा पाखंड है, जिसमें परमेश्वर की नज़र में कोई जीवन नहीं है। याद रखें: जैसे जीवन और आज्ञाकारिता के फल के बिना विश्वास एक नकली विश्वास है, वैसे ही प्यार जिसमें कीमती चीज़ों का त्याग और आज्ञाकारिता शामिल नहीं है, वह भी एक नकली प्यार है जो खुद को पूरी तरह धोखा देता है। जैसे बिना काम के विश्वास मरा हुआ और झूठा होता है, वैसे ही ठोस, रोज़मर्रा के कामों और सच्चाई के बिना प्यार भी आखिर में एक मरा हुआ प्यार है—एक ऐसा झूठा प्यार जिसकी परमेश्वर के सामने कोई कीमत नहीं है। क्रूस की सच्चाई को देखते हुए, हमें शब्दों का खेल बंद करना चाहिए और सच्चे चेलों जैसा जीवन जीना चाहिए, और अपने हाथों-पैरों से प्रभु के प्यार को दिखाना चाहिए।

प्यारे संतों, जो लोग प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार जीने का दावा करते हैं, उन्हें सबसे पहले "सच्चे मसीही" बनना चाहिए जो परमेश्वर और लोगों, दोनों के सामने बेदाग हों। हमारे चरित्र में पूरी ईमानदारी होनी चाहिए। विश्वासियों को, जो कीमती लहू से शुद्ध हुए हैं, कभी भी कलीसिया के दूसरे सदस्यों से झूठ नहीं बोलना चाहिए और न ही चालाकी भरे पाखंड से एक-दूसरे को धोखा देना चाहिए। हमें पूरी तरह सच्चा होना चाहिए—न केवल परमेश्वर के सामने, जो जलती हुई आग जैसी आँखों से हमें परखते हैं, बल्कि उन साथी विश्वासियों और

पड़ोसियों के सामने भी जिनसे हम रोज़ मिलते हैं। एक-दूसरे के साथ हमारे रिश्तों में यह सच्चाई कितनी गहरी होनी चाहिए? जैसे प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया से बात की थी, वैसे ही हमारे दिल इतने साफ़ होने चाहिए कि हम अपने आस-पास के लोगों से बिना किसी शर्म के हिम्मत के साथ कह सकें: "परमेश्वर गवाह है कि मैं मसीह यीशु के प्यार के साथ आप सभी से कितना प्यार करता हूँ" (फिलिप्पियों 1:8)। परमेश्वर, जो हमें पूरी तरह से देखता है, इस समय हमारे सबसे गहरे विचारों और छिपे हुए इरादों को जानता है।

इसलिए, जैसे हम एकांत में परमेश्वर के सामने सच्चे होते हैं, वैसे ही हमें उन लोगों के सामने भी साफ़ और ईमानदारी से पेश आना चाहिए जिनसे हम सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं। इसके लिए, विश्वासियों को घर और कलीसिया, दोनों जगह अपने प्रियजनों के साथ खुलकर और साफ़-साफ़ बातचीत करनी चाहिए। हमारी बातचीत सिर्फ़ स्वार्थी या "खुद पर केंद्रित" नहीं होनी चाहिए। इसे पवित्र और "दूसरों पर केंद्रित" बातचीत की ओर बढ़ना चाहिए, जिसमें सबसे पहले दूसरे व्यक्ति के दुख और ज़रूरतों का ध्यान रखा जाए। दूसरे शब्दों में, अपने प्रियजनों से लगातार अपनी इच्छाएँ पूरी करवाने की माँग करने के बजाय, हमें प्रभु का दिल रखते हुए यह सोचना चाहिए कि हम उनके लिए क्या कर सकते हैं और प्यार भरी बातें करनी चाहिए। यही आशीष की भाषा है जो हमारे साथी विश्वासियों की आत्माओं को मज़बूत और स्वस्थ बनाती है।

इसके अलावा, हमारे प्यार के साथ-साथ साफ़ और ठोस "काम" भी दिखने चाहिए। इसके लिए सिर्फ़ होंठों से नारे लगाने की नहीं, बल्कि प्यार को असल में जीने की ज़रूरत है, जो सुसमाचार से सच्चे बने दिल से निकलता है। अगर हम आसानी से होंठों से तो कहते हैं "मैं तुमसे प्यार करता हूँ" लेकिन कोई काम या त्याग नहीं करते, तो यह बिल्कुल सही है—जैसा कि नीतिवचन 14:23 में चेतावनी दी गई है—कि हमारी आत्माएँ कड़वी तकलीफ़ और पवित्र एहसास (दोष का एहसास) महसूस करें: "हर कड़ी मेहनत से फ़ायदा होता है, लेकिन सिर्फ़ बातें करने से गरीबी आती है।" अगर हम परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से प्यार करने का दावा तो करते हैं, लेकिन असल में परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं मानते और अपने आस-पास के भाई-बहनों से नफ़रत करते हैं, तो यह एक स्वाभाविक आध्यात्मिक नतीजा है कि हमें अपने दिल और आत्मा में दोषी होने का पवित्र एहसास और चुभने वाला दर्द महसूस हो। अगर हम बिना किसी पछतावे के ऐसी नाफ़रमानी करते रहते हैं, तो यह इस बात का सबूत है कि हमारी ज़मीर सुन्न और बेजान हो गई है।

मेरी दिली उम्मीद है कि हम सिर्फ़ शब्दों और ज़बान के खोखले दिखावे को पूरी तरह छोड़ दें, और हर दिन परमेश्वर और अपने साथी विश्वासियों के सामने इतनी ईमानदारी से खड़े हों कि हम सच में कह सकें, "परमेश्वर मेरा गवाह है।" आइए हम अपने पड़ोसियों और परिवारों के साथ सच्ची और साफ़-सुथरी बातचीत करें और ऐसे शिष्य बनें जो अपने कामों से प्यार दिखाएं—यानी सचमुच "काम और सच्चाई" के साथ जिएं। ऐसा करते हुए, आइए हम बिना किसी रुकावट के "भाईचारे का प्यार" दिखाएं—बिना किसी शर्म के, चाहे परमेश्वर का सिंहासन हो या दूसरे लोग—और ऐसे सच्चे उपासक बनकर जीत हासिल करें जो प्रभु की आज्ञा मानते हैं और उन्हें खुश करते हैं। मैं प्रभु के नाम से पूरी ईमानदारी से यही प्रार्थना करता हूं।

प्यारे संतों, आइए हम दिखावटी बातों और जुबान की बातों को छोड़ दें और एक-दूसरे से सच्चे दिल से, काम और सच्चाई के साथ प्यार करें। आइए हम सिर्फ़ होंठों से प्यार न जताएं, बल्कि क्रूस के कामों के ज़रिए अपने प्यार को ईमानदारी से साबित करें। अगर हम बिना ठोस कामों और ईमानदारी के सिर्फ़ प्यार की बातें करते हैं, तो न सिर्फ़ हम उस उद्धार का भरोसा खो देते हैं जो सच्चाई से मिलता है, बल्कि हम आध्यात्मिक लड़ाई के बीच प्रभु के सामने हिम्मत के साथ खड़े भी नहीं हो पाते (1 यूहन्ना 3:18–19)। मुझे उम्मीद है कि यीशु मसीह के सच्चे और काम पर आधारित प्यार का पालन करके—जिन्होंने हमें बचाने के लिए अपना पूरा शरीर और जीवन दे दिया—हम भी सच्चे प्यार के शिष्य बन सकते हैं, जो एक-दूसरे के लिए बलिदान देने को तैयार हों।

आखिर में, आज के वचन (1 यूहन्ना 3:19–24) के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना दो बड़े आध्यात्मिक आशीर्वादों और इनामों के बारे में बताते हैं जो विश्वासियों के जीवन में तब आते हैं जब हम एक-दूसरे से सच्चे दिल से प्यार करने की प्रभु की आज्ञा मानते हैं।

पहला, जब हम प्रभु की आज्ञा के अनुसार एक-दूसरे से प्यार करते हैं, तो हमें पक्का भरोसा हो जाता है कि हम "सच्चाई" के हैं, और हमें प्रभु के सामने दिल की मज़बूती और सच्ची शांति मिलती है।

1 यूहन्ना 3:19 में दिए गए शानदार वादे पर गौर करें: "इससे हम जान जाएंगे कि हम सच्चाई के हैं और उसके सामने अपने दिल को तसल्ली देंगे।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल* में इसका अनुवाद है: "तब हम जान जाएंगे कि हम सच्चाई के हैं और परमेश्वर के सामने दिल की शांति पा सकेंगे।" विश्वासियों, क्या कोई सचमुच संत कहला सकता है अगर वह अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में पाप के भारी बोझ के कारण गहरा दुख महसूस न करे और पछतावा न करे? क्योंकि "संत" की परिभाषा ही यही है कि वह "पापी दुनिया से पवित्रता के साथ अलग किया गया व्यक्ति" है। इसलिए, हमें संतों के तौर पर सौंपी गई पवित्र आध्यात्मिक ज़िम्मेदारी को पूरी निष्ठा से निभाना चाहिए। वह ज़िम्मेदारी और कुछ नहीं, बल्कि पापी दुनिया के तौर-तरीकों से पूरी तरह नाता तोड़ना और पाप व दुनिया से अलग, एक पवित्र जीवन जीना है। जैसे पानी और तेल कभी नहीं मिल सकते, वैसे ही विश्वास करने वाले—जो यीशु के कीमती लहू से शुद्ध होकर 'ज्योति की संतान' बन गए हैं—अंधेरी दुनिया के साथ मेल नहीं बिठा सकते। इस कठिन लड़ाई के मैदान में बिना किसी समझौते के जीत हासिल करने के लिए, हम विश्वासियों को हर पल अपनी "आध्यात्मिक निष्ठा" को बिल्कुल स्पष्ट रखना होगा। हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम वासनाओं से भरी इस दुनिया के नहीं हैं (यूहन्ना 17:16), बल्कि हम स्वर्ग के नागरिक हैं और उस प्रभु के हैं जो 'सच्ची ज्योति' है। हमें अपनी निष्ठा स्पष्ट करनी होगी। प्रेरित यूहन्ना ने अपनी पहली पत्री में आध्यात्मिक खेमों के बीच चार बड़े अंतर लगातार दिखाए हैं—ज्योति और अंधकार के बीच स्पष्ट भेद करते हुए—ताकि पढ़ने वालों के मन में यह बात पक्की हो जाए कि एक विश्वासी को किस तरह की पहचान रखनी चाहिए:

(1) ज्योति और अंधकार: परमेश्वर ज्योति है, और विश्वासी कभी अंधकार में नहीं चल सकते (1 यूहन्ना 1:5)।

(2) सत्य और झूठ: विश्वासी ज्योति के सत्य पर चलते हैं और शैतान के झूठ को नकारते हैं (1 यूहन्ना 1:6)।

(3) प्रेम और घृणा: विश्वासी 'सच्ची ज्योति' के प्रेम में बने रहते हैं और मृत्यु की घृणा को दूर करते हैं (1 यूहन्ना 2:9)।

(4) धार्मिकता और बुराई (अधर्म): विश्वासी परमेश्वर की धार्मिकता का पालन करते हैं और बुराई से दूर रहते हैं, जैसे कि कैन की बुराई (1 यूहन्ना 3:12)।

इन गंभीर अंतरों से जो निष्कर्ष निकलता है, वह स्पष्ट है: यीशु मसीह के कीमती लहू से नया जन्म पाने वाले विश्वासी स्वभाव से ही ज्योति, सत्य, प्रेम और धार्मिकता के दायरे में आते हैं। दूसरे शब्दों में, अब हम अपनी पुरानी, बुरी पहचान के साथ नहीं जीते, जो अंधकार, झूठ, घृणा और अन्याय से बंधी थी और जिस पर शैतान का राज था। इसलिए, ज्योति की संतान होने के नाते, हमें अपनी पवित्र पहचान के अनुरूप जीवन जीना चाहिए: प्रभु के सत्य में पूरी तरह बने रहना और परमेश्वर की धार्मिकता का पालन करना, साथ ही अपने भाई-बहनों से वैसा ही गहरा प्रेम करना जैसा हम अपने जीवन से करते हैं। जब हम प्यार और आज्ञाकारिता के इस रास्ते पर चलते हैं, तो हमें उद्धार का पक्का भरोसा मिलता है—यह जानना कि हम सच्चाई के हैं—और हम परमेश्वर के सिंहासन के सामने ऐसी शांति और हिम्मत का अनुभव करते हैं जो दुनिया नहीं दे सकती।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 3:19 के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना एक शानदार आध्यात्मिक पड़ाव बताते हैं: "इससे हम जानते हैं कि हम सच्चाई के हैं।" प्रेरित द्वारा कही गई बात "इससे," सुसमाचार की एक बहुत ही शानदार स्थिति को दिखाती है। यह उस काम की ओर इशारा करती है—जिसका ज़िक्र पिछले वचन (वचन 18) में किया गया है—कि सिर्फ़ शब्दों और बातों के खोखले दिखावे को छोड़कर साथी विश्वासियों से "काम और सच्चाई से" प्यार किया जाए। दूसरे शब्दों में, यह इस बात का ऐलान है कि जो विश्वासी सचमुच अपने कामों से—अपनी कीमती चीज़ों का त्याग करके—अपना प्यार साबित करता है, वह अपने जीवन में साफ़ तौर पर यह पक्का करता है कि वह दुनिया से नहीं बंधा है, बल्कि परमेश्वर की पवित्र सच्चाई का हिस्सा है। सच तो यह है कि जो विश्वासी सच्चाई का है और प्यार का काम करता है, वही यीशु मसीह का सच्चा चेला है। क्योंकि सच्चाई का होना किसी की पहचान का सबूत है: पूरी तरह से पुत्र, यीशु मसीह से जुड़ना, जो खुद अनोखी और परम सच्चाई हैं। जो विश्वासी प्रभु—जो सच्चाई हैं—के साथ मिलकर जीता है, वह सिर्फ़ प्यार की खोखली बातें कहकर अपनी आत्मा को धोखा नहीं देता। अपने प्यार को काम में लाकर—सच्चाई और ईमानदारी से प्यार करने के लिए अपने हाथ-पैर चलाकर—हम आखिर में परमेश्वर के सिंहासन के सामने भी अपने दिलों में मज़बूती से खड़े हो सकते हैं। *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल* आत्मा की इस शानदार स्थिति का बहुत ही सुंदर अनुवाद करती है: "आप परमेश्वर के सामने भी दिल की शांति पा सकेंगे।"

वह कौन-सी पवित्र वजह है जिससे हम महान सृष्टिकर्ता परमेश्वर के सामने अपने दिलों को मज़बूत कर सकते हैं और आत्मा की पूरी शांति पा सकते हैं? इसका आध्यात्मिक रहस्य यह है कि—उस सर्वज्ञ परमेश्वर के सामने जो ब्रह्मांड की हर बात जानता है और हमारे उन दिलों से भी बड़ा है जिनमें हमारी कमियां और ज़ख्म छिपे हैं (1 यूहन्ना 3:20)—हमने "परमेश्वर के सामने पूरी निडरता" हासिल कर ली है, क्योंकि सुसमाचार का पालन करने से हमारे दिल ईमानदारी की उस स्थिति में पहुँच गए हैं जहाँ वे "हमें दोषी नहीं ठहराते" (1 यूहन्ना 3:21)। यह "बिना किसी रुकावट वाले प्यार—जिसमें अंदर कोई भी ठोकर की बात न हो"—का शानदार फल है, जिसे प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:10 में शिष्यत्व के उस मानक के रूप में ज़ोरदार ढंग से बताया है जिसे हमें हासिल करना है। केवल दिखावे से रहित प्यार ही हमें स्वर्गीय दरबार में निडरता देता है। इतना ही नहीं; जो वफ़ादार सेवक प्रभु की नई आज्ञा के अनुसार अपने भाइयों से काम और सच्चाई से प्यार करते हैं, उन्हें प्रार्थना का वह शानदार सौभाग्य मिलता है जिसमें वे परमेश्वर से जो कुछ भी मांगते हैं, वह उन्हें मिल जाता है (1 यूहन्ना 3:22)।

वह कौन-सी मज़बूत वजह है जिससे परमेश्वर बिना देर किए उनकी पुकार का जवाब देते हैं? आज के हिस्से का 22वां पद इस आध्यात्मिक रहस्य को साफ़ तौर पर बताता है: "क्योंकि हम उनकी आज्ञाओं को मानते हैं और वही करते हैं जो उन्हें भाता है।" सच्चे संत—जिन्होंने प्यार के तरीके में महारत हासिल कर ली है—सिर्फ़ परमेश्वर की इच्छा को खोजते हैं, न कि अपनी इच्छाओं को। प्रेरित द्वारा बताई गई "आज्ञा"—स्वर्ग के राज्य का वह गंभीर नियम जिसकी त्रिएक परमेश्वर हमसे अपेक्षा करते हैं—साफ़ है: वह यह है कि "पवित्र पुत्र, यीशु मसीह के नाम पर पक्का विश्वास करें और एक-दूसरे से वैसे ही पूरे दिल से प्यार करें जैसे खुद से करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने हमारे लिए खुद मिसाल कायम की" (पद 23)। हमारे वफ़ादार परमेश्वर और पिता भला उसकी प्रार्थनाओं को कैसे अनसुना कर सकते हैं जो अपने पूरे जीवन से प्यार की इस आज्ञा का पालन करता है और वही करता है जो प्रभु को भाता है? जो लोग सच्चाई में बने रहते हैं और प्यार का पालन करते हैं, वे स्वर्ग की सबसे शानदार आशीषों के हकदार बन जाते हैं: सिंहासन के सामने निडरता और प्रार्थनाओं के असीमित जवाब का भरोसा।

प्यारे संतों, इसलिए हमें—प्रभु द्वारा दिए गए राज्य के नियम के अनुसार—परमेश्वर के एकलौते पुत्र, यीशु मसीह पर पक्का विश्वास करना चाहिए। हमें भी अपने पड़ोसियों और साथी विश्वासियों से वैसे ही पूरे दिल से प्यार करना चाहिए, जैसा प्यार प्रभु ने हमारे लिए दिखाया है। जब हम अपनी पूरी ज़िंदगी में प्यार के इस हुक्म को मानते हुए चलते हैं, तो परमेश्वर ऊपर से जो पहली शानदार आशीष बरसाते हैं, वह है उद्धार का पक्का भरोसा—यह जानना कि हम सच्चाई के हैं—और वह अनुग्रह जो महान प्रभु के सामने हमारे दिलों को मज़बूत करता है (1 यूहन्ना 3:19)। जब हम पूरे दिल से प्रभु के हुक्मों को मानते हैं और उन पर अमल करते हैं, तो हमारी आत्माएँ ईमानदार और पवित्र हो जाती हैं, और परमेश्वर के सामने खुद को दोषी ठहराने की भावना से आज़ाद हो जाती हैं; हमें सिंहासन के सामने एक बेहतरीन आध्यात्मिक हिम्मत मिलती है—ऐसी हिम्मत जो दुनिया नहीं दे सकती (वचन 21)। इस स्वर्गीय हिम्मत के साथ, संत पूरे भरोसे से अनुग्रह के सिंहासन के पास जाता है और प्रार्थना के सबसे बड़े विशेषाधिकार का आनंद लेता है: अपने वफादार परमेश्वर और पिता से उन सभी चीज़ों का तुरंत जवाब पाना जो हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में माँगते हैं (वचन 22)। परमेश्वर के प्रार्थना का जवाब देने के ऐसे अद्भुत दरवाज़े खोलने का पक्का कारण साफ़ है: प्यार के रखवाले के तौर पर, हम अपनी इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश नहीं करते; बल्कि, हम वह करते हैं जिससे प्रभु खुश होते हैं—प्रभु यीशु के नाम पर पूरा भरोसा रखना, खुशी-खुशी उनके प्यार के नियम का पालन करना, और एक-दूसरे से पूरे दिल से प्यार करना (वचन 22–23)। प्रभु के नाम में मेरी यही दिली प्रार्थना है कि हम सब इस शानदार आज्ञाकारिता के रहस्य को समझें और अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में सबसे पवित्र स्वर्गीय आशीषों का भरपूर आनंद लें: सिंहासन के सामने हिम्मत और प्रार्थनाओं के असीमित जवाब का भरोसा।

दूसरी बात, जब हम प्रभु के हुक्म के अनुसार एक-दूसरे से प्यार करते हैं, तो हम उस रहस्यमयी "आपसी निवास" में मिलने वाले अनुग्रह की पूर्णता का अनुभव करते हैं—जहाँ मैं प्रभु में रहता हूँ, और प्रभु मुझमें रहते हैं।

आज का वचन, 1 यूहन्ना 3:24, उस आध्यात्मिक मिलन की ऊँचाई को बताता है जो उस विश्वासी को मिलता है जो क्रूस पर बताए गए प्यार के हुक्म को मानता है: "जो लोग उसके हुक्मों को मानते हैं, वे उसमें रहते हैं,

और वह उनमें रहता है। और हम जानते हैं कि वह हममें रहता है क्योंकि वह आत्मा जो उसने हमें दी है, हममें रहती है" (NLT)। जैसा कि *समकालीन कोरियाई बाइबिल* में इसका अनुवाद किया गया है: "जो कोई परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है, वह परमेश्वर में रहता है, और परमेश्वर उस व्यक्ति में रहते हैं। इसलिए, पवित्र आत्मा के द्वारा जो परमेश्वर ने हमें दिया है, हम जानते हैं कि वह हमारे भीतर वास करते हैं।" प्यारे संतों, आपको निश्चित रूप से वह अनमोल सुसमाचार गीत याद होगा, "मुझमें बने रहो," जिसे हम आराधना के दौरान आँसुओं के साथ गाते हैं: "मुझमें बने रहो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ; मैं ही वह हूँ जो हर मुसीबत में तुम्हारी रक्षा करता है। डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारी मदद करूँगा; निराश मत होओ, क्योंकि मैं तुम्हारा हाथ थामे रहूँगा। मैंने तुम्हें नाम लेकर बुलाया है; तुम मेरे हो—तुम मेरे हो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मैं तुम्हें अनमोल और सम्मानित मानता हूँ; मैं वह प्रभु हूँ जो तुमसे प्रेम करता है।" जब हम इस भजन के दिल को छू लेने वाले बोलों पर गहराई से मनन करते हैं, तो हमें मिलने वाली पवित्र आध्यात्मिक सीख स्पष्ट होती है: क्योंकि हमें उनके लहू की कीमत देकर खरीदा गया था और हम पूरी तरह से प्रभु के हैं, इसलिए हमें उनके भीतर निकटता से बने रहना चाहिए। क्योंकि जब हम दृढ़ता से प्रभु की गोद में बने रहते हैं, तभी वे चारों ओर से उमड़ती मुसीबतों के बीच हमारी सुरक्षित रक्षा करते हैं, निराश होने पर हमारी मदद करते हैं, और डर से कांपते लोगों का हाथ मजबूती से थामते हैं।

जब हम 1 यूहन्ना 3:24 में उस अद्भुत घोषणा का सामना करते हैं—"जो लोग उनकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, वे उनमें बने रहते हैं, और वे उनमें"—तो हमें अनिवार्य रूप से यीशु द्वारा कही गई और उसी लेखक, प्रेरित यूहन्ना द्वारा दर्ज की गई महान "अंगूर की बेल का दृष्टांत" याद आता है। विशेष रूप से, यूहन्ना 15:4–5 के शब्द आज के पाठ के लिए एक आदर्श धार्मिक पूरक हैं: "मुझमें बने रहो, और मैं तुममें। जैसे डाली अपने आप फल नहीं दे सकती जब तक वह बेल में न बनी रहे, वैसे ही तुम भी नहीं कर सकते, जब तक तुम मुझमें न बने रहो। मैं अंगूर की बेल हूँ, तुम डालियाँ हो। जो मुझमें बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल लाता है; क्योंकि मेरे बिना तुम कुछ नहीं कर सकते।" अपने सुसमाचार में, प्रेरित यूहन्ना ने प्रभु की अपनी आवाज़ को दोहराते हुए घोषणा की, "मुझमें बने रहो," और 1 यूहन्ना 2:6 में—एक ऐसा अंश जिसकी हम पहले ही गहराई से जाँच कर चुके हैं—उन्होंने इसे "उनमें जीने" के रूप में परिभाषित किया। यहाँ, "बने रहने" और "जीने" के आध्यात्मिक विचार एक ही बात को बताते हैं। दूसरे शब्दों में, 1 यूहन्ना 2:6 में बताए

गए विश्वास की सच्चाई—"प्रभु में जीना"—एक ऐसे जीवन को दिखाती है जो जुड़ाव का जीवन है—प्रभु की गोद में हमेशा बने रहना। तो फिर, अंगूर की बेल के दृष्टांत के नज़रिए से देखें तो प्रभु में बने रहने का असली मुक्ति-संबंधी महत्व क्या है? इसका मतलब है कि हम—जो कभी बेजान, सूखी टहनियों की तरह थे—अब यीशु मसीह से मज़बूती से जुड़े हैं, जो सच्ची बेल और जीवन का स्रोत हैं, और उनसे पोषण पा रहे हैं; यह उस शानदार जुड़ाव की सच्चाई को दिखाता है जिसमें, चाहे कितनी भी मुश्किलें या प्रलोभन क्यों न आएं, हम कभी सच्चाई से दूर नहीं होते बल्कि प्रभु के साथ हमेशा के जुड़ाव में जीते हैं। प्रेरित यूहन्ना के लिए यह जुड़ाव इतना ज़रूरी क्यों था, इसका कारण साफ़ है: केवल तभी जब हम प्रभु के सच्चे चेलों के रूप में उनसे मज़बूती से जुड़े रहते हैं, हम अपने जीवन में "प्रेम का फल—काम और सच्चाई से"—भरपूर मात्रा में ला सकते हैं। इसके उलट, यह एक गंभीर चेतावनी भी है: जिस पल हम सच्चाई से भटक जाते हैं और प्रभु में उनके अपने बनकर जीना छोड़ देते हैं, हम—परमेश्वर की नज़र में—ऐसे दयनीय और कमज़ोर प्राणी बन जाते हैं जो कोई पवित्र फल नहीं ला सकते; हम बस खाली खोल बनकर रह जाते हैं, जो प्रभु के बिना कुछ भी करने में असमर्थ होते हैं (यूहन्ना 15:5)।

जैसा कि हमने पहले ही गहराई से सोचा है, प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:5 में प्रभु में बने रहने वालों के लिए सबसे साफ़ पैमाना बताया है: "लेकिन जो कोई उनके वचन को मानता है, सचमुच परमेश्वर का प्रेम उसमें पूरा होता है। इससे हम जानते हैं कि हम उनमें हैं।" जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्ज़न* इसका अनुवाद करता है, जो परमेश्वर के वचन को मानता है, उसी में परमेश्वर का प्रेम पूरा होता है; आज्ञा मानने के इसी सबूत से हम प्रभु के साथ अपने मज़बूत जुड़ाव की आध्यात्मिक सच्चाई की पुष्टि करते हैं। यह पता लगाने का आसान तरीका कि क्या हम प्रभु में बने रहने वाले सच्चे विश्वासी हैं या नहीं, बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है। हमें बस ईमानदारी से सोचना है कि क्या आज्ञा मानने के लक्षण—प्रभु के वचन को मानना—हमारे रोज़मर्रा के जीवन में दिखते हैं। क्योंकि जो कोई प्रभु में जीने का दावा करता है (वचन 6), उसे उनके वचन को मानने वाला होना चाहिए; उस वचन का पूरी तरह पालन करने से ही परमेश्वर का पवित्र *अगापे* प्रेम आत्मा में पूरी तरह परिपक्व होता है (पद 5)। दूसरे शब्दों में, प्रभु में बने रहने का सही अर्थ उस स्थिति से है जिसमें परमेश्वर का प्रेम किसी व्यक्ति के अंतर्मन को भर देता है और पूरी तरह परिपक्व हो जाता है।

इस रहस्यमय मिलन के सिद्धांतों को हम प्रभु के उस उपदेश में और गहराई और स्पष्टता से समझते हैं जो अंगूर की बेल के बारे में है और जिसका ज़िक्र यूहन्ना 15:9–10 में मिलता है: "जैसे पिता ने मुझसे प्रेम किया, वैसे ही मैंने तुमसे प्रेम किया है। मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे, ठीक वैसे ही जैसे मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है और उनके प्रेम में बना हुआ हूँ।" जैसे परमेश्वर पिता ने परमेश्वर पुत्र से प्रेम किया, वैसे ही प्रभु ने हमसे अपने पूरे जीवन के साथ प्रेम किया है; इसलिए, हमें उस प्रेम के दायरे में जीना चाहिए जिसे क्रूस पर दिखाया गया था। जैसे प्रभु ने अपने जीवन से पिता की आज्ञाओं को मानकर पिता के प्रेम में बने रहना जारी रखा, वैसे ही हम भी प्रभु के अनंत प्रेम में तभी बने रह सकते हैं जब हम प्रभु की नई आज्ञा को मानें और उसका पालन करें। सुसमाचार के इस शानदार संदर्भ के बाद, हमें एक गहरा आध्यात्मिक सूत्र मिलता है जिसे प्रेरित यूहन्ना ने यूहन्ना के सुसमाचार और यूहन्ना की पत्रियों में बताया है। प्रेरित तीन अवधारणाओं—प्रभु में बने रहना, प्रभु के वचन को मानना, और प्रभु के प्रेम में बने रहना—को एक ही, अटूट सच्चाई के रूप में देखते हैं। दूसरे शब्दों में, एक पवित्र और नेक चक्र है: जो विश्वासी पूरी तरह से प्रभु में बना रहता है, वह प्रभु के वचन को मानता है, और जो प्रभु के वचन को मानता है, वह प्रभु के अनंत प्रेम में मजबूती से बना रहता है। क्योंकि जो लोग यीशु मसीह में बने रहते हैं, वे प्रभु के जीवन देने वाले वचन को महत्व देते हैं और उसका पालन करते हैं, इसलिए आज्ञाकारिता की उस नींव पर परमेश्वर का प्रेम उनमें पूरी तरह से और अटूट रूप से पूरा होता है (1 यूहन्ना 2:5–6)। इसके अलावा, यीशु के एक सच्चे शिष्य में—जो सुने हुए सुसमाचार के अनुसार जीता है और हर दिन अपनी आत्मा में परमेश्वर के पूर्ण प्रेम का अनुभव करता है—प्रभु का पवित्र आनंद और स्वर्ग की खुशी, जिसे न तो दुनिया समा सकती है और न ही हालात डगमगा सकते हैं, हमेशा समुद्र की लहरों की तरह भरपूर मात्रा में उमड़ती रहेगी (यूहन्ना 15:11)।

तो फिर, हम "आपस में बसने" (mutual indwelling) की इस शानदार और रहस्यमय कृपा को कैसे स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं और इसका भरोसा कर सकते हैं—वह अलौकिक सच्चाई कि अदृश्य, पवित्र प्रभु अभी हमारी आत्माओं में व्यक्तिगत रूप से वास करते हैं? आज के पाठ में 1 यूहन्ना 3:24 का बाद वाला हिस्सा एक ऐसी पक्की, ब्रह्मांडीय आध्यात्मिक गारंटी बताता है जो हमारी अपनी भावनाओं या डगमगाते विश्वासों से कहीं ऊपर है: "हम जानते हैं कि वह उस आत्मा के द्वारा हममें रहता है जो उसने हमें दी है।"

जैसा कि *समकालीन कोरियाई संस्करण* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) कहता है: "उस पवित्र आत्मा के द्वारा जो परमेश्वर ने हमें मुफ्त में दी है, हम स्पष्ट रूप से जान पाते हैं कि वह वास्तव में हमारे भीतर जीवित है।" इस बात का सबसे पक्का कानूनी सबूत कि प्रभु हमारे भीतर रहते हैं और काम करते हैं, और कोई नहीं बल्कि पवित्र आत्मा—वह सहायक—का हमारे भीतर वास करना है, जिसे उन्होंने हमें दिया है। 1 यूहन्ना 4:2 में, प्रेरित यूहन्ना इस पवित्र आत्मा की पवित्र पहचान और स्वरूप पर और रोशनी डालते हैं और गवाही देते हैं, जो हमारी आत्माओं के केंद्र में विराजमान है: "तुम परमेश्वर की आत्मा को इस प्रकार पहचानते हो: हर वह आत्मा जो यह मानती है कि यीशु मसीह शरीर में आए हैं, वह परमेश्वर की ओर से है।"

हमारे भीतर की पवित्र आत्मा केवल एक आध्यात्मिक ऊर्जा नहीं है; वह स्वयं जीवित "परमेश्वर की आत्मा" है। पवित्र आत्मा—परमेश्वर की आत्मा—मेरे भीतर जो सबसे बड़ा और ज़रूरी काम करती है, वह मेरी आत्मा को अवतार के शानदार सुसमाचार को पूरी तरह से स्वीकार करने और उस पर विश्वास करने के योग्य बनाना है: कि यीशु मसीह, जो सच्चा प्रकाश हैं, व्यक्तिगत रूप से मानव शरीर में इतिहास में आए ताकि हम जैसे पापियों को बचा सकें। जो आत्मा यह पवित्र स्वीकारोक्ति करती है, वह पूरी तरह से परमेश्वर की आत्मा है। इसके अलावा, 1 यूहन्ना 4:4 में, प्रेरित यूहन्ना दृढ़ता से कहते हैं कि सत्य की यह आत्मा दूर नहीं है, बल्कि संतों के दिलों के बिल्कुल केंद्र में रहती है: "हे छोटे बच्चों, तुम परमेश्वर की ओर से हो, और तुमने उन पर विजय पाई है, क्योंकि जो तुममें है, वह उससे कहीं बड़ा है जो दुनिया में है।" सचमुच, पवित्र आत्मा—जो मेरे उद्धार के आश्वासन पर मुहर लगाती है और धोखे की ताकतों को तोड़ती है—वही पवित्र आत्मा है जो व्यक्तिगत रूप से हमारे भीतर रहती है जब हम क्रूस के कीमती लहू पर विश्वास करते हुए चलते हैं। हम ऐसे लोग नहीं हैं जो केवल अपनी बुद्धि या धार्मिक भावनाओं के आधार पर प्रभु की उपस्थिति के बारे में अंदाज़ा लगाते हैं। पवित्र आत्मा की शक्तिशाली उपस्थिति के ज़रिए—जो हमारे भीतर वास करती है, हमें रोज़ाना यीशु को अपना उद्धारकर्ता मानने के लिए प्रेरित करती है, और हमें सच्चे कामों और सच्चाई के साथ अपने साथी विश्वासियों से प्रेम करने की शक्ति देती है—हम अपने रोज़मर्रा के जीवन में उद्धार के उस धन्य आश्वासन को स्पष्ट और भरपूर रूप से जानने और उसका आनंद लेने का शानदार सौभाग्य पाते हैं: कि प्रभु यीशु मसीह, जो राजाओं का राजा है, हमारे जीवन के रेगिस्तानों और हमारी आत्मा की घाटियों के बीच हमेशा हमारे साथ वास करता है।

प्रिय संतों, अब मैं आज के मनन को समाप्त करना चाहता हूँ। पवित्र आत्मा—वह सहायक जिसे परमेश्वर ने हमें मुफ्त में दिया है, क्योंकि उसने यीशु मसीह के क्रूस पर बहाए गए बहुमूल्य लहू के द्वारा हमें छुटकारा दिलाया है—इस समय हमारे दिलों के बिल्कुल केंद्र में वास करती है, और व्यक्तिगत रूप से आत्मा का पहला फल: प्रेम (गलातियों 5:22) पैदा करती है। सच्चाई की आत्मा के रूप में, पवित्र आत्मा हर पल मेरी समझ और स्वार्थी अहंकार को वश में करती है, और हमें प्रभु की उस गंभीर नई आज्ञा का पूरी तरह से पालन करने के लिए शक्तिशाली रूप से प्रेरित करती है: "एक-दूसरे से पूरे दिल से प्रेम करो, ठीक वैसे ही जैसे मैंने अपनी जान देकर तुमसे प्रेम किया है।" जब हम विनम्रतापूर्वक इस वफादार पवित्र आत्मा के विस्तृत मार्गदर्शन का पालन करते हैं और प्रभु की आज्ञा के अनुसार एक-दूसरे से पूरे दिल से प्रेम करते हैं, तो मेरा विश्वास है कि हम "आपसी वास" (mutual indwelling) के रहस्यमय और शानदार आशीर्वाद को और अधिक भरपूर मात्रा में जानेंगे और उसका आनंद लेंगे—जिसमें मैं प्रभु में वास करता हूँ, और वह हमेशा मेरी रेगिस्तान जैसी आत्मा के भीतर वास करता है। यह वह सर्वोच्च प्रतिफल है जो प्रेम के नियम का खुशी-खुशी पालन करने वाले संत यहाँ पृथ्वी पर प्राप्त करते हैं और उसका आनंद लेते हैं। हम क्रूस के ऋणी हैं, क्योंकि हमने परमेश्वर से एक विशाल, उद्धार करने वाला प्रेम प्राप्त किया है जिसे हम कभी भी नहीं चुका सकते।

इसलिए, हमें प्रभु द्वारा दी गई स्वर्गीय आज्ञा का पालन करना चाहिए और एक-दूसरे से वैसे ही पूरे दिल से प्रेम करना चाहिए, जैसे हम अपने शरीर से प्रेम करते हैं। हमें कभी भी ऐसे कठोर हृदय वाले लोग नहीं बनना चाहिए जो होंठों से तो परमेश्वर-भक्ति का दावा करते हैं, लेकिन प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं और अपने भाई-बहनों से नफ़रत करते हैं। हमें कैन के उस बुरे रास्ते पर नहीं चलना चाहिए, जिसने ईर्ष्या और जलन से अंधे होकर अपने ही भाई पर हमला किया और बर्बादी की राह पर चल पड़ा। यदि हम प्रभु के नियम की अनदेखी करते हैं और अपने दिल में किसी भाई के प्रति नफ़रत रखते हैं, तो हम परमेश्वर के नहीं, बल्कि केवल बुरी "दुनिया" के हैं। इसके अलावा, यह इस बात का दुखद सबूत है कि क्रूस की सच्ची रोशनी में आने का दावा करने के बावजूद, असल में हम अब भी "मौत" की ठंडी छाया में बंधे हुए हैं। वह काला, नफ़रत से भरा दिल—जो एक पवित्र परमेश्वर के सामने है—सिर्फ़ चरित्र की कोई कमी नहीं है; यह एक ऐसा पाप है जो सीधे तौर पर छठे हुक्म को तोड़ता है और कलीसिया के ही किसी सदस्य की आध्यात्मिक "हत्या"

के बराबर है। हमें इस आध्यात्मिक सुन्नपन की डरावनी सच्चाई को समझना चाहिए और तुरंत ऐसे किसी भी रवैये से दूर हो जाना चाहिए जो पाप को हल्के में लेता है।

हम रोशनी की सच्ची संतान हैं जो यीशु मसीह—परमेश्वर के इकलौते बेटे—को अपना उद्धारकर्ता मानते हैं। इसलिए, हमें पूरे दिल से प्यार का रास्ता अपनाना चाहिए और उसी हुक्म का पालन करना चाहिए जिसके लिए प्रभु ने मिसाल कायम की। जैसे यीशु ने हमें—जो पापी थे—बचाने के लिए क्रूस की वेदी पर अपनी कीमती जान और लहू बिना किसी हिचकिचाहट के दे दिया, वैसे ही हमें भी त्याग की भावना से प्यार करना चाहिए और अपने प्यारे भाई-बहनों के लिए खुद को और अपनी जान को भी देने के लिए तैयार रहना चाहिए। आइए हम सिर्फ़ बड़े-बड़े नारों तक ही सीमित न रहें। अपनी ईमानदार मेहनत से मिली दुनियावी दौलत और चीज़ों को जमा करने के बजाय, आइए हम ऐसे रखवाले बनें जो समझदारी से इन संसाधनों को गरीबी और तंगी में जी रहे भाई-बहनों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बांटें। ऐसा करते हुए, आइए हम पक्का करें कि हमारा प्यार सिर्फ़ दिखावटी बातों और शब्दों का खेल बनकर न रह जाए; बल्कि, हम अपने हाथों और पैरों से काम करें और ऐसा ज़िंदा प्यार पैदा करें जो सिर्फ़ "कामों और सच्चाई" से पहचाना जाए। जब हम दुनियावी इच्छाओं से नाता तोड़ लेते हैं और मज़बूती से त्याग और आज्ञाकारिता के तंग रास्ते पर चलते हैं, तो परमेश्वर की ओर से ऊपर से बरसने वाली शानदार आशीषें हमारी ज़िंदगी को भर देती हैं।

पहला, हमें उद्धार का पक्का भरोसा मिलता है—यह जानकर कि हम अंधेरे के नहीं, बल्कि परमेश्वर की पवित्र सच्चाई के हैं—और हमें महान प्रभु के सामने अपने दिलों को निडर और मज़बूत रखने की कृपा मिलती है (1 यूहन्ना 3:19)।

दूसरा, हमारी आत्माएँ ईमानदार और पवित्र हो जाती हैं, और परमेश्वर के सामने खुद को दोषी मानने से आज़ाद हो जाती हैं; हम निडर होकर कृपा के सिंहासन के पास जाते हैं और प्रार्थना की महान शक्ति का आनंद लेते हैं, और जो कुछ भी हम मांगते हैं, उसके लिए अपने वफ़ादार पिता परमेश्वर से तुरंत जवाब पाते हैं (पद 21–22)। तीसरी बात, पवित्र आत्मा की शक्तिशाली उपस्थिति और साथ के ज़रिए—जो हमारे उद्धार के पक्के होने की मुहर है—हम प्रभु यीशु मसीह के साथ अपने धन्य मिलन की सच्चाई को और भी गहराई

और स्पष्टता से जान पाते हैं; वे राजाओं के राजा हैं और हमेशा हमारे जीवन के केंद्र में वास करते हैं (पद 24)।

अंत के इन दिनों में, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम ढोंग और नफ़रत के अंधेरे को दृढ़ता से दूर करें, 1 यूहन्ना 1:9 में बताए गए कीमती लहू पर भरोसा करके अपने पापों को स्वीकार करें, और अपने रोज़मर्रा के कामों में क्रूस के प्रेम को पूरी तरह से अपनाएँ। हम परमेश्वर और मनुष्य दोनों के सामने बेदाग रहकर, महान और बिना किसी रुकावट वाले भाईचारे के प्रेम का जीवन जी सकें—और प्रभु द्वारा तैयार की गई रहस्यमयी और महिमामयी नई आज्ञा का पालन करने से मिलने वाली आशीषों का अपने रोज़मर्रा के जीवन में भरपूर आनंद उठा सकें। मैं प्रभु के नाम में पूरी गंभीरता से यह प्रार्थना करता हूँ।

यह आध्यात्मिक जुड़ाव स्वाभाविक रूप से याकूब की पत्री में बताई गई गंभीर सच्चाई की याद दिलाता है: "मेरे भाइयों, इससे क्या फ़ायदा अगर कोई कहे कि उसमें विश्वास है लेकिन काम नहीं हैं? क्या विश्वास उसे बचा सकता है? ... इसी तरह विश्वास भी अपने आप में, अगर उसमें काम न हों, तो मरा हुआ है" (याकूब 2:14, 17)। पवित्र शास्त्र बताता है कि आज्ञापालन और काम के बिना विश्वास अपने आप में मरा हुआ और पूरी तरह बेकार है (पद 20, 26)। सच्चे विश्वास के बिना, कोई भी परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता और न ही धर्मी आज्ञापालन के मार्ग पर चल सकता है (इब्रानियों 11:6)। इसलिए, अगर हम सच में यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता मानते हैं, तो हमें प्रभु की पवित्र आज्ञा—"एक-दूसरे से प्रेम करो"—का पूरी तरह पालन करते हुए जीवन जीना चाहिए।

इस मकसद से, मैं आज के वचन (1 यूहन्ना 3:11–15) पर आधारित चार मुख्य पहलुओं के ज़रिए उस व्यक्ति के असली स्वभाव पर गौर करना चाहता हूँ जो प्रभु की पवित्र आज्ञा को नहीं मानता: वह व्यक्ति जो दूसरों से प्रेम नहीं करता और इसके बजाय अपने भाई से नफ़रत करता है।

पहला, वह व्यक्ति जो प्रभु की आज्ञा के अनुसार दूसरों से प्रेम नहीं करता और इसके बजाय अपने भाई से नफ़रत करता है, असल में "कैन जैसा" है।

अपने विश्वास के जीवन में, हम अक्सर खुद से पूछते हैं, "मुझे कैसा इंसान बनना चाहिए?" फिर भी, कई बार हमें ईमानदारी से इसके उलट सवाल का सामना करना पड़ता है: "मुझे कभी कैसा इंसान नहीं बनना चाहिए?" बहुत पहले, मैंने अपनी पादरी की डायरी में "मुझे ऐसा इंसान कभी नहीं बनना चाहिए..." शीर्षक के तहत एक नोट लिखा था: "ऐसा इंसान जो दूसरों को गहराई से समझने की कोशिश करने के बजाय बहुत आसानी से गलत समझ लेता है; ऐसा इंसान जो सच्चे प्रोत्साहन और तारीफ़ के बजाय जल्दी आलोचना करता है; ऐसा इंसान जो पल भर की भावना पर काबू नहीं रख पाता और धैर्य और सहनशीलता दिखाने के बजाय जल्दबाजी में गुस्सा निकाल देता है; ऐसा इंसान जो दूसरों की बात सुनने के बजाय हमेशा अपनी राय थोपने में लगा रहता है। ओह, मुझे कभी ऐसा इंसान नहीं बनना चाहिए..."

हम कैसे जान सकते हैं कि हमारे पास पहले से ही अनंत जीवन है?

[1 यूहन्ना 3:14, *समकालीन कोरियाई संस्करण*]

"हम जानते हैं कि हम मृत्यु से जीवन में आ गए हैं और हमारे पास पहले से ही अनंत जीवन है क्योंकि हम अपने भाइयों से प्रेम करते हैं। लेकिन, जो प्रेम नहीं करते, वे मृत्यु में ही बने रहते हैं।"

प्रिय संतों, हम अपने रोज़मर्रा के जीवन में उस धन्य सच्चाई को कैसे स्पष्ट रूप से पहचान और समझ सकते हैं कि परमेश्वर की कृपा से हमारे पास पहले से ही अनंत जीवन है? आज का वचन—*समकालीन कोरियाई संस्करण* में 1 यूहन्ना 3:14—हमारे उद्धार की पुष्टि के लिए सबसे पक्का आधार देता है: "हम जानते हैं कि हम मृत्यु से जीवन में आ गए हैं और हमारे पास पहले से ही अनंत जीवन है क्योंकि हम अपने भाइयों से प्रेम करते हैं।" इसके विपरीत, जो लोग केवल होंठों से परमेश्वर-भक्ति का दावा तो करते हैं, लेकिन अपने साथी विश्वासियों से हृदय से प्रेम नहीं करते, वे एक दयनीय स्थिति में रहते हैं और मृत्यु की ठंडी छाया में जीवन बिताते हैं।

अनंत जीवन के इस महान रहस्य को सही ढंग से समझने के लिए, हमें सबसे पहले बाइबल में गंभीरता से बताई गई "मृत्यु" की विभिन्न परिभाषाओं को स्पष्ट रूप से समझना होगा। धर्मग्रंथों में बताई गई मृत्यु मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में आती है:

पहली, आत्मिक मृत्यु: इसका अर्थ है पाप और अपराध के कारण जीवन के स्रोत—परमेश्वर—से बुरी तरह अलग हो जाना, जो आदम के पतन के बाद हुआ।

दूसरी, शारीरिक मृत्यु: इसका अर्थ है जीवन का प्राकृतिक अंत, जब शरीर और आत्मा अलग हो जाते हैं।

तीसरी, अनंत मृत्यु: इसका अर्थ है अंतिम मृत्यु—भविष्य के न्याय के दिन (महान श्वेत सिंहासन का न्याय) परमेश्वर से हमेशा के लिए और पूरी तरह अलग हो जाना—जिसका परिणाम आग की झील में हमेशा का विनाश होता है, जो अनंत दंड का स्थान है। हालाँकि, "अनंत जीवन" की वास्तविकता—जो यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा संतों को दी गई है—एक अद्भुत आशीष है जो इस तीन-स्तरीय मृत्यु की शक्ति को हमेशा के लिए खत्म कर देती है। अनंत जीवन एक शानदार वरदान है, जो क्रूस पर यीशु मसीह के प्रायश्चित्त बलिदान के माध्यम से प्राप्त होता है; इसके द्वारा हमारा परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप होता है और हम उनके साथ पूरी तरह मेल में आ जाते हैं, जबकि पहले उनके क्रोध के कारण हम उनसे डरते थे (रोमियों 5:10–11)। इसमें एकमात्र सच्चे परमेश्वर और यीशु मसीह—जिन्हें उन्होंने भेजा—को व्यक्तिगत रूप से और सही ढंग से जानना शामिल है (यूहन्ना 17:3); यह परमेश्वर पिता और पुत्र यीशु—जो स्वयं अनंत जीवन हैं—के साथ पवित्र आत्मा (सत्य की आत्मा) के द्वारा गहरे और सीधे जुड़ाव का आनंद लेने की स्थिति को दर्शाता है (1 यूहन्ना 1:2–3)। इसके अलावा, यह अनंत जीवन उस अंतिम घटना की ओर इशारा करता है जब प्रभु महिमा के साथ इस दुनिया में लौटेंगे: हममें से जो लोग जीवित होंगे, वे तुरंत आध्यात्मिक शरीरों में बदल जाएंगे, जबकि जो लोग मर चुके हैं और सो गए हैं, उन्हें महिमामय पुनरुत्थान वाले शरीर मिलेंगे और उनकी आत्माएं उनसे पूरी तरह जुड़ जाएंगी; तब हम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे—एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी जहाँ कोई आँसू नहीं होंगे—और त्रिएक परमेश्वर के साथ हमेशा रहेंगे।

यूहन्ना के सुसमाचार में, प्रेरित यूहन्ना "अनंत जीवन" शब्द का बहुत बार और गहराई से उपयोग करते हैं; इसका वास्तविक अर्थ दो शानदार आयामों के मिलन को समाहित करता है:

समय का आयाम: अनंत जीवन का अर्थ है "ऐसा जीवन जो अनंत है"—जो समय के बीतने से परे है और बिना किसी रुकावट या अंत के बना रहता है।

गुणवत्ता का आयाम: अनंत जीवन का अर्थ है अपनी आत्मा में—अभी और यहीं—एक शानदार "दिव्य जीवन" का अनुभव करना जो केवल परमेश्वर से आता है; यह जीवन पृथ्वी पर पापपूर्ण मनुष्यों द्वारा अनुभव किए जाने वाले सीमित जीवन से पूरी तरह अलग है। इसलिए, सुसमाचार द्वारा घोषित अनंत जीवन का अर्थ केवल समय में हमेशा चलने वाला अंतहीन अस्तित्व नहीं है। यह एक ऐसा शब्द है जिसमें स्वाभाविक रूप से पूर्ण परमेश्वर के भीतर पाए जाने वाले दिव्य स्वभाव के भरपूर आशीर्वाद शामिल हैं। यूहन्ना के सुसमाचार में मिली जानकारी के माध्यम से, हम एक अद्भुत आध्यात्मिक स्थिति का अनुभव करते हैं। हालाँकि अनंत जीवन का अर्थ निश्चित रूप से भविष्य का एक आशीर्वाद है जो आने वाले जीवन में पूरी तरह से प्राप्त होगा—एक ऐसा पहलू जिस पर सिनॉप्टिक सुसमाचारों (मत्ती, मरकुस और लूका) ने जोर दिया है—यूहन्ना का सुसमाचार इसे वर्तमान आशीर्वाद के रूप में और भी अधिक मजबूती और उत्साह के साथ प्रस्तुत करता है: एक ऐसा आशीर्वाद जिसे विश्वास करने वाले—जो 'सच्ची ज्योति' को अपने भीतर रखते हैं—इसी दुनिया में उम्मीद के साथ अनुभव करते हैं और उसका आनंद लेते हैं। सच्चे विश्वास करने वाले, जो पवित्र आत्मा को अपने भीतर रखते हैं, वे केवल दूर भविष्य में मुक्ति का इंतजार नहीं कर रहे हैं; वे शानदार सेवक हैं जो आज जीते हुए ही अपने भीतर स्वर्ग के राज्य के जीवन को पूरी तरह से अपनाए हुए हैं।

बाइबल घोषणा करती है कि जो लोग परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, उन्होंने *पहले ही* अनंत जीवन प्राप्त कर लिया है और वे उसके अधिकारी हैं (1 यूहन्ना 5:12)। हमें यह अपार कृपा इसलिए मिली है क्योंकि हमने यीशु मसीह—जो स्वयं अनंत जीवन हैं—पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास किया है और उन्हें पूरी तरह से अपने दिलों में अपनाया है (1 यूहन्ना 1:2; 5:20)। इस प्रकार मसीह को अपनाकर और अनंत जीवन पाकर, स्वर्ग के नागरिकों के रूप में हमें एक महान आज्ञा दी गई है: प्रभु द्वारा स्वयं दी गई नई आज्ञा के अनुसार एक-दूसरे से प्रेम करना—विशेष रूप से, एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम करना जैसे यीशु ने क्रूस के प्रेम के द्वारा हमसे प्रेम किया (यूहन्ना 15:12; 1 यूहन्ना 3:23)। स्वयं के समान एक-दूसरे से प्रेम करने का जीवन, जो जीवन देने वाले प्रभु की आज्ञा का पालन है, वही परमेश्वर को सबसे अधिक प्रसन्न करता है (1 यूहन्ना 3:22)। 1

यूहन्ना 3:24 आज्ञाकारिता के इस कदम से उत्पन्न आध्यात्मिक रहस्य की गवाही देता है: "जो उनकी आज्ञाओं का पालन करता है, वह उनमें बना रहता है, और वे उसमें। हम इससे जानते हैं कि वे हममें बने रहते हैं—उस आत्मा के द्वारा जो उन्होंने हमें दी है।" जब हम एक-दूसरे से सच्चे मन से प्रेम करने की यीशु मसीह की आज्ञा का पालन करते हैं, तो हम—पवित्र आत्मा के द्वारा जिसे परमेश्वर ने हम पर उंडेला है—उद्धार के उस शानदार आश्वासन को जान पाते हैं: कि मैं प्रभु में गहराई से बना हुआ हूँ, और वे मुझमें बने हुए हैं, पूरी तरह से मुझसे जुड़े हुए हैं। इसके अलावा, प्रभु ने वादा किया कि जब हम इस रहस्यमय मिलन को प्राप्त कर लेंगे—उनमें बने रहना जबकि वे हममें बने रहते हैं—तो हमारे जीवन में भरपूर फल लगेंगे: "मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो; जो मुझमें बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है" (यूहन्ना 15:5)।

तो फिर, उस "फल" का विशेष स्वरूप क्या है जिसके बारे में प्रभु यहाँ बात करते हैं? जब अनंत जीवन पाने वाले लोग प्रभु के प्रेम का अनुकरण करते हैं और एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो हमारे जीवन में किस प्रकार का फल दिखाई देता है? मैंने इस फल के सार पर दो पहलुओं—एक "दोहरे फल"—के रूप में विचार किया है। यह एक ही समय में यीशु के साथ हमारी बढ़ती समानता और पवित्र आत्मा के सुंदर फल को धारण करना है। जब प्रभु के चेले—जिन्हें यीशु मसीह पर विश्वास के ज़रिए पहले ही अनंत जीवन मिल चुका है—प्रभु की "दोहरी आज्ञा" का पालन करते हैं (यानी अपने पूरे दिल, आत्मा और मन से प्रभु परमेश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से खुद की तरह प्रेम करना; मत्ती 22:37, 39), तो हमारे जीवन में यह शानदार दोहरा फल भरपूर मात्रा में आने लगता है। इसका मतलब है—जैसा कि 2 पतरस 1:4 में बताया गया है—पवित्र "ईश्वरीय स्वभाव" में भागीदार बनना। पवित्र आत्मा के पवित्र करने के बारीकी भरे काम से, हमारा पुराना स्वभाव टूट जाता है, और हम धीरे-धीरे यीशु मसीह के बेदाग चरित्र जैसे बनने लगते हैं। इसके अलावा, पवित्र आत्मा का ज़रूरी फल—यानी "प्रेम, आनंद, शांति, धीरज, दया, भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता और संयम" जैसे भरपूर स्वर्गीय गुण (गलातियों 5:22–23)—हमारे अंदर से उमड़ने लगते हैं। यीशु ने इस फल देने वाले जीवन के शानदार नतीजे की पुष्टि यूहन्ना 15:8 में की है: "मेरे पिता की महिमा इसी में है कि तुम बहुत फल लाओ और खुद को मेरे चेले साबित करो" (NIV)। जब हम पवित्र आत्मा में यीशु जैसे बनते हैं और प्रेम का भरपूर फल लाते हैं, तो हमारे स्वर्गीय पिता को अकथनीय

महिमा मिलती है। साथ ही, प्रेम के ये काम पूरी दुनिया के लिए इस बात का पक्का सबूत हैं कि हम यीशु मसीह के सच्चे चेले हैं और दुनिया से अलग हैं।

तो फिर, पृथ्वी पर प्रभु के सच्चे चेलों—जिन्हें यीशु मसीह पर विश्वास के ज़रिए पहले ही अनंत जीवन मिल चुका है—को मिलने वाला सबसे बड़ा आशीर्वाद क्या है? यह "आने वाले युग का आशीर्वाद" है, जिसका अनुभव पवित्र आत्मा में अनंत परमेश्वर पिता और यीशु मसीह—जो खुद अनंत जीवन हैं—के साथ गहरे, व्यक्तिगत संगति के ज़रिए होता है (यूहन्ना 17:3; 1 यूहन्ना 1:3)। इस अनुभव का एक मुख्य रहस्य परमेश्वर के पवित्र, ईश्वरीय स्वभाव में भागीदार बनना है (2 पतरस 1:4)। दूसरे शब्दों में, अनंत जीवन की सच्चाई—जिसका अनुभव हम पृथ्वी पर यीशु मसीह में रहते हुए कुछ हद तक करते हैं—पवित्र आत्मा के पवित्र करने के बारीकी भरे काम के ज़रिए व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह के स्वरूप में ढलने की अद्‌भुत प्रक्रिया से कम नहीं है। इस पवित्र यात्रा के दौरान, आने वाले युग का सबसे बड़ा आशीर्वाद जिसका अनुभव हम आज थोड़ा-बहुत करते हैं, वह है परमेश्वर का प्रेम।

परमेश्वर पिता के अपार प्रेम के कारण हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं; उनका मूल स्वभाव ही प्रेम है (1 यूहन्ना 3:1–2; 4:8, 16)। परमेश्वर पिता ने सबसे पहले हमसे बिना शर्त प्रेम किया (4:19)। हमारे भयानक पापों का प्रायश्चित करने के लिए, उन्होंने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को इस धरती पर प्रायश्चित के बलिदान के रूप में भेजा (पद 10); क्रूस पर बदले में दिए गए बलिदान के द्वारा, उन्होंने हमें—जो कभी मर रहे थे—नया जीवन दिया और हमें अपनी संतान होने का गौरवशाली दर्जा दिया (3:1–2; 4:9)। इसके अलावा, यीशु मसीह के प्रेम के द्वारा—जिन्होंने हमारे लिए बिना किसी हिचकिचाहट के अपना जीवन दिया और हमारे पापों के लिए क्रूस पर पूर्ण प्रायश्चित का बलिदान बने—हम पाप की बेड़ियों से पूरी तरह आज़ाद हो गए हैं (2:2; 3:5, 16)। साथ ही, धर्मी यीशु मसीह इस समय परमेश्वर की आत्मिक अदालत में हमारे पूर्ण वकील के रूप में काम कर रहे हैं। जब हम कमज़ोर होते हैं और पाप कर बैठते हैं, तब भी वे परमेश्वर पिता—जो न्यायकर्ता हैं—के सामने हमारा बचाव करते हैं और हमें थामे रखते हैं ताकि हमें कोई दंड न मिले (2:1)। अंत में, पवित्र आत्मा ने हमें—जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे—सुसमाचार के द्वारा नया जन्म दिया है, और इस तरह "परमेश्वर से जन्मे" लोगों की पवित्र पहचान के साथ हमारी आत्माओं को जीवित किया है (3:9; 5:1, 4)। इसके अलावा, वे

हमें उस अनंत जीवन का आनंद लेने में सक्षम बना रहे हैं जो उन्होंने हमें उपहार के रूप में दिया है (5:11)—न केवल भविष्य में, बल्कि यहीं और अभी हमारे सांसारिक जीवन में भी।

पवित्र आत्मा के ज़रिए हम पर भरपूर रूप से बरसाए गए परमेश्वर के असीम प्रेम (रोमियों 5:5) से प्रेरित होकर, आत्मा हमारे भीतर आत्मा के सुंदर फलों को बढ़ाती है (गलातियों 5:22)। इस तरह, वह हमें प्रभु की महान आज्ञा का खुशी-खुशी पालन करने के लिए प्रेरित करती है—कि "अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी आत्मा और अपने पूरे मन से प्रेम करो" और "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो" (मत्ती 22:37, 39)। जब हम आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करते हैं और प्रेम की इस धार्मिकता का अभ्यास करते हैं (1 यूहन्ना 2:29, 3:10), तो हम इस कठोर दुनिया के बीच भी परमेश्वर के राज्य के जीवन की एक झलक का अनुभव करने लगते हैं। केवल खाने-पीने की सांसारिक दुनिया से ऊपर उठकर, हम अपने दैनिक जीवन में उस स्वर्गीय आनंद की पूर्णता का अनुभव करते हैं जो पवित्र आत्मा में बहता है (1 यूहन्ना 1:4) और उस अद्भुत शांति का भी, जिसे प्रभु ने अपने पुनरुत्थान की सुबह हम पर फूँका और बरसाया था (यूहन्ना 20:19; कुलुस्सियों 3:15) (रोमियों 14:17)। यह वह सर्वोच्च विशेषाधिकार और आशा है जिसका आनंद परमेश्वर की संतानें "पहले से ही" और "अभी नहीं" के बीच के तनाव में लेती हैं।

पवित्र त्रिएक परमेश्वर से ऐसा भरपूर और बिना योग्यता के प्रेम पाकर, यह उचित है—जैसा कि प्रेरित यूहन्ना ने घोषित किया था—कि "हमें भी एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए" (1 यूहन्ना 4:11)। "प्रेम परमेश्वर की ओर से है, और जो कोई प्रेम करता है वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है। जो कोई प्रेम नहीं करता वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है" (1 यूहन्ना 4:7–8)। यदि हम सचमुच यह स्वीकार करते हैं कि "मैं परमेश्वर को गहराई से जानता हूँ" या "मैं परमेश्वर से बहुत प्रेम करता हूँ," तो हमारे जीवन में एक-दूसरे से प्रेम करने का अभ्यास अनिवार्य रूप से होना चाहिए। यदि हम पिता परमेश्वर—जो अनंत हैं—और यीशु मसीह—जो स्वयं अनंत जीवन हैं—के साथ गहरी संगति—प्रेम का एक ऊर्ध्वाधर संबंध (1 यूहन्ना 1:3)—साझा कर रहे हैं, तो वह स्वर्गीय प्रेम अनिवार्य रूप से हमारे भीतर से बाहर की ओर बहेगा। परमेश्वर के अलौकिक प्रेम—जो पवित्र आत्मा का पहला फल है (गलातियों 5:22)—से प्रेरित होकर, हम अपने उन भाई-बहनों से वैसा ही प्रेम करते हैं जो प्रभु के लहू से एक हुए हैं, जैसा हम खुद से करते हैं (प्रेम का आपसी मेल-मिलाप; 1 यूहन्ना 4:11)।

जब हम सचमुच अपने साथ विश्वास करने वालों से इस तरह प्रेम करते हैं, तो हम अपने जीवन से यह साबित करते हैं कि हम मौत के अंधेरे से निकल आए हैं और परमेश्वर के लोग बन गए हैं जिनके पास पहले से ही अनंत जीवन है (1 यूहन्ना 3:14)। दूसरे शब्दों में, यह जानने का सबसे पक्का तरीका कि हमारे पास अनंत जीवन है या नहीं, यह देखना है कि हम अभी अपने भाई-बहनों से कैसा प्रेम कर रहे हैं। अगर हम सचमुच परमेश्वर की संतान हैं और हमारे पास अनंत जीवन है, तो हमें अपने भाइयों से उसी स्तर का प्रेम करना चाहिए जैसा प्रभु ने क्रूस पर दिखाया था। 1 यूहन्ना 3:16 इस प्रेम की सबसे ऊँची मिसाल इस तरह बताता है: "हमने जाना है कि प्रेम क्या है क्योंकि यीशु ने हमारे लिए अपनी जान दे दी। इसलिए, हमारे लिए भी यह सही है कि हम अपने भाइयों के लिए अपनी जान दें।" इसके अलावा, परमेश्वर की संतान होने के नाते, जब हम अपने भाइयों से प्रेम करते हैं, तो हम सिर्फ़ खोखली बातों या ज़ुबान से प्रेम नहीं करते; बल्कि, हम ठोस कामों और सच्चाई से अपना प्रेम साबित करते हैं (वचन 18)। जब हम इस तरह—कामों और सच्चाई से—प्रेम करते हैं, तो हमें एक अद्भुत आध्यात्मिक वरदान मिलता है। जैसा कि बाइबल का *कंटेंपररी कोरियन वर्शन* बताता है, हम खुद जान जाते हैं कि हम सच्चाई के हैं और पवित्र परमेश्वर के सामने भी शांत मन रख सकते हैं (वचन 19)। ऐसे प्रेमपूर्ण आज्ञापालन से, परमेश्वर का प्रेम हमारे अंदर सचमुच पूरा होता है (2:5), और हमारी आत्मा और अंतःकरण से सारी रुकावटें या बाधाएँ दूर हो जाती हैं (वचन 10)। जब हमारा अंतःकरण हमें अंदर से दोषी नहीं ठहराता, तो हम आखिरकार परमेश्वर पिता—जो हमारा न्याय करने वाला है—के पास निडर होकर और बिना किसी शर्म के जा सकते हैं। उस करीबी रिश्ते में, हम प्रार्थना करने वाले लोग बन जाते हैं और उस सच्चे परमेश्वर से जो कुछ भी माँगते हैं, वह हमें भरपूर मात्रा में मिलता है (3:21–22)। इसके उलट, अगर हम बड़े-बड़े दावे करते हैं कि "मैं परमेश्वर को गहराई से जानता हूँ" या "मैं परमेश्वर से प्यार करता हूँ" लेकिन अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अपने भाई-बहनों से प्यार नहीं करते, तो यह एक धोखा है—इस बात का सबूत कि हम परमेश्वर को नहीं जानते—और साफ़ तौर पर यह दिखाता है कि हम उससे प्यार नहीं करते। 1 यूहन्ना 3:17 (समकालीन कोरियाई संस्करण में) सीधे तौर पर इस पाखंडी व्यवहार पर सवाल उठाता है: "अगर आपके पास बहुत धन-दौलत है और आप किसी ज़रूरतमंद भाई को देखते हैं लेकिन उसकी मदद नहीं करते, तो आप कैसे दावा कर सकते हैं कि आप परमेश्वर से प्यार करते हैं?" जो कोई भी प्रभु के लहू से जुड़े भाई-बहनों से मुँह मोड़ लेता है और उनसे प्यार नहीं करता, वह परमेश्वर का नहीं है (पद 10)। ऐसा व्यक्ति अंधेरे की ताकत के चंगुल में फँसा रहता है और बाहर निकलने के लिए एक भी कदम नहीं उठा पाता; वे एक दयनीय स्थिति में रहते हैं, "मौत में बने रहते हैं" (पद 14)। दूसरे

शब्दों में, जो लोग यीशु पर विश्वास करने का दावा तो करते हैं लेकिन अपने भाइयों से प्यार नहीं करते, वे "पुराने स्वभाव" की दयनीय खाई से ज़रा भी बाहर नहीं निकल पाए हैं। इसका मतलब है एक नकली ज़िंदगी जीना—प्रभु से पूरी तरह कटे और अलग-थलग रहना, जो खुद प्रेम और अनंत जीवन हैं—और आखिरकार एक ऐसी दयनीय स्थिति में रहना जो किसी अविश्वासी से अलग नहीं है: आध्यात्मिक रूप से मृत और अनंत विनाश की ओर अग्रसर, जीवन की कृपा से अनजान। बाइबल यहाँ तक कहती है कि भाई के प्रति नफ़रत सिर्फ़ भावनाओं की कोई चूक नहीं है, बल्कि सबसे गंभीर किस्म की एक भयानक तबाही है। 1 यूहन्ना 3:15 में की गई गंभीर घोषणा पर गौर करें: "जो कोई अपने भाई से नफ़रत करता है, वह हत्यारा है। आप जानते हैं कि हत्यारे में अनंत जीवन नहीं होता।" बाइबल साफ़ तौर पर उसे "हत्यारा" कहती है जो अपने भाई से नफ़रत करता है और चेतावनी देती है कि उसमें परमेश्वर के अनंत जीवन का अंश भी नहीं होता। ठीक इसीलिए प्रेरित यूहन्ना, इस पत्र के आखिर में, कैन की दुखद घटना का ज़िक्र इतने मज़बूत और गंभीर लहजे में करते हैं: "कैन की तरह मत बनो। वह शैतान का था और उसने अपने भाई की हत्या कर दी। उसने अपने भाई की हत्या क्यों की? क्योंकि उसके अपने काम बुरे थे और उसके भाई के काम नेक थे" (पद 12)। भाई के प्रति जलन और नफ़रत रखना सिर्फ़ नैतिक चूक नहीं है; यह एक आध्यात्मिक हार है—केन की तरह—जिसमें इंसान अपने दिल का अधिकार पूरी तरह शैतान को सौंप देता है। हमें केन के बुरे रास्ते को सख्ती से ठुकराना चाहिए, जिसने झूठे विश्वास का दिखावा करते हुए अपने भाई को दोषी ठहराया था। इसके बजाय, हमें परमेश्वर की सच्ची संतानों के रूप में खड़ा होना चाहिए जो क्रूस के शासन में रहते हैं—जैसा कि प्रभु ने दिखाया है—और अपने भाइयों से काम और सच्चाई, दोनों से प्यार करते हैं।

अब मैं इस चिंतन को समाप्त करता हूँ। प्रेरित यूहन्ना ने प्यार का यह पत्र—1 यूहन्ना—जिस मुख्य मकसद से लिखा था, वह साफ़ है। जैसा कि अध्याय 2, पद 1 में कहा गया है, यह एक आज्ञा है: "मेरे प्यारे बच्चों, मैं तुम्हें यह इसलिए लिख रहा हूँ ताकि तुम पाप न करो।" आखिर वह कौन सा "पाप" है जिसकी प्रेरित यूहन्ना यहाँ निंदा करते हैं? यह है जीवन की रोशनी से मुँह मोड़कर "अंधेरे में चलना" (1:6); यह है सिर्फ़ होंठों से प्रभु को मानना और असल में "झूठ बोलना" (6, 2:4); और यह है केन जैसे "बुरे और अधर्मी" काम करना (3:12)। यूहन्ना इन सभी पापों का सार एक ही बात में बताते हैं: "अपने सामने मौजूद भाई से नफ़रत करना" (2:9)। बाइबल एक कड़ी चेतावनी देती है: "जो कोई अपने भाई से नफ़रत करता है, वह अभी भी अंधेरे में है और अंधेरे में ही जी

रहा है" (11)। इसके अलावा, 1 यूहन्ना 1:6 दिखावटी विश्वास का नक़ाब पूरी तरह उतार देता है: "अगर हम दावा करते हैं कि परमेश्वर के साथ हमारी संगति है, फिर भी पाप का अंधेरा जीवन जीते हैं, तो हम बस झूठे हैं जो सच्चाई के अनुसार नहीं जीते।" दूसरे शब्दों में, अगर हम सिर्फ़ शब्दों और बातों से प्यार का ज़ोर-शोर से दावा करते हैं (3:18) जबकि अपने दिल की गहराई में अपने भाइयों और बहनों के लिए जलन और नफ़रत रखते हैं, तो हम परमेश्वर के सामने अधर्म कर रहे हैं और केन के बुरे रास्ते पर चल रहे हैं। बाइबल ज़ोर देकर कहती है कि ऐसी नफ़रत "हत्या" के बराबर है और ऐसे दिल में परमेश्वर के अनंत जीवन का एक सेंटीमीटर भी नहीं बसता (15)। फिर भी, मौत की इस गंभीर चेतावनी के परे, जीवन का एक शानदार वादा हमारा इंतज़ार कर रहा है: "हम जानते हैं कि हम मौत से जीवन में आ गए हैं क्योंकि हम भाइयों से प्यार करते हैं। जो प्यार नहीं करता, वह मौत में ही रहता है" (पद 14)। यह पक्का करने का एकमात्र तरीका कि हम अंधेरे की मौत से बचकर परमेश्वर की संतान बन गए हैं और हमें अनंत जीवन मिल गया है, यह देखना है कि हम प्रभु में अपने साथी सदस्यों से परमेश्वर के प्यार के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। अगर हम त्रिएक परमेश्वर के अपार प्यार से बचाए गए हैं और हमारे पास सच्चा अनंत जीवन है—और अगर हम पवित्र आत्मा के ज़रिए अनंत पिता परमेश्वर और यीशु मसीह (जो खुद अनंत जीवन हैं) के साथ गहरा रिश्ता रखते हैं (प्यार का ऊर्ध्वाधर रिश्ता; 1 यूहन्ना 1:3)—तो वह स्वर्गीय प्यार ज़रूर प्रभु में जुड़े भाइयों और बहनों के साथ सच्चे रिश्ते (प्यार का क्षैतिज रिश्ता) में बदल जाएगा। जिस विश्वासी के पास अनंत जीवन है, वह अब सिर्फ़ अपनी निजी भावनाओं के आधार पर प्यार करने वाला व्यक्ति नहीं रहता। त्रिएक परमेश्वर के अनंत प्यार का ज़रिया बनने के बाद, हम पवित्र लोग बन जाते हैं जो परमेश्वर के प्यार से अपने साथी सदस्यों से प्यार करने के लिए प्रेरित होते हैं। अगर हमें सच में परमेश्वर की कृपा से यीशु मसीह पर विश्वास करने के ज़रिए अनंत जीवन मिला है, तो हमारे जीवन में एक पवित्र बदलाव आता है; हम पवित्र आत्मा के पवित्र करने वाले काम के ज़रिए यीशु जैसे बनने लगते हैं। हम प्रभु द्वारा दी गई दोहरी आज्ञा (मत्ती 22:37, 39) का पालन करते हुए आराधना का जीवन जीने लगते हैं—अपने पूरे दिल, आत्मा और मन से प्रभु परमेश्वर से प्यार करना और अपने पड़ोसी से खुद की तरह प्यार करना। जब हम ऐसा करते हैं, तो वह महान "दोहरा फल"—पवित्र आत्मा के सुंदर फल: "प्यार, खुशी, शांति, धीरज, दया, भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता और संयम" (गलातियों 5:22–23)—हमारे अंदर भरपूर मात्रा में पैदा होते हैं। जैसा कि प्रभु ने कहा, "तुम उन्हें उनके फलों से पहचानोगे" (मत्ती 7:16), हम दुनिया के सामने निडर होकर यह दिखाएंगे—पवित्र आत्मा

में पैदा हुए प्यार के इस दोहरे फल के ज़रिए—कि हम सच में परमेश्वर की संतान हैं जिनके पास अनंत जीवन है।

हमें समझदारी से काम लेना चाहिए।

[1 यूहन्ना 4:1–6]

"प्यारे लोगों, हर आत्मा पर विश्वास न करो, बल्कि आत्माओं को परखो कि क्या वे परमेश्वर की ओर से हैं, क्योंकि दुनिया में बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता निकल आए हैं। परमेश्वर की आत्मा को तुम इस तरह पहचानते हो: जो भी आत्मा यह मानती है कि यीशु मसीह शरीर में आए हैं, वह परमेश्वर की ओर से है, और जो आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। यह मसीह-विरोधी की आत्मा है, जिसके बारे में तुमने सुना था कि वह आने वाली है और अब वह दुनिया में आ चुकी है। प्यारे बच्चों, तुम परमेश्वर की ओर से हो और तुमने उन पर जीत हासिल की है, क्योंकि जो तुममें है, वह उससे कहीं ज़्यादा महान है जो दुनिया में है। वे दुनिया के हैं; इसलिए वे दुनिया की बातें करते हैं, और दुनिया उनकी सुनती है। हम परमेश्वर की ओर से हैं। जो परमेश्वर को जानता है, वह हमारी सुनता है; जो परमेश्वर की ओर से नहीं है, वह हमारी नहीं सुनता। इसी से हम सच्चाई की आत्मा और गलतफहमी की आत्मा को पहचानते हैं।"

प्यारे लोगों, बाइबल की इस सलाह का असली मतलब क्या है कि "सांपों की तरह समझदार" बनो? मत्ती 10:16 में, यीशु ने अपने चेलों को भेजते समय गंभीरता से कहा: "देखो, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच भेड़ों की तरह भेज रहा हूँ, इसलिए सांपों की तरह समझदार और कबूतरों की तरह मासूम बनो।" बाइबल के संदर्भ में, सांप गहरी समझदारी का प्रतीक है। प्रभु ने हमें सांप की समझदारी अपनाने के लिए इसलिए कहा क्योंकि सांप अपने पास आने वाले खतरों और बाधाओं को बहुत सावधानी से भांप लेता है और चतुराई से उनसे बच निकलता है। दूसरे

शब्दों में, सांप की समझदारी का मतलब है “समझदारी भरी परख” जो किसी स्थिति को गहराई से समझती है। यह सभी मामलों और आध्यात्मिक सच्चाइयों को सही ढंग से परखने की समझ है।

इस कठोर दुनिया में सांपों की तरह समझदार होने का एक ठोस कारण है। हालाँकि प्रभु ने हमें इस धरती पर मिशनरी के तौर पर भेजा है, लेकिन जिस दुनिया में हम रहते हैं, वह “झूठे भविष्यद्वक्ताओं” से भरी हुई है—ऐसे खतरनाक भेड़िये जो बाहर से तो शांत भेड़ों का रूप धरते हैं, लेकिन असल में आत्माओं का शिकार करते हैं (मत्ती 7:15, 10:16)। यीशु ने अपने चेलों को “झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहने” की चेतावनी दी थी। यह प्रभु की ओर से एक ज़रूरी बुलावा था कि हम उनकी शिक्षाओं के प्रति पूरी तरह ध्यान दें, सतर्क रहें और सावधान रहें। ऐसा करते हुए, उन्होंने "भेड़" और "भेड़िये" (7:15) के बीच के बड़े अंतर का इस्तेमाल किया। झूठे नबी हमेशा "भेड़ का भेष" धरकर हमारे पास आते हैं। वे बिल्कुल भेड़ जैसा रूप बना लेते हैं और असली भेड़ की तरह ही व्यवहार करते हैं। नतीजतन, उनके बाहरी रूप को देखकर ही वे इतने भले लगते हैं कि हम आसानी से धोखा खा जाते हैं और सोचते हैं कि उनसे कोई खतरा नहीं है। फिर भी, झूठे नबियों से बहुत सावधान रहने का असली कारण यह है कि उनके प्रभावशाली बाहरी रूप के नीचे, उनका असली स्वभाव "भूखे भेड़िये" जैसा होता है। "भूखे" (या "लूटने वाले") के लिए इस्तेमाल किए गए ग्रीक शब्द का अर्थ अत्यधिक लालच की भयानक स्थिति को दर्शाता है, जो किसी लुटेरे या धोखेबाज़ के लालच जैसा होता है। वे आध्यात्मिक धोखेबाज़ होते हैं—लालच की मूरत, जो संतों की आत्माओं को लूट लेते हैं। ठीक इसीलिए, जब हम अंतिम समय से गुज़र रहे हैं, तो हमें कभी भी आध्यात्मिक रूप से सुस्त नहीं पड़ना चाहिए, बल्कि सांपों की तरह समझदार और कबूतरों की तरह मासूम (10:16) बनना चाहिए।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 4:1 में, प्रेरित यूहन्ना समुदाय को ज़ोरदार और पक्के शब्दों में समझाते हैं: "प्यारों, हर आत्मा पर विश्वास न करो, बल्कि आत्माओं को परखो कि क्या वे परमेश्वर की ओर से हैं, क्योंकि दुनिया में बहुत से झूठे नबी निकल आए हैं" (NKJV)। "प्यारे दोस्तों, जो लोग आत्मा पाने का दावा करते हैं, उन पर आँख बंद करके विश्वास न करो; इसके बजाय, परखो कि जिस आत्मा का वे दावा करते हैं, क्या वह परमेश्वर की ओर से है। दुनिया में बहुत से झूठे नबी आ गए हैं" (Contemporary Korean Version)। परमेश्वर की संतानों—जिन्हें उनका महान प्रेम मिला है—को संबोधित करते हुए, प्रेरित यूहन्ना आँख बंद करके विश्वास करने के खतरों के

बारे में चेतावनी देते हैं और हमें अपनी आध्यात्मिक आँखें खुली रखने और सही-गलत की पहचान करने के लिए प्रेरित करते हैं। आज, इस पवित्र वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं आध्यात्मिक पहचान के उन चार पैमानों और सीखों की गहराई से जाँच करना चाहता हूँ जिन्हें हमें धोखे के इस दौर में मज़बूती से थामे रखना चाहिए।

पहला, बाइबल हमें—जो धोखे के दौर में जी रहे हैं—आत्माओं पर आँख बंद करके विश्वास न करने, बल्कि उन्हें "परखने" का आदेश देती है।

इस वचन में प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताए गए "परखने" (या "पहचानने") के आदेश के पीछे जो ग्रीक शब्द है, वह है *dokimazō*, जिसका अर्थ है "परखना" या "साबित करना"। यह शब्द धातु-विज्ञान (metallurgy) से आया है, जिसका मतलब है प्राचीन समय में अयस्क या धातुओं की शुद्धता और मूल्य का पता लगाने के लिए की जाने वाली कड़ी जाँच और विश्लेषण। अशुद्धियों से मुक्त असली, शुद्ध सोने की पहचान और उसे तैयार कैसे किया जाता है? एक बड़ी भट्टी में होने वाली प्रक्रिया को देखकर हमें एक गहरा आध्यात्मिक सिद्धांत समझ आता है। जब अयस्क आता है, तो सबसे पहले उसे हज़ारों डिग्री तापमान वाली भट्टी में पिघलाया जाता है। बिना किसी दाग-धब्बे वाला शुद्ध सोना पाने के लिए, उसे शुद्ध करने की एक कड़ी प्रक्रिया से गुज़रना पड़ता है। सोना शुद्ध करने वाले विशेषज्ञ कहते हैं: "अगर पिघलाने की प्रक्रिया के दौरान धूल के कण जितनी भी अशुद्धि मिल जाए, तो शुद्ध सोना बनाना नामुमकिन है। सोना शुद्ध करते समय, सफ़ाई की प्रक्रिया तब तक नहीं रोकनी चाहिए जब तक कि पिघले हुए सोने की सतह पर अपना चेहरा आईने की तरह साफ़ न दिखने लगे।"

शुद्ध करने की यह प्रक्रिया हमें उस आध्यात्मिक भट्टी की याद दिलाती है जिसमें परमेश्वर हमें ढालते हैं। जैसे भट्टी की तेज़ गर्मी अशुद्धियों को जलाकर शुद्ध सोना छोड़ देती है, वैसे ही जीवन के मुश्किल दौर में आने वाली तकलीफ़ों की आग हमारे अंदर के पाप की जिद्दी गंदगी को खत्म कर देती है और हमें पवित्र इंसान बनाती है। जहाँ दुनिया की भट्टी भौतिक सोना बनाती है, वहीं प्रभु की आध्यात्मिक भट्टी आस्था रखने वाले लोगों को "शुद्ध सोना" बनाती है—जो पूरी तरह अशुद्धियों से मुक्त होता है। अय्यूब का बयान—जिसने अनगिनत परीक्षाओं और मुश्किलों की भट्टी में भी आखिर तक परमेश्वर पर भरोसा बनाए रखा—जब भी कोई उस पर मनन करता है तो दिल को गहराई से छू लेता है: "परन्तु वह मेरी चाल को जानता है; जब वह मुझे परख लेगा, तो मैं सोने के समान निकलूँगा" (अय्यूब 23:10)। नीतिवचन 17:3 भी शुद्ध करने के इस महान रहस्य की गवाही देता है: "चाँदी

के लिए मूषा (crucible) और सोने के लिए भट्टी है, लेकिन प्रभु दिलों को परखते हैं।" बाइबल हमें आत्माओं को परखने का निर्देश देती है क्योंकि, जैसे एक लोहार अशुद्धियों वाले नकली सोने को पहचानने के लिए कसौटी (touchstone) का इस्तेमाल करता है, वैसे ही हमें भी धर्मगुरुओं की शिक्षाओं और आत्माओं की असलियत को परमेश्वर के वचन की कसौटी पर कसकर परखना चाहिए। हमें ऐसी अंधी और बिना सोचे-समझे की गई आस्था नहीं रखनी चाहिए जो बिना सवाल किए सब कुछ मान ले; बल्कि, आध्यात्मिक शुद्धता को मापने के लिए हमारे पास परखने के स्पष्ट मानक होने चाहिए। परमेश्वर हमेशा हमारे बाहरी रूप-रंग से परे जाकर हमारे दिलों की गहराई को परखते हैं (1 शमूएल 16:7)। उनकी दिली इच्छा है कि हमारे दिल सच्ची ईमानदारी और सच्चाई से भरे हों (भजन संहिता 51:6)। ठीक इसीलिए वे हमारे दिलों को कड़ी परख से गुज़ारते हैं, जैसे भट्टी में आग से धातु को शुद्ध किया जाता है (नीतिवचन 17:3)। परीक्षाओं के ज़रिए, प्रभु हमें चांदी की तरह शुद्ध करना चाहते हैं और अपने सामने सच्चे उपासक के तौर पर स्थापित करना चाहते हैं (मलाकी 3:3)। तो फिर, परमेश्वर खास तौर पर हमारे दिलों को कैसे शुद्ध करते हैं? यशायाह 48:10 उनके शुद्ध करने के तरीके को साफ-साफ बताता है: "देखो, मैंने तुम्हें शुद्ध किया है, पर चांदी की तरह नहीं; मैंने तुम्हें दुख की भट्टी में परखा है।" परमेश्वर हमें दुख की भट्टी में परखते और शुद्ध करते हैं। इसलिए, 1 पतरस 4:12–13 में, प्रेरित पतरस विश्वासियों को रोते हुए समझाते हैं कि आग जैसी परीक्षाओं का सामना करते समय कैसा सही आध्यात्मिक नज़रिया रखना चाहिए: "प्यारों, उस आग जैसी परीक्षा से हैरान मत हो जो तुम्हें परखने के लिए आ रही है, मानो तुम्हारे साथ कोई अजीब बात हो रही हो; बल्कि मसीह के दुखों में शामिल होने पर खुशी मनाओ, ताकि जब उनकी महिमा प्रकट हो, तो तुम भी बहुत ज़्यादा खुशी मना सको" (NKJV)। "प्यारे दोस्तों, जब तुम परखने वाली आग जैसी परीक्षाओं का सामना करो, तो हैरान मत हो जैसे कि कोई अजीब बात हो रही हो। खुशी मनाओ, क्योंकि इन परीक्षाओं के ज़रिए तुम मसीह के दुखों में हिस्सा ले रहे हो; फिर, जब मसीह महिमा में प्रकट होंगे, तो तुम भी उनके साथ खुशी मनाओगे" (Contemporary Korean Version)। जैसे कोई लोहार धातु की शुद्धता परखने के लिए अयस्क को आग में डालता है, वैसे ही विश्वासियों पर आने वाली आग जैसी परीक्षाओं का मकसद हमारी आत्माओं को नष्ट करना नहीं, बल्कि हमारे विश्वास की शुद्धता को साबित करना होता है। इसलिए, परीक्षाओं का सामना करते समय हमें डरने या घबराने की ज़रूरत नहीं है। इसके बजाय, हमें पवित्र होने की प्रक्रिया में खुशी ढूंढनी चाहिए—जहाँ हमारे अंदर की अशुद्धियाँ जलकर खत्म हो जाती हैं और हम धीरे-धीरे यीशु मसीह जैसे बन जाते हैं। सिर्फ़ वे ही, जिनका विश्वास इस तरह पूरी तरह शुद्ध हो चुका है, अपने पास आने वाली धोखे की आत्माओं को मज़बूती से पहचान पाएँगे और आखिरी दिन प्रभु की महिमा के सामने खुशी-खुशी खड़े हो

पाएँगे। आज के वचन—1 यूहन्ना 4:1—में प्रेरित यूहन्ना ने "परखने" (या "पहचानने") की बात कही है। इस शब्द का अर्थ केवल बाहरी दिखावे को देखना नहीं है, बल्कि इसका मतलब है आंतरिक सच्चाई की गहरी "परख" या सूक्ष्म "जांच-पड़ताल" करना, ठीक वैसे ही जैसे माइक्रोस्कोप से देखा जाता है। हमें इस शब्द में छिपे आत्मिक पहचान के व्यावहारिक तरीकों को समझना चाहिए और उन्हें चार खास सीखों में बांटना चाहिए।

(1) हमें हर दिन गहराई से यह पहचानना चाहिए कि हमारे लिए "परमेश्वर की इच्छा" क्या है।

रोमियों 12:2 में, प्रेरित पौलुस उस जीवन-शैली के बारे में बताते हैं जिसे स्वर्ग के राज्य के नागरिकों को जीने की कोशिश करनी चाहिए: "इस संसार के तौर-तरीकों को न अपनाओ, बल्कि अपनी सोच को बदलकर नया बनाओ। तब तुम परख सकोगे और जान सकोगे कि परमेश्वर की इच्छा क्या है—उसकी भली, मनभावन और सिद्ध इच्छा।" आखिर क्या वजह है कि हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में परमेश्वर की भली, मनभावन और सिद्ध इच्छा को साफ-साफ नहीं पहचान पाते? ऐसा इसलिए है क्योंकि हम बिना सोचे-समझे इस भ्रष्ट युग के चलन की नकल करते हैं और उसके प्रभाव में आ जाते हैं। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि हमारी आँखें सांसारिक मूल्यों से अंधी हो गई हैं, जो हमें अपनी सोच को नया बनाने से रोकती हैं और हमें आत्मिक बदलाव को ठुकराने की ओर ले जाती हैं।

तो, हम अपने लिए परमेश्वर की स्पष्ट इच्छा को कैसे जान सकते हैं? सबसे बुनियादी तरीका है परमेश्वर के कभी न बदलने वाले वचन—बाइबल—को दिन-रात ध्यान से पढ़ना और उस पर मनन करना। हमें बाइबल के महान सिद्धांतों, शिक्षाओं, भरोसेमंद वादों और आध्यात्मिक सीखों को अपनी आत्मा के लिए एक 'एंडोस्कोप' (आंतरिक जाँच के साधन) की तरह इस्तेमाल करना चाहिए। इसके अलावा, जब भी हम कोई महत्वपूर्ण निर्णय लें, तो हमें अपनी इच्छाओं के पीछे नहीं चलना चाहिए; बल्कि, हमें विनम्रता से यह जाँच करनी चाहिए कि क्या हमारे चुनाव परमेश्वर की पवित्र इच्छा और बाइबल के सिद्धांतों के खिलाफ तो नहीं हैं।

जो विश्वासी लगातार दिन-रात परमेश्वर के वचन को पढ़ते और उस पर मनन करते हैं, उनमें परमेश्वर की इच्छा को समझने की आध्यात्मिक समझ उन लोगों की तुलना में कहीं अधिक होती है जो दुनिया के तौर-तरीकों से जीते हैं; और वे निश्चित रूप से बिना किसी मकसद के भटकने में कम समय बिताते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि

परमेश्वर का वचन हमारे पैरों के लिए एक दीपक और हमारे रास्ते के लिए रोशनी है। तो फिर, वचन पर मनन करने के अलावा, वे कौन से ठोस तरीके हैं जिन्हें अपनाकर हम जीवन के हर पल में प्रभु की इच्छा को और स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं? आइए, बाइबल पर आधारित इन तरीकों के ज़रिए अनुग्रह के इन कदमों को एक साथ जानें।

(a) सबसे पहले, हमें पूरी तरह से परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

कोई भी निर्णय लेने से पहले, हमें खुद से ईमानदारी से सवाल पूछने चाहिए: "इस काम को करने की मेरी इच्छा के पीछे छिपे मकसद और इरादे क्या हैं?" हमें लगातार यह सवाल करना चाहिए कि क्या इस काम की दिशा पूरी तरह से परमेश्वर के पवित्र राज्य और उसकी महिमा के अनुरूप है, और इस तरह अपने दिलों को सही दिशा में लाना चाहिए।

(b) हमें सबसे पहले उन आज्ञाओं का पालन करना चाहिए जो परमेश्वर पहले ही दे चुका है।

हम अक्सर परमेश्वर की इच्छा के किसी बड़े, नए खुलासे की तलाश में भटकते रहते हैं। हालाँकि, सही समझ की शुरुआत खुद को उन आज्ञाओं के अधीन करने से होती है जो उसने हमें पहले ही दे दी हैं। असल में, बाइबल के ज़रिए हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा काफी हद तक स्पष्ट रूप से बताई जा चुकी है। फिर भी, हमें ईमानदारी से खुद की जाँच करनी चाहिए कि कहीं हम अपनी मर्ज़ी के कारण आज्ञा मानने से बच तो नहीं रहे हैं, और इसके बजाय कोई ऐसा दूसरा, छिपा हुआ रास्ता तो नहीं खोज रहे जो हमारी अपनी इच्छाओं को पूरा करे।

(c) हमें प्रार्थना में घुटने टेकने चाहिए और पवित्र आत्मा से मार्गदर्शन और समझ माँगनी चाहिए।

हमें परमेश्वर की सर्वोच्च सत्ता को मानते हुए प्रार्थना करनी चाहिए। ज़रूरी यह नहीं है कि हम ऐसी प्रार्थना करें जिसमें हम पहले से तय किए गए किसी खास जवाब की मांग करें, बल्कि ऐसी पवित्र प्रार्थना करें जो हमारे दिलों में प्रभु के आज़ादी से काम करने के लिए जगह बनाए—चाहे वह लिखित वचन के ज़रिए हो, साथी विश्वासियों के ज़रिए हो, या हमारे अंदर की धीमी, शांत आवाज़ के ज़रिए हो।

(d) हमें बाइबल को सिर्फ़ ऊपर-ऊपर से पढ़ने के बजाय, गहराई से अध्ययन करने के नज़रिए से पढ़ना चाहिए।

परमेश्वर अपनी सबसे भरोसेमंद इच्छा सिर्फ़ बाइबल के लिखित वचन के ज़रिए ही बताते हैं। इसलिए, परमेश्वर के दिल को जानने के लिए, हमें धर्मग्रंथों को लगातार और गहराई से पढ़ना चाहिए। हालाँकि, वचन को सिर्फ़ ऐसे खास शब्दों या आयतों को "ढूँढ़ने" के नज़रिए से देखना खतरनाक है जिन्हें हम अपने फ़ैसलों को सही ठहराने के लिए तोड़-मरोड़ सकें। हमें पवित्र न्याय और प्रेम के उन सिद्धांतों को खोजने की कोशिश करनी चाहिए जो पूरी बाइबल में समाए हुए हैं।

(e) हमें परिपक्व साथी विश्वासियों की सलाह और मशविरे को विनम्रता से स्वीकार करना चाहिए।

अपनी ही आँख का लट्ठा देखना मुश्किल होता है। कृपया उन परिपक्व विश्वासियों या आध्यात्मिक अगुवों की सलाह सुनें जो बाइबल की सच्चाई को गहराई से समझते हैं और सच में आपकी परवाह करते हैं और आपसे आध्यात्मिक प्रेम रखते हैं। परमेश्वर कभी-कभी समुदाय की समझदारी भरी बातों के ज़रिए हमारे गलत नज़रिए को सुधारते हैं।

(f) हमें बाइबल के आधार पर जीवन में अपनी आध्यात्मिक प्राथमिकताओं को मज़बूती से तय करना चाहिए। हमारे सामने आने वाली हर चीज़ के महत्व को तौलना चाहिए और अपनी आध्यात्मिक प्राथमिकताओं को फिर से तय करना चाहिए। अतीत की मुश्किलों के दौर से गुज़रते हुए मिले आध्यात्मिक अनुभव इस पल में सही परख के लिए कीमती संकेत हो सकते हैं। फिर भी, यह याद रखें: ऐसे सभी अनुभवों और फ़ैसलों को परखने का आखिरी और एकमात्र पैमाना परमेश्वर का वचन होना चाहिए—जो आखिरी बिंदु और मात्रा तक कभी नहीं बदलता।

आज के पाठ, 1 यूहन्ना 4:1 में प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताई गई "आत्माओं को परखने"—यानी "सही-गलत की पहचान करने"—की आज्ञा का मूल अर्थ है: "हर आत्मा पर विश्वास न करें, बल्कि आत्माओं को परखें कि क्या वे परमेश्वर की ओर से हैं।" मैंने इस शिक्षा की गहराई को रोमियों 12:2 में प्रेरित पौलुस के शब्दों से जोड़ने की कोशिश की है। ऐसा करते हुए, मेरा मकसद खास तौर पर "परमेश्वर की इच्छा के चार पहलुओं" को लागू करना है—जिन पर यूहन्ना ने अपनी पहली पत्री के अध्याय 1 से 3 में बार-बार ज़ोर दिया था—जिन्हें हमें आज अपने

जीवन में पहचानना और अपनाना चाहिए। (a) इन ईश्वरीय इच्छाओं में से पहली है "इस अंधेरी दुनिया में प्रभु का प्रकाश फैलाना।"

1 यूहन्ना 1:5 देखें: "यह वह संदेश है जो हमने उससे सुना है और तुम्हें बताते हैं: परमेश्वर ज्योति है; उसमें ज़रा भी अंधकार नहीं है।" प्रेरित यूहन्ना मुख्य रूप से यही घोषणा करते हैं, "परमेश्वर ज्योति है।" यूहन्ना के सुसमाचार में, जिसे उन्होंने ही लिखा था, यीशु ने अपने बारे में भी यही स्पष्ट रूप से कहा: "मैं जगत की ज्योति हूँ। जो कोई मेरे पीछे हो लेगा, वह कभी अंधकार में नहीं चलेगा, बल्कि उसे जीवन की ज्योति मिलेगी" (यूहन्ना 8:12)। इसके अलावा, यूहन्ना 12:36 में, प्रभु हमारी पहचान के बारे में एक शानदार निमंत्रण देते हैं: "जब तक ज्योति तुम्हारे पास है, उस पर विश्वास करो, ताकि तुम ज्योति की संतान बन सको।" यूहन्ना का यह प्रेरणादायक संदेश प्रेरित पौलुस द्वारा इफिसियों 5:8 में लिखे गए विश्वास के महान सिद्धांत से पूरी तरह मेल खाता है: "क्योंकि तुम पहले अंधकार थे, पर अब प्रभु में ज्योति हो। ज्योति की संतान के समान चलो।"

प्रियजनों, हमारे पिता परमेश्वर पूर्ण ज्योति हैं, जिनमें ज़रा भी अंधकार नहीं है। और आप और मैं, जो उन्हें मसीह मानते हैं, अंधकार के शासन से बचाई गई "ज्योति की संतान" हैं। प्रभु—जो स्वयं ज्योति हैं—की अपनी ज्योति की संतानों के लिए स्पष्ट इच्छा बिल्कुल भी जटिल नहीं है। यह बस इतना है कि हम अपने दैनिक जीवन में "ज्योति की संतान के समान चलें।" हमें अपने विचारों और हठ को त्याग देना चाहिए, दुनिया की बुरी प्रवृत्तियों का विरोध करना चाहिए, और ऐसे उपासक बनना चाहिए जो पवित्र जीवन जिएं, और केवल प्रभु की इच्छा के अनुसार चमकें और चलें।

(b) दूसरी बात, परमेश्वर की इच्छा झूठ को त्यागने और "सत्य का पालन करने" की है।

1 यूहन्ना 1:6 देखें। प्रेरित यूहन्ना ऐसे पाखंडी विश्वास के विरुद्ध चेतावनी देते हैं जो परमेश्वर के साथ गहरे संबंध का दावा तो करता है, लेकिन जीवन जीने के तरीके को बदलने में विफल रहता है: "यदि हम कहें कि हमारी उसके साथ संगति है और फिर भी अंधकार में चलें, तो हम झूठ बोलते हैं और सत्य के अनुसार नहीं जीते।" यह अंश एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक शिक्षा देता है: जो विश्वासी वास्तव में परमेश्वर के साथ संगति रखता है, उसे निश्चित रूप से अंधकार के कामों को त्याग देना चाहिए और जीवन के हर पहलू में सत्य का पालन करने वाला बनना चाहिए। जब हम यहाँ "सत्य" शब्द का सामना करते हैं, तो स्वाभाविक रूप से हमें यूहन्ना 14:6 में यीशु

की शानदार घोषणा याद आती है: "यीशु ने उत्तर दिया, 'मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। मेरे बिना कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता।'"

हमारे प्रभु स्वयं सत्य हैं। उनमें कोई झूठ या मिलावट नहीं है—केवल शुद्ध, मिलावट-रहित सत्य है। इसलिए, जो विश्वासी प्रभु—जो सत्य हैं—के साथ रोज़ाना आध्यात्मिक संगति रखते हैं, उन्हें उनके पवित्र चरित्र का अनुकरण करना चाहिए और उस सत्य को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। ईमानदारी और सच्चाई के साथ जिया गया जीवन, दिखावे का मुखौटा उतारकर—यही हमारे लिए प्रभु की स्पष्ट इच्छा है।

(c) तीसरा, परमेश्वर की इच्छा है कि हम क्रूस के सुसमाचार का पालन करते हुए पूरे दिल से "प्रेम" करें।

1 यूहन्ना 3:11 और 23 स्पष्ट रूप से उस आध्यात्मिक मंज़िल की पहचान कराते हैं जहाँ विश्वासियों को अंततः पहुँचना है: "हमें एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए। यही वह संदेश है जो तुमने शुरू से सुना है... और उनकी आज्ञा यह है: उनके पुत्र, यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करना और एक-दूसरे से प्रेम करना, जैसा उन्होंने हमें आज्ञा दी थी।" प्रेरित यूहन्ना घोषणा करते हैं कि कलीसिया को सौंपी गई महान आज्ञा का मूल आधार यीशु मसीह पर उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करना और—उस विश्वास के प्रमाण के रूप में—विश्वासियों के समुदाय के भीतर एक-दूसरे से प्रेम करना है। यहाँ, हम एक सचमुच सुंदर और आकर्षक आध्यात्मिक संबंध पाते हैं जो यूहन्ना की पत्रियों में व्याप्त है। प्रेरित यूहन्ना ने पहले ही घोषणा की थी कि "परमेश्वर ज्योति है" (1 यूहन्ना 1:5) और "यीशु संसार की ज्योति है" (यूहन्ना 8:12), और हमें उस ज्योति में चलने का महत्व सिखाया था। इसके अलावा, यह घोषणा करके कि "यीशु सत्य है" (14:6), उन्होंने हमें प्रभु की उस इच्छा के प्रति जागरूक किया कि हमें उस सत्य के अनुसार जीना चाहिए। फिर भी यूहन्ना यहीं नहीं रुकते; 1 यूहन्ना 4:8 और 16 में, वे एक महान सत्य की घोषणा करते हैं जो विश्वास की पराकाष्ठा है: यह घोषणा कि "परमेश्वर प्रेम है।" वे बताते हैं कि परमेश्वर—जो ज्योति है—और प्रभु—जो सत्य है—द्वारा हमसे अपेक्षित आज्ञाओं का अंतिम फल और कुछ नहीं बल्कि "एक-दूसरे से प्रेम करना" है (1 यूहन्ना 3:11, 23)। प्यारे लोगों, हमारे पिता परमेश्वर स्वयं प्रेम हैं। एक ऐसे परमेश्वर के रूप में जिनका मूल स्वभाव ही प्रेम है, वे हमें—अपनी संतानों को—गंभीरता से आज्ञा देते हैं कि हम एक-दूसरे

से वैसा ही प्रेम करें जैसा हम स्वयं से करते हैं। इसलिए, हमें प्रभु के पवित्र नियमों का पालन करना चाहिए और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, अपने कामों और सच्चाई के साथ एक-दूसरे से गहरा प्रेम करना चाहिए।

(d) चौथी बात, परमेश्वर की इच्छा यह है कि हम यीशु मसीह के उदाहरण का अनुसरण करते हुए "धार्मिकता का आचरण करें।"

1 यूहन्ना के अध्याय 1 से 3 के संदर्भ से परमेश्वर की इच्छा का जो अंतिम पहलू समझ में आता है, वह है "धार्मिकता का आचरण करने" की आज्ञा। 1 यूहन्ना 2:1 के अंतिम भाग और वचन 6 में दी गई बातों पर विचार करें: "...यीशु मसीह, जो धर्मी है... जो कोई यह दावा करता है कि वह उसमें रहता है, उसे वैसे ही चलना चाहिए जैसे यीशु चले थे।" प्रेरित यूहन्ना गवाही देते हैं कि हमारे उद्धारकर्ता, यीशु मसीह, पूर्ण रूप से "धर्मी" हैं, जिनमें कोई दोष या दाग नहीं है। इसके बाद वे दृढ़ता से आज्ञा देते हैं कि यदि हम उस धर्मी यीशु मसीह में रहने वाले संत हैं, तो हमें इस पृथ्वी पर अपना जीवन ठीक वैसे ही जीना चाहिए जैसा मसीह ने जिया था। इसका अर्थ यह है कि जिस प्रकार धर्मी प्रभु न्यायपूर्ण कार्य करते हैं, उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन के हर क्षेत्र में धार्मिकता का फल उत्पन्न करना चाहिए।

तो, बाइबल में बताए गए "धार्मिकता के काम" का असली मतलब क्या है? इसका मतलब है धरती पर रहते हुए त्रिएक परमेश्वर (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा) की पवित्र इच्छा को पूरी तरह से अपने जीवन में उतारना। दूसरे शब्दों में, धार्मिकता के काम का मतलब है परमेश्वर पिता की इच्छा के अनुसार दुनिया में पवित्र रोशनी फैलाना, परमेश्वर पुत्र (यीशु) की इच्छा के अनुसार बिना मिलावट वाले सच का पालन करना, और परमेश्वर पवित्र आत्मा की इच्छा के अनुसार अपने साथ के विश्वासियों से बिना किसी शर्त के प्यार करना।

प्यारे लोगों, यीशु मसीह पूरी तरह से धर्मी हैं। उस धर्मी प्रभु ने खुद काम करके हमारे लिए एक पवित्र मिसाल कायम की। वे खुद पाप से भरी इस अंधेरी दुनिया में आए और जीवन की शानदार रोशनी फैलाई। विकृति और झूठ से भरे इतिहास के बीच, उन्होंने बिना किसी समझौते के हमेशा सच का पालन किया। इसके अलावा, उन्होंने क्रूस पर अपना पानी और लहू बहाया और आप और मुझ पर—जो ईर्ष्या और नफरत में नष्ट हो रहे थे—अपना भरपूर प्यार बरसाया। इसी तरह, हमें भी प्रभु की मिसाल का पालन करना चाहिए: इस अंधेरी दुनिया में रोशनी फैलाना, सच का साथ देना, और अपने कामों और सच्चाई के साथ एक-दूसरे से दिल से प्यार करना।

अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में त्रिएक परमेश्वर के स्वभाव को अपनाना ही बाइबल में बताई गई असली "धार्मिकता" है, और यह हमारे लिए परमेश्वर की सबसे साफ़ और सबसे बेहतरीन इच्छा है।

(2) दूसरी आत्माओं को परखने से पहले, हमें सबसे पहले अपने खुद के विश्वास की अच्छी तरह से जाँच-परख करनी चाहिए।

"परखने" या "पहचानने" का पवित्र आदेश—जैसा कि 1 यूहन्ना 4:1 में दिया गया है—दूसरों की कमियाँ निकालने या उन्हें दोषी ठहराने का ज़रिया नहीं है। उस तलवार का रुख सबसे पहले हमारे अपने दिल की गहराइयों—यानी "खुद हमारी ओर"—होना चाहिए। 2 कुरिन्थियों 13:5 में, प्रेरित पौलुस गंभीरता से उस आत्म-जाँच वाले जीवन के बारे में बताते हैं जिसे विश्वासियों को पूरी लगन से अपनाना चाहिए: "अपनी जाँच करो कि तुम विश्वास में हो या नहीं; खुद को परखो। क्या तुम्हें यह एहसास नहीं है कि मसीह यीशु तुममें हैं—सिवाय इसके कि तुम परख में फेल हो जाओ?" हमें पूरी लगन से खुद को परमेश्वर के वचन की रोशनी में परखना चाहिए—एक ऐसा पैमाना जो हर छोटी-छोटी बात में भी कभी नहीं बदलता। हमें खुद को सख्ती से परखना और जांचना चाहिए कि क्या हम दिखावे या धार्मिक आदतों में फंसे हुए हैं, या क्या हम सच में ऐसे विश्वास के साथ जी रहे हैं जो जीवंत और असरदार है।

इस आत्म-जांच के लिए जेम्स 1:6–8 के गंभीर शब्दों को एक आईने की तरह देखें: "लेकिन जब आप मांगते हैं, तो आपको विश्वास करना चाहिए और शक नहीं करना चाहिए, क्योंकि जो शक करता है वह समुद्र की लहर की तरह होता है, जो हवा से इधर-उधर होती रहती है। उस व्यक्ति को प्रभु से कुछ भी पाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। ऐसा व्यक्ति दो मन वाला होता है और अपने सभी कामों में अस्थिर होता है।" जब हम ईमानदारी से इस पवित्र वचन के आईने में खुद को देखते हैं, तो हम अनिवार्य रूप से आत्म-मंथन और खुद से सवाल करने की ऐसी स्थिति में पहुँच जाते हैं जो दिल को छू लेती है। "क्या ऐसा हो सकता है कि बाहर से तो मैं पवित्र तरीके से परमेश्वर के सामने प्रार्थना की विनती करता हूँ, लेकिन अंदर से मैं गहरे अविश्वास और शक में डूबा हुआ प्रार्थना कर रहा हूँ, न कि विश्वास के साथ मांग रहा हूँ?" "अगर मैं बार-बार शक और चिंता से भरी प्रार्थनाएँ करता हूँ, तो क्या मैं बंटे हुए दिल के साथ परमेश्वर और दुनिया के बीच खड़ा नहीं हूँ—एक ऐसा व्यक्ति जिसके पूरे जीवन में

स्थिरता और मकसद की कमी है?" जो जीवन अंदर के शक को दूर नहीं करता, वह आध्यात्मिक रूप से बंजर होता है; ऐसी हालत में कोई भी प्रार्थना के जवाब का अनुभव करने या प्रभु से कृपा पाने की उम्मीद नहीं कर सकता। जैसा कि *कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) साफ तौर पर बताता है, बंटे हुए दिल वाला व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से अंधे व्यक्ति से अलग नहीं होता—लगातार डगमगाता रहता है और अपनी कोशिशों में सही दिशा नहीं ढूंढ पाता। दूसरों की आध्यात्मिक कमियों पर आलोचनात्मक नज़र डालने से पहले, हमें वचन के आईने में खुद को परखना चाहिए कि क्या हमारी प्रार्थनाएँ समुद्र की लहरों की तरह डगमगाती रहती हैं; यही उस सच्ची समझ की शुरुआत है जिसे प्रभु चाहते हैं।

मैंने प्रेरित पौलुस द्वारा 2 कुरिन्थियों 13:5 में दिए गए आत्म-जांच के आदेश—"खुद को परखो और खुद को साबित करो"—को लिया है और प्रेरित यूहन्ना के नज़रिए से देखते हुए, इसे हमारे जीवन के लिए चार खास सवालों में बदला है। यह ठीक से समझने के लिए कि क्या हम विश्वास में मज़बूती से खड़े हैं, हमें यूहन्ना की पहली पत्री में बताए गए त्रिएक परमेश्वर (Triune God) के चार मानकों के आधार पर अपने दिलों को सख्ती से परखना होगा। (a) सबसे पहले, मुझे यह देखना होगा कि क्या मैं सचमुच परमेश्वर पिता की इच्छा के अनुसार इस दुनिया में एक "ज्योति" के रूप में चमक रहा हूँ।

क्या हम सचमुच ज्योति की संतान के तौर पर जी रहे हैं और पाप से भरी इस अंधेरी दुनिया में पवित्र ज्योति फैला रहे हैं? हमें ईमानदारी से सोचना होगा कि क्या हमारा रोज़ का जीवन और व्यवहार एक शुद्ध ज्योति की तरह है—जिसमें अंधेरे की कोई मिलावट न हो—और जो हमारे आस-पास के आध्यात्मिक अंधेरे को दूर करने और चुपचाप पाप को उजागर करने वाला सकारात्मक प्रभाव डालता है।

(b) दूसरा, हमें यह देखना होगा कि क्या हम सचमुच यीशु की इच्छा के अनुसार अपने रोज़ के जीवन में "सत्य" का पालन कर रहे हैं।

क्या हम—यीशु की तरह, जो स्वयं सत्य हैं—धोखे और पाखंड से भरी इस दुनिया में बिना किसी समझौते के सत्य का पालन करते हुए जी रहे हैं? हमें खुद से पूछना होगा कि क्या हमने पाखंड का मुखौटा उतार दिया है—

जहाँ हमारा बाहरी रूप हमारी अंदरूनी सच्चाई से अलग होता है—और क्या हमारा जीवन सच्ची आराधना बन गया है, जिसमें हम झूठ से नफ़रत करते हैं और प्रभु के वचन का पूरी तरह पालन करते हैं।

(c) तीसरा, हमें यह देखना होगा कि क्या हम सचमुच पवित्र आत्मा की इच्छा के अनुसार अपने पड़ोसियों से "प्रेम" कर रहे हैं।

क्या हम अपने साथी विश्वासियों और पड़ोसियों से वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे हम खुद से करते हैं—ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर, जिनका स्वभाव ही प्रेम है, ने हमसे इतना प्रेम किया कि उन्होंने अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को क्रूस पर प्रायश्चित के बलिदान के रूप में दे दिया? हमें यह देखना होगा कि क्या हम अपनी भावनाओं या हालात से प्रभावित हुए बिना, अपने अंदर रहने वाली पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से प्रेम, आनंद और शांति के पवित्र फल ला रहे हैं, और क्या हम सच्चे कामों और ईमानदारी के साथ अपने भाई-बहनों को अपना रहे हैं।

(d) चौथा, हमें यह देखना होगा कि क्या हम त्रिएक परमेश्वर की इच्छा को अपनाकर—ज्योति फैलाकर, सत्य का पालन करके और प्रेम दिखाकर—यीशु मसीह की तरह "धार्मिकता" का पालन कर रहे हैं।

क्या हम ऐसे जीवन जी रहे हैं जो हमारे जीवन के हर क्षेत्र में न्याय और धार्मिकता का फल लाता है, ठीक उस धर्मी यीशु मसीह की तरह, जो निष्कलंक और बेदाग हैं? हमें ईमानदारी से अपने मन की गहराई में झाँककर यह देखना चाहिए कि क्या हमारा जीवन सचमुच उन लोगों से अलग है जो इस दुनिया की नाशवान चीज़ों के पीछे भागते हैं—और क्या हम उस यीशु की धार्मिकता को अपने जीवन में साफ़-साफ़ दिखाते हैं, जिन्होंने प्रेम की दोहरी आज्ञा यानी परमेश्वर के राज्य के नियम को पूरा किया?

(3) हमें यह परखना चाहिए कि क्या समुदाय के किसी साथी सदस्य का दिखाया गया प्रेम सिर्फ़ दिखावा है या क्रूस पर आधारित "सच्चा प्रेम" है।

प्रेरित यूहन्ना द्वारा दी गई "परखने" की पवित्र आज्ञा का तीसरा पहलू समुदाय के भीतर रिश्तों से जुड़ा है। हमें यह परखना चाहिए कि जिस साथी सदस्य के साथ हम जीवन बिताते हैं, उसका दिखाया गया प्रेम सचमुच

परमेश्वर की ओर से मिलने वाला सच्चा प्रेम है या नहीं। 2 कुरिन्थियों 8:8 में, प्रेरित पौलुस उस प्रेम के स्वभाव के बारे में बताते हैं जिसे साबित किया जाना चाहिए: "मैं तुम्हें कोई हुक्म नहीं दे रहा हूँ, बल्कि मैं दूसरों के उत्साह से तुलना करके तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को परखना चाहता हूँ" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। बाइबल चाहती है कि हमारा प्रेम "सच्चाई" से साबित हो।

किसी दूसरे व्यक्ति के प्यार की सच्चाई को परखने का सबसे अच्छा पैमाना 1 कुरिन्थियों 13:4–5 के शब्दों में मिलता है—जिसे अक्सर "प्यार का अध्याय" कहा जाता है: "प्यार धीरज रखता है, प्यार दयालु है। यह जलन नहीं रखता, यह डींगें नहीं मारता, यह घमंड नहीं करता। यह दूसरों का अनादर नहीं करता, यह स्वार्थी नहीं है, इसे आसानी से गुस्सा नहीं आता, यह बुराइयों का हिसाब नहीं रखता।" हम अपने साथी विश्वासियों के प्यार को इन पवित्र शब्दों के पैमाने पर परख सकते हैं। हम देखते हैं कि क्या उनके प्यार में धैर्य और कोमलता है, या क्या उसमें जलन, घमंड और सिर्फ़ अपना फ़ायदा चाहने वाला लालच है। नीतिवचन 17:9 (पहला भाग) परखने के लिए एक और ज़रूरी पैमाना देता है: "जो कोई गलती को ढकता है, वह प्यार चाहता है।" यह देखकर कि क्या कोई चुपचाप प्यार से मेरी कमज़ोरियों और गलतियों को ढकता है, या उन्हें सबके सामने लाकर समुदाय में गड़बड़ी पैदा करता है, हम उस प्यार की शुद्धता को साफ़ तौर पर समझ सकते हैं।

मैंने प्रेरित यूहन्ना के नज़रिए और यूहन्ना की पहली पत्री में मौजूद गहरे धार्मिक आधारों के ज़रिए "सच्चे प्यार"—जैसा कि 2 कुरिन्थियों 8:8 में बताया गया है—की कीमत को परखने और समझने के लिए चार पैमाने बताए हैं।

(a) पहला, हमें यह परखना होगा कि क्या किसी साथी विश्वासी का प्यार एक "नम्र प्यार" है जो—यीशु मसीह के स्वभाव की तरह—दूसरों की सेवा करने के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर देता है।

हमारे लिए यीशु का प्यार एक पवित्र "अवतार का प्यार" (incarnational love) है, जिसमें उन्होंने अपना स्वर्गीय सिंहासन छोड़कर इस मामूली, नम्र धरती पर कदम रखा। परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह, खुद इस बुरी हालत वाली दुनिया में आए और एक शानदार इंसानी रूप धारण किया (2 यूहन्ना 1:7)। प्रभु, "जो स्वभाव से ही परमेश्वर थे, उन्होंने परमेश्वर के बराबर होने को अपने फ़ायदे के लिए इस्तेमाल नहीं किया; बल्कि, उन्होंने एक सेवक का रूप लेकर खुद को कुछ नहीं समझा और इंसानी रूप में आए। और इंसान के रूप में पाए जाने पर, उन्होंने खुद

को नम्र किया और मौत तक आज्ञाकारी बने रहे" (फिलिप्पियों 2:6–8)। अवतार के इस प्यार को एक ही वाक्य में कहें तो, यह एक नम्र प्यार है जो अपने पड़ोसी की सेवा करने के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर देता है। हमें ध्यान से यह देखना चाहिए कि क्या हमारे साथ का साथी सदस्य भी वैसा ही विनम्र प्रेम दिखा रहा है—जिसमें वे खुद को समर्पित करके दूसरों की सेवा करते हैं।

(b) दूसरा, हमें यह देखना चाहिए कि क्या साथी सदस्य का प्रेम ऐसा "मेल-मिलाप कराने वाला प्रेम" है जो भेदभाव की दीवारों को गिराता है, ठीक वैसे ही जैसे यीशु मसीह ने क्रूस पर किया था।

1 यूहन्ना 2:2 बताता है कि धर्मी यीशु मसीह हमारे पापों के लिए "प्रायश्चित का बलिदान" बने। पाप के कारण परमेश्वर के दुश्मन बन चुके हमें परमेश्वर से पूरी तरह मिलाने के लिए, प्रभु ने क्रूस पर अपने शरीर को मेल-मिलाप के बलिदान के रूप में अर्पित किया। उस पवित्र प्रायश्चित के परिणामस्वरूप, हमें मेल-मिलाप का अनुग्रह मिला है, जिससे परमेश्वर के साथ हमारा टूटा हुआ रिश्ता फिर से जुड़ गया है। 2 कुरिन्थियों 5:18 में, प्रेरित पौलुस कहते हैं, "यह सब परमेश्वर की ओर से है, जिसने मसीह के द्वारा हमें अपने साथ मिलाया और हमें मेल-मिलाप की सेवा सौंपी।" इसलिए, अपने पड़ोसी के प्रति सच्चे प्रेम का सबसे पक्का सबूत टूटे हुए रिश्तों को ठीक करने और आपस में मेल-मिलाप को बढ़ावा देने की सेवा से मिलता है। हमें यह परखना चाहिए कि क्या साथी सदस्य का प्रेम मेल-मिलाप कराने वाला प्रेम है जो समुदाय को एकजुट करता है, या यह दिखावटी प्रेम है जो मनमुटाव और फूट पैदा करता है।

(c) तीसरा, हमें यह देखना चाहिए कि क्या साथी सदस्य का प्रेम ऐसा "बलिदानी प्रेम" है जो—यीशु मसीह के प्रायश्चित के काम की तरह—अपनी जान तक देने को तैयार रहता है। हमारे प्रति किसी दूसरे व्यक्ति के प्रेम की सच्चाई को मापने का सबसे अहम और पक्का पैमाना 1 यूहन्ना 3:16 में मिलता है: "उसने हमारे लिए अपनी जान दे दी। और हमें भी अपने भाइयों के लिए अपनी जान देनी चाहिए।" साथी विश्वासी के प्रेम की सच्चाई को परखने का तीसरा पैमाना यह है कि क्या उसमें दूसरों की खातिर खुशी-खुशी अपने सबसे प्यारे अधिकारों, आराम और यहाँ तक कि अपनी जान तक को न्योछावर करने की बलिदानी गहराई है। सिर्फ़ अपना फ़ायदा सोचने वाला और हिसाब-किताब रखने वाला प्रेम कभी भी क्रूस की छाप नहीं दिखा सकता।

(d) चौथा, हमें यह देखना चाहिए कि क्या साथी विश्वासी का प्रेम—प्रेरित यूहन्ना की सीख के अनुसार—सिर्फ़ खोखली बातों से कहीं बढ़कर है और "काम और सच्चाई से दिखाए जाने वाले प्रेम" के रूप में प्रकट होता है। 1 यूहन्ना 3:18 में सिर्फ़ बातों से प्यार दिखाने वाले धार्मिक पाखंड के ख़िलाफ़ कड़ी चेतावनी दी गई है: "हे बच्चों, आओ हम सिर्फ़ शब्दों या बातों से नहीं, बल्कि कामों और सच्चाई से प्यार करें।" यह पता लगाने का आखिरी पैमाना कि क्या किसी साथी विश्वासी का प्यार सच्ची कृपा पर आधारित है, यह है कि क्या वह प्यार सिर्फ़ सुंदर बातों तक ही सीमित रहता है जो हवा में गायब हो जाती हैं, या क्या वह ज़िंदगी में ठोस कदमों और सच्चे कामों (कर्मों) के ज़रिए ज़ाहिर होता है। जब हम दिखावटी बातों से आगे बढ़कर यह देखते हैं कि क्या प्यार सच्चाई और ठोस कामों से दिखाया जा रहा है—यहाँ तक कि ज़िंदगी के छिपे हुए, शांत कोनों में भी—तभी हम उस आत्मा में मौजूद प्यार की असली पवित्रता को साफ़ तौर पर पहचान सकते हैं। (4) हमें परमेश्वर के वचन के पैमाने पर हर चीज़ को ध्यान से परखना चाहिए, जो अच्छा है उसे मज़बूती से थामे रखना चाहिए और हर तरह की बुराई को पूरी तरह से ठुकरा देना चाहिए।

प्रेरित यूहन्ना द्वारा दिए गए "परखने" के पवित्र निर्देश का चौथा और आखिरी पहलू हमारी ज़िंदगी के हर हिस्से और हमारे सामने आने वाले फैसलों से जुड़ा है। 1 थिस्सलुनीकियों 5:21–22 में, प्रेरित पौलुस साफ़ तौर पर उस संपूर्ण परख वाले जीवन के बारे में बताता है जिसे परमेश्वर के राज्य के लोगों को अपनाना चाहिए: "सब बातों को परखो; जो अच्छा है उसे थामे रखो। हर तरह की बुराई से दूर रहो" (NKJV)। "हर चीज़ को ध्यान से परखो; जो अच्छा है उसे थामे रखो, और बुराई की नकल भी मत करो" (Contemporary Korean Version)। थिस्सलुनीका की कलीसिया उन लोगों की एक शानदार मिसाल है जिन्होंने इस गंभीर सलाह को अपनी ज़िंदगी में उतारा। ज़बरदस्त सताहट और मुश्किलों के बीच, उन्होंने हर हालात को विश्वास की नज़र से परखा; उन्होंने परमेश्वर से मिले अच्छे वरदानों को मज़बूती से अपनाया और बुराई करने वाले के हर बुरे लालच को पूरी तरह ठुकरा दिया। मुश्किलों के बीच, उन्होंने परमेश्वर पर सच्चे "विश्वास" को चुना और अविश्वास को दूर कर दिया। उन्होंने अपने साथी विश्वासियों के प्रति क्रूस वाले "प्यार" को अपनाया और नफ़रत की ज़हरीली बेलों को उखाड़ फेंका। आखिर में, उन्होंने शानदार दूसरी बार आने की "आशा" को अपनाया—जो आखिरकार पूरी होगी—और दुनियावी निराशा को दूर कर दिया।

यह पवित्र आध्यात्मिक आदान-प्रदान एक गंभीर आज्ञा है जो आज के समय में जी रहे हम दोनों को समान रूप से दी गई है। हमें भी, हर पल डगमगाती इस दुनिया में हिम्मत के साथ अविश्वास को दूर करना चाहिए और विश्वास को अपनाना चाहिए। हमें नफ़रत को क्रूस पर चढ़ाना चाहिए और प्यार को अपनाना चाहिए। और हमारे लिए यह सही है कि हम अपनी आँखों के सामने दिख रही निराशा को ठुकरा दें और हमेशा रहने वाली उम्मीद को मज़बूती से थामे रखें। मैंने 1 थिस्सलुनीकियों 5:21–22 में बताए गए सही परख के मुख्य सिद्धांत को आज हमारे जीवन के लिए चार संकल्पों में बदला है; इसके लिए मैंने प्रेरित यूहन्ना के नज़रिए और 1 यूहन्ना के मुख्य धार्मिक आधारों का सहारा लिया है। वह आध्यात्मिक कसौटी जिससे हमें हर चीज़ को परखना चाहिए—यह तय करने के लिए कि क्या अपनाना है और क्या छोड़ना है—बिल्कुल साफ़ है।

पहला, हमें प्रभु की "ज्योति" को सक्रिय रूप से अपनाना चाहिए, जो स्वयं जीवन है, और अंधेरे के कामों को छोड़ देना चाहिए।

दूसरा, हमें प्रभु के "सत्य" को अपनाना चाहिए—जिनमें झूठ का ज़रा भी अंश नहीं है—और शैतान के सभी झूठों को ठुकरा देना चाहिए।

तीसरा, हमें पवित्र आत्मा द्वारा बरसाए गए क्रूस के पवित्र "प्रेम" को अपनाना चाहिए और अपने दिलों में पल रही जलन और नफ़रत को दूर करना चाहिए।

चौथा, धर्मी यीशु मसीह के उदाहरण का पालन करते हुए, हमें "धार्मिकता" को अपनाना चाहिए और हर तरह की अधार्मिकता और बुराई को मज़बूती से ठुकराना चाहिए।

जो जीवन त्रिएक परमेश्वर के इन गुणों को पूरी तरह से परखता और अपनाता है, वह 1 यूहन्ना 4:1 में बताई गई परख की सच्ची पूर्ति को दर्शाता है।

दूसरा, बाइबल हमें आदेश देती है कि हम मंच से बताई जाने वाली आत्माओं की शिक्षाओं पर आँख बंद करके भरोसा न करें, बल्कि अच्छी तरह से परखें कि क्या वे आत्माएँ सचमुच परमेश्वर की हैं।

आइए एक बार फिर आज के वचन, 1 यूहन्ना 4:1 को देखें। प्रेरित यूहन्ना बार-बार समुदाय से झूठे नबियों के धोखे से सावधान रहने का आग्रह करते हैं: "प्रिय लोगों, हर आत्मा पर विश्वास न करो, बल्कि आत्माओं को परखो कि क्या वे परमेश्वर की ओर से हैं, क्योंकि दुनिया में बहुत से झूठे नबी निकल आए हैं।" "प्रिय दोस्तों, उन लोगों पर आँख बंद करके विश्वास न करें जो आत्मा होने का दावा करते हैं; इसके बजाय, उन आत्माओं को परखें जिनके होने का वे दावा करते हैं, ताकि देखा जा सके कि क्या वे परमेश्वर की ओर से हैं। दुनिया में बहुत से झूठे नबी आ गए हैं।" प्रिय दोस्तों, क्या हमें पादरियों द्वारा मंच से दिए गए हर उपदेश को आँख बंद करके मान लेना चाहिए? या क्या हमें—पादरियों द्वारा दिए गए उपदेशों के बारे में भी—गहराई से परखना चाहिए कि जो कहा गया है वह परमेश्वर के वचन के अनुसार है या नहीं? प्रेरितों के काम 17:11 में उस बेहतरीन रवैये के बारे में बताया गया है जिसे आज विश्वासियों को अपनाना चाहिए: “बेरिया के लोग थिस्सलुनीके के लोगों की तुलना में ज़्यादा खुले विचारों वाले थे; उन्होंने बड़े उत्साह से संदेश को सुना और रोज़ाना धर्मशास्त्र की जाँच-पड़ताल की ताकि यह देख सकें कि जो कहा गया था, वह सच है या नहीं।” भले ही बेरिया के विश्वासियों ने सुसमाचार सीधे प्रेरित पौलुस से सुना था—जो एक महान आध्यात्मिक व्यक्ति थे—फिर भी उन्होंने रोज़ाना धर्मशास्त्र का ध्यानपूर्वक अध्ययन और जाँच-पड़ताल की ताकि यह पक्का कर सकें कि जो उन्होंने सुना, वह सच में परमेश्वर के पूरे वादों के अनुरूप है या नहीं।

हमें इस आध्यात्मिक सिद्धांत को आज अपनी उपासना और विश्वास के जीवन में सीधे तौर पर लागू करना चाहिए। यह तय करने के लिए कि हर रविवार मंच से दिए जाने वाले अनगिनत उपदेश सिर्फ़ इंसानों की अच्छी-अच्छी बातें हैं या धर्मशास्त्र में बताया गया परमेश्वर का सच्चा और जीवन देने वाला सुसमाचार, हमें खुद रोज़ाना बाइबल खोलनी चाहिए, उस पर मनन करना चाहिए और उसका अध्ययन करना चाहिए। हमें अब उन शिक्षाओं से गुमराह नहीं होना चाहिए जो बाइबल के अनुसार नहीं हैं—ऐसी शिक्षाएँ तब आम थीं जब चर्च आध्यात्मिक अंधेरे में डूबा हुआ था—जिनमें दावा किया जाता था कि बिना बाइबल खोले बस आँख बंद करके उस पर विश्वास करने से ही अनुग्रह मिल जाता है। अब, हमें बाइबल को अच्छी तरह खोलना चाहिए और शांत दिमाग से यह जाँच करनी चाहिए कि जो शिक्षाएँ हम सुनते हैं, वे सच्चाई के वचन के अनुरूप हैं या नहीं। इतनी कड़ी आध्यात्मिक जाँच-पड़ताल करने का असली कारण बहुत सीधा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन आखिरी दिनों

में, भेड़ों के भेष में बहुत सारे झूठे चरवाहे चर्च के माहौल में घुस आए हैं, और उनकी मीठी-मीठी बातों से निकले झूठे सुसमाचारों और पाखंडी उपदेशों की बाढ़ आ गई है। जो लोग सच्चाई का सहारा लिए बिना आँख बंद करके आत्मा पर भरोसा करते हैं, वे पलक झपकते ही शैतान द्वारा बिछाए गए धोखे के जाल में फँस जाएँगे और उनकी आत्माएँ छिन जाएँगी।

प्यारे लोगों, आखिर ये झूठे चरवाहे कौन हैं? वे परमेश्वर के मुँह से निकले जीवन देने वाले वचन का प्रचार नहीं करते; इसके बजाय, वे अपने ही दिलों से निकले चालाक विचारों और इच्छाओं को बताते हैं (यिर्मयाह 23:26)। अपने भ्रष्ट दिलों से वे लगातार झूठ उगलते रहते हैं। यहाँ तक कि परमेश्वर के उन लोगों से भी—जो साफ़ तौर पर पाप कर रहे हैं और विनाश की ओर बढ़ रहे हैं—वे बिना सोचे-समझे खोखले दिलासे वाले उपदेश देते हैं जो आत्मा को मार डालते हैं; वे कहते हैं, "तुम्हें शांति मिलेगी" और "तुम पर कोई विपत्ति नहीं आएगी" (पद 17)। जैसा कि प्रेरित पौलुस ने चेतावनी दी थी, आत्माओं को बचाने वाली सही शिक्षा देने के बजाय, वे सुनने वालों के कानों को अच्छा लगने वाली बातें कहने में ही लगे रहते हैं (2 तीमुथियुस 4:3)। उनके संदेशों में पवित्र फटकार और चेतावनी—जो पाप का एहसास कराती है—या पश्चाताप के लिए प्रेरित करने वाली सीख बिल्कुल नहीं होती (पद 2)। यह सच्चे सुसमाचार का बाहरी रूप धारण किए हुए एक नकली सुसमाचार के अलावा और कुछ नहीं है। पाप में डगमगा रहे परमेश्वर के लोगों को पश्चाताप की ओर मोड़ने के बजाय, वे असल में उनकी बुराई को सही ठहराते हैं और उन्हें बढ़ावा देते हैं, जिससे वे लगातार पाप करते रहते हैं (यिर्मयाह 23:14)। आखिरकार, झूठे चरवाहे आध्यात्मिक रूप से अंधे लोग होते हैं जो अज्ञानी विश्वासियों को विनाश के रास्ते पर भटका देते हैं (पद 13)। वे निश्चित रूप से पवित्र लोगों को विनाश की खाई की ओर ले जाते हैं क्योंकि वे खुद पहले से ही गलत रास्ते पर तेज़ी से भाग रहे होते हैं—एक ऐसा रास्ता जिस पर परमेश्वर ने उन्हें कभी नहीं भेजा था (पद 21)। वे खुद को अपवित्र करते हैं और बुराई करते हैं; वे बिना किसी हिचकिचाहट के परमेश्वर के घर—यानी कलीसिया—में भी बुराई करते हैं, जबकि उसे पवित्र होना चाहिए। नतीजतन, उनके भ्रष्ट मन से निकलने वाली आध्यात्मिक गंदगी और ज़हर पूरी कलीसियाई समुदाय को बुरी तरह दूषित कर रहे हैं।

इस दुखद आध्यात्मिक सच्चाई का सामना करते हुए, प्रेरित यूहन्ना 1 यूहन्ना 4:1 में एक गंभीर घोषणा करते हैं: "प्यारे लोगों, हर आत्मा पर विश्वास न करो, बल्कि आत्माओं को परखो कि क्या वे परमेश्वर की ओर से हैं, क्योंकि

बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता दुनिया में निकल गए हैं।" जब उन्होंने यह पत्र लिखा, तब तक यूहन्ना कलीसिया की स्थिति को गंभीरता से समझ चुके थे और घोषणा कर चुके थे, "यह आखिरी घड़ी है" (2:18)। उन्होंने आगे चेतावनी दी कि इन आखिरी दिनों में, बहुत सारे मसीह-विरोधी (एंटी-क्राइस्ट) कलीसियाई समुदाय में गहराई तक घुसपैठ कर चुके थे। ये मसीह-विरोधी स्वभाव से ही "झूठे" (पद 22) और "धोखेबाज़" होते हैं जो पवित्र लोगों को भ्रमित करते हैं (पद 26)। वे न केवल साफ तौर पर इस बात से इनकार करते हैं कि यीशु ही मसीह है, बल्कि वे परमेश्वर पिता और पुत्र के ईश्वरीय स्वरूप का भी अपमान करते हैं और उसे नकारते हैं (पद 22)। चूँकि अंतिम दिनों में ऐसे झूठे भविष्यद्वक्ता—भेड़ की खाल में छिपे भेड़िये—बड़ी संख्या में सामने आए हैं, इसलिए यूहन्ना हमें गंभीरता से सलाह देता है: "हर आत्मा पर विश्वास न करो, बल्कि आत्माओं को परखो कि क्या वे परमेश्वर की ओर से हैं" (4:1)। हमें उन लोगों के शानदार चमत्कारों या आकर्षक बातों से आँख मूँदकर प्रभावित नहीं होना चाहिए जो आत्मा पाने का दावा करते हैं; इसके बजाय, हमें उस आत्मा के स्रोत की अच्छी तरह से जाँच करनी चाहिए जिसका वे दावा करते हैं। हमें उसे परमेश्वर के वचन की कसौटी पर परखना चाहिए ताकि यह देखा जा सके कि क्या वह वास्तव में परमेश्वर की ओर से है। प्रेरित यूहन्ना द्वारा दी गई परखने की इस ज़रूरी सलाह को ध्यान में रखते हुए, हमें खुद से दो मुख्य आध्यात्मिक सवाल पूछकर गहराई से सोचना चाहिए:

(1) हमें उन लोगों पर आँख मूँदकर भरोसा नहीं करना चाहिए जो आत्मा पाने का दावा करते हैं (1 यूहन्ना 4:1)।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 4:1 में, प्रेरित यूहन्ना अपने प्रिय बच्चों को दृढ़ता से सलाह देता है: "हर आत्मा पर विश्वास न करो।" *Hyundai-in-ui Seong-gyeong* (समकालीन कोरियाई संस्करण) के शब्दों में कहें तो, यह एक कड़ी चेतावनी है: "जो लोग आत्मा पाने का दावा करते हैं, उन पर आँख मूँदकर भरोसा न करो।" यूहन्ना ने इतनी गंभीरता और ज़ोर के साथ आत्माओं पर बिना सोचे-समझे भरोसा करने के खिलाफ चेतावनी क्यों दी? इसका सुराग मूल ग्रीक भाषा के काल (tense) में मिलता है। इस वचन में "विश्वास न करो" के लिए इस्तेमाल की गई ग्रीक व्याकरणिक संरचना एक कड़े निषेध को दर्शाती है—यह एक ऐसा आदेश है जो किसी ऐसे काम को तुरंत रोकने के लिए कहता है जो पहले से ही चल रहा हो। दूसरे शब्दों में, जब यूहन्ना यह पत्र लिख रहा था, तब समुदाय के कुछ सदस्य झूठी आत्माओं की बातों से गुमराह हो रहे थे और बिना परखे उनका अनुसरण कर रहे थे। यूहन्ना ने इस खतरनाक, आँख मूँदकर किए जाने वाले विश्वास की कड़ी निंदा की और उन्हें आदेश दिया कि वे "हर आत्मा पर विश्वास करना" वहीं और उसी समय बंद कर दें। इससे पहले, 3:24 में, यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से कहा

था कि विश्वास करने वाले प्रभु में "उस आत्मा के द्वारा बने रहते हैं जो उसने हमें दिया है।" फिर भी, दुख की बात है कि 4:1 में जिस शुरुआती कलीसिया का ज़िक्र है, उसमें कुछ ऐसे लोग थे जो बिल्कुल अलग तरह की आत्माओं के पीछे चल रहे थे—ये आत्माएँ उस 'सत्य की आत्मा' से अलग थीं जिसे परमेश्वर ने भेजा था।

तो फिर, पवित्र आत्मा के अलावा वे "दूसरी आत्माएँ" कौन सी थीं जो पहली सदी की उस कलीसिया में घुस आई थीं जिसे यूहन्ना ने देखा था? प्रेरित पौलुस द्वारा तीमुथियुस को लिखी गई 1 तीमुथियुस 4:1 इस बात की कड़वी सच्चाई को साफ़-साफ़ बताती है: "पवित्र आत्मा साफ़-साफ़ कहता है कि आने वाले समय में कुछ लोग विश्वास से भटक जाएँगे और धोखा देने वाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर ध्यान देंगे।" जैसा कि पौलुस ने बताया, उस समय समुदाय के आस-पास "धोखा देने वाली आत्माएँ" ज़ोरों पर थीं और विश्वासियों को सच्चे विश्वास से दूर ले जा रही थीं। इसके अलावा, चालाकी से छिपाकर रखी गई "दुष्टात्माओं की शिक्षाएँ" संतों को लुभा रही थीं। जैसा कि कलीसिया के इतिहास में कई जाने-माने टीकाकारों ने बताया है, इन दूसरी आत्माओं का असली रूप—जो पवित्र आत्मा की नकल करके विश्वासियों को धोखा देती थीं—शैतान की सेवा करने वाली बुरी आत्माओं यानी "दुष्टात्माओं" के अलावा और कुछ नहीं था। आज का वचन, 1 यूहन्ना 4:3, इन बुरी आत्माओं की पहचान और भी साफ़ तौर पर बताता है: "और जो कोई आत्मा यह स्वीकार नहीं करती कि यीशु मसीह शरीर में आया है, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। और यह मसीह-विरोधी (एंटीक्राइस्ट) की आत्मा है, जिसके बारे में तुमने सुना था कि वह आने वाली है, और अब वह दुनिया में आ चुकी है।" ठीक इसीलिए प्रेरित यूहन्ना ने आदेश दिया, "हर आत्मा पर विश्वास न करो," और नकली आत्माओं पर आँख मूँदकर विश्वास करने को तुरंत रोकने का आग्रह किया। ऐसा इसलिए था क्योंकि "मसीह-विरोधी की आत्मा" पहले ही कलीसिया में घुस चुकी थी और सच्चाई को बिगाड़ रही थी। धोखा देने वाली आत्माओं, दुष्टात्माओं की शिक्षाओं और मसीह-विरोधी की आत्मा—जो सभी पवित्र आत्मा का रूप धरकर हमारे पास आती हैं—से अपनी आत्मा को बचाने के लिए, हमें बिना सोचे-समझे सब कुछ मान लेने का रवैया छोड़ना होगा और सतर्क रहना होगा।

(2) जो लोग कहते हैं कि उन्हें कोई आत्मा मिली है, उनकी आत्माओं की हमें जाँच करनी चाहिए—यह देखने के लिए कि क्या वे सचमुच परमेश्वर की ओर से हैं—और इसके लिए हमें परमेश्वर के वचन के पैमाने का इस्तेमाल करना चाहिए (1 यूहन्ना 4:1)। 1 यूहन्ना 4:1 के दूसरे हिस्से में—जो आज का वचन है—प्रेरित यूहन्ना खास तौर

पर परखने के मुख्य तरीके की ओर इशारा करते हैं: "...आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं।" यह एक आदेश है कि जब भी कोई व्यक्ति आत्मा पाने का दावा करे या विशेष आध्यात्मिक शक्तियों का इस्तेमाल करने की बात कहे, तो हम सख्ती से जाँच करें कि क्या उनकी आत्मा और उनकी शिक्षाओं की जड़ सचमुच परमेश्वर से है। तो फिर, हम ऐसी आत्मा के स्रोत की जाँच कैसे कर सकते हैं? बाइबल के अनुसार वह कौन-सी कसौटी है जिससे यह तय किया जा सके कि जिस आत्मा का वे दावा करते हैं, वह परमेश्वर की है या शैतान की? आगे की आयतों (1 यूहन्ना 4:2–3) में, प्रेरित यूहन्ना परखने का एक पक्का और अटल पैमाना बताते हैं: "इससे तुम परमेश्वर की आत्मा को पहचानते हो: हर वह आत्मा जो यह मानती है कि यीशु मसीह शरीर में आए हैं, वह परमेश्वर की ओर से है, और जो आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। यह मसीह-विरोधी (एंटीक्राइस्ट) की आत्मा है, जिसके बारे में तुमने सुना था कि वह आने वाली है और अब वह पहले से ही दुनिया में मौजूद है" (संशोधित कोरियाई संस्करण)। "पवित्र आत्मा, यानी परमेश्वर की आत्मा को पहचानने का तरीका यह है: जो कोई भी यह मानता है कि यीशु मसीह एक इंसान के रूप में आए, उसने परमेश्वर की आत्मा को पाया है। लेकिन, जो कोई भी यीशु को इस तरह नहीं मानता, उसने परमेश्वर की आत्मा को नहीं पाया है; बल्कि, उनमें मसीह के दुश्मन की आत्मा है—तुमने सुना था कि वह आने वाला है, और सचमुच, वह पहले से ही दुनिया में है" (समकालीन कोरियाई संस्करण)।

प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताया गया परखने का पैमाना बिल्कुल साफ है। यह यीशु मसीह के देहधारण (इंसानी रूप में आने) के बारे में विश्वास की सही स्वीकारोक्ति के अलावा और कुछ नहीं है। परमेश्वर की सच्ची आत्मा—सत्य की आत्मा—इंसान को यह साफ-साफ मानने और स्वीकार करने के लिए प्रेरित करती है कि यीशु मसीह, जो परमेश्वर के अनंत पुत्र हैं, एक पूर्ण इंसानी शरीर (देह) धारण करके इस धरती पर आए। दूसरी ओर, चाहे कितने भी शानदार चमत्कार किए जाएं या कितनी भी प्रभावशाली बातें कही जाएं, कोई भी ऐसी आत्मा जो यीशु मसीह के देवत्व और मानवता—साथ ही उनके देहधारण और क्रूस पर प्रायश्चित—को नकारती है या उसे गलत तरीके से पेश करती है, वह निश्चित रूप से परमेश्वर की आत्मा नहीं है। अपने स्वभाव से ही, यह "मसीह-विरोधी की आत्मा" है—सत्य की विरोधी—और यह मसीह के दुश्मन, शैतान की आत्मा के अलावा और कुछ नहीं है। हमें अपने निजी आध्यात्मिक अनुभवों या रहस्यमयी घटनाओं से गुमराह नहीं होना चाहिए; इसके बजाय, हमें गंभीरता से जाँच करनी चाहिए कि क्या उनकी शिक्षाओं के केंद्र में मौजूद मसीह-संबंधी शिक्षा (क्राइस्टोलॉजी)

बाइबल के सत्य से मेल खाती है। दुनिया में पहले से ही फैले हुए एंटीक्राइस्ट (मसीह-विरोधी) के धोखे से अपनी आत्मा और चर्च को बचाने का एकमात्र तरीका है—सही ईसाई शिक्षाओं पर मजबूती से डटे रहना और आत्माओं की परख करना।

प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताए गए परख के सही पैमाने को अपनाते हुए, हमें "एंटीक्राइस्ट की आत्मा" के असली स्वरूप को और अधिक स्पष्ट रूप से उजागर करना चाहिए, जो चर्च को हिलाकर रख देती है। प्रेरित यूहन्ना द्वारा लिखे गए पत्रों का अध्ययन करके, हम एंटीक्राइस्ट की आत्मा से जुड़ी खतरनाक झूठों की विशेषताओं को इन चार पैमानों के आधार पर समझ सकते हैं:

पहला, यह यीशु को परमेश्वर का पुत्र और उद्धारकर्ता नहीं मानती (1 यूहन्ना 4:3)।

दूसरा, यह साफ तौर पर इस बात से इनकार करती है कि यीशु ही एकमात्र "मसीह" (मसीहा) हैं जो मानवता का उद्धार करते हैं (2:22)।

तीसरा, यह परमेश्वर पिता को नहीं मानती (वचन 22)। क्योंकि वे पुत्र को नहीं मानते, इसलिए उनके लिए परमेश्वर पिता का कोई अस्तित्व नहीं है (वचन 23)।

चौथा, यह इस बात का पुरजोर खंडन करती है कि यीशु मसीह—जो अनंत परमेश्वर हैं—असली इंसानी शरीर धारण करके इस धरती पर आए थे (2 यूहन्ना 1:7)।

हमें अच्छी तरह से परखना चाहिए कि क्या मंच से दी जाने वाली हर शिक्षा इन चार बाइबिल के मानकों पर खरी उतरती है या नहीं। इसके विपरीत, हम कैसे पक्के तौर पर "परमेश्वर की आत्मा" (पवित्र आत्मा) को पहचान सकते हैं, जो केवल सच्चाई की गवाही देती है? 1 यूहन्ना 4:2 पवित्र आत्मा की सबसे पक्की पहचान बताती है: "हर वह आत्मा जो यह मानती है कि यीशु मसीह शरीर में आए हैं, वह परमेश्वर की ओर से है।" परमेश्वर की आत्मा हमें खुशी-खुशी यीशु मसीह के महान अवतार को मानने और स्वीकार करने के लिए प्रेरित करती है। दूसरे शब्दों में, हमारे भीतर रहने वाली पवित्र आत्मा हमें बिना किसी शक के यह विश्वास करने और उस महान

रहस्य को स्वीकार करने में मदद करती है कि अनंत 'वचन' ने पूरी तरह से पाप-रहित इंसानी शरीर धारण किया और एक सच्चे इंसान के रूप में इस दुनिया में आए। पवित्र आत्मा ही हमारे होंठों पर विश्वास की वह बात लाती है जिसे प्रेरित यूहन्ना ने यूहन्ना 1:14 में बड़े आदर के साथ कहा था: "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच रहा। हमने उसकी महिमा देखी, जो पिता के एकलौते पुत्र की महिमा थी, जो अनुग्रह और सच्चाई से भरपूर होकर आया था।" इसे व्यवस्थित धर्मशास्त्र की भाषा में कहें तो, पवित्र आत्मा—परमेश्वर की आत्मा—बिना किसी मिलावट के, यीशु मसीह के "दैवीय स्वरूप" (पूरी तरह से परमेश्वर होने) और उनके "मानवीय स्वरूप" (पूरी तरह से इंसान होने) दोनों को पूरी तरह से मानती और प्रकट करती है। केवल वे ही जो इस महान सुसमाचार की सच्चाई को बिना डगमगाए सिखाते और प्रचार करते हैं, वे ही सच्चाई के सच्चे शिक्षक और पवित्र आत्मा वाले लोग हैं जो परमेश्वर के हैं।

तीसरा, बाइबिल कहती है कि हम परमेश्वर के हैं और हमने अपने विरोधियों पर पक्की जीत हासिल कर ली है।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 4:4 को देखें। गहरे धोखे के बढ़ते सैलाब के बीच, प्रेरित यूहन्ना संतों की अटूट पहचान और शानदार जीत की घोषणा करते हैं: "हे बच्चों, तुम परमेश्वर के हो, और तुमने उन पर जीत हासिल की है, क्योंकि जो तुममें है, वह उससे कहीं ज़्यादा महान है जो दुनिया में है" (NKJV)। प्रिय लोगों, अगर हम सच में यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, तो हमें अपने जीवन के हर पहलू में एक पवित्र और अलग जीवन जीना चाहिए। पवित्र जीवन का मतलब है, सीधे शब्दों में कहें तो, एक "संत" का जीवन। जैसा कि प्रेरित पौलुस ने रोमियों की पत्री में कहा है, हम वे लोग हैं जिन्हें यीशु मसीह का होने के लिए बुलाया गया है (रोमियों 1:6) और पवित्र संत बनने के लिए बुलाया गया है (वचन 7)। इसलिए, संत वह नहीं है जिसका एक पैर इस दुनिया में हो या जो इसी दुनिया का हो; बल्कि, उसे यह स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए कि वह पूरी तरह और केवल प्रभु का है। हमें दुनिया से अलग जीवन जीना चाहिए, किसी भी तरह का समझौता नहीं करना चाहिए, और हर दिन प्रभु की पूर्ण पवित्रता को पाने की कोशिश करनी चाहिए। मसीह के लहू से शुद्ध किए गए संत की आध्यात्मिक ज़िम्मेदारी यह है कि वह इस पापी दुनिया के तौर-तरीकों से पूरी तरह नाता तोड़ ले। हमें पाप से पूरी तरह अलग जीवन जीने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। जैसे पानी और तेल कभी नहीं मिल सकते, वैसे ही एक संत—जो ज्योति की शानदार संतान है—अंधेरी दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चल सकता और न ही उसके साथ कोई गठबंधन कर सकता है। दुनिया के ज़बरदस्त धोखे के बावजूद इस पवित्र अंतर को मज़बूती से बनाए रखने के लिए, हमारी

आत्मा में प्रभु के प्रति अपनापन और दृढ़ता बनी रहनी चाहिए। जैसा कि प्रभु की 'महायाजक वाली प्रार्थना' में कहा गया है, हमें यह अच्छी तरह याद रखना चाहिए कि भले ही हम इस दुनिया में रहते हैं, लेकिन हम "दुनिया के नहीं हैं" (यूहन्ना 17:16)। हमें एक पल के लिए भी यह नहीं भूलना चाहिए कि हम केवल प्रभु के हैं—वह पूर्ण ज्योति जिसमें अंधेरे का ज़रा भी अंश नहीं है।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 4:4 पर एक बार फिर गहराई से सोचें। एक अंधेरी आध्यात्मिक लड़ाई के बीच खड़े विश्वासियों को संबोधित करते हुए, प्रेरित यूहन्ना एक बड़ी जीत का आधार बताते हैं: "हे बच्चों, तुम परमेश्वर के हो और तुमने उन पर जीत हासिल कर ली है, क्योंकि जो तुममें है, वह उससे कहीं ज़्यादा महान है जो दुनिया में है" (NKJV)। "बच्चों, तुम परमेश्वर के हो और तुमने झूठे नबियों पर जीत हासिल कर ली है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो तुम्हारे भीतर है, वह उस शैतान से ज़्यादा शक्तिशाली है जो दुनिया में है" (Contemporary Korean Version)। अपने प्रिय विश्वासियों की पहचान बताने के बाद—यह पुष्टि करते हुए कि वे पूरी तरह से परमेश्वर के हैं—यूहन्ना घोषणा करते हैं कि परमेश्वर की संतान होने के नाते, उन्होंने झूठे नबियों के समूह पर पहले ही निर्णायक रूप से "जीत हासिल कर ली है"। यहाँ यूहन्ना द्वारा इस्तेमाल की गई क्रिया "जीत हासिल कर ली है" एक मज़बूत आध्यात्मिक भरोसा दिलाती है कि जीत पहले ही पूरी हो चुकी है। तो फिर, वह असली राज़ क्या है जो कमज़ोर विश्वासियों—जो यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता मानते हैं और परमेश्वर के हैं—को ज़बरदस्त झूठे नबियों के धोखे और हमलों को पूरी तरह से तोड़ने और जीत हासिल करने में मदद करता है? यूहन्ना का बयान साफ़ है। यह हमारी अपनी बुद्धि या इच्छाशक्ति की वजह से नहीं है; बल्कि, इसलिए है क्योंकि हमारे अंदर रहने वाला परमेश्वर का आत्मा—सच्चाई का पवित्र आत्मा—उस शैतान से कहीं ज़्यादा महान और शक्तिशाली है जिसका दुनिया पर कब्ज़ा है। हमारे अंदर रहने वाला पवित्र आत्मा शैतान की काली ताक़त से कहीं ज़्यादा महान है। इसलिए, जो ईसाई सर्वशक्तिमान पवित्र आत्मा का अपने दिलों में स्वागत करते हैं और पूरी तरह से परमेश्वर के हैं, वे उस आत्मा की शक्ति से झूठे नबियों के सभी धोखों और लुभावनी बातों को निर्णायक रूप से हरा सकते हैं और उन पर जीत हासिल कर सकते हैं। तो फिर, बाइबल इन "झूठे नबियों" की असली प्रकृति को कैसे उजागर करती है जो समुदाय को बर्बाद करने के लिए घुसपैठ करते हैं, और साथ ही उस "शैतान" को भी जो पर्दे के पीछे काम करता है? आगे दिए गए पवित्र शास्त्र के ज़रिए, हमारा मकसद इन आध्यात्मिक दुश्मनों की असली पहचान को साफ़ तौर पर समझना है।

(1) झूठे नबियों की असली प्रकृति

सबसे पहले, झूठे नबी गलत शिक्षाओं (विधर्म) को बढ़ावा देने वाले होते हैं जो सच्चाई को तोड़-मरोड़ देते हैं और समुदाय को बर्बादी की ओर ले जाते हैं। 2 पतरस 2:1 उनके आध्यात्मिक धोखे को इस तरह उजागर करता है: "लेकिन लोगों के बीच झूठे नबी भी थे, ठीक वैसे ही जैसे तुम्हारे बीच झूठे शिक्षक होंगे। वे चुपके से विनाशकारी गलत शिक्षाएँ लाएँगे, यहाँ तक कि उस प्रभु का भी इनकार करेंगे जिसने उन्हें मोल लिया था—और अपने ऊपर तेज़ी से विनाश बुलाएँगे।" आखिरी दिनों में आने वाले झूठे शिक्षक चालाकी और चोरी-छिपे कलीसिया में "विनाशकारी गलत शिक्षाएँ" लाते हैं—ऐसी शिक्षाएँ जो विश्वासियों को हमेशा की बर्बादी की ओर ले जाती हैं। आखिरकार, वे ऐसे लोग होते हैं जो प्रभु यीशु मसीह का साफ़ तौर पर इनकार करते हैं—जिन्होंने उन्हें अपने ही लहू से मोल लिया था—और अपने ऊपर जल्द आने वाली नरक की सज़ा और विनाश बुला लेते हैं।

दूसरा, वे पाखंडी होते हैं जिनका बाहरी रूप उनकी अंदरूनी सच्चाई से बिल्कुल अलग होता है। मत्ती 7:15 में, प्रभु ने एक कड़ी चेतावनी दी: "झूठे नबियों से सावधान रहो। वे तुम्हारे पास भेड़ों के भेष में आते हैं, लेकिन अंदर से वे खूंखार भेड़िये होते हैं।" बाहर से, वे बहुत ही कोमल और वफ़ादार भेड़ों की तरह दिखते हैं, लेकिन असल में, वे लालची भेड़ियों से ज़्यादा कुछ नहीं होते जो संतों की आत्माओं को लूटने और निगलने पर आमादा होते हैं। तीसरा, वे धोखे वाली अलौकिक घटनाओं के ज़रिए चुने हुए लोगों को भी डगमगाने और परेशान करने की पूरी कोशिश करते हैं। मत्ती 24:11 और 24 में अंत के समय के संकेतों के बारे में बताया गया है: "बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठेंगे और बहुत से लोगों को धोखा देंगे... झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठेंगे और बड़े-बड़े चमत्कार और अद्भुत काम दिखाएंगे ताकि, अगर हो सके, तो चुने हुए लोगों को भी धोखा दे सकें।" आकर्षक चमत्कार और अद्भुत काम दिखाकर, वे बेरहमी से उन लोगों का शिकार करते हैं जो सच्चाई पर मज़बूती से टिके नहीं हैं। वे परमेश्वर के चुने हुए लोगों को भी धोखे के दलदल में खींचने के लिए हर मुमकिन तरीका अपनाते हैं और किसी भी हद तक जा सकते हैं।

(2) पर्दे के पीछे छिपे शैतान की पहचान: इन झूठे भविष्यद्वक्ताओं को चलाने वाला और कलीसिया को कुचलने की कोशिश करने वाला काला मास्टरमाइंड कोई और नहीं, बल्कि शैतान है।

बाइबल मुख्य रूप से चार विशेषताओं के ज़रिए शैतान के स्वभाव को बताती है।

पहला, शैतान असल में "झूठ का पिता और हत्यारा" है। जैसा कि यूहन्ना 8:44 में कहा गया है, उसमें सच्चाई का ज़रा भी अंश नहीं है; जब भी वह झूठ बोलता है, तो वह अपना असली स्वभाव दिखाता है, और वह शुरू से ही आत्माओं का हत्यारा रहा है। झूठे चरवाहों के मुँह से झूठी शिक्षाएँ इसलिए निकलती हैं क्योंकि उनका आध्यात्मिक पिता शैतान है।

दूसरा, शैतान एक खूंखार शिकारी की तरह भूखा और आक्रामक है। 1 पतरस 5:8 हमें आध्यात्मिक रूप से सतर्क रहने के लिए जगाता है: "संभलकर रहो और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान दहाड़ते हुए शेर की तरह घूमता रहता है और तलाश में रहता है कि किसे निगल जाए।" शैतान घूमता रहता है और उन विश्वासियों की आत्माओं का शिकार करने की ताक में रहता है जो असावधान हो गए हैं और सो गए हैं।

तीसरा, शैतान ही सबसे पहला पापी है। 1 यूहन्ना 3:8 कहता है, "जो पाप करता है वह शैतान का है, क्योंकि शैतान शुरू से ही पाप करता आया है।" फिर भी, डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। इसके बाद की आयतें एक शानदार खुशखबरी सुनाती हैं: "परमेश्वर का पुत्र इसी मकसद से प्रकट हुआ था कि वह शैतान के कामों को नष्ट कर दे।" यीशु मसीह के अवतार और क्रूस ने पाप और मृत्यु के उस जाल को पूरी तरह से तोड़ दिया जिसे शैतान ने बुना था।

चौथा, शैतान एक धोखेबाज़ है जो पूरी दुनिया को गुमराह करता है, फिर भी आखिरकार वह एक हारा हुआ दुश्मन है जिसे हमेशा की सज़ा मिलनी तय है। जहाँ प्रकाशितवाक्य 12:9 में शैतान की पहचान उस व्यक्ति के तौर पर की गई है "जो पूरी दुनिया को धोखा देता है," वहीं प्रकाशितवाक्य 20:2 और 10 में शैतान के बुरे अंत की भविष्यवाणी की गई है: "उसने उस अजगर को—जो पुराना साँप है और शैतान भी—पकड़ लिया और उसे हज़ार साल के लिए बाँध दिया... शैतान, जिसने उन्हें धोखा दिया था, उसे आग और गंधक की झील में डाल दिया गया, जहाँ वह जानवर और झूठा नबी भी हैं। और उन्हें दिन-रात हमेशा-हमेशा के लिए तड़पाया जाएगा।"

प्यारे लोगों, यही वह शानदार वजह है कि हमें डरने या घबराने की ज़रूरत नहीं है—चाहे झूठे नबियों का धोखा कितना भी भयानक क्यों न हो, या उनके पीछे छिपा शैतान शेर की तरह कितनी भी ज़ोर से क्यों न दहाड़े: झूठे नबियों, उस जानवर और शैतान—जो पूरी दुनिया को धोखा देने वाला है—का आखिरी अंजाम आग और गंधक की झील में सज़ा पाना है, जो हमेशा जलती रहती है। सबसे बड़ी बात यह है कि हममें—जो सेनाओं के प्रभु परमेश्वर के हैं—"सत्य का पवित्र आत्मा" वास करता है और राज करता है; वह उस दुष्ट शैतान से कहीं ज़्यादा महान और सर्वशक्तिमान है जो दुनिया पर हावी है। मेरी प्रार्थना है कि पवित्र आत्मा की शक्ति से—जिसने पहले ही जीत हासिल कर ली है—आप और मैं हिम्मत के साथ अपने विरोधियों के सभी झूठों को कुचल सकें और हर दिन विश्वास की बड़ी जीत का ऐलान कर सकें।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 4:4 में दी गई महान घोषणा को ध्यान में रखते हुए, उन विरोधियों के असली स्वभाव पर विचार करें जिनकी हमने अभी चर्चा की है। शैतान और झूठे नबी स्वभाव से ही "धोखेबाज़" होते हैं जो पूरी दुनिया को गुमराह करते हैं (मत्ती 24:11; प्रकाशितवाक्य 20:10)। वे दिखावे और हर तरह के धोखे वाले संकेतों का इस्तेमाल करते हैं, और पूरी कोशिश करते हैं—अगर हो सके तो—कि वफादार ईसाइयों को भी, जो पवित्र हैं और जिन्हें परमेश्वर ने चुना है, धोखे के दलदल में खींच लें (मत्ती 24:11, 24)।

धोखे के ऐसे ज़बरदस्त तूफ़ान के बीच, बाइबल परमेश्वर की आत्मा—पवित्र आत्मा—के बारे में क्या कहती है, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने वालों के रूप में हमारे भीतर वास करती है? प्रेरित यूहन्ना द्वारा लिखी गई पत्रियों और सुसमाचारों के ज़रिए, हम अपने भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा की शानदार पहचान की पुष्टि पाँच महान घोषणाओं के माध्यम से कर सकते हैं।

पहला, पवित्र आत्मा स्वभाव से ही पूर्ण सत्य है, और किसी भी तरह की मिलावट या विकृति से पूरी तरह मुक्त है। "...आत्मा ही सत्य है" (1 यूहन्ना 5:6)।

दूसरा, पवित्र आत्मा उस रहस्यमय मिलन और वास की गारंटी है—जिसके द्वारा विश्वास करने वाला प्रभु में बना रहता है और प्रभु विश्वास करने वाले में बने रहते हैं। "जो उसकी आज्ञाओं को मानता है, वह उसमें बना रहता है, और वह उसमें। और इससे हम जानते हैं कि वह हममें बना रहता है, उस आत्मा के द्वारा जो उसने हमें दिया है... इससे हम जानते हैं कि हम उसमें बने रहते हैं, और वह हममें, क्योंकि उसने हमें अपनी आत्मा दी है" (1 यूहन्ना 3:24; 4:13)।

तीसरा, पवित्र आत्मा वह सहायक है जो हमारी मदद करती है और वह महान शिक्षक है जो हमें प्रभु के वचनों को समझने में सक्षम बनाती है। "परन्तु सहायक, यानी पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब कुछ सिखाएगी, और उन सभी बातों को तुम्हें याद दिलाएगी जो मैंने तुमसे कही थीं" (यूहन्ना 14:26)।

चौथा, पवित्र आत्मा ही वह है जो सबसे स्पष्ट रूप से केवल यीशु मसीह की गवाही देती है—जो मार्ग, सत्य और जीवन है। “लेकिन जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूंगा—सत्य का आत्मा जो पिता से निकलता है—तो वह मेरे बारे में गवाही देगा” (यूहन्ना 15:26)।

पांचवीं बात, पवित्र आत्मा एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक है जो वफादारी से हमारे जीवन को स्वर्ग के शाश्वत नियमों और सारे सत्य की ओर ले जाता है। “लेकिन जब वह, यानी सत्य का आत्मा आएगा, तो वह तुम्हें सारे सत्य का मार्ग दिखाएगा; क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा, बल्कि जो कुछ सुनेगा वही कहेगा; और वह तुम्हें आने वाली बातें बताएगा” (यूहन्ना 16:13)।

प्रियजनों, यही कारण है कि जो हमारे भीतर है, वह धोखेबाज दुनिया से कहीं अधिक महान है। शैतान—जो झूठ का पिता है—के विपरीत, पवित्र आत्मा, जो स्वयं “सत्य” है, हमारे भीतर वास करता है। जहाँ शैतान हमें धोखा देने और नष्ट करने की कोशिश करता है, वहीं पवित्र आत्मा, हमारा सहायक, हमें सिखाता है और प्रभु के सभी वचनों की याद दिलाता है, और हमें केवल सत्य की सुरक्षित गोद में ले जाता है। जब हम पवित्र आत्मा के इस अद्भुत वास पर भरोसा करते हैं और उसकी आवाज़ को पूरी तरह से सुनते हैं, तो झूठे नबियों का कोई भी

चालाक धोखा हमें गिरा नहीं सकता; क्योंकि सत्य के सर्वशक्तिमान आत्मा ने हमारे भीतर हमारे विरोधियों पर पहले ही विजय प्राप्त कर ली है।

केवल तभी जब हम पवित्र आत्मा के बारे में उन पाँच बातों को—जिन पर हमने अब तक चर्चा की है—आज के वचन (1 यूहन्ना 4:4) में निहित गहरे सत्य से जोड़ते हैं, तो विश्वास करने वाले को मिलने वाली जीत का पूरा स्वरूप स्पष्ट रूप से प्रकट होता है। जो हमारे भीतर वास करता है—यानी वे जो परमेश्वर के हैं—वह कोई और नहीं बल्कि 'सत्य का पवित्र आत्मा' है (यूहन्ना 16:13; 1 यूहन्ना 5:6)। पवित्र आत्मा हमारे भीतर केवल यीशु मसीह के बारे में तेजस्वी गवाही देता है, जो मार्ग, सत्य और जीवन है (यूहन्ना 15:26)। वह प्रभु द्वारा कही गई हर बात को याद दिलाता है, हमारी आत्माओं को विस्तार से शिक्षा देता है (यूहन्ना 14:26), और अंततः हमें सारे सत्य की सुरक्षित गोद में ले जाता है (यूहन्ना 16:13)। पवित्र आत्मा के इस खास काम के ज़रिए, हमें उस अद्‌भुत मिलन के रहस्य का गहरा यकीन हो जाता है—कि यीशु मसीह हमारे अंदर रहते हैं और हम उनमें रहते हैं (1 यूहन्ना 3:24; 4:13)। इसका शानदार नतीजा यह होता है कि संत—जो परमेश्वर के हैं और उद्धारकर्ता के तौर पर यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं—वे झूठे नबियों की उन सभी चालों को कामयाबी से कुचलकर चकनाचूर कर देते हैं जो कलीसिया और घर को हिलाने की कोशिश करती हैं।

तो फिर, पवित्र आत्मा से भरे संत के लिए अपने विरोधियों पर जीत पाने का असली राज़ क्या है? यह इस बात में है कि हमारे अंदर मौजूद पवित्र आत्मा लगातार हमारी आत्माओं को 'सुसमाचार की ऐतिहासिक सच्चाई' की याद दिलाता है: कि यीशु मसीह ने एक ही बार में शैतान का सिर कुचल दिया और क्रूस पर पूरी जीत हासिल की। पवित्र आत्मा ही हमारे होंठों पर यह बात लाता है कि हमारे विरोधी बस हारे हुए दुश्मन हैं, जिन्हें दो हज़ार साल पहले क्रूस पर पूरी तरह से बेअसर कर दिया गया था। इसके अलावा, पवित्र आत्मा, जो हमारा सलाहकार है, हमारी सुस्त आध्यात्मिक इंद्रियों को जगाता है और प्रभु के जीवित और असरदार वचन के ज़रिए हमें अभी भी सिखाता है। वह वफ़ादारी से हमें पूरी सच्चाई की ओर ले जाता है। इस तरह, वह हमें झूठे नबियों, झूठे शिक्षकों और झूठे पादरियों के नकली सुसमाचारों को पहचानने और उन पर जीत पाने के काबिल बनाता है, जिन्होंने चालाकी से कलीसिया और दुनिया दोनों में घुसपैठ की है। चाहे धोखे की लहरें हम पर कितनी भी ज़ोर

से क्यों न टकराएँ, क्योंकि हमारे अंदर मौजूद पवित्र आत्मा इस दुनिया के शैतान से कहीं ज़्यादा महान है, हम आज विजयी होकर खड़े रहेंगे।

प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:14 के आखिरी हिस्से में इस अद्भुत आध्यात्मिक रहस्य को ज़ोरदार ढंग से बताया है कि कैसे विश्वास करने वाले विरोधी पर जीत पाते हैं: "...जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ क्योंकि तुम मज़बूत हो, और परमेश्वर का वचन तुममें बना रहता है, और तुमने उस दुष्ट पर जीत पाई है" (NKJV)। "...जवानों, मैं यह पत्र इसलिए लिखता हूँ क्योंकि तुम हमेशा परमेश्वर के वचन पर मज़बूती से खड़े रहते हो और तुमने शैतान पर जीत पाई है" (Contemporary Korean Version)। इस खुली सच्चाई को हमारे मौजूदा हालात पर लागू करें। बस एक ही राज़ है जिससे आप और मैं—परमेश्वर की संतान के तौर पर—शैतान के क्रूर प्रलोभनों से लड़ सकते हैं और उन पर जीत पा सकते हैं, जो हमें अपने साथी विश्वासियों से जलन और नफ़रत करने के लिए उकसाता है: वह यह है कि हम आध्यात्मिक रूप से मज़बूत हैं, और परमेश्वर का जीवित, असरदार वचन हमारे दिलों में बसता और धड़कता है। "हम मज़बूत हैं" कहने का मतलब यह नहीं है कि हमारी शारीरिक हालत या इच्छाशक्ति बहुत असाधारण है। मैं अपने पापी स्वभाव के कारण बहुत कमज़ोर हूँ; मैं इसलिए मज़बूत बन पाता हूँ क्योंकि परमेश्वर का शक्तिशाली वचन, जो मेरे अंदर जीवित और सक्रिय है, मुझे संभाले रखता है।

इसके अलावा, यह बात कि परमेश्वर का वचन हमारे अंदर अटूट रूप से बसा हुआ है, इस बात का पक्का सबूत है कि हमारा विश्वास—जो उस वचन पर पूरी तरह भरोसा करता है और उसके एक अक्षर पर भी शक नहीं करता—चट्टान पर मज़बूती से टिका है। इसलिए, अपनी चिट्ठी—1 यूहन्ना 5:4—के आखिर में प्रेरित यूहन्ना जीत का एक शानदार गीत गाते हैं जिसे इस धरती पर रहने वाले परमेश्वर के राज्य के लोगों को अपने दिलों में संजोकर रखना चाहिए: "क्योंकि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह दुनिया पर जीत हासिल करता है। और यही वह जीत है जिसने दुनिया पर जीत हासिल की है—हमारा विश्वास" (रिवाइज़्ड न्यू कोरियन वर्शन)। "क्योंकि परमेश्वर का कोई भी बच्चा दुनिया पर जीत हासिल कर सकता है। यह हमारा विश्वास ही है जिसने दुनिया पर जीत हासिल की है" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। जीत का वह अचूक हथियार जो हमें शैतान के धोखे को तोड़ने और दुनिया पर जीत हासिल करने में मदद करता है, वह मेरा अपना ज्ञान या अनुभव नहीं है, बल्कि एक 'जीवित विश्वास' है जो त्रिएक परमेश्वर और उनके वचन को मज़बूती से थामे रहता है। जब वचन हमारे अंदर बसता है और हमारा

विश्वास अडिग होता है, तो हम कैन के रास्ते को ठुकरा देंगे और सच्चे विजेताओं के रूप में खड़े होंगे जो आखिरकार भाईचारे के प्यार वाले राज्य के महान नियम को पूरा करते हैं।

चौथा, बाइबल बताती है कि हम सच्चाई की आत्मा और धोखे की आत्मा के बीच साफ़-साफ़ फ़र्क कर सकते हैं।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 4:6 को देखिए। प्रेरित यूहन्ना सच्चाई और झूठ की ताकतों के बीच फ़र्क करने का सबसे बड़ा पैमाना बताते हैं: "हम परमेश्वर की ओर से हैं। जो कोई परमेश्वर को जानता है वह हमारी बात सुनता है, और जो परमेश्वर की ओर से नहीं है वह हमारी बात नहीं सुनता। इसी से हम सच्चाई की आत्मा और धोखे की आत्मा को पहचानते हैं" (रिवाइज़्ड न्यू कोरियन वर्शन)। "लेकिन क्योंकि हम परमेश्वर के हैं, इसलिए जो लोग परमेश्वर को जानते हैं वे हमारी बात सुनते हैं, जबकि जो नहीं जानते, वे हमारी बात नहीं सुनते। इससे हम सच्चाई की आत्मा और झूठ की आत्मा के बीच फ़र्क कर सकते हैं" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। उपदेशक 10:10 का पहला भाग हमें बुद्धिमानी की एक बात सिखाता है: "अगर लोहे की कुल्हाड़ी की धार कुंद हो जाए और उसे तेज़ न किया जाए, तो उसे चलाने में ज़्यादा ताकत लगती है।" अगर कुंद चाकू को समय पर तेज़ न किया जाए, तो एक पेड़ काटने में भी दोगुनी मेहनत लगती है। यह बात हमारी आध्यात्मिक ज़िंदगी पर भी उतनी ही लागू होती है। जो ईसाई "आत्मा की तलवार"—यानी परमेश्वर का शक्तिशाली वचन (इफिसियों 6:17)—को कुंद रखते हैं, उन्हें अपने विश्वास के सफ़र में ज़्यादा आध्यात्मिक नुकसान और तकलीफ़ का सामना करना पड़ता है। जो विश्वासी परमेश्वर के वचन के ज़रिए अपने मन की धार को तेज़ नहीं रखते, वे पवित्र आत्मा से मिलने वाली स्वर्गीय शक्ति पर भरोसा करने के बजाय, अपनी सीमित इंसानी ताकत और शारीरिक मेहनत पर ही निर्भर रहते हैं। इसका दुखद नतीजा यह होता है कि वे आध्यात्मिक संवेदनहीनता के दलदल में फँस जाते हैं। अपनी ज़िंदगी के लिए प्रभु की खास इच्छा को समझने की आध्यात्मिक समझ न होने के कारण, उन्हें रोज़मर्रा की ज़िंदगी में बहुत उलझन और आध्यात्मिक ठहराव का अनुभव होता है। धोखे की तेज़ लहरों का सामना करते हुए, वे बिना किसी मकसद के भटकते रहते हैं और उन्हें समझ नहीं आता कि किस तरफ़ जाएँ।

इसके उलट, जो ईसाई परमेश्वर के जीवित वचन से अपने मन की धार को तेज़ रखते हैं, उनकी ज़िंदगी बिल्कुल अलग होती है। उनमें एक पवित्र आध्यात्मिक संवेदनशीलता और गहरी समझ होती है, जिससे वे दुनिया की असलियत को देख पाते हैं। वे अपने अंदर रहने वाले पवित्र आत्मा की धीमी आवाज़ और मार्गदर्शन के प्रति

हमेशा चौकस और तैयार रहते हैं। नतीजतन, सेवा और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में आगे बढ़ते हुए, वे सही-सही समझ पाते हैं कि आत्मा कौन से दरवाज़े बंद करता है और कौन से शानदार ढंग से खोलता है। यीशु की आत्मा के कोमल मार्गदर्शन को पूरी तरह मानते हुए और अपनी ज़िद्दी इच्छा को दबाते हुए, वे अंधेरे में डूबी दुनिया में यीशु मसीह के जीवन देने वाले सुसमाचार का निडरता और बिना किसी हिचकिचाहट के प्रचार करते हैं। सिर्फ़ वे ही, जो वचन की तलवार को तेज़ करते हैं, धोखे की भावना को तोड़ पाएँगे और सच्चाई की आत्मा का अनुसरण करते हुए जीत की ओर बढ़ पाएँगे।

प्यारे भाइयों और बहनों, हमें ऐसे ईसाई नहीं बने रहना चाहिए जो शरीर की इच्छाओं में फँसे हुए बच्चों जैसे हों; बल्कि हमें "आत्मिक ईसाई" बनना चाहिए जो आत्मा में पूरी तरह परिपक्व हों। हमें अब मूर्खतापूर्ण जीवन नहीं जीना चाहिए—जिसमें हम उन अविश्वासियों की तरह शरीर की इच्छाओं और वासनाओं के पीछे भागते हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते, और समुदाय के भीतर ईर्ष्या और झगड़े जैसे बुरे और पापी फल पैदा करते हैं। इसके बजाय, हमें हिम्मत के साथ उस आत्मिक नौसिखिएपन की स्थिति से बाहर निकलना चाहिए जिसमें हम परमेश्वर के वचन को भी ठीक से पचा नहीं पाते। जैसा कि प्रेरित पौलुस ने कहा है, हमें परिपक्व और दृढ़ ईसाई बनकर खड़ा होना चाहिए जिन्होंने मसीह के कद की पूर्णता को प्राप्त कर लिया है। इसके लिए, हमें केवल दूध पीने वाले बच्चों के स्तर से आगे बढ़कर "ठोस भोजन"—यानी बाइबल की गहरी सच्चाइयों—को पचाने की आत्मिक शक्ति विकसित करनी चाहिए। जैसा कि इब्रानियों 5:14 में कहा गया है, ठोस भोजन परिपक्व लोगों के लिए है, जिन्होंने लगातार अभ्यास से अच्छे और बुरे के बीच अंतर करना सीख लिया है। ऐसी गहरी आत्मिक समझ के साथ, हमें एक गरिमापूर्ण जीवन जीना चाहिए जिसमें हम हर पल परमेश्वर की अच्छी और उत्तम इच्छा को चुनें और शैतान द्वारा बोई गई बुराई की ज़रा सी भी झलक को दृढ़ता से अस्वीकार करें। इसके अलावा, हमें अपने विचारों और जिद्दी इच्छाओं को पूरी तरह से क्रूस पर चढ़ा देना चाहिए और केवल पवित्र आत्मा के कोमल मार्गदर्शन और शासन के अधीन रहना चाहिए। अपने दैनिक जीवन में, हमें आत्मा के फल—प्रेम और शांति—को भरपूर मात्रा में पैदा करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम शैतान की बुरी चालों और फूट डालने की कोशिशों को तोड़ देंगे, और पवित्र आत्मा में कलीसिया की एकता को लगन से बनाए रखेंगे—वह कलीसिया जिसे प्रभु ने अपने ही लहू से खरीदा है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि स्वर्ग के राज्य का आनंद और विजय उन बच्चों के जीवन में हमेशा बनी रहे जो सच्चाई की आत्मा के अनुसार चलते हैं।

आज के वचन—1 यूहन्ना 4:5–6—में प्रेरित यूहन्ना सच्चाई और झूठ की ताकतों के बीच अंतर करने का सबसे बड़ा पैमाना बताते हैं: "वे दुनिया के हैं और इसलिए दुनिया के नज़रिए से बात करते हैं, और दुनिया उनकी सुनती है। हम परमेश्वर के हैं, और जो कोई परमेश्वर को जानता है वह हमारी सुनता है; लेकिन जो परमेश्वर का नहीं है वह हमारी नहीं सुनता। इसी तरह हम सच्चाई की आत्मा और झूठ की आत्मा को पहचानते हैं" (NIV)। “झूठे नबी दुनिया के होते हैं और दुनिया की बातें करते हैं, और दुनिया उनकी बात सुनती है। लेकिन, क्योंकि हम परमेश्वर के हैं, इसलिए जो लोग परमेश्वर को जानते हैं वे हमारी बात सुनते हैं, जबकि जो नहीं जानते, वे हमारी बात नहीं सुनते। इससे हम सच्चाई की आत्मा और झूठ की आत्मा के बीच फ़र्क कर सकते हैं” (समकालीन कोरियाई संस्करण)। इस गंभीर वचन के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना साफ़ तौर पर दो ऐसे समूहों के बीच अंतर बताते हैं जिनके बीच कोई आध्यात्मिक बीच का रास्ता नहीं है। एक समूह में “वे लोग हैं जो परमेश्वर के हैं,” जो खुशी-खुशी अवतार के रहस्य को मानते हैं—कि अनंत यीशु मसीह शरीर धारण करके इस धरती पर आए (वचन 2)। सच्चाई की आत्मा उनके दिलों में बसती है; वे परमेश्वर की पवित्र संतान और संत हैं जो प्रभु की ज्योति फैलाते हैं। इसके विपरीत, दूसरे समूह में “वे लोग हैं जो दुनिया के हैं,” जो पूरी तरह से दुनिया की आत्मा के प्रभाव में हैं। उनके भीतर मसीह-विरोधी (Antichrist) की आत्मा और धोखे की आत्मा छिपी होती है जो सच्चाई का विरोध करती है; वे पाखंड का मुखौटा पहने शैतान की संतान और झूठे नबी हैं जो समुदाय को बर्बादी की ओर ले जाते हैं। प्रेरित यूहन्ना का इन दोनों के बीच इतना कड़ा फ़र्क बताने का कारण साफ़ है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम जिस आध्यात्मिक नागरिकता से जुड़े हैं, वही मूल रूप से इस दुनिया में हमारे बोले गए शब्दों और परमेश्वर के वचन को सुनने के हमारे नज़रिए को तय करती है।

1 यूहन्ना 4:5 में, प्रेरित यूहन्ना दुनिया के लोगों की दो घातक आध्यात्मिक विशेषताओं को कड़ाई से उजागर करते हैं।

(1) पहली विशेषता यह है कि वे जो भाषा बोलते हैं, वह पूरी तरह से “दुनिया की भाषा” होती है।

यहाँ, “दुनिया के लोग” से तात्पर्य उन झूठे नबियों से है जो अपनी प्रकृति से ही समुदाय के लिए खतरा पैदा करते हैं (1 यूहन्ना 4:1)। जैसा कि *वर्ड बाइबिलिकल कमेंट्री* (WBC) के विद्वान बताते हैं, ये आध्यात्मिक विरोधी

शैतान के एजेंट के रूप में काम करते हैं और मसीह-विरोधी की झूठ बोलने वाली आत्मा द्वारा नियंत्रित होते हैं। तो फिर, प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताई गई इस "दुनिया की भाषा" का असली स्वरूप क्या है? 1 यूहन्ना 2:16 शैतान के राज वाली इस दुनिया के बिगड़े हुए स्वभाव को साफ़-साफ़ बताती है: "क्योंकि दुनिया की हर चीज़—शरीर की लालसा, आँखों की लालसा और ज़िंदगी का घमंड—पिता की तरफ़ से नहीं, बल्कि दुनिया की तरफ़ से आती है।" इसे देखते हुए, झूठे चरवाहों और एंटीक्राइस्ट की ताक़तों की चालाकी भरी शिक्षाओं का सार तीन चीज़ों में सिमट जाता है: गिरी हुई "शरीर की लालसा"; "आँखों की लालसा" जो देखने की इच्छा जगाती है; और "ज़िंदगी का घमंड"—यानी इस धरती की नाशवान भौतिक दौलत और सम्मान के बारे में डींगें मारना, मानो वे सच में बहुत कीमती हों। उनके दिखावटी संदेश पवित्र परमेश्वर पिता की ओर से मिली स्वर्गीय बुद्धि बिल्कुल नहीं हैं; वे बस दुनिया की गिरी हुई इच्छाओं और लालच से निकली दुनियावी चालाकी भरी बातें हैं। इसलिए, दुनियावी बातें—जो ऐसी ज़िंदगी का गुणगान करती हैं जो शारीरिक है, लालसा से भरी है और जिसका अंत विनाश है—कभी भी परमेश्वर की अनंत "इच्छा" (1 यूहन्ना 2:17) को नहीं बतातीं। ऐसी बातें सिर्फ़ लालच और एंटीक्राइस्ट के छिपे हुए बुरे इरादों को ज़ाहिर करती हैं (वचन 18)। आखिर में, दुनिया के लोगों के संदेश का मकसद साफ़ है: यह ऐसी बात है जो चालाकी से इस बात से इनकार करती है कि यीशु, परमेश्वर का अनंत पुत्र, ही एकमात्र मसीहा—'क्राइस्ट'—है जो इंसानियत को बचाता है। भले ही वे मुँह से धार्मिकता का दिखावा करें, असल में उनके शब्द विनाशकारी और ज़हरीले होते हैं, जो परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र की दिव्यता का अपमान करते हैं और उसे नकारते हैं (वचन 22–23)। इसे एक वाक्य में कड़ाई से कहें तो: झूठे नबियों, झूठे चरवाहों और झूठे शिक्षकों द्वारा मंच से—भरोसेमंद लगने वाले दिखावे के साथ—कही गई दुनियावी बातें वह सच नहीं हैं जो हमारी आत्माओं को जीवन देती हैं; वे बेशर्म आध्यात्मिक 'झूठ' के अलावा कुछ नहीं हैं जो लोगों को नरक की अनंत सज़ा की ओर ले जाते हैं (वचन 22)।

(2) दूसरी बात, जब दुनिया के लोग दुनियावी बातें कहते हैं, तो 'दुनिया उनकी बात सुनती है और उनकी ओर खिंची चली जाती है' (1 यूहन्ना 4:5)।

दुनिया के लोगों की दूसरी खतरनाक विशेषता आध्यात्मिक जुड़ाव का सिद्धांत है—कि "एक जैसी चीज़ें एक-दूसरे को आकर्षित करती हैं।" जब आध्यात्मिक रूप से भ्रष्ट लोग दुनियादारी के झूठ और लालच भरी बातें

कहते हैं, तो बाइबल साफ़ कहती है: "...दुनिया उनकी बात सुनती है" (1 यूहन्ना 4:5)। एक तरह से, यह पूरी तरह से स्वाभाविक और निश्चित नतीजा है। जब इस दुनिया के झूठे नबी और झूठे चरवाहे ऐसे सांसारिक झूठ गढ़ते और सुनाते हैं जो शारीरिक इच्छाओं को खुश करते हैं, तो इस दुनिया के लोग—जो शैतान के हैं, जो उनका आध्यात्मिक पिता है—उस नकली सुसमाचार से मोहित हो जाते हैं और पूरे ध्यान से उसे सुनते हैं। जहाँ वे इन झूठी शिक्षाओं का उत्साहपूर्वक समर्थन करते हैं और उन पर ध्यान देते हैं, वहीं वे परमेश्वर के सच्चे सेवकों—जैसे प्रेरित यूहन्ना या वफादार प्रचारक—की आवाज़ को अनसुना कर देते हैं और उनसे मुँह मोड़ लेते हैं, जो बिना किसी समझौते के सत्य का वचन सुनाते हैं।

उदाहरण के लिए, जो लोग विश्वास नहीं करते, वे झूठे चरवाहों और शिक्षकों द्वारा फैलाई गई खतरनाक और झूठी शिक्षाओं से बहुत आसानी से सहमत हो जाते हैं और उन्हें मान लेते हैं: ऐसी शिक्षाएँ जो यीशु को मानवता के एकमात्र मसीह के रूप में नकारती हैं, परमेश्वर पिता की सर्वोच्चता और परमेश्वर पुत्र के देवत्व को कमज़ोर करती हैं, और पाखंडपूर्ण तरीके से यीशु मसीह के पूर्ण अवतार और क्रूस पर उनके प्रायश्चित बलिदान की ऐतिहासिक सच्चाइयों को मिटाने की कोशिश करती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनकी आध्यात्मिक सोच शैतान के झूठ से मेल खाती है।

दुनिया के लोगों के सामने आए इस आध्यात्मिक संकट के बिल्कुल विपरीत, प्रेरित यूहन्ना हमें—जो पूरी तरह से परमेश्वर के हैं—आज के वचन, 1 यूहन्ना 4:6 में क्या दिलासा और घोषणा देते हैं? दो शक्तिशाली घोषणाओं के माध्यम से, यूहन्ना हमें परमेश्वर के राज्य के नागरिकों की शानदार पहचान और पवित्र सुनने के रहस्य के बारे में बताते हैं।

(1) सबसे पहले, परमेश्वर के लोगों के रूप में, हम वे लोग हैं जो "परमेश्वर को गहराई से जानते हैं," जो अनंत सृष्टिकर्ता है (1 यूहन्ना 4:6)। प्रेरित यूहन्ना 1 यूहन्ना 4:6 में जो पहली बड़ी घोषणा करते हैं, वह हमारी पहचान के शानदार विशेषाधिकार के बारे में है: "हम परमेश्वर की ओर से हैं, और जो कोई परमेश्वर को जानता है, वह हमारी बात सुनता है..."। मसीह के लहू से शुद्ध होकर और परमेश्वर के होकर, आप और मैं असल में वे लोग हैं जो "परमेश्वर को जानते हैं।" यह कहने का मतलब कि हम परमेश्वर को जानते हैं, केवल बौद्धिक सहमति से

कहीं ज़्यादा है। परमेश्वर की सम्मानित संतान (3:2) होने के नाते, हम अपने रोज़मर्रा के जीवन में परमेश्वर पिता—जिन्होंने अपने एकलौते पुत्र को दिया—और उनके पुत्र, यीशु मसीह, जो अनंत जीवन के प्रभु हैं (1:3), के साथ प्रेम की एक अटूट, व्यावहारिक और स्थायी संगति साझा करते हैं। दूसरे शब्दों में, हम दृढ़ता से विश्वास करते हैं कि यीशु, जो वादा किए गए मसीहा हैं, एक सच्चे और पूर्ण मनुष्य के शरीर में इस धरती पर आए (4:2)। हम दिल से यह भी मानते हैं कि प्रभु हमारे सभी पापों के लिए प्रायश्चित बने, और उन्होंने क्रूस पर पानी और लहू दोनों बहाए (2:2)। प्रायश्चित की इस कृपा के द्वारा क्षमा और उद्धार पाकर और परमेश्वर की संतान के रूप में अपनाए जाकर, हम कृपा के द्वार—यीशु मसीह—से होकर गुज़रे हैं ताकि हम ऐसे स्वर्गीय लोग बन सकें जो सचमुच परमेश्वर पिता को जानते हैं और उनकी आराधना करते हैं (4:6)।

प्रियजनों, हम न केवल अनंत परमेश्वर पिता को गहराई से जानते हैं, बल्कि हम सुसमाचार के उस शिखर पर भी खड़े हैं—जो एक कहीं अधिक अद्भुत और रहस्यमय सच्चाई है। यह वह महान सत्य है जिसकी घोषणा प्रेरित पौलुस ने गलातियों 4:9 के पहले भाग में की है: "पर अब जब तुम परमेश्वर को जानते हो—या यूँ कहें कि परमेश्वर तुम्हें जानते हैं..."। इससे पहले कि हम कभी परमेश्वर को जानते, सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने शुरू से ही हमें ध्यान में रखा था और पहले से ही हमें जान लिया था, और हमें अपनी संपत्ति के रूप में अपना लिया था। इस अपार कृपा के कारण—जिसमें ब्रह्मांड के सर्वोच्च सृष्टिकर्ता हमें याद रखते हैं और स्वीकार करते हैं कि "तुम मेरे हो"—हम उनके बच्चों के रूप में आत्मविश्वास के साथ चल सकते हैं, और उस प्रभु की आवाज़ पर भरोसा कर सकते हैं जो हमें जानते हैं, यहाँ तक कि धोखे से घिरी पीढ़ी के बीच भी।

(2) दूसरा, परमेश्वर के लोगों के रूप में, हम केवल प्रभु की धीमी, शांत आवाज़ और परमेश्वर के सच्चे सेवकों द्वारा घोषित सत्य के वचनों को सुनते हैं (1 यूहन्ना 4:6)।

प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 4:6 में परमेश्वर के राज्य के लोगों द्वारा अपनाए जाने वाले पवित्र "सुनने के सिद्धांत" के बारे में दूसरी ज़बरदस्त बात कही है: "हम परमेश्वर की ओर से हैं; जो कोई परमेश्वर को जानता है वह हमारी बात सुनता है, लेकिन जो परमेश्वर की ओर से नहीं है, वह हमारी बात नहीं सुनता..." यूहन्ना ने पहले भी इसी आध्यात्मिक सिद्धांत को—कि सुनना किसी व्यक्ति की आध्यात्मिक निष्ठा पर निर्भर करता है—यूहन्ना 8:47 के

पहले भाग में उतनी ही स्पष्टता से बताया था: "जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है..." यूहन्ना 10 में, वह हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की तुलना पवित्र "अच्छे चरवाहे" से करके और चरवाहे और भेड़ों के बीच के गहरे रिश्ते का वर्णन करके सुनने के इस रहस्य को साफ़ तौर पर समझाते हैं: "जब वह अपनी सभी भेड़ों को बाहर ले आता है, तो वह उनके आगे-आगे चलता है, और उसकी भेड़ें उसके पीछे-पीछे चलती हैं क्योंकि वे उसकी आवाज़ पहचानती हैं। लेकिन वे कभी किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेंगी; असल में, वे उससे दूर भाग जाएँगी क्योंकि वे अजनबी की आवाज़ नहीं पहचानतीं" (यूहन्ना 10:4–5)। परमेश्वर की संतानें—जिन्हें उसने अपने कीमती लहू से मोल लिया है—केवल प्रभु, यानी सच्चे चरवाहे की भरोसेमंद आवाज़ को पहचानती हैं और उस पर ध्यान देती हैं। संत, जिनके दिल परमेश्वर के वचन (आत्मा की तलवार) से तेज़ और जागरूक हो गए हैं, वे मंच से परमेश्वर के सच्चे सेवकों द्वारा बताए गए शुद्ध सत्य पर ध्यान देते हैं, जबकि शैतान के उन चालाक झूठों को मज़बूती से ठुकराते हैं और उनसे धोखा नहीं खाते जो आत्माओं को बर्बादी की ओर ले जाते हैं। स्वर्ग के राज्य के नागरिक खुशी-खुशी केवल मसीह के क्रूस के उस सुसमाचार को अपनाते हैं जिसका प्रचार प्रभु के सच्चे दूत करते हैं; इसके विपरीत, वे "दूसरे सुसमाचारों"—जो केवल कानों को अच्छा लगने वाली बातें कहते हैं—या बाइबल के विरुद्ध झूठी शिक्षाओं से पूरी तरह मुँह मोड़ लेते हैं—ठीक वैसे ही जैसे कोई भेड़ अजनबी की आवाज़ से भागती है। दूसरी ओर, जो लोग अंततः परमेश्वर का होने से इनकार कर देते हैं और दुनिया के तौर-तरीकों में फँसे रहते हैं, वे कभी भी उस शुद्ध सुसमाचार की आवाज़ पर ध्यान नहीं देते—जिसका प्रचार प्रभु के वफ़ादार सेवक इतनी तड़प और गंभीरता के साथ करते हैं। वे स्वाभाविक रूप से सत्य के वचनों और आत्मा को जगाने वाली फटकार के प्रति अपने कान बंद कर लेते हैं, और इसके बजाय लगातार ऐसे मीठे आध्यात्मिक झूठों की तलाश करते हैं जो शरीर की इच्छाओं को संतुष्ट करते हैं (1 यूहन्ना 4:6)। इस साफ़ फ़र्क से एक पक्का नतीजा निकालते हुए, प्रेरित यूहन्ना हमें परखने का सबसे ज़रूरी पैमाना बताते हैं: "इसी से हम सच्चाई की आत्मा और झूठ की आत्मा के बीच फ़र्क कर सकते हैं" (पद 6)। सिर्फ़ यह न देखकर कि क्या कहा जा रहा है, बल्कि यह देखकर कि कोई व्यक्ति क्या सुनता है और किस बात को मानता है, हम साफ़ तौर पर पहचान सकते हैं—जैसे लिटमस टेस्ट से होता है—कि वह आत्मा सच्चाई की है या बर्बादी के धोखे की।

अब मैं 1 यूहन्ना 4:1–6 पर इस लंबी सोच-विचार को खत्म करना चाहता हूँ। मत्ती 10:16 में, जब यीशु हमें इस कठोर दुनिया में भेजते हैं, तो वे हम सभी से—आपसे और मुझसे—बहुत भावुक होकर कहते हैं: "देखो, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच भेड़ों की तरह भेज रहा हूँ।" ठीक जैसा प्रभु ने बताया था, हम खुद को खतरनाक खतरों के बीच, भेड़ियों के झुंड से घिरी हुई कमज़ोर भेड़ों की स्थिति में पाते हैं। हम ऐसी दुनिया में अपना विश्वास बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं जो "भूखे भेड़ियों" से भरी हुई है—ऐसे झूठे चरवाहे जो बाहर से तो सबसे शांत और वफ़ादार भेड़ों का रूप धरते हैं, लेकिन अंदर से स्वार्थी महत्वाकांक्षा और कभी न खत्म होने वाले लालच से भरे होते हैं (मत्ती 7:15)। तो फिर, हम उन झूठे चरवाहों के खिलाफ़ कैसे पूरी तरह सतर्क, चौकस और सावधान रह सकते हैं जो भेड़ों का रूप धरकर आत्माओं का शिकार करते हैं? मुझे इसका जवाब यीशु के अगले शब्दों में मिला—खासकर मत्ती 10:16 के दूसरे हिस्से में कही गई गंभीर बात में: "...इसलिए साँपों की तरह समझदार और कबूतरों की तरह मासूम बनो।"

(1) सबसे पहले, विरोधियों के साथ व्यवहार करते समय हमें पूरी तरह से "साँपों की तरह समझदार" होना चाहिए।

साँप की समझदारी को अपनाते हुए, हमें उन लोगों पर पैनी और परखने वाली नज़र रखनी चाहिए जो आत्माओं को धोखा देने आते हैं, और हमेशा चौकस और सावधान रहना चाहिए (मत्ती 10:17)। हमें अपनी आध्यात्मिक सतर्कता क्यों नहीं छोड़नी चाहिए, इसका असली कारण यह है कि, जैसा कि प्रभु ने भविष्यवाणी की थी, इन आखिरी दिनों में हर जगह अनगिनत झूठे भविष्यद्वक्ता उठ रहे हैं और बहुत-सी आत्माओं को बुरी तरह गुमराह कर रहे हैं (24:11)। अभी भी, झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता धोखे भरे चमत्कार और अद्भुत काम कर रहे हैं, और परमेश्वर के पवित्र, चुने हुए लोगों को भी धोखे की खाई में खींचने की पूरी कोशिश कर रहे हैं (मरकुस 13:22)। इसलिए, हमें साँप जैसी परखने की शक्ति को बहुत तेज़ करना होगा, ताकि हम झूठे मसीह, झूठे नबियों, झूठे पादरियों और झूठे शिक्षकों द्वारा प्रचारित झूठे सुसमाचारों को पक्के तौर पर पहचान सकें; ये लोग चालाकी से चर्च के मंच और दुनिया, दोनों जगहों पर घुस आए हैं।

(2) दूसरी बात, परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में हमें पूरी तरह से "कबूतर की तरह मासूम" होना चाहिए।

यहाँ "मासूमियत" (या पवित्रता) के लिए इस्तेमाल किए गए मूल ग्रीक शब्द का मुख्य अर्थ है पूरी तरह से शुद्ध अवस्था, जिसमें कोई बाहरी चीज़ न मिली हो—यानी, बिना मिलावट वाली, साफ़ अवस्था (बिना मिलावट के, शुद्ध)। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब है कि जहाँ हमें दुनिया के प्रति साँप जैसी समझ और परख रखनी चाहिए, वहीं परमेश्वर पिता के सामने हमें कबूतर जैसी पवित्रता के साथ खड़ा होना चाहिए—जिसमें स्वार्थ या झूठ का ज़रा भी अंश न हो। इस आत्मिक पवित्रता को अंत तक बनाए रखने का एकमात्र राज़ साफ़ है: हमें अपने पूरे अस्तित्व को परमेश्वर के वचन पर टिकाना होगा—वह वचन जो मिट्टी की भट्टी में सात बार तपाया गया हो, पूरी तरह शुद्ध और हर तरह की अशुद्धि से मुक्त हो (भजन संहिता 12:6)। ठीक वैसे ही जैसे प्रेरित पतरस ने रोते हुए आग्रह किया था, हमें जीवन के उस अनंत वचन पर पूरे दिल से विश्वास करके और उसका पालन करके अपनी मैली आत्माओं को रोज़ाना शुद्ध करना चाहिए (1 पतरस 1:22)। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं परमेश्वर की सच्ची संतान के रूप में विजयी हों—दुनिया के धोखे को तोड़ने के लिए वचन से अपने दिलों की धार को तेज़ करें, और केवल सच्चाई की पवित्र आत्मा की आवाज़ का शुद्ध भक्ति के साथ जवाब दें।

1 यूहन्ना 4:1–6 का यह अंश, जो आज हमारा मुख्य विषय है, धोखे की रात में आगे बढ़ते हुए हमारे हाथों में चार पवित्र आत्मिक पैमाने देता है।

पहला, बाइबल अंधे विश्वास के खतरों के बारे में चेतावनी देती है और हमें आदेश देती है कि हम वचन के आधार पर हर आत्मा की असली प्रकृति को अच्छी तरह से "परखें"।

दूसरा, बाइबल हमें सिखाती है कि हम तुरंत दिखने वाली घटनाओं या अच्छी-अच्छी बातों से धोखा खाकर हर आत्मा पर विश्वास न करें, बल्कि यह परखें कि क्या वे आत्माएँ सचमुच "परमेश्वर की हैं"।

तीसरा, बाइबल घोषणा करती है कि हम पहले से ही "परमेश्वर के हैं"—सेनाओं के प्रभु के—और अपने अंदर मौजूद पवित्र आत्मा की शक्ति से झूठे नबियों के समूह पर "पूरी तरह से जीत हासिल कर चुके हैं"। चौथी बात,

बाइबल हमें भरोसा दिलाती है कि अगर हम परमेश्वर के वचन की तलवार को तेज़ रखें, तो हम सच्चाई की आत्मा और धोखे की आत्मा के बीच साफ़-साफ़ फ़र्क करने में पूरी तरह सक्षम होंगे।

मेरी दिली उम्मीद है कि हमारे प्यारे विश्वासी भाई-बहन किसी भी आत्मा पर आँख बंद करके भरोसा न करें। इसके बजाय, हमें हर पल बारीकी से परखना चाहिए कि क्या उन आत्माओं की शिक्षाएँ और मसीह के बारे में उनकी बातें सचमुच परमेश्वर की ओर से हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इस मुश्किल और अंधेरे दौर में, हमारे पास सच्चाई की आत्मा और धोखे की आत्मा के बीच साफ़ फ़र्क करने की आध्यात्मिक समझ हो। साथ ही, हम एक पल के लिए भी उस सुसमाचार के सच को न भूलें कि हम परमेश्वर की अनमोल संतान हैं और हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह ने क्रूस पर शैतान का सिर कुचलकर और झूठे नबियों का असली चेहरा बेनकाब करके पहले ही पूरी और शानदार जीत हासिल कर ली है। आइए हम उस शानदार जीत के भरोसे को मज़बूती से थामे रखें, उस परमेश्वर को और गहराई से जानें जो हमें जानता है, और सिर्फ़ उसके सटीक वचन को ध्यान से सुनें। मैं प्रभु के नाम से प्रार्थना करता हूँ कि हम एक आशीष भरा जीवन जिएँ—झूठे चरवाहों, झूठे शिक्षकों और उनके फैलाए झूठे सुसमाचारों के धोखे का निडरता से सामना करें, और हर दिन विश्वास की शानदार जीत का ऐलान करें।

“प्यारे लोगों, आओ हम एक-दूसरे से प्रेम करें”

[1 यूहन्ना 4:7–21]

“प्यारे लोगों, आओ हम एक-दूसरे से प्रेम करें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर की ओर से है, और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है। जो कोई प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। परमेश्वर का प्रेम हमारे बीच इस तरह प्रकट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को दुनिया में भेजा, ताकि हम उसके द्वारा जी सकें। प्रेम इसमें है—यह नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, बल्कि यह कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा। प्यारे लोगों, यदि परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया, तो हमें भी एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए। किसी ने कभी परमेश्वर को नहीं देखा; यदि हम एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो परमेश्वर हममें बना रहता है और उसका प्रेम हममें सिद्ध होता है। इससे हम जानते हैं कि हम उसमें बने रहते हैं और वह हममें, क्योंकि उसने हमें अपनी आत्मा दी है। और हमने देखा है और गवाही देते हैं कि पिता ने अपने पुत्र को दुनिया के उद्धारकर्ता के रूप में भेजा है। जो कोई यह स्वीकार करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, परमेश्वर उसमें बना रहता है, और वह परमेश्वर में। इसलिए हम उस प्रेम को जान गए हैं और उस पर विश्वास करते हैं जो परमेश्वर हमसे करता है। परमेश्वर प्रेम है, और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें बना रहता है। इससे हमारे बीच प्रेम सिद्ध होता है, ताकि न्याय के दिन हमें भरोसा हो, क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही हम भी इस दुनिया में हैं। प्रेम में कोई डर नहीं होता, बल्कि सिद्ध प्रेम डर को दूर कर देता है। क्योंकि डर का संबंध सज़ा से है, और जो डरता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ है। हम प्रेम करते हैं क्योंकि उसने पहले हमसे प्रेम किया। यदि कोई कहता है, ‘मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ,’ और अपने भाई से नफ़रत करता है, तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से

प्रेम नहीं करता जिसे उसने देखा है, वह परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकता जिसे उसने नहीं देखा है।" "...और हमें उससे यह आज्ञा मिली है: कि जो परमेश्वर से प्रेम करता है, उसे अपने भाई से भी प्रेम करना चाहिए।"

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च समुदाय—जो उसका शरीर है—को व्यक्तिगत रूप से आगे बढ़ाने के प्रभु के महान कार्य में खुशी-खुशी भाग लेने के लिए, हमें सबसे पहले अपने दिलों की मंशा की जाँच करनी चाहिए। बाइबल हमें आज्ञा देती है कि हम सांसारिक प्रेम के पीछे न भागें, बल्कि एक पवित्र और "सच्चे प्रेम" (बिना दिखावे या पाखंड के प्रेम) को अपनाएँ जो स्वर्ग से आता है। रोमियों 12:9 के पहले हिस्से को देखें: "प्रेम निष्कपट हो। बुराई से घृणा करो; भलाई से जुड़े रहो।" यहाँ, बाइबल में जिस "सच्चे प्रेम" की बात की गई है, उसका अर्थ है "निष्कपट प्रेम" — ऐसा प्रेम जो दिखावे और बाहरी आवरण से पूरी तरह मुक्त हो, जो इंसान के अंदर और बाहर के रूप में अंतर को छिपाते हैं। यह प्रभु का गंभीर आह्वान है कि हम उस धार्मिक मुखौटे को पूरी तरह तोड़ दें जो बाहर से तो आशीर्वाद और प्रेम की बातें करता है, लेकिन अंदर ईर्ष्या और निंदा रखता है। तो फिर, हम अपनी ताकत और स्वाभाविक प्रवृत्तियों के विपरीत जाकर, इस शुद्ध, सच्चे और निष्कपट प्रेम को अपने समुदाय में ठोस फल के रूप में कैसे प्रकट कर सकते हैं? प्रेरित पौलुस इसके लिए एक खास आध्यात्मिक अभ्यास को आगे की आयतों में स्पष्ट रूप से बताते हैं: वह है "बुराई से घृणा करना और भलाई से जुड़े रहना" (आयत 9)। सच्चा प्रेम बिना सोचे-समझे सबको स्वीकार करना या उदासीन बने रहना नहीं है। सच्चे प्रेम का अर्थ है—दिल की गहराइयों से—उस "बुराई" से पूरी तरह नफ़रत करना और उसे नकारना जिसे परमेश्वर नापसंद करते हैं, और साथ ही खुद को चुंबक की तरह उस "भलाई" से मजबूती से जोड़े रखना, जो परमेश्वर का स्वभाव और उनका राज्य है। जब बुराई को त्यागने और भलाई को थामे रखने वाली पवित्र समझ सचमुच जीवित और सक्रिय होगी, तभी हमारा स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च शैतान के धोखे और पाखंड को तोड़ पाएगा और उस बेदाग "सच्चे प्रेम के समुदाय" के रूप में मजबूती से खड़ा हो पाएगा जिसकी प्रभु दिल से इच्छा करते हैं।

तो फिर, हमें परमेश्वर के प्रेम के माध्यम से चर्च में अपने साथी विश्वासियों से प्रेम और उनकी सेवा कैसे करनी चाहिए? रोमियों 12:9–13 के माध्यम से, प्रेरित पौलुस हमें पाँच खास आध्यात्मिक निर्देश सिखाते हैं जिनका पालन स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च के हर सदस्य को प्रेम का समुदाय बनाने के लिए करना चाहिए।

(1) सबसे पहले, हमें प्रभु में एक-दूसरे के प्रति "भाईचारे का प्रेम" दिखाना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे खून के रिश्ते वाले परिवार में होता है (आयत 10)।

बाइबल में जिस भाईचारे के प्रेम की बात की गई है, उसका अर्थ है एक ऐसा आध्यात्मिक रिश्ता जो खून के रिश्तों से कहीं बढ़कर है। क्रूस के कीमती लहू से बने आध्यात्मिक बंधन में, हमें अपने भाइयों और बहनों को सच्चे स्नेह और एक-दूसरे के लिए गहरी, प्यार भरी चाहत से भरे दिलों के साथ अपनाना चाहिए। (2) दूसरा, हमें "एक-दूसरे का आदर करने में आगे रहना चाहिए" (वचन 10)।

सच्चा प्यार इस बात का इंतज़ार नहीं करता कि पहले उसके साथ अच्छा व्यवहार किया जाए; इसकी शुरुआत इस विनम्रता से होती है कि हम दूसरों को खुद से बेहतर समझें। हमें दूसरों से पहले पहचाने जाने या सम्मान पाने की स्वार्थी इच्छा को छोड़ देना चाहिए और इसके बजाय बिना किसी हिचकिचाहट के अपने साथी विश्वासियों का सम्मान करने और उन्हें महत्व देने की पहल करनी चाहिए।

(3) तीसरा, हमें आध्यात्मिक सुस्ती को दूर करना चाहिए और "पूरी लगन और जोश के साथ प्रभु की सेवा करनी चाहिए" (वचन 11)।

कलीसियाई समुदाय को बनाने के लिए ज़रूरी प्यार भरी मेहनत सिर्फ़ आदत या रूटीन के तौर पर नहीं की जा सकती। पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, हमें पूरी लगन, जोश और खुशी के साथ कलीसिया—जो मसीह की देह है—और अपने साथी विश्वासियों की सेवा करनी चाहिए। (4) चौथा, हमें दृढ़ता के साथ "प्रार्थना में लगे रहना चाहिए" और मुश्किलों के बीच भी आशा में आनंदित होना चाहिए (वचन 12)।

जब समुदाय पर मुश्किलें और परेशानियाँ आती हैं, तो प्यार को बनाए रखने की ताकत सिर्फ़ प्रार्थना से ही मिलती है। हमें तात्कालिक हालात से निराश नहीं होना चाहिए, बल्कि स्वर्ग की अनंत आशा को देखते हुए आनंदित होना चाहिए; हमें दृढ़ता के रास्ते पर चलते हुए बिना रुके प्रार्थना में लगे रहना चाहिए।

(5) पाँचवाँ, हमें "मेहमान-नवाज़ी करनी चाहिए" और पवित्र लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए (वचन 13)।

प्यार सिर्फ़ एक सोच नहीं है, बल्कि इसमें चीज़ों को बाँटने के ठोस काम भी शामिल हैं। हमें समुदाय के गरीब सदस्यों की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए और खुशी-खुशी अपनी चीज़ें उनके साथ बाँटनी चाहिए; साथ ही, हमें अजनबियों का स्वागत करने और उनकी मेहमान-नवाज़ी करने में पूरे दिल से लगना चाहिए।

आज के वचन में—1 यूहन्ना 4:7 के पहले हिस्से में—प्रेरित यूहन्ना अपने आध्यात्मिक बच्चों को विश्वास की मुख्य आज्ञा बहुत प्यार और दृढ़ता भरी आवाज़ में सुनाता है: "प्यारों, आओ हम एक-दूसरे से प्यार करें..." (रिवाइज़्ड न्यू कोरियन स्टैंडर्ड वर्शन)। "प्रिय दोस्तों, आओ हम एक-दूसरे से प्यार करें" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। मैंने इस साफ़ और दिल को छू लेने वाली घोषणा—"आओ हम एक-दूसरे से प्यार करें"—को इस अध्याय के शीर्षक के तौर पर चुना है। मैं 1 यूहन्ना 4:7 से 21 तक के हिस्से पर भी गहराई से विचार करना चाहता हूँ, जो यूहन्ना की पत्रियों में एक अनमोल रत्न की तरह है और स्वर्ग के नागरिकों के लिए सबसे बड़ा नियम है। धर्मग्रंथ में बताए गए तीन पवित्र आध्यात्मिक विषयों के ज़रिए, मैं प्रभु की कोमल आवाज़ को गहराई से सुनना चाहता हूँ कि क्यों हमें—क्रूस के कीमती लहू से बचाए गए बच्चों के तौर पर—एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए, और उस प्रेम का असली सार और प्रभाव क्या है। सबसे पहले, बाइबल बताती है कि परमेश्वर स्वभाव से ही प्रेम है।

1 यूहन्ना 4:8 और 16 के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना हमारे दिलों में ईसाई विश्वास की सबसे शानदार और बुनियादी बात को गहराई से बिठाते हैं: "जो प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है... और इसलिए हम जानते हैं और उस प्रेम पर भरोसा करते हैं जो परमेश्वर हमसे करता है। परमेश्वर प्रेम है..." क्या आपने कभी "चार आध्यात्मिक नियम" (The Four Spiritual Laws) नाम का छोटा प्रचार पत्र देखा है? लोगों को प्रभु की ओर ले जाने के लिए 'कैंपस क्रूसेड फॉर क्राइस्ट' (CCC) द्वारा बनाया गया यह पत्र, लंबे समय से दुनिया भर में विश्वासियों द्वारा सुसमाचार फैलाने के लिए सबसे ज़्यादा इस्तेमाल किए जाने वाले साधनों में से एक रहा है। इस पुस्तिका का नाम ही इसका मकसद साफ़ कर देता है: इसमें "चार आध्यात्मिक सिद्धांत" हैं जिन्हें मुक्ति पाने के लिए किसी व्यक्ति को समझना ज़रूरी है। मुख्य सिद्धांत जो इस शानदार मुक्ति का दरवाज़ा खोलता है, वह इस प्रकार है:

(1) सिद्धांत 1: "परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और आपके जीवन के लिए उसकी एक अद्भुत योजना है।"

इस पहले सिद्धांत का समर्थन करने वाली बाइबल की बुनियादी आयतें यूहन्ना 3:16 और यूहन्ना 10:10 का बाद वाला हिस्सा हैं: "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, बल्कि अनंत जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16), और "...मैं इसलिए आया हूँ कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ" (यूहन्ना 10:10)। चूँकि परमेश्वर स्वभाव से प्रेम है, वह आपसे और मुझसे—जिन्हें उसने अपने स्वरूप में रचा है—इतना गहरा प्रेम करता है कि उसने हमारे लिए अपने एकलौते पुत्र को दे दिया। और उसके पास एक शानदार मास्टर प्लान है—सिर्फ़ हमें जीवन देने के लिए नहीं, बल्कि हमें उस जीवन का भरपूर आनंद लेने के काबिल बनाने के लिए।

(2) सिद्धांत 2: "इंसान पाप के कारण परमेश्वर से अलग हो गया है। इसलिए, वह परमेश्वर के प्रेम और योजना को न तो जान सकता है और न ही महसूस कर सकता है।"

इंसानियत की त्रासदी इसी दूसरे सिद्धांत से शुरू होती है। बाइबल बताती है कि सभी इंसान पाप की बुरी दलदल में फँसे हुए हैं। रोमियों 3:23 को देखिए: "क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से दूर हो गए हैं।" इसके अलावा, पाप में पड़ने वालों का बुरा नतीजा यह होता है कि वे परमेश्वर से हमेशा के लिए अलग हो जाते हैं, जबकि परमेश्वर ही जीवन का स्रोत है। रोमियों 6:23 के पहले हिस्से में, प्रेरित पौलुस गंभीरता से इस अलगाव की कीमत बताता है: "क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है।" क्योंकि इंसान अपने पापों के कारण परमेश्वर का दुश्मन और आध्यात्मिक रूप से मृत हो गया, इसलिए वह आध्यात्मिक रूप से कंगाल हो गया है—वह परमेश्वर के उस अपार प्रेम और भरपूर आशीषों को न तो समझ सकता है और न ही अपने जीवन में उनका अनुभव कर सकता है जो परमेश्वर ने तैयार किए हैं।

(3) सिद्धांत 3: "यीशु मसीह ही इंसान के पाप के लिए परमेश्वर का एकमात्र उपाय है। उनके ज़रिए, आप अपने लिए परमेश्वर के प्रेम और योजना को जान और अनुभव कर सकते हैं।"

यीशु मसीह ही वह एकमात्र पुल है जो हमें—जो कभी पाप के कारण परमेश्वर के दुश्मन थे—उनके प्रेम का फिर से आनंद लेने का मौका देता है। बाइबल प्रायश्चित की इस अद्भुत कृपा की गवाही देती है।

(a) पहला, यीशु हमारी जगह क्रूस पर मरे। "परमेश्वर हमारे प्रति अपने प्रेम को इस तरह दिखाता है कि जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिए मरे" (रोमियों 5:8)।

(b) दूसरा, यीशु ने मृत्यु की शक्ति को तोड़ा और फिर से जी उठे।

“क्योंकि मैंने तुम्हें सबसे ज़रूरी बात बताई जो मुझे भी मिली थी: कि मसीह हमारे पापों के लिए धर्मग्रंथों के अनुसार मरे, उन्हें दफनाया गया, वे धर्मग्रंथों के अनुसार तीसरे दिन जी उठे, और वे केफ़ास को, फिर बारह शिष्यों को दिखाई दिए। फिर वे एक ही बार में पाँच सौ से ज़्यादा भाइयों को दिखाई दिए...” (1 कुरिन्थियों 15:3–6)।

(c) तीसरी बात, पिता परमेश्वर तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता यीशु मसीह हैं।

"यीशु ने उससे कहा, ‘मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। मेरे बिना कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता’" (यूहन्ना 14:6)। कोई भी इंसानी धार्मिक कोशिश या दर्शन उस पाप की दीवार को नहीं गिरा सकता जो परमेश्वर और इंसानियत को अलग करती है। सिर्फ़ यीशु मसीह ही—जिन्होंने इंसान का रूप लिया, क्रूस उठाया और फिर जी उठे—जीवन का वह एकमात्र रास्ता हैं जो पिता परमेश्वर के अपार प्रेम और योजना को हमारे जीवन में हकीकत बनाते हैं।

(4) सिद्धांत 4: “हममें से हर एक को यीशु मसीह को ‘अपने उद्धारकर्ता और अपने परमेश्वर’ के रूप में अपनाना होगा। तब, हममें से हर एक परमेश्वर के प्रेम और योजना को जान पाएगा और उसका अनुभव कर पाएगा।"

सुसमाचार का पूरा होना सिर्फ़ दिमागी सहमति से नहीं, बल्कि हमारे पूरे वजूद और व्यक्तित्व की गहराई से दिए गए निमंत्रण से होता है।

(a) पहली बात, हमें यीशु मसीह को अपने प्रभु के रूप में अपनाना होगा।

"लेकिन जिन लोगों ने उन्हें अपनाया, जिन्होंने उनके नाम पर विश्वास किया, उन्हें उन्होंने परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया" (यूहन्ना 1:12)।

(b) दूसरी बात, हम यीशु मसीह को अनुग्रह से, बस 'विश्वास' का हाथ बढ़ाकर अपनाते हैं।

"क्योंकि अनुग्रह से ही विश्वास के द्वारा तुम्हारा उद्धार हुआ है। और यह तुम्हारी अपनी कोशिश का नतीजा नहीं है; यह परमेश्वर का वरदान है, कामों का फल नहीं, ताकि कोई घमंड न कर सके" (इफिसियों 2:8–9)। (c)

तीसरी बात, हमें अपने दिलों के दरवाज़े खोलने होंगे और हर पल प्रभु को व्यक्तिगत रूप से अपने जीवन में बुलाना होगा।

"देखो, मैं खड़ा हूँ! मैं दरवाज़े पर खड़ा होकर खटखटाता हूँ। अगर कोई मेरी आवाज़ सुनता है और दरवाज़ा खोलता है, तो मैं अंदर आऊँगा और उस व्यक्ति के साथ भोजन करूँगा, और वे मेरे साथ" (प्रकाशितवाक्य 3:20)। यीशु को अपनाना अपने जीवन का अधिकार प्रभु को सौंपने का फ़ैसला है। जब हम सच्चाई के प्रभु का स्वागत करने के लिए अपनी ज़िद और अपनी मर्ज़ी के दरवाज़े खोलते हैं, तो 'चार आध्यात्मिक नियमों' (Four Spiritual Laws) का पहला स्तंभ—"मेरे लिए परमेश्वर का अद्भुत प्रेम और भरपूर योजना"—सिर्फ़ एक सोच या विचार नहीं रह जाता, बल्कि एक शानदार सच्चाई बन जाता है जो हमारे रोज़मर्रा के जीवन में जीवंत हो उठता है।

1 यूहन्ना अध्याय 4 की इस व्याख्या को शुरू करते समय मुझे 'चार आध्यात्मिक नियमों' के इन आध्यात्मिक सिद्धांतों की याद इसलिए आई क्योंकि इसका "पहला सिद्धांत" एक शानदार शुरुआत का संदेश देता है: "परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और आपके लिए उसकी एक अद्भुत योजना है।" शुरुआती बात—जिसे 'चार आध्यात्मिक नियमों' के पैम्फ़लेट में इंसानियत के लिए सुसमाचार का दरवाज़ा खोलते हुए सबसे पहले और

सबसे ज़ोरदार ढंग से कहा गया है—वह इंसानी पाप या न्याय के बारे में नहीं है। यह एक शानदार घोषणा है: "परमेश्वर आपसे प्रेम करता है।" ईसाई धर्म में उद्धार और सुसमाचार की पूरी शुरुआत इंसानी कोशिशों से नहीं, बल्कि परमेश्वर के सक्रिय प्रेम से होती है, क्योंकि परमेश्वर का स्वभाव ही प्रेम है। जिस तरह 'चार आध्यात्मिक नियमों' का पहला पन्ना गंभीरता से परमेश्वर के प्रेम की घोषणा करता है, उसी तरह आज के वचन—1 यूहन्ना 4:8 और 16—में बताई गई शाश्वत सच्चाई—कि "परमेश्वर प्रेम है"—विश्वास की सबसे मज़बूत नींव और आधार है, जिस पर हर विश्वासी को अपना जीवन टिकाना चाहिए। आज के वचन—1 यूहन्ना 4:8 और 16—में प्रेरित यूहन्ना हमारा ध्यान विश्वास के सबसे गहरे सार पर ले जाते हैं: "जो प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है... हमने उस प्रेम को जान लिया है और उस पर विश्वास किया है जो परमेश्वर हमसे करता है—परमेश्वर प्रेम है..." प्रेरित यूहन्ना ने इस छोटे से हिस्से में दो बार ज़ोर देकर क्यों कहा कि "परमेश्वर प्रेम है"? इसका मकसद उस बुनियादी और परम कारण को समझाना है कि हमें प्रभु की पवित्र आज्ञाओं (3:23, 4:7) का पालन करते हुए एक-दूसरे से प्रेम क्यों करना चाहिए। एक-दूसरे से प्रेम करने का कारण साफ़ है: परमेश्वर का स्वभाव ही प्रेम है (4:8, 16), और प्रेम करने वाले इसी परमेश्वर ने हम पर—जो कमियों से भरे हैं—बेहिसाब प्रेम बरसाया और आखिरकार हमें महिमावान "परमेश्वर की संतान" (3:1) बना दिया। इसलिए, परमेश्वर—जो प्रेम है—की संतान होने के नाते, यह स्वाभाविक है कि हम एक-दूसरे से पूरे दिल से प्रेम करें, ठीक वैसे ही जैसे पिता ने हमसे बिना किसी शर्त के प्रेम किया है (3:11, 23; 4:7)। असल में, विश्वासियों के लिए प्रभु की आज्ञा मानने और एक-दूसरे से प्रेम करने की मुख्य वजह दो आपस में जुड़ी सच्चाइयों पर टिकी है:

पहली, यह सच्चाई कि परमेश्वर का मूल स्वभाव ही प्रेम है; और

दूसरी, यह सच्चाई कि प्रेम करने वाले इस परमेश्वर ने "सबसे पहले" हमसे प्रेम किया, जबकि हम इसके लायक नहीं थे (1 यूहन्ना 4:19)।

1 यूहन्ना 4:19 के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना इस गहरे प्रेम की सच्चाई को बताते हैं: "हम प्रेम इसलिए करते हैं क्योंकि उन्होंने सबसे पहले हमसे प्रेम किया।" "हम प्रेम इसलिए करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने सबसे पहले हमसे प्रेम किया" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। अगर सुसमाचार के इस महान रहस्य को एक ही वाक्यांश में समेटा

जाए, तो वह यह होगा कि परमेश्वर का *अस्तित्व* 'प्रेम' है, और परमेश्वर का *काम* 'हमसे सबसे पहले प्रेम करना' है। अब हमें इस आध्यात्मिक सिद्धांत को सीधे अपने जीवन में लागू करना होगा। क्रूस पर प्रायश्चित के बलिदान के ज़रिए बचाए जाने के बाद, हमारा *अस्तित्व* 'परमेश्वर की अनमोल संतान' का हो गया है। नतीजतन, हमारे लिए—स्वर्ग के नागरिक जिनका स्वभाव पूरी तरह बदल चुका है—सही *काम* यह है कि हम 'एक-दूसरे से प्रेम करें' (खासकर अपने आस-पास के भाई-बहनों से) ठीक उसी पूर्णता के साथ जैसे परमेश्वर ने सबसे पहले हमसे प्रेम किया था। ऐसा इसलिए है क्योंकि *अस्तित्व* में आए बदलाव का सबूत पवित्र *कामों* के फल से ज़रूर मिलना चाहिए।

जब मैंने 1 यूहन्ना 4:8 और 16 में दी गई शानदार घोषणा "परमेश्वर प्रेम है" पर गहराई से मनन किया, तो अचानक मेरे अंदर एक पवित्र आध्यात्मिक जिज्ञासा जागी: '1 यूहन्ना की शुरुआती आयत से लेकर इस हिस्से तक, प्रेरित यूहन्ना उस परमेश्वर के स्वभाव के बारे में क्या गवाही देते हैं जिस पर हम विश्वास करते हैं?' इसका जवाब पाने के लिए, मैंने उस पत्र को शुरू से लेकर इस हिस्से तक, हर आयत को ध्यान से दोबारा पढ़ा। ऐसा करते ही, त्रिएक परमेश्वर के तेजस्वी चरित्र—उनके *अस्तित्व*—का एक शानदार नज़ारा मेरी आँखों के सामने खुलने लगा। जिस पहली बात ने मेरी आत्मा को झकझोर दिया, वह 1 यूहन्ना 1:5 का यह कथन था: "परमेश्वर ज्योति है।" फिर, 1 यूहन्ना 1:9 में यह बात कही गई है कि जब हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर पिता "विश्वसनीय और धर्मी" हैं। यहाँ परमेश्वर के धर्मी होने की घोषणा 2:29 और 3:7 से जुड़ती है, जो विश्वास करने वाले के धर्मी जीवन का आधार बनती है। जब हम पुत्र, यीशु पर ध्यान देते हैं, तो हम देखते हैं कि 2:29 में उन्हें "धर्मी यीशु मसीह"—हमारे उत्तम वकील—के रूप में बताया गया है और 3:3 में उन्हें "पवित्र प्रभु" घोषित किया गया है, जो किसी भी दाग या दोष से मुक्त हैं। इसके अलावा, 4:2 में, पवित्र आत्मा सशक्त रूप से "सत्य की आत्मा" के रूप में सामने आते हैं, जो इस बात को स्वीकार करते हैं (और स्वीकार करने में मदद करते हैं) कि यीशु मसीह ने मनुष्य का रूप धारण किया है। अंत में, आज के अंश में—खासकर अध्याय 4 की आयतों 8 और 16 में—हमें विश्वास की इस यात्रा का शानदार चरम बिंदु मिलता है: यह ज़ोरदार घोषणा कि "परमेश्वर प्रेम है।"

1 यूहन्ना में बताए गए परमेश्वर के स्वरूप को समझते हुए, मैंने त्रिएक (Trinity) के रहस्य को जाना: परमेश्वर पिता ज्योति, विश्वसनीय, धर्मी और प्रेम हैं; परमेश्वर पुत्र धर्मी और पवित्र हैं; और परमेश्वर पवित्र आत्मा वह हैं जो मसीह के मनुष्य रूप में आने की बात को सशक्त रूप से पुष्ट करते हैं और उसकी गवाही देते हैं। इस शानदार

खोज के आधार पर, मैं दो गहरी आध्यात्मिक बातें बताना चाहता हूँ जिन्हें हमें, धोखे के इस दौर में रहते हुए, अपने दिलों में गहराई से उतार लेना चाहिए।

(1) पहली बात, यीशु मसीह की "पवित्रता" परमेश्वर के "उत्तम और पूर्ण प्रेम" की गवाही देती है, जो किसी भी अशुद्धता से पूरी तरह मुक्त है।

जिस सच्चाई पर हमें सबसे पहले गहराई से विचार करना चाहिए, वह 1 यूहन्ना 3:3 की घोषणा है कि पुत्र, यीशु, "पवित्र" हैं। बाइबल तुरंत प्रभु की पवित्रता को यह कहकर समझाती है, "उनमें कोई पाप नहीं है" (आयत 5)। दूसरे शब्दों में, प्रभु की पवित्रता का अर्थ है दोषरहित, पूर्ण पाप-हीनता—जिसमें कोई दाग या धब्बा न हो। जब हम इस पवित्र गुण को परमेश्वर के उस स्वरूप पर लागू करते हैं जिसके बारे में पहले बताया गया है, तो हमें एक अद्भुत आध्यात्मिक सामंजस्य देखने को मिलता है। 1 यूहन्ना 1:5 में कही गई बात "परमेश्वर ज्योति है" पर प्रभु की पवित्रता को लागू करने से परम पवित्रता की स्थिति का पता चलता है, जिसमें अंधेरे का ज़रा भी अंश नहीं होता। इसी तरह, 1 यूहन्ना 1:9 में कही गई बात "परमेश्वर विश्वासयोग्य और धर्मी है" पर इसे लागू करने से एक ऐसी पूर्ण धार्मिकता का पता चलता है जो 0.1% भी अविश्वास या अन्याय को बर्दाश्त नहीं करती।

तो फिर, जब हम प्रभु की इस "पवित्रता" को 1 यूहन्ना 4:8 और 16 के मुख्य विषय—"परमेश्वर प्रेम है"—पर लागू करते हैं, तो कौन सी शानदार बात सामने आती है? इसका मतलब है कि हमारे परमेश्वर पिता के भीतर अपने बच्चों और भाइयों के प्रति "नफ़रत" या "ईर्ष्या" का एक भी अंश नहीं है। प्रभु का प्रेम कोई सांसारिक प्रेम नहीं है जो हालात और परिस्थितियों के कारण दूषित या बदल जाए। अगर हम 1 यूहन्ना 2:5 और 4:12 के मुख्य शब्दों का इस्तेमाल करके इस पवित्र रहस्य को परिभाषित करें, तो हम परमेश्वर के प्रेम को "पूर्ण प्रेम" कह सकते हैं—एक ऐसा प्रेम जो हमेशा रहने वाला, दोषरहित और पूरा है। हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम पूरी तरह से शुद्ध है; उस प्रेम में न तो ठुकराए जाने का डर है, न ही कोई स्वार्थी इच्छा, और न ही ईर्ष्यापूर्ण नफ़रत की कोई परछाई। क्योंकि उन्होंने सबसे पहले हमें एक पूर्ण, 100% शुद्ध प्रेम से अपनाया—जिसमें कोई अशुद्धि नहीं थी—इसलिए उस शुद्ध प्रेम को पाकर हम भी समुदाय के भीतर नफ़रत को दूर कर सकते हैं और ऐसे बच्चों की तरह जी सकते हैं जो पूर्ण प्रेम का पालन करते हैं।

(2) दूसरा, 1 यूहन्ना के चार मुख्य स्तंभ—ज्योति, सत्य, प्रेम और धार्मिकता—त्रिएक परमेश्वर के पूर्ण स्वभाव और उस धार्मिकता के सार को दर्शाते हैं जिसे हमें इस धरती पर पूरा करने के लिए बुलाया गया है।

जब मैंने 1 यूहन्ना में बताए गए चार बड़े धार्मिक स्तंभों—ज्योति, सत्य, प्रेम और धार्मिकता—पर विचार किया, तो मेरे मन में एक आध्यात्मिक सवाल उठा: ये शानदार गुण आपस में कैसे जुड़े हुए हैं? आखिर में, मैं त्रिएक परमेश्वर (Triune God) के स्वरूप के बारे में एक शानदार नतीजे पर पहुँचा: "हमारे परमेश्वर ज्योति हैं, परमेश्वर सत्य हैं, परमेश्वर प्रेम हैं, और परमेश्वर पूरी तरह से धर्मी हैं।" यह घोषणा सिर्फ़ एक अमूर्त बात नहीं है; यह पूरी पवित्रता का ऐलान है। परमेश्वर में, जो ज्योति हैं, आध्यात्मिक अंधकार का ज़रा भी अंश नहीं है; परमेश्वर में, जो सत्य हैं, झूठ का 0.1% भी बर्दाश्त नहीं किया जाता; परमेश्वर में, जो प्रेम हैं, ईर्ष्या या नफ़रत का एक कतरा भी नहीं है; और परमेश्वर में, जो धर्मी हैं, कोई अन्याय या बुराई नहीं हो सकती।

मैंने इस बड़े धार्मिक नतीजे को आज के पाठ—1 यूहन्ना 4:7, "हे प्रियों, आओ हम एक-दूसरे से प्रेम करें"—में दिए गए मुख्य आदेश से जोड़ा और इसे हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में इस तरह लागू किया: "हे प्रियों, हमारे परमेश्वर पूर्ण प्रेम हैं (1 यूहन्ना 4:8, 16)। इसलिए, परमेश्वर की संतान के तौर पर—जो ज्योति हैं और जिनमें कोई अंधकार नहीं है (1:5, 3:1–2)—हमें झूठ को पूरी तरह से नकार देना चाहिए और सत्य के बारे में प्रभु की नई आज्ञा का पालन करते हुए, पूरे दिल और जान से एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए (1:6, 3:23–24)। पवित्र आज्ञाकारिता का यह जीवन 'धार्मिकता' का सच्चा फल है—जो हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में उन लोगों द्वारा दिखाया जाता है जो सचमुच परमेश्वर को धर्मी के रूप में जानते हैं (2:29)।" हमारा एक-दूसरे से प्रेम करना सिर्फ़ भावनाओं का खेल नहीं है। यह स्वर्ग के नागरिकों के लिए विश्वास की सबसे शानदार गवाही है—एक ऐसी गवाही जो त्रिएक परमेश्वर के स्वरूप को—जो ज्योति, सत्य, प्रेम और धार्मिकता हैं—इस अंधेरी दुनिया के बीच पूरी तरह से दिखाती है।

"चार आध्यात्मिक नियम" (Four Spiritual Laws) का पहला सिद्धांत, जिसे कैंपस क्रूसेड फॉर क्राइस्ट (CCC) ने बताया है, जब भी कोई उस पर मनन करता है तो दिल को छू लेता है: "परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं और आपके जीवन के लिए उनकी एक अद्‌भुत योजना है।" जब भी मैं इस महान सिद्धांत—जो सुसमाचार का मूल

सार है—को अपने दिल में बसाता हूँ, तो मुझे हमारे बारे में एक अद्भुत आध्यात्मिक भरोसा मिलता है। यह सच है कि परमेश्वर पिता अपने प्रेम में हममें से हर एक की गहराई से परवाह करते हैं—यहाँ तक कि उन लोगों की भी जो खुद को अलग-थलग या ठुकराया हुआ महसूस करते हैं—और उन्होंने दुनिया की नींव रखे जाने से पहले ही हमें हमेशा के विनाश से बचाने के लिए "मुक्ति की एक अद्भुत मास्टर योजना" तैयार की थी। ऐसा इसलिए संभव है क्योंकि परमेश्वर का स्वरूप ही प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8, 16)। चूँकि परमेश्वर का स्वभाव ही प्रेम है, इसलिए उनके काम—जो उसी स्वरूप से निकलते हैं—हमेशा एक ऐसे शानदार प्रेम के रूप में सामने आते हैं जो हमारी कमियों के बावजूद हमें लगातार गले लगाता है। हम अपनी उपलब्धियों या योग्यताओं के कारण नहीं, बल्कि पूरी तरह से परमेश्वर के उस असीम प्रेम की शक्ति से—जिसकी पुष्टि क्रूस पर हुई—यीशु मसीह पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करने लगे हैं। हमें अंधकार की संतान होने की स्थिति से निकालकर एक बिल्कुल नई पहचान और अस्तित्व दिया गया है: "परमेश्वर की महिमामयी संतान।" इसलिए, परमेश्वर के लोगों के तौर पर, जिनका अस्तित्व ही बदल गया है, हमें अब ऐसे जीवन के अनुरूप काम करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए। जैसे परमेश्वर पिता ने अपने इकलौते बेटे को बिना किसी हिचकिचाहट के देकर हमसे सबसे पहले प्रेम किया, वैसे ही हमें भी—उस दिव्य प्रेम की जीवन देने वाली शक्ति को पाकर—समुदाय के अपने साथी सदस्यों को वैसे ही अपनाना चाहिए जैसे हम अपने शरीर को अपनाते हैं। आइए हम अब कैन के रास्ते पर न चलें—जहाँ स्वार्थी भावनाओं और दुनिया की बुरी इच्छाओं से आँखें अंधी हो जाने के कारण भाइयों से नफ़रत की जाती है। इसके बजाय, आइए हम प्रेम के पिता के समान सच्ची संतान बनकर जिएं; आइए हम रोज़मर्रा की ज़िंदगी में एक-दूसरे के पैर धोएँ और इस सच्चाई का निडरता से प्रचार करें और पालन करें: "हे प्रियों, जब परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया, तो हमें भी एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए। आइए हम एक-दूसरे से सच्चे दिल से प्रेम करें!"

दूसरी बात, बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने अपने असीम प्रेम को केवल अमूर्त विचारों तक सीमित नहीं रखा; बल्कि, उन्होंने अपने इकलौते बेटे को बिना किसी हिचकिचाहट के देकर हमारे जीवन में "ठोस प्रेम" का प्रमाण दिया।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 4:9–10 को देखें। प्रेरित यूहन्ना उस प्यार का सबसे शानदार सबूत और सच्चाई बताते हैं जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए साबित किया है: "परमेश्वर ने हमारे बीच अपना प्यार इस तरह दिखाया: उसने

अपने इकलौते बेटे को दुनिया में भेजा ताकि हम उसके ज़रिए जी सकें। प्यार यह है: हमने परमेश्वर से प्यार नहीं किया, बल्कि उसने हमसे प्यार किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने बेटे को भेजा" (NIV)। "परमेश्वर ने अपने इकलौते बेटे को दुनिया में भेजकर हमारे सामने अपना प्यार ज़ाहिर किया ताकि हम उसके ज़रिए जी सकें। इसलिए, ऐसा नहीं था कि हमने परमेश्वर से प्यार किया, बल्कि परमेश्वर ने हमसे प्यार किया और अपने बेटे को उस बलिदान के रूप में भेजा जो हमें पाप से बचाता है" (Contemporary Korean Version)। ऐसे लोगों को देखना सचमुच बहुत सुंदर लगता है जो बिना किसी कीमत या इनाम की उम्मीद किए, सच्चे दिल से अपने पड़ोसियों के प्रति प्यार दिखाते हैं और उस प्यार को असल ज़िंदगी में अपनाते हैं। उनकी ज़िंदगी इतनी शानदार ढंग से चमकती है क्योंकि वे प्यार को दिखावे या पाखंड के तौर पर नहीं, बल्कि ऐसी सच्चाई के साथ अपनाते हैं जो उनके दिल की गहराई से निकलती है। सच्चे दिल से किसी से प्यार कर पाना ज़िंदगी के सबसे बड़े वरदानों में से एक है। इसके अलावा, बिना शर्त प्यार करना—ऐसा प्यार जो बदले में कुछ नहीं चाहता—और उस काम में स्वर्ग की गुप्त खुशी का अनुभव करना एक विश्वासी के लिए सबसे बड़ा आध्यात्मिक सौभाग्य है। फिर भी, अफ़सोस की बात है कि आज बहुत से ईसाई इस भरपूर स्वर्गीय वरदान और खुशी का पूरा आनंद लिए बिना ही जी रहे हैं। क्या आप जानते हैं कि मुख्य बाधा क्या है? यह "दूसरों से उम्मीद" है जो हमारे दिलों में गहराई तक बसी होती है। जब हम अपने पड़ोसियों से प्यार करते हैं और अपने समुदाय की सेवा करते हैं, तो जिस पल हम अनजाने में तारीफ़, पहचान या किसी तरह के बदले में इनाम की उम्मीद करते हैं, तो परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले आध्यात्मिक वरदानों का रास्ता रुक जाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जब उम्मीद के मुताबिक प्रतिक्रिया नहीं मिलती, तो निराशा, नाराज़गी, जलन और नफ़रत की तेज़ धारें पनपने लगती हैं। इसलिए, हमें बिना किसी इनाम की उम्मीद किए या बिना कोई शर्त रखे पूरे दिल से प्यार करना चाहिए। जब हम अपने साथी विश्वासियों के साथ निस्वार्थ और बिना शर्त प्यार से पेश आते हैं, तभी हमारी आत्मा परमेश्वर पिता की आध्यात्मिक खुशी से भर जाती है—एक ऐसी खुशी जिसे न तो दुनिया दे सकती है और न ही समझ सकती है। सचमुच, जो व्यक्ति कोई इनाम नहीं चाहता, बल्कि बस क्रूस के प्यार को अपने अंदर बहने देता है और साथ ही स्वर्गीय शांति का अनुभव करता है, वह सचमुच स्वर्ग का नागरिक है—परमेश्वर की नज़र में सुंदर और नेक। यहाँ, हमें "प्रायश्चित" (propitiation) शब्द का अर्थ याद करना चाहिए—यह एक बहुत ही गंभीर और महान धार्मिक शब्द है जो यूहन्ना के सुसमाचार और यूहन्ना की पत्रियों में बार-बार आता है। जैसा कि हमने पहले 1 यूहन्ना 2:2 में इस पर विचार किया था, "प्रायश्चित" का बाइबिल के अनुसार मुख्य अर्थ है "संतुष्टि"—यानी

परमेश्वर के न्याय को पूरी तरह से पूरा करना। पवित्र और धर्मी परमेश्वर विद्रोही इंसानों के 'पाप' के लिए भयानक सज़ा देने को मजबूर थे; पाप को बस नज़रअंदाज़ करना उनके न्याय के खिलाफ होता। उस कड़े न्याय की माँग को पूरा करने के लिए, यीशु मसीह—परमेश्वर के पुत्र—खुद 'फसह के मेमने' (Passover Lamb) बने, अपना खून बहाया और क्रूस पर हमेशा के लिए एक बलिदान के रूप में अपनी जान दी। मेरी जगह मेरे पापों की सज़ा सहकर और उस शापित पेड़ पर लटककर, प्रभु ने परमेश्वर की पवित्र और धर्मी माँग को पूरी तरह से पूरा किया कि पाप का न्याय होना ही चाहिए।

परमेश्वर ने अपने अनमोल, एकलौते पुत्र को उस भयानक क्रूस पर प्रायश्चित के बलिदान के रूप में—और इस नष्ट होती दुनिया के एकमात्र उद्धारकर्ता के रूप में—क्यों दिया? प्रभु खुशी-खुशी उस दुख की जगह पर किस मकसद से गए? वह शानदार मकसद एक ही था: हमारे भयानक पापों का पूरा प्रायश्चित करना, हमें पाप और मौत की छाया से बचाना, और आखिरकार हमारी आत्माओं को अनंत जीवन देना (1 यूहन्ना 4:9–10)। 1 यूहन्ना 3:5 एक ही वाक्य में प्रभु के अवतार के मकसद की साफ गवाही देता है: "तुम जानते हो कि वह इसलिए प्रकट हुए ताकि हमारे पापों को दूर कर सकें। और उनमें कोई पाप नहीं है।" हमारे लिए परमेश्वर का प्यार सिर्फ़ बड़े-बड़े शब्दों या सिद्धांतों तक सीमित नहीं था। यह एक काम था—जिसकी सच्चाई पर कोई शक नहीं किया जा सकता—जिसमें उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के अपने सबसे नेक, एकलौते पुत्र की जान क्रूस पर बलिदान के रूप में दी, ताकि वे उन लोगों को बचा सकें जो अपने पाप के कारण अनंत मौत के हकदार थे और परमेश्वर के क्रोध के पात्र थे। प्रायश्चित का यह गहरा रहस्य उस शुद्ध और पूर्ण प्रेम का सार है जो प्रेम के परमेश्वर ने आपको और मुझे दिखाया है। प्रिय लोगों, हमारी असली हालत क्या थी? बाइबिल बताती है कि हम बहुत बुरी हालत में थे, "अपराधों और पापों में मरे हुए" (इफिसियों 2:1)। *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* में इफिसियों 2:1 को पढ़ने पर यह बात और भी ज़ोरदार तरीके से समझ आती है: "आप ऐसे लोग थे जो आज्ञा न मानने और पाप के कारण आध्यात्मिक रूप से मरे हुए थे।" पाप दुनिया में "एक आदमी"—इंसानियत के पूर्वज आदम—के आज्ञा न मानने से आया, और उसके साथ ही, मौत की भयानक ताकत ने इतिहास पर कब्ज़ा कर लिया। इस मूल पाप के असर से, सभी लोगों ने पाप किया है, और आखिरकार, बिना किसी अपवाद के पूरी इंसानियत पर आध्यात्मिक मौत आ गई है (रोमियों 5:12)। हम जीवन के स्रोत—परमेश्वर—से पूरी तरह अलग हो गए थे और आध्यात्मिक रूप से लाशों से अलग नहीं थे; हम ऐसे बेसहारा लोग थे जिनकी किस्मत में हमेशा के नरक की "दूसरी मौत" लिखी

थी। हम जैसे लोगों के लिए, जिनके पास कोई उम्मीद नहीं थी, परमेश्वर ने अपने इकलौते बेटे को इस धरती पर पापों का प्रायश्चित करने के लिए भेजा। क्या हमारे अंदर कोई खूबी थी जब वह महान प्रेम स्वर्ग से उतरा? रोमियों 5 में, प्रेरित पौलुस हमारी हालत की बेबस सच्चाई को तीन पहलुओं में बताते हैं।

पहला, हम ऐसी हालत में थे जहाँ हमारे पास खुद को पाप से साफ़ करने की कोई ताकत नहीं थी—"जब हम बेबस थे" (रोमियों 5:6, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)।

दूसरा, हम परमेश्वर के नियम के खिलाफ़ बगावत के रास्ते पर चल रहे थे—"जब हम पापी ही थे" (वचन 8, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)।

तीसरा, हम परमेश्वर के शासन के खिलाफ़ खड़े थे और उनके क्रोध और न्याय का सामना कर रहे थे—"जब हम परमेश्वर के दुश्मन थे" (वचन 10, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)।

हमें बचाने के लिए—जो पूरी तरह से भ्रष्ट, कमज़ोर, पाप के गुलाम और परमेश्वर के दुश्मन के तौर पर उनसे दूर हो चुके थे—परमेश्वर के एकलौते बेटे, यीशु मसीह ने खुद अपना प्रायश्चित करने वाला लहू बहाया और क्रूस पर अपनी जान दी (पद 6)। हमारी जगह श्रापित पेड़ पर लटककर और प्रायश्चित का बलिदान बनकर, प्रभु ने हमें अनुग्रह की संतान बनने के काबिल बनाया, ताकि हम परमेश्वर के साथ पूरी तरह मेल-मिलाप और शांति का आनंद ले सकें (पद 10)। जब हम अपनी सबसे बुरी हालत में थे—और किसी भी शर्त या इनाम के लायक नहीं थे—तब प्रभु ने हमारे लिए बिना किसी हिचकिचाहट के अपना सब कुछ दे दिया। रोमियों 5:8 के ज़रिए, प्रेरित पौलुस हमारे दिलों में प्रायश्चित के इस दिल को छू लेने वाले काम की सबसे बड़ी बात बताते हैं: "लेकिन परमेश्वर हमारे प्रति अपने प्रेम को इस तरह दिखाता है कि जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिए मरे।" यह सिर्फ़ दिखावा नहीं था; क्रूस का काम—जिसमें बेसहारा और दुश्मनों की खातिर एकलौते बेटे की जान का बलिदान दिया गया—उस प्रेम का सबसे पक्का और पूरा सबूत है जो प्रेम के परमेश्वर ने आप पर और मुझ पर ज़ाहिर किया है।

प्यारे लोगों, हमें हर दिन परमेश्वर के प्रेम की विशालता और गहराई को—जो क्रूस के ज़रिए हमें साफ़ तौर पर दिखाया गया है—और उसकी ऊँचाई और गहराई के असीम विस्तार को और गहराई से जानना चाहिए। जैसा कि प्रेरित पौलुस ने इफिसियों को लिखे अपने पत्र में माना है, यह एक अलौकिक प्रेम है जो इंसानी समझ से परे है (इफिसियों 3:18–19)। हमें परमेश्वर के उस अद्भुत, उद्धार करने वाले प्रेम को गहराई से महसूस करना और समझना चाहिए—जिन्होंने हमें आध्यात्मिक मौत की बुरी हालत और आग की अनंत झील में निश्चित विनाश से बचाने के लिए (1 यूहन्ना 4:9) और हमारे सभी पापों का पूरा प्रायश्चित करने के लिए (पद 10), व्यक्तिगत रूप से अपने सबसे कीमती एकलौते बेटे, यीशु मसीह को इस धरती पर एक पवित्र "प्रायश्चित बलिदान" (पद 10) और दुनिया के एकमात्र "उद्धारकर्ता" (पद 14) के रूप में भेजा। 1 यूहन्ना 3:16 का पहला हिस्सा—जिस पर हमने पहले ही गहराई से मनन किया है—हमें *ह्युंडाई-इन-उई सोंग-ग्योंग* (मॉडर्न पीपल्स बाइबिल) अनुवाद के ज़रिए प्यार की सही परिभाषा सिखाता है: "हमें इस बात से पता चला है कि प्यार क्या है कि यीशु ने हमारे लिए अपनी जान दे दी।" वह घटना जिसमें परमेश्वर के एकलौते बेटे, यीशु मसीह ने पूरी तरह से अयोग्य पापियों की खातिर उस खुरदरे और भयानक क्रूस पर "अपनी मर्ज़ी से अपनी जान दे दी"—यह काम प्यार के असली स्वरूप को दिखाने वाला एक बहुत बड़ा और अहम पड़ाव है। क्या आपको एहसास है कि यह प्यार कितना चौड़ा, ऊँचा और गहरा है? 1 यूहन्ना 1 की आयतें 1 और 2 शानदार, स्वर्गीय भाषा का इस्तेमाल करते हुए यीशु मसीह की पहचान बताती हैं—जिन्होंने क्रूस का दुख सहा: "जो शुरू से था, जिसे हमने सुना, जिसे हमने अपनी आँखों से देखा, जिसे हमने निहारा और हमारे हाथों ने छुआ—जीवन के वचन के बारे में—वह जीवन प्रकट हुआ; हमने उसे देखा है और उसकी गवाही देते हैं, और हम तुम्हें उस अनंत जीवन के बारे में बताते हैं, जो पिता के साथ था और हमारे सामने प्रकट हुआ है।" बाइबिल बताती है कि यीशु मसीह, जिन्होंने हमारे लिए अपना लहू बहाया, स्वभाव से "जीवन का वचन" हैं जो शुरू से मौजूद थे, और खुद ही परिपूर्ण "अनंत जीवन" हैं—वे जो हमेशा से परमेश्वर पिता के साथ रहे। यहाँ एक सचमुच अद्भुत और रहस्यमयी आध्यात्मिक जुड़ाव है। आज की आयत, 1 यूहन्ना 4:9, कहती है, "इस तरह हमारे बीच परमेश्वर का प्यार प्रकट हुआ," जबकि पहले की एक आयत, 1 यूहन्ना 1:2, उसी क्रिया का इस्तेमाल करते हुए गवाही देती है: "वह अनंत जीवन जो शुरू से पिता के साथ था, हमारे सामने प्रकट हुआ है।" सुसमाचार का वह मकसद जिसकी ओर ये दोनों आयतें इशारा करती हैं, साफ़

है। परमेश्वर ने हमें जो बेदाग और परिपूर्ण प्यार दिखाया है, वह कोई काल्पनिक सिद्धांत या भावना नहीं है। यह एक दिल को छू लेने वाली, ठोस सच्चाई है: यीशु—एकलौते बेटे और अनंत जीवन के वचन के रूप में जो शुरू से मौजूद थे—ने खुद पापी इंसानी शरीर धारण किया, इतिहास में मनुष्य के रूप में आए, और क्रूस पर प्रायश्चित के बलिदान और दुनिया के उद्धारकर्ता के रूप में अपनी जान दे दी। वह अनंत जीवन हमें जीवन देने के लिए अपनी मर्ज़ी से मृत्यु के दायरे में आया—यही परमेश्वर के शुद्ध और परिपूर्ण प्रेम का सार है।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 4:16 में, प्रेरित यूहन्ना घोषणा करते हैं—जैसा कि *Hyundaeinui Seonggyeong* (समकालीन कोरियाई संस्करण) में बताया गया है—उस सबसे सुरक्षित और शानदार आध्यात्मिक निवास स्थान के बारे में, जिसका आनंद वे विश्वासी लेते हैं जिन्होंने क्रूस के सुसमाचार को अपनाया है: "हम जानते हैं और विश्वास करते हैं कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है। परमेश्वर प्रेम है। जो कोई उस प्रेम में रहता है, वह परमेश्वर में रहता है, और परमेश्वर उसमें रहता है।" हम वे लोग हैं जो अपने पूरे दिल से मानते और स्वीकार करते हैं कि नासरत का यीशु जीवित परमेश्वर का पुत्र है (वचन 15)। दूसरे शब्दों में, हम विश्वास करने वाले लोग हैं जो परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के नाम पर दृढ़ भरोसा और विश्वास रखते हैं (3:23)। इस तरह, बाइबल घोषणा करती है कि हममें से जिन्होंने मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है, वे अब डर और दंड के दायरे में नहीं रहते, बल्कि ऐसे लोग बन गए हैं जो केवल उसके अनंत प्रेम में रहते हैं।

अब हम वे लोग हैं जो परमेश्वर के विशाल और शुद्ध प्रेम में रहते हैं। नतीजतन, हम एक अद्भुत रहस्य—एक "पवित्र आपसी निवास"—के आशीर्वाद का आनंद लेते हैं, जिसमें सृष्टिकर्ता परमेश्वर स्वयं हमारे भीतर निवास करता है, और हम, अपनी कमज़ोरी के बावजूद, उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर में सुरक्षित रूप से बने रहते हैं (4:15)। तो फिर, हम इस शानदार आध्यात्मिक मिलन के बारे में कैसे निश्चित हो सकते हैं? क्या यह मेरी अपनी भावनाओं या मूड पर आधारित है? नहीं। 1 यूहन्ना 4:13 स्पष्ट रूप से हमारे भरोसे के स्रोत की पहचान करता है: "हम जानते हैं कि हम परमेश्वर में रहते हैं और परमेश्वर हममें रहता है क्योंकि उसने हमें पवित्र आत्मा दिया है" (समकालीन कोरियाई संस्करण)।

अंततः, हमसे अपने अपार प्रेम के कारण, परमेश्वर ने अपने एकमात्र पुत्र, यीशु को इस दुनिया में भेजा ताकि हमारे सभी पापों का प्रायश्चित हो सके—उसे क्रूर क्रूस पर प्रायश्चित के बलिदान के रूप में और पूरी दुनिया के एकमात्र उद्धारकर्ता के रूप में अर्पित किया। उस प्रायश्चित बलिदान की कृपा से सशक्त होकर, हमने यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से उद्धार प्राप्त किया है; हम पाप और मृत्यु की छाया से बाहर निकलकर अनंत नए जीवन—स्वर्गीय सदा के जीवन—का उपहार प्राप्त कर चुके हैं। जब हम प्रायश्चित की इस अद्भुत कृपा और त्रिएक परमेश्वर के असीम प्रेम पर विचार करते हैं, तो विश्वास करने वाले के होंठों से पवित्र स्तुति अपने आप फूट पड़ती है। इसी गहरी भावना के साथ, आइए हम भजन "मेरे लिए, क्रूस का भारी दुख" (Unified Hymnal में भजन 403 और New Hymnal में 303) के पहले पद के बोलों को अपनी आत्मा की स्वीकारोक्ति के रूप में प्रभु को अर्पित करें और उनकी गहरी स्तुति करें: "मेरे लिए, उन्होंने क्रूस की भारी पीड़ा सही; ओह, प्रभु यीशु की वह प्रेमपूर्ण कृपा जो मेरी जगह पर मरे! हम उनकी स्तुति कैसे न करें, जब उनके बहुमूल्य लहू ने हमें उन पापों से छुटकारा दिलाया है जिनका परिणाम अनंत मृत्यु था?"

तीसरी बात, बाइबल बताती है कि चूँकि परमेश्वर ने हमसे इस तरह प्रेम किया, इसलिए हमारे लिए भी यह उचित है कि हम एक-दूसरे से प्रेम करें।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 4:11 और 19 को देखें। परमेश्वर द्वारा हम पर बरसाए गए अपार प्रेम के आधार पर, प्रेरित यूहन्ना विश्वासियों के जीवन के ठोस फल के बारे में बताते हैं: "हे प्रियों, यदि परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया, तो हमें भी एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए... हम प्रेम इसलिए करते हैं क्योंकि उन्होंने पहले हमसे प्रेम किया।" पुराने नियम के प्रसिद्ध विद्वान इयान एम. डुगुइड की एक टीका (एक ऐसी किताब जिसे मैंने बहुत व्यक्तिगत लगाव के साथ पढ़ा है) में, मुझे एक बार एक गहरी आध्यात्मिक समझ मिली जिसने विश्वास के मूल तत्व को छू लिया। सुसमाचार-केंद्रित दृष्टिकोण से उनके शब्दों पर मनन करते हुए, मैंने अपनी पादरी की नोटबुक में यह लिखा: "हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम पर संदेह करना ही सभी आध्यात्मिक समस्याओं की जड़ है।" जिस आत्मा ने व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के पूर्ण प्रेम का अनुभव नहीं किया है—जो यीशु मसीह के क्रूस पर प्रायश्चित्त के बलिदान से प्रमाणित हुआ है—वह अनिवार्य रूप से दुनिया के विभिन्न प्रलोभनों और पाप के धोखों के आगे बेबस होकर हार मान लेती है।

मलाकी 1:2 में—जो पुराने नियम की अंतिम पुस्तक है—न्याय के परमेश्वर, भविष्यद्वक्ता मलाकी के माध्यम से इस्राएल के लोगों से बात करते हुए ज़ोर देकर कहते हैं: "मैंने तुमसे प्रेम किया है।" फिर भी, आध्यात्मिक उदासीनता और अविश्वास में डूबे हुए लोग पलटकर पूछते हैं: "आपने हमसे कैसे प्रेम किया है?" हालांकि परमेश्वर ने उन्हें हमेशा अपने कभी न बदलने वाले और वादे पर आधारित प्रेम (*हेसेड*) से गले लगाया, फिर भी आध्यात्मिक रूप से अंधे इस्राएलियों को उस पवित्र प्रेम का ज़रा भी एहसास नहीं हुआ। मेरा मानना है कि जीवन में आने वाली सभी आध्यात्मिक मुश्किलों और नैतिक गिरावट की जड़ यही है। क्योंकि जब हम परमेश्वर के बिना शर्त वाले प्रेम को अपने दिल की गहराई से नहीं समझ पाते और उस पर शक करने लगते हैं, तो हम शरीर की बुरी इच्छाओं के पीछे भागकर अपने अंदर के खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं; आखिर में, हम कैन (Cain) के रास्ते पर चल पड़ते हैं—दूसरों के प्रति नफ़रत और जलन से भर जाते हैं।

एक बार, यशायाह और भजन संहिता की किताबों में बहने वाले वादे पर आधारित प्रेम की नदी पर गहराई से मनन करते हुए, मैंने हमारे लिए परमेश्वर के असीम प्रेम के बारे में अपने पादरी के नोट्स में यह लिखा: "बाइबल हमें बताती है कि पूरी दुनिया को बनाने वाले परमेश्वर आपसे बहुत प्यार करते हैं—चाहे आज आप कितने भी थके-हारे और टूटे हुए क्यों न हों। तो फिर, हमारी टूटी-फूटी ज़िंदगी में परमेश्वर का यह शानदार प्रेम कैसे दिखाई देता है?" उनके वचन में, हमें परमेश्वर के प्रेम की तीन खास बातें पता चलती हैं—ऐसी सच्चाईयाँ जो उन पर मनन करने पर दिल को छू लेती हैं। (1) पहली बात, परमेश्वर आपको और मुझे पूरी दुनिया से ज़्यादा 'कीमती और सम्मानित' मानते हैं।

यशायाह 43:4 के पहले हिस्से में, प्रभु हमारे लिए अपने कभी न खत्म होने वाले प्रेम की घोषणा करते हैं: "क्योंकि तुम मेरी नज़र में कीमती और सम्मानित हो, और क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूँ..." हम—जो कमियों और बुराइयों से भरे हैं—पवित्र परमेश्वर की नज़र में इतने कीमती और सम्मानित कैसे हो सकते हैं? यह निश्चित रूप से हमारी अपनी खूबियों या आकर्षण की वजह से नहीं है। यह सिर्फ़ इसलिए है क्योंकि हम परमेश्वर की शानदार संतान बन गए हैं, जिन्हें यीशु मसीह—परमेश्वर के बेटे, जो बेदाग और निष्कलंक हैं—के कीमती लहू से शुद्ध किया गया है। जिन्हें प्रभु ने अपनी जान देकर खरीदा है, उनके तौर पर हम परमेश्वर की नज़र में सबसे कीमती रत्न हैं।

(2) दूसरी बात, चाहे हालात कितने भी निराशाजनक क्यों न हों, परमेश्वर आपको 'कभी नहीं भूलेंगे'।

यशायाह 49:15 में दिए गए इस दिल को छू लेने वाले और शक्तिशाली वादे पर गौर करें: "क्या कोई माँ अपनी छाती से लगे बच्चे को भूल सकती है और जिस बच्चे को उसने जन्म दिया है, उस पर दया नहीं कर सकती? भले ही वह भूल जाए, पर मैं तुम्हें नहीं भूलूँगा!" यहाँ तक कि माँ का प्यार—जिसे अक्सर धरती पर सबसे महान प्यार माना जाता है—कभी-कभी कमज़ोर पड़ सकता है या उसमें खोट आ सकता है, जिससे माँ अपने ही बच्चे को भूलने जैसी दुखद घटना हो सकती है; फिर भी, पिता परमेश्वर, जो हमारे सृष्टिकर्ता हैं, उन्होंने आपका और मेरा नाम अपनी हथेलियों पर खोद रखा है। वह हमें हमेशा याद रखते हैं और कभी नहीं भूलेंगे।

(3) तीसरी बात, जब हम मुश्किल समय से गुज़रते हैं, तो परमेश्वर हमारे लिए एक आदर्श 'शरणस्थान, शक्ति और हर समय मदद करने वाले' के रूप में खड़े होते हैं।

भजन संहिता 46:1 उस सबसे सुरक्षित चट्टान के बारे में शानदार ढंग से बताती है जिस पर एक विश्वासी खड़ा हो सकता है: "परमेश्वर हमारी शरण और शक्ति है, मुसीबत के समय में हमेशा मदद करने वाला है।" जब ज़िंदगी के ज़बरदस्त तूफ़ान और मुश्किलें हमारे ख़िलाफ़ उठती हैं, तो हमें अपनी जगह बनाए रखने के लिए बेकार की कोशिश नहीं करनी चाहिए; बल्कि, हमें तुरंत परमेश्वर की शरण में चले जाना चाहिए, जो हमारी एकमात्र पनाहगाह और मज़बूत किला हैं। प्रभु हमें अपने पंखों के नीचे छिपा लेंगे और दुनिया के हर ख़तरे से पूरी तरह सुरक्षित रखेंगे। इसीलिए हमें मलाकी के ज़माने के इस्राएलियों की तरह आध्यात्मिक रूप से सुस्त नहीं पड़ना चाहिए और नादानी में यह नहीं पूछना चाहिए कि, "आपने हमसे कैसा प्यार किया है?" आज भी, प्रभु हमें बहुत महत्व देते हैं, हमें कभी नहीं भूलते, और मुश्किल समय में हमारी सबसे सुरक्षित पनाहगाह बनकर रोज़ाना अपने प्यार का सबूत देते हैं।

आइए, एक बार फिर आज के वचन—1 यूहन्ना 4:11 और 19—पर विश्वास के साथ ध्यान दें। प्रेरित यूहन्ना उस उद्धार करने वाले प्यार के बारे में शानदार ढंग से बताते हैं जो परमेश्वर ने हम पर बरसाया है और जिसे हमें अपने जीवन में अपनाना चाहिए: "हे प्रियों, अगर परमेश्वर ने हमसे इतना प्यार किया, तो हमें भी एक-दूसरे से प्यार

करना चाहिए... हम इसलिए प्यार करते हैं क्योंकि उन्होंने पहले हमसे प्यार किया।" प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताए गए इस महान आदेश में, यह वचन कैसे गवाही देता है कि परमेश्वर ने हमसे प्यार किया? हमें 1 यूहन्ना 4:9 और 10 में दी गई पवित्र सच्चाई पर गहराई से सोचना चाहिए, जिस पर हम पहले ही विस्तार से चर्चा कर चुके हैं। हमें पाप की दलदल से बचाने और हमारे सभी पापों का प्रायश्चित करने के लिए, परमेश्वर ने बिना किसी हिचकिचाहट के अपने सबसे कीमती और एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को इस धरती पर क्रूर क्रूस पर प्रायश्चित के बलिदान के रूप में भेजा। जैसा कि हमने पहले चर्चा की है, इस "प्रायश्चित" का बाइबिल-सम्मत अर्थ है "संतुष्टि"—यानी परमेश्वर के न्यायपूर्ण फैसले को पूरी तरह से पूरा करना। निष्कलंक फसह के मेमने बनकर और क्रूस पर एक ही बार में अपना लहू बहाकर बलिदान देकर, यीशु ने परमेश्वर की उस गंभीर और पवित्र न्यायिक आवश्यकता को पूरी तरह से संतुष्ट किया कि पाप की सज़ा मिलनी ही चाहिए। ठीक इसीलिए प्रेरित यूहन्ना आज के वचन के 11वें पद में पूरे जोश के साथ कहते हैं: "क्योंकि परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया, इसलिए हमें भी एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए।" "इतना" या "इस हद तक" शब्दों में क्रूस का वह अवर्णनीय महत्व छिपा है—जहाँ सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने हमें बचाने के लिए अपने एकलौते पुत्र का जीवन बलिदान कर दिया, जबकि हम उसकी रचनाएँ होकर भी उसके दुश्मन बन गए थे। जब हम असहाय और पापी थे और परमेश्वर से दूर उसके दुश्मन बने हुए थे, तब उसने "सबसे पहले" हमसे प्रेम किया, बिना किसी शर्त या बदले में कुछ पाने की उम्मीद के (1 यूहन्ना 4:19)। इसलिए, परमेश्वर की संतान के रूप में, जिन्हें इस असीम स्वर्गीय प्रेम को पाकर मृत्यु से जीवन मिला है, हमें ऐसी स्थिति में खड़े होना चाहिए जहाँ हम सचमुच अपने साथ के विश्वासियों से प्रेम करें, भले ही यह हमारी अपनी ताकत और स्वार्थी भावनाओं के खिलाफ हो। यह केवल एक विकल्प नहीं है; यह उस जीवन का सबसे उपयुक्त और महिमामयी फल है जो एक उद्धार पाए हुए व्यक्ति को देना चाहिए।

अगर परमेश्वर ने सबसे पहले हमसे प्रेम न किया होता, तो हम कठोर हृदय वाले ऐसे लोग होते जो यीशु द्वारा घोषित महान आज्ञा के पहले हिस्से—"अपने परमेश्वर प्रभु से अपने सारे मन, अपनी सारी आत्मा और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम करो" (मत्ती 22:37)—का 0.1% भी पालन करने में पूरी तरह असमर्थ होते। प्रियजनों, हम—जो आज्ञा न मानने और पाप की बुराई के कारण आध्यात्मिक रूप से ठंडे और मरे हुए थे—पवित्र परमेश्वर से सबसे पहले प्रेम करने की हिम्मत कैसे कर सकते थे? (इफिसियों 2:1) हम—जिन्होंने परमेश्वर के नियम को तोड़ा था और उसके न्याय-सिंहासन के सामने उसके दुश्मन बनकर खड़े थे—उसकी ओर सबसे पहले प्रेम का

हाथ कैसे बढ़ा सकते थे? (रोमियों 5:10) हम ऐसे पापी थे जो न तो कभी सबसे पहले परमेश्वर से प्रेम कर सकते थे, और न ही हमारी ऐसी कोई इच्छा थी। केवल त्रिएक परमेश्वर ही हैं जिन्होंने हमारी सूखी आत्माओं में पवित्र प्रेम की ज्योति जलाई है। आज के वचन—1 यूहन्ना 4:19—के माध्यम से प्रेरित यूहन्ना, एक सुसमाचार-संबंधी दृष्टिकोण से, इस गहरे और हृदयस्पर्शी प्रेम के पीछे की पहल को बताते हैं: "हम इसलिए प्रेम करते हैं क्योंकि उसने पहले हमसे प्रेम किया" (NKJV)। "हम इसलिए प्रेम करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने पहले हमसे प्रेम किया" (Contemporary Korean Version)। परमेश्वर की आराधना करने और अपने साथ के विश्वासियों से सच्चे मन से प्रेम करने के लिए हमें जो एकमात्र शक्ति मिलती है, वह इस तथ्य से आती है कि परमेश्वर ने—बिना किसी शर्त के और "सबसे पहले"—हमसे प्रेम किया, जबकि हम इसके योग्य नहीं थे। परमेश्वर की संतान होने के नाते, जिन्हें यह बिना योग्यता के मिलने वाला प्रेम मिला है—मानो प्रभु के क्रूस से हमें यह प्रेम मिला हो—हमें अब अपने दैनिक जीवन में एक-दूसरे से प्रेम करने का फल दिखाना चाहिए। तो फिर, बाइबल क्या कहती है कि हम, जिन्हें छुटकारा मिला है, प्रभु की आज्ञा का पालन करते हुए विशेष रूप से "एक-दूसरे से प्रेम" कैसे करें? आज के वचन (1 यूहन्ना 4:7–21) में दी गई शानदार सच्चाई के माध्यम से, मैं पाँच मुख्य आध्यात्मिक शिक्षाओं और दिशा-निर्देशों पर चर्चा करना चाहता हूँ जिन्हें हमें प्रेम का समुदाय बनाते समय मजबूती से थामे रखना चाहिए।

(1) सबसे पहले, प्रेम परमेश्वर का है, और हम *agapetoi*—यानी "प्रियजन"—हैं, जिन्हें उनके प्रेम ने रचा है।

1 यूहन्ना 4:7 के पहले भाग में, प्रेरित यूहन्ना गहरे स्नेह से भरे हृदय के साथ समुदाय से आग्रह करते हैं: "हे प्रियो, आओ हम एक-दूसरे से प्रेम करें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर की ओर से है..." (NKJV)। "प्रिय मित्रों, आओ हम एक-दूसरे से प्रेम करें। प्रेम परमेश्वर की ओर से आता है" (Contemporary Korean Version)। "प्रिय" (या ग्रीक में *agapetoi*) शब्द—जिसका उपयोग प्रेरित यूहन्ना यहाँ मसीहियों को संबोधित करने के लिए करते हैं—परमेश्वर के बिना शर्त वाले *agape* (अगापे) प्रेम की प्रसिद्ध अवधारणा से आया है। इसका मूल अर्थ है "वे जिन्हें परमेश्वर का रहस्यमय और पूर्ण प्रेम मिला है"—दूसरे शब्दों में, "परमेश्वर द्वारा प्रेम किए गए लोग।" एक-दूसरे से प्रेम करने की हमारी आज्ञा का आधार ठीक इसी पहचान-परिवर्तन में निहित है। जब प्रेरित यूहन्ना कहते हैं, "आओ हम एक-दूसरे से प्रेम करें," तो इसका मतलब कोई एक बार लिया गया भावनात्मक फ़ैसला नहीं होता; बल्कि, यह वर्तमान काल में दिया गया एक पवित्र और लगातार चलने वाला आदेश है, जो हमें लगातार, मज़बूती

से और आदत के तौर पर एक-दूसरे से प्रेम करने के लिए प्रेरित करता है। स्वर्ग के नागरिक होने के नाते, जिन्हें पहले ही परमेश्वर का महान प्रेम मिल चुका है और जो हर साँस के साथ उसे पाते रहते हैं, हमारे लिए यह स्वाभाविक और सही है कि हम अपने साथी विश्वासियों से प्रेम करते रहें। हमें उस गहरे और मर्मस्पर्शी दया भाव को अपनाना चाहिए जिसके साथ प्रभु लगातार हमसे प्रेम करते हैं। यूहन्ना आगे कहते हैं, "क्योंकि प्रेम परमेश्वर की ओर से है।" यह बात उस गहरे और बुनियादी सच से पूरी तरह मेल खाती है जिसे उन्होंने पहले आयत 8 और 16 में गंभीरता से स्वीकार किया था: "परमेश्वर प्रेम है।" चूँकि परमेश्वर स्वयं प्रेम हैं, इसलिए पृथ्वी पर मौजूद सारा सच्चा प्रेम उन्हीं से आता है। इसलिए, एक-दूसरे से प्रेम करने का रहस्य हमारे अपने अच्छे इरादों या नैतिक संकल्पों में नहीं है। यह इस बात में छिपा है कि परमेश्वर—जो प्रेम का मूल स्रोत हैं—ने पहले हम जैसे अयोग्य लोगों को ढूँढा ताकि क्रूस के ज़रिए अपना प्रेम दिखा सकें, और फिर जब हमें उस प्रेम का एहसास हुआ, तो उन्होंने व्यक्तिगत रूप से पवित्र आत्मा को हमारे भीतर वास करने के लिए भेजा। पवित्र आत्मा अभी भी हमारे दिलों की गहराई में वास करते हैं और हमें "आत्मा का फल"—यानी पवित्र प्रेम—पैदा करने में सक्षम बनाते हैं, जैसा कि गलातियों की पत्री में बताया गया है। केवल तभी, जब हम प्रेम के स्रोत परमेश्वर से जुड़े होते हैं और उनकी ही साँस में साँस लेते हैं, हम सचमुच अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर सच्चे प्रेम के कार्यों के ज़रिए अपने साथी विश्वासियों को अपना सकते हैं।

अगर हम इस महान सत्य के ठीक उलट बात पर विचार करें, तो हमें एक कड़ी आध्यात्मिक चेतावनी मिलती है जो हमारे दिलों को झकझोर देती है: अगर प्रेम मूल रूप से परमेश्वर का है, तो अपने साथी विश्वासियों और भाइयों के प्रति "घृणा" पूरी तरह से शैतान की है। यूहन्ना की पहली पत्री में, प्रेरित यूहन्ना प्रकाश और अंधकार, प्रेम और घृणा के बीच के इस संघर्ष को बहुत स्पष्ट रूप से दिखाते हैं।

सबसे पहले, 1 यूहन्ना 1:5 में, यूहन्ना परमेश्वर की पूर्ण पवित्रता के बारे में बताते हैं: "परमेश्वर ज्योति है; उसमें ज़रा भी अंधकार नहीं है।" फिर भी, 2:9 में, वे तुरंत दिखावटी विश्वासियों का असली चेहरा सामने लाते हैं: "जो कोई कहता है कि वह ज्योति में है, लेकिन अपने भाई या बहन से नफ़रत करता है, वह अभी भी अंधकार में है।" इसके अलावा, आयत 11 ऐसी नफ़रत के आध्यात्मिक नुकसान को उजागर करती है: "लेकिन जो कोई अपने भाई या बहन से नफ़रत करता है, वह अंधकार में है और अंधकार में ही चलता है। उसे पता नहीं होता कि वह कहाँ जा रहा है, क्योंकि अंधकार ने उसे अंधा कर दिया है।" इन शब्दों से जो आध्यात्मिक सच्चाई सामने आती

है, वह साफ़ है: हमारा परमेश्वर पवित्र ज्योति है, जबकि शैतान भयानक अंधकार है। इसलिए, जो लोग सचमुच अपने भाई-बहनों से प्यार करते हैं, वे प्रभु की तेजस्वी ज्योति में रहते हैं (आयत 10), जबकि जो लोग अपने अंदर नफ़रत और जलन पालते हैं—चाहे वे मुँह से कुछ भी कहें—वे शैतान के अंधकार में फँसे रहते हैं। आखिरकार, आध्यात्मिक सच्चाई यह है कि जैसे परमेश्वर प्रेम का स्रोत हैं, वैसे ही शैतान नफ़रत का स्रोत है।

इसके अलावा, नफ़रत की वह ज़हरीली बेल, जो शैतान की है, पूरी तरह से इस भ्रष्ट "संसार" से पैदा होती है। 1 यूहन्ना 2:16 में दी गई बात पर गौर करें: "क्योंकि संसार की हर चीज़—शरीर की लालसा, आँखों की लालसा और जीवन का घमंड—पिता से नहीं, बल्कि संसार से आती है।" संसार की शारीरिक, कामुक और स्वार्थी सोच लगातार हमारे दिलों में नफ़रत और फूट पैदा करती है। ऐसी चीज़ें हमारे पवित्र परमेश्वर और पिता की ओर से मिलने वाली स्वर्गीय बुद्धि बिल्कुल नहीं हैं। फिर भी, आप और मैं अब अंधकार की संतान नहीं हैं। हम शानदार संतान हैं जिन्हें यीशु मसीह के लहू से छुटकारा मिला है, और जिनमें हमारे लिए पिता परमेश्वर का पूर्ण प्रेम भरपूर मात्रा में बसा हुआ है। इसलिए, हम उस संसार से प्यार नहीं करते जो खत्म हो रहा है (आयत 15); इसके बजाय, हम जीवन के हर पहलू में उन लोगों के रूप में मज़बूती से खड़े रहते हैं जो "परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं" (आयत 17)। परमेश्वर की पवित्र इच्छा—जो स्वभाव से ही प्रेम हैं—जटिल नहीं है। इसका सीधा सा मतलब है प्रभु के लहू से लिखी गई नई आज्ञा का पूरे दिल से पालन करना: यानी अपने आस-पास के भाई-बहनों से सच्चे दिल और कामों के ज़रिए जोश के साथ "एक-दूसरे से प्रेम करना" (3:23)।

(2) दूसरी बात, जो अपने भाई से प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है, और इस प्रेम का अभ्यास ही सच्चे नए जन्म (पुनर्जन्म) का सबूत है।

1 यूहन्ना 4:7 के दूसरे हिस्से को देखें—जो आज का मुख्य वचन है—तो प्रेरित यूहन्ना प्रेम और नए जन्म के बीच के गहरे और रहस्यमयी संबंध को बताते हैं: "...हर वह व्यक्ति जो प्रेम करता है, परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है" (रिवाइज़्ड न्यू कोरियन स्टैंडर्ड वर्शन)। "हर वह व्यक्ति जो प्रेम करता है, परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। प्रेरित यूहन्ना का यह कहना कि वे "परमेश्वर से जन्मे हैं," एक गंभीर धार्मिक (थियोलॉजिकल) बात है: जो लोग प्रभु की पवित्र आज्ञा का पालन करते हुए अपने साथी

विश्वासियों से परमेश्वर जैसा प्रेम करते हैं, वही सचमुच नए सिरे से जन्मे (पुनर्जन्म पाए हुए) लोग हैं। दूसरे शब्दों में, जिन लोगों ने धर्मी यीशु मसीह पर विश्वास करके उद्धार पाया है—जो हमारे पापों के लिए प्रायश्चित का बलिदान बने (2:2) और जिन्होंने अपनी मर्ज़ी से क्रूस पर अपनी जान दी (3:16)—वे स्वभाव से ही पवित्र आत्मा के द्वारा नए सिरे से जन्मे आत्मिक रूप से नई रचनाएँ हैं (वचन 23)। क्रूस के कीमती लहू के ज़रिए पूरी तरह से नई रचना बनने के बाद, स्वर्ग के लोग अब अपने पुराने पापी स्वभाव के उलट, प्रभु की आज्ञाओं का खुशी-खुशी पालन करते हुए और अपने साथी विश्वासियों से सच्चा आपसी प्रेम रखते हुए जीवन जीते हैं। परमेश्वर से "नए सिरे से जन्म लेने" (पुनर्जन्म) के रहस्य के बारे में, प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:29 में पहले ही एक मज़बूत आत्मिक मानक तय कर दिया था: "यदि तुम जानते हो कि वह धर्मी है, तो तुम यह भी जानते हो कि हर वह व्यक्ति जो धार्मिकता का काम करता है, वह उसी से जन्मा है।" यहाँ, "धार्मिकता का काम करने वाला" उस संत को कहा गया है जो धर्मी प्रभु में बने रहते हुए, प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार अपने आस-पास के भाई से जोश के साथ प्रेम करता है। यीशु के नियम—अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना—का पूरी तरह से पालन करने वाला जीवन ही वह है जिसे बाइबल सच्ची धार्मिकता का अभ्यास करना बताती है। जो लोग अपने रोज़मर्रा के जीवन में प्रेम की इस धार्मिकता का अभ्यास करते हैं, वही सचमुच "उसी से जन्मे" हैं और धर्मी परमेश्वर की कीमती संतान होने का स्पष्ट सबूत देते हैं। "मसीह में जीने" का यही मतलब है—जैसा कि *कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन* में बताया गया है—और यह प्रभु के सर्वोच्च शासन के तहत "मसीह में जीने" की असली सच्चाई को दर्शाता है (पद 27–28)। केवल वे ही प्रभु की सच्ची संतान हैं जो हर साँस के साथ मसीह में बने रहते हैं और काम और सच्चाई, दोनों से प्यार दिखाते हैं—वे जो परमेश्वर पिता, यानी ब्रह्मांड के रचयिता को व्यक्तिगत, वास्तविक और पूरी तरह से जानते हैं।

परमेश्वर के लोगों (जो नए सिरे से जन्मे हैं) के जीवन पर चर्चा करने के बाद, प्रेरित यूहन्ना तुरंत उन लोगों की आध्यात्मिक त्रासदी की ओर ध्यान दिलाते हैं जो बिल्कुल विपरीत स्थिति में हैं, और इस मुद्दे पर तीखी और गहरी आलोचना करते हैं। आज के वचन, 1 यूहन्ना 4:8 को देखें: "जो प्यार नहीं करता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्यार है।" हमारे परमेश्वर का मूल स्वभाव ही सच्चा प्यार है। फिर भी, मुँह से यह दावा करना कि हम उस परमेश्वर को जानते हैं—जिसका मूल स्वभाव ही प्यार है—और साथ ही अपनी आँखों के सामने मौजूद भाई-बहनों से नफ़रत करना, असल में परमेश्वर को जानना नहीं है। यह एक चालाक पाखंड के अलावा और

कुछ नहीं है जो परमेश्वर और खुद, दोनों को धोखा देता है। इसीलिए *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) एक स्पष्ट और पक्का फैसला सुनाता है: "जो प्यार नहीं करते, वे परमेश्वर को नहीं जानते।"

प्रेरित यूहन्ना के नज़रिए से, और कौन आध्यात्मिक रूप से अंधे व्यक्ति की स्थिति में है जो परमेश्वर के बारे में कुछ नहीं जानता? यूहन्ना ने 3:6 के दूसरे भाग में पहले ही मज़बूती से कहा था: "...जो कोई पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है और न ही उसे जाना है।" यूहन्ना की सोच लगातार, और यहाँ तक कि डरावने हद तक, साफ़ है। जो लोग परमेश्वर के नियम को हल्के में लेते हैं और आदत के तौर पर पाप करते हैं, वे परमेश्वर को नहीं जानते। इसके विपरीत, बाइबल पाप करने वाले किसी भी व्यक्ति की आध्यात्मिक पहचान को उजागर करती है और दिखाती है कि वे पूरी तरह से "शैतान के" हैं (पद 8)। दूसरे शब्दों में, जो व्यक्ति अपने साथ रहने वाले साथी विश्वासियों से सच्चा प्यार नहीं करता, वह किसी भी तरह से परमेश्वर का सच्चा संत नहीं है। 1 यूहन्ना 3:10 में बताए गए साफ़ फ़र्क पर गहराई से सोचें: “इससे हमें पता चलता है कि कौन परमेश्वर की संतान है और कौन शैतान की संतान: जो कोई सही काम नहीं करता, वह परमेश्वर की संतान नहीं है, और जो अपने भाई-बहन से प्यार नहीं करता, वह भी परमेश्वर की संतान नहीं है।” “इसी तरह परमेश्वर की संतान और शैतान की संतान के बीच साफ़ फ़र्क किया जाता है। जो कोई सही काम नहीं करता या अपने भाई से प्यार नहीं करता, वह परमेश्वर की संतान नहीं है” (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। परमेश्वर ऐसे किसी भी नकली विश्वास को पूरी तरह नकार देते हैं जिसमें प्यार न हो। जो जीवन अपने भाई से मुँह मोड़ लेता है और उससे प्यार नहीं करता, वह इस बात का दुखद सबूत है कि वह इंसान परमेश्वर का होने के बजाय शैतान के साये में फँसा हुआ है।

लेकिन प्यारे लोगों, हमारी असली पहचान क्या है? हम हमेशा रहने वाले सृष्टिकर्ता परमेश्वर की अनमोल संतान हैं (पद 1-2)। क्योंकि पिता परमेश्वर ने हम पर बेपनाह प्यार बरसाया है, इसलिए हमें अंधेरे की संतान होने की हालत से निकालकर प्यार की पवित्र संतान बनाया गया है। इसलिए, परमेश्वर की सच्ची संतान होने के नाते, अब हमें परमेश्वर के स्वभाव को अपनाना चाहिए, जीवन के हर पहलू में नेकी का पालन करना चाहिए और अपने आस-पास के भाइयों से पूरे दिल से प्यार करना चाहिए (पद 10)। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हम—अच्छी-अच्छी बातें कहकर नहीं, बल्कि प्यार भरे पवित्र जीवन के ज़रिए—निडर होकर यह साबित करें

कि हम स्वर्ग के सच्चे नागरिक हैं, पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म पाए हुए हैं, और अपने रोज़मर्रा के जीवन में अपने भाई-बहनों से खुद की तरह प्यार करके प्यार करने वाले परमेश्वर को पूरी तरह जानते हैं।

(3) तीसरी बात, जो लोग अपने सामने मौजूद भाई से प्यार नहीं कर पाते, वे उस परमेश्वर से प्यार नहीं कर सकते जिसे वे देख नहीं सकते; दिखावटी प्यार, जिसमें मन के अंदर नफ़रत छिपी हो, प्रभु की कड़ी फटकार को ही बुलावा देता है।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 4:20 को देखें। प्रेरित यूहन्ना एक बहुत ही असरदार आध्यात्मिक माइक्रोस्कोप का इस्तेमाल करके यह पता लगाते हैं कि किसी विश्वासी का परमेश्वर के प्रति प्यार असली है या नकली: “अगर कोई कहता है, ‘मैं परमेश्वर से प्यार करता हूँ,’ और अपने भाई से नफ़रत करता है, तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से प्यार नहीं करता जिसे उसने देखा है, वह उस परमेश्वर से प्यार नहीं कर सकता जिसे उसने नहीं देखा है” (NKJV)। “जो कोई कहता है कि वह परमेश्वर से प्रेम करता है, लेकिन अपने भाई से नफ़रत करता है, वह झूठा है। जो व्यक्ति अपने सामने मौजूद भाई से प्रेम नहीं कर सकता, वह उस परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकता जिसे वह देख नहीं सकता” (कंटेम्पररी कोरियन वर्ज़न)। नीतिवचन 26:24–25 उस पाखंडी की बुरी सच्चाई को साफ़-साफ़ दिखाता है जो दूसरों को धोखा देना चाहता है, जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्ज़न* में बताया गया है: “एक पाखंडी अपनी असली भावनाओं को चापलूसी भरी बातों के पीछे छिपाता है। उसकी बातें सुनने में भले ही कितनी भी अच्छी क्यों न लगें, उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता, क्योंकि उसका मन बुरे विचारों से भरा होता है” (कंटेम्पररी कोरियन वर्ज़न)।

प्यारे लोगों, भले ही हमारे दिलों में किसी दूसरे व्यक्ति के लिए गहरी नफ़रत और जलन हो, फिर भी हम दुनिया की सबसे प्यारी मुस्कान ओढ़ सकते हैं और विनम्र, मीठी बातों से अपनी असली भावनाओं को छिपा सकते हैं। लेकिन, बाइबल इस दोहरे रवैये को साफ़ तौर पर "पाखंड" कहती है। एक पाखंडी व्यक्ति मन में किसी दूसरे के लिए ज़हरीली और बुरी भावना रखता है, जबकि बाहर से चालाकी से उसका पक्ष लेता है और सच्चे प्यार की दिखावटी बातों से अपने बुरे असली स्वभाव को छिपाता है। तो फिर, यह पाखंडी प्यार क्या है? यह होंठों से "मैं तुमसे प्यार करता हूँ" कहना है, जबकि दिल की गहराई में किसी भाई से नफ़रत करना और उसकी बुराई करना है; यही वह पाखंडी प्यार है जो शैतान का है। पुराने नियम में इस्राएलियों का जीवन बिल्कुल ऐसा ही था।

पूजा-पाठ में, वे ज़ोर-ज़ोर से कहते थे कि वे प्रभु का सबसे ज़्यादा सम्मान और आदर करते हैं, फिर भी उनके दिल उनसे बहुत दूर हो चुके थे और सांसारिक इच्छाओं और मूर्ति-पूजा के पापों में गहरे डूबे हुए थे। मरकुस 7:6 में, यीशु ने इन दिखावटी धार्मिक लोगों के मुखौटे को सख्ती से उतार फेंका: "उन्होंने जवाब दिया, 'यशायाह ने तुम पाखंडियों के बारे में सही भविष्यवाणी की थी; जैसा कि लिखा है: "ये लोग होंठों से तो मेरा सम्मान करते हैं, लेकिन उनके दिल मुझसे बहुत दूर हैं।"'" पाखंडी प्यार—जहाँ दिल और काम मेल नहीं खाते—एक आध्यात्मिक अपराध है जिसे परमेश्वर सबसे ज़्यादा नापसंद करते हैं। जो व्यक्ति अपने साथी विश्वासी—जो उसके सामने एक जीता-जागता इंसान है—से प्यार करने या उसकी ज़रूरतों को पूरा करने में नाकाम रहता है, वह पवित्र परमेश्वर पिता से पूरे दिल से प्यार करने का दावा कैसे कर सकता है, जबकि वे आत्मा हैं और आँखों से दिखाई नहीं देते? यह नामुमकिन है। परमेश्वर के लिए हमारे प्यार की सच्चाई की एकमात्र कसौटी यह है कि हम अपने आस-पास मौजूद साथी विश्वासियों के प्रति सच्चा प्यार दिखाएँ। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसे पवित्र संत बनें जो अपने जीवन की वेदी पर अदृश्य परमेश्वर के प्रति अपने प्यार की सच्चाई को साबित करें—दिखावे की भाषा को छोड़कर और सच्चे दिल से अपने भाइयों और बहनों को अपनाकर। जब हम 1 यूहन्ना 4:20 की तीखी बात और मरकुस 7:6 में यीशु के शब्दों पर गहराई से सोचते हैं, तो हमें अपने अंदर छिपे आध्यात्मिक पाखंड की कड़वी सच्चाई का सामना करना पड़ता है: "अगर कोई कहता है, 'मैं परमेश्वर से प्यार करता हूँ,' लेकिन अपने भाई से नफ़रत करता है, तो वह झूठा है। क्योंकि जो अपने भाई से प्यार नहीं करता, जिसे उसने देखा है, वह परमेश्वर से प्यार नहीं कर सकता, जिसे उसने नहीं देखा है।" इस नज़रिए से देखें तो, आज ईसाई सबसे ज़्यादा किस तरह का पाखंड करते हैं? यह पाखंड तब होता है जब हम ज़ुबान से तो कहते हैं कि हम "अदृश्य परमेश्वर से प्यार करते हैं," लेकिन अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में, हम "उन भाई-बहनों से नफ़रत करते हैं—और उनसे प्यार करने में नाकाम रहते हैं—जिन्हें हम देख सकते हैं।" यह आध्यात्मिक विरोधाभास हमारे पश्चाताप के जीवन में साफ़ झलकता है। हम अपने गुप्त पापों को मानने और पवित्र, अदृश्य परमेश्वर के सामने रोते हुए माफ़ी माँगने में तो तेज़ी दिखाते हैं। फिर भी, उनसे माफ़ी मिलने के भरोसे से खुद को तसल्ली देते हुए, हम खुद को विनम्र बनाने, अपनी गलतियाँ मानने या "अपनी आँखों के सामने मौजूद भाई-बहनों"—जिन्हें हमने अपनी बातों और कामों से चोट पहुँचाई है और खून के आँसू रुलाए हैं—से सच्चे दिल से माफ़ी माँगने में नाकाम रहते हैं। साथी विश्वासियों के सामने अपनी ज़िद और अहंकार पर अड़े रहना और साथ ही परमेश्वर की भक्ति का बहाना बनाना—यही वह भयानक आध्यात्मिक पाखंड है जिसकी यूहन्ना निंदा करते हैं।

तो फिर, हम पाखंड का यह शर्मनाक पाप लगातार क्यों करते हैं? हम अदृश्य परमेश्वर के साथ अपने सीधे रिश्ते पर तो ध्यान देते हैं, लेकिन कलीसिया के दिखाई देने वाले सदस्यों के साथ मेल-मिलाप की ज़रूरत को पूरी तरह नज़रअंदाज़ क्यों कर देते हैं? इसकी जड़ हमारे बढ़े हुए अहंकार और आध्यात्मिक पाखंड में है। चूँकि परमेश्वर अदृश्य हैं, इसलिए हम आसानी से अपनी मनमानी धार्मिक भावनाओं के आधार पर "परमेश्वर के प्रति प्रेम" का दिखावा कर सकते हैं, बिना अपनी ज़िद को छोड़े। इसके उलट, अपने पास मौजूद भाई-बहनों के सामने पापों को मानना और माफ़ी माँगना सचमुच दर्दनाक होता है; इसके लिए हमें अपने जीवित अहंकार को पूरी तरह से क्रूस पर चढ़ाना पड़ता है। प्रभु कभी भी ऐसे पाखंडी धार्मिक कामों को स्वीकार नहीं करते जहाँ कोई स्वर्ग के परमेश्वर की ओर तो हाथ उठाता है, लेकिन अपने सामने मौजूद साथी विश्वासियों की अनदेखी करता है। अब समय आ गया है कि हम पाखंड का नकाब उतार फेंकें और परमेश्वर की सच्ची संतान के तौर पर खड़े हों—वही ईमानदारी अपने सामने मौजूद भाई-बहनों के साथ रिश्तों में भी दिखाएं जो हमने अनदेखे परमेश्वर के सामने झुकते समय दिखाई थी; अपनी गलतियों को मानें और मेल-मिलाप की कोशिश करें।

मुझे शर्म आती है कि हाल ही में मुझे—परमेश्वर के वचन की रोशनी में—अपने अंदर छिपे इस भयानक पाखंड का कड़वा सच देखना पड़ा। भारी मन से और पवित्र आत्मा की प्रेरणा से, मैंने अपनी पादरी वाली नोटबुक में पछतावे के ये शब्द लिखे: "मेरे अंदर पाखंड का मतलब है परमेश्वर के वचन—उस आध्यात्मिक आईने—के सामने खुद को ईमानदारी से न परखना। इसका मतलब है अपनी ही आँख में फँसे बड़े 'लट्ठे' को पूरी तरह नज़रअंदाज़ करना, और उसी खराब, लट्ठे वाली आँख से किसी दूसरे व्यक्ति की आँख में मौजूद छोटे से 'तिनके' को तुरंत और बेरहमी से ढूँढना, उस पर उँगली उठाना और उसकी बुराई करना।" मुझे यह बात रोते हुए इसलिए लिखनी पड़ी क्योंकि जब मैं लूका 6:41–42 पढ़ रहा था और उस पर मनन कर रहा था, तो पवित्र आत्मा ने मुझे अपने छिपे हुए रूप और पाखंड का सामना करने के लिए मजबूर किया: "तुम अपने भाई की आँख में लकड़ी का बुरादा या तिनका क्यों देखते हो और अपनी ही आँख में फँसे लट्ठे पर ध्यान क्यों नहीं देते? तुम अपने भाई से कैसे कह सकते हो, 'भाई, मुझे अपनी आँख से तिनका निकालने दो,' जबकि तुम खुद अपनी आँख में फँसे लट्ठे को नहीं देख पाते? हे पाखंडी, पहले अपनी आँख से लट्ठा निकाल, और फिर तू साफ-साफ देख पाएगा कि अपने भाई की आँख से तिनका कैसे निकालना है।" प्रभु की इस गंभीर आवाज़ के सामने मेरा दिखावा टूट गया।

जैसा कि बाइबल के जानकार चेतावनी देते हैं, दिखावटी पवित्रता के साथ काम करना—दूसरों की राय और प्रतिष्ठा की बहुत ज़्यादा चिंता के कारण—परमेश्वर को धोखा देने की कोशिश है, जो जलती हुई आग जैसी आँखों से दिल को परखते हैं; यह खुद को धोखा देने का एक बहुत गंभीर और बुरा आध्यात्मिक अपराध है। परिभाषा के अनुसार, 'पाखंड' का मतलब है अपने शब्दों या कामों को झूठा बनाकर पेश करना। प्रभु ने हमें साफ और सख्ती से आदेश दिया है कि हम अपने साथी विश्वासियों और पड़ोसियों से खुद की तरह प्यार करें। फिर भी, धार्मिक मुखौटा पहनकर—और दिखावटी बातों और कामों से बाहर से बहुत नम्रता और प्यार का नाटक करते हुए—अपने दिल में किसी भाई के प्रति जलन, नफ़रत और बुरा सोचने की भावना रखना, असल में उस दिखावे का ही रूप है जिससे परमेश्वर नफ़रत करते हैं। 1 यूहन्ना 4:20 के पहले हिस्से में, प्रेरित यूहन्ना उन लोगों के लिए एक साफ़ और कड़ा बयान देते हैं जो दिखावे या पाखंड की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं: "अगर कोई कहता है, 'मैं परमेश्वर से प्यार करता हूँ,' और अपने भाई से नफ़रत करता है, तो वह झूठा है..." प्रभु के इस तीखे बयान और अपने पादरी के तौर पर किए गए चिंतन के आधार पर, मैंने दो गंभीर आध्यात्मिक सच्चाइयों पर गहराई से विचार किया है जिन पर हमें ध्यान देना चाहिए। आख़िर वह "दिखावटी व्यवहार" क्या है जिसके ख़िलाफ़ बाइबल इतनी कड़ी चेतावनी देती है?

डिक्शनरी की परिभाषा के अनुसार, पाखंड (hypocrisy) का मतलब है ऐसी बातें या काम करना जो असल में हों नहीं—यानी झूठा दिखावा करना। इस बात को अपने विश्वास के जीवन पर लागू करें। सुसमाचार की किताबों में, प्रभु ने हमें सख़्ती से आदेश दिया है कि हम अपने पड़ोसियों और साथी विश्वासियों से वैसे ही प्यार करें जैसे हम खुद से करते हैं (मत्ती 22:39)। फिर भी, मन ही मन किसी भाई के प्रति जलन, नाराज़गी और नफ़रत की ज़हरीली भावनाएँ पालते हुए, कोई व्यक्ति दूसरों के सामने धार्मिक मुखौटा पहन सकता है और ऐसी बातें या काम कर सकता है जो बहुत नम्र और प्यार भरे लगते हों—यह पाखंड का वह रूप है जिससे परमेश्वर को सख़्त नफ़रत है। 1 यूहन्ना 4:20 के पहले हिस्से में, प्रेरित यूहन्ना उन लोगों के लिए एक साफ़ और कड़ा बयान देते हैं जो दिखावे या पाखंड की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं: "अगर कोई कहता है, 'मैं परमेश्वर से प्यार करता हूँ,' और अपने भाई से नफ़रत करता है, तो वह झूठा है..." हमें मुँह से पवित्र बातें कहने और दिल में अपने भाइयों की बुराई करने जैसा आध्यात्मिक विरोधाभास नहीं करना चाहिए। जब मैंने यूहन्ना के इस तीखे बयान पर मनन

किया, तो मुझे दो गंभीर आध्यात्मिक सच्चाइयों पर गहराई से सोचने का मौका मिला जिन्हें हमें परमेश्वर के सामने सच में समझना चाहिए:

(a) पहली बात, जो कोई भी यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानता है, वह पिता के प्रति सच्चे "परमेश्वर के लिए प्यार" की ओर बढ़ता है।

जब हम 1 यूहन्ना 4:20 की इस बात पर गहराई से विचार करते हैं—"अगर कोई कहता है, 'मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ'..."—तो हमें इसे पिछली आयत, यानी आयत 15 के शानदार शब्दों के संदर्भ में देखना चाहिए: "जो कोई यह मानता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, परमेश्वर उसमें बना रहता है, और वह परमेश्वर में।" दिलचस्प बात यह है कि दोनों आयतें "जो कोई" (या "कोई भी") शब्द से शुरू होती हैं, जो एक बहुत बड़ा निमंत्रण देती हैं। इन दोनों आयतों के बीच गहरा आध्यात्मिक संबंध स्पष्ट है: सच्चा विश्वासी वह है जो "दिल से मानता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है" (आयत 15), और जो आत्मा इस बात को मान लेती है, वह स्वाभाविक रूप से "परमेश्वर से अपने पूरे दिल से प्रेम करने" वाली बन जाती है (आयत 20)। ये दोनों बातें एक-दूसरे से अलग नहीं की जा सकतीं।

इसके पीछे सुसमाचार पर आधारित खास कारण क्या है? जैसा कि *समकालीन कोरियाई संस्करण* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) बताता है, ऐसा इसलिए है क्योंकि जो विश्वासी व्यक्तिगत रूप से और पूरी तरह से मानता है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, वह उस विशाल और पवित्र प्रेम को "जानता और उस पर विश्वास करता है" जो परमेश्वर उनसे करते हैं (आयत 16)। पिता पर भरोसा करने के बाद—जिन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के अपने एकलौते पुत्र को प्रायश्चित के बलिदान के रूप में दिया—वे अब पाप और मृत्यु की दुनिया में नहीं रहते, बल्कि प्रभु के अनंत प्रेम में अपना घर बना लेते हैं। और जो उस पवित्र प्रेम की आग में रहता है, उसके लिए परमेश्वर पिता से—जिन्होंने सबसे पहले उन्हें अपनाया—अपने पूरे दिल, आत्मा और मन से प्रेम न करना असंभव हो जाता है (आयत 20)। इस प्रकार, यीशु को मानने वाला सही मसीही विश्वास अनिवार्य रूप से परमेश्वर के प्रति सच्चे प्रेम के फल—पिता के प्रति गहरे आदर—से साबित होता है। (b) दूसरी बात, अपने भाई से नफरत करते हुए परमेश्वर से प्रेम करने का दावा करना केवल नैतिक धोखा नहीं है; यह एक भयानक

आध्यात्मिक झूठ है जो साफ तौर पर इस बात से इनकार करता है कि यीशु ही वह 'मसीह' हैं जिन्होंने मेरे लिए क्रूस उठाया था।

1 यूहन्ना 4:20 के पहले भाग में प्रेरित यूहन्ना द्वारा उजागर की गई दूसरी गंभीर आध्यात्मिक सच्चाई "झूठे व्यक्ति" की असली पहचान है। हमें उस "झूठे" की व्यवस्थित धार्मिक परिभाषा को अच्छी तरह याद रखना चाहिए जिसे जॉन ने पहले 1 जॉन 2:22 में बताया था: "झूठा कौन है? वही जो इस बात से इनकार करता है कि यीशु ही मसीह है? यही मसीह-विरोधी (एंटीक्राइस्ट) है, जो पिता और पुत्र दोनों का इनकार करता है।" इन दोनों बातों के संदर्भ पर एक साथ विचार करें। जब हम जॉन की पूरी पत्री को देखते हैं, तो शास्त्र में बताए गए असली झूठे व्यक्ति की पहचान मुख्य रूप से दो श्रेणियों में सीमित है:

1. वे लोग जो धार्मिक शिक्षा के आधार पर इस बात से इनकार करते हैं कि यीशु ही एकमात्र मसीहा—'क्राइस्ट'—हैं जो पूरी मानवता का उद्धार करते हैं (1 जॉन 2:22)।

2. वे लोग जो असल में तो अपने साथ के विश्वासियों और भाइयों से नफ़रत करते हैं, लेकिन दिखावे के लिए ज़ोर-शोर से कहते हैं कि वे परमेश्वर से बहुत प्रेम करते हैं (1 जॉन 4:20)।

जब मैंने जॉन द्वारा बताए गए झूठ के इन दो पहलुओं के बीच के संबंध पर गहराई से सोचा, तो मुझे एक ऐसी बड़ी आध्यात्मिक त्रासदी का सामना करना पड़ा जो आत्मा को झकझोर देती है। यह एक दर्दनाक सच्चाई है कि "अपनी आँखों के सामने मौजूद भाई से नफ़रत करना और साथ ही परमेश्वर से प्रेम करने का दावा करना, असल में मसीह-विरोधी (एंटीक्राइस्ट) के व्यवहार से अलग नहीं है—यह इस बात से इनकार करने जैसा है कि यीशु ही मेरे उद्धारकर्ता और मसीह हैं।" सुसमाचार के आधार पर इसका खास कारण क्या है? नासरत के यीशु को सच्चा "मसीह" मानना और स्वीकार करना यह मानना है कि, अभिषेक किए हुए व्यक्ति (मसीह) के रूप में, उन्होंने राजा, भविष्यद्वक्ता और महायाजक की भूमिकाओं को पूरी तरह से निभाया। सबसे बढ़कर, अपने पूरे जीवन से यह स्वीकार करना है कि, निष्कलंक महायाजक के रूप में, उन्होंने व्यक्तिगत रूप से हमारे सभी बुरे पापों को अपने ऊपर लिया और क्रूस पर मरे—प्रायश्चित के बलिदान के रूप में पानी और लहू बहाया—ताकि हम, जो पापों से भरे हुए थे, फिर से जीवित हो सकें (1 जॉन 4:9–10)। उद्धारकर्ता के दिल को छू लेने वाले और

प्रायश्चित करने वाले प्रेम से भयानक मौत से बचाए जाने के बाद, हमें प्रभु से प्रेम करना चाहिए और उनकी आज्ञा माननी चाहिए; फिर भी, अगर हम केवल होंठों से उनके प्रति सम्मान दिखाते हैं और साथ ही अपने साथी विश्वासियों से जलन और नफ़रत करते हैं, तो यह एक नकली विश्वास के अलावा और क्या है जो क्रूस पर प्रभु के काम का अनादर करता है और उसे नकारता है? क्रूस के सुसमाचार की शक्ति उस व्यक्ति के दिल में काम नहीं करती जो अपने भाई से नफ़रत करता है। आयत 20 के दूसरे हिस्से में, प्रेरित यूहन्ना इस धोखेबाज़ धार्मिक व्यवहार की कड़ी आलोचना करते हैं: "...क्योंकि जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता जिसे उसने देखा है, वह परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकता जिसे उसने नहीं देखा है।" इंसान अपने होंठों से क्या कुछ नहीं कह सकता? फिर भी, पवित्र परमेश्वर पिता—जो आत्मा हैं और दिखाई नहीं देते—के प्रति प्रेम का ज़ोर-शोर से दावा करना, जबकि हमारी आँखों के सामने रहने और काम करने वाले भाई-बहनों को न अपनाना, एक ऐसे धोखेबाज़ के पाखंडी झूठ के अलावा और कुछ नहीं है जिसकी आत्मा छिन गई हो। एक सच्चा मसीही, जिसे क्रूस के कीमती लहू से उद्धार मिला है, न केवल अदृश्य परमेश्वर की सच्ची आराधना और प्रेम करता है, बल्कि उस प्रेम के पक्के सबूत के तौर पर अपने कामों और सच्चाई से दिखाई देने वाले भाई-बहनों को भी अपनाता है। आइए, 1 यूहन्ना 4:21 के उस मुख्य आदेश को—जैसा कि *समकालीन कोरियाई संस्करण* में दिया गया है—अनंत राजा के हुक्म के तौर पर अपनी आत्मा में बसा लें: "जो कोई परमेश्वर से प्रेम करता है, उसे अपने भाई से भी प्रेम करना चाहिए। हमें यह आज्ञा यीशु से मिली है।" जो लोग सचमुच परमेश्वर को जानते हैं, वे कभी भी नफ़रत के अंधेरे में नहीं रह सकते। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसे पवित्र संत बनें जो—उस त्रिएक परमेश्वर के स्वभाव को अपनाकर जिसने सबसे पहले हमसे प्रेम किया—अपने सामने मौजूद भाई से खुद की तरह प्रेम करके पूरी दुनिया को यह साबित कर दें कि आपकी आस्था का दावा सच्ची सच्चाई है।

एक गंभीर सच्चाई है जिसे हमें एक बार फिर अपने दिल की गहराई में उतारना चाहिए: जो लोग अपने सामने मौजूद भाई-बहनों से सच्चे दिल से प्रेम नहीं करते, वे सचमुच परमेश्वर से प्रेम नहीं करते। जब मुझे इस शर्मनाक पाखंड की सच्चाई का एहसास हुआ और मैंने आँसुओं के साथ अपने दिल को सही किया, तो मेरे कानों में एक 'ब्लैक स्पिरिचुअल' भजन के बोल धीरे से गूँजने लगे। यह भजन 463, "मैं विश्वासी बनना चाहता हूँ" (I Want to Be a Believer) का दूसरा पद है: "मैं प्रेम करना चाहता हूँ—सच्चे दिल से, सच्चे दिल से; मैं प्रेम करना चाहता हूँ—सच्चे दिल से।" अपनी निजी प्रार्थना की जगह पर आँसुओं के साथ परमेश्वर के लिए यह भजन गाते हुए, मैंने

इसे अपनी सबसे गहरी और सच्ची पादरी-प्रार्थना बना लिया: "हे प्रभु, कृपया मेरे दिल में ज़िद से छिपी हुई ईर्ष्या, जलन, दूसरों को परखने और दोष लगाने की भावना को—क्रूस की आग में—पूरी तरह से जलाकर राख कर दे।" "इस तरह, यीशु मसीह के शुद्ध और पूर्ण प्रेम के साथ—जो किसी भी नफ़रत या स्वार्थ से अछूता है—आप मुझे प्रभु से सबसे बढ़कर प्रेम करने और अपने पड़ोसियों व साथी विश्वासियों से वैसे ही प्रेम करने में समर्थ बनाएं, जैसे मैं अपने शरीर से प्रेम करता हूँ।" यह प्रार्थना केवल अतीत को स्वीकार करने तक सीमित नहीं है; यह वह एकमात्र विनती है जो मैं 'आज' की रोज़मर्रा की सच्चाई में प्रभु के सामने रखता हूँ, ठीक वैसे ही स्वाभाविक और निरंतर जैसे सांस लेना।

प्रियजनों, आइए अब हम अपने होंठों से दिखावे और पाखंड के वस्त्रों को साहसपूर्वक उतार फेंकें। आइए हम किसी भी अशुद्धि से मुक्त, शुद्ध और पूर्ण प्रेम के साथ परमेश्वर से सर्वोच्च प्रेम करें। और, प्रभु के अलौकिक *अगापे* (ईश्वरीय) प्रेम से प्रेरित होकर—जो उस ऊर्ध्वगामी प्रेम के स्रोत से फूटता है—आइए हम परमेश्वर की सच्ची संतान बनें जो ईमानदारी और बिना किसी शर्त के अपने आस-पास के साथी विश्वासियों और भाई-बहनों से प्रेम करती है। जब हम सचमुच अपने सामने मौजूद पड़ोसियों को अपनाते हैं और उनके आँसू पोंछते हैं, तो अनदेखे परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम आखिरकार पूरी दुनिया के सामने एक सच्चे और निष्कपट प्रेम के रूप में सिद्ध हो जाएगा। केवल शब्दों और बातों से आगे बढ़कर, आइए हम कार्यों और ईमानदारी के माध्यम से प्रेम का एक समुदाय बनाएं; मैं प्रभु के नाम से पूरी निष्ठा से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी धन्य संत अपने दैनिक जीवन में परमेश्वर के राज्य के आनंद और विजय का भरपूर अनुभव करें और उसका आनंद लें।

(4) चौथा, जब हम एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो अनदेखा परमेश्वर हमारे भीतर वास करता है, और उसका प्रेम आखिरकार हमारे बीच पूर्णता को प्राप्त करता है।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 4:12 को देखें। प्रेरित यूहन्ना परमेश्वर और विश्वासी के बीच गहरे और रहस्यमय वास और मिलन के रहस्य को प्रकट करते हैं: "किसी ने कभी परमेश्वर को नहीं देखा; यदि हम एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो परमेश्वर हममें वास करता है, और उसका प्रेम हममें पूर्ण हो गया है" (NKJV)। "किसी ने कभी परमेश्वर को नहीं देखा। लेकिन अगर हम एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो परमेश्वर हममें रहता है, और उसका प्रेम हममें

पूरा हो जाता है" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। आइए, मशहूर गॉस्पेल गीत *Abide in Me* (मुझमें बने रहो) के खूबसूरत बोलों पर गहराई से सोचें। इस गीत ने लंबे समय से अनगिनत विश्वासियों के दिलों को छुआ है और उन्हें गहरा आध्यात्मिक सुकून दिया है: "मुझमें बने रहो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ—वही जो हर मुसीबत में तुम्हारी रक्षा करता है। डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारी मदद करूँगा; निराश मत हो, क्योंकि मैं तुम्हारा हाथ थामे रहूँगा। मैंने तुम्हें तुम्हारे नाम से बुलाया है; तुम मेरे हो—तुम मेरे हो, और मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मैं तुम्हें अनमोल और सम्मानित मानता हूँ; मैं वह प्रभु हूँ जो तुमसे प्रेम करता है।" आत्मा को छू लेने वाले इस भजन के बोल किसी इंसान की भावनाओं की उपज नहीं हैं। ये स्वर्ग के शानदार शब्द हैं, जो पुराने और नए नियम (Old and New Testaments) में दिए गए अनगिनत वादों पर गहराई से आधारित हैं।

(a) सबसे पहले, प्रभु हमें दुनिया की नाशवान और भ्रष्ट इच्छाओं के दायरे में रहने के बजाय, हमेशा केवल क्रूस की कृपा में रहने के लिए बुलाते हैं।

"जैसे पिता ने मुझसे प्रेम किया है, वैसे ही मैंने भी तुमसे प्रेम किया है। मेरे प्रेम में बने रहो" (यूहन्ना 15:9)।

(b) दूसरा, जब हम जीवन के कठिन और ऊबड़-खाबड़ रास्तों से गुज़रते हैं, तो प्रभु हमारी उत्तम ढाल और रक्षक बन जाते हैं, और हमें हर मुसीबत से पूरी तरह बचाते हैं।

"प्रभु तुम्हें हर बुराई से बचाएगा; वह तुम्हारे जीवन की रक्षा करेगा" (भजन संहिता 121:7)।

(c) तीसरा, हममें से जो लोग परीक्षाओं और आध्यात्मिक हार की भावना के कारण डगमगा रहे हैं, उनके लिए प्रभु एक अटूट और सच्चा वादा करते हैं कि वे हमें मज़बूती से थामे रखेंगे और अपने सर्वशक्तिमान, धर्मी दाहिने हाथ से हमारी मदद करेंगे।

"डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ; निराश मत हो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ; मैं तुम्हें मज़बूत करूँगा, मैं तुम्हारी मदद करूँगा, मैं अपने धर्मी दाहिने हाथ से तुम्हें थामे रखूँगा" (यशायाह 41:10)।

(d) चौथा, “मैंने तुम्हें नाम लेकर बुलाया है; तुम मेरे हो—तुम मेरे हो।”

“लेकिन अब प्रभु ऐसा कहते हैं, जिन्होंने तुम्हें रचा है, हे याकूब, जिन्होंने तुम्हें बनाया है, हे इस्राएल: ‘डरो मत, क्योंकि मैंने तुम्हें छुड़ाया है; मैंने तुम्हें नाम लेकर बुलाया है, तुम मेरे हो’” (यशायाह 43:1)।

(e) पाँचवाँ, “मैं तुम्हें अनमोल और सम्मानित मानता हूँ।”

“क्योंकि तुम मेरी नज़र में अनमोल और सम्मानित हो, और मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, इसलिए मैं तुम्हारे बदले लोगों को, तुम्हारे जीवन के बदले अन्य जातियों को देता हूँ” (यशायाह 43:4)। यशायाह 43 में मुक्ति और अपनापन होने की जो महान घोषणा मिलती है—जिस पर हमने पहले गहराई से विचार किया था—कि परमेश्वर ने हमें नाम लेकर बुलाया है और अपना बनाया है, उसका सबसे बड़ा रूप सुसमाचारों में व्यवहार के एक ठोस नियम के रूप में मिलता है। यूहन्ना 15:9 के दूसरे भाग में, यीशु अपने शिष्यों को एक शानदार निमंत्रण देते हैं: “मेरे प्रेम में बने रहो।” फिर, अगले वचन (वचन 10) में, वे उस शानदार प्रेम में बने रहने और उनके साथ मिलन का आनंद लेने का एकमात्र तरीका साफ़ तौर पर बताते हैं: "यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे, ठीक वैसे ही जैसे मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है और उनके प्रेम में बना हुआ हूँ।" प्रभु के प्रेम में बने रहने का आध्यात्मिक रहस्य "प्रभु की आज्ञाओं को मानना" ही है।

तो फिर, यीशु की वह कौन सी आज्ञा है जिसकी रक्षा हमें अपनी जान देकर भी करनी चाहिए? यूहन्ना 15:12 और 17 हमारे दिलों के लिए एक स्पष्ट और सर्वोच्च आज्ञा की घोषणा करते हैं—एक ऐसी आज्ञा जिसमें कोई समझौता नहीं हो सकता: "मेरी आज्ञा यह है कि तुम एक-दूसरे से वैसा ही प्रेम करो जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है" (वचन 12); "एक-दूसरे से प्रेम करो। मैंने तुम्हें यही आज्ञा दी है" (वचन 17, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)। प्रेरित यूहन्ना ने क्रूस की छाया में प्रभु द्वारा घोषित इस महान आज्ञा को गहराई से अपनाया, और बाद में इसे बहुत अच्छे ढंग से—1 यूहन्ना 3:23–24 के माध्यम से—आपस में एक-दूसरे में बने रहने के एक गहरे आदर्श के

रूप में बताया: "और उनकी आज्ञा यह है: हमें उनके पुत्र, यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करना चाहिए और एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए, जैसा कि उन्होंने हमें आज्ञा दी थी। जो लोग उनकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, वे उनमें बने रहते हैं, और वे उनमें बने रहते हैं। और हम जानते हैं कि वे हममें बने रहते हैं क्योंकि उन्होंने हमें पवित्र आत्मा दिया है" (NLT)। "परमेश्वर की आज्ञा मानने का अर्थ है उनके पुत्र, यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करना और एक-दूसरे से वैसा ही प्रेम करना जैसा मसीह ने आज्ञा दी थी। जो कोई परमेश्वर की आज्ञा मानता है, वह परमेश्वर में रहता है, और परमेश्वर उस व्यक्ति में रहते हैं। इसलिए, हम जानते हैं कि वे हममें उस पवित्र आत्मा के द्वारा रहते हैं जो उन्होंने हमें दिया है" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। यहाँ बताया गया आध्यात्मिक सिद्धांत स्पष्ट है: जब हम अपने स्वार्थ और घावों को क्रूस पर चढ़ा देते हैं और प्रभु की आज्ञा मानकर अपने साथी विश्वासियों—अपने भाइयों और बहनों—से सच्चे दिल से प्रेम करते हैं, तो हम सचमुच परमेश्वर में रहने लगते हैं, और परमेश्वर, बदले में, हमारे अस्तित्व के केंद्र में रहने लगते हैं। इसके अलावा, पवित्र आत्मा की मौजूदगी के ज़रिए—जो प्रभु की ओर से हमें मिला एक उपहार है—हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में साफ़ तौर पर महसूस करते हैं और पहचानते हैं कि अनदेखे परमेश्वर सचमुच हमारे समुदाय और हमारी आत्माओं में जीवित और सक्रिय हैं।

आज का वचन, 1 यूहन्ना 4:13, हमारे भीतर उनके वास करने और उनसे जुड़ाव की सच्चाई को बहुत ही कम शब्दों में, लेकिन पूरे भरोसे के साथ बताता है: "हम जानते हैं कि हम उसमें रहते हैं और वह हममें, क्योंकि उसने हमें अपनी आत्मा दी है" (NLT)। "हम जानते हैं कि हम परमेश्वर में रहते हैं और परमेश्वर हममें रहते हैं क्योंकि उन्होंने हमें पवित्र आत्मा दी है" (Contemporary Korean Version)। जब हम एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो पवित्र आत्मा व्यक्तिगत रूप से हमारे जीवन में अपनी मौजूदगी की आग जलाते हैं; वे इस आध्यात्मिक सच्चाई की पक्की गारंटी हैं कि हम सचमुच परमेश्वर के हैं और प्रभु हमारे भीतर रहते हैं। जब हम वचन का पालन करते हैं और अपने भाइयों से सच्चे दिल से प्रेम करते हैं, तो हमारे भीतर पवित्र आत्मा के काम के ज़रिए अनदेखे परमेश्वर दिखाई देने लगेंगे—पूरी दुनिया के सामने सबसे शानदार सच्चाई के रूप में प्रकट होंगे।

आज के वचन—1 यूहन्ना 4:12—और पहले के वचनों 3:23–24 में, हमें एक बहुत ही सुंदर आध्यात्मिक समानता देखने को मिलती है। दोनों वचन ज़ोरदार ढंग से बताते हैं कि स्वर्ग के राज्य के नागरिकों के लिए सबसे बड़ा आदेश "एक-दूसरे से प्रेम करना" है। इसके अलावा, वे दोनों परमेश्वर के साथ हमारे जुड़ाव के रहस्य की

पुष्टि करते हैं: जब हम इस आदेश का पालन करते हैं और अपने भाइयों और बहनों से प्रेम करते हैं, तो अनदेखे, पवित्र परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से हमारे सीमित अस्तित्व में वास करते हैं और अपना स्थान बनाते हैं। फिर भी, प्रेरित यूहन्ना यहीं नहीं रुकते; 4:12 के ज़रिए, वे हमें एक गहरे आध्यात्मिक अनुभव की ओर ले जाते हैं। जहाँ 1 यूहन्ना 3:24 बताता है कि जब हम प्रभु की आज्ञाओं का पालन करते हैं तो हम "परमेश्वर में बने रहने के आशीर्वाद" का आनंद कैसे लेते हैं, वहीं आज का वचन (4:12) बताता है कि आज्ञाकारिता की उस यात्रा के अंत में, "परमेश्वर का प्रेम हममें सिद्ध हो जाता है": "किसी ने कभी परमेश्वर को नहीं देखा; लेकिन अगर हम एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो परमेश्वर हममें रहते हैं और उनका प्रेम हममें सिद्ध हो जाता है।" तो फिर, इस संदर्भ में "सिद्ध होने" का असली मतलब क्या है? प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:5 के पहले हिस्से में ही इस पूरा होने के रहस्य को साफ़ तौर पर बताया है: "लेकिन जो कोई भी उसके वचन का पालन करता है, सचमुच परमेश्वर का प्रेम उसमें सिद्ध हो जाता है।" *ह्युंडई-इनुई सोंगग्योंग* (समकालीन कोरियाई संस्करण) इस शानदार स्थिति के बारे में कहता है, "परमेश्वर का प्रेम सचमुच हममें सिद्ध हो जाता है।" दूसरे शब्दों में, जब हम प्रभु के नियम का पालन करते हैं और अपने साथी विश्वासियों से वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे हम अपने शरीर से करते हैं, तो परमेश्वर का विशाल प्रेम—जो पूरी सृष्टि को भरने के लिए काफ़ी से ज़्यादा है—आखिरकार हममें (जो टूटे हुए मिट्टी के बर्तन जैसे हैं) अपना पूरा, 100% रूप लेता है और अपना अंतिम फल देता है। जब हम वचन के अधीन होते हैं और एक-दूसरे से दिल से प्रेम करते हैं, तो एक अद्भुत स्वर्गीय काम होता है: परमेश्वर का प्रेम हममें सिद्ध हो जाता है (2:5, 4:12), और सर्वशक्तिमान परमेश्वर स्वयं हममें वास करते हैं (3:24)। प्रेरित यूहन्ना की सभी पत्रियों को देखें; उन्होंने लगातार उन अपार स्वर्गीय खजानों के बारे में बताया है जो पवित्र संतों के दिलों को भरते हैं।

1 यूहन्ना 2:14 में, उन्होंने घोषणा की कि शक्तिशाली "परमेश्वर का वचन," जो अंधकार के शासन को तोड़ता है, हममें वास करता है।

1 यूहन्ना 3:14–15 में, उन्होंने पुष्टि की कि शानदार "अनंत जीवन," जो नरक की सज़ा को खत्म करता है, पहले से ही हममें मौजूद है।

और अब, आज के अंश में—अध्याय 4 की आयतें 4 और 13—वे एक बहुत बड़ी घोषणा करते हैं: "पवित्र आत्मा," जो इस दुनिया में शैतान और उसकी सभी ताकतों से कहीं ज़्यादा महान है, व्यक्तिगत रूप से हममें वास करता है और हमारे भीतर रहता है।

प्रियजनों, यह वह अवर्णनीय आध्यात्मिक समृद्धि है जिसका आनंद परमेश्वर के सच्चे संत उठाते हैं। हमारे भीतर, वचन जीवित है और सांस लेता है, अनंत जीवन उमड़ता है, और सच्चाई का पवित्र आत्मा राज करता है। इस त्रिएक परमेश्वर के प्रेम और जीवन की भरपूर आपूर्ति पा लेने के बाद, हमारे लिए—आपके और मेरे लिए—समुदाय के भीतर अपने साथी सदस्यों से प्रेम न करने का कोई कारण नहीं है। भीतर वास करने वाले पवित्र आत्मा से सशक्त होकर, मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसे पवित्र संत बनें जो अपने चर्चों और घरों में परमेश्वर के सिद्ध प्रेम को पूरी तरह से महसूस करें। जब मैंने इन शानदार वचनों का गहराई से अध्ययन और मनन किया, तो मुझे ब्रह्मांडीय सुसमाचार का सबसे ऊँचा सत्य मिला—एक ऐसा सत्य जो आत्मा की गहराइयों को छू लेता है। जब हम प्रभु के नियम का पालन करते हुए अपने भाई-बहनों से सच्चा प्रेम करते हैं, तो हमें शांति के केवल एक अमूर्त अहसास से कहीं बढ़कर अनुभव होता है। परमेश्वर पिता—जो स्वयं प्रेम का स्वरूप हैं—व्यक्तिगत रूप से हमारे भीतर वास करते हैं (3:24, 4:8, 16); इसके अलावा, परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह—जो "जीवन का वचन" हैं और जो आदि से विद्यमान थे तथा "अनंत जीवन" हैं जो पूरी दुनिया को जीवन देते हैं—हमारे अस्तित्व के केंद्र में वास करते हैं (1:1–3)। साथ ही, परमेश्वर पवित्र आत्मा—जिनकी महानता इस संसार के किसी भी अंधकार या दुष्टात्मा की शक्ति से कहीं अधिक है—हमारी आत्माओं के भीतर के पवित्र स्थान में राज करते और वास करते हैं (4:4, 13)। यदि मुझे इस रहस्यमय और अद्भुत स्वर्गीय सच्चाई को एक वाक्य में परिभाषित करना हो, तो वह यह होगा: "जब हम प्रभु की आज्ञा के अनुसार एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो त्रिएक परमेश्वर—जो संपूर्ण ब्रह्मांड के रचयिता हैं—व्यक्तिगत रूप से हमारे भीतर वास करते और रहते हैं।"

प्यारे लोगों, हम और आप पक्के विश्वास वाले लोग हैं जो अपने दिल की गहराइयों से मानते हैं कि नासरत का यीशु जीवित परमेश्वर का पुत्र है (वचन 15)। पवित्र शास्त्र उन लोगों के लिए हमारी पहचान के बारे में एक अटूट

वादा करता है जिन्होंने विश्वास की यह पक्की गवाही दी है: "जो कोई यह मानता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, परमेश्वर उसमें बना रहता है, और वह परमेश्वर में" (वचन 15)। इसके अलावा, बाइबल बार-बार इस बात की पुष्टि करती है कि जब हम—परमेश्वर से सीधे जुड़े बच्चों के रूप में—एक-दूसरे के लिए आपसी प्रेम की वेदी बनाते हैं, तो हम एक अद्भुत आध्यात्मिक पड़ाव पर पहुँचते हैं: "यदि हम एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो परमेश्वर हममें बना रहता है, और उसका प्रेम हममें सिद्ध हो गया है" (वचन 12)। मेरी प्रार्थना है कि हमारे विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च का हर सदस्य हिम्मत के साथ अपनी भावनाओं और स्वार्थी इच्छाओं को क्रूस पर चढ़ा दे और प्रभु की नई आज्ञा का पूरी तरह पालन करते हुए, एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम करे जैसे वे खुद से करते हैं। त्रिएक परमेश्वर की महिमामयी उपस्थिति और वास हमारे समुदाय में एक ठोस सच्चाई बन जाए, और आप अपने दैनिक जीवन में परमेश्वर के सिद्ध प्रेम को पूरी तरह से—100% पूरा होते हुए देखने का शानदार आशीर्वाद पाएँ। मैं प्रभु के नाम में यह सच्ची प्रार्थना करता हूँ।

(5) पाँचवीं बात, सिद्ध प्रेम न्याय के दिन के डर को दूर करता है और हमें एक अटूट, पवित्र साहस का उपहार देता है।

कृपया आज का वचन, 1 यूहन्ना 4:17 देखें। प्रेरित यूहन्ना प्रेमपूर्ण आज्ञाकारिता के माध्यम से सिद्ध होने वाली आध्यात्मिक विरासत और स्वर्गीय शांति के बारे में यह घोषणा करता है: "इससे प्रेम हममें सिद्ध होता है, ताकि न्याय के दिन के लिए हमें भरोसा हो, क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही हम भी इस संसार में हैं" (संशोधित नया कोरियाई मानक संस्करण)। "इसके माध्यम से, हमारे बीच प्रेम पूरा होता है, जिससे हम आत्मविश्वास के साथ न्याय का सामना कर पाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम भी इस संसार में यीशु जैसे बन जाते हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। पादरी के तौर पर अपनी सेवा के सफ़र में, बाइबल का एक बहुत ही दिल को छू लेने वाला हिस्सा जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता, वह है 1 यूहन्ना 4:18 का पहला भाग: "प्रेम में कोई डर नहीं होता, बल्कि परिपूर्ण प्रेम डर को दूर कर देता है..." यह आयत मेरे दिल में इतनी गहराई से बस गई है क्योंकि प्रभु ने इसे बार-बार मुझे याद दिलाया—और मैंने इसे अनगिनत बार दूसरों के साथ साझा किया—जब भी मैं बहुत से भाई-बहनों से मिला, उन्हें सलाह दी और उनके साथ रोते हुए प्रार्थना की। दुख की बात है कि चर्च समुदाय में, कई साथी विश्वासी गहरे अस्वीकार और डर के बोझ तले दबे हुए थे, जबकि वे दूसरों से प्रेम करने और रिश्ते बनाने की कोशिश कर रहे थे। उदाहरण के लिए, एक ईसाई परिवार के एक विश्वासी को अपनी शादी के करीब आने

पर अकथनीय, तीव्र डर और चिंता का अनुभव हो रहा था। उस दर्द की जड़ की जांच करने पर, यह स्पष्ट हो गया कि वे एक गहरे डर में फंसे हुए थे—जो बचपन में उनके माता-पिता के विनाशकारी तलाक के सदमे से उपजा था—कि वे भी शादी में असफल हो जाएंगे और उन्हें छोड़ दिया जाएगा।

बाइबल इसे स्पष्ट और निर्णायक रूप से बताती है, ठीक *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* अनुवाद की तरह: "प्रेम में कोई डर नहीं होता। परिपूर्ण प्रेम वास्तव में डर को दूर कर देता है।" तो फिर, हम अपने दिलों में इस शानदार वादे को संजोने के बावजूद, आंतरिक चिंता और डर की बेड़ियों में बंधे क्यों रहते हैं? इसका मूल कारण यह है कि हमारा प्रेम अभी तक "परिपूर्ण प्रेम" के चरण तक नहीं पहुंचा है—यानी, परिपक्व प्रेम जो किसी भी अशुद्धता से मुक्त हो (वचन 18)। और हमारे प्रेम के अपरिपक्व और अविकसित रहने का वास्तविक कारण हमारी लगातार अवज्ञा है—"एक-दूसरे से प्रेम करने" की परमेश्वर की सर्वोच्च आज्ञा के प्रति पूरी तरह से समर्पित न हो पाना (2:5, 4:12)। इस शर्मनाक सच्चाई को और करीब से देखें तो: अक्सर, प्रभु के त्यागमय प्रेम को फैलाने के बजाय, हम अपने भाई-बहनों को अपनी स्वार्थी भावनाओं और अतीत की चोटों के नज़रिए से देखते हैं, और उनके प्रति नाराजगी और नफरत पालते हैं (2:11)। जो लोग अपने जीवन में प्रेम को फलीभूत करने में विफल रहते हैं और इसके बजाय नफरत के अंधेरे में उतर जाते हैं, वे अनिवार्य रूप से डर और घबराहट की चपेट में आ जाते हैं। जैसा कि *कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन* (CEV) मार्मिक रूप से बताता है, गहरे मन में, वे स्वाभाविक रूप से उस सज़ा से डरते हैं जिसका सामना उन्हें परमेश्वर के कठोर न्याय-सिंहासन के सामने करना पड़ सकता है (4:18)। नफ़रत हमेशा भयानक निंदा और फ़ैसले का डर पैदा करती है।

लेकिन, जो विश्वासी प्रभु के महान आदेश के सामने पूरी तरह झुक गए हैं—जो समर्पण में घुटने टेकते हैं और एक-दूसरे से सच्चा प्यार करके प्यार को पूरा करते हैं—वे किसी भी चीज़ से नहीं डरते। क्योंकि वे अपनी ज़िंदगी को परमेश्वर के उद्धार करने वाले प्यार के भरोसे पर टिकाए रखते हैं—यह जानते हुए कि उन्होंने पहले *मुझ* जैसे अयोग्य व्यक्ति से प्यार किया (वचन 19)—वे आज्ञाकारी होकर जीते हैं और अपने साथी विश्वासियों से बिना शर्त प्यार करते हैं; इसलिए, निंदा की कोई भी परछाईं उन्हें कभी छू नहीं सकती। सच्चा प्यार तुरंत फ़ैसले के डर और नरक के भय को दूर कर देता है। इस परिपक्व प्यार से प्रेरित होकर, मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना

करता हूँ कि आप परमेश्वर की सच्ची संतान बनें—और 'महान श्वेत सिंहासन' के सामने आने वाले न्याय के दिन प्रभु का सामना करते समय बिना किसी शर्म, पूरे आत्मविश्वास और सच्चाई के साथ खड़े हों।

आज, जब हम 1 यूहन्ना 4:17 की शानदार घोषणा के सामने खड़े हैं, तो हम विश्वास के सबसे गंभीर सवाल का सामना करते हैं: "इससे हमारे बीच प्यार पूरा होता है, ताकि न्याय के दिन के लिए हमारे मन में भरोसा हो, क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही हम भी इस दुनिया में हैं" (संशोधित नया कोरियाई संस्करण)। "इसके ज़रिए, हमारे बीच प्यार पूरा होता है, जिससे हम आत्मविश्वास के साथ न्याय के दिन का सामना कर पाते हैं; ऐसा इसलिए है क्योंकि हम भी इस दुनिया में यीशु जैसे बन जाते हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। प्यारे लोगों, उस भयानक और कठोर न्याय के दिन—जो ब्रह्मांड के अंत के साथ-साथ हमारा इंतज़ार कर रहा है—हम पूरी निडरता (बिना किसी डर के) कैसे पा सकते हैं? जब मैंने प्रार्थना और बाइबल के अध्ययन में इस सवाल पर गहराई से सोचा, तो मुझे 1 यूहन्ना 2:10 में दिए गए उस महान वादे की याद आई, जिस पर हमने पहले भी मनन किया था: "जो अपने भाई से प्यार करता है, वह ज्योति में बना रहता है, और उसके ठोकर खाने का कोई कारण नहीं होता।" प्रेरित यूहन्ना की इस घोषणा का क्या आध्यात्मिक महत्व है कि विश्वासी के भीतर "ठोकर खाने का कोई कारण नहीं" होता? इस कथन के असली मूल्य और ज़रूरी महत्व को हर पहलू से समझने के लिए, हमें उन तीन अहम हिस्सों को ध्यान से देखना होगा जिन्हें प्रेरित यूहन्ना ने यूहन्ना के सुसमाचार में बहुत बारीकी से पिरोया है। जब हम इस सुसमाचार के संदर्भ को समझते हैं, तो हमें एक शानदार बात पता चलती है: जो व्यक्ति अपने भाई से प्रेम करता है, उसका जीवन बिना किसी रुकावट के चलता है और उसे अंतिम दिन निडरता से सामना करने का साहस मिलता है।

1 यूहन्ना 2:10 में "ठोकर खाने का कोई कारण नहीं" वाली बात का असली महत्व तब समझ आता है जब हम यूहन्ना के सुसमाचार से तीन महत्वपूर्ण आयतों को देखते हैं: (1) "यीशु ने अपने मन में जान लिया कि उनके चेले इस बात पर बड़बड़ा रहे हैं, तो उन्होंने उनसे कहा, 'क्या तुम्हें इससे बुरा लगा?'" (यूहन्ना 6:61); (2) "यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या दिन में बारह घंटे नहीं होते? यदि कोई दिन में चलता है, तो वह ठोकर नहीं खाता, क्योंकि वह इस संसार की ज्योति को देखता है'" (यूहन्ना 11:9); और (3) "मैंने ये सब बातें तुमसे इसलिए कही हैं ताकि तुम भटक न जाओ" (यूहन्ना 16:1)। उसी लेखक द्वारा दिए गए संदर्भ को मिलाकर देखें तो "ठोकर खाने का कोई कारण नहीं" (या "कोई रुकावट नहीं") का असली अर्थ यह है कि व्यक्ति शैतान के जाल में नहीं फंसता और न

ही अपनी आध्यात्मिक यात्रा के दौरान गिरता है। दूसरे शब्दों में, यह एक वादा है कि जो विश्वासी स्वार्थी भावनाओं पर काबू पाता है और सचमुच अपने भाई से प्रेम करता है, वह सच्ची ज्योति में रहता है—जिसमें ज़रा भी अंधकार नहीं है—इस तरह वह उन रुकावटों को दूर करता है जिनसे वह गिर सकता था, और एक ऐसी आध्यात्मिक सुरक्षा का आनंद लेता है जहाँ वह कभी ठोकर नहीं खाता।

प्रिय, क्या सचमुच अभी तुम्हारे दिल की गहराई में ठोकर खाने का कोई कारण नहीं है? क्या तुम दिन-ब-दिन जीत के पक्के रास्ते पर चल रहे हो, बिना किसी रुकावट के, यीशु मसीह—सच्ची ज्योति—के शासन में पूरी तरह रहते हुए और अपने साथी विश्वासियों से सच्चे दिल से प्रेम करते हुए? या शायद, बाहर से तो तुम ज्योति में चलने का दावा करते हो, लेकिन असल में अपनी आत्मा के लिए बने जाल में फंसे हुए हो—किसी करीबी के प्रति जलन और नफ़रत के कारण बुरी तरह ठोकर खा रहे हो? अगर हम अपने अंदर की नफ़रत और नाराज़गी को नज़रअंदाज़ करते हैं, और अपने दिलों में फँसे बड़े "लट्ठे" को नहीं पहचानते, तो परमेश्वर के कठोर 'महान श्वेत सिंहासन न्याय' (1 यूहन्ना 4:17) का सामना करते समय हमारे पास ज़रा भी साहस नहीं होगा। न्याय के उस अंतिम दिन बिना किसी शर्म या झिझक के खड़े होने के लिए, हमें अपनी आत्मा और अंतःकरण में अपराधबोध या रुकावट का कोई निशान नहीं छोड़ना चाहिए। आध्यात्मिक अंधेपन से आज़ाद होने और ऐसी हिम्मत पाने का एकमात्र तरीका है उस नए हुक्म को मानना—जो प्रभु के अपने लहू से पक्का किया गया है—कि हम एक-दूसरे से वैसे ही प्यार करें जैसे हम खुद से करते हैं। हम वे लोग हैं जो व्यक्तिगत रूप से और पूरी तरह से उस अपार प्रेम को "जानते और उस पर विश्वास करते हैं" जो परमेश्वर हमसे करता है (वचन 16)। क्योंकि परमेश्वर ने हम जैसे अयोग्य लोगों को ढूंढा और हमसे बिना शर्त प्यार किया (वचन 19), इसलिए हमें—क्रूस के उस प्रेम से प्रेरित होकर जो हमें मिला है—अपने भाई-बहनों से सही मायने में प्यार करना चाहिए।

अगर हम ज़ोर-शोर से कहें कि "मैं परमेश्वर से सबसे ज़्यादा प्यार करता हूँ," लेकिन अपने सामने मौजूद भाई से नफ़रत करें, तो बाइबल हमारा मुखौटा उतार देती है और हमें झूठा ठहराती है (वचन 20)। जो व्यक्ति परमेश्वर को गहराई से जानने का दावा तो करता है, लेकिन उसकी आज्ञाओं को कुचलता है और उनका पालन नहीं करता, उसका जीवन बस एक धार्मिक झूठ है; उसमें जीवन की सच्चाई का एक भी अंश नहीं होता (2:4)। हमें ऐसे पाखंडी नहीं बनना चाहिए जो दूसरों की राय को ध्यान में रखकर काम करते हैं; बल्कि, हमें साफ़ दिल वाले

सच्चे ईसाई बनना चाहिए। यह सही है कि हम पूरी तरह से प्रभु की आज्ञाओं को मानें और अपने कामों और सच्चाई से एक-दूसरे से प्यार करें। जब हम प्यार के इस नियम को पूरा करते हैं, तो हमारी आत्मा की हर रुकावट बर्फ़ की तरह पिघल जाएगी (वचन 10)। क्योंकि साफ़ ज़मीर हमें अंदर से दोषी नहीं ठहराता या बुरा-भला नहीं कहता, इसलिए हम अंततः परमेश्वर पिता, जो न्याय करने वाला है, के सामने पूरे भरोसे के साथ खड़े हो सकेंगे। और उस गहरे, व्यक्तिगत जुड़ाव में, हम जो कुछ भी मांगेंगे, उसका जवाब मिलेगा—ऐसी प्रार्थनाओं के रूप में जो पिता खुशी-खुशी स्वीकार करते हैं (3:21–22)। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम अपनी जान देकर परमेश्वर की आज्ञाओं की रक्षा करते हैं और प्यार के वे काम करते हैं जो उसे खुश करते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो पुनरुत्थान की उस सुबह और प्रभु की शानदार वापसी के समय हमें कभी शर्मिंदगी का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसके बजाय, क्रूस के निशानों वाली पूरी हिम्मत के साथ, हम प्रभु के सिंहासन की ओर आत्मविश्वास और सम्मान के साथ बढ़ेंगे ताकि उनसे मिल सकें, जब वे हमारे हाथों में जीवन का मुकुट रखेंगे (2:28)।

अब मैं इस चिंतन को समाप्त करना चाहता हूँ। प्रिय लोगों, आइए हम सब एक-दूसरे से सच्चे दिल से प्यार करें और जीवन के उस नियम का पालन करें जिसका प्रभु ने हमें आदेश दिया है। बाइबल पूरी दुनिया में ज़ोर देकर कहती है कि "परमेश्वर प्रेम है" (4:8, 16)। क्योंकि परमेश्वर का स्वभाव ही प्रेम है, इसलिए अगर हमने व्यक्तिगत रूप से प्रेम करने वाले इस परमेश्वर का अनुभव किया है और उन्हें जाना है—और अगर हम सच्चे दिल से उस अपार प्रेम पर विश्वास करते हैं जिसका उन्होंने हमें यकीन दिलाया है—तो हमें एक-दूसरे से भाई-बहन की तरह प्यार करना चाहिए। सुसमाचार के उस सिद्धांत को याद रखें जिसे हम समझते आ रहे हैं: परमेश्वर का अस्तित्व ही पूर्ण प्रेम है। और उसी दिव्य अस्तित्व से उनका पवित्र कार्य निकला—हमारी बहुत सी कमियों के बावजूद, हमसे "सबसे पहले" प्यार करने की उनकी कृपा। यह हमारी अपनी काबिलियत या गुणों की वजह से नहीं, बल्कि सिर्फ़ उस प्यार की ताकत से हुआ कि हम यीशु मसीह पर अपने उद्धारकर्ता के तौर पर विश्वास करने लगे। हमें पाप और मौत के साये से बचाया गया और हम नए इंसान—परमेश्वर की शानदार संतान—के तौर पर फिर से पैदा हुए। इसलिए, परमेश्वर की अनमोल संतान होने के नाते, हमें एक-दूसरे से उसी स्वर्गीय प्यार से प्यार करना चाहिए जो वह देता है, ठीक वैसे ही जैसे उसने हमसे प्यार किया—जबकि हम इसके लायक नहीं थे। इसके अलावा, बाइबल ठोस कामों से गवाही देती है कि "परमेश्वर ने हमारे प्रति अपना प्यार दिखाया है" (पद 9–10)।

परमेश्वर ने अपने प्यार को सिर्फ़ ख्याली बातों या भावनाओं तक सीमित नहीं रखा। उसने बिना किसी हिचकिचाहट के अपने इकलौते बेटे, यीशु मसीह को इतिहास के बीच में भेजा—क्रूर क्रूस पर प्रायश्चित की बलि के तौर पर और दुनिया के एकमात्र उद्धारकर्ता के तौर पर। ऐसा करके, उसने हमारे सभी भयानक पापों का पूरा प्रायश्चित किया, हमें निराशा की सज़ा से बचाया, और हमारी आत्माओं में—जो ठंडी और मरी हुई थीं—अनंत जीवन फूँका। प्रायश्चित की इस कृपा के ज़रिए—जो आँसुओं की कीमत पर मिली—हम आखिरकार नई रचनाएँ बन गए हैं और हमें एक नया, कभी न खत्म होने वाला स्वर्गीय जीवन—अनंत जीवन—का तोहफ़ा मिला है। उद्धार की इस शानदार कृपा और असीम प्यार का अनुभव करने के बाद, विश्वासियों को प्रभु की नई आज्ञा के सामने खुद को विनम्र करना चाहिए और एक-दूसरे के साथ प्यार की वेदी बनानी चाहिए। बाइबल ज़ोर देकर कहती है: "प्यारे लोगों, चूँकि परमेश्वर ने हमसे इतना प्यार किया, इसलिए हमें भी एक-दूसरे से प्यार करना चाहिए" (11, 19)। इस पवित्र, उद्धार करने वाले प्यार के आधार पर, प्रेरित यूहन्ना हमारे दिलों पर स्पष्ट रूप से पाँच आध्यात्मिक स्तंभ लिखता है जो बताते हैं कि हमें अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में प्यार का पालन कैसे करना चाहिए:

पहला, हमें यह याद रखना चाहिए कि सभी सच्चे प्यार की शुरुआत और स्रोत सिर्फ़ परमेश्वर है, और यह मानना चाहिए कि प्यार, अपने स्वभाव से ही, परमेश्वर का है (4:7a)।

दूसरा, साथी विश्वासियों से खुद की तरह प्यार करना नए जन्म का सबसे पक्का सबूत है—यह पक्का करता है कि कोई पवित्र आत्मा से फिर से पैदा हुआ है और सच में परमेश्वर को जानता है (4:7b)।

तीसरा, अनदेखे परमेश्वर के लिए प्यार का दावा करना जबकि सामने मौजूद भाई-बहनों को न अपनाना, आध्यात्मिक पाखंड का एक बुरा रूप है और परमेश्वर को धोखा देने के इरादे से बोला गया झूठ है (4:20)। चौथा, जब हम स्वार्थ को छोड़कर एक-दूसरे से सच्चा प्रेम करते हैं, तो अदृश्य और सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमारे समुदाय में वास करते हैं, और उनका प्रेम पूरी तरह से सिद्ध हो जाता है (4:12)।

पांचवां, जब यह प्रेम हमारे भीतर पूरी तरह से सिद्ध हो जाता है, तो हमें पूरी निडरता मिलती है—बिना किसी डर के—यहाँ तक कि जब हम अंतिम दिन 'महान श्वेत सिंहासन' के न्याय का सामना करते हैं (4:17)। विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्रिय सदस्यों, आइए हम अब अंधकार के रास्ते—केन के रास्ते—पर न चलें, जहाँ हम अपने पुराने स्वभाव के घावों और स्वार्थी भावनाओं में फँसे रहकर अपने भाइयों से नफ़रत करते हैं। हमारे भीतर वास करने वाली सत्य की पवित्र आत्मा से शक्ति पाकर, आइए हम उस 'महान आज्ञा' को पूरी तरह से मानें जिसे प्रभु ने अपने ही लहू से लिखा है। मैं प्रभु के नाम से पूरी निष्ठा से प्रार्थना करता हूँ कि आप परमेश्वर की सच्ची और पवित्र संतान बनें—एक-दूसरे से केवल शब्दों या बातों से नहीं, बल्कि कामों और सच्चाई से सच्चा प्रेम करें, अपनी आत्मा की हर रुकावट को दूर करें, अपने भीतर 'त्रिएक परमेश्वर' की उपस्थिति की पूर्णता को महसूस करें, और प्रभु के दोबारा आने और न्याय के दिन उनकी उपस्थिति में निडरता और महिमा के साथ खड़े हों।

“परमेश्वर से प्रेम”

[1 यूहन्ना 5:1–5]

“जो कोई यह विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और जो पिता से प्रेम करता है, वह उसके बच्चे से भी प्रेम करता है। हम कैसे जानते हैं कि हम परमेश्वर के बच्चों से प्रेम करते हैं? परमेश्वर से प्रेम करके और उसकी आज्ञाओं का पालन करके। असल में, परमेश्वर के प्रति प्रेम यही है: उसकी आज्ञाओं को मानना। और उसकी आज्ञाएँ बोझिल नहीं हैं, क्योंकि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह संसार पर विजय पाता है। यही वह विजय है जिसने संसार पर जीत हासिल की है—हमारा विश्वास। संसार पर विजय कौन पाता है? केवल वही जो यह विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।”

हाल ही में मुझे जॉन मैकआर्थर का एक अर्थपूर्ण लेख पढ़ने को मिला, जिसमें उनके पादरी-संबंधी अनुभव और विचार शामिल थे। वे दुनिया भर में मशहूर धर्मशास्त्री और पादरी हैं। लेख का शीर्षक था “सेवा-कार्य (मिनिस्ट्री) के मार्ग पर अडिग रहने के 9 रहस्य।” उस शीर्षक को देखते ही मुझे जो ज़बरदस्त खिंचाव और गहरी दिलचस्पी महसूस हुई, उसका कारण स्पष्ट है: मेरे मन में भी एक तीव्र इच्छा है—कि जब तक प्रभु मुझे अपने पास न बुला लें, तब तक मैं भी दुनिया के तेज़ बदलावों और मुश्किलों के बीच बिना डगमगाए, ईमानदारी से चरवाहे (सेवा-कार्य) का मार्ग अपनाए रखूँ, ठीक वैसे ही जैसे पादरी मैकआर्थर ने किया है; और एक ऐसे वफ़ादार सेवक के रूप में अपनी दौड़ पूरी करूँ जो केवल परमेश्वर की महिमा को प्रकट करता हो। फरवरी 2019 में, पादरी जॉन मैकआर्थर ने ग्रेस कम्युनिटी चर्च में अपनी सेवा-कार्य की 50वीं वर्षगांठ मनाई; यह वही कलीसिया (मंडली) थी जिसकी उन्होंने जीवन भर आँसुओं और प्रार्थनाओं के साथ सेवा की थी। यह बात कि वे आधी सदी तक पल्पिट (मंच) पर अडिग रहे—अपनी जवानी के दिनों (बीस की उम्र) में

सेवा शुरू करने से लेकर सत्तर साल की उम्र में सफ़ेद बालों वाले बुज़ुर्ग होने तक—यह इंसानी इच्छा का नहीं, बल्कि पूरी तरह से परमेश्वर की अपार कृपा का परिणाम है। हालाँकि अपने दादा और पिता के नक्शेकदम पर चलते हुए तीसरी पीढ़ी के पादरी के रूप में परमेश्वर की सेवा करने का सम्मान अपने आप में एक विशेष कृपा है, लेकिन एक पादरी के लिए सबसे बड़ी महिमा और आशीष यह है कि वह एक ही वेदी पर जीवन बिताए, एक खास कलीसिया से प्रेम और लगाव रखे, उन्हें परमेश्वर का शुद्ध वचन सिखाए और उनकी आत्माओं की देखभाल करे। अपनी मिनिस्ट्री की 50वीं सालगिरह के आस-पास प्रकाशित अपनी किताब *Pastoral Ministry: Faithfully Without Wavering* में, उन्होंने नौ बुनियादी आध्यात्मिक सिद्धांत बताए। इन सिद्धांतों ने उन्हें अनगिनत संकटों और आध्यात्मिक लड़ाइयों के बीच भी अपनी मिनिस्ट्री के रास्ते पर बिना किसी समझौते के डटे रहने में मदद की। सबसे दिलचस्प बात यह है कि मिनिस्ट्री के ये नौ सिद्धांत, जिन्हें पादरी मैकआर्थर ने जीवन भर अपनाए रखा, 2 कुरिन्थियों 4 के शब्दों से लिए गए हैं—ये वे शब्द हैं जिन्हें प्रेरित पौलुस ने आँसू बहाते हुए लिखा था। मैं इन नौ महान सिद्धांतों को—जिन्हें प्रेरित पौलुस ने बताया और पादरी मैकआर्थर ने अपने जीवन में दिखाया—अपने और विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी सदस्यों के जीवन में पूरी तरह से लागू करना चाहता हूँ, ताकि हम प्रभु में पवित्र आध्यात्मिक परिपक्वता की ओर सच्चे मन से बढ़ सकें। उस आखिरी दिन जब हम प्रभु के सामने खड़े होंगे, तो बिना किसी शर्म के अपनी दौड़ पूरी करने के लिए, हमें अपने रोज़मर्रा के जीवन में इन नौ आध्यात्मिक स्तंभों को मज़बूती से थामे रखना होगा:

1. हमें खुद को अपने जीवन का मालिक नहीं, बल्कि 'परमेश्वर का प्रबंधक' (steward) समझना चाहिए। हमारा समय, भौतिक चीज़ें, सेहत और आध्यात्मिक वरदान हमारे अपने नहीं हैं; ये वे संपत्तियाँ हैं जो परमेश्वर ने हमें कुछ समय के लिए सौंपी हैं। हमें अपनी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में अपना जीवन बर्बाद नहीं करना चाहिए; इसके बजाय, हमें अपने जीवन को उन प्रबंधकों के नज़रिए से देखना चाहिए जिन्होंने अपना मालिकाना हक पूरी तरह से प्रभु को सौंप दिया है।

2. हमें परमेश्वर द्वारा सौंपी गई इस प्रबंधन की ज़िम्मेदारी को एक बहुत बड़ा सौभाग्य और परमेश्वर की दया से मिला अनुग्रह मानना चाहिए।

चर्च—जो मसीह का शरीर है—और उसके सदस्यों की सेवा करने का मौका कोई ऐसा भारी धार्मिक बोझ नहीं है जिसे अनिच्छा से उठाया जाए। हमें याद रखना चाहिए कि यह एक शानदार सौभाग्य और पिता की ओर से दया का एक बहुत ही मार्मिक काम है; उन्होंने हमें—जो कभी अपने अपराधों और पापों के कारण दुखी और मरे हुए थे—राजा की सेना के रूप में सेवा करने के लिए बुलाया है।

3. हमें किसी भी प्रलोभन का सामना करते समय अपने दिलों को शुद्ध और ईमानदार रखने का पक्का इरादा करना चाहिए।

शैतान हमेशा छोटे-मोटे समझौतों और झूठ से बने मामूली मौकों का फायदा उठाने की कोशिश करता है। हमें ढोंग का वह मुखौटा बहादुरी से उतार फेंकना चाहिए जो केवल धार्मिकता का दिखावा करता है, और परमेश्वर तथा मनुष्यों—दोनों के सामने—अटूट वफादारी और ईमानदारी को अपने विश्वास के जीवन का मुख्य मूल्य बनाना चाहिए। 4. हमें अपने दिलों को एक ही, ज़बरदस्त जुनून से भरना चाहिए: परमेश्वर के वचन के लिए गहरा प्यार।

आइए हम दुनिया के भ्रष्ट ज्ञान और क्षणभंगुर ट्रेंड्स के पीछे भागकर आध्यात्मिक भोजन न मांगें। इसके बजाय, हमारे अंदर एक जोशीली भक्ति जगनी चाहिए—बाइबल, जो कभी न बदलने वाला सत्य है, उसे संजोने और दिन-रात उस पर मनन करने का उत्साह, और अपने दिलों को पूरी तरह से वचन के प्रति समर्पित करने का जज़्बा।

5. हमें इस वादे पर पूरा भरोसा रखना चाहिए कि परमेश्वर का वचन कभी खाली नहीं लौटेगा। "वैसे ही मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुँह से निकलता है; वह मेरे पास खाली नहीं लौटेगा, बल्कि वह उसे पूरा करेगा जिसका मैंने इरादा किया है, और उस काम में सफल होगा जिसके लिए मैंने उसे भेजा है" (यशायाह 55:11)। सफलता और असफलता के दुनियावी पैमानों के आगे अपनी आत्मा को न बेचें, और न ही अपनी भावनाओं को उनके साथ ऊपर-नीचे होने दें। यह मानते हुए कि नतीजा परमेश्वर के अधिकार में है, हमें सौंपे गए वचन के बीज बोने के लिए आध्यात्मिक दृढ़ता बनाए रखनी चाहिए, भले ही इसके लिए आँसू बहाने पड़ें।

6. हमें इंसानों से मिलने वाली क्षणभंगुर वाह-वाही या पहचान नहीं खोजनी चाहिए, बल्कि विनम्रतापूर्वक केवल परमेश्वर की महिमा चाहनी चाहिए।

जो विश्वास इंसानी तारीफ़ और शोहरत का प्यासा होता है, वह ज़रूर डगमगाएगा और कमज़ोर पड़ जाएगा। हमें सांसारिक इनाम की किसी भी स्वार्थी उम्मीद को पूरी तरह से क्रूस पर चढ़ा देना चाहिए और, चाहे कोई भी कीमत या कुर्बानी देनी पड़े, केवल त्रिएक परमेश्वर के ऊँचे और शानदार नाम की महिमा करनी चाहिए।

7. हमें यह विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर हमारी आत्माओं को ढालने के लिए दुख का इस्तेमाल पवित्रता के साधन के रूप में करते हैं, और हमें मसीह के दुखों में शामिल होना चाहिए।

जैसे भट्टी सोने से अशुद्धियों को दूर करती है, वैसे ही दुख की भट्टी हमारे अंदर छिपे पाप के मैल को जला देती है और हमें शुद्ध सोने जैसा बनाती है। जब हम मुश्किलों का सामना करें तो हैरान न हों; इसके बजाय, प्रभु के शुद्ध करने वाले हाथ पर भरोसा करते हुए, आइए हम अपने दुखों के बीच स्वर्ग की आशा को सीखें।

8. हमें धर्मग्रंथ के पन्नों में दर्ज विश्वास के महान "दिग्गजों" को अपने जीवन के लिए आईने के तौर पर देखना चाहिए और उनके अटूट साहस को अपनाना चाहिए।

हमें विश्वास के इन नायकों के कदमों का ध्यानपूर्वक अनुसरण और अध्ययन करना चाहिए, जिन्होंने घुटनों के बल प्रार्थना करते हुए ज़ुल्म और निराशा के दौर को पार किया था। हमें अपने विश्वास के पुरखों की उस पवित्र दृढ़ता और हिम्मत को—जिन्होंने दुनिया की भयानक धमकियों और धोखे के सामने भी हार नहीं मानी—अपनी आत्मा का आधार बनाना चाहिए।

9. हमें अपना दिल और नज़रें पूरी तरह से उस शानदार "स्वर्ग के राज्य और ऊपर की चीज़ों" पर टिकाए रखना चाहिए जो हमारा इंतज़ार कर रही हैं।

आइए हम उस भटकने वाली ज़िंदगी को छोड़ दें जो इस दुनिया के अस्थायी डेरे से चिपकी रहती है और पलक झपकते ही गायब हो जाती है। प्रेरित पौलुस के शानदार स्तुति-गीत की तरह, हमें पक्का भरोसा होना चाहिए कि अभी हम जो हल्की और कुछ समय की तकलीफ़ें सह रहे हैं, उनकी तुलना उस अनंत और महान महिमा से नहीं की जा सकती जो हमारा इंतज़ार कर रही है; हमें अपनी उम्मीद का लंगर मज़बूती से स्वर्ग में डालना चाहिए।

पास्टर जॉन मैकआर्थर के लेख में एक और गहरी पादरी-संबंधी सलाह थी—एक ऐसी बात जो सेवा-कार्य (मिनिस्ट्री) के मूल सार और दिशा को पूरी तरह से हिला देती है। यह एक नेक बात है जिसे हमें अपने दिलों पर एक आदेश की तरह—अनंत राजा के हुक्म की तरह—लिख लेना चाहिए, खासकर जब हम धोखे और अस्थिरता के इस दौर से गुज़र रहे हों। "एक पास्टर सबसे पहले और सबसे ज़्यादा परमेश्वर की सेवा करता है; वह कलीसिया की सेवा परमेश्वर की सेवा करने के लिए करता है। सबसे बढ़कर, एक पास्टर को परमेश्वर से अपने पूरे दिल, आत्मा और ताकत से प्यार करना चाहिए। तभी, उस स्वर्गीय ताकत से सशक्त होकर, वह कलीसिया से वैसे ही प्यार कर सकता है जैसे वह खुद से करता है। ज़िंदगी उतार-चढ़ाव से भरी है, और सेवा-कार्य में भी सफलता और विफलता का एक चक्कर चलता रहता है; ऐसे पल आते हैं जब इंसान निराशा में टूट जाता है और ऐसे भी जब वह परमेश्वर के वचन के ज़रिए फिर से उठता है। कभी-कभी सेवा-कार्य का रास्ता आसान हो सकता है, तो कभी-कभी अचानक उसमें ज़बरदस्त रुकावटें आ सकती हैं। फिर भी, अगर पास्टर की आत्मा का लंगर कभी न बदलने वाले परमेश्वर में मज़बूती से टिका है, तो—तूफ़ान से हिलने के बावजूद—उसका विश्वास ऐसा होगा जो दुनिया की लहरों में बह नहीं जाएगा; वह आखिर तक उस सेवा-कार्य के रास्ते पर वफ़ादारी से डटा रहेगा जो उसे सौंपा गया है।"

सेवा-कार्य के इन गहरे सिद्धांतों के बीच—जो अक्सर इंसान की आँखों में आँसू ले आते हैं—मैं अपने दिल के कान लगाना चाहता हूँ और प्रभु की उस आवाज़ के सामने अपनी आत्मा को झुकाना चाहता हूँ जो कहती है, "एक पास्टर को सबसे पहले परमेश्वर से अपने पूरे दिल, आत्मा और ताकत से प्यार करना चाहिए।" यह बात उस बुनियादी विश्वास से गहराई से जुड़ी है जिसे हमने हाल ही में 1 यूहन्ना 4:7–21 पर चर्चा करते हुए आँसुओं के साथ अपनाया था—यानी, "परमेश्वर के होने और उनके कामों" का सिद्धांत। लोगों के बीच सेवा

और भक्ति—यानी कलीसिया के लोगों से खुद की तरह प्यार करना—कभी भी सिर्फ़ पास्टर के निजी चरित्र, नैतिक संकल्प या इंसानी हमदर्दी से पैदा नहीं हो सकती। क्योंकि पास्टर की सेवा के दौरान कई तरह की गलतफहमियाँ, धोखे, मुश्किलें और परेशानियाँ आती हैं, जिनमें इंसानी प्यार जल्दी ही खत्म हो जाता है और कड़वाहट व दुख की ज़हरीली भावनाएँ पनपने लगती हैं। पवित्र लोगों से आखिर तक प्यार करने और प्रभु की कलीसिया को मज़बूत बनाने की ताकत का एकमात्र स्रोत तब मिलता है जब पास्टर खुद त्रिएक परमेश्वर—जीवन के अनंत वचन—से पूरे दिल, आत्मा और ताकत के साथ प्यार करता है। जो लोग परमेश्वर से प्यार करते हैं, वे ही सच में परमेश्वर के लोगों से प्यार कर सकते हैं। मेरी प्रार्थना है कि हम अपनी आत्मा का आधार नाशवान सांसारिक प्रतिष्ठा या सेवा की सफलता के आंकड़ों पर नहीं, बल्कि परमेश्वर पिता पर टिकाएँ, जो खुद प्रेम का स्वरूप हैं। इस तरह, बदलते हालात से विचलित हुए बिना और स्वर्ग के नागरिकों जैसी पक्की वफ़ादारी के साथ, हम सेवा के सफ़र और हमें सौंपी गई विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च की कलीसिया को वफ़ादारी से आगे बढ़ाएँ और पूरा करें, और कभी भी बर्बादी के धोखे में न बह जाएँ; प्रभु के नाम में हम सबके लिए मेरी यही दिली प्रार्थना है।

आज के पाठ, 1 यूहन्ना 5:3 में, प्रेरित यूहन्ना उस सबसे पक्के और व्यावहारिक पैमाने के बारे में बताते हैं जिससे हम परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम की सच्चाई को माप सकते हैं: "परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें। और उसकी आज्ञाएँ बोझिल नहीं हैं" (NKJV)। पास्टर जॉन मैकआर्थर की जीवन भर की गवाही के ज़रिए, हमने पहले भी अटूट विश्वास और पादरी की सेवा के रहस्य पर गहराई से विचार किया है: सबसे पहले और सबसे ज़्यादा अपने पूरे दिल, आत्मा और ताकत से परमेश्वर से प्रेम करना। प्रेरित यूहन्ना अब मज़बूती से कहते हैं कि परमेश्वर के प्रति इस प्रेम का असली स्वरूप केवल एक अमूर्त विचार या कुछ समय के लिए महसूस होने वाला जज़्बाती अनुभव नहीं होना चाहिए; बल्कि, इसे हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में आज्ञापालन के ज़रिए—खासकर, उसकी आज्ञाओं को मज़बूती से मानकर—साबित किया जाना चाहिए। इस पवित्र घोषणा के बाद, मैंने इस अध्याय के लिए "परमेश्वर से प्रेम" शीर्षक चुना है। मेरा इरादा 1 यूहन्ना 5:1–5 की सावधानीपूर्वक व्याख्या और उस पर मनन करने का है। इस पाठ में बताए गए तीन पवित्र आध्यात्मिक सबकों के ज़रिए, मैं प्रभु की कोमल आवाज़ को गहराई से सुनने की उम्मीद करता हूँ—उस आध्यात्मिक शक्ति के स्रोत को खोजने की जो हमें परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के लिए प्रेरित करती है, और यह समझने की कि प्रभु की आज्ञाएँ हमारे लिए कभी भी भारी या बोझिल क्यों नहीं बनतीं।

सबसे पहले, वह *कौन* है जो सचमुच परमेश्वर से प्रेम करता है? हमें न केवल परमेश्वर की उस व्यवस्था को स्वीकार करना चाहिए—जो दुख के बीच भी भलाई लाती है—बल्कि ईमानदारी से "स्वयं" की आध्यात्मिक सच्चाई का भी सामना करना चाहिए, यानी उस व्यक्ति का जिसे उससे प्रेम करने के लिए बुलाया गया है। जब हम 1 यूहन्ना 5:3 में प्रेरित यूहन्ना द्वारा घोषित महान बात—"परमेश्वर से प्रेम"—के सामने खड़े होते हैं, तो हम अनिवार्य रूप से एक अहम आध्यात्मिक सवाल का सामना करते हैं जो विश्वास की गहराई तक जाता है: "तो फिर, इस धरती पर वह कौन है जो सचमुच परमेश्वर से प्रेम करता है?" बाइबल की उन आयतों में से एक जिसे मैंने अपनी लंबी पादरी की सेवा के दौरान व्यक्तिगत रूप से बहुत महत्व दिया है और अपने दिल के करीब रखा है, वह है रोमियों 8:28: "और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं और जिन्हें उसके मकसद के अनुसार बुलाया गया है, उनके लिए परमेश्वर सब बातों में भलाई के लिए काम करता है" (NIV)। "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं और जिन्हें उसकी योजना के अनुसार बुलाया गया है, उनके लिए अंततः सब बातें उनके भले के लिए काम करती हैं" (Contemporary Korean Version)। मैंने इस आयत को अपने जीवन का आधार क्यों बनाया, इसका कारण साफ़ है: सेवा और जीवन की मुश्किलों के बीच भी, यह वादा कि "जो लोग परमेश्वर की अच्छी और उत्तम योजना के तहत बुलाए गए हैं, उनके लिए सब कुछ अंततः भलाई के लिए काम करता है," मेरी आत्मा के लिए उम्मीद का एक मज़बूत सहारा बना। उस वादे पर भरोसा रखने से मुझे विश्वास में बने रहने और मुश्किल तूफानों के बीच भी डटे रहने की ईश्वरीय शक्ति मिली। खासकर, जब मैंने रोमियों 12:2 में दिए गए ईश्वरीय सिद्धांत के साथ इस आयत पर मनन करना शुरू किया, तो यह मेरी आत्मा के लिए बहुत ज़्यादा अनुग्रह और आँखों में आँसू लाने वाला अनुभव बन गया: "इस संसार के तौर-तरीकों को न अपनाओ, बल्कि अपने मन को नया करके अपना रूप बदलो। तब तुम परख सकोगे और जान सकोगे कि परमेश्वर की इच्छा क्या है—उसकी अच्छी, मनभावन और उत्तम इच्छा।" सच तो यह है कि हमारे प्रति परमेश्वर का सारा शासन और उसकी सर्वोच्च इच्छा—बिना किसी अपवाद के—पूरी तरह से "अच्छी, मनभावन और उत्तम (पूर्ण)" है। हालाँकि मेरी सीमित समझ और सीमित नज़र अक्सर मुझे कठिन परीक्षाओं के बीच निराश और दुखी कर देती है—क्योंकि मैं अपने लिए प्रभु की इच्छा को पूरी तरह समझ नहीं पाता—फिर भी मैं उम्मीद बनाए रख सकता हूँ क्योंकि मेरा मानना है कि मैं उसके पवित्र आदेश के दायरे में हूँ। जब मैं घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना में जीवन की गहरी रात गुज़ारने

के बाद सुबह की रोशनी देखता हूँ, तो मैं आखिरकार यह स्वीकार करता हूँ—जैसा कि भजन संहिता 34:8 के पहले हिस्से में कहा गया है, "परखकर देखो कि प्रभु भला है"—कि उसकी भलाई की ईश्वरीय मिठास मेरे अपने जीवन में एक ठोस गवाही है। इसी अद्भुत अनुग्रह के कारण, मैं हमेशा आप जैसे प्रिय लोगों के सामने विश्वास के इस महान सिद्धांत को बिना किसी हिचकिचाहट के कह पाया हूँ: "परमेश्वर भला है—हर समय!"

अपने जीवन के बाकी सफ़र में, मैं धर्मग्रंथ में बताए गए इन चार शानदार सुसमाचार सिद्धांतों को अपने विश्वास की कसौटी मानकर और उन्हें मज़बूती से थामकर जीना जारी रखूँगा:

पहला, हमारा परमेश्वर अपने स्वभाव में पूरी तरह से भला है (1 इतिहास 16:34; भजन संहिता 86:5; 100:5; 107:1; 135:3; 145:9)। दूसरी बात, हमारे प्रति परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा हमेशा अच्छी होती है (रोमियों 12:2)।

तीसरी बात, परमेश्वर उन लोगों की भलाई के लिए सब कुछ मिलकर काम में लाता है जो उससे प्रेम करते हैं (रोमियों 8:28)। चौथी बात, जो विश्वासी दुख से गुज़रे हैं, वे अंततः अपने जीवन में परमेश्वर की भलाई को जानेंगे और उसका स्पष्ट अनुभव करेंगे (भजन संहिता 34:8)।

फिर भी, मुझे बहुत शर्मिंदगी के साथ यह एहसास हुआ कि हालाँकि मैंने अक्सर रोमियों 8:28 को माना और संजोया था, लेकिन मैंने अपने विश्वास का जीवन लगभग पूरी तरह से उस आयत के बाद वाले हिस्से पर केंद्रित रखा था—आशीष का वह वादा कि "सब कुछ भलाई के लिए काम करता है।" मैं उस ज़रूरी शर्त पर पर्याप्त ज़ोर देने में विफल रहा था—वह बुनियादी शर्त जो उन लोगों की पहचान कराती है जिन्हें वह शानदार वादा मिलेगा: "जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, जिन्हें उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाया गया है।" हालाँकि, जब मैंने 1 यूहन्ना 5:1–5 का गहराई से अध्ययन और चिंतन किया, तो पवित्र आत्मा ने शक्तिशाली रूप से मेरा ध्यान उस विषय की पहचान की ओर मोड़ा: "जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं।" विशेष रूप से, जब मैंने 1 यूहन्ना 5:3 में यह घोषणा देखी—"क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यह है..."—तो मैं खुद से एक ऐसा सवाल पूछने के लिए मजबूर हो गया जिसने मेरी आत्मा को झकझोर दिया: "सारी दिखावटी बातों को हटाकर और प्रेरित

यूहन्ना द्वारा बताए गए सच्चे संदेश की रोशनी में खुद की जाँच करते हुए, इस धरती पर वास्तव में कौन है जो परमेश्वर से प्रेम करता है?"

आज के अंश (1 यूहन्ना 5:1–5) में, प्रेरित यूहन्ना उन लोगों की तीन विशेषताएँ बताते हैं जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं:

(1) पहली बात, जो कोई भी पूरे दिल से विश्वास करता है कि यीशु ही वह एकमात्र "मसीह" है जो मानवता का उद्धार करता है, वही वास्तव में परमेश्वर से प्रेम करने वाला है। 1 यूहन्ना 5:1–5 के अंश में, प्रेरित यूहन्ना उन लोगों की पहचान करने के लिए तीन स्पष्ट आध्यात्मिक प्रमाण प्रस्तुत करते हैं जो वास्तव में परमेश्वर से प्रेम करते हैं—और उन्हें उन लोगों से अलग करते हैं जो केवल दिखावे के लिए प्रेम का दावा करते हैं। पहला शानदार प्रमाण यह है कि क्या किसी के पास "सही मसीह-संबंधी विश्वास" है।

1 यूहन्ना 5:1 पर विचार करें: "हर कोई जो विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से जन्मा है, और जो कोई पिता से प्रेम करता है, वह उसके बच्चे से भी प्रेम करता है।" प्यारे दोस्तों, क्या आप और मैं सच में मानते हैं कि यीशु ही "मसीह" हैं—वही एकमात्र उद्धारकर्ता जिन्होंने हमारे लिए क्रूस उठाया? जब प्रेरित यूहन्ना ने यह पत्र लिखा, तो चर्च समुदाय के आस-पास ऐसे लोग बहुत ज़्यादा थे जो "साफ़ तौर पर इनकार करते थे कि यीशु ही मसीह हैं"; वे ज़हरीली खरपतवार की तरह फैल रहे थे। 1 यूहन्ना 2:22 (पहला भाग) इन धोखेबाज़ ताकतों के ख़िलाफ़ एक सख़्त बात कहता है: "झूठा कौन है? वह व्यक्ति जो इनकार करता है कि यीशु ही मसीह हैं..." यूहन्ना ने उन लोगों को साफ़ तौर पर आध्यात्मिक "झूठा" कहा जिन्होंने उद्धार की सच्चाई को तोड़ा-मरोड़ा और यीशु को मानने से इनकार किया; साथ ही, उन्होंने उन्हें "मसीह-विरोधी" (antichrists) बताया जो चर्च को बर्बादी की ओर ले जा रहे थे। प्रेरित यूहन्ना ने स्थिति को गंभीरता से समझा और बताया कि समुदाय के अंदर और बाहर कई मसीह-विरोधी और झूठे लोग—सच्चाई के विरोधी—पहले ही उठ खड़े हुए थे; इन बुरे आध्यात्मिक संकेतों को देखकर उन्होंने कहा, "हम जानते हैं कि यह आखिरी घड़ी है" (वचन 18)। यह चेतावनी सिर्फ़ दो हज़ार साल पहले के शुरुआती चर्च के विश्वासियों के लिए नहीं थी।

आज हम जिस दौर में जी रहे हैं, वह भी निश्चित रूप से "आखिरी घड़ी" है, एक ऐसा समय जब धोखे की तेज़ हवाएँ चल रही हैं। अभी भी, अनगिनत मसीह-विरोधी और झूठे शिक्षक—जो सुसमाचार की सच्चाई को कमज़ोर करते हैं और चुपके से प्रभु के ईश्वरीय और मानवीय स्वरूप पर सवाल उठाते हैं—इस दुनिया में लोगों को गुमराह करने के लिए उठ खड़े हुए हैं। इसलिए, जैसा कि 1 यूहन्ना 5:1 में कहा गया है, हमें बदलते समय के बीच मज़बूती से खड़े रहना चाहिए और साफ़ तौर पर मानना और स्वीकार करना चाहिए कि यीशु ही मसीह हैं। केवल वे ही लोग परमेश्वर की सच्ची संतान हैं जो बिना किसी शक के यह मानते हैं कि यीशु—अभिषिक्त जन—हमारे परिपूर्ण भविष्यवक्ता, याजक और राजा हैं, और उन्होंने हमारे सभी पापों को अपने ऊपर लिया और क्रूस पर हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए बलिदान हुए। और केवल वे ही बच्चे, जो क्रूस के इस सुसमाचार की जीवन देने वाली शक्ति से नए सिरे से जन्मे हैं, पवित्र उपासक बन सकते हैं जो सच में पिता परमेश्वर से—जो प्रेम का स्रोत हैं—प्रेम करते हैं।

तो, प्रेरित यूहन्ना द्वारा की गई इस घोषणा—"यीशु ही मसीह है"—में छिपा हुआ सटीक आध्यात्मिक सत्य क्या है? सबसे पहले, हमें अपने उद्धारकर्ता "यीशु" नाम के अर्थ को गहराई से समझना होगा। मत्ती 1:21 में एक स्वर्गदूत की गंभीर घोषणा के माध्यम से इस महान नाम का पता चलता है: "वह एक पुत्र को जन्म देगी, और तुम उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा।" जैसा कि यह वचन बताता है, "यीशु" नाम उस एकमात्र "उद्धारकर्ता" को दर्शाता है जो परमेश्वर के लोगों को पाप की शक्ति और नरक की सज़ा से बचाता है। असल में, "यीशु" नाम का मूल हिब्रू अर्थ है "यहोवा ही उद्धार है।" इसलिए, जब स्वर्गदूत यूसुफ के सामने प्रकट हुआ और आज्ञा दी कि मरियम जिस पुत्र को जन्म देगी उसका नाम "यीशु" रखा जाए, तो यह इस बात की पुष्टि करने वाली घोषणा थी कि वह इस धरती पर हमारी आत्माओं के एकमात्र उद्धारकर्ता के रूप में आए थे। तो फिर, इसके बाद आने वाले शब्द "मसीह" का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है "अभिषिक्त" (पवित्र तेल से अभिषेक किया हुआ)। पुराने नियम के समय की हिब्रू भाषा में, इस अभिषिक्त व्यक्ति को "मसीहा" कहा जाता है। पुराने नियम के हिब्रू समाज में, किसी व्यक्ति या वस्तु पर पवित्र तेल डालने की रस्म एक पवित्र चिह्न के रूप में काम करती थी, जो परमेश्वर द्वारा नियुक्त विशिष्ट व्यक्तियों को उनके पदों के लिए अलग और पवित्र करती थी। बाइबल में, जब परमेश्वर अपने लोगों पर शासन करने और उनकी देखभाल करने के लिए किसी राजा, याजक या भविष्यद्वक्ता को नियुक्त करते थे, तो वे उनके सिर

पर तेल लगाकर उनका अभिषेक करते थे (निर्गमन 29:7; 1 शमूएल 10:1; 1 शमूएल 16:13; 1 राजा 19:16)। इस प्रकार, यह घोषणा कि यीशु "मसीह" हैं, यह दर्शाती है कि उन्होंने हमारे सच्चे राजा, हमारे एकमात्र महायाजक और हमारे अनंत भविष्यद्वक्ता के रूप में इन भूमिकाओं को पूरी तरह से निभाया है। नतीजतन, 1 यूहन्ना 5:1 में पाई जाने वाली घोषणा—"जो कोई विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है"—का बहुत गहरा महत्व है। इसका अर्थ है उस सत्य को पूरी तरह से स्वीकार करना—और ऐसा विश्वास रखना जो गहरी आध्यात्मिक जागृति लाए—कि यीशु ही वह उद्धारकर्ता हैं जिन्होंने मुझे पाप और मृत्यु की दलदल से बचाया; वे ही अनंत राजा हैं जो व्यक्तिगत रूप से मेरे जीवन पर शासन करते हैं; प्रायश्चित करने वाले महायाजक, जिन्होंने हमें परमेश्वर से अलग करने वाली दीवार को गिरा दिया और हमें उन तक सीधे पहुँचने का अधिकार दिया; और सच्चे भविष्यवक्ता, जिन्होंने परमेश्वर के सत्य को पूरी तरह से प्रकट किया। इसलिए, मैंने आपसे जो सवाल पूछा था—"क्या आप मानते हैं कि यीशु ही मसीह हैं?"—उसका असली मतलब यह था: "क्या आप व्यक्तिगत रूप से और पूरी तरह से यीशु पर विश्वास करते हैं और उन पर भरोसा करते हैं—एक ऐसे उद्धारकर्ता के रूप में जिन्होंने आपके पापों को धो दिया, और अपनी आत्मा के सच्चे राजा, महायाजक और भविष्यवक्ता के रूप में?" सच तो यह है कि बाइबल में उद्धार की महान घोषणा यीशु मसीह के बारे में अटूट गवाही देती है कि वे "तीनहरी भूमिका" निभाते हैं—राजा, याजक और भविष्यवक्ता की। (a) सबसे पहले, यीशु मसीह "राजाओं के राजा" हैं जो दुनिया के सभी अधिकारों पर शासन करते हैं।

धर्मशास्त्र यहोवा परमेश्वर की प्रशंसा करता है—जो पूरे ब्रह्मांड पर शासन करते हैं—धन्य और एकमात्र सर्वोच्च शासक, "राजाओं के राजा" के रूप में (1 तीमुथियुस 6:15)। साथ ही, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक यीशु मसीह के लिए भी इसी शाही अधिकार की घोषणा करती है, वे "मेमना" जिन्होंने प्रायश्चित के लिए अपना लहू बहाया। प्रकाशितवाक्य 17:14 की शानदार भविष्यवाणी पर विचार करें: "वे मेमने के विरुद्ध युद्ध करेंगे, लेकिन मेमना उन पर विजय प्राप्त करेगा क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है—और उसके साथ उसके बुलाए हुए, चुने हुए और वफादार अनुयायी होंगे।" प्रभु कोई हारे हुए व्यक्ति नहीं हैं जो क्रूस पर असहाय होकर मरे। भले ही शैतान और दुनिया की ताकतें कलीसिया को कुचलने और उसका विरोध करने के लिए गठबंधन बना लें, यीशु मसीह—प्रभुओं के प्रभु और राजाओं के राजा—अंधकार की उन ताकतों को

निर्णायक रूप से कुचल देंगे और उन पर विजय प्राप्त करेंगे। इसके अलावा, राजा से संबंधित और उनका अनुसरण करने वाले पवित्र लोग—वे वफादार संत जिन्हें प्रभु ने बुलाया और चुना है—वे भी राजा की शक्ति के माध्यम से अंतिम विजय प्राप्त करेंगे।

(b) दूसरा, यीशु मसीह "अनंत महायाजक" हैं जिन्होंने हमारे अपराधों को अपने ऊपर लिया और हमेशा के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश किया।

धर्मशास्त्र लगातार यह घोषणा करता है कि यीशु मसीह ही एकमात्र "महायाजक" हैं जिन्होंने पुराने नियम की अपूर्ण बलिदान प्रणाली को पूर्ण किया और हमारी आत्माओं के लिए पूर्ण मध्यस्थ बने। इब्रानियों 3:1 में, लेखक स्वर्ग के राज्य के लोगों से आग्रह करता है कि वे जीवन भर पवित्रता पर ध्यान केंद्रित रखें: "इसलिए, हे पवित्र भाइयों, जो स्वर्गीय बुलाहट में भागीदार हैं, अपना ध्यान यीशु पर लगाओ, जो प्रेरित और महायाजक है जिसे हम मानते हैं।" यीशु मसीह हमारे आदर्श महायाजक हैं क्योंकि उन्होंने व्यक्तिगत रूप से इंसानी दर्द और आँसुओं का अनुभव किया है। जैसा कि इब्रानियों 4:15 में बताया गया है, प्रभु हमारी कमज़ोरियों के प्रति सहानुभूति रखते हैं और उन्हें किसी और से बेहतर समझते हैं। हालाँकि वे इस धरती पर हमारी तरह ही कठोर परीक्षाओं और मुसीबतों से गुज़रे, फिर भी उन्होंने पूर्ण पवित्रता बनाए रखी और किसी भी दाग-धब्बे से पूरी तरह मुक्त रहे। यह शानदार महायाजक पद किसी ऐसी महत्वाकांक्षा का परिणाम नहीं है जिसे उन्होंने खुद हासिल किया हो; यह एक दिव्य अधिकार है जिसे परमेश्वर पिता ने अनंत काल से तय किया और आज्ञा दी है। इब्रानियों 5:5 और 10 इसकी गवाही देते हैं: "इसलिए मसीह ने भी महायाजक बनने का सम्मान खुद नहीं लिया। बल्कि परमेश्वर ने उनसे कहा, 'तू मेरा पुत्र है; आज मैं तेरा पिता बना हूँ'... और परमेश्वर ने उन्हें मल्किसिदक की व्यवस्था के अनुसार महायाजक नियुक्त किया।" जहाँ हारून के वंश के इंसानी याजकों को मौत की सीमा के कारण अपनी सेवा छोड़नी पड़ती थी, वहीं हमारे प्रभु ने कब्र को तोड़ दिया, फिर से जी उठे, और आने वाली अच्छी चीज़ों के अनंत महायाजक के रूप में आए (9:11)। इब्रानियों 7:24, *आधुनिक लोगों की बाइबिल* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) अनुवाद में, इस अमर सेवा के बारे में यह घोषणा करता है: "लेकिन चूँकि यीशु हमेशा जीवित रहते हैं, इसलिए उनका याजक पद भी अनंत है।" तो, सुसमाचार द्वारा घोषित मुख्य बात क्या है? इब्रानियों 8:1 (पहला भाग) गहरे भाव के साथ कहता है: "हमारे पास ऐसे महायाजक हैं, जो स्वर्ग में महिमा के सिंहासन के दाहिने हाथ बैठे हैं।" चूँकि हमारे पास यह आदर्श और

अनंत महायाजक हैं, इसलिए हमें अब सज़ा या न्याय के डर से काँपने की ज़रूरत नहीं है; इसके बजाय, हम साहस और भरोसे के साथ अनुग्रह के सिंहासन के पास जा सकते हैं।

(c) तीसरा, यीशु मसीह वह "सच्चे भविष्यद्वक्ता" हैं जिन्होंने परमेश्वर के संपूर्ण सत्य को प्रकट किया और उसकी घोषणा की। बाइबल साफ़ तौर पर गवाही देती है कि यीशु मसीह ही वह अनंत "भविष्यवक्ता" हैं जिन्होंने पुराने नियम की सभी भविष्यवाणियों को पूरा किया और अपने व्यक्तित्व में परमेश्वर की इच्छा को पूरी तरह से साकार किया। बहुत पहले, व्यवस्थाविवरण 18:15 के ज़रिए, मूसा ने शानदार ढंग से उस सच्चे भविष्यवक्ता के आने की भविष्यवाणी की थी जो मानव इतिहास के बीच प्रकट होगा: "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे ही भाइयों में से मेरे समान एक भविष्यवक्ता तुम्हारे लिए खड़ा करेगा—तुम्हें उसकी बात सुननी चाहिए।" यूहन्ना के सुसमाचार में, हम साफ़ तौर पर उस समय यहूदी समाज में मूसा की इस भविष्यवाणी के पूरा होने की गहरी आध्यात्मिक तड़प को देख सकते हैं। यहूदियों ने बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना को ढूंढा—जो जंगल में पश्चाताप का प्रचार कर रहे थे—और उनसे सीधे पूछा, "क्या आप *वही* भविष्यवक्ता हैं?" क्योंकि वे यह पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि क्या वही आने वाले मसीहा के लिए रास्ता तैयार कर रहे थे (यूहन्ना 1:21)। उनकी उत्सुक प्रतीक्षा आखिरकार विस्मय और स्वीकारोक्ति में बदल गई जब यीशु मसीह ने पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाने का एक बहुत बड़ा, अलौकिक चमत्कार किया। यूहन्ना 6:14 में दी गई गवाही पर विचार करें: "जब लोगों ने यीशु का किया हुआ चमत्कार देखा, तो वे कहने लगे, 'निश्चित रूप से यही वह भविष्यवक्ता है जिसे दुनिया में आना है।'" जिस पल यहूदी लोगों ने यीशु की दैवीय शक्ति को केवल पाँच जौ की रोटियों और दो मछलियों से हज़ारों लोगों को खाना खिलाते हुए देखा, उन्होंने सहज रूप से सच्चाई को समझ लिया। उन्होंने ज़ोर से घोषणा की कि प्रभु वास्तव में "मेरे समान भविष्यवक्ता" हैं जिनके बारे में मूसा ने व्यवस्थाविवरण में भविष्यवाणी की थी—वही एकमात्र "भविष्यवक्ता" जो पूरी मानवता को बचाने के लिए दुनिया में आने वाले थे।

यीशु मसीह केवल एक नैतिक शिक्षक या ऋषि नहीं हैं। वह सच्चे भविष्यवक्ता हैं जिन्होंने हमें परमेश्वर पिता के हृदय और रहस्यों के साथ-साथ अनंत जीवन के वचनों को सबसे अच्छी तरह से प्रकट किया और उनकी पुष्टि की। जब हम 1 यूहन्ना 5:1 के अनुसार गंभीरता से स्वीकार करते हैं कि "यीशु ही मसीह हैं," तो हमारा विश्वास उनकी तीनहरी भूमिका की इस पूरी स्वीकारोक्ति पर टिका होना चाहिए। यीशु "राजाओं के राजा"

हैं जो मेरे जीवन के हर क्षेत्र पर धार्मिकता के साथ शासन करते हैं; "महायाजक" हैं जिन्होंने क्रूस पर मेरे सभी बुरे पापों को हमेशा के लिए धो दिया; और "भविष्यवक्ता" हैं जिन्होंने अनंत जीवन का वह रास्ता साफ़ तौर पर दिखाया जिस पर मुझे चलना है। सिर्फ़ वही लोग, जो अपने जीवन को विश्वास की इस शानदार और मज़बूत नींव पर टिकाए रखेंगे, अंत के समय की अस्थिरता पर जीत हासिल कर पाएँगे और पूरे दिल से परमेश्वर से प्रेम करते हुए उनके सच्चे 'नए जन्म पाए' बच्चों के तौर पर जी पाएँगे।

तो फिर, प्रेरित यूहन्ना यह क्यों कहते हैं कि जो कोई पूरे दिल से यह मानता है कि यीशु ही मसीह है, वही सच में परमेश्वर से प्रेम करता है? इसके पीछे सुसमाचार का एक खास कारण है। वह यह है कि परमेश्वर, जिनका स्वभाव ही प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8, 16), उन्होंने हमसे—जो अयोग्य और पापी थे—बिना किसी शर्त के और "सबसे पहले" प्रेम किया (पद 19)। हमें अनंत जीवन देने के लिए—हम जो आज्ञा न मानने और पाप करने की वजह से आत्मिक रूप से मरे हुए थे (इफिसियों 2:1)—और हमारे भयानक पापों का पूरा प्रायश्चित करने के लिए (पद 10), परमेश्वर ने बिना किसी हिचकिचाहट के इस दुनिया को अपना एकलौता पुत्र दिया, जो बेदाग और निष्कलंक "धर्मी यीशु मसीह" थे (2:1)। प्रभु ने मेरी जगह मेरे पापों की सज़ा भुगती, "हमारे पापों के लिए प्रायश्चित का बलिदान" बनने के लिए श्राप के क्रूस पर चढ़े, और "दुनिया के उद्धारकर्ता" बने—जो विनाश की ओर बढ़ रही मानवता के लिए एकमात्र उम्मीद हैं (2:2, 4:14)। जो विश्वासी प्रायश्चित के इस मर्मस्पर्शी रहस्य को सच में समझ गया है—इस अद्‌भुत, उद्धार करने वाले प्रेम को, जिसने मेरे जीवन के बदले एकलौता पुत्र का जीवन दिया—उसका विश्वास औरों से अलग ही होगा। 1 यूहन्ना 4:16 के पहले भाग में, प्रेरित यूहन्ना विश्वास का एक बड़ा भरोसा दिलाते हैं जो हमारी टूटी हुई आत्माओं को हिम्मत देता है; *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* इसे इस तरह बताता है: "हम उस प्रेम को जानते और उस पर विश्वास करते हैं जो परमेश्वर हमसे करते हैं—परमेश्वर प्रेम हैं।" अगर कोई सच में—बहुत व्यक्तिगत रूप से—यीशु मसीह के प्रेम को जानता है और उस पर विश्वास करता है, जिन्होंने राजा, याजक और भविष्यद्वक्ता की भूमिकाओं को पूरी तरह निभाया और हमें बचाने के लिए क्रूस पर अपना लहू बहाया, तो वह व्यक्ति शैतान द्वारा खोदे गए धोखे के गड्ढे को पक्के तौर पर ठुकरा देगा और पूरे दिल, आत्मा और मन से पिता परमेश्वर से प्रेम करेगा। इस प्रकार, सही विश्वास जो यीशु को मसीह मानता है, वह निश्चित रूप से ऐसी आराधना की ओर ले जाता है जिसमें पिता के प्रति गहरा और सीधा प्रेम होता है।

(2) दूसरी बात, केवल वे ही लोग सच में परमेश्वर से प्रेम करते हैं और दुनिया पर विजय पाते हैं जो पक्के तौर पर यह मानते हैं कि यीशु 'परमेश्वर के पुत्र' हैं। हमें क्राइस्टोलॉजी (मसीह-विज्ञान) के एक और ज़रूरी पहलू पर ध्यान देना चाहिए—एक ऐसी पक्की कसौटी जो एक सच्चे विजेता में होनी ही चाहिए। कोई भी व्यक्ति प्रेम के परमेश्वर से सच्चा प्रेम तब तक नहीं कर सकता जब तक वह यह विश्वास न करे कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। दूसरे शब्दों में, केवल वे ही लोग—जो स्वर्गीय नागरिक होने का दावा करते हैं और मानते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं—पिता के प्रति सच्चे प्रेम की स्थिति में प्रवेश कर सकते हैं। आज के वचन, 1 यूहन्ना 5:5 को देखें: "संसार पर कौन विजय पाता है? केवल वही जो विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं?" (NASB)। "उस व्यक्ति के अलावा और कौन संसार पर विजय पा सकता है जो विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं?" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। प्रियजनों, क्या आप और मैं बिना किसी शक के यह मानते और स्वीकार करते हैं कि नासरत के यीशु इतिहास में केवल एक महान ऋषि या पैगंबर नहीं हैं, बल्कि जीवित 'परमेश्वर के पुत्र' हैं जिन्होंने पूरी सृष्टि की रचना की है? जब प्रेरित यूहन्ना ने यह पत्र लिखा, तो धोखे की ताकतों ने कलीसियाई समुदाय में गहराई से पैठ बना ली थी; वे केवल इस बात से इनकार करने से कहीं आगे बढ़ गए थे कि यीशु मसीह हैं; उन्होंने उनकी पहचान के मूल सत्य पर ही क्रूर प्रहार किया और साफ तौर पर इनकार कर दिया कि वे परमेश्वर के अनंत पुत्र हैं। 1 यूहन्ना 2:22 और वचन 23 का पहला भाग इन मसीह-विरोधियों (एंटीक्राइस्ट) के घातक झूठों को उजागर करता है: "झूठा कौन है? वही जो इनकार करता है कि यीशु मसीह हैं? यही मसीह-विरोधी है, जो पिता और पुत्र का इनकार करता है। जो कोई पुत्र का इनकार करता है, उसके पास पिता नहीं है..." यूहन्ना ने सख्ती और बिना किसी रियायत के उन लोगों को आध्यात्मिक "झूठा" और "मसीह-विरोधी" घोषित किया जो परमेश्वर पिता और पुत्र के पवित्र मिलन और दिव्यता का इनकार करते हैं। उन्होंने आगे एक ज़रूरी चेतावनी दी, यह बताते हुए कि धोखे को बढ़ावा देने वाले ऐसे कई लोग पहले ही आ चुके हैं, जो यह संकेत देते हैं कि "हम जानते हैं कि यह अंतिम घड़ी है" (वचन 18)।

प्रिय संतों, आज हम जिस दौर में खड़े हैं, वह भी स्पष्ट रूप से "अंतिम घड़ी" है, जो शैतान के चालाक धोखों से भरी हुई है। धार्मिक बहुलवाद और धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद के परिष्कृत मुखौटे पहने हुए, आज की दुनिया आत्माओं का शिकार करती है और साथ ही यीशु मसीह के एकमात्र पुत्र होने के सत्य और क्रूस के सुसमाचार

की पूर्ण प्रकृति को बेरहमी से नष्ट करती है। हर तरफ़ से झूठे लोग और एंटी-क्राइस्ट (मसीह-विरोधी) की भावना फैल रही है। इसलिए, 5:5 में दिए गए ज़बरदस्त ऐलान के अनुसार, हमें मज़बूती से खड़े रहना चाहिए—आजकल के चलन से बिना डगमगाए—और यह साफ़ तौर पर मानना चाहिए कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। सिर्फ़ वे लोग जो यह मानते हैं कि यीशु परमेश्वर-पुत्र हैं—जो स्वभाव में परमेश्वर के बराबर हैं—और यह कि पुत्र का कीमती लहू ही उनकी आत्माओं को बचाने का एकमात्र रास्ता है, वे ही सच में परमेश्वर के हैं; सिर्फ़ वे ही "दुनिया पर जीत हासिल करने वाले" बन सकते हैं और शैतान की उस ताकत को कुचल सकते हैं जो इस दुनिया पर राज करती है। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि पुत्र की शानदार दिव्यता पर मज़बूती से विश्वास करके और उसे मानकर, आप परमेश्वर की सच्ची संतान बनें जो दुनिया पर जीत हासिल करें और परमेश्वर पिता—जो प्रेम के परमेश्वर हैं—से पूरे दिल से प्रेम करें।

तो फिर, बाइबल के इस ऐलान कि "यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं" की असली धार्मिक गहराई कहाँ है? इसका मतलब सिर्फ़ इंसानी या जैविक वंशावली से नहीं है। इस घोषणा का मुख्य अर्थ दिव्यता का ऐलान है: कि यीशु स्वयं-अस्तित्व वाले, सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं, और यह कि पुत्र यीशु और पिता परमेश्वर स्वभाव में पूरी तरह से एक हैं। प्रभु ने खुद यूहन्ना 10:30 में एकता के इस शानदार रहस्य का ऐलान किया: "मैं और मेरे पिता एक हैं।" यह पवित्र मसीही-संबंधी सच्चाई तब और भी साफ़ हो जाती है जब इसे इफिसियों और फिलिप्पियों में प्रेरित पौलुस की लिखी बातों के नज़रिए से देखा जाता है। फिलिप्पियों 2:6 (पहला हिस्सा) प्रभु की असली पहचान के बारे में एक शानदार ऐलान करता है, जो शरीर धारण करके इस धरती पर आए: "जो परमेश्वर के रूप में होकर..." यीशु परमेश्वर द्वारा बनाई गई कोई रचना नहीं हैं; वे खुद परमेश्वर का रूप हैं, जो महिमा, शक्ति और दिव्यता में पिता परमेश्वर के पूरी तरह बराबर हैं। यूहन्ना 1:1 में, प्रेरित यूहन्ना ने 'वचन' (Word) की सच्चाई का ऐलान किया—जो समय और स्थान के बनने से पहले, अनंत काल से मौजूद था—इन शब्दों में: "शुरू में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" जिस पवित्र "वचन" (लोगोस) के बारे में यूहन्ना यहाँ गवाही देते हैं, वह कोई और नहीं बल्कि पुत्र, यीशु मसीह हैं, जिन्होंने शरीर धारण किया और हमारे बीच आए। यूहन्ना बिना किसी समझौते के साफ़ कहते हैं: "वचन ही परमेश्वर था।"

क्योंकि प्रेरित यूहन्ना को पिता और पुत्र की पूरी बराबरी और दिव्यता की गहरी समझ थी, इसलिए वे इन दोनों को स्वाभाविक रूप से एक साथ जोड़ पाए और 1 यूहन्ना 5:10 में एक ज़बरदस्त तर्क पेश कर पाए, जो इस

हिस्से के बाद आता है: "जो कोई परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, उसके पास वह गवाही है। जो कोई परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता, उसने परमेश्वर को झूठा ठहराया है, क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के बारे में दी है" (1 यूहन्ना 5:10)। इस हिस्से के संदर्भ को ध्यान से देखें। वाक्य की शुरुआत "जो कोई परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है" से करने के बाद, यूहन्ना तुरंत "जो कोई परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता" जैसे मिलते-जुलते वाक्यांश का इस्तेमाल करके अपना निष्कर्ष निकालते हैं। इसका मतलब है कि पुत्र पर विश्वास करना पिता पर विश्वास करने के बराबर है, और पुत्र को न मानना एक चौंकाने वाला अपराध है जो असल में पिता को झूठा ठहराता है। यूहन्ना परमेश्वर पिता और पुत्र, यीशु मसीह को एक ही मानते हैं। दूसरे शब्दों में, "परमेश्वर का पुत्र" का खिताब—जैसा कि सुसमाचार में बताया गया है—एक शाश्वत और अस्तित्व से जुड़ी घोषणा है कि यीशु मसीह ही सच्चे परमेश्वर हैं जो पूरी दुनिया पर राज करते हैं। केवल वे ही—जो अपने भीतर रहने वाली पवित्र आत्मा की रोशनी से इस महान पुत्र की दिव्यता पर पूरा विश्वास करते हैं और उसे मानते हैं—दुनिया पर जीत हासिल कर सकते हैं और स्वर्ग के राज्य के सच्चे नागरिक बन सकते हैं, और पूरे दिल से परमेश्वर पिता से प्रेम कर सकते हैं।

सुसमाचारों में अदालत के सबसे नाटकीय और शानदार दृश्यों में से एक में, हम एक बार फिर "परमेश्वर का पुत्र" उपाधि के ज़बरदस्त धार्मिक महत्व को समझते हैं—एक ऐसी उपाधि जिसका दावा स्वयं यीशु ने किया था। मरकुस 14 के अनुसार, शाम होने पर, महायाजक और पूरी महासभा (सन्हेद्रिन) ऐसे झूठे गवाहों को खोजने के लिए बेताब थे जो यीशु को क्रूस पर चढ़ाने को सही ठहरा सकें (मरकुस 14:55)। विरोधाभासी झूठी गवाहियों के शोर-शराबे के बीच, महायाजक ने आखिरकार भारी सन्नाटा तोड़ते हुए यीशु से एक सीधा और तीखा सवाल पूछा: "क्या तू मसीह, परमेश्वर का पुत्र है?" (पद 61)। इस धार्मिक मुकदमे के तनावपूर्ण माहौल में, प्रभु का बिना किसी हिचकिचाहट के दिया गया जवाब दिव्यता की एक ऐसी शानदार घोषणा के रूप में गूंजा जिसने पूरी कायनात को हिला दिया: "यीशु ने कहा, 'मैं हूँ। और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिने हाथ बैठे और स्वर्ग के बादलों पर आते देखोगे'" (पद 62)। पूरे यकीन के साथ "मैं हूँ" कहते हुए, प्रभु ने खुद को महिमामयी राजा घोषित किया—वह जो सर्वशक्तिमान के दाहिने हाथ बैठता है (जैसा कि पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई थी) और जिसके पास शक्ति है, और जो एक दिन न्याय करने वाले के रूप में स्वर्ग के बादलों पर वापस आएगा। इस घोषणा पर महायाजक की प्रतिक्रिया बहुत

तीखी थी। गुस्से और डर से भर कर, उसने अपने कपड़े फाड़ दिए और सभा से चिल्लाकर कहा: "हमें और गवाहों की क्या ज़रूरत है? तुमने ईशनिंदा सुनी है! तुम्हारा क्या फैसला है?" (पद 63–64)। इस भड़काने वाली बात से अंधे होकर, पूरी परिषद ने जूरी की तरह काम किया और सर्वसम्मति से यीशु को "मृत्युदंड के योग्य" ठहराते हुए मौत की सज़ा सुना दी (पद 64)। कट्टर यहूदी कानूनों के नज़रिए से, नासरत के यीशु का यह एक बयान ईशनिंदा का सबसे घिनौना अपराध था—एक ऐसा अपराध जिसके लिए पत्थर मारकर मौत की सज़ा दी जाती थी। यहूदियों के लिए, जो यहोवा परमेश्वर को ही एकमात्र परमेश्वर मानते थे, ऐसा लगा कि एक नौजवान—जो एक आम इंसान जैसा दिखता था—खुद को "परमेश्वर का पुत्र, मसीह" बताकर, यानी पूरी तरह से परमेश्वर और मूल रूप से पिता परमेश्वर के साथ एक होकर, बड़ी हिम्मत से खुद को ऊंचा उठा रहा था। फिर भी, अजीब बात है कि धार्मिक मुकदमे का वह बुरा दृश्य ही वह जगह बन गया जहाँ दुनिया को सुसमाचार (Gospel) का सबसे मुख्य संदेश दिखाया गया। जिस आरोप के कारण यहूदियों ने उन्हें मौत की सज़ा सुनाई—यानी वह हमेशा का सच कि यीशु मसीह ही परमेश्वर के सच्चे पुत्र और स्वयं परमेश्वर-पुत्र हैं, जो ब्रह्मांड के रचयिता और शासक हैं—वही बात विश्वास की वह मज़बूत नींव है जिसकी रक्षा चर्च को अपनी जान देकर भी करनी चाहिए। 1 यूहन्ना 5:5 में किए गए वादे के अनुसार, दुनिया पर जीत हासिल करने वाले सच्चे विजेता बनने के लिए, हमें उस अदालत में घोषित प्रभु की दिव्यता पर बिना किसी शक के विश्वास करना होगा। केवल वे ही जो विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं, शैतान के धोखे को तोड़ सकते हैं और क्रूस पर किए गए प्रायश्चित की कृपा से सशक्त होकर स्वर्ग के राज्य के सच्चे नागरिक बन सकते हैं, जो पिता परमेश्वर—प्रेम के परमेश्वर—की पूरे दिल से आराधना करते हैं। जब मैंने सुसमाचार में इस शानदार मुकदमे के दृश्य पर गहराई से विचार किया, तो मुझे यीशु के "परमेश्वर के पुत्र" होने की घोषणा और उनके "मसीह" होने की घोषणा के बीच एक अद्भुत धार्मिक मेल दिखाई दिया। जब महायाजक ने मरकुस 14:61 में तीखा सवाल पूछा—"क्या तुम मसीह हो, उस परम धन्य के पुत्र?"—तो प्रभु ने बिना किसी हिचकिचाहट के जवाब दिया, "मैं हूँ," और इस तरह एक ही समय में अपनी दिव्यता और अपने पद, दोनों की पुष्टि की। जैसा कि हम पहले ही गहराई से विचार कर चुके हैं, "मसीह" शब्द हिब्रू शब्द *मसीहा* से मेल खाता है—जिसका अर्थ है "अभिषिक्त" (पवित्र तेल से अभिषेक किया हुआ)—जो पुराने नियम में राजा, याजक और भविष्यद्वक्ता के पवित्र पदों को दर्शाता है। दूसरे शब्दों में, यह दावा कि यीशु मसीह हैं, उनके पदों की पुष्टि है: वे हमारे सच्चे राजा, महायाजक और भविष्यद्वक्ता हैं। दूसरी ओर, "परमेश्वर के पुत्र" की उपाधि स्वयं

परमेश्वर-पुत्र की ओर इशारा करती है, जो मूल रूप से पिता परमेश्वर के समान हैं और उनकी महिमा का साक्षात रूप हैं। इस प्रकार, यह घोषणा कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं, एक ऐसा सच है जो बताता है कि वे स्वयं-अस्तित्व वाले "सर्वशक्तिमान परमेश्वर" हैं। इसलिए, "यीशु ही मसीह हैं, परमेश्वर के पुत्र हैं"—यह बात, जो इन दो महान स्वीकारोक्तियों को जोड़ती है, उसे एक बहुत ही गहरे और दिल को छू लेने वाले सुसमाचार के सच के रूप में समझा जा सकता है, जो इंसानी समझ से परे है:

"यीशु मसीह ही 'सच्चे परमेश्वर' हैं—वे राजा जो हमारे जीवन के हर पहलू पर राज करते हैं, वे महायाजक जिन्होंने परमेश्वर और हमारे बीच की अलगाव की दीवार को गिरा दिया, और वे नबी जिन्होंने स्वर्ग के अनंत रहस्यों को प्रकट किया।" यह बात कि यीशु—जो पूरी तरह से परमेश्वर हैं—हमारे मसीहा बने, हमारे लिए इतनी दिल को छू लेने वाली और भावुक कर देने वाली सुसमाचार की बात क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु, जो स्वयं सृष्टिकर्ता परमेश्वर हैं, ने सच्चा इंसानी शरीर धारण किया और इतिहास में प्रवेश किया (2 यूहन्ना 1:7); वे एक पूर्ण और पाप-रहित शरीर में आए (1 यूहन्ना 3:3, 5) ताकि हम जैसे अयोग्य लोगों के पापों का पूरी तरह से प्रायश्चित कर सकें (1 यूहन्ना 4:10), हमारे सभी अधर्मों को हमेशा के लिए मिटा सकें (3:5), और हमें पुनर्जीवित करके अनंत जीवन दे सकें—हम जो अपने अपराधों के कारण आध्यात्मिक रूप से मृत और ठंडे हो चुके थे (4:9)। वे पवित्र परमेश्वर सबसे नीची और विनम्र जगह पर आए, आपके और मेरे लिए तय सज़ा को सहा, और क्रूस पर एक भयानक प्रायश्चित बलिदान बने। उन्होंने अपनी मर्ज़ी से और बिना किसी हिचकिचाहट के उस शापित पेड़ पर अपनी जान दे दी ताकि हमें अनंत उद्धार और कभी न मुरझाने वाले स्वर्गीय जीवन का उपहार दे सकें (1 यूहन्ना 3:16, 5:11–13)।

इसलिए, मैंने आपकी आत्माओं से जो सवाल पूछा था—"क्या आप सच में विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं?"—उसके पीछे का असली मकसद यही था: "क्या आप पूरे दिल से भरोसा करते हैं कि यीशु—जो पूरी कायनात के परमेश्वर और सर्वोच्च शासक हैं—बिना किसी दाग या पाप वाले शरीर में आए, ताकि मेरे बुरे कामों का प्रायश्चित कर सकें और उन्हें मिटा सकें, मुझे पुनर्जीवित कर सकें जब मैं पाप और अवज्ञा के कारण आध्यात्मिक मौत का हकदार था, और क्रूस पर अपना जीवन प्रायश्चित बलिदान के रूप में देकर मुझे अनंत उद्धार और जीवन दे सकें?" जो विश्वासी—इस शानदार सुसमाचार के निमंत्रण के सामने अपने

अहंकार और ज़िद को छोड़कर—अपने दिल की गहराइयों से और अपने होंठों से यह स्वीकार करते हैं, "आमीन! प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ!" वे ही हैं जो शैतान के सभी धोखों को तोड़ देते हैं और पूरे दिल से प्रेम के परमेश्वर से प्रेम करते हैं; वे परमेश्वर की सच्ची, नई जन्म पाई हुई संतान हैं।

(3) तीसरा, केवल वे ही जो पवित्र आत्मा से नया जन्म पाते हैं—यानी "परमेश्वर से जन्मे"—सचमुच परमेश्वर से प्रेम करते हैं।

जो सचमुच परमेश्वर से प्रेम करता है, उसका तीसरा और आखिरी सबूत—जिसे प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 5:1–5 में बताया है—अस्तित्व में एक बुनियादी बदलाव से जुड़ा है: "नया जन्म पाने का रहस्य" पाना। कृपया आज के वचन, 1 यूहन्ना 5:1 पर एक बार फिर विचार करें: "हर कोई जो विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से जन्मा है, और जो कोई पिता से प्रेम करता है, वह उसके बच्चे से भी प्रेम करता है" (अपने शब्दों में)। प्रियजनों, क्या आपने पवित्र आत्मा से नया जन्म पाया है? इसे ज़रूरी धार्मिक शब्दों में पूछें तो: क्या आपने सचमुच नए जन्म (पुनर्जन्म) का अनुभव किया है? यह एक गहरा सवाल है कि क्या आपने "पुराने स्वभाव" की भ्रष्ट प्रकृति को त्याग दिया है और मसीह में पूरी तरह से एक नई रचना—एक नया व्यक्ति—बन गए हैं। 2 कुरिन्थियों 5:17, एक ऐसा वचन जिसे हम अपनी आत्मा के लिए एक अनमोल सच्चाई मानते हैं, इस अस्तित्व संबंधी बदलाव को कितनी शानदार ढंग से बताता है: "इसलिए, यदि कोई मसीह में है, तो नई रचना आ गई है: पुरानी बातें बीत गई हैं, नई बातें आ गई हैं!" "इसलिए, जो कोई मसीह में है वह एक नया प्राणी है; पुराना स्वभाव बीत गया है, और एक नया स्वभाव अस्तित्व में आ गया है।" बाइबल बताती है कि जो कोई भी मसीह के सर्वोच्च शासन के अधीन रहता है, वह फिर से रचा जाता है—एक ऐसी पुरानी हस्ती के रूप में नहीं जो खत्म हो रही दुनिया का हिस्सा हो, बल्कि एक "नई रचना" और पूरी तरह से एक नए प्राणी के रूप में, जिसमें स्वर्गीय DNA समाया हुआ है।

आज के वचन, 1 यूहन्ना 5:1 के संदर्भ में पौलुस की इस महान घोषणा पर विचार करें। जब हम पूरे दिल से भरोसा और विश्वास करते हैं कि यीशु ही मसीह हैं—हमारे उद्धारकर्ता, राजा, महायाजक और भविष्यद्वक्ता—तो हम परमेश्वर से नया जन्म पाने का आशीष अनुभव करते हैं; उस विश्वास के तुरंत परिणाम के रूप में, हम

नई रचनाओं में बदल जाते हैं। सच्चा विश्वास अनिवार्य रूप से किसी व्यक्ति के अस्तित्व का पुनर्जन्म लाता है। जब हम इफिसियों 2:1 और 1 यूहन्ना 4:9 के उद्धार-संबंधी ऐतिहासिक संदर्भ में नए जन्म की इस रहस्यमय घटना पर मनन करते हैं, तो हम सुसमाचार के प्रति और भी गहरे विस्मय का अनुभव करते हैं। मूल रूप से, आज्ञा न मानने और पाप की बुराई के कारण, आप और मैं लाशों की तरह थे—आध्यात्मिक रूप से ठंडे और मृत (इफिसियों 2:1)। हम आध्यात्मिक रूप से कंगाल थे, और परमेश्वर से प्रेम करने या अपनी मर्जी से उनकी इच्छा को समझने में पूरी तरह असमर्थ थे—यहाँ तक कि 0.1% भी नहीं। फिर भी, यीशु मसीह—जो पूर्ण रूप से परमेश्वर हैं—में विश्वास के माध्यम से हमारी आत्मा की गहराइयों में एक अद्भुत चमत्कार हुआ: पिता, जिन्होंने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया था, ने हमें फिर से जीवित किया (1 यूहन्ना 4:9)। दूसरे शब्दों में, इस घोषणा का सच्चा सार कि हमारा नया जन्म हुआ है—पवित्र आत्मा द्वारा नया जीवन मिला है—जीवन की घोषणा है: कि हम, जो पाप के कारण सांस लेना बंद कर चुके थे और अनंत विनाश का सामना कर रहे थे, प्रभु के बहुमूल्य लहू के द्वारा "फिर से जीवित" किए गए हैं। केवल वे ही जो आध्यात्मिक मृत्यु की उस अवस्था से जागे हैं और प्रभु का नया जीवन प्राप्त कर चुके हैं, पवित्र बच्चों का जीवन जी सकते हैं और उस प्रेम करने वाले परमेश्वर से—जिन्होंने उन्हें बचाया—अपने पूरे हृदय, आत्मा और मन से सच्चा प्रेम कर सकते हैं। प्रियजनों, वह कौन था जिसने वास्तव में हमें—जो आध्यात्मिक रूप से मृत थे—फिर से जीवित किया? यह हमारे अपने नैतिक संकल्पों या तपस्या के धार्मिक कार्यों से हासिल नहीं हुआ था। यह केवल सेनाओं के प्रभु परमेश्वर थे जिन्होंने, अपनी पवित्र प्रभुता में, हमें अपराधों और पापों की उस दलदल से पुनर्जीवित किया जहाँ हम सड़ रहे थे। इफिसियों 2:4–5 के ज़रिए, प्रेरित पौलुस ने उद्धार की इस दिल को छू लेने वाली कहानी को शानदार ढंग से बताया है: “लेकिन परमेश्वर, जो दया से भरपूर है, उसने हमसे इतना गहरा प्यार किया कि जब हम पापों के कारण मरे हुए थे, तब उसने हमें मसीह के साथ जीवित किया (अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है)” (NKJV)। “लेकिन परमेश्वर, जो दया से भरपूर है, उसने हमसे इतना गहरा प्यार किया कि उस महान प्रेम के साथ, उसने हमें मसीह के साथ फिर से जीवित किया—हम जो पाप के कारण आत्मिक रूप से मरे हुए थे। इस प्रकार, परमेश्वर के अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है” (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। जीवन देने वाले उद्धार की इस महान घटना के होने से पहले, हमारे “पुराने स्वरूप” की असली हालत क्या थी? नासरत के यीशु को “मसीह”—हमारी आत्मा के उद्धारकर्ता, राजा,

महायाजक और भविष्यद्वक्ता—के रूप में मानने और उन पर विश्वास करने से पहले, हमारा पुराना स्वरूप बिना सोचे-समझे और लगातार दुनिया की भ्रष्ट और बुरी प्रवृत्तियों के पीछे भागता था। हम ऐसे दयनीय लोग थे जो स्वाभाविक रूप से शैतान—हवा की शक्ति का शासक—की आवाज़ के आगे झुक जाते थे और उसके गुलाम बनकर रहते थे। जैसा कि इफिसियों 2:2–3 का कंटेम्पररी कोरियन वर्शन अनुवाद बताता है, हम स्वभाव से ही क्रोध की संतान थे, जो केवल शरीर की इच्छाओं और अपने दिलों के बुरे विचारों को पूरा करने में लगे रहते थे। ऐसे दयनीय, आत्मिक रूप से कंगाल लोगों पर—जो परमेश्वर से अलग और उनके दुश्मन थे, और जो खुद से एक प्रतिशत भी अच्छा काम करने में पूरी तरह असमर्थ थे—पिता ने अपने एकलौते बेटे के जीवन का बलिदान देकर "वह महान प्रेम" भरपूर मात्रा में बरसाया।

जब हम इसे 1 यूहन्ना की गहरी समझ वाली नज़र से देखते हैं, तो हमारे दयनीय पुराने स्वरूप की कड़वी सच्चाई पूरी तरह साफ़ हो जाती है। हमारे नए सिरे से जन्म लेने से पहले, हमारा "पुराना स्वरूप" गहरे आत्मिक अंधेरे में भटकता था—जहाँ रोशनी की एक किरण भी नहीं थी—और अंधेरे के घिनौने काम करता था (1 यूहन्ना 1:6; 2:11)। हम लगातार धार्मिक झूठ में लगे रहते थे जो सच्चाई के खिलाफ़ थे (1:6), अपने साथी विश्वासियों के प्रति जलन और नफ़रत रखते थे (2:9; 3:15), और लालच के साथ केवल इस खत्म होने वाली दुनिया की वासनाओं और घमंड से प्यार करते थे (2:15)। आखिरकार, हम क्रोध के पात्र थे और बिना किसी हिचकिचाहट के वह बुराई करते थे जिससे परमेश्वर नफ़रत करते हैं; हम शैतान की संतानों की तरह पाप करते थे (3:8, 12)। फिर भी, परमेश्वर ने चमत्कारिक रूप से हमें—यानी हमारे पुराने स्वरूप को, जिसका आध्यात्मिक जीवन अपराधों और पापों के कारण पूरी तरह खत्म हो चुका था—मसीह के साथ फिर से जीवित किया और हमें पूरी तरह से नया इंसान बनाया।

1 यूहन्ना 5:1 के पहले भाग में—जो आज हमारा मुख्य वचन है—प्रेरित यूहन्ना इस शानदार और बुनियादी बदलाव की घोषणा करते हुए हमें "परमेश्वर से जन्मा हुआ" कहते हैं। यहाँ, "परमेश्वर से जन्मा हुआ" का अर्थ है वह व्यक्ति जिसका "नया जन्म" हुआ है या जो "फिर से नया बना" है; उसे पवित्र आत्मा के विशेष और स्वतंत्र कार्य के द्वारा नया आध्यात्मिक जीवन मिला है। हमारे उद्धारकर्ता यीशु ने एक बार निकुदेमुस से—

जो एक यहूदी नेता था और आधी रात को उनसे मिलने आया था—इस नए जन्म के ज़रूरी रहस्य के बारे में गंभीरता से कहा था: "...मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जब तक कोई नया जन्म न ले, वह परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता... अचरज न कर कि मैंने तुझसे कहा, 'तुम्हें नया जन्म लेना होगा'" (यूहन्ना 3:3, 7)। प्रेरित यूहन्ना द्वारा घोषित "परमेश्वर से जन्म" का अर्थ केवल धर्म परिवर्तन या नैतिक सुधार से कहीं ज़्यादा है; यह एक आध्यात्मिक पुनर्जन्म—एक "नया जन्म"—है जिसमें व्यक्ति को स्वर्ग का DNA मिलता है और वह पूरी तरह से नया इंसान बन जाता है। इसके अलावा, नए जन्म के इस रहस्य में केवल एक बार होने वाली घटना ही नहीं, बल्कि एक "जीवित और निरंतर विश्वास" भी शामिल है; इसमें प्रभु—जो सच्चा प्रकाश है—की ओर जीवन भर लगातार विश्वास के कदम उठाना शामिल है। जैसा कि बाइबल के व्याख्याकार हमेशा बताते हैं, जिस विश्वासी का सचमुच परमेश्वर से नया जन्म हुआ है, उसके जीवन में स्पष्ट सबूत दिखाई देते हैं—ऐसे सबूत जो पूरी दुनिया को दिखाते हैं कि वह सचमुच एक नई रचना और नया इंसान है। वचन 1 के दूसरे भाग में बताए गए पक्के सबूत इन दो बंधनों के ज़रिए दिखाई देते हैं:

पहला, "उसे" पूरे दिल से प्रेम करना "जिसने हमें जन्म दिया"—यानी परमेश्वर पिता—जिन्होंने अपने लहू से हमें मोल लिया और हमें आध्यात्मिक जन्म दिया। दूसरी बात, प्रभु में "भाई-बहनों" से दिल से प्यार करना—वे लोग जो उसी प्यार करने वाले पिता से दोबारा पैदा हुए हैं, जिनका आध्यात्मिक खून एक है और जो एक शरीर बनाते हैं। बाइबल में मिलने वाले ये दो सबूत, विश्वास की उन मुख्य बातों से पूरी तरह मेल खाते हैं जो यीशु ने सुसमाचारों में पूरी इंसानियत को बताई थीं—यानी प्यार का सबसे बड़ा हुक्म: "यीशु ने जवाब दिया: ‘अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी आत्मा और अपने पूरे मन से प्यार करो।’ यह पहला और सबसे बड़ा हुक्म है। और दूसरा भी इसी जैसा है: ‘अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार करो जैसे तुम खुद से करते हो’" (मत्ती 22:37–39)। एक सच्चे ईसाई की पहचान का पक्का सबूत—यानी दुनिया से अलग एक नई रचना के तौर पर बदलना और जीना—बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है। यह बस इतना है: परमेश्वर पिता से, जिन्होंने मुझे ज़िंदगी दी है, अपने पूरे दिल, आत्मा और मन से प्यार करना (ऊपर की ओर), और अपने साथ रहने वाले दूसरे विश्वासियों और पड़ोसियों से वैसे ही सच्चे दिल से प्यार करना जैसे मैं खुद से करता हूँ (आस-पास के लोगों के साथ)। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप पवित्र संत बनें, जो इन दो स्तंभों को

पूरी तरह से अपनी ज़िंदगी की वेदी पर रखकर, रोज़ाना अपने कामों से यह दिखाएँ कि आप विजेता हैं और सच में परमेश्वर के हैं।

दूसरी बात, बाइबल में बताए गए "परमेश्वर से प्यार करने" का असली मतलब क्या है? यह सिर्फ़ एक अमूर्त भावना नहीं है; बल्कि, उस विश्वासी के लिए जिसे दुनिया बनने से पहले ही चुने जाने की कृपा मिली है, यह आज्ञा मानने का काम है—यानी जहाँ हम रहते हैं, वहीं चुपचाप उनकी आज्ञाओं को मानना। 1 यूहन्ना 5:2–3 में, प्रेरित यूहन्ना साफ़ तौर पर बताते हैं कि कैसे मसीह में विश्वास (होना) की बात, जिस पर पहले चर्चा हुई थी, उसे हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में ठोस काम (करना) में बदलना चाहिए: "इससे हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के बच्चों से प्यार करते हैं, जब हम परमेश्वर से प्यार करते हैं और उनकी आज्ञाओं को मानते हैं। क्योंकि परमेश्वर का प्यार यही है कि हम उनकी आज्ञाओं को मानें। और उनकी आज्ञाएँ बोझ नहीं हैं" (NKJV)। "जब हम परमेश्वर से प्यार करते हैं और उनकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के बच्चों से प्यार कर रहे हैं। परमेश्वर से प्यार करने का मतलब है उनकी आज्ञाओं को मानना। उनकी आज्ञाएँ बोझ नहीं हैं" (Contemporary Korean Version)। इन गंभीर शब्दों का सामना करते हुए, मैंने खुद को रोमियों 8:28 पर मनन करते हुए पाया—एक ऐसी खास आयत जिसे मैंने जीवन भर संजोकर रखा है—और इसे एक इवेंजेलिकल नज़रिए से नए सिरे से समझा: "और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, और जो उसकी योजना के अनुसार बुलाए गए हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं।" धर्मग्रंथ स्पष्ट रूप से बताता है कि प्रभु की सर्वोच्च देखरेख और आशीषें किन लोगों को मिलती हैं—वे हैं "जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं।" तो फिर, ये "परमेश्वर से प्रेम करने वाले" कौन हैं जिन्हें इतनी शानदार उपाधि मिली है? पौलुस तुरंत उनकी पहचान का स्रोत बताता है: वे और कोई नहीं, बल्कि "वे लोग हैं जो परमेश्वर की योजना के अनुसार बुलाए गए हैं।"

तो, उद्धार के इतिहास के नज़रिए से, परमेश्वर के मकसद के अनुसार बुलाए गए लोग असल में कौन हैं? आगे की आयतों—रोमियों 8:29 और 30—में प्रेरित पौलुस ने उनकी पवित्र आध्यात्मिक वंशावली को बहुत शानदार ढंग से समझाया है। वे वही लोग हैं जिन्हें परमेश्वर ने दुनिया की नींव रखे जाने से पहले ही "जान लिया था" (foreknew) और जिन्हें उसने अपने सर्वोच्च फैसले के तहत "पहले से तय" (predestined) किया

था। यहाँ, परमेश्वर का हमें "जानना" (foreknowing) सिर्फ़ दिमागी जानकारी से कहीं ज़्यादा है। जैसा कि भजन संहिता 1:6 और होशे 13:5 जैसे संदर्भों से पता चलता है, यह गहरे प्यार की एक ऐसी घोषणा है जो हमारे अस्तित्व से जुड़ी है—इसका मतलब है कि ब्रह्मांड के स्वामी परमेश्वर ने, शुरू से ही एक खास वाचा वाले प्यार के साथ, हम जैसे पापियों पर "खास ध्यान दिया और हमें चुना"। परमेश्वर ने इन लोगों को—जिन्हें उसने दुनिया की नींव रखे जाने से पहले ही अपना मान लिया था—इतिहास के बीच में बुलाया। कानों से सुनी जाने वाली सुसमाचार की बाहरी घोषणा (आम बुलावा) से आगे बढ़कर, उसने हमारी आत्माओं तक एक आंतरिक और "असरदार बुलावा" (Effective Calling) पहुँचाया, जिसके ज़रिए पवित्र आत्मा का न टाला जा सकने वाला, सर्वोच्च काम हमें नासरत के यीशु को अपनी आत्माओं का उद्धारकर्ता मानने के लिए मजबूर करता है। जो लोग इस खास अनुग्रह की कड़ी से बंधे हैं, जो आखिर में उद्धार पाते हैं और पवित्र "संतों" (रोमियों 1:7) के तौर पर मुहरबंद किए जाते हैं, बाइबल उन्हीं को "परमेश्वर के मकसद के अनुसार बुलाए गए" और सच्चे "परमेश्वर से प्यार करने वाले" बताती है। परमेश्वर के प्रति प्यार का इज़हार करने की जो ताकत उन्हें मिलती है, वह उनके अपने चरित्र या नैतिकता से नहीं आती। जैसा कि 1 यूहन्ना 4:19 कहता है, क्योंकि परमेश्वर—जो खुद प्यार है—ने हमारी बुरी हालत में भी *सबसे पहले* हमसे बिना शर्त प्यार किया, इसलिए उसके बच्चे, जिन्होंने क्रूस के ज़रिए वह बिना योग्यता वाला प्यार पाया है, स्वाभाविक रूप से पिता के लिए अपने सच्चे प्यार का इज़हार करते हैं। यूहन्ना अब जोश और भावना के साथ बताता है कि कैसे एक संत—जिसने इस पवित्र चुनाव के अनुग्रह का अनुभव किया है—का परमेश्वर के प्रति प्यार रोज़मर्रा की ज़िंदगी में उसकी आज्ञाओं को मानने के साफ़ और ठोस सबूतों के ज़रिए ज़ाहिर होता है।

प्यारे लोगों, वे कौन हैं जो सच में परमेश्वर से प्यार करते हैं? 1 यूहन्ना 5:1–5 के गहरे अध्ययन से, हमने उन लोगों के दिलों में मौजूद तीन पक्के अस्तित्व संबंधी सबूतों (यानी उनके *होने* या स्वभाव से जुड़ी बातें) की पहचान की है जो पिता से प्रेम करते हैं। पहला, वे लोग जो पूरे दिल से इस सच्चाई पर भरोसा करते हैं कि यीशु ही मसीह हैं—यानी उद्धारकर्ता, राजा, महायाजक और भविष्यद्वक्ता (पद 1)। दूसरा, वे लोग जो पक्के तौर पर मानते और स्वीकार करते हैं कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं और स्वभाव में पिता के समान हैं (पद 5)। तीसरा, वे लोग जो "परमेश्वर से जन्मे" हैं (यानी जिनका नया जन्म हुआ है)—जो क्रूस के कीमती लहू और पवित्र आत्मा के सामर्थी काम के द्वारा आत्मिक मृत्यु से जीवित किए गए हैं (पद 1)। अब, 1 यूहन्ना 5:2–3 के

आज के वचन के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना उन लोगों के लिए—जो परमेश्वर के राज्य के नागरिक हैं और जिनका स्वभाव पूरी तरह बदल चुका है—एक शानदार और ज़ोरदार बात कहते हैं कि उन्हें असल में क्या करना चाहिए (यानी उनका *काम* या व्यवहार कैसा होना चाहिए): "हम कैसे जानते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तान से प्रेम करते हैं? जब हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं। क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यही है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें। और उसकी आज्ञाएँ बोझिल नहीं हैं।" "जब हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तान से प्रेम कर रहे हैं। परमेश्वर से प्रेम करने का अर्थ है उसकी आज्ञाओं को मानना। उसकी आज्ञाएँ बोझिल नहीं हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। प्रेरित यूहन्ना हमारी आत्माओं में "परमेश्वर से प्रेम करने" की सच्ची परिभाषा को गहराई से उतारते हैं। यह केवल कोई काल्पनिक बात या कुछ पल के लिए महसूस होने वाली तीव्र भावना नहीं है, बल्कि खास तौर पर "परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना" है (पद 3)। इसका मतलब है कि नई सृष्टि—यानी वे लोग जिनका पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म हुआ है और जो इस विश्वास में हैं कि यीशु ही मसीह और परमेश्वर के पुत्र हैं—उन्हें उस उद्धार करने वाले अनुग्रह से आज्ञाकारी जीवन जीने की शक्ति मिलती है, और वे अपने पूरे अस्तित्व के केंद्र को प्रभु की आज्ञाओं के अधीन कर देते हैं। जब मैंने पवित्र आज्ञाकारिता के इस सिद्धांत पर मनन किया, तो प्रभु की शानदार आवाज़—जिसे उसी लेखक, प्रेरित यूहन्ना ने यूहन्ना 14:21 में दर्ज किया है—मेरे मन में गूँज उठी और मेरे दिल को फिर से झकझोर दिया: "जो कोई मेरी आज्ञाओं को मानता है, वही मुझसे प्रेम करता है। जो मुझसे प्रेम करता है, उससे मेरे पिता प्रेम करेंगे, और मैं भी उससे प्रेम करूँगा और स्वयं को उस पर प्रकट करूँगा" (NIV)। "जो व्यक्ति मेरी आज्ञाओं को संजोकर रखता है और उनका पालन करता है, वही मुझसे प्रेम करता है। जो मुझसे प्रेम करता है, उससे मेरे पिता प्रेम करेंगे, और मैं भी उससे प्रेम करूँगा और स्वयं को उस पर प्रकट करूँगा" (Contemporary Korean Version)। चाहे उनके सुसमाचार में हो या उनकी पत्रियों में, प्रेरित यूहन्ना ने हमेशा एक जैसी, अटूट और सुसमाचार-सम्मत संगति बनाए रखी है। उस शानदार संगति का सार स्पष्ट है: जो लोग सचमुच परमेश्वर से प्रेम करते हैं, वे प्रभु की आज्ञाओं को अपने दिल की गहराई में किसी खजाने की तरह संजोकर रखेंगे और अपने जीवन में उनका पालन करेंगे। प्रेम का कोई भी ऐसा दावा जिसमें उनकी आज्ञाओं का स्वेच्छा से और खुशी-खुशी पालन न किया जाए, पूरी तरह से नकली है—यह खोखले दिखावे के अलावा और कुछ नहीं है। मैं प्रभु के

नाम से पूरी गंभीरता से प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसे पवित्र संत बनें जो पूरे दिल से प्रभु से प्रेम करते हुए खुशी-खुशी उनके नियम का पालन करें और हर दिन अपने भीतर वास करने वाले परमेश्वर की महिमा को स्पष्ट रूप से देखें और महसूस करें।

प्रियजनों, यदि हम सचमुच पूरे दिल से परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो हमें उस प्रेम को केवल अपनी भावनाओं या मन की स्थितियों से नहीं, बल्कि बाइबिल के अनुसार अच्छे फलों से स्पष्ट रूप से दिखाना चाहिए। 1 यूहन्ना 4:7 के गहरे रहस्य पर मनन करते समय—एक ऐसा वचन जिसे हमने पहले विस्तार से देखा है—मैंने एक बार एक पादरी के तौर पर एक संदेश लिखा था जो हमारे दिलों में छिपे मुखौटों को हटा देता है: "जो व्यक्ति प्रभु की आज्ञाओं का पूरी तरह से पालन करता है और अपने साथी विश्वासियों से सच्चे दिल से प्रेम करता है, वही सचमुच पवित्र आत्मा से नया जन्म पाता है और एक सच्चा संत है जो परमेश्वर को वास्तव में जानता है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति प्रभु की नई आज्ञा को हल्के में लेता है, उसकी अवज्ञा करता है, और अपने दिल में नफरत और ईर्ष्या को पनपने देता है—चाहे उसका पद या ओहदा कितना भी ऊँचा क्यों न हो—उसका वास्तव में नया जन्म नहीं हुआ है; वे केवल आध्यात्मिक रूप से अंधे हैं और परमेश्वर के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं।" गहरे आत्म-परीक्षण के इन शब्दों को रिकॉर्ड करते समय मैंने सुसमाचार के जिस सिद्धांत को अच्छी तरह से सीखा और समझा, वह स्पष्ट है: यदि मैं सचमुच क्रूस के लहू से नया जन्म पा चुका हूँ—यदि मेरी आत्मा पूरी तरह से एक नई स्वर्गीय रचना में बदल गई है—तो मैं निश्चित रूप से अपने गिरे हुए स्वभाव और अहंकार पर काबू पा लूँगा, और प्रभु की पवित्र आज्ञाओं का पालन करते हुए अपने पूरे अस्तित्व को उनके प्रति समर्पित कर दूँगा। आज के वचन—1 यूहन्ना 5:3—के माध्यम से प्रेरित यूहन्ना हम सभी के दिलों की जाँच के लिए एक कड़ा पैमाना सामने रखते हैं; हममें से कई लोग अक्सर दिखावटी और पाखंडपूर्ण धार्मिक जीवन की ढर्रे पर चलने लगते हैं। यह एक सशक्त सीख है: यदि हम सचमुच परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो हमें दुनिया और शैतान के सामने अपने जीवन में ठोस सबूतों के ज़रिए उस प्रेम को साबित करना होगा। इसे साबित करने का खास तरीका उसी सिद्धांत पर आधारित है जो 4:7 में बताया गया है—यानी, अपने पूरे अस्तित्व के साथ परमेश्वर की आज्ञाओं को दृढ़ता से मानना और उनका पालन करना (5:3)।

हमें आज अपनी आराधना और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में इस सच्चाई को सख्ती से लागू करना चाहिए। हमें कभी भी केवल धार्मिक दिखावे तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए—जैसे हर रविवार को मंच के सामने खड़े होकर केवल होंठों से यह कहना कि "हे परमेश्वर, मैं आपसे बहुत प्रेम करता हूँ," या केवल उनकी स्तुति के गीत गाना। हमें अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी वैसे ही जीनी चाहिए जैसा हमने आँसुओं के साथ स्वीकार किया था और जैसा उन गीतों के बोल कहते हैं जिन्हें हमने इतने जोश के साथ गाया था। अपनी स्वीकारोक्ति के अनुसार जीने का सच्चा बाइबिल-सम्मत अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी पसंद या स्वार्थ के आधार पर यह चुनें कि परमेश्वर के वचन के किन हिस्सों को मानना है; बल्कि, इसका अर्थ है पवित्र परमेश्वर की आज्ञाओं का पूरी तरह से पालन करने के लिए आज्ञाकारिता के कदम उठाना। तो फिर, परमेश्वर की उस महान "आज्ञा" का सार क्या है जिस पर प्रेरित यूहन्ना बार-बार ज़ोर देते हैं और हमें उसका पालन करने के लिए कहते हैं? 1 यूहन्ना 3:23 ईसाई विश्वास के इस बुनियादी सिद्धांत को स्पष्ट रूप से बताता है: "और उनकी आज्ञा यह है: कि हम उनके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और एक-दूसरे से प्रेम करें, जैसा उन्होंने हमें आज्ञा दी थी।" "परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करना और एक-दूसरे से वैसा ही प्रेम करना जैसा मसीह ने आज्ञा दी थी—परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने का ठीक यही अर्थ है" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। बाइबिल में बताई गई परमेश्वर की उत्तम आज्ञा बिल्कुल भी जटिल नहीं है। इसमें एक ऊर्ध्वाधर (vertical) "विश्वास" शामिल है—परमेश्वर के पुत्र और ब्रह्मांड के स्वामी यीशु मसीह के नाम पर दृढ़ विश्वास रखना, उन्हें अपनी आत्मा का उद्धारकर्ता, अपना राजा, महायाजक और भविष्यद्वक्ता मानना—और एक क्षैतिज (horizontal) बंधन है "एक-दूसरे से प्रेम करना," यानी साथी विश्वासियों को अपने ही शरीर के अंग के रूप में अपनाना, उस नए नियम के अनुसार जिसे प्रभु ने अपने लहू से हम पर लिखा है।

आइए हम जीवन देने वाले इस वचन को एक बार फिर अपनी आत्मा की गहराई में बसा लें। यदि आप और मैं यह स्वीकार करते हैं कि नासरत का यीशु परमेश्वर का सच्चा पुत्र और मसीह है—और यदि वह विश्वास सच्चा, जीवंत और महत्वपूर्ण है जो शैतान के झूठ से डगमगाता नहीं है—तो हमें ठोस कार्यों और ईमानदारी के माध्यम से अपने विश्वास की शुद्धता को साबित करना होगा। इस महान प्रमाण का एकमात्र मार्ग है अपने आस-पास के कमजोर भाई-बहनों से बिना शर्त और पूरे दिल से प्रेम करना, जैसा कि परमेश्वर ने आज्ञा दी है। मैं प्रभु के नाम से ईमानदारी से प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसे पवित्र संत बनें जो केवल शब्दों के पाखंड

को तोड़ें और अपने दैनिक जीवन में छोटे, व्यावहारिक कार्यों के माध्यम से परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को शानदार ढंग से प्रदर्शित करें।

वह शक्ति जो हमें बाइबिल की आज्ञाकारिता—एक-दूसरे से प्रेम करने—के मार्ग पर खुशी-खुशी चलने में सक्षम बनाती है, वह हमारे अपने नैतिक संकल्प से उत्पन्न नहीं होती है। जैसा कि 1 यूहन्ना 4:19 कहता है, यह केवल इसलिए संभव है क्योंकि प्रेम के परमेश्वर ने "सबसे पहले" हमसे—भले ही हम कितने भी बुरे क्यों न थे—बिना किसी शर्त के प्रेम किया। तो फिर, त्रिएक परमेश्वर ने हमारे जीवन में उस पूर्ण और शुद्ध प्रेम को किस विशिष्ट तरीके से प्रकट किया? 1 यूहन्ना 4:9-10 के शानदार प्रकटीकरण में, हमें एक पवित्र पुष्टि मिलती है: "परमेश्वर का प्रेम हमारे बीच इस प्रकार प्रकट हुआ: परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को दुनिया में भेजा ताकि हम उसके द्वारा जी सकें। प्रेम यह है: यह नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, बल्कि यह कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा।" उद्धार के इतिहास की इस महान घटना के बीच, हमें उन दो महान प्रेमों की वास्तविकता को स्वीकार करना चाहिए जो हमारी आत्मा की गहराइयों को झकझोर देते हैं।

(1) पहला, यह परमेश्वर पिता का वह महान प्रेम है, जिसने हमारे लिए अपने इकलौते बेटे को बिना किसी हिचकिचाहट के 'भेजा और सौंप दिया'।

परमेश्वर पिता का प्रेम वह प्रेम है जिसने व्यक्तिगत रूप से अपने सबसे कीमती इकलौते बेटे, यीशु मसीह को इस साधारण और दीन दुनिया में भेजा, ताकि हमें अनंत जीवन मिल सके—हम जो आज्ञा न मानने और पाप के कारण आध्यात्मिक रूप से ठंडे और मरे हुए थे (1 यूहन्ना 4:9)। वह प्रेम केवल उन्हें भेजने तक ही सीमित नहीं रहा। यह एक अत्यंत पीड़ादायक प्रेम है जिसने न्याय के नियम के अनुसार हमारे भयानक पापों का पूरा प्रायश्चित करने के लिए, अपने निष्कलंक और पाप-रहित इकलौते बेटे को क्रूस की क्रूर और भयानक वेदी पर बलिदान के रूप में सौंप दिया (पद 10)। क्योंकि पिता ने पहले इतना महान और असीम प्रेम दिखाया, इसलिए हम—जो कभी अंधकार की संतान थे—अंततः "परमेश्वर की संतान" होने का शानदार और अद्भुत दर्जा पा सके (3:1, *Hyundai-in-ui Seong-gyeong*)।

(2) दूसरा, यह परमेश्वर पुत्र, यीशु का वह प्रेम है जिसमें उन्होंने हमारे लिए स्वर्गीय सिंहासन को छोड़ दिया, 'मानव रूप धारण किया और अपना जीवन दे दिया'।

1 यूहन्ना 3:16 के पहले भाग के माध्यम से, प्रेरित यूहन्ना हमारे दिलों में प्रेम की सच्ची परिभाषा को स्पष्ट रूप से अंकित करते हैं—जैसा कि *Hyundai-in-ui Seong-gyeong* अनुवाद में बताया गया है: "हम इस बात से जान पाए हैं कि प्रेम क्या है कि यीशु ने स्वेच्छा से हमारे लिए अपना जीवन दे दिया।" यीशु द्वारा क्रूस पर किया गया कार्य एक ऐसा रहस्य है जो मानवीय समझ से परे है। स्वभाव से, प्रभु वह "जीवन का वचन" हैं जो समय और स्थान के निर्माण से पहले ही—शुरुआत से—स्वयं अस्तित्व में थे, और वे स्वयं "अनंत जीवन" हैं, जिनमें अनंत दिव्यता है (1:1–2)। "हमारे पापों के लिए प्रायश्चित का बलिदान" बनने के लिए, परमेश्वर के सर्वशक्तिमान पुत्र ने—जो पूरी तरह से पाप-रहित थे—केवल हमारी आत्माओं के पापों को पूरी तरह मिटाने के लिए परमेश्वर पिता की उद्धार की महान योजना को पूरी तरह से स्वीकार किया (2:2, 3:5)। वे इस दुनिया में महिमा के एक भव्य राजा के रूप में नहीं, बल्कि दुनिया के एकमात्र "उद्धारकर्ता" के रूप में आए, जिनका उद्देश्य पूरी सृष्टि का उद्धार करना था; उन्होंने इतिहास के बीच जन्म लिया और एक सच्चे इंसान के कमज़ोर "शरीर" का रूप धारण किया (4:14, 2 यूहन्ना 1:7)। आखिर में, गोलगोथा की पहाड़ी पर, उन्होंने अपनी मर्ज़ी से और बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी जान दे दी; उन्होंने क्रूर क्रूस पर प्रायश्चित के बलिदान के रूप में अपने शरीर को नष्ट होने दिया। उस शापित लकड़ी पर लटककर और हमारी जगह अपना खून बहाकर, उन्होंने पवित्र परमेश्वर के न्यायपूर्ण क्रोध को पूरी तरह शांत किया—वह क्रोध जो इंसानियत के पापों के लिए सज़ा की मांग करता था (1 यूहन्ना 2:2)। इस बलिदानी प्रेम के ज़रिए—ऐसा प्रेम जो हमारी आँखों में आँसू ले आता है—हम हमेशा के न्याय और आध्यात्मिक मौत की बेड़ियों से पूरी तरह आज़ाद हो गए हैं और जीवन में प्रवेश कर चुके हैं (3:14)। इसके अलावा, उन्होंने हमें वह शानदार नया जीवन दिया है जिसका उन्होंने वादा किया था—स्वर्गीय "अनंत जीवन"—ताकि हम इसे एक तोहफ़े के तौर पर जी सकें (2:25, 5:11–13)। ऐसे लोगों के लिए जिन्हें इस अपार, उद्धार करने वाले प्रेम के ज़रिए मौत से वापस लाया गया है, यह बिल्कुल सही और ज़रूरी है—एक आध्यात्मिक ज़रूरत है—कि हम अपने स्वार्थी दिलों को क्रूस पर दफ़ना दें और

आज्ञाकारी जीवन जिएँ, और अपने भाई-बहनों से वैसे ही पूरे दिल से प्यार करें जैसा पिता ने हुक्म दिया है। (3) तीसरा, पवित्र आत्मा परमेश्वर का प्रेम न केवल हमें यीशु मसीह को सच में पहचानने के काबिल बनाता है, बल्कि हमें रोज़ सच्चाई की ओर ले जाता है और हमें परमेश्वर और अपने साथी विश्वासियों से पूरी तरह प्यार करने की शक्ति देता है।

परमेश्वर का वह अपार प्रेम जो हमें दिखाया गया है—जो पिता और पुत्र के कामों से भी आगे जाता है—पवित्र आत्मा परमेश्वर के काम के ज़रिए पूरी तरह हकीकत बन जाता है, जो हमारे दिलों में बसता है।

(a) पहला, पवित्र आत्मा "स्वीकार करने का प्रेम" देता है जो हमें यह समझने और यीशु मसीह पर विश्वास करने के काबिल बनाता है कि वह कौन हैं, और साथ ही वह हमें "जीवन देने वाला प्रेम" भी देता है जब हम आध्यात्मिक रूप से मरे हुए थे।

पवित्र आत्मा परमेश्वर ने हमें अलौकिक रूप से तब जीवित किया जब हम पाप और अपराधों से दूषित होकर आध्यात्मिक लाशों की तरह थे (1 यूहन्ना 4:9)। उन्होंने हमारी अंधी आँखों को खोला और हमारे भीतर काम किया ताकि हम यह मान सकें और स्वीकार कर सकें कि यीशु ही वह उद्धारकर्ता हैं जो सच्चे इंसानी रूप में आए (पद 2), वही मसीह हैं—हमारे अनंत राजा, महायाजक और भविष्यवक्ता (2:22)—और परमेश्वर के सच्चे पुत्र हैं जो पूरी सृष्टि पर राज करते हैं (4:2, 15)। पवित्र आत्मा की इस गहरी कृपा के बिना, हम कभी भी यीशु मसीह को प्रभु के रूप में स्वीकार नहीं कर पाते या जीवन के मार्ग पर नहीं चल पाते।

(b) दूसरा, पवित्र आत्मा "भीतर वास करने वाला प्रेम" प्रदान करते हैं जो विश्वास करने वाले के प्रभु के साथ जुड़ाव और उनके साथ चलने की गारंटी देता है।

जैसा कि *ह्युंडाई-इन-उई सोंग-ग्योंग* (समकालीन कोरियाई संस्करण) गवाही देता है, पवित्र आत्मा परमेश्वर हमें केवल बचाने तक ही सीमित नहीं रहते; वे रोज़ाना अपनी उपस्थिति का एहसास कराते हैं और भरोसा दिलाते हैं—यह पुष्टि करते हुए कि सृष्टि के रचयिता परमेश्वर वास्तव में अभी हमारे भीतर वास करते हैं (3:24)। इसके अलावा, वे हमारी आत्माओं को मज़बूती से थामे रखते हैं ताकि हम दुनिया के बदलते चलन में बह न जाएँ, बल्कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर की गोद में सुरक्षित और हमेशा के लिए बने रहें (4:13)।

(c) तीसरा, वे हमें "सत्य का प्रेम" प्रदान करते हैं, और हमें सारे सत्य की सुरक्षित गोद में ले जाते हैं।

पवित्र आत्मा परमेश्वर स्वभाव से ही "सत्य की आत्मा" हैं, जो किसी भी तरह की मिलावट या विकृति से पूरी तरह मुक्त हैं (1 यूहन्ना 4:6)। अभिषेक की कृपा के माध्यम से, पवित्र आत्मा—जो हमारे सलाहकार हैं—धोखे के इस दौर में हमें बारीकी से सिखाते हैं कि सच्चा सुसमाचार क्या है। इस प्रकार, वे हमारे कदमों का मार्गदर्शन करते हैं ताकि हम अतीत के उद्धार की केवल अधूरी बातों में ही न अटके रहें, बल्कि मसीह के साथ लगातार चलें—जो अनंत जीवन हैं—और पवित्रता का जीवन जिएँ (2:27, *समकालीन कोरियाई संस्करण*)।

(d) चौथा, पवित्र आत्मा हमारे दिलों में परमेश्वर का प्रेम भरकर "प्रेम का प्रेम" प्रदान करते हैं, जिससे हम उनकी आज्ञाओं का पालन कर पाते हैं।

क्योंकि पवित्र आत्मा परमेश्वर प्रेम की आत्मा हैं, इसलिए वे हमें निंदा और डर के दायरे में रहने के बजाय "अनंत प्रेम में बने रहकर" जीवन जीने की ओर ले जाते हैं (4:16)। जैसा कि प्रेरित पौलुस ने रोमियों की पत्री में कहा है, पवित्र आत्मा परमेश्वर के *अगापे* (निस्वार्थ) प्रेम को हमारे दिलों में एक नदी की तरह बहाता है (रोमियों 5:5)। केवल पवित्र आत्मा की अगुवाई में ही हम अपनी ज़िद और स्वार्थ को छोड़कर खुशी-खुशी प्रभु की नई आज्ञा का पालन कर सकते हैं; यह हमें उस स्थिति तक पहुँचने की शक्ति देता है जहाँ हम परमेश्वर से सबसे ज़्यादा प्रेम करते हैं (ऊपर की ओर) और अपने आस-पास के भाई-बहनों से भी उतना ही गहरा प्रेम करते हैं जितना हम खुद से करते हैं (1 यूहन्ना 4:21)। (e) अंत में, पवित्र आत्मा हमें "साहस का प्रेम" देता है जो हमारे सभी अंदरूनी डरों को दूर करता है और हमें पूरी जीत दिलाता है।

पवित्र आत्मा, जो हमारे भीतर वास करता है, लगातार यह सुनिश्चित करने के लिए काम करता है कि पिता का प्रेम—जो उनके एकलौते पुत्र के निस्वार्थ बलिदान से प्रकट हुआ है—हमारे समुदाय और हमारे रोज़मर्रा के जीवन में "सिद्ध" हो जाए। जब पवित्र आत्मा के इस काम से प्रेम सिद्ध हो जाता है, तो हममें पूरी "निडरता" आ जाती है—हम किसी भी भयानक डर या दोषी ठहराए जाने के एहसास से मुक्त हो जाते हैं—यहाँ तक

कि जब हम अंतिम 'महान श्वेत सिंहासन के न्याय' (Great White Throne Judgment) का सामना करते हैं, तब भी (वचन 17)। क्रूस पर हुए पूर्ण प्रायश्चित की पुष्टि करके, पवित्र आत्मा तुरंत शैतान के आरोपों और हमें निगलने की कोशिश करने वाले डरों को दूर कर देता है, और हमारी पूरी तरह से रक्षा करता है ताकि "प्रेम में कोई डर न रहे" (वचन 18)।

जो लोग त्रिएक परमेश्वर (Triune God) के इस अद्‌भुत प्रेम को पाते हैं और उसका आनंद लेते हैं—पिता का प्रेम जिन्होंने बिना किसी संकोच के अपने पुत्र को भेजा, पुत्र का प्रेम जिन्होंने क्रूस पर अपनी जान दी, और पवित्र आत्मा का प्रेम जो हमारे भीतर वास करता है और हमें आज्ञापालन करने में सक्षम बनाता है—उनके लिए प्रभु का नियम कभी भी भारी बोझ नहीं बन सकता। ऐसा इसलिए है क्योंकि सर्वशक्तिमान त्रिएक परमेश्वर का प्रेम हमें पहले से ही भीतर से जीत की ओर ले जा रहा है।

अब तक हमने सुसमाचार की जो पूरी कहानी देखी है, उस पर ज़रा गौर करें। पवित्र और महान त्रिएक परमेश्वर ने हमसे—यानी आपसे और मुझसे, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे—"सबसे पहले" और बिना किसी कीमत के प्रेम किया (पद 19)। परमेश्वर पिता का प्रेम, जिन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के अपने एकलौते पुत्र को भेजा और उन्हें हमारे लिए सौंप दिया; परमेश्वर पुत्र, यीशु का प्रेम, जिन्होंने स्वेच्छा से क्रूस पर अपनी जान देकर हमारे पापों का प्रायश्चित किया; और परमेश्वर पवित्र आत्मा का प्रेम, जो हमें उस प्रायश्चित की सच्चाई को समझने और स्वीकार करने में मदद करते हैं और साथ ही हमारे दिलों को स्वर्गीय *अगापे* (निस्वार्थ प्रेम) से भर देते हैं—यह सब हमारे जीवन में पूरी तरह से साकार हुआ है। परमेश्वर की संतान के तौर पर, जो इस अद्‌भुत त्रिएक प्रेम के संचार से मृत्यु से जीवन की ओर आए हैं, हम स्वाभाविक रूप से "परमेश्वर से प्रेम करने" के उस ऊँचे रिश्ते में कदम रखने के लिए प्रेरित होते हैं (5:2)। और जैसा कि प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 5:3 के पहले भाग में हमारी आत्माओं पर गहराई से और प्रभावशाली ढंग से अंकित किया है, परमेश्वर से सच्चा प्रेम कभी भी केवल भावुकता या दिखावटी, खोखले शब्दों तक सीमित नहीं रह सकता। असल में, इसका अर्थ है "अपने पूरे जीवन के साथ परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना"—वही परमेश्वर जिन्होंने हमें जीवन दिया है। एक सच्चा मसीही, जिसका पूरा अस्तित्व ही बदल चुका है, इन आज्ञाओं को कोई भारी बोझ या जबरदस्ती थोपा गया जुआ नहीं मानता। ऐसा इसलिए है

क्योंकि त्रिएक परमेश्वर का असीम प्रेम—जिन्होंने हमें बचाया—हमें हर दिन आज्ञा मानने के लिए ज़बरदस्त प्रेरणा और शक्ति देता है। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसे पवित्र संत बनें जो हर तरह की बनावटी बातों को त्याग दें, अपने दिलों को पूरी तरह से उन आज्ञाओं के प्रति समर्पित कर दें जिन्हें प्रभु ने अपने लहू से लिखा है, और अपने जीवन की वेदी पर सच्ची, प्रेमपूर्ण आज्ञाकारिता को बलिदान के रूप में अर्पित करें। हम कोरोनावायरस के कारण आए उस अभूतपूर्व वैश्विक संकट की दर्दनाक यादें संजोए हुए हैं—वह समय जब हमारी कलीसिया आराधना के लिए एक साथ नहीं मिल सकती थी और हमें ऑनलाइन सेवाओं का सहारा लेना पड़ा था। फिर भी, उस अंधेरी सुरंग से—जहाँ लगता था कि सारे रास्ते बंद हो चुके हैं—आज के दिन तक के सफर में, परमेश्वर ने हमें एक पल के लिए भी नहीं छोड़ा। दुनिया के कठोर तूफानों के बीच, उन्होंने हमारी रक्षा और हिफ़ाज़त अपनी आँख की पुतली की तरह की है; मुश्किल और बंजर हालात में भी, उन्होंने हमारे कदमों को सही दिशा दिखाई है, बचने का रास्ता दिया है और हमारी सभी ज़रूरतों को पूरा किया है। मैंने हमेशा कहा है कि मुश्किल और तकलीफ़ के इस समय में ही हमें इस नाशवान दुनिया से नज़र हटाकर सिर्फ़ 'सेनाओं के प्रभु' (LORD of Hosts) पर पूरा भरोसा करना चाहिए। मैंने आपसे ज़ोर देकर कहा है कि इस संकट को एक मौके की तरह इस्तेमाल करें ताकि प्रभु के जीवित वचन और सच्ची प्रार्थना के ज़रिए आप प्रभु के साथ और गहरा आध्यात्मिक रिश्ता बना सकें। जब मैं विश्वास की नज़र से पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो परमेश्वर के अद्भुत कामों के लिए धन्यवाद दिए बिना नहीं रह पाता: बंजर रेगिस्तान जैसे हालात में भी, प्रभु की वफ़ादार कृपा ने हमें प्रार्थना और वचन में झुकने के लिए प्रेरित किया, जिससे हम पिता के साथ प्यार का गहरा और नज़दीकी रिश्ता महसूस कर पाएँ।

पवित्र कृपा की इस नींव पर खड़े होकर, हम चर्च के शानदार आदर्श वाक्य: "आध्यात्मिक परिपक्वता का वर्ष" (The Year of Spiritual Maturity) के तहत आगे बढ़ रहे हैं। इन मुश्किल और उथल-पुथल भरे समय में, मैंने आपसे एक पक्का संकल्प लेने का आग्रह किया है—यह पक्का करने के लिए कि हमारी आत्माएँ रुक न जाएँ, बल्कि उनमें गुणात्मक विकास और आध्यात्मिक परिपक्वता आए, और हम मसीह के पूर्ण स्वरूप की ओर बढ़ते रहें। खास तौर पर, नए साल की प्रार्थना सभा के दौरान, हमने प्रेरित पौलुस द्वारा कुलुस्सियों 1:9–12 में बताए गए तीन मुख्य आध्यात्मिक पाठों को अपनी आत्मा के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में गहराई से अपनाया। पहला, हमें रोज़ाना परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ना चाहिए (कुलु. 1:10)। दूसरा, हमें अपने

दिलों और दिमागों को परमेश्वर की उत्तम इच्छा के ज्ञान से भरना चाहिए (पद 9)। तीसरा, हमें अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में प्रभु के योग्य और संतों के अनुकूल जीवन जीना चाहिए (पद 10)। पौलुस द्वारा बताए गए इस पवित्र "संतों के योग्य जीवन" का सार बिल्कुल भी अस्पष्ट नहीं है। इसका मतलब है अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में सुंदर और अच्छे फल पैदा करना जो प्रभु को प्रसन्न करें (पद 10); शैतान की कठोर परीक्षाओं और सतावटों का सामना करते हुए भी—बिना हिम्मत हारे—खुशी और सब्र के साथ हर चीज़ को सहना (पद 11); और लगातार परमेश्वर पिता का धन्यवाद और स्तुति करना, जिन्होंने हमें ज्योति की संतान बनाया है (पद 12)। 1 यूहन्ना पर हमारी मौजूदा व्याख्यात्मक सीरीज़—जो त्रिएक परमेश्वर के स्वरूप को बताती है—के नज़रिए से, मैं चाहता हूँ कि कुलुस्सियों की पत्री से मिले इन तीन महान सबकों को हमारी विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी सदस्यों के जीवन में और गहराई और बारीकी से लागू किया जाए।

पहला, हमें उस परमेश्वर को और गहराई से जानना और समझना चाहिए जो अपने स्वभाव से ही पूर्ण प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8, 16)।

दूसरा, हमें यीशु मसीह—परमेश्वर के पुत्र और उनकी पक्की इच्छा और सबसे महान आज्ञा के साक्षात रूप—में विश्वास में मज़बूती से बढ़ना चाहिए और सच्चे दिल से एक-दूसरे से गहरा प्रेम करना चाहिए (3:23)।

तीसरा, स्वर्ग के नागरिकों के योग्य पवित्र जीवन जीने के लिए, हमें अपने रोज़मर्रा के जीवन की वास्तविकताओं में अपने कामों और ईमानदारी के ज़रिए प्रेम का भरपूर फल देना चाहिए। इसके अलावा, पवित्रता की प्रक्रिया के दौरान आने वाली आध्यात्मिक लड़ाइयों और परीक्षाओं के बीच, हमें पवित्र आत्मा से मिलने वाली खुशी के साथ मज़बूती से डटे रहना चाहिए और परमेश्वर पिता के प्रति गहरे दिल से आभार प्रकट करना चाहिए, जिन्होंने हमें जीवन दिया है। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हम सब परमेश्वर के वचन की तलवार को इतना तेज़ करें कि वह इन आखिरी दिनों के हर धोखे को चकनाचूर कर दे और चर्च की एकता और आध्यात्मिक परिपक्वता के फलों को शानदार ढंग से दिखाए।

अपनी पिछली बातों में, हमने त्रिएक परमेश्वर के उस अद्भुत और उद्धार करने वाले प्रेम पर विचार किया है—ऐसा प्रेम जिसकी घोषणा प्रेरित यूहन्ना और पौलुस ने लगातार की है।

(1) सबसे पहले, यह परमेश्वर पिता का वह महान प्रेम है, जिसने हमें बचाने के लिए अपने इकलौते पुत्र को बिना किसी हिचकिचाहट के 'भेजा और सौंप दिया'।

परमेश्वर पिता का प्रेम वह प्रेम है जिसने व्यक्तिगत रूप से अपने सबसे कीमती और इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को इस साधारण और दीन दुनिया में भेजा, ताकि हमें अनंत जीवन मिल सके—हम जो आज्ञा न मानने और पाप के कारण आत्मिक रूप से मरे हुए और ठंडे पड़ चुके थे (1 यूहन्ना 4:9–10)। वह प्रेम केवल उन्हें भेजने तक ही सीमित नहीं रहा। यह एक अत्यंत पीड़ादायक प्रेम था जिसने न्याय के नियम के अनुसार हमारे भयानक पापों का पूरा प्रायश्चित करने के लिए, अपने निष्कलंक और पाप-रहित इकलौते पुत्र को क्रूस की क्रूर और भयानक वेदी पर बलिदान के रूप में सौंप दिया। मूल रूप से, हम परमेश्वर के साथ पूरी तरह दुश्मनी की स्थिति में थे, उनके शासन का विरोध कर रहे थे और उनके क्रोध के न्याय के अधीन थे (रोमियों 5:10)। फिर भी, क्योंकि पिता ने सबसे पहले हम पर इतना महान और असीम प्रेम दिखाया, इसलिए हम—जो कभी अंधकार की संतान थे—अंततः "परमेश्वर की संतान" का शानदार और तेजस्वी दर्जा पाने में सफल हुए (1 यूहन्ना 3:1)।

(2) दूसरा, यह परमेश्वर पुत्र यीशु का प्रायश्चित करने वाला प्रेम है, जिन्होंने पिता की इच्छा का पूरी तरह पालन किया, 'देह धारण किया और स्वेच्छा से अपना जीवन दे दिया।'

परमेश्वर पुत्र यीशु का प्रेम एक दिव्य 'अवतार का प्रेम' है—एक ऐसा प्रेम जो मुझे बचाने की परमेश्वर पिता की उद्धार की योजना के प्रति पूरी तरह समर्पित रहा; उन्होंने कमजोर मानव शरीर धारण किया और इतिहास के बीचों-बीच आए (2:2; 2 यूहन्ना 1:7)। जब प्रभु इस दुनिया में आए, तो वे महिमा के किसी भव्य राजा के रूप में नहीं, बल्कि दुनिया के एकमात्र उद्धारकर्ता के रूप में आए, ताकि पूरी मानवता का उद्धार कर सकें। और अंत में, गोलगोथा की पहाड़ी पर, उन्होंने स्वेच्छा से और बिना किसी हिचकिचाहट के अपना जीवन दे दिया, और ऊबड़-खाबड़ क्रूस पर प्रायश्चित के बलिदान के रूप में अपने ही शरीर को अर्पित कर दिया (1 यूहन्ना 3:16)। श्रापित पेड़ पर लटककर और हमारी जगह अपना लहू बहाकर, उन्होंने पवित्र परमेश्वर के उस न्यायिक क्रोध को पूरी तरह शांत और संतुष्ट किया—वह क्रोध जो मानवता के पापों के लिए न्याय की मांग

करता था (2:2)। उस दिल को छू लेने वाले प्यार के ज़रिए, जिसने खुशी-खुशी अपनी जान दे दी, उन्होंने हमें हमेशा की सज़ा और आध्यात्मिक मौत की बेड़ियों से पूरी तरह आज़ाद किया। उन्होंने हमें मुक्ति का तोहफ़ा दिया—स्वर्ग का "हमेशा का जीवन"—जिसका वादा खुद यीशु मसीह ने किया था (2:25; 5:11–13)।

(3) तीसरा है "पवित्र आत्मा परमेश्वर का प्यार," जो हमारी आत्माओं में जान डालता है और हमें सच्चाई की राह दिखाता है।

पवित्र आत्मा परमेश्वर का प्यार एक अद्‌भुत काम है जिसने हमें अलौकिक रूप से फिर से ज़िंदा किया—हमारा नया जन्म (पुनर्जन्म) कराया—जब हम पाप और अपराध की गंदगी के कारण आध्यात्मिक रूप से मरे हुए, यानी लाशों की तरह थे (4:9)। पवित्र आत्मा ने हमारे बुरे स्वभाव को हटा दिया और हमें मसीह में पूरी तरह से नई रचना और नए इंसान के तौर पर फिर से बनाया। इसके अलावा, यह बदलाव लाने वाला पवित्र प्यार है जिसने हमारी अज्ञानता भरी आँखें खोलीं और हमें यह मानने और स्वीकार करने के काबिल बनाया कि यीशु ही वह उद्धारकर्ता हैं जो असली इंसानी रूप में आए (2:22) और परमेश्वर के सच्चे पुत्र हैं जो पूरी दुनिया पर राज करते हैं (4:2, 15)। यहीं वह बड़ा राज़ छिपा है कि हम इस सबसे बड़े हुक्म को खुशी-खुशी मानने के लिए क्यों मजबूर हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि पवित्र आत्मा—खुद परमेश्वर, "सच्चाई की आत्मा" जो पूरी तरह से हर तरह की मिलावट या खराबी से पाक है (v. 6)—हमारे दिलों में बसते हैं; वे हमें सही समय पर त्रिएक परमेश्वर (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा) के विशाल और दिल को छू लेने वाले प्यार के बारे में सिखाते हैं, और हमें उसे अपनी आत्मा की गहराई से समझने के काबिल बनाते हैं। ऐसे लोगों के तौर पर जो इस त्रिएक परमेश्वर के प्यार के साथ जीते हैं—जिसे पवित्र आत्मा ने हमारे अंदर भरा है—हम अपने स्वार्थी दिलों और ज़ख्मों को क्रूस पर दफ़ना देंगे। हम सच्चे प्यार के विजेताओं के तौर पर उठेंगे, और एक-दूसरे से खुद की तरह ज़ोरदार प्यार करेंगे, जैसा कि प्रभु ने अपने ही खून से लिखे उस महान हुक्म में कहा है।

1 यूहन्ना 5:3 के दूसरे हिस्से में, प्रेरित यूहन्ना हमारी आत्माओं के लिए आज़ादी का एक ज़बरदस्त ऐलान करते हैं—ऐसी आत्माएँ जो नियमों के बोझ और बे-असर भावना के नीचे दबी कराह रही थीं: "...उनके हुक्म बोझिल

नहीं हैं।" *ह्युंडई-इन-उई सोंग-ग्योंग* (समकालीन कोरियाई संस्करण) इस रहस्य को यह कहते हुए बताता है कि "उनकी आज्ञाएँ बोझ नहीं हैं।" इस सच्चाई का क्या आध्यात्मिक महत्व है कि यह सर्वोच्च आज्ञा—प्रभु के नियम का पालन करना और अपने साथी विश्वासियों से पूरे जीवन प्रेम करना—हमारे लिए न तो भारी है और न ही बोझिल?

जब मैंने इस गहरी सच्चाई की व्याख्या की और उस पर मनन किया, तो मत्ती 11:28–30 में प्रभु के शानदार निमंत्रण ने—एक ऐसा अंश जिसे हम बहुत अच्छी तरह जानते हैं—मेरे दिल को गहराई से छू लिया: "हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो और मुझसे सीखो, क्योंकि मैं नम्र और दीन मन का हूँ, और तुम अपनी आत्माओं के लिए विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज है और मेरा बोझ हल्का है।" जब मैंने इन शब्दों पर विचार किया, तो मुझे एक साधारण पोस्ट याद आई जिसका शीर्षक था "वह आध्यात्मिकता जिसे मैं अपनाना चाहता हूँ," जिसे मैंने 19 जुलाई, 2009 को—अपनी सेवकाई के शुरुआती दिनों में—अपने पादरी ब्लॉग पर लिखा था। हैरानी की बात है कि सालों पहले उस युवा पादरी की उस स्वीकारोक्ति में आज के पाठ, 1 यूहन्ना 5:3 में छिपे रहस्य को खोलने की एक अनमोल आध्यात्मिक कुंजी थी: कि "उनकी आज्ञाएँ बोझिल नहीं हैं।" मैं उन विचारों के सार को आपके साथ साझा करना चाहूँगा, भले ही मुझे थोड़ा संकोच महसूस हो।

प्रभु स्पष्ट रूप से वादा करते हैं कि वे दुनिया के तूफानों से थके हुए लोगों को—जो मेहनत करते हैं और भारी बोझ से दबे हैं—अपनी गोद में बुलाएँगे और उन्हें सच्चा स्वर्गीय विश्राम देंगे। वे हमें बताते हैं कि हमारी आत्माओं के लिए अनंत विश्राम का एकमात्र रास्ता भागना नहीं है, बल्कि उस मिशन का जूआ उठाना है जो वे हम पर रखते हैं और उनके चरित्र से सीखना है। मेरा मानना है कि कोई व्यक्ति तभी सचमुच सच्ची आध्यात्मिकता का दावा कर सकता है जब वह उस आध्यात्मिक अवस्था तक पहुँच जाए जहाँ, जूआ पहने हुए भी, वह आत्मा की गहराई में स्वर्गीय शांति और विश्राम का आनंद ले सके। जूए के भारी बोझ तले संघर्ष करने और लड़खड़ाने की अवस्था विश्वास की सच्ची शक्ति को नहीं दर्शाती; क्योंकि प्रभु ने स्पष्ट रूप से घोषित किया था कि उनका जूआ सहज है और उनका बोझ हल्का है (मत्ती 11:30)। फिर भी, जिस क्रूस को हमें उठाना है, उसका वास्तविक वजन किसी भी तरह से हल्का नहीं है। हालाँकि, एक सच्चा ईसाई—जिसके

पास सुसमाचार की असली आध्यात्मिक शक्ति है—वह है जो एक ऐसी आध्यात्मिक अवस्था का अनुभव करता है जहाँ वह भारी, खुरदरा क्रूस भी हल्का और कोमल महसूस होता है; ऐसा इसलिए है क्योंकि क्रूस को प्रभु के प्रति गहरे प्रेम और उस कृपा के प्रति कृतज्ञता की भावना से उठाया जाता है जिसने हमें जीवन दिया। मैं अपने पूरे जीवन और सेवा-कार्य में इसी तरह की आध्यात्मिकता को अपनाना चाहता हूँ। मैं एक ऐसी अद्भुत आध्यात्मिकता की चाह रखता हूँ जहाँ, चरवाहे के रूप में देखभाल का भारी बोझ उठाते हुए भी, यह मिशन आसान और हल्का लगे, सिर्फ़ इसलिए कि प्रभु के प्रति मेरा गहरा प्रेम है। मैं एक ऐसी शानदार आध्यात्मिकता चाहता हूँ जो सेवा-कार्य के उतार-चढ़ाव के बीच चिंता में न डगमगाए, बल्कि विरोधियों के बीच भी प्रभु द्वारा दिए गए पूर्ण विश्राम का आनंद ले (मत्ती 11:28–29)। भले ही क्रूस के रास्ते में दर्द और पीड़ा हो, लेकिन ऐसी आध्यात्मिकता में एक बहुत ही आकर्षक सुंदरता है जो ऐसी कठिनाइयों के बीच प्रभु में सच्चा विश्राम पाती है—एक ऐसी आध्यात्मिकता जो इन परीक्षाओं के माध्यम से यीशु मसीह के पवित्र स्वभाव—उनकी कोमलता और विनम्रता (पद 29)—को और अधिक अपनाती है। जो हृदय प्रभु से इस तरह प्रेम करता है, उससे बहने वाली आध्यात्मिक शक्ति ही सुसमाचार की वह सच्ची शक्ति है जो दुनिया को बदल देती है। मेरी प्रार्थना है कि मैं एक वफादार चरवाहे के रूप में अपनी दौड़ पूरी करूँ, जो इस शक्तिशाली आध्यात्मिक शक्ति से लैस होकर, अंधकार में फंसी दुनिया को यीशु मसीह के सुसमाचार का निडरता और बिना किसी हिचकिचाहट के प्रचार करे।

प्रिय संतों, 1 यूहन्ना 5:3 में कही गई बात का असली अर्थ यही है: "उसकी आज्ञाएँ बोझिल नहीं हैं।" यदि मैं केवल अपनी ताकत और कर्तव्य की भावना के आधार पर अपने भाइयों और बहनों से प्रेम करने की कोशिश करूँ, तो वह आज्ञा निंदा के एक भारी बोझ के अलावा और कुछ नहीं रह जाती—दुनिया का सबसे भारी बोझ। हालाँकि, जब हम पवित्र आत्मा की शिक्षा के माध्यम से उस अपार, त्रिएक, उद्धार करने वाले प्रेम (4:19) को गहराई से महसूस करते और समझते हैं—जो परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा ने हम अयोग्य लोगों को बचाने के लिए दिया—तो हमारे हृदय पिता के प्रति गहरे प्रेम से भर जाते हैं। प्रभु के प्रति पूरे मन से प्रेम के कारण जो बोझ हम उठाते हैं, वह अब बोझ नहीं, बल्कि एक महिमा बन जाता है। जब हम प्रेम करते हैं, तो उसकी आज्ञाएँ आनंददायक बन जाती हैं। जब हम प्रेम करते हैं, तो अपने साथी विश्वासियों को गले लगाने का प्रयास खुशी बन जाता है। प्यार से मिलने वाली इस ईश्वरीय शक्ति से मज़बूत होकर, हम

सब—आप और मैं—प्रभु के नियमों को पूरी तरह से मानें और हर दिन विश्वास की बड़ी जीत का ऐलान करें; मैं प्रभु के नाम से यही प्रार्थना करता हूँ।

प्यारे संतों, परमेश्वर के पवित्र नियम कोई ऐसा भारी बोझ नहीं हैं जो हमें पाप की सज़ा के बंधन में जकड़ते हों। हम खुशी-खुशी परमेश्वर के नियमों का पालन इसलिए करते हैं क्योंकि हम पर कोई ज़बरदस्ती का दबाव या धार्मिक डर नहीं होता। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर का असीम उद्धार करने वाला प्यार और अपार अनुग्रह—जो स्वयं प्रेम-स्वरूप परमेश्वर ने *सबसे पहले* हम अयोग्य लोगों पर बरसाया—हमारे भीतर एक नदी की तरह बह रहा है। पिता के लिए वह ज्वलंत प्रेम ही वह असली प्रेरणा है जो हमें आगे बढ़ाती है।

यहाँ, हमें सुसमाचार के सबसे गहरे और दिल को छू लेने वाले रहस्य पर रुककर सोचना चाहिए: "और मनुष्य के रूप में पाए जाने पर, उन्होंने खुद को दीन किया और मृत्यु तक, यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी बने रहे" (फिलिप्पियों 2:8)। परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह, अकेले ही पूरी मानवता के पापों का भयानक बोझ कैसे उठा पाए और परमेश्वर पिता के प्रति पूरी तरह आज्ञाकारी बने रहे—यहाँ तक कि मृत्यु तक? आदम से चली आ रही पूरी मानव जाति के मूल पाप से लेकर हमारे अतीत के पापों, इस पल किए जा रहे पापों और भविष्य में किए जाने वाले पापों तक—प्रभु ने, पूरे ब्रह्मांड के भयानक अधर्मों की नर्क जैसी सज़ा को अपने कंधों पर उठाते हुए, श्राप के उस अकल्पनीय बोझ को कैसे सहा और क्रूस की वेदी पर कैसे चढ़े? उस दिल को छू लेने वाली आज्ञाकारिता के पीछे का एकमात्र रहस्य बस यह है: हमारे प्रभु परमेश्वर पिता से असीम प्रेम करते थे, और साथ ही, वे आपसे और मुझसे भी—जो अपने अपराधों के कारण मृत्यु के योग्य थे—अपने पूरे जीवन से प्रेम करते थे (1 यूहन्ना 3:16)। क्योंकि उन्होंने जो बोझ उठाया था, वह प्रभु के प्रति प्रेम के कारण उठाया गया था, इसलिए वे चुपचाप उस कठोर क्रूस को उठा पाए। जब हम प्रायश्चित की इस यात्रा पर विचार करते हैं, तो इब्रानियों 12:2 की शानदार घोषणा हमारी आत्मा को गहराई से झकझोर देती है: "यीशु की ओर देखते हुए, जो हमारे विश्वास का कर्ता और सिद्ध करने वाला है, जिसने उस आनंद के लिए जो उसके सामने था, क्रूस का दुख सहा, अपमान की परवाह नहीं की, और परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने ओर बैठ गया है।" "आइए हम अपनी नज़रें यीशु पर टिकाएँ, जो हमारे विश्वास का स्रोत और उसे सिद्ध करने वाला है। अपने सामने रखे आनंद के लिए, उन्होंने क्रूस के अपमान और पीड़ा को सहा और अब परमेश्वर के सिंहासन के

दाहिने ओर बैठे हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। स्वर्ग के उस अनंत आनंद की ओर देखते हुए जिसे वे अपने छुड़ाए हुए लोगों के साथ साझा करने वाले थे, हमारे प्रभु ने स्वेच्छा से पूरी दुनिया के पापों को उठाने के अपमान और बदनामी को सहा, साथ ही क्रूस की उस भयानक पीड़ा को भी सहा जिसने उनके शरीर को चीर दिया था। पिता और हमारे प्रति उनके प्रेम ने ही उन्हें मृत्यु तक आज्ञाकारी बने रहने के लिए प्रेरित किया। इसलिए, परमेश्वर की नई जन्म पाई हुई संतान के रूप में, हमें भी पूरी तरह से यीशु मसीह के पदचिह्नों पर चलना चाहिए। हमें बचाने वाले प्रभु के अद्भुत प्रेम से प्रेरित होकर, हमें खुशी-खुशी अपना दिल उन पवित्र आज्ञाओं के पालन में समर्पित करना चाहिए जो परमेश्वर ने हमें सौंपी हैं। प्रेम का वह नियम जिसका पालन करने का आदेश उन्होंने हमें दिया है, वह किसी भी तरह से कोई भारी बोझ नहीं है। मैं प्रभु के नाम से पूरी गंभीरता से प्रार्थना करता हूँ कि आप उस राजा की महान आज्ञा को मानें जिसने अपने लहू से आपको खरीदा है, पाखंड के सभी मुखौटे उतार फेंकें, और परमेश्वर की सच्ची संतान के रूप में खड़े हों जो जोश के साथ "एक-दूसरे से प्रेम करते हैं"—यानी अपने आस-पास के भाइयों और बहनों से सच्चे कामों और ईमानदारी के साथ प्रेम करते हैं।

कुछ समय पहले, मुझे अपने सेमिनरी के एलुमनाई ग्रुप चैट में एक सीनियर पादरी द्वारा साझा किया गया एक संदेश मिला—जो बहुत मार्मिक और गंभीर था। यह एक साथी पादरी के अंतिम संस्कार की खबर थी, जिन्हें कोरोना वायरस के कारण 53 साल की दुखद कम उम्र में प्रभु ने अचानक अपने पास बुला लिया था। एक सीनियर पादरी ने शोक संतप्त विधवा और उनके दो बेटों के साथ "वेल डन" (Well Done) गाना साझा किया—जो ईसाई समूह 'द आफ्टर्स' (The Afters) का एक इंग्लिश गॉस्पेल गीत है—ताकि उन्हें सांत्वना और सहारा मिल सके। उस गाने ने शोकग्रस्त परिवार के टूटे हुए दिलों में एक अवर्णनीय, अपार स्वर्गीय शांति भर दी। इसके पीछे एक बहुत ही मार्मिक कारण था: अंतिम संस्कार के दौरान, दूसरे बेटे ने एक श्रद्धांजलि संदेश पढ़ा जिसमें उसने अपना विश्वास व्यक्त किया कि, भले ही वे धरती पर अलग हो रहे थे, लेकिन उसके पिता—जो अब स्वर्ग में प्रवेश कर रहे थे—का स्वागत प्रभु ने खुली बाहों और इन शब्दों के साथ किया: "बहुत बढ़िया, मेरे वफादार सेवक।" स्वर्ग के प्रति बेटे की उज्ज्वल आशा उस गाने के बोलों से पूरी तरह मेल खाती थी।

जब मैंने वह मार्मिक वृत्तांत पढ़ा, तो स्वर्गीय पादरी हेंड्रिकसन की "अंतिम संस्कार विजय सेवा" (Funeral Victory Service)—जिसमें मैं कुछ समय पहले शामिल हुआ था—की एक स्पष्ट याद मेरे मन में कौंध गई, जो ठीक उसी दृश्य जैसी थी जिसके बारे में मैंने अभी-अभी पढ़ा था। उस सेवा में, स्वर्गीय पादरी के बेटों में से एक ने श्रद्धांजलि संदेश दिया (हालात के कारण उनकी भाभी ने उनकी ओर से इसे पढ़ा), और विश्वास की वही बात पूरे कमरे में गूंज उठी। यह एक पक्का ऐलान था कि उनके पिता—जिन्होंने अपना जीवन आँसुओं और वफादारी के साथ सुसमाचार का प्रचार करते हुए बिताया था—निश्चित रूप से प्रभु के शानदार सिंहासन के सामने खड़े होने पर यह शानदार प्रशंसा सुनेंगे: "बहुत बढ़िया, मेरे वफादार सेवक।" उस गंभीर प्रार्थना-सभा के बाद, मैंने अपनी ज़िंदगी में पहली बार दिल को छू लेने वाला गॉस्पेल गीत "वेल डन" (बहुत अच्छा किया) सुना। एक पादरी के तौर पर, जो क्रूस के निशानों को लिए हुए सेवा का रास्ता चुपचाप तय कर रहा है, उस भजन को सुनकर मैं बहुत भावुक हो गया—मेरा दिल भावनाओं से भर गया और आँखों से आँसू बहने लगे। इसके बोल दुनियावी शोहरत या आराम की नहीं, बल्कि आखिरी दिन प्रभु के सामने खड़े होने पर उनसे मिलने वाली तारीफ़ के उस एक शब्द की चाहत ज़ाहिर करते हैं; यही भावना मेरी ज़िंदगी की सबसे सच्ची प्रार्थना बन गई है। इसलिए, मैंने इस गॉस्पेल गीत के बोलों का—जिनमें स्वर्ग की इतनी शानदार उम्मीद छिपी है—बहुत ध्यान से कोरियाई भाषा में अनुवाद किया है, और हर शब्द पर गहराई से सोच-विचार किया है, ताकि मैं इस गहरी भावना को अपनी विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च की मंडली के साथ साझा कर सकूँ। वेल डन (बहुत अच्छा किया)

कैसा होगा वह पल जब मेरा सारा दर्द बर्फ़ की तरह पिघल जाएगा?
कैसा होगा वह पल जब इस दुनिया की सारी चिंताएँ और परेशानियाँ धुएँ की तरह उड़ जाएँगी?
प्यारे प्रभु, सच में कैसा होगा वह पल—
जब आप खुद मेरा नाम पुकारेंगे, और मैं आखिरकार आपके चेहरे को देख पाऊँगा?
मैंने आपकी उस आवाज़ को सुनने के लिए अपनी पूरी ज़िंदगी इंतज़ार किया है;
मैं पूरे दिल से आपके बोलने का इंतज़ार करता हूँ:
"बहुत अच्छा किया, सच में बहुत अच्छा किया, मेरे अच्छे और वफ़ादार सेवक।

इस जगह पर आपका स्वागत है जो हमेशा के लिए आपकी है—पिता का घर।

बहुत अच्छा किया, सच में बहुत अच्छा किया, मेरे प्यारे बच्चे।
आपने आखिरकार दौड़ पूरी कर ली है और घर पहुँच गए हैं;
पूरी तरह सुरक्षित इस जगह पर आपका स्वागत है जो आपकी अपनी जगह है।"

कैसा होगा वह पल जब मेरी आँखों से बहे हर आँसू को पोंछ दिया जाएगा?
कैसा होगा वह पल जब मेरी ज़िंदगी का हर टूटा-फूटा, ज़ख्मी हिस्सा आखिरकार ठीक हो जाएगा?
इतने सुंदर, तेजस्वी प्रेम के सामने खड़े होकर,
और आपकी कभी न फीकी पड़ने वाली महिमा में प्रवेश करके—मेरी आत्मा का क्या हाल होगा?

मैं उस शानदार दिन की उम्मीद में जी रहा हूँ; मैं आज का दिन इस विश्वास के साथ बिताता हूँ कि आप मुझसे ये शब्द कहेंगे:

"बहुत बढ़िया, सच में बहुत बढ़िया, मेरे अच्छे और वफ़ादार सेवक।

इस जगह पर आपका स्वागत है जहाँ आप हमेशा के लिए रहेंगे—पिता का घर।

बहुत बढ़िया, सच में बहुत बढ़िया, मेरे प्यारे बच्चे।
आखिरकार आपने दौड़ पूरी कर ली है और घर पहुँच गए हैं;
पूरी तरह सुरक्षित इस जगह पर आपका स्वागत है, जो आपकी अपनी जगह है।"

कैसा लगेगा जब मेरे कान आखिरकार उस स्वर्गीय आवाज़ को खुद सुनेंगे?
वह शानदार घोषणा, जिसे स्वर्ग के अनगिनत स्वर्गदूत एक साथ मिलकर करेंगे:
"हम गाएँगे: पवित्र, पवित्र..." आप पवित्र हैं,

सेनाओं के प्रभु; आप हमारे अनंत प्रभु हैं।
पवित्र, पवित्र, पवित्र हैं आप; केवल आप ही प्रभु हैं।
मैं अपनी पूरी ज़िंदगी उस शानदार जीत के दिन के इंतज़ार में लगा देता हूँ।
जब तक मैं प्रभु की गोद में आराम न कर लूँ और उनकी आवाज़ न सुन लूँ, तब तक मैं सिर्फ़ सच्चाई के लिए जीऊँगा।

"बहुत बढ़िया, सच में बहुत बढ़िया, मेरे अच्छे और वफ़ादार सेवक।

पिता के घर में आपका स्वागत है—वह जगह जहाँ आप हमेशा के लिए रहेंगे।

बहुत बढ़िया, सच में बहुत बढ़िया, मेरे प्यारे बच्चे।
आखिरकार आपने दौड़ पूरी कर ली है और घर पहुँच गए हैं।
पूरी तरह सुरक्षित इस जगह पर आपका स्वागत है, जो आपकी अपनी जगह है।
सच में बहुत बढ़िया, मेरे प्यारे बच्चे।"

प्यारे संतों, जैसा कि 'द आफ्टरस' (The Afters) के गाने में कहा गया है, हमारी अनंत यात्रा और इस धरती पर आध्यात्मिक लड़ाइयाँ पूरी होने के बाद, हमारे अनंत घर में हमारा इंतज़ार कर रही सबसे बड़ी महिमा और कुछ नहीं, बल्कि उस प्रभु का लहू से सना दाहिना हाथ और उनकी स्नेहपूर्ण आवाज़ है जिन्होंने हमें बचाया। उस दिन बिना किसी शर्म के राजा का स्वागत पाने के लिए, हमें आज ही अपने स्वार्थी दिलों और ज़िद को क्रूस पर पूरी तरह से मिटा देना चाहिए। हमें परमेश्वर पिता के उस प्रेम से शक्ति लेनी चाहिए जिन्होंने हमारे लिए अपने इकलौते पुत्र को बिना किसी संकोच के दे दिया; परमेश्वर पुत्र के क्रूस पर किए गए प्रायश्चित के काम से, जो देहधारण करके आए और अपनी जान दे दी; और परमेश्वर पवित्र आत्मा की उस महान शक्ति से, जो हमारे दिलों में उस असीम *अगापे* (ईश्वरीय) प्रेम को नदी की तरह बहाते हैं। क्योंकि सर्वशक्तिमान त्रिएक परमेश्वर द्वारा दी गई शक्ति पहले से ही हमारे भीतर मौजूद है और काम कर रही है, इसलिए प्रभु द्वारा हमें दिया गया नया आदेश कभी भी ऐसा भारी या बोझिल जुआ नहीं बन सकता जो हमें पाप की सज़ा से बांधे रखे। जब हम प्रेम करते हैं, तो वह बोझ हल्का हो जाता है। जब हम प्रेम करते हैं, तो अपने साथी विश्वासियों को अपनाने की हर कोशिश और भक्ति का हर काम एक बहुत ही भावपूर्ण सौभाग्य और सबसे बड़ी खुशी बन जाता है।

मेरी प्रार्थना है कि हमारे 'विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च' परिवार के सभी सदस्य खोखले शब्दों के पाखंड को हिम्मत के साथ त्याग दें और सचमुच नए सिरे से जन्मे बच्चों जैसा जीवन जिएं—अपने आस-पास के भाई-बहनों से बिना किसी शर्त के प्रेम करें, न केवल बातों और ज़बान से, बल्कि कामों और सच्चाई से। आइए हम अपने दिलों में कोई भी रुकावट या आध्यात्मिक जाल न रहने दें, और स्वर्ग के नागरिकों का साहस और भरोसा रखें, ताकि न्याय के आने वाले दिन के सामने भी मज़बूती से खड़े रह सकें। मैं प्रभु यीशु मसीह—जो

अनंत जीवन का वचन हैं—के नाम से पूरी गंभीरता से प्रार्थना करता हूँ कि हम सब उस महिमामयी प्रशंसा के भागीदार बनें, उस सुबह जब प्रभु के महान आदेश का पूरी तरह पालन करने और पूरे जीवन एक-दूसरे से प्रेम करने के बाद, हम आखिरकार उनके दर्शन करेंगे: "बहुत बढ़िया, सचमुच बहुत बढ़िया, मेरे अच्छे और वफ़ादार सेवक। तुमने दौड़ पूरी कर ली है और घर पहुँच गए हो; अब, पिता द्वारा तैयार किए गए राज्य के आनंद में प्रवेश करो।"

हाल ही में, एक ईसाई अख़बार की वेबसाइट देखते समय, मुझे *1 यूहन्ना* (1 John) पर हाल ही में प्रकाशित एक व्याख्यात्मक पुस्तक की समीक्षा और परिचय ने बहुत आकर्षित किया। उस खास किताब ने मेरा ध्यान इतनी गहराई से क्यों खींचा, इसका कारण साफ़ है: मैं भी—एक अयोग्य सेवक—हर रविवार परमेश्वर के हृदय को जानने की कोशिश करता रहा हूँ, अपनी कलीसिया के साथ मिलकर *1 यूहन्ना* की गहरी बातों पर मनन करता रहा हूँ और मंच से उसका संदेश सुनाता रहा हूँ। उस किताब के लेखक ने *1 यूहन्ना* के मुख्य ढांचे को तीन बहुआयामी शब्दों—"प्रेम," "सत्य," और "सहभागिता"—के ज़रिए साफ़ और सरल तरीके से समझाया। हालाँकि, *1 यूहन्ना* की हर आयत की अपनी लंबी और गहरी व्याख्या और विश्लेषण के ज़रिए, मेरा यह मानना रहा है कि प्रेरित यूहन्ना ने—एक पक्का आध्यात्मिक रुख अपनाने की कोशिश में—चार बड़े धार्मिक विषयों के बीच तीखा अंतर दिखाया है। धर्मग्रंथों में दिखाए गए ये चार खास अंतर इस प्रकार हैं:

पहला, पवित्र "ज्योति" और भयानक "अंधकार" के बीच का अंतर (1 यूहन्ना 1:5)।
दूसरा, अनंत "सत्य" और विनाशकारी "झूठ" के बीच का अंतर (आयत 6)। तीसरा, यह पूर्ण "प्रेम" और शैतानी "घृणा" के बीच का अंतर है (2:9)।
चौथा, यह प्रभु की "धार्मिकता" और दुनिया की "बुराई" (या अधार्मिकता) के बीच का अंतर है (3:12)।

इस मोड़ पर, मेरे मन में एक पवित्र पादरी-सुलभ चिंता और एक धार्मिक चुनौती पैदा हुई। मैंने खुद से पूछा: "उस पादरी द्वारा पहचाने गए तीन मुख्य विषयों और पवित्र आत्मा द्वारा मुझे दिखाए गए और जिन पर मैं मजबूती से टिका रहा, उन चार विपरीत दृष्टिकोणों को मैं कैसे देखूँ और आपस में कैसे जोड़ूँ?" ये दोनों दृष्टिकोण किसी भी तरह से एक-दूसरे के विरोधी या अलग-अलग नहीं हैं। इस सवाल को आधार बनाकर—

मंच पर और प्रार्थना की एकांत जगह में—मैंने परमेश्वर के वचन के अथाह सागर को बहुत ध्यान से दोबारा पढ़ा और प्रार्थना के ज़रिए गहराई में उतरा। ऐसा करते हुए, मैं सुसमाचार के एक शानदार निष्कर्ष पर पहुँचा: ये दोनों महान दृष्टिकोण त्रिएक परमेश्वर के स्वरूप में एक साथ खूबसूरती से मिल जाते हैं।

जब मैंने उन तीन स्तंभों पर धार्मिक दृष्टि से विचार किया जिन्हें उस पादरी ने *1 यूहन्ना* का मुख्य ढांचा बताया था, तो मैं पवित्र आदर के साथ घुटने टेकने पर मजबूर हो गया। ऐसा इसलिए था क्योंकि वे तीन शब्द उस त्रिएक परमेश्वर के अस्तित्व और कार्यों के सार को पूरी तरह से समेटे हुए थे जिसे हम मानते हैं। जब इन्हें 'ट्रिनिटी' (ईश्वर के तीन स्वरूपों) के नज़रिए से साफ़ तौर पर व्यवस्थित किया जाता है, तो वे इस प्रकार हैं:

(1) परमेश्वर पिता, अपने स्वभाव से ही, "प्रेम" हैं। 1 यूहन्ना 4:8 और 16 के माध्यम से, प्रेरित यूहन्ना हमारे दिलों में ईसाई धर्म की सबसे शानदार और मौलिक सच्चाई को गहराई से उतारते हैं: "जो प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है... और इसलिए हम उस प्रेम को जानते हैं और उस पर भरोसा करते हैं जो परमेश्वर हमसे करता है। परमेश्वर प्रेम है। जो प्रेम में रहता है, वह परमेश्वर में रहता है, और परमेश्वर उसमें रहते हैं।"

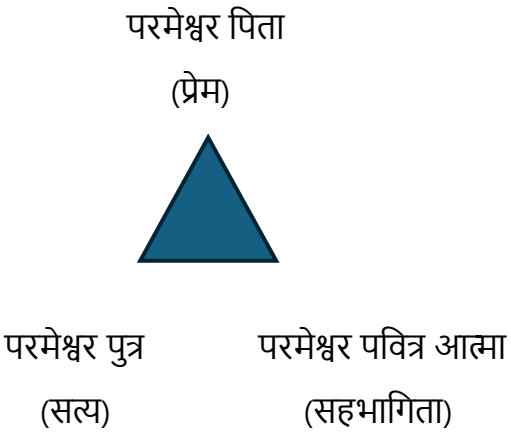
(2) यीशु मसीह, जो पुत्र हैं, अनंत जीवन का "सत्य" हैं।

यूहन्ना 14:6 में, यीशु—परमेश्वर के पुत्र—ने मानवता के लिए उस एकमात्र स्वर्गीय मार्ग की घोषणा की, जो पाप के कारण पिता से दूर हो गई थी: "यीशु ने उत्तर दिया, 'मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ। मेरे बिना कोई भी पिता के पास नहीं आता।'"

(3) परमेश्वर पवित्र आत्मा उस पुल का काम करते हैं जो हमें प्रेम के पिता और सत्य के पुत्र के साथ पूर्ण "सहभागिता" का आनंद लेने में सक्षम बनाता है।

पवित्र आत्मा ही वह हैं जो प्रेम के पिता और सत्य के पुत्र द्वारा किए गए प्रायश्चित की कृपा को हमारी आत्माओं पर व्यावहारिक रूप से लागू करते हैं, जिससे हमें पवित्र संगति का अनुभव होता है। 1 यूहन्ना 1:3 में की गई घोषणा पर विचार करें: "हम तुम्हें वह बताते हैं जो हमने देखा और सुना है, ताकि तुम भी हमारे साथ सहभागिता कर सको। और हमारी सहभागिता पिता और उनके पुत्र, यीशु मसीह के साथ है।"

अपने निजी प्रार्थना कक्ष की शांति में इस शानदार 'ट्रिनिटी' रहस्य—जहाँ वचन (Word) के पहेली के टुकड़े पूरी सटीकता के साथ एक-दूसरे से जुड़ते हैं—को देखने के बाद, मैंने गहरे भावनाओं से भरकर अपनी पादरी की नोटबुक में एक पवित्र आध्यात्मिक आरेख (डायग्राम) बनाना शुरू किया।



मुझे पूरा यकीन है कि हमें 1 यूहन्ना (1:1 से 5:21 तक) की पूरी किताब को तीन मुख्य विषयों—"प्रेम," "सत्य," और "सहभागिता"—के पवित्र नज़रिए से कई पहलुओं में समझना चाहिए। व्यवस्थित धर्मशास्त्र की भाषा में कहें तो, हमें प्रेरित यूहन्ना की चिट्ठी को "त्रिएक परमेश्वर के नज़रिए" से अच्छी तरह पढ़ना और समझना चाहिए। (ध्यान दें कि यह एक पक्का सिद्धांत है जो न केवल 1 यूहन्ना पर, बल्कि रोमियों की किताब—जो ईसाई शिक्षाओं का एक विशाल भंडार है—को पढ़ते समय भी लागू होता है।) जब हम इस शानदार त्रिएक ढांचे को साथ लेकर 1 यूहन्ना के गहरे जंगल से गुज़रते हैं, तो परमेश्वर का वचन हमारी आत्माओं पर उद्धार के इतिहास की रोशनी की तीन शानदार किरणें चमकाने लगता है।

(1) पहला, हमें यूहन्ना की चिट्ठी पर इस नज़रिए से सोचना चाहिए कि "कैसे परमेश्वर पिता—जो स्वभाव से ही प्रेम हैं—ने सबसे पहले हमसे प्रेम किया, जबकि हम इसके लायक नहीं थे" (1 यूहन्ना 4:19)।

हमें हर आयत पर पिता के प्रेम की उस महान पहल (परमेश्वर का अस्तित्व और कार्य) को ध्यान में रखकर मनन करना चाहिए—यानी हमें बचाने के लिए क्रूस पर अपने एकलौते पुत्र को प्रायश्चित के बलिदान के रूप में सौंपने और त्यागने का उनका कार्य; हम जो क्रोध के संतान थे और अपने अपराधों और पापों के कारण मृत्यु के हकदार थे।

(2) दूसरा, हमें इस लेख को इस नज़रिए से समझना चाहिए कि "परमेश्वर पुत्र, यीशु मसीह—जो अनंत जीवन का सत्य हैं—पर समझ के साथ विश्वास करना" (1 यूहन्ना 5:1, 5) और "उस नई आज्ञा को मानना जिसे उन्होंने अपने लहू से लिखा था" (3:23–24)। हमें लगातार यह देखना चाहिए कि कैसे एक सही मसीह-संबंधी विश्वास—यह मानना कि यीशु ही पूर्ण मसीहा (ख्रिस्त) हैं: राजाओं के राजा, महायाजक और भविष्यद्वक्ता—हमारे रोज़मर्रा के जीवन में ठोस आज्ञाकारिता के ज़रिए फल लाता है, खासकर अपने भाइयों से खुद की तरह प्रेम करने में। (3) तीसरी बात, हमें परमेश्वर के वचन को इस नज़रिए से देखना चाहिए कि कैसे पवित्र आत्मा हमें अलौकिक रूप से नया जीवन देता है—हम जो कभी अपने पापों के कारण मरे हुए थे—और हमें पिता की आराधना करने और अपने साथी विश्वासियों से प्रेम करने के योग्य बनाता है (1 यूहन्ना 5:1); और साथ ही, वह हमें इस भ्रष्ट संसार और शैतान के धोखों के विरुद्ध लड़ने और अंतिम, शानदार जीत हासिल करने की शक्ति देता है (पद 5)।

ऐसा इसलिए है क्योंकि पवित्र आत्मा हमारे भीतर वास करता है, क्रूस पर किए गए प्रायश्चित के कार्य की पुष्टि करता है, हमारे हृदयों में *अगापे* (ईश्वरीय) प्रेम की आग जलाता है, और एक ऐसी सर्वोच्च गारंटी के रूप में कार्य करता है जो न्याय के भय को दूर करती है और हमें साहस प्रदान करती है।

जब हम पिता के प्रेम, पुत्र के सत्य, और पवित्र आत्मा की संगति और सहभागिता को शामिल करने वाले इस त्रिएक (Trinitarian) ढांचे के भीतर 1 यूहन्ना को पद-दर-पद पढ़ते हैं, तो वचन केवल निर्जीव अक्षर नहीं रह

जाता; बल्कि, यह एक शानदार, स्वर्गीय शक्ति के रूप में उभरता है जो हमारे भीतर जीवित रहती है और कार्य करती है।

इन दोनों दृष्टिकोणों की बारीकी से तुलना करने पर एक दिलचस्प तथ्य सामने आता है। उस पादरी द्वारा प्रस्तुत विषयों और मेरे द्वारा व्यवस्थित विषयों के संबंध में, "प्रेम" और "सत्य" के दो मुख्य स्तंभ पूरी तरह से मेल खाते हैं। अंतर तीसरे विषय में है: उन्होंने इसे "संगति" के रूप में पहचाना—जो त्रिएक की एकता का प्रतिनिधित्व करता है—जबकि मैंने "ज्योति" और "धार्मिकता" पर प्रकाश डाला, जो प्रेरित यूहन्ना द्वारा पूरी पत्री में बुने गए संरचनात्मक ढांचे के रूप में कार्य करते हैं। जहाँ उस पादरी ने प्रेम, सत्य और संगति के तीन मुख्य शब्दों का उपयोग करके 1 यूहन्ना की रूपरेखा तैयार की, वहीं मैंने इस बात पर जोर दिया है कि यूहन्ना ने केवल विषयों की सूची नहीं बनाई; बल्कि, उन्होंने शक्तिशाली ढंग से "चार महान विरोधाभासों" का उपयोग किया—ऐसी संरचनाएँ जो किसी भी आध्यात्मिक समझौते की गुंजाइश नहीं देतीं। ज्योति की घोषणा करते हुए, प्रेरित यूहन्ना ने इसके विपरीत, "अंधकार" की वास्तविकता को उजागर किया (1 यूहन्ना 1:5); सत्य के बारे में बात करते हुए, उन्होंने "झूठ" की विनाशकारी प्रकृति के विरुद्ध चेतावनी दी (पद 6); पूर्ण प्रेम का आदेश देते हुए, उन्होंने "घृणा" की शैतानी प्रकृति की निंदा की (2:9); और प्रभु की धार्मिकता की प्रशंसा करते हुए, उन्होंने संसार की "बुराई और अधार्मिकता" के साथ इसका तीखा विरोधाभास प्रस्तुत किया (3:12)। जॉन ने ये साफ़, काले-और-सफ़ेद अंतर इसलिए दिखाए ताकि विश्वास करने वाले साफ़ तौर पर समझ सकें—जैसे कसौटी सच दिखाती है—कि वे असल में किस आध्यात्मिक दुनिया से जुड़े हैं।

मुझे यकीन है कि अगर हम प्रेरित जॉन द्वारा बताए गए इन शानदार "चार बड़े अंतरों" के नज़रिए से इस लेख को देखें, तो हम 1 जॉन 5:4–5 में बताए गए शानदार और विजयी सुसमाचार को उसकी पूरी गहराई और भव्यता के साथ समझ सकते हैं। इस हिस्से पर गौर करें: "क्योंकि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह दुनिया पर जीत हासिल करता है। और यही वह जीत है जिसने दुनिया पर जीत हासिल की है—हमारा विश्वास। दुनिया पर जीत हासिल करने वाला कौन है, सिवाय उसके जो विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का बेटा है?" इन दो छोटे लेकिन शानदार आयतों में, प्रेरित जॉन आध्यात्मिक लड़ाई की तीव्रता को बढ़ाने और जीत के पक्के होने पर ज़ोर देने के लिए पवित्र बातों का इस्तेमाल करते हैं। वे बार-बार उस बड़ी जीत

का ऐलान करते हैं—"जीत हासिल करता है," "जो जीत हासिल करता है," और "वह जो जीत हासिल करता है" जैसे शब्दों का इस्तेमाल करके—और साथ ही "दुनिया" शब्द पर भी ज़ोर देते हैं—वही दुश्मन जिसका हमें सामना करना है और जिसे कुचलना है—इसे तीन बार दोहराकर। इस ब्रह्मांडीय आध्यात्मिक युद्ध के मैदान में खड़े होकर, जॉन दो साफ़ सुसमाचार-केंद्रित बयानों के ज़रिए बताते हैं कि असली विजेता कौन है—वह जो शैतान के राज वाले दुनियावी धोखे को तोड़ता है और आखिरी जीत हासिल करता है:

पहला, वह जो "परमेश्वर से जन्मा" है, जिसे पवित्र आत्मा के महान काम से मौत से उठाया गया है (आयत 4)।

दूसरा, वह जो पूरे दिल से विश्वास करता है कि यीशु "परमेश्वर का बेटा" है, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बराबर है (आयत 5)।

अगर हम रोशनी, सच्चाई, प्यार और नेकी के पक्ष में हैं, तो हमें "दुनिया" के ख़िलाफ़ अपनी तलवारें उठानी होंगी—अंधेरे, झूठ, नफ़रत और अन्याय की वह ताकत जो हमें हर तरफ़ से घेरे हुए है। जो कोई भी जॉन द्वारा बताए गए अंतर के चार स्तंभों को मज़बूती से थामे रखता है और यीशु पर परमेश्वर के बेटे के तौर पर भरोसा करता है—मसीह की ताकत से, जिन्होंने क्रूस पर निर्णायक जीत हासिल की है—वह स्वर्ग के एक सच्चे नए जन्म वाले नागरिक की तरह जीएगा और इस दुनिया को जीत के साथ अपने पैरों तले कुचलेगा।

अब तक हमने जिन महान धार्मिक सच्चाइयों पर गौर किया है, उन पर विचार करें। प्रेरित जॉन द्वारा बताई गई नए जन्म वाले विश्वासी की पहचान साफ़ है। परमेश्वर पिता, जिनका स्वभाव ही प्रेम है, ने हम पर असीम प्रेम किया है, जबकि हम इसके योग्य नहीं थे (3:1; 4:8, 16)। हमारे पापों का पूरा प्रायश्चित करने के लिए, उन्होंने बिना किसी संकोच के अपने एकलौते पुत्र को इस धरती पर प्रायश्चित के बलिदान के रूप में भेजा (4:9–10)। इसके अलावा, यीशु मसीह—जो हमारे एकमात्र महायाजक और धर्मी हैं (2:1–2)—ने श्राप के उस पेड़ (क्रूस) पर हमारे लिए अपना जीवन पूरी तरह से दे दिया (3:16)। पवित्र आत्मा परमेश्वर ने प्रायश्चित के इस हृदयस्पर्शी सुसमाचार को हमारे दिलों में प्रभावी ढंग से उतारा है, हमें आत्मिक मृत्यु की अवस्था से

अलौकिक रूप से जीवित किया है और हमारा नया जन्म कराया है (5:1, 4)। ऐसा करके, उन्होंने हमें पूरे दिल से यह विश्वास करने में सक्षम बनाया कि यीशु ही मसीहा—अर्थात मसीह—और परमेश्वर के अनंत पुत्र हैं, और अंततः हमें महिमामय "परमेश्वर की संतान" का महान दर्जा दिया है (3:1–2)।

तो फिर, उन संतों के सामने क्या आत्मिक सच्चाई है जिन्होंने इस अपार अनुग्रह के क्रम का अनुभव किया है? सच्चाई यह है कि, इसी क्षण, हम एक भयंकर युद्ध में लगे हुए हैं—यहाँ तक कि लहू बहाने की हद तक—एक शक्तिशाली शत्रु के विरुद्ध: वह "संसार" जिस पर शैतान का शासन है। इसीलिए प्रेरित यूहन्ना ने, 1 यूहन्ना 2:15 में, हमें—स्वर्ग के राज्य के नागरिकों को—एक ऐसा दृढ़ और शाही आदेश दिया: "संसार से या संसार की किसी भी चीज़ से प्रेम न करो।" वह असली कारण क्या है कि हमें संसार को दृढ़ता से अस्वीकार करना चाहिए, और एक पल के लिए भी उससे प्रेम या उसकी लालसा नहीं करनी चाहिए? इसका कारण यह है कि "संसार की हर चीज़—शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा, और जीवन का घमंड—पिता की ओर से नहीं, बल्कि भ्रष्ट संसार की ओर से आती है" (2:16)। इसके अलावा, शैतान के नियंत्रण वाला यह पतित संसार, और शरीर की वे नाशवान इच्छाएँ, अंततः प्रभु के लौटने पर एक पल में—धुएँ की तरह—"मिट जाएँगी" (वचन 17)। इसलिए, बहुमूल्य लहू के द्वारा नया जन्म पाकर और महिमामय नई स्वर्गीय रचनाओं—नए व्यक्तियों—में बदलकर, हमें इस संसार के साथ समझौते का हाथ नहीं बढ़ाना चाहिए; इसके बजाय, हमें अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में एक आध्यात्मिक लड़ाई लड़नी चाहिए, यहाँ तक कि इसके लिए खून भी बहाना पड़ सकता है।

'यूहन्ना की पत्रियों' के अध्ययन के दौरान मैंने जिन "चार बड़े विपरीत ढाँचों" का ज़िक्र किया है, उन्हें ध्यान से देखें। इस भ्रष्ट "दुनिया" का असली रूप—जिसके ख़िलाफ़ हमें अपनी जान लगाकर लड़ना है और जिसे आज पूरी तरह कुचल देना है—सचमुच घिनौना है।

पहला, यह दुनिया घोर अंधेरे की जगह है, जहाँ जीवन की रोशनी की एक किरण भी नहीं है (1:5–6; 2:8–9, 11)।

दूसरा, यह दुनिया बर्बादी की एक "झूठी दुनिया" है, जो हर तरह के धोखे और पाखंड से भरी है (1:6, 8, 10; 2:4, 21–22; 4:1, 6, 20)।

तीसरा, यह दुनिया शैतान की "नफ़रत की दुनिया" है, जहाँ भाई ईर्ष्या और जलन के कारण एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं (2:9, 11; 3:12–15; 4:20)।

चौथा, यह दुनिया बहुत ज़्यादा "बुरी और अधर्मी दुनिया" है जो परमेश्वर के शासन को नहीं मानती और लगातार पाप फैलाती है (1:9; 2:2, 13–14, 16; 3:12; 5:17–19, 21)।

हर दिन—चाहे मंच से हो या प्रार्थना की गुप्त जगह पर—हमें इन सांसारिक प्रवृत्तियों का सामना करना चाहिए जो अंधेरी, धोखे से भरी, नफ़रत से भरी और बुराई व अधर्म में डूबी हुई हैं। इस ज़बरदस्त और विशाल आध्यात्मिक युद्ध के मैदान में, बस एक ही राज़ है जिससे हम अपनी कमज़ोरी के बावजूद आखिर में पूरी और शानदार जीत हासिल कर सकते हैं। विश्वास की नज़र से एक बार फिर उस शानदार जीत की घोषणा पर ध्यान दें जो प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 5:4 के दूसरे हिस्से में की है: "...यही वह जीत है जिसने दुनिया पर विजय पाई है—हमारा विश्वास।" दूसरे शब्दों में, जो लोग "विश्वास" करते हैं (पद 1, 5)—यानी पूरे दिल से यह मानते हैं कि यीशु ही मसीह (राजाओं का राजा, महायाजक और नबी) और परमेश्वर के पुत्र (पिता के बिल्कुल बराबर) हैं—वे कभी हार नहीं मानेंगे। पवित्र आत्मा के खास काम से नया जीवन पाकर—यानी "परमेश्वर से जन्म लेकर" और स्वर्ग की संतान बनकर (3:1–2)—वे निश्चित रूप से अपने जीवन में उस अंतिम जीत को हासिल करेंगे जिसका वादा इन शब्दों में किया गया है: "दुनिया पर जीत पाना" (5:4–5)। चाहे हालात कितने भी मुश्किल क्यों न हों या शैतान ने कितनी भी रुकावटें क्यों न खड़ी की हों, वे जीतेंगे ही।

प्यारे संतों, कलीसिया—जो पृथ्वी पर मसीह की देह है—स्वभाव से ही "संघर्षरत कलीसिया" (Church Militant) है, जो अंधकार की ताकतों के खिलाफ खून बहाने की हद तक लड़ती है, और "विजयी कलीसिया" (Church Triumphant) भी है, जिसका मकसद राजा की महिमा का प्रचार करना है। हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह, जो कलीसिया के सिर हैं, ने पहले ही—दो हज़ार साल पहले गोलगथा के क्रूस पर—नरक की

सज़ा, मौत की ताकत और शैतान के सिर को पूरी तरह कुचल दिया है, और हमेशा के लिए पूरी और अनंत जीत हासिल कर ली है। इसलिए, विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च में हमें सुसमाचार में मिली इस शानदार जीत के भरोसे को मज़बूती से थामे रखना चाहिए; हमें हिम्मत के साथ अपने अंदर के भ्रष्ट स्वभाव, हमें गिराने की कोशिश करने वाले पाप, इस बिगड़ी हुई दुनिया और अपने दुश्मन शैतान का सामना करना चाहिए और उनके खिलाफ लड़ना चाहिए। हम उन लोगों में से नहीं हैं जो पीछे हटते हैं और विनाश का सामना करते हैं। बल्कि, अपने कमांडर यीशु मसीह के कीमती लहू से लैस होकर "क्रूस के सैनिकों" के रूप में, हमें पहले से जीती गई जीत का झंडा लेकर आध्यात्मिक युद्ध के मैदान में बिना डरे आगे बढ़ना चाहिए।

यह पक्का करने के लिए कि हम इस ज़बरदस्त आध्यात्मिक मोर्चे पर डटे रहें और पूरी जीत हासिल करें, आइए हम पूरे दिल से उन तीन पवित्र आज्ञाओं का पालन करें जिन्हें पवित्र आत्मा ने आज वचन की व्याख्या के ज़रिए हमारी आत्माओं में लिखा है।

(1) पहली बात, हमें त्रिएक परमेश्वर (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा) के साथ वफादार और करीबी संगति की अपनी जान देकर भी रक्षा करनी चाहिए।

हमें हर पल परमेश्वर पिता—जिन्होंने हमें अपने सैनिक के तौर पर बुलाया—और पुत्र यीशु मसीह—जो अनंत जीवन का सत्य हैं—के साथ गहरा, व्यक्तिगत आध्यात्मिक संबंध बनाए रखना चाहिए और अपने अंदर रहने वाले पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करना चाहिए। ठीक वैसे ही जैसे प्रेरित पौलुस ने इफिसियों की पत्री में कहा था, हमें—अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी के निजी एकांत में—त्रिएक परमेश्वर के उस विशाल, व्यापक और असीम रूप से शानदार बचाने वाले प्रेम को और भी गहराई और बहुतायत से जानना चाहिए, जिन्होंने हमें जीवन दिया है। क्योंकि प्रभु के साथ करीबी संगति ही हमारी ताकत का स्रोत है और आध्यात्मिक युद्ध लड़ने के लिए ज़रूरी ऊर्जा का मुख्य साधन है।

(2) दूसरी बात, स्वर्ग के राज्य के नागरिकों के तौर पर, जिनका नया जन्म हुआ है, हमें ज्योति में रहना चाहिए और अपने भाई-बहनों से पूरे जोश के साथ प्रेम करना चाहिए। मसीह के प्रायश्चित्त वाले लहू से पूरी तरह नया जीवन पाकर और परमेश्वर की महिमा वाली संतान बनकर, हमें अब अंधेरे के घिनौने कामों में नहीं पड़ना

चाहिए; बल्कि, हमें प्रभु की तेजोमयी ज्योति में रहना चाहिए और सच्चाई के मार्ग पर चलना चाहिए। हमें प्रभु के लहू से पक्की की गई नई आज्ञा का पूरी तरह पालन करके और अपने आस-पास के भाई-बहनों से अपने समान प्रेम करके—अपने कामों और सच्चाई से—सच्ची धार्मिकता का अभ्यास करना चाहिए। उद्धार पाए हुए लोगों के रूप में हमारी पहचान (हमारा "होना") पवित्र प्रेम के फल (हमारे "काम") से दिखाई देनी चाहिए।

(3) तीसरी बात, हमें दुनिया के तौर-तरीकों को ठुकराना चाहिए और प्रभु में विश्वास की तलवार से दुनिया के खिलाफ लड़ना चाहिए।

हमें कभी भी इस दुनिया से ईर्ष्या या प्रेम नहीं करना चाहिए—क्योंकि इसे एक दिन खत्म हो जाना है—और न ही हमें इसके भ्रष्ट, सांसारिक मूल्यों को अपनाना चाहिए। हमें यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि इस दुनिया की हर चीज़ केवल शरीर की लालसा, आँखों की लालसा और जीवन का घमंड है—ये ऐसी चीज़ें हैं जो प्रभु के लौटने पर धुएँ की तरह एक पल में पूरी तरह गायब हो जाएँगी। इसलिए, हमें उस विरोधी की प्रकृति के खिलाफ लड़ना चाहिए जिसे प्रेरित यूहन्ना ने अपनी पत्रियों में सख्ती से उजागर किया था—वह घिनौनी दुनिया जो घोर अंधकार और झूठ से भरी है, जहाँ नफ़रत, बुराई और अधर्म बाढ़ की तरह उमड़ते हैं। जब हम यह महान आध्यात्मिक लड़ाई लड़ते हैं, तो हमें अपनी बुद्धि या इंसानी जोश पर भरोसा नहीं करना चाहिए; बल्कि, हमें केवल "यीशु मसीह में विश्वास" के ज़रिए लड़ना चाहिए—यह मानते हुए कि यीशु ही मसीह और परमेश्वर के पुत्र हैं। प्रेरित यूहन्ना का शानदार गीत हमारे दिलों में जीत के एक ब्रह्मांडीय गीत की तरह गूँजता रहे: "...यही वह जीत है जिसने दुनिया पर विजय पाई है—हमारा विश्वास" (1 यूहन्ना 5:4)।

यीशु मसीह, हमारे सेनापति, पहले ही पूरी जीत हासिल कर चुके हैं! आइए हम बिना किसी शक के इस सुसमाचार की सच्चाई पर भरोसा करें और जीत के भरोसे को मज़बूती से थामे हुए, हर दिन सैनिकों के योग्य विश्वास का एक योद्धा-सा जीवन जिएँ। मैं प्रभु यीशु मसीह—राजाओं के राजा—के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हमारे विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक समझौते और आत्म-संतुष्टि की भावना को त्याग दें; कि, केवल विश्वास की ढाल और वचन की तलवार का इस्तेमाल करके, आप दुनिया को निर्णायक रूप से कुचल देंगे और हर दिन शानदार, स्वर्गीय जीत का ऐलान करेंगे।

तीसरा, जो लोग परमेश्वर से प्यार करते हैं, वे आध्यात्मिक सैनिकों के तौर पर काम करते हुए—विश्वास के ज़रिए—शैतान के राज वाली इस दुनिया पर जीत हासिल करते हैं और आखिरी जीत पक्की करते हैं।

प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 5:1–5 में जो तीसरी और आखिरी बड़ी घोषणा की है, वह जीत का वह सबसे बड़ा "सिद्धांत" है जिसे स्वर्ग के राज्य के नागरिकों को उस बड़े आध्यात्मिक युद्ध के बीच समझना चाहिए जिसका हम सामना कर रहे हैं। कृपया विश्वास की नज़रों से इस लेख की आयतों 4 और 5 पर फिर से ध्यान दें: "क्योंकि जो कोई परमेश्वर से पैदा हुआ है, वह दुनिया पर जीत हासिल करता है। और यही वह जीत है जिसने दुनिया पर जीत हासिल की है—हमारा विश्वास। दुनिया पर कौन जीत हासिल करता है, सिवाय उसके जो यह मानता है कि यीशु परमेश्वर का बेटा है?" (रिवाइज्ड न्यू कोरियन वर्शन)। "क्योंकि परमेश्वर के सभी बच्चे दुनिया पर जीत हासिल कर सकते हैं। यह हमारा विश्वास ही है जिसने दुनिया पर जीत हासिल की है। उस व्यक्ति के अलावा और कौन दुनिया पर जीत हासिल करेगा जो यह मानता है कि यीशु परमेश्वर का बेटा है?" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)।

प्यारे संतों, इस धरती पर मौजूद प्रभु का शरीर—यानी कलीसिया—अपने स्वभाव से ही एक "लड़ने वाली कलीसिया" (Militant Church) है जो अंधेरे की ताकतों के खिलाफ़ ज़बरदस्त लड़ाई में लगी हुई है, यहाँ तक कि खून बहाने की हद तक; साथ ही, यह "विजयी कलीसिया" (Triumphant Church) भी है जिसे आखिरकार राजा की महिमा का ऐलान करना है। हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह, जो कलीसिया के मुखिया हैं, ने पहले ही—दो हज़ार साल पहले गोलगोथा के क्रूस पर—नरक की सज़ा, मौत की ताकत और शैतान के सभी गढ़ों को पूरी तरह से कुचल दिया है, और हमेशा के लिए एक शानदार, अनंत जीत हासिल कर ली है। इसलिए, विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के समुदाय के तौर पर, हमें सुसमाचार में पहले से हासिल इस शानदार जीत के भरोसे को मज़बूती से थामे रखना चाहिए। हमें आध्यात्मिक युद्ध में शामिल होना चाहिए, और अपने अंदर के भ्रष्ट स्वभाव, हमें दोषी ठहराने वाले पाप, गिरी हुई दुनिया और दुश्मन शैतान का कड़ा विरोध करना चाहिए। हमारा मकसद पीछे हटना और बर्बादी में गिरना नहीं है। इसके बजाय, हमारे कमांडर यीशु मसीह के कीमती लहू से लैस होकर, "क्रूस के सैनिकों" के रूप में हमें जीत का गीत गाते हुए आध्यात्मिक युद्ध के

मैदान के बीचों-बीच निडरता से आगे बढ़ना चाहिए। जब हम इस भयंकर युद्ध-क्षेत्र में कदम रखते हैं, तो हमें केवल भावनात्मक संकल्प या अस्पष्ट आत्मविश्वास की ज़रूरत नहीं होती। क्रूस की जीत के भरोसे को मज़बूती से थामे रखते हुए, हमें जीवित परमेश्वर के वचन के ज़रिए "पूरी जीत का वह रहस्य" भी अच्छी तरह सीखना और मानना चाहिए, जो यह पक्का करता है कि हम कभी भी यह लड़ाई न हारें।

परमेश्वर ने जीत का बुनियादी सिद्धांत यहोशू को सिखाया था, जिसे पुराने नियम के महान आध्यात्मिक नेता मूसा की मृत्यु के बाद इस्राएलियों को यरदन नदी के पार ले जाना था। यहोशू 1:1–9 के मनन के आधार पर, यहाँ चार गहरे आध्यात्मिक रहस्य दिए गए हैं जो हमें विश्वास के ज़रिए इस अंधेरी दुनिया पर जीत हासिल करने और उस पर विजय पाने में मदद करते हैं:

(1) जीत का पहला रहस्य है—वचन निभाने वाले परमेश्वर द्वारा बताए गए "वादे वाले वचन को पूरी तरह याद रखना"।

हमारे सामने मौजूद विशाल आध्यात्मिक युद्ध के मैदान में बड़ी जीत हासिल करने के लिए, पहला बुनियादी सिद्धांत जिसे हमें मजबूती से थामे रखना है, वह है—वफादार परमेश्वर के वादों को याद रखना और उन्हें अपनी आत्मा की गहराई में हमेशा के लिए बसा लेना। यहोशू 1:3–4, आयत 6 का बाद का हिस्सा और आयत 13 पर विचार करें: "मैंने तुम्हें वह हर जगह दी है जहाँ तुम्हारे पैर पड़ेंगे, ठीक जैसा मैंने मूसा से वादा किया था—जंगल और इस लेबनान से लेकर महान नदी फरात तक, हित्तियों की सारी ज़मीन, और पश्चिम की ओर महान सागर तक; तुम्हारा इलाका वहीं होगा... तुम इस लोगों को वह ज़मीन दिलाओगे जिसे देने की कसम मैंने उनके पूर्वजों से खाई थी... उस बात को याद रखो जिसका हुक्म प्रभु के सेवक मूसा ने तुम्हें दिया था, कि 'प्रभु तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें आराम दे रहा है और तुम्हें यह ज़मीन देगा।'" वाचा निभाने वाले प्रभु परमेश्वर ने अपने वफादार सेवक मूसा के ज़रिए इज़राइल के लोगों से पहले ही पक्की कसम खाई थी कि वह उन्हें उदारतापूर्वक कनान की ज़मीन देंगे। प्रभु ने घोषणा की कि चाहे उनके सामने दुश्मन की कितनी भी बड़ी रुकावटें या मज़बूत गढ़ क्यों न हों, वह भरपूर 'वादे की ज़मीन'—जहाँ दूध और शहद बहता है—आखिरकार इज़राइल का अपना इलाका बन जाएगी। यहोशू, वह नेता जिसने इस शानदार वादे को अपने

दिल की गहराई में मज़बूती से बसाया था, ने रूबेन और गाद के कबीलों और मनश्शे के आधे कबीले—जिन्हें यरदन के पूर्व में ज़मीन दी गई थी (आयत 12)—को हिम्मत के साथ संबोधित किया। यह उन्हें उस शाश्वत आदेश को स्पष्ट रूप से याद दिलाने का आह्वान था—बिना एक पल के लिए भी भूले—जो मूसा ने बहुत पहले दिया था: प्रभु की स्पष्ट आवाज़ जिसमें कहा गया था, "प्रभु तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें आराम दे रहा है और तुम्हें यह ज़मीन दे रहा है" (आयत 13)।

ठीक वैसे ही जैसे इज़राइल के लोग कनान को जीतने के लिए युद्ध से पहले खड़े थे, हमें भी—आज एक अंधेरी दुनिया का सामना करते हुए—परमेश्वर के वादे वाले वचन को अपने दिल की गहराई में उतारना चाहिए। वह शाश्वत, मज़बूत स्तंभ जैसा वादा जो सेनाओं के प्रभु ने हमारे 'सेंग्री प्रेस्बिटेरियन चर्च' समुदाय के हाथों में सौंपा है, वह मत्ती 16:18 के दूसरे हिस्से में मौजूद शानदार घोषणा है: "...मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और पाताल के फाटक उस पर हावी नहीं हो पाएँगे।" हमारा स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च किसी एक पादरी का चर्च नहीं है और न ही किसी इंसान की संपत्ति है; यह प्रभु का चर्च है—जिसे उन्होंने अपने लहू से खरीदा है और जो पूरी तरह से यीशु मसीह का है। इसके अलावा, प्रभु ने खुद वादा किया था कि वे इस चर्च को—जो उनका अपना शरीर है—अपने हाथों से बनाएंगे। इसलिए, जब भी दुनियादारी के चलन और धोखे की लहरें हमारी मंडली को हिलाने की कोशिश करें, तो हमें इस पवित्र वादे को याद रखना चाहिए। हमें इसे सिर्फ़ दिमागी तौर पर मानने से कहीं ज़्यादा करना चाहिए; हमें अपनी रोज़ की आराधना में इस वादे की महिमा और प्रशंसा करनी चाहिए। हमें पूरे दिल से और बिना किसी शक के सुसमाचार के उस सच पर विश्वास करना चाहिए कि वाचा निभाने वाले परमेश्वर अपनी कही हर बात को बिना किसी चूक या बदलाव के, पूरी वफ़ादारी से पूरा करते हैं। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसे पवित्र सिपाही बनें जो विश्वास की इस महान चट्टान पर अपना पूरा जीवन टिकाए रखें; जो प्रभु की शक्ति से—जिन्होंने क्रूस पर पहले ही बड़ी जीत हासिल कर ली है—दिन-ब-दिन आध्यात्मिक क्षेत्रों को जीतें और उस महान जीत का ऐलान करें।

(2) जीत का दूसरा राज़ है "परमेश्वर की पूरी मौजूदगी," जो दुश्मन की रुकावटों और गढ़ों को खत्म कर देती है।

वह पक्की ताकत जो हमें इस कठोर दुनिया में आध्यात्मिक सिपाही के तौर पर खड़े रहने और लगातार जीत हासिल करने में मदद करती है, वह है सृष्टिकर्ता परमेश्वर की सर्वशक्तिमान मौजूदगी। यहोशू 1:5, आयत 9 का आखिरी हिस्सा, आयत 17 और 3:7 देखें: "तुम्हारी ज़िंदगी के सभी दिनों में कोई भी तुम्हारे सामने टिक नहीं पाएगा। जैसा मैं मूसा के साथ था, वैसा ही तुम्हारे साथ भी रहूँगा; मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा और न ही त्यागूँगा... क्योंकि तुम जहाँ भी जाओगे, तुम्हारा परमेश्वर प्रभु तुम्हारे साथ होगा... जैसे हमने मूसा की पूरी बात मानी, वैसे ही हम तुम्हारी बात मानेंगे। तुम्हारा परमेश्वर प्रभु तुम्हारे साथ हो, जैसा वह मूसा के साथ था... और प्रभु ने यहोशू से कहा, 'आज मैं सारे इस्राएल की नज़र में तुम्हें ऊँचा उठाना शुरू करूँगा, ताकि वे जान सकें कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, ठीक वैसे ही जैसे मैं मूसा के साथ था।'" परमेश्वर ने नए नेता यहोशू के साथ पूरी वफ़ादारी से रहने का पक्का वादा किया, ठीक वैसे ही जैसे वे मूसा के साथ थे, जिन्होंने मिस्र से बाहर निकलने (एक्सोडस) के महान चमत्कार का नेतृत्व किया था। यहोशू—जिनकी आत्मा कनान को जीतने के महान मिशन के सामने कांप उठी थी—से प्रभु ने कहा कि वे उन्हें कभी नहीं छोड़ेंगे और न ही कभी त्यागेंगे। उन्होंने भरोसा दिलाया कि जहाँ भी यहोशू कदम रखेंगे, प्रभु के घोड़े और आग के रथ उनकी रक्षा करेंगे। इसके अलावा, परमेश्वर ने पूरे इस्राएल के सामने यहोशू को शानदार ढंग से ऊँचा उठाने का वादा किया, ताकि लोग उनके साथ प्रभु परमेश्वर की जीवित उपस्थिति को स्पष्ट रूप से देख और पहचान सकें। चूँकि सर्वशक्तिमान का साथ एक पक्की गारंटी थी, इसलिए परमेश्वर ने यह घोषणा की कि उनके पूरे जीवनकाल में कोई भी व्यक्ति यहोशू का सफलतापूर्वक विरोध करने की हिम्मत नहीं करेगा।

प्रिय संतों, वही प्रभु परमेश्वर जिन्होंने यहोशू की रक्षा की थी, आज आपके और मेरे लिए सच्चे "इम्मानुएल परमेश्वर" हैं। पवित्र शास्त्र स्पष्ट रूप से प्रभु की पहचान बताता है: "...और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे" (जिसका अर्थ है, "परमेश्वर हमारे साथ है") (मत्ती 1:23)। यह इम्मानुएल परमेश्वर केवल हमारे साथ नहीं रहते; वे हमारी ओर खड़े होते हैं और हमारी भलाई के लिए पूरी तरह समर्पित हैं। प्रेरित पौलुस द्वारा रोमियों 8:31 में ज़ोरदार ढंग से कही गई सुसमाचार की उस बात पर गहराई से विचार करें: "यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो कौन हमारे विरुद्ध हो सकता है?" जब ब्रह्मांड का शासक मेरी ओर है और मेरी रक्षा कर रहा है, तो कौन

सी शक्ति—चाहे वह शैतान हो, दुष्टात्मा हो, या पाप की टूटी-फूटी ताकतें हों—हमें विरोध करने और नष्ट करने की हिम्मत कर सकती है? यह असंभव है। हमें बदलते हालात या इंसानी धमकियों से विचलित नहीं होना चाहिए; इसके बजाय, हमें पवित्र आत्मा की ज्वलंत और भीतर वास करने वाली उपस्थिति पर पूरा भरोसा रखते हुए, इम्मानुएल में इस शक्तिशाली विश्वास से खुद को सुसज्जित करना चाहिए। मैं प्रभु के नाम से पूरी निष्ठा से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक—क्रूस की उस महान जीत को थामे हुए जो पहले ही हासिल हो चुकी है, और उस प्रभु के साथ कदम मिलाकर चलते हुए जो कभी आपका साथ नहीं छोड़ते—हर दिन इस अंधकारमय दुनिया पर विजय प्राप्त करें और अंततः अंतिम जीत हासिल करें।

(3) जीत का तीसरा रहस्य है "स्वर्गीय शक्ति और साहस," जो हर तरह के आध्यात्मिक डर और कायरता को खत्म कर देता है।

दुनिया की भयंकर चुनौतियों को कुचलने और अंतिम जीत हासिल करने के लिए, हमारे पास जो पवित्र आंतरिक कवच होना चाहिए, वह है एक शक्तिशाली आध्यात्मिक साहस, जो शैतान की ताकत को तोड़ देता है। येशू 1:6 (पहला भाग), 7 (पहला भाग), 9 (पहला भाग) और 18 को देखिए: "मजबूत और हिम्मत वाले बनो... मजबूत और बहुत हिम्मत वाले बनो... क्या मैंने तुम्हें आज्ञा नहीं दी है? मजबूत और हिम्मत वाले बनो। डरो मत; हिम्मत मत हारो... जो कोई तुम्हारी आज्ञा के खिलाफ बगावत करेगा और तुम्हारी बातों को नहीं मानेगा... उसे मौत की सज़ा दी जाएगी। बस मजबूत और हिम्मत वाले बने रहो।" यहोवा परमेश्वर—वह वाचा का परमेश्वर जिसने कनान देश को लोगों को देने का पक्का वादा किया था और कहा था कि वह नए नेता येशू के साथ हर कदम पर चलेगा—उसने बार-बार और सख्ती से उसे "मजबूत और बहुत हिम्मत वाले" बनने की आज्ञा दी। जब सृष्टिकर्ता परमेश्वर—जो पूरी कायनात का मालिक है—उसकी निजी ढाल बनकर साथ हो, तो उसे दुश्मनों से क्या डरना जो बस बनाए गए जीव हैं, और उसे क्यों कांपना या डरना चाहिए? सर्वशक्तिमान परमेश्वर की गरजती आवाज़ के अलावा, रूबेन और गाद के कबीलों और मनश्शे के आधे कबीले के लोगों ने भी—जिन्होंने यरदन के पूर्व में बसने का फैसला किया था—एक आवाज़ में येशू से कहा

और अपनी वफादारी का वादा किया: "मजबूत और हिम्मत वाले बनो।" सचमुच, स्वर्ग और पृथ्वी दोनों से मिले प्रोत्साहन ने येशू के हौसले को बहुत मज़बूत किया।

प्यारे संतों, ज़िंदगी के तूफ़ानों और शैतान के ज़बरदस्त आरोपों का सामना करते हुए, हमें कभी भी पीछे नहीं हटना चाहिए या डर से कांपना नहीं चाहिए। इसके बजाय, हमें क्रूस की भावना को अपनाते हुए मजबूत और बहुत हिम्मत वाले बनना चाहिए। यशायाह 41:10 का शानदार वादा आज हमारी कांपती आत्माओं के लिए एक मज़बूत किले की तरह खड़ा है: "डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ; निराश मत हो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मैं तुम्हें मज़बूत करूँगा और तुम्हारी मदद करूँगा; मैं अपने धर्मी दाहिने हाथ से तुम्हें थामे रहूँगा।" हर दिन मजबूत और हिम्मत वाले बने रहने का पक्का राज़ हमारी अपनी इच्छाशक्ति या अच्छे हालात में नहीं है। यह इस बात में है कि इम्मानुएल—वह परमेश्वर जो सारी सृष्टि पर राज करता है—अभी हमारे अंदर रहता है और बसता है। यह हमारे इस पक्के भरोसे से आता है कि वफादार परमेश्वर इतिहास के मंच पर उस उद्धार के वादे को ज़रूर पूरा करेगा जो उसने हमारी विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च कम्युनिटी और उसके सदस्यों को दिया है। परमेश्वर हमें ज़िंदगी के वीराने का सामना करने के लिए कभी अकेला नहीं छोड़ेगा; वह सही समय पर हमारी मदद के लिए आएंगे और अपने नेक दाहिने हाथ से हमें मज़बूती से थामे रखेंगे। इसलिए, मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हम ऐसे पवित्र सैनिक बनें जो—दुनिया के बदलते रुझानों से डगमगाए बिना—वादे के वचन पर अपना विश्वास मज़बूती से टिकाए रखें, विश्वास की हिम्मत के साथ दुनिया पर जीत हासिल करें और हर दिन शानदार जीत का ऐलान करें।

(4) जीत का चौथा रहस्य है परमेश्वर के वचन पर दिन-रात मनन करना और उसका पालन करना, बिना दाएं या बाएं मुड़े।

आध्यात्मिक लड़ाई में इलाका जीतने और बड़ी जीत हासिल करने की सबसे बड़ी चाबी है अपने जीवन के हर पैमाने को पूरी तरह से सच्चाई के वचन के अनुसार ढालना। यहोशू 1:7–8 पर गौर करें: “मजबूत और बहुत साहसी बनो। मेरे सेवक मूसा ने तुम्हें जो नियम दिए हैं, उन सबका पालन करने में सावधान रहो; उनसे दाएं या बाएं न मुड़ो, ताकि तुम जहां भी जाओ, सफल हो सको। इस नियम की किताब को हमेशा अपने होंठों पर रखो; इस पर दिन-रात मनन करो, ताकि तुम इसमें लिखी हर बात को करने में सावधान रह सको।

तब तुम समृद्ध और सफल होगे।" यहोशू और इस्राएल के लोगों को, शानदार जीत और परमेश्वर की उपस्थिति का वादा मिलने के बाद, एक पवित्र आध्यात्मिक ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी। वह ज़िम्मेदारी थी परमेश्वर द्वारा मूसा के ज़रिए दिए गए आदेशों और नियमों का पूरी तरह से पालन करना और उन्हें लागू करना, बिना किसी छोटी-सी बात से भी समझौता किए। परमेश्वर ने इस्राएल से अपने वचन का पालन करने की मांग क्यों की—बजाय दुनियावी सैन्य रणनीतियों पर भरोसा करने के—इसका कारण स्पष्ट है: वह यह पक्का करना चाहते थे कि उनका रास्ता आसान हो और वे जहां भी जाएं—कठिन रेगिस्तान और कनान के दुश्मनों के बीच भी—उन्हें परमेश्वर की ओर से मिलने वाली समृद्धि का आशीर्वाद मिले। यही बाइबिल में बताया गया सच्ची समृद्धि का रहस्य है और यही अंतिम, पक्की जीत का मूल सिद्धांत है।

फिर भी, जब हम इस कड़े पैमाने—वचन के इस सही मापदंड—का सामना करते हैं, तो हमें इंसानी स्वभाव की निराशाजनक सीमाओं का पता चलता है। स्वभाव से, आप और मैं आध्यात्मिक रूप से पूरी तरह कंगाल हैं; हममें अपनी ताकत या नैतिकता से परमेश्वर के पवित्र आदेशों को पूरी तरह—100 प्रतिशत—मानने की क्षमता नहीं है। लगातार दाएं या बाएं भटकना और अपने गिरे हुए स्वभाव के कारण लड़खड़ाना—यही उस गहरी कमज़ोरी की सच्चाई है जिसे हम महसूस करते हैं। फिर भी, एक ऐसा है जिसने इंसानियत की इस बुरी निराशा को खत्म किया और परमेश्वर के नियम को पूरी तरह से पूरा किया: हमारे उद्धारकर्ता, यीशु मसीह। उन्होंने न केवल परमेश्वर की इच्छा को पूरी तरह से माना और बिना किसी दाग या पाप के जीवन जिया, बल्कि क्रूस पर मौत तक आज्ञा मानकर और अपना पानी और लहू बहाकर नियम की हर ज़रूरत को भी पूरी तरह से पूरा किया। इसलिए, चूँकि हम खुद से परमेश्वर की एक भी आज्ञा का पूरी तरह पालन नहीं कर सकते, इसलिए जीवन का एकमात्र रास्ता जिस पर हमें टिके रहना चाहिए, वह है यीशु मसीह पर पूरे दिल से भरोसा करना, जिन्होंने हमारी ओर से सारी धार्मिकता पूरी की।

बाइबल बताती है कि परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करना ही परमेश्वर की सबसे बड़ी और मुख्य आज्ञा है जिसे विश्वासियों को मानना चाहिए: "और उनकी आज्ञा यह है कि हम उनके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और एक-दूसरे से प्रेम करें, जैसा उन्होंने हमें आज्ञा दी है" (1 यूहन्ना 3:23)। यीशु मसीह पर राजा, महायाजक और भविष्यद्वक्ता के रूप में पूरा भरोसा करने वाला विश्वास ही वह सबसे ज़रूरी

"परमेश्वर का काम" है जिसकी वे हमसे अपेक्षा करते हैं (यूहन्ना 6:29)। हमें विश्वास की इस दौड़ को पूरा करने के लिए हर दिन अपनी पूरी ताकत से कोशिश करनी चाहिए। इस पवित्र विश्वास की जीवंत शक्ति को बनाए रखने के लिए, हमें खुशी-खुशी दिन-रात सुसमाचार के वचनों पर मनन करने के आध्यात्मिक अनुशासन का पालन करना चाहिए, जैसा कि भजनकार ने कहा था (भजन संहिता 1:2)। क्योंकि जब हम मनन के गहरे एकांत में मसीह की धीमी, शांत आवाज़ को ध्यान से सुनते हैं, तभी हमारी आत्माओं में एक ज़बरदस्त और दुनिया को हिला देने वाला विश्वास पनपने लगता है (रोमियों 10:17)।

हमारा विश्वास कभी भी एक ही जगह पर रुका हुआ या स्थिर नहीं रहना चाहिए। जैसा कि प्रेरित पौलुस ने आग्रह किया था, सुसमाचार में हमारे विश्वास की प्रगति और विकास पूरी कलीसिया और दुनिया के सामने स्पष्ट रूप से दिखाई देना चाहिए (फिलिप्पियों 1:25)। भले ही हमारा शरीर कमज़ोर है और हम किसी भी पल लड़खड़ा सकते हैं, आइए हम पवित्र आत्मा की असीम शक्ति पर भरोसा करें, जो हमारे लिए ऐसी आहों के साथ विनती करते हैं जिन्हें शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता (रोमियों 8:26)। मैं प्रभु के नाम से पूरी गंभीरता से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक—उस दयालु हाथ का अनुसरण करते हुए जो हमारे भीतर पवित्र आत्मा की लौ को प्रज्वलित करता है और हमें खुशी-खुशी परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम बनाता है—आज दुनिया के अंधेरे, झूठ और नफ़रत को निर्णायक रूप से कुचल दें और खत्म कर दें, और केवल विश्वास के माध्यम से शानदार जीत की घोषणा करें। जब हम 1 यूहन्ना 5:4–5 में बड़ी जीत की गूँज सुनते हैं, तो हमें इस सुसमाचार संदेश का शानदार चरम बिंदु मिलता है: "क्योंकि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह संसार पर जीत हासिल करता है। और यही वह जीत है जिसने संसार पर जीत हासिल की है—हमारा विश्वास। संसार पर कौन जीत हासिल करता है, सिवाय उसके जो विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है?" "क्योंकि जो कोई परमेश्वर की संतान है, वह संसार पर जीत हासिल कर सकता है। यह हमारा विश्वास ही है जिसने संसार पर जीत हासिल की है। संसार पर और कौन जीत हासिल कर सकता है, सिवाय उसके जो विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है?" (समकालीन कोरियाई संस्करण) "परमेश्वर से जन्मे व्यक्ति" की पहचान—जिसका ज़िक्र प्रेरित यूहन्ना ने जीत की इस शानदार घोषणा के बीच एक बार फिर किया है—उस नए जन्म के रहस्य से पूरी तरह मेल खाती है जिस पर हमने पहले इस अध्याय के पहले पद में आँसुओं के साथ विचार किया था। यहाँ परमेश्वर से जन्म लेने का

अर्थ है कि हम—जो कभी आध्यात्मिक रूप से मरे हुए थे, जिनके प्राण अपराधों और पापों के कारण बुझ गए थे—"आध्यात्मिक रूप से नवजात" (नए जन्म का अनुभव करने वाले) बन गए हैं; प्रभु के बहुमूल्य लहू और पवित्र आत्मा के महान कार्य के द्वारा स्वर्गीय प्राणियों के रूप में हमारा नया जन्म हुआ है। इसके अलावा, नए जन्म का यह तेजस्वी रहस्य केवल अतीत तक सीमित विश्वास को—जो किसी एक धार्मिक अनुभव के साथ समाप्त हो जाता है—शामिल नहीं करता, बल्कि एक "जीवित, निरंतर चलने वाले विश्वास" को शामिल करता है जो हमारे दैनिक जीवन में प्रभु, यानी सच्चे प्रकाश की ओर लगातार और बिना रुके बढ़ता रहता है। जैसा कि टीकाकार हमेशा कहते हैं, जो संत वास्तव में परमेश्वर से नया जन्म पा चुका है, वह निश्चित रूप से अपने जीवन में स्पष्ट प्रमाण दिखाएगा—पूरी दुनिया और शैतान दोनों के लिए यह सबूत कि वे वास्तव में एक नई रचना और एक नया व्यक्ति हैं जो अंधकार से बाहर आए हैं। पद 1 में बताए गए अकाट्य प्रमाण को निम्नलिखित दो पवित्र बंधनों में संक्षेप में बताया गया है:

पहला, पूरे दिल से उस "पिता" से प्रेम करना—परमेश्वर पिता—जिसने हमें अपने लहू से खरीदा और हमें आध्यात्मिक जन्म दिया।

दूसरा, प्रभु में "भाई-बहनों" से पूरे जोश के साथ प्रेम करना—वे लोग जो हमारी तरह ही उस प्रेम करने वाले पिता से नए जन्मे हैं और एक शरीर बन गए हैं, और एक ही आध्यात्मिक जीवन-रक्त को साझा करते हैं। आखिरकार, इस बात का सबूत कि "जो परमेश्वर से जन्मे हैं" (5:1, 4)—यानी वे पवित्र मसीही जिन्होंने यीशु मसीह पर अपने उद्धारकर्ता, राजा, महायाजक और भविष्यद्वक्ता के रूप में विश्वास करके नया जीवन पाया है—वे "नई रचनाओं" के रूप में जी रहे हैं, न तो बहुत बड़ा है और न ही जटिल। यह यीशु द्वारा पूरी मानवता को दिए गए प्रेम के उस महान दोहरे आदेश (मत्ती 22:37, 39) और प्रेरित यूहन्ना द्वारा तय किए गए स्पष्ट मापदंड से पूरी तरह मेल खाता है: ऊपर की ओर, परमेश्वर पिता से—जिसने हमें जीवन दिया—अपने पूरे मन और प्राण से प्रेम करना; और अपने आस-पास, अपने साथी विश्वासियों और पड़ोसियों से उतनी ही सच्चाई से प्रेम करना जितना हम खुद से करते हैं। जब हम सच्चे दिल से इन दो सबूतों के अनुसार जीते हैं, तो हमारे आस-पास की दुनिया—जो अंधेरे, झूठ, नफरत और अन्याय से भरी है—हमारे सामने पूरी तरह झुकने पर मजबूर हो जाएगी। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसे पवित्र संत बनें जो

केवल शब्दों के दिखावे को तोड़ दें और, प्रेमपूर्ण आज्ञाकारिता के ठोस कामों के ज़रिए, हर दिन पूरी दुनिया को दिखाएँ कि आप वे विजेता हैं जो सचमुच परमेश्वर से जन्मे हैं।

1 यूहन्ना 5:4 के पहले हिस्से में, प्रेरित यूहन्ना हमारे सामने एक शानदार घोषणा करते हैं: "क्योंकि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह दुनिया पर जीत हासिल करता है।" तो फिर, इस "दुनिया" का असली स्वरूप क्या है—वह ताकत जिसका सामना हमें हर दिन करना है और जिस पर जीत हासिल करनी है, जबकि हम यीशु के कीमती लहू से नया जीवन पाकर शानदार नई स्वर्गीय रचनाओं में बदल चुके हैं? जब भी मैं इस दुनिया के स्वरूप को समझने की कोशिश करता हूँ, तो 1 यूहन्ना 2:15–17 की वह सख्त चेतावनी—जिस पर हमने पहले गहराई से विचार किया था—मेरे दिल में ज़ोरदार ढंग से गूँजती है: "दुनिया से या दुनिया की किसी भी चीज़ से प्रेम न करो। अगर कोई दुनिया से प्रेम करता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि दुनिया की हर चीज़—शरीर की लालसा, आँखों की लालसा और जीवन का घमंड—पिता की ओर से नहीं, बल्कि दुनिया की ओर से आती है। दुनिया और उसकी इच्छाएँ खत्म हो जाती हैं, लेकिन जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह हमेशा जीवित रहता है।" यह अंश उस दुनिया की असलियत को पूरी तरह से उजागर करता है जिसे पवित्र आत्मा से नया जन्म पाने वालों को अपनी पूरी ज़िंदगी पैरों तले कुचलना होता है: शैतान का वह तीन-गुना जाल जो हमारी आत्माओं को फँसाता और भ्रष्ट करता है—यानी, "शरीर की लालसा," "आँखों की लालसा," और "जीवन का घमंड।"

दुनिया के इस तीन-तरफ़ा जाल को उद्धार के इतिहास के नज़रिए से देखें, खासकर उत्पत्ति 3:6 के संदर्भ में—जो इंसानियत की त्रासदी की शुरुआत थी। जब अदन की वाटिका में चालाक साँप ने आदम की पत्नी हव्वा को अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल खाने के लिए बहकाया, तो बाइबल इंसानियत के सामने आए पहले प्रलोभन की असलियत को साफ़ तौर पर दिखाती है: "जब स्त्री ने देखा कि पेड़ का फल खाने में अच्छा और देखने में मनभावन था, और बुद्धि पाने के लिए भी वांछनीय था..." (उत्पत्ति 3:6)। यहाँ एक चौंकाने वाली और डरावनी समानता है। यह बात कि मना किया गया फल स्त्री को "खाने में अच्छा" लगा, "शरीर की लालसा" से मेल खाती है—एक बेकाबू शारीरिक इच्छा जिसकी 1 यूहन्ना में निंदा की गई है। उसका देखने में आकर्षक होना—"देखने में मनभावन"—"आँखों की लालसा" से मेल खाता है, जो नज़र के ज़रिए आने

वाला एक तरह का स्वार्थी लालच है। इसके अलावा, उसे पाने की इच्छा क्योंकि वह "बुद्धि पाने के लिए वांछनीय" था, परमेश्वर की तरह ऊँचा होने के घमंड को दिखाती है—"जीवन का घमंड," जो दुनिया का एक नाशवान अहंकार है। दुख की बात है कि इंसानियत के पूर्वज, पहले आदम और हव्वा, शैतान द्वारा बिछाए गए दुनिया के इस तीन-तरफ़ा जाल में बुरी तरह फँस गए, और इस तरह उन्होंने सृष्टिकर्ता परमेश्वर के विरुद्ध एक अक्षम्य पाप किया। 1 यूहन्ना के नज़रिए से साफ़ तौर पर देखें तो, पहला आदम—इंसानियत और परिवार के प्रतिनिधि के तौर पर—अदन की आध्यात्मिक लड़ाई में बुरी तरह हार गया, एक ऐसी लड़ाई जिसे जीतना उसका फ़र्ज़ था, सिर्फ़ इसलिए क्योंकि उसे दुनिया और उसमें मौजूद घिनौनी चीज़ों से प्यार था।

फिर भी, सुसमाचार इंसानियत को इस मोड़ पर निराशा में नहीं छोड़ता। बाइबल कृपा के एक ऐसे राजा से परिचित कराती है जो पहले आदम के बिल्कुल उलट है; पहला आदम इसलिए नाकाम रहा क्योंकि उसे दुनिया की लालसाओं से प्यार था। वह कोई और नहीं बल्कि यीशु मसीह हैं—हमारे अनंत सेनापति—जो "अंतिम आदम" के रूप में इस धरती पर आए (1 कुरिन्थियों 15:45)। अपनी सार्वजनिक सेवा शुरू करने से ठीक पहले, पवित्र आत्मा यीशु मसीह को सुनसान जंगल में ले गई। वहाँ, उन्होंने चालीस दिन और रात उपवास किया, और अत्यधिक शारीरिक कमज़ोरी और भूख का सामना किया (मत्ती 4:1–2)। जब वे सबसे ज़्यादा कमज़ोर स्थिति में थे, तभी वह चालाक "बहकाने वाला"—यानी दुश्मन, शैतान, जिसने कभी आदम को बर्बाद किया था—यीशु को गिराने की कोशिश करने के लिए जंगल में आया; उसने दुनिया के तीन तरह के जाल बिछाकर प्रभु को फँसाने की कोशिश की और तीन खतरनाक प्रलोभन दिए।

(1) पहला प्रलोभन "शरीर की लालसा" को जगाने वाला था। इसका मकसद भूखे शरीर की ज़रूरतों का फ़ायदा उठाकर परमेश्वर के वचन पर भरोसे को कमज़ोर करना था।

जब यीशु ने चालीस दिन का उपवास रखा और उन्हें बहुत भूख लगी थी, तब शैतान ने उन्हें बहकाया और कहा, "अगर तू परमेश्वर का बेटा है, तो हुक्म दे कि ये पत्थर रोटी बन जाएँ" (मत्ती 4:3)। यह अदन की वाटिका में 'भले और बुरे के ज्ञान के पेड़' के फल की उस खूबी की याद दिलाता था जो 'आँखों को भाने वाला' था—जिसने हव्वा को बर्बादी की ओर धकेला था—और यह एक ऐसी परीक्षा थी जो चालाकी से 'शरीर की लालसा'

(जिसका ज़िक्र 1 यूहन्ना 2:16 में है) का फ़ायदा उठा रही थी। उस सबसे कमज़ोर पल में, यीशु—जो 'आखिरी आदम' थे—ने शरीर की इच्छाओं को पूरा करने के लिए चमत्कारों का गलत इस्तेमाल नहीं किया; इसके बजाय, उन्होंने व्यवस्थाविवरण 8:3 के गंभीर वचनों को उद्धृत करके एक ही बार में शैतान के गढ़ को ध्वस्त कर दिया: "यीशु ने जवाब दिया, 'लिखा है: “इंसान सिर्फ़ रोटी से नहीं, बल्कि हर उस वचन से जीवित रहेगा जो परमेश्वर के मुँह से निकलता है”'" (मत्ती 4:4)।

(2) दूसरा प्रलोभन "जीवन के घमंड" का लालच था, जो लोगों से तारीफ़ पाने और वीरता दिखाने की इच्छा जगाता है, और इस तरह परमेश्वर की परीक्षा लेने के लिए उकसाता है।

शैतान ने यीशु को मंदिर के सबसे ऊँचे स्थान पर खड़ा किया और उन्हें उकसाते हुए कहा, "अगर तू परमेश्वर का बेटा है, तो अपने-आप को नीचे गिरा दे" (मत्ती 4:5–6)। ऐसा करते हुए, शैतान ने भजन संहिता 91:11–12 के दिलासा देने वाले वादे को अपने मकसद के हिसाब से मरोड़कर धोखा देने की कोशिश की। यह 'पतन' (Fall) के असली स्वभाव को दर्शाता था—यानी कुछ ऐसा पाने की इच्छा जो "बुद्धिमान बनाने के लिए वांछनीय" हो—और यह एक क्रूर जाल था जिसका मकसद धार्मिक दिखावे और "जीवन के घमंड" को बढ़ावा देना था, जिसकी निंदा 1 यूहन्ना में की गई है। यीशु ने दैवीय न्याय के वचन से शैतान द्वारा भजन संहिता के चालाक और गलत इस्तेमाल को निर्णायक रूप से नाकाम कर दिया। व्यवस्थाविवरण 6:16 का हवाला देते हुए, प्रभु ने इस दूसरी परीक्षा पर भी पूरी तरह से जीत हासिल की: "यीशु ने उससे कहा, 'यह भी लिखा है: “तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न करना”'" (मत्ती 4:7)।

(3) तीसरी परीक्षा "आँखों की अभिलाषा" का लालच थी, जो कुछ समय के लिए दिखने वाले शानदार नज़ारों से इंसान को अंधा करके उसकी पूजा का केंद्र बदलना चाहती है। शैतान यीशु को एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया, उन्हें दुनिया के सभी राज्य और उनकी चकाचौंध भरी सांसारिक महिमा दिखाई, और एक आखिरी, हताश दांव खेला: "यदि तू झुककर मेरी पूजा करे, तो मैं तुझे यह सब दे दूँगा" (मत्ती 4:8–9)। यह उस इच्छा का असली रूप था जो हव्वा ने वर्जित फल को देखते समय महसूस की थी—यानी "आँखों को भाने वाली" चीज़ की चाहत—और यह 1 यूहन्ना 2:16 में बताई गई खतरनाक "आँखों की अभिलाषा" को

दर्शाता था। शैतान की घिनौनी बातों को और न सहते हुए, प्रभु ने—ब्रह्मांड के स्वामी के योग्य आध्यात्मिक अधिकार के साथ—व्यवस्थाविवरण 6:13 की धारदार बात का इस्तेमाल करके शैतान पर ज़बरदस्त प्रहार किया: "यीशु ने उससे कहा, 'दूर हो जा, शैतान! क्योंकि लिखा है: "तू प्रभु अपने परमेश्वर की पूजा कर और केवल उसी की सेवा कर"'" (मत्ती 4:10)।

इस प्रकार, पहला आदम आध्यात्मिक युद्ध में बुरी तरह हार गया; अदन की वाटिका में सब कुछ भरपूर होने के बावजूद वह शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा और जीवन के घमंड के आगे झुक गया। इसके विपरीत, यीशु मसीह—हमारे सच्चे सेनापति—ने एक बंजर और कठोर जंगल के बीच जीत हासिल की। यहाँ तक कि जब उनका शरीर भूख से बेहाल था, तब भी उन्होंने परमेश्वर के लिखित वचन को ढाल और तलवार दोनों की तरह इस्तेमाल किया ताकि दुनिया के उस तीन-तरफ़ा जाल को पूरी तरह कुचल सकें और विजयी हो सकें। आखिर क्यों अंतिम आदम की यह महान जीत आज हमें इतनी ज़बरदस्त उम्मीद से भर देती है? ऐसा इसलिए है क्योंकि, जैसा कि 1 यूहन्ना 5:4 में बताया गया है, जो विश्वासी परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु पर विश्वास के ज़रिए उनके साथ जीवन में जुड़े हुए हैं, उन्होंने दुनिया पर उनकी जीत को पहले ही अपनी जीत मान लिया है। मैं प्रभु के नाम से पूरी श्रद्धा के साथ प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी सदस्य, प्रभु की विजयी शक्ति से सशक्त होकर, आज ही 'वचन की तलवार' से इस अंधेरी, धोखेबाज और नफरत से भरी दुनिया की "तीन तरह की लालसाओं" को निर्णायक रूप से हरा दें।

आखिरकार, इस दुनिया का सार—जिसके खिलाफ मसीह के सैनिकों के रूप में हमें खून बहाने की हद तक लड़ना है और अपने रोज़मर्रा के जीवन में उसे पूरी तरह कुचल देना है—"शरीर की लालसा," "आँखों की लालसा," और "जीवन का घमंड" है; ये वे सच्चाइयाँ हैं जिन्हें प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:16 में स्पष्ट रूप से उजागर किया है। ये वही लालसाएँ हैं जो अदन की वाटिका में मानव जाति के पहले पूर्वजों के पतन का कारण बनीं (उत्पत्ति 3:6), और ये ठीक उन तीन परीक्षाओं से मेल खाती हैं जो शैतान ने हमारे प्रभु को गिराने की कोशिश में जंगल में उन पर थोपी थीं (मत्ती 4:1–11)। 1 यूहन्ना 5:4 के पहले भाग में—जो आज हमारा मुख्य वचन है—प्रेरित यूहन्ना हमारी आत्माओं के लिए एक ज़बरदस्त और पक्की जीत की घोषणा करते हैं,

जो अक्सर अंधेरे की दमनकारी ताकत के आगे घुटने टेक देती हैं: "क्योंकि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह दुनिया पर जीत हासिल करता है" (1 यूहन्ना 5:4)। यह वचन हमारे अंदर सुसमाचार का गहरा भरोसा जगाता है। यह इस बात की घोषणा है कि हम मसीही—जो क्रूस के कीमती लहू और पवित्र आत्मा के महान कार्य के द्वारा आत्मिक मृत्यु से नए सिरे से जन्मे हैं, और इस तरह स्वर्गीय DNA वाले नई सृष्टि बन गए हैं—दुनिया से कभी नहीं हार सकते। हम "इस दुनिया या इसमें मौजूद घिनौनी चीज़ों" से न तो ईर्ष्या करते हैं और न ही उनसे प्रेम करते हैं (2:15)। एक जीवित, सक्रिय विश्वास और हमारे भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा की अपार शक्ति से सशक्त होकर, हम शरीर की लालसा, आँखों की लालसा और जीवन के घमंड को निर्णायक रूप से कुचल देंगे और नष्ट कर देंगे, और अंततः एक शानदार, अंतिम जीत हासिल करेंगे। चूँकि यीशु, हमारे सेनापति और उद्धारकर्ता, पहले ही दुनिया पर जीत हासिल कर चुके हैं, इसलिए हम—उनकी संतानें जो उनकी जीत में भागीदार हैं—निश्चित रूप से आज के युद्ध के मैदान में इस दुनिया पर जीत हासिल करेंगे और राजा की महिमा को शानदार ढंग से प्रकट करेंगे।

हमें एक गहरे आध्यात्मिक स्तर की ओर बढ़ना चाहिए। जिस आध्यात्मिक लड़ाई का सामना हमें—स्वर्गीय और नए जीवन वाले लोगों के तौर पर—करना है और जीतना है, वह सिर्फ़ शरीर की इच्छाओं, आँखों की लालसा और जीवन के घमंड को ठुकराने या उनसे दूर रहने तक सीमित नहीं है। जिस सच्ची आध्यात्मिक लड़ाई को हमें लड़ना और जीतना है—जिसमें हमारी जान भी दांव पर लगी है—उसका मुख्य हिस्सा राजा के उस महान आदेश को सक्रिय रूप से मानना है, जिसे आज के वचन (1 यूहन्ना 5:1) में प्रेरित यूहन्ना ने फिर से ज़ोर देकर कहा है। यह दोहरे आदेश वाला नियम है: पूरे दिल से परमेश्वर से प्रेम करना (ऊपर की ओर) और अपने आस-पास के भाई-बहनों से खुद की तरह प्रेम करना (क्षैतिज रूप से) (मत्ती 22:37, 39)। यीशु द्वारा बताए गए प्रेम के इस दोहरे आदेश को पूरे दिल से मानने वाला जीवन ही उस व्यक्ति का ठोस और स्पष्ट उदाहरण है जिसका वर्णन 1 यूहन्ना 2:17 में "परमेश्वर की इच्छा पूरी करने वाले" के रूप में किया गया है: "दुनिया और उसकी इच्छाएँ खत्म हो जाती हैं, लेकिन जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह हमेशा जीवित रहता है।" प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताए गए इस अनंत विश्राम का रहस्य स्पष्ट है। इसका मतलब है कि कभी भी "इस दुनिया या इसमें मौजूद नाशवान चीज़ों" (वचन 15)—जो आखिरकार खत्म हो जाएँगी—से प्रेम

न करना; बल्कि सबसे ऊपर परमेश्वर पिता की आराधना करना, जिसने हमें अपने लहू से खरीदा है; और प्रभु के प्रेम से प्रेरित होकर, उन भाई-बहनों से सच्चे दिल से प्रेम करना जो—एक ही लहू के कारण—हमारे साथ एक शरीर बन गए हैं (5:1)। जब हम इस तरह अपने अंदर के स्वार्थ और घमंड को क्रूस पर चढ़ा देते हैं और प्रभु के आदेश का पालन करते हुए अपने साथी सदस्यों से सच्चे दिल से प्रेम करते हैं, तो हम आखिरकार अपनी आत्माओं के बारे में सुसमाचार के महान आश्वासन को समझ पाते हैं। 1 यूहन्ना 3:14 के शानदार वचन पर गौर करें: "हम जानते हैं कि हम मौत से ज़िंदगी की ओर बढ़ चुके हैं क्योंकि हम अपने भाइयों से प्यार करते हैं..." जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* (ह्युंडाई-इन-उई सोंग-ग्योंग) बताता है, जब हम प्रभु की उस आज्ञा को मानते हैं जिसमें कहा गया है कि हम अपने आस-पास के भाइयों और बहनों से वैसे ही प्यार और सेवा करें जैसे हम अपने शरीर से करते हैं, तो हमें—अपने जीवन में सबसे पक्के सबूत के साथ—यह एहसास होता है कि हमारे पास पहले से ही अनंत जीवन है और हम *इसी पल* उसमें जी रहे हैं, न कि किसी दूर भविष्य में। अपने भाइयों के लिए प्यार ही हमारी पहचान का सबसे पक्का सबूत है कि हम स्वर्ग के राज्य के हैं।

हालाँकि, दुश्मन—शैतान—लगातार रुकावटें डालता है और हमले करता है, ताकि विश्वास करने वाले प्यार के इस शानदार आशीर्वाद का आनंद न ले सकें। शैतान चालाकी भरे धोखे और लालच के जलते हुए तीर चलाता है, जिससे हम यीशु की दोहरी आज्ञा को हल्के में लेते हैं और उसे नहीं मानते। हमारे दिलों में नाराज़गी, ईर्ष्या और जलन के ज़हरीले बीज बोकर, वह हमें अपने आस-पास के भाइयों और बहनों से नफ़रत करने के लिए उकसाता है और हमें पाप की दलदल में धकेल देता है। शैतान का बस एक ही बुरा मकसद है। उसका मकसद हमें ऐसे लोगों में बदलना है जो अपने भाइयों से नफ़रत करते हैं—जैसे कैन, जो पहला हत्यारा था—और हमें गहरे, घने अंधेरे में फँसाना है, भले ही हम मुँह से कहें कि हम रोशनी में चल रहे हैं (2:9)। वह हमारी आत्मा और ज़मीर पर एक भारी, शर्मनाक बोझ—जैसे पत्थर की भारी सीट—डालकर हमें ठोकर खिलाने की कोशिश करता है (पद 10)। संक्षेप में, अपने भाइयों से नफ़रत करने के लिए उकसाकर, शैतान हमारी आत्माओं को जकड़ना चाहता है, ताकि हम पृथ्वी पर उस भरपूर अनंत जीवन का आनंद न ले

सकें—वह चलता-फिरता, स्वर्गीय आशीर्वाद जो प्रभु ने अपने बहाए गए लहू के ज़रिए हमारे लिए हासिल किया था (3:15, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)।

प्यारे संतों, इस क्रूर और भयंकर आध्यात्मिक युद्ध के मैदान में निराश न हों और न ही डर से काँपें। 1 यूहन्ना 5:4 के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना हमारे दिलों में एक ज़बरदस्त जीत की आवाज़ पहुँचाता है जो शैतान के सिर को कुचल देती है: "जो कोई परमेश्वर से पैदा हुआ है, वह दुनिया पर जीत हासिल करता है!" जो लोग नए बन गए हैं—यानी पवित्र आत्मा के खास काम से सचमुच परमेश्वर से नए सिरे से जन्मे हैं—वे शैतान के नफ़रत भरे धोखे और प्रलोभनों को पूरी तरह कुचल देंगे और आखिर में इस लड़ाई में शानदार जीत हासिल करेंगे। यूहन्ना आयत 5 में इस बात पर ज़ोर देते हैं: "दुनिया पर जीत कौन हासिल करता है? वही, जो यह मानता है कि यीशु परमेश्वर का बेटा है।" यीशु, वह सेनापति जिसने मुझे जीवन दिया, उसने नफ़रत की इस दुनिया पर पहले ही जीत हासिल कर ली है और शैतान की ताकत को तोड़ दिया है। उनके पवित्र बच्चों के तौर पर, जिन्हें उनकी जीत का हिस्सा मिला है, मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं—विश्वास की ढाल और वचन की तलवार का इस्तेमाल करके अपने अंदर की नफ़रत को दूर करें और अपने भाइयों से पूरी ज़िंदगी प्यार करें—और अपने जीवन की वेदी पर शानदार ढंग से यह साबित करें कि हम सचमुच स्वर्ग के नागरिक हैं, जो नए सिरे से जन्मे हैं।

तो, दुनिया की मुश्किल लहरों और शैतान के धोखों के बीच, प्रेरित यूहन्ना आखिर कैसे यह बताते हैं कि हम—जो सीमित और कमज़ोर हैं—इतनी बड़ी जीत हासिल कर सकते हैं? 1 यूहन्ना 5:4 के दूसरे हिस्से में दी गई ज़बरदस्त घोषणा को देखिए: "...यही वह जीत है जिसने दुनिया पर जीत हासिल की है—हमारा विश्वास।" कुछ हफ़्ते पहले, जब मैं अपने निजी प्रार्थना कक्ष में इब्रानियों 11 पर—जो बाइबल का एक शानदार रिकॉर्ड है और जिसे "विश्वास के नायकों की सूची" (Hall of Faith) कहा जाता है—गहराई से मनन कर रहा था, तो मैंने अपनी पादरी वाली नोटबुक में पाँच बातें लिखीं। मैं उन्हें अब आपके साथ साझा करना चाहता हूँ, क्योंकि इन पूर्वजों का विश्वास ही वह ताकतवर हथियार है जिससे हम भी आज दुनिया पर जीत हासिल कर सकते हैं।

(1) पहली बात, सच्चा विश्वास सुसमाचार की एक ऐसी जीवित विरासत छोड़ जाता है जो इंसान की मौत के बाद भी कायम रहती है।

जब प्रभु के तय किए गए समय पर मुझे अपनी आखिरी साँस लेनी होगी और कब्र में दफ़नाया जाएगा, तब भी मैं चाहूँगा कि मेरा जीवन बोलता रहे—प्रभु में उस सच्चे विश्वास के ज़रिए जिसे मैंने मज़बूती से बनाए रखा है—मेरी प्यारी पत्नी, मेरे प्यारे बच्चों और विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी परिवारों और सदस्यों के लिए। मेरी इच्छा है कि मेरे जाने के बाद भी मेरी आध्यात्मिक आवाज़ उनके लिए जीवित रहे। "भले ही वह मर गया, फिर भी वह अपने विश्वास के ज़रिए बोलता है" (इब्रानियों 11:4)। (2) दूसरा, सच्चा विश्वास परमेश्वर के अस्तित्व का भरोसा दिलाता है और इंसान को सर्वशक्तिमान के साथ करीबी रिश्ता बनाने में मदद करता है।

एक पवित्र मसीही, जिसे "परमेश्वर को प्रसन्न करने" की गवाही मिली है (इब्रानियों 11:5), वह इस दुनिया की सोच या मूल्यों से प्रभावित नहीं होता। ऐसा व्यक्ति इस अटूट सच्चाई पर पक्का भरोसा रखता है कि परमेश्वर जीवित है और वह उन्हें इनाम देता है जो सच्चे मन से उसे खोजते हैं। नतीजतन, हनोक की तरह, वे दुनिया के चलन से विचलित हुए बिना परमेश्वर के साथ रोज़ाना करीबी संगति का जीवन जीते हैं—और उसकी कृपा में गहरे जुड़ाव का आनंद लेते हैं (इब्रानियों 11:6; उत्पत्ति 5:24)।

(3) तीसरा, सच्चा विश्वास प्रभु के लिए सहे गए दुखों को दुनिया की किसी भी दौलत से कहीं ज़्यादा बड़ा खज़ाना मानता है।

जब आपको यीशु मसीह की खातिर और सुसमाचार के बचाव में दुनिया से मज़ाक, तिरस्कार, अपमान या नुकसान का सामना करना पड़े, तो निराश न हों। ऐसा दुख सच्ची आत्मिक दौलत है—जो धरती के सारे सोने-चाँदी से कहीं ज़्यादा कीमती और विशाल है—जब इसकी तुलना उस स्वर्गीय राज्य की महिमा से की जाती है जो हमारा इंतज़ार कर रहा है (इब्रानियों 11:26)।

(4) चौथा, सच्चा विश्वास हमें उस अनदेखे परमेश्वर पर भरोसा करने में मदद करता है मानो वह हमारी आँखों के सामने ही हो, और अपने भाइयों से प्रेम करने में सक्षम बनाता है।

हमारे पास ऐसी आत्मिक दृष्टि होनी चाहिए जिससे हम विश्वास के ज़रिए उस अनदेखे परमेश्वर (जो आत्मा है) को साफ़-साफ़ देख सकें, मानो वह हमारे सामने ही जीवित और मौजूद हो (इब्रानियों 11:27)। जब हमें एहसास होता है कि प्रभु की नज़र—जो आग की लौ की तरह भेदने वाली है—हम पर है, तो हम दिखावे के कपड़े उतार फेंकते हैं और खुशी-खुशी उस आज्ञा का पालन करने लगते हैं जिसके तहत हमें अपने परिवारों, कलीसिया में अपने भाइयों-बहनों और समाज में हाशिए पर पड़े पड़ोसियों से वैसे ही सच्चा प्रेम करना है जैसे हम खुद से करते हैं (1 यूहन्ना 4:20; मत्ती 22:39)।

(5) पाँचवाँ, सच्चा विश्वास हमारी घोर मानवीय कमज़ोरी के बीच भी सर्वशक्तिमान की शक्ति से लैस होकर मज़बूती पाता है। भले ही कभी-कभी हमारा विश्वास इस्राएलियों की नासमझी जैसा हो—जो लाल सागर की विशाल बाधा और पीछा करती हुई मिस्र की डरावनी सेना से घिर जाने पर शिकायतें और दुखड़े रोने लगे थे (निर्गमन 14:10–12)—फिर भी विश्वास हमें उस हालत में फंसाए नहीं रखता। धर्मग्रंथ गवाही देते हैं कि विश्वास के नायक "कमज़ोरी में भी मज़बूत बने" और लड़ाई में बहादुर हुए (इब्रानियों 11:34)।

इस बुरी लाचारी से बाहर निकलने और शक्तिशाली योद्धाओं के रूप में उठने के लिए, हमारी आत्माओं को अपने संकल्पों से नहीं, बल्कि प्रभु के शक्तिशाली वचन से पूरी तरह जुड़ना चाहिए—ऐसा वचन जो पूरी दुनिया को समा लेने की ताकत रखता है। आइए हम राजा के विजय-गीत को हमेशा अपने दिलों में बसा लें—एक ऐसा गीत जो शैतान के सभी आरोपों और डरों को तुरंत कुचल देता है: "...इस दुनिया में तुम्हें मुसीबत का सामना करना पड़ेगा। लेकिन हिम्मत रखो! मैंने दुनिया पर जीत हासिल की है" (यूहन्ना 16:33); "नहीं, इन सब बातों में हम उसके द्वारा, जिसने हमसे प्रेम किया, विजेताओं से भी बढ़कर हैं" (रोमियों 8:37); और "परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह की विजय-यात्रा में हमेशा हमें कैदियों की तरह आगे ले जाता है और हर जगह उसके ज्ञान की सुगंध फैलाने के लिए हमारा इस्तेमाल करता है" (2 कुरिन्थियों 2:14)। हमारे सेनापति यीशु मसीह ने पहले ही दुनिया पर जीत हासिल कर ली है; वह हमें अपनी विजय-रथ पर बिठाते हैं,

जिससे हम हर दिन भरपूर जीत हासिल कर सकें। आइए हम पूरे दिल से इस सुसमाचार के सत्य पर भरोसा करें और सच्चे ईसाई बनें जो दुनिया भर में मसीह के ज्ञान की जीवन देने वाली सुगंध फैलाएं। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी धन्य संत वचन और प्रार्थना के ज़रिए विश्वास की ढाल को मज़बूत करें, शैतान की नफ़रत और दुनियावी इच्छाओं को पूरी तरह कुचल दें, और अंत में स्वर्ग की शानदार अंतिम जीत हासिल करें।

हमें एक बार फिर—विश्वास की नज़र से—उस शानदार आध्यात्मिक जीत की घोषणा पर ध्यान देना चाहिए जो प्रेरित यूहन्ना ने अध्याय 2 की आयतों 13 और 14 में की थी: "...हे जवानों, मैं तुम्हें लिखता हूँ, क्योंकि तुमने उस दुष्ट पर जीत हासिल की है... हे जवानों, मैं तुम्हें लिखता हूँ, क्योंकि तुम मज़बूत हो, और परमेश्वर का वचन तुममें बसा हुआ है, और तुमने उस दुष्ट पर जीत हासिल की है।" संदर्भ को ध्यान से देखने पर उस महान रहस्य का पता चलता है कि कैसे परमेश्वर की नई संतानें दुष्ट शैतान—जो हवा की शक्तियों का शासक है—के खिलाफ़ आध्यात्मिक लड़ाई में पूरी जीत हासिल कर सकती हैं। दूसरे शब्दों में, यह हमें उस शक्तिशाली आध्यात्मिक हथियार के बारे में सिखाता है जो हमें शैतान के धोखों का सामना करते हुए—बिना एक पल के लिए भी लड़खड़ाए—पूरी तरह से लड़ने और जीतने में सक्षम बनाता है; ये धोखे लगातार हमें यीशु की दोहरी आज्ञा को तोड़ने और अपने साथी विश्वासियों से ईर्ष्या या नफ़रत करने के लिए उकसाते हैं। धर्मग्रंथ में बताई गई इस महान जीत का रहस्य बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है; यह बस इस बात में है कि हम मसीह में मज़बूत हैं और परमेश्वर का जीवन देने वाला वचन हमारी आत्माओं में गहराई से बसा हुआ है। हालाँकि, हमें बाइबिल की इस घोषणा का गलत मतलब नहीं निकालना चाहिए कि "हम मज़बूत हैं।" इसका मतलब हमारे अपने नैतिक संकल्प या हमारे चरित्र की अच्छाई से मिलने वाली ताकत नहीं है। बल्कि, इसका मतलब यह है कि क्योंकि "परमेश्वर के वचन की महान शक्ति"—जो अंधेरे के शासन को तोड़ देती है—हमारे अंदर बस गई है, इसलिए हम उस वचन की ताकत से भर जाते हैं और इस तरह शैतान के खिलाफ़ शक्तिशाली योद्धाओं के रूप में डटकर खड़े होते हैं। इसके अलावा, हमारे अंदर परमेश्वर के वचन के बसने की सच्चाई इस बात का स्पष्ट सबूत है कि हमारा विश्वास—जो जीवन के नियम पर चट्टान की तरह मज़बूती

से भरोसा करता है—दुनिया के चलन से अडिग और अचल रहता है। जब वचन हममें बसता है तो विश्वास बढ़ता है, और वह मज़बूत विश्वास शैतान के जलते हुए तीरों को बेअसर कर देता है।

यही कारण है कि प्रेरित यूहन्ना पूरी दुनिया और हवा की ताकतों के सामने पूरी जीत की ऐसी शानदार घोषणा कर सके—उस हिस्से के ज़रिए जो आज के संदेश का मुख्य हिस्सा है: 1 यूहन्ना 5:4, "क्योंकि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह दुनिया पर जीत हासिल करता है। और यही वह जीत है जिसने दुनिया पर जीत हासिल की है—हमारा विश्वास।" अगर हम अपनी ताकत से अपने भाइयों से प्यार करने या अपनी इच्छाशक्ति से दुनिया पर जीत पाने की कोशिश करते हैं, तो हमें बार-बार हार का सामना करना पड़ेगा और हम नाराज़गी और बुराई की दलदल में फंस जाएंगे। लेकिन, जब हम त्रिएक परमेश्वर के बचाने वाले प्यार और वचन की तलवार के साथ आगे बढ़ते हैं, तो हम नफ़रत के उस अंधेरे को तुरंत हरा सकते हैं जो हमें डगमगाना चाहता है। विश्वास के इस शानदार रहस्य को मजबूती से थामे हुए, मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसे पवित्र संत बनें जो—अपने साथी विश्वासियों से खुद की तरह प्यार करके—दुनिया पर जीत हासिल करें और परमेश्वर की जीवित उपस्थिति की शानदार गवाही दें।

इस ज़बरदस्त लेकिन शानदार आध्यात्मिक युद्ध के मैदान में, सुसमाचार का भजन—जो शैतान के सभी धोखों को तोड़ता है और हमें जीत का गीत गाने के लिए प्रेरित करता है—हमारी आत्माओं में शानदार ढंग से गूंजे। यहाँ *न्यू भजन* नंबर 357, "राइज़ अप, ओ बिलीवर्स" (जिसे "फेथ इज़ द विक्ट्री" भी कहा जाता है) के दूसरे पद और कोरस के बोल दिए गए हैं; यह एक ऐसा गीत है जिसे हमें जीवन भर एक सैनिक की भावना के साथ गाना चाहिए: "शैतान के धोखे से सारी इंसानियत गहरे पाप में गिर गई है; आइए हम सच्चाई को अपनाएं और लगातार प्रार्थना करें। जब हम निडर होकर आगे बढ़ते हैं, उस पर भरोसा और निर्भरता रखते हुए, तो हम प्रभु यीशु में विश्वास की शक्ति से पूरी दुनिया पर जीत हासिल करते हैं। (कोरस) विश्वास ही जीत है, विश्वास ही जीत है; प्रभु यीशु में विश्वास पूरी दुनिया पर जीत दिलाता है।" प्यारे संतों, जैसा कि बाइबिल वादा करती है, केवल विश्वास ही जीतता है। केवल सच्चा विश्वास—ब्रह्मांड के राजा, प्रभु यीशु मसीह पर चट्टान

की तरह भरोसा करना—ही इस भ्रष्ट, पापी दुनिया और हवा की शक्ति के शासक, शैतान के गढ़ को पूरी तरह से कुचल सकता है और जीत सकता है।

इस समय भी, दुश्मन—शैतान—हम पर हर तरह के खतरनाक प्रलोभन और आग वाले तीर फेंक रहा है, और कोशिश कर रहा है कि हम प्रभु की दोहरी आज्ञा को छोड़ दें और इसके बजाय अपने आस-पास के भाइयों और बहनों के प्रति ईर्ष्या और नफ़रत पालें। फिर भी, वह शक्ति जो हमें समुदाय को बांटने की शैतान की बुरी कोशिशों को तुरंत नाकाम करने और पूरी जीत हासिल करने में मदद करती है, वह हमारे अपने चरित्र या संकल्प में नहीं, बल्कि पूरी तरह से हमारे "जीवंत, सक्रिय विश्वास" में है (1 यूहन्ना 5:4)। तो फिर, वह कौन-सी पक्की सुसमाचार-आधारित वजह है जो हमें आत्मविश्वास के साथ सिर उठाने और अंधेरे की ताकतों के सामने कभी पीछे न हटने या निराश न होने की हिम्मत देती है? 1 यूहन्ना 4:4 शानदार ढंग से उस महानता की घोषणा करता है जो हमारे भीतर वास करती है: "...जो तुममें है, वह उससे कहीं अधिक महान है जो दुनिया में है।" जैसा कि *बाइबल फॉर मॉडर्न मैन* अनुवाद गवाही देता है, त्रिएक परमेश्वर—जो हमारे अस्तित्व के केंद्र में विराजमान हैं और शासन करते हैं—पूरी सृष्टि के सर्वोच्च शासक हैं, जिनके पास सांसारिक राजाओं या स्वयं शैतान की तुलना में कहीं अधिक महान और जबरदस्त शक्ति है। क्योंकि इम्मानुएल परमेश्वर, जिन्होंने हमें अपने सैनिकों के रूप में बुलाया है, हमें भीतर से संभालते हैं, इसलिए हम निश्चित रूप से इस आध्यात्मिक युद्ध में अंतिम और पूर्ण विजय प्राप्त करेंगे। आइए अब हम उठ खड़े हों और किसी भी तरह के समझौते या आत्म-संतुष्टि की भावना को त्याग दें।

मेरी प्रार्थना है कि हमारे विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च परिवार का हर सदस्य वचन और प्रार्थना के माध्यम से विश्वास में दृढ़ रहे। आइए—प्रभु के उस गहरे और प्रायश्चित करने वाले प्रेम से प्रेरित होकर जिसने हमें सबसे पहले बचाया—हम अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों से ऊपर उठकर अपने साथी विश्वासियों और पड़ोसियों से खुद की तरह ही सच्चा प्रेम करें। जैसे ही हम पाखंड के मुखौटों को उतार फेंकते हैं और कर्मों व सच्चाई के माध्यम से प्रेम के नियम को पूरा करते हैं, मैं अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह—जिन्होंने दुनिया पर विजय प्राप्त की है—के नाम से ईमानदारी से प्रार्थना करता हूँ कि आप प्रतिदिन उस शानदार स्वर्गीय रहस्य का अनुभव

करें और उसका भरपूर आनंद लें, जिसका वादा प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 1:4 में किया था: परमेश्वर द्वारा दी गई खुशी का वह तेजस्वी आशीर्वाद—जिसे न तो दुनिया दे सकती है और न ही समझ सकती है—जो हमारे दिलों और हमारे समुदाय को लबालब भर दे।

“परमेश्वर की गवाही”

[1 यूहन्ना 5:6–12]

“यही वह है जो पानी और लहू के द्वारा आया—यीशु मसीह; केवल पानी से नहीं, बल्कि पानी और लहू से। और आत्मा ही गवाही देती है, क्योंकि आत्मा ही सत्य है। क्योंकि तीन हैं जो गवाही देते हैं: आत्मा, पानी और लहू; और ये तीनों एक ही बात पर सहमत हैं। यदि हम मनुष्यों की गवाही स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर की गवाही उससे कहीं बड़ी है; क्योंकि परमेश्वर की गवाही यह है: कि उसने अपने पुत्र के विषय में गवाही दी है। जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, उसके भीतर वह गवाही मौजूद है; जो विश्वास नहीं करता, उसने परमेश्वर को झूठा ठहराया है, क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है। और गवाही यह है: कि परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके पास जीवन नहीं है।”

प्रियजनों, हमें पवित्र आदर-भाव के साथ अपने विश्वास की वास्तविक स्थिति को गहराई से देखना चाहिए। मैं आपसे आग्रह करने का साहस करता हूँ: आइए हम लापरवाही से सुसमाचार का प्रचार न करें। बहुत समय पहले—8 अप्रैल, 2005 को—मैंने अपनी पादरी-संबंधी नोटबुक में एक लेख लिखा था जिसका शीर्षक था “आइए हम लापरवाही से सुसमाचार का प्रचार न करें”—एक ऐसा शीर्षक जिसमें सचमुच बहुत गहरा और विरोधाभासी अर्थ छिपा था। मैंने इसे इसलिए लिखा क्योंकि मेरा हृदय एक चौंकाने वाली बात सुनकर बुरी तरह हिल गया था; यह बात मैंने अपनी कलीसिया के एक बुजुर्ग सदस्य से सुनी थी जो अस्पताल के बिस्तर

पर लेटे हुए थे। ठीक जब मैं सुसमाचार सुनाने और उन्हें हिम्मत बंधाने वाली बातें कहने ही वाला था, उस बुजुर्ग व्यक्ति ने एक गहरी आह भरी और सावधानी से मुझसे कहा: "पादरी जी, शायद मुझे आपसे यह नहीं कहना चाहिए... लेकिन सच तो यह है कि अगर हम मसीहियों के दिलों में झाँककर देखें, तो हम पाएँगे कि वे घोर नफ़रत और लालच से भरे हुए हैं—जैसे जले हुए कोयले का टुकड़ा—भले ही हम बाहर से पवित्रता का दिखावा करते हों।" उन गंभीर शब्दों को सुनकर मुझे लगा कि एक पादरी के रूप में मेरी असलियत पूरी तरह से उजागर हो गई है; मुझे पूरी तरह से विनम्र होने और अपने दिल में छिपे पाप—वही 'जले हुए कोयले का टुकड़ा'—की सच्चाई को स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा। क्योंकि यह व्यक्तिगत शर्म की बात थी, और साथ ही हमारे चर्च और सभी ईसाइयों के लिए बहुत ही दर्दनाक बदनामी का कारण भी था। पवित्र दिखावे का नकाब टूटने के दर्द को सहते हुए, मैंने पश्चाताप का यह कभी न भूलने वाला बयान छोड़ा:

"कोई भी सुसमाचार प्रचार (इवेंजलिज़्म) जो तब किया जाए जब हमारे दिलों—और हमारे पूरे अस्तित्व—ने उस पवित्र जीवंतता को खो दिया हो जो यीशु मसीह को दर्शाती है, वह केवल धोखा है। बिना आंतरिक बदलाव के सुसमाचार प्रचार के लिए बाहरी जोश दिखाना केवल एक धार्मिक व्यक्ति का पाखंड है, जो दूसरों की नज़र में पूरी तरह (?) छिपा होता है। यह फरीसियों का असली चेहरा दिखाता है, जिन्हें यीशु ने 'सांपों की संतान' कहा था, और शाऊल के कठोर जोश को भी दर्शाता है—जिसने धर्म परिवर्तन से पहले, कानून के तहत खुद को बेदाग मानकर चर्च को कुचला था। सचमुच डरावनी बात यह है कि परमेश्वर गैर-विश्वासियों की तीखी और परखने वाली नज़रों के ज़रिए हमारे बेईमान चरित्र और पाखंड से भरे दिलों को बेरहमी से उजागर करते हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि आज अनगिनत ईसाई केवल ज़ुबानी जोश के ज़रिए परमेश्वर के सुसमाचार प्रचार के रास्ते में रुकावट डालने का पाप कर रहे हों? प्यार भरे दिल के बिना किया गया सुसमाचार प्रचार निश्चित रूप से बेअसर होता है। भले ही कोई अपने होंठों से ज़ोर-ज़ोर से प्यार का दावा करे, लेकिन अगर दूसरा व्यक्ति एक प्रतिशत भी सच्चा, व्यक्तिगत प्यार महसूस नहीं कर पाता, तो यह—जैसा कि प्रेरित पौलुस ने चेतावनी दी थी—कानों को फाड़ने वाले शोर, या 'खड़कते हुए झांझ' (clanging cymbal) से ज़्यादा कुछ नहीं रह जाता। फिर भी, हम बनावटी चर्च सुसमाचार प्रचार कार्यक्रमों और ईसाई संगठनों द्वारा सिखाए गए सजे-धज तरीके के आदी हो गए हैं। 'गवाही देने' के पुराने ज़ुबानी तरीकों पर निर्भर रहकर इसे केवल एक साधन बना दिया है, जबकि हमें 'गवाही वाले जीवन'—जहाँ सुसमाचार हमारे अस्तित्व

में ही समाया हो—के ज़रिए आत्माओं की मुक्ति के लिए सुसमाचार प्रचार करना चाहिए। प्रचारक का अपना अस्तित्व...” अगर हम यीशु जैसा जीवन जीने में नाकाम रहते हुए केवल शब्दों से जोश के साथ सुसमाचार प्रचार करने की कोशिश करते हैं, तो हम कभी-कभी लोगों को चर्च लाने में सफल हो सकते हैं। हालाँकि, जो बेचारे लोग चर्च की दहलीज पार करते हैं, वे जल्द ही प्रचारक के भद्दे पाखंड और दिखावटी पवित्रता को देख लेते हैं; गहरे आहत और निराश होकर, वे रोते हुए चर्च छोड़ देते हैं। इस तरह हम एक दुखद स्थिति को बनाए रखते हैं, उन्हें ऐसे अभागे लोगों का ठप्पा लगाते हैं जो कभी चर्च की ओर दोबारा मुड़कर भी नहीं देखेंगे। पवित्र आत्मा की पूर्णता के बिना किया गया सुसमाचार प्रचार, उनके सर्वोच्च मार्गदर्शन के काम करने की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ता। यह केवल इंसानी अहंकार, अपने कामों पर निर्भर रहने की कोशिशों और अपनी अच्छाई दिखाने की मानसिकता को उजागर करता है। शायद आज के चर्च के दायरे में बहुत मशहूर "इवेंजलिज़्म चैंपियन" (सुसमाचार प्रचार में माहिर) का सेक्युलर खिताब, इंसानी लालच से पैदा हुए एक खोखले दिखावे से ज़्यादा कुछ नहीं है। हर रविवार चर्च की बेंचों पर बैठने वाले लोगों की भारी भीड़ से आगे बढ़कर देखें। कोई भी व्यक्ति डर के साथ यह सोचने पर मजबूर हो जाता है: इस विशाल भीड़ में से कितने प्रतिशत लोगों ने सचमुच पश्चाताप किया है, उद्धार पाया है, और स्वर्गीय सिंहासन के सामने खड़े होंगे? इसलिए, आइए हम लापरवाही से सुसमाचार का प्रचार न करें।

प्रिय संतों, जब मैं पादरी के तौर पर लंबे समय से मन में रखे इन विचारों पर फिर से गौर करता हूँ, तो मैं हम सभी से—जो इन अंतिम दिनों में जी रहे हैं—एक गंभीर सवाल पूछता हूँ। जब हम आत्माओं को बचाने के पवित्र मिशन को पूरा करने की कोशिश करते हैं, तो क्या हम सिर्फ़ ज़ुबानी "गवाही" को एक धार्मिक दिखावे की तरह इस्तेमाल करते हैं ताकि हमारे मन को तसल्ली मिल सके—बजाय इसके कि हम सचमुच "गवाह का जीवन" जिएँ जिसमें प्रभु का क्रूस हमारे रोज़मर्रा के जीवन में झलकता हो? क्या हम झूठों की जगह पर खड़े नहीं हैं—पाखंडी बनकर यीशु का प्रचार करते हैं जबकि खुद को पवित्रता का दिखावा ओढ़े हुए हैं—जबकि हमारा कठोर स्वभाव और जीवन कोयले के जले हुए टुकड़ों जैसा है जो 'सच्चे प्रकाश' यीशु के बारे में कोई विचार पैदा नहीं कर पाता? हमें उन पाखंडी धार्मिक लोगों की भूमिका से हिम्मत के साथ बाहर निकलना होगा जो सिर्फ़ बातों और ज़ुबान से बकवास करते हैं। यह उचित है कि हम सबसे पहले खुद को त्रिएक परमेश्वर के विशाल और पाप-क्षमा करने वाले प्रेम में गहराई से डुबो दें और पवित्र आत्मा की आग को अपने भीतर नफ़रत और झूठ के जले हुए अवशेषों को पूरी तरह से भस्म करने दें। हमारा अस्तित्व ऐसे

सच्चे गवाहों का हो जो यीशु मसीह की सुगंध फैलाते हों। ऐसा करते हुए, हम अदृश्य परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को अपने साथ रहने वाले साथी विश्वासियों के प्रति पूर्ण प्रेम में बदलने दें। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सच्चे संत बनें—और पूरी दुनिया को हिम्मत के साथ साबित करें, अपने जीवन की वेदी पर पवित्र प्रेम और शुद्ध चरित्र के फल के ज़रिए, कि आप सचमुच परमेश्वर से जन्मी नई रचनाएँ हैं, और इस तरह अनगिनत आत्माओं को बचाएँ। आज के पाठ में—खासकर 1 यूहन्ना 5:9 और 10 के बाद वाले हिस्सों में—प्रेरित यूहन्ना स्वर्ग के एक पक्के और गंभीर मानक की घोषणा करते हैं जो हमारे विश्वास की सफलता या विफलता तय करता है: "...परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में गवाही दी है" (पद 9b), और "...क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है" (पद 10b)। अपने पिछले मनन के ज़रिए, हमने गहराई से माना है कि सिर्फ़ ज़ुबानी बातों से यीशु की गवाही देना, और असल में "गवाह का जीवन" न जीना—जो सचमुच यीशु मसीह की याद दिलाए—कितना बुरा आध्यात्मिक अपराध है। प्रेरित यूहन्ना अब हमें अपनी निजी कमज़ोरियों या दिखावे से आगे देखने और नम्रता से परमेश्वर की पक्की "गवाही" के पास आने के लिए बुलाते हैं—एक ऐसी बात जिसे ब्रह्मांड के रचयिता, पिता परमेश्वर ने खुद इतिहास के बीच अपने प्यारे पुत्र के बारे में स्थापित किया है। इस पवित्र वचन के आधार को मज़बूती से थामे हुए, मैंने इस अध्याय का शीर्षक "परमेश्वर की गवाही" रखा है। मेरा इरादा 1 यूहन्ना 5:6–12 में मिली बातों को त्रिएक परमेश्वर (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा) के नज़रिए से गहराई से समझाना है और सच्चाई की आत्मा की उस धीमी आवाज़ को ध्यान से सुनना है जो इन आखिरी दिनों में हमसे बात करती है।

प्यारे संतों, सुसमाचार की व्याख्या में गहराई से जाने से पहले, मैं एक बुनियादी सवाल पूछकर शुरुआत करना चाहता हूँ। हम ईसाई जिस "गवाही" की बात करते हैं, उसका असल में क्या मतलब है? और वह कौन सी सच्ची गवाही है जो आप, व्यक्तिगत रूप से, आज दुनिया को दे सकते हैं? जब भी मैं बाइबल की पूरी गवाही के सार पर मनन करता हूँ, तो प्रेरित पौलुस की दमिश्क के रास्ते पर दी गई गवाही की याद मुझे गहराई से छू जाती है, जिसका बहुत शानदार ढंग से प्रेरितों के काम अध्याय 22 में ज़िक्र किया गया है। पौलुस ने गुस्से और निंदा से भरी यहूदी भीड़ के सामने अपना बचाव करते हुए अपने धर्म-परिवर्तन की कहानी सुनाई थी; जब हम उस महान गवाही के ढांचे को देखते हैं, तो हमें तीन अलग-अलग आध्यात्मिक पहलू मिलते हैं जो स्वर्ग के राज्य के सच्चे नागरिक की गवाही की पहचान हैं।

(1) सच्ची गवाही का पहला पहलू है यीशु मसीह से व्यक्तिगत मुलाक़ात (मसीह से पहले) से पहले अपनी आध्यात्मिक कंगालपन को ईमानदारी से स्वीकार करना। यहूदी भीड़ के सामने प्रेरित पौलुस ने जो ज़बरदस्त गवाही दी, उसकी शुरुआत उद्धारकर्ता यीशु से मिलने से पहले के अपने जीवन के खुले और सच्चे ब्यौरे से की—एक ऐसी कहानी जो मसीह के बिना बिताए जीवन की बदहाली और कठोरता को दिखाती है। प्रेरितों के काम 22:2–5a पर ध्यान दें: "जब उन्होंने उसे अरामी भाषा में बोलते सुना, तो वे बिल्कुल शांत हो गए। तब पौलुस ने कहा: 'मैं एक यहूदी हूँ, सिलिसिया के तारसुस में पैदा हुआ, लेकिन इसी शहर में पला-बढ़ा। मैंने गमालियेल के अधीन शिक्षा पाई और हमारे पूर्वजों के कानून में पूरी तरह से प्रशिक्षित हुआ। मैं परमेश्वर के लिए उतना ही जोशीला था जितना आज आपमें से कोई है। मैंने इस 'मार्ग' के अनुयायियों को मौत के घाट उतारने के लिए सताया, पुरुषों और महिलाओं दोनों को गिरफ्तार किया और जेल में डाल दिया, जैसा कि महायाजक और पूरी परिषद गवाही दे सकती है।'" शाऊल के रूप में अपने शुरुआती दिनों में, पौलुस यहूदी धार्मिक व्यवस्था में एक खास व्यक्ति था, जिसने उस दौर के सबसे बड़े विद्वान गमालियेल के अधीन पूर्वजों के कानून के कड़े और सख्त नियमों की गहन शिक्षा पाई थी। उस भीड़ की तरह जो अब गुस्से में अंधी थी और उसे खत्म करने पर तुली हुई थी, उसमें भी यहोवा परमेश्वर के लिए एक असाधारण, पवित्र जोश था (पद 3)। फिर भी, क्योंकि उसे क्रूस के सुसमाचार की सच्चाई का ज्ञान नहीं था, इसलिए उसका गलत दिशा में गया धार्मिक जोश परमेश्वर की कलीसिया को बर्बाद करने का एक क्रूर हथियार बन गया। उसने उन विश्वासियों को बुरी तरह सताया जो यीशु को मसीह मानते थे, पुरुषों और महिलाओं को बेरहमी से बांधकर जेल में डाल दिया; वह ऐसा व्यक्ति था जिसके हाथों पर खून लगा था, और उसने उन्हें मौत के घाट उतारने की कोशिशों में भी अगुवाई की थी (पद 4)। पौलुस बिना किसी समझौते के पाखंड के इस शर्मनाक और कठोर दौर को स्वीकार करता है और कहता है, "महायाजक और परिषद के सभी बुजुर्ग मेरे बुरे कामों के स्पष्ट गवाह हैं" (पद 5)।

हमें पौलुस की इस पहली गवाही के ढांचे को गहरे आदर और श्रद्धा के साथ देखना चाहिए। सच्ची गवाही दूसरों के सामने अपनी नैतिक अच्छाई या धार्मिक उपलब्धियों का दिखावा करने या डींगें मारने का मौका नहीं है। बल्कि, यह पश्चाताप और पाप स्वीकार करने का पल है—उस परमेश्वर के सामने खड़े होना जिनकी आँखें जलती हुई आग जैसी हैं—जहाँ कोई व्यक्ति बिना किसी संकोच के यह बताता है कि सुसमाचार की

ज्योति उसकी आत्मा पर चमकने से पहले वह कितना आध्यात्मिक रूप से अंधा था; कैसे वह आध्यात्मिक रूप से कंगाल था, अपनी ज़िद और खुद को सही मानने के घमंड की पूजा करते हुए शैतान का गुलाम बना हुआ था। जब हम अपने अतीत के बारे में इस ईमानदारी से बात करते हैं, तभी मसीह का अनुग्रह—जिसने हमें पाप से बचाया—अपनी सबसे शानदार और भव्य महिमा के साथ चमकने लगता है।

(2) सच्ची गवाही का दूसरा पहलू उस निर्णायक पल का विवरण है—यीशु मसीह से मुलाकात और उसके बाद हृदय परिवर्तन—जो प्रभु के अद्भुत और शक्तिशाली अनुग्रह के कारण हुआ।

यहूदी लोगों के सामने प्रेरित पौलुस ने जो गवाही दी, उसका दूसरा हिस्सा हृदय परिवर्तन—मसीह से मुलाकात—के उस शानदार पल का विवरण था, जिसने हमेशा के लिए उसका पूरा जीवन बदल दिया। प्रेरितों के काम 22:5b–16 को देखें: "...मुझे दमिश्क में भाइयों के लिए पत्र मिले और मैं उन लोगों को सज़ा दिलाने के लिए कैदी बनाकर यरूशलेम लाने वहाँ गया। दोपहर के समय जब मैं दमिश्क के पास पहुँचा, तो अचानक स्वर्ग से एक तेज़ रोशनी मेरे चारों ओर चमकी। मैं ज़मीन पर गिर पड़ा और मैंने एक आवाज़ सुनी जो मुझसे कह रही थी, 'शाऊल! शाऊल! तू मुझे क्यों सताता है?' मैंने पूछा, 'हे प्रभु, तू कौन है?' उसने जवाब दिया, 'मैं नासरत का यीशु हूँ, जिसे तू सता रहा है'" (प्रेरितों के काम 22:5b–8)। यीशु में विश्वास करने वालों को खत्म करने की ज़बरदस्त नफ़रत और पक्के इरादे के साथ, शाऊल महायाजक और परिषद से आधिकारिक वारंट लेकर निकला; उसे दमिश्क में संतों को बांधने और उन्हें कैदी बनाकर यरूशलेम लाने का अधिकार मिला था (प्रेरितों के काम 22:5b)। हालाँकि, जब वह दोपहर के समय—जब सूरज अपनी पूरी तेज़ी पर था—जीत के भाव के साथ दमिश्क शहर के पास पहुँचा, तो स्वर्ग से एक अलौकिक रोशनी—जो धरती की किसी भी धूप से कहीं ज़्यादा तेज़ और चकाचौंध करने वाली थी—ज़बरदस्त ताकत के साथ उस पर पड़ी (वचन 6)। उस ज़बरदस्त महिमा के सामने, शाऊल अपनी सवारी से गिर पड़ा और पूरी तरह से ज़मीन पर ढह गया। वहाँ, ज़मीन पर—पूरी तरह निराशा में डूबे हुए—नासरत के यीशु की कठोर आवाज़ गूँजी, जिन्हें वह सता रहा था: "शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" जब कांपते हुए शाऊल ने पूछा, "हे प्रभु, तू कौन है?" तो महिमावान प्रभु ने साफ़-साफ़ जवाब दिया: "मैं नासरत का यीशु हूँ, जिसे तू सताता है" (पद 7–8)। यह वह

पल था जब उसे एहसास हुआ कि कलीसिया को सताना असल में मसीह को सताना था, जो कलीसिया के मुखिया हैं। अंधे हो जाने के बाद, शाऊल ने पवित्र आत्मा के निर्देश का पालन करते हुए दमिश्क शहर में प्रवेश किया (पद 10); वहाँ, वह हनन्याह से मिला—जो प्रभु का तैयार किया हुआ एक वफ़ादार सेवक था—और उसकी आँखों से आध्यात्मिक अंधेपन की परतें हट गईं। तभी शाऊल को हनन्याह के ज़रिए वह महान काम सौंपा गया जो उसकी ज़िंदगी भर की बुलाहट बन गया: "उसने कहा, 'हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुझे इसलिए चुना है कि तू उसकी इच्छा को जाने, उस धर्मी को देखे और उसके मुँह से बातें सुने। तूने जो कुछ देखा और सुना है, उसके बारे में तू सभी लोगों के सामने उसका गवाह बनेगा'" (पद 14–15)। हनन्याह की सलाह मानकर, शाऊल ने तुरंत प्रभु का नाम लिया और बपतिस्मा लिया, और सताने व पाखंड के अपने सभी बुरे पापों को कीमती लहू से धोकर साफ़ कर लिया (पद 16)।

पौलुस की गवाही के इस दूसरे चरण में, हमें सुसमाचार के मूल मर्म का सामना करना होगा। गवाही का चरम बिंदु मेरे अपने संकल्प या नैतिक दृढ़ निश्चय में नहीं मिलता। सच्ची गवाही "यीशु मसीह की सर्वोच्च कृपा" की महिमा करने का अवसर है—वह कृपा जिसने मुझे ढूँढा, मुझे विनम्र बनाया, और स्वर्गीय रोशनी और वचन के ज़रिए मुझे नया जीवन दिया, ठीक तब जब मैं पाप के कारण बर्बादी की राह पर तेज़ी से बढ़ रहा था। यह छुटकारे का रहस्य है—कि मैंने प्रभु को नहीं चुना, बल्कि परमेश्वर ने मुझे अनंत काल से चुना, उसने मुझे अपने महिमावान पुत्र को देखने और उसकी आवाज़ सुनने के काबिल बनाया, और अंत में मुझे बचाया। सिर्फ़ वे ही लोग, जिनके मन में क्रूस के साथ हुई उस ज़बरदस्त मुलाक़ात की गहरी छाप है, परमेश्वर की नई संतान के तौर पर जी सकते हैं—और दुनिया के धोखे में आए बिना सच्चे यीशु को पहचान सकते हैं।

(3) सच्ची गवाही का तीसरा और आखिरी चरण उस बड़े बदलाव की कहानी है जो यीशु मसीह पर उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करने और नया जन्म (मसीह के बाद) पाने के बाद मेरे जीवन में आया, और उस पवित्र मिशन (आदेश) की कहानी है जिसके लिए मुझे गवाह के तौर पर भेजा गया था। तीसरा हिस्सा, जो प्रेरित पौलुस के धर्म-परिवर्तन की शानदार गवाही को यहूदी भीड़ के सामने चरम पर ले जाता है, उस मिशन की कहानी है जो प्रभु के साथ उनकी व्यक्तिगत मुलाक़ात के बाद गवाही के जीवन में बदल गया। प्रेरितों के काम 22:17–21 पर विचार करें: "जब मैं यरूशलेम लौट आया और मंदिर में प्रार्थना कर रहा था, तो मैं समाधि की अवस्था में चला गया और प्रभु को मुझसे यह कहते हुए देखा, 'जल्दी करो और यरूशलेम से

तुरंत निकल जाओ, क्योंकि वे मेरे बारे में तुम्हारी गवाही स्वीकार नहीं करेंगे'... फिर उन्होंने मुझसे कहा, 'जाओ, क्योंकि मैं तुम्हें यहाँ से दूर ग़ैर-यहूदियों के पास भेजूँगा'" (पद 17–18, 21)। शाऊल—जो कभी सताने वाला था—पूरी तरह से विनम्र हो गया और दमिश्क के रास्ते पर परमेश्वर के पुत्र यीशु के आमने-सामने आने के बाद उसका सच्चा धर्म-परिवर्तन हुआ; यीशु, जिसने मृत्यु की शक्ति को तोड़ दिया था, फिर से जी उठा था, और परमेश्वर के दाहिने हाथ महिमा में विराजमान था। फिर भी, प्रभु ने उसे केवल उद्धार के आराम में ही नहीं रहने दिया। हनन्याह के होंठों से घोषित गंभीर बुलाहट के अनुसार—कि वह राजा के लिए उन सभी लोगों के सामने गवाह बनेगा जो उसने देखा और सुना था—पौलुस को ग़ैर-यहूदियों के लिए प्रेरित के रूप में नियुक्त किया गया (पद 15, 21)। पौलुस का जीवन पूरी तरह से बदल गया था; यीशु पर विश्वास करने से पहले का समय और उसके बाद का समय एक-दूसरे से बिल्कुल अलग और विपरीत थे। पहले, वह शाऊल के तौर पर रहते थे—एक ऐसे सताने वाले के रूप में जो अपने नाशवान यहूदी हितों और कानून की धार्मिकता को ऊँचा दिखाने के लिए कलीसिया को बर्बाद करता था—लेकिन धर्म परिवर्तन के बाद, पौलुस एक वफादार गवाह की तरह जीने लगे। उन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर सिर्फ़ यीशु मसीह के क्रूस की महिमा का प्रचार किया, जिन्होंने उन्हें बचाया था।

पौलुस की गवाही के इस आखिरी चरण में, हमें विश्वास के सबसे बड़े फल का सामना करना होगा। एक सच्ची गवाही सिर्फ़ अतीत की किसी एक घटना—धर्म परिवर्तन—को याद करने तक सीमित नहीं रह सकती। एक असली गवाही आध्यात्मिक सच्चाई को स्वीकार करना है—कि कैसे प्रभु से मिलने के बाद, त्रिएक परमेश्वर के स्वभाव में मेरे बढ़े हुए अहंकार और मेरे जीवन के मकसद में ज़बरदस्त बदलाव आया। कभी मैं अंधेरे, झूठ और नफ़रत की दुनिया का हिस्सा था और शैतान का गुलाम बनकर जी रहा था; लेकिन अब, मैं परमेश्वर के राज्य का हिस्सा हूँ—जो सच्ची रोशनी, सच्चाई, प्यार और धार्मिकता का राज्य है (1 यूहन्ना 5:4–5)। जो विश्वासी एक मिशन पर निकले व्यक्ति की तरह अटूट जीवन जीता है—और अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में पूरी दुनिया को मसीह के जीवन की खुशबू दिखाता है—वही उस विश्वास का असली नायक है जो दुनिया पर जीत हासिल करता है, जैसा कि 1 यूहन्ना 5 में बताया गया है, और उसे "परमेश्वर का पक्का गवाह" कहा जा सकता है।

"परमेश्वर की गवाही" को आखिरकार दुनिया के सामने "मेरी गवाही" और "हमारी गवाही" के तौर पर पेश किया जाना चाहिए। पिता परमेश्वर ने खुद इतिहास के बीच अपने बेटे, यीशु मसीह की पहचान के बारे में ज़बरदस्त गवाही दी है (1 यूहन्ना 5:9–10)। इसलिए, उस दिल को छू लेने वाले और पापों का प्रायश्चित करने वाले प्यार से नए सिरे से जन्म लेने वाले बच्चों के तौर पर, हमें गवाह बनकर मज़बूती से खड़े रहना चाहिए और पूरी दुनिया में परमेश्वर के इकलौते बेटे, यीशु मसीह का प्रचार करना चाहिए।

प्रेरित पौलुस ने यहूदी भीड़ के सामने धर्म-परिवर्तन की जो शानदार तीन-भागों वाली कहानी सुनाई थी—"पहले," "मुलाकात," और "बाद में"—वह कोई पुरानी बात नहीं है जो सिर्फ़ बाइबिल के पन्नों में ही सिमट कर रह गई हो। बल्कि, यह विश्वास की एक ऐसी शानदार गवाही होनी चाहिए जिसे आप और मैं—धोखे और अंधेरे से भरे इन आखिरी दिनों में—हर दिन अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में नए सिरे से लिखें। प्यारे संतों, मैं विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के हर सदस्य से पूरे दिल से गुज़ारिश करता हूँ कि वे परमेश्वर के सामने एक पक्के आध्यात्मिक संकल्प के साथ आगे आएँ। आइए, हम इस भागदौड़ भरी दुनिया के शोर-शराबे और चिंताओं को दूर करके किसी शांत, एकांत जगह पर बैठें—एक ऐसी जगह जहाँ उस शांति में सिर्फ़ प्रभु और मैं आमने-सामने मिल सकें। फिर, पवित्र आत्मा की कोमल रोशनी की तलाश करते हुए और एक साफ़, शांत दिल के साथ—और घुटने टेककर सच्ची प्रार्थना करते हुए—आइए उस रोशनी में ईमानदारी से अपनी ज़िंदगी को परखें। और, ठीक वैसे ही जैसे पौलुस ने किया था, आइए हम अपनी आत्माओं के उद्धार के इतिहास को, एक-एक शब्द करके, कांपते हुए हाथों से लिखें।

सबसे पहले, ईमानदारी से अपने शर्मनाक "पुराने रूप" की हालत को लिखें—कि कैसे, यीशु मसीह से व्यक्तिगत रूप से मिलने से पहले, हो सकता है कि आपने बाहर से पवित्रता का दिखावा किया हो, जबकि आपका अंदरूनी रूप कोयले के जले हुए टुकड़े जैसा था।

दूसरा, सुसमाचार के साथ उस "पहले प्यार" के यादगार पल को साफ़-साफ़ याद करें—जब स्वर्ग की अद्भुत रोशनी और वचन ने आपकी आँखें खोल दीं, और क्रूस पर बहाए गए कीमती लहू ने आपको घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया ताकि आपको एक नया जीवन मिल सके।

तीसरा, वर्तमान और भविष्य के लिए अपने बुलावे पर मनन करें—कि कैसे, उद्धार पाने के बाद, आपके मूल्य और ज़िंदगी का मकसद पूरी तरह से बदल गया; कैसे आपने अपने बड़े अहंकार को क्रूस पर चढ़ा दिया और प्रभु की अपनी संपत्ति बन गए, और अब उनके गवाह के तौर पर जी रहे हैं। हमें प्रार्थना की उस निजी जगह से बाहर निकलना चाहिए—अपने दिलों में उस सच्ची गवाही को लेकर जिसे हमने वहाँ आँसुओं के साथ लिखा था—और असली दुनिया के व्यावहारिक मिशन के मैदान में कदम रखना चाहिए। आइए, सबसे पहले इस गवाही को अपने प्यारे परिवारों—अपने सबसे करीबी पड़ोसियों और अपनी प्रार्थना की वेदियों—के साथ पूरे दिल से साझा करें। खासकर, आइए हम अपने आस-पास के उन लोगों के सामने प्यार भरी और भावुक गवाही दें जो अभी तक नासरत के यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में नहीं जानते हैं—जैसे कि अविश्वासी बच्चे, रिश्तेदार, दोस्त और पड़ोसी जो अभी भी आध्यात्मिक अंधेरे और झूठ की बाधाओं में फंसे हुए हैं। जब हम प्रचार करने के जटिल तरीकों या सिर्फ़ संख्या बढ़ाने की लालच को पूरी तरह छोड़ देते हैं, और इसके बजाय अपने जीवन के अनुभवों पर आधारित ईमानदारी से गवाही देते हैं, तो पवित्र आत्मा अविश्वास के बंद दरवाज़ों को ज़ोरदार ढंग से तोड़ देगी और शक्तिशाली रूप से काम करेगी। ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर पिता ने खुद पूरे ब्रह्मांड और इतिहास में अपने पुत्र, यीशु मसीह के बारे में गवाही दी कि वे ही अनंत उद्धारकर्ता हैं, मैं सच्चे दिल से प्रार्थना करता हूँ—हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम पर, जिन्होंने दुनिया पर जीत हासिल की है—कि आप और मैं, त्रिएक परमेश्वर की पाप-क्षमा करने वाली कृपा का अनुभव करके, परमेश्वर के सच्चे और वफादार गवाह बनें। हम अपने पूरे जीवन और चरित्र के ज़रिए यीशु मसीह, जो परमेश्वर के एकलौते पुत्र हैं, के महिमामयी नाम को साहस के साथ प्रकट करें।

कृपया विश्वास की नज़रों से 1 यूहन्ना 5:9 और 10 के आखिरी हिस्सों को एक बार फिर सुनें। प्रेरित यूहन्ना गंभीरता से बताते हैं कि हमारे विश्वास की ठोस और अटूट नींव कहाँ है: "...परमेश्वर ने अपने पुत्र के बारे में गवाही दी है... क्योंकि उन्होंने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के बारे में दी है।" प्रेरित यूहन्ना—जो यूहन्ना का सुसमाचार, यूहन्ना की पत्रियाँ और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लेखक हैं—ने अपनी इन रचनाओं में लगातार और बार-बार "गवाह" (या "गवाही") शब्द का इस्तेमाल किया है; उन्होंने

लगभग 70 से 80 बार इस शब्द का प्रयोग किया है। सुसमाचार के बचाव में यूहन्ना द्वारा पेश की गई विशाल, शानदार और अदालत जैसी गवाहियों को—बाइबल की व्याख्या के आधार पर—सात अलग-अलग तरह के सबूतों की एक बेहतरीन कड़ी के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

(1) पहला है "परमेश्वर पिता की गवाही," जो उद्धार के इतिहास की मुख्य योजना को पूरा करते हैं।

परमेश्वर पिता ने ही व्यक्तिगत रूप से इतिहास के मंच पर अपनी मुहर लगाई और पुष्टि की कि नासरत के यीशु सिर्फ़ एक आदर्श इंसान नहीं, बल्कि अनंत उद्धारकर्ता हैं। यूहन्ना 5:37 का पहला हिस्सा इस दैवीय अधिकार की पुष्टि करता है: "और जिस पिता ने मुझे भेजा है, उसने खुद मेरे बारे में गवाही दी है..."

(2) दूसरा है "स्वयं मसीह पुत्र की गवाही," जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से अपने ईश्वरत्व और अपनी पहचान की घोषणा की। क्योंकि यीशु को अपनी अनंत और मूल सत्ता का पूरा ज्ञान था—उन्हें ठीक-ठीक पता था कि वे कहाँ से आए हैं और कहाँ जा रहे हैं—इसलिए उन्होंने अपनी प्रकृति की सच्चाई के बारे में मज़बूती से गवाही दी, भले ही इस दुनिया के आध्यात्मिक रूप से अंधे लोगों ने उनका मज़ाक उड़ाया। "यीशु ने उन्हें जवाब दिया, 'भले ही मैं अपने बारे में गवाही दूँ, मेरी गवाही सच है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ; लेकिन तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आया हूँ या कहाँ जा रहा हूँ'" (यूहन्ना 8:14)। (3) तीसरी गवाही उन कामों और "चमत्कारों (चिह्नों)" की है जो प्रभु ने अपनी सर्वोच्च शक्ति से किए।

प्रभु ने धरती पर जो भी अलौकिक काम किए, वे उनकी दिव्यता को साफ़ तौर पर दिखाने वाले ज़बरदस्त सबूत थे। अपने पिता के नाम पर उन्होंने जो अद्भुत काम किए, वे खुद ही मसीहा के तौर पर उनकी पहचान का साफ़ सबूत थे। "यीशु ने उनसे कहा, 'मैंने तुम्हें बताया, और तुम विश्वास नहीं करते। जो काम मैं अपने पिता के नाम पर करता हूँ, वे मेरे बारे में गवाही देते हैं'" (यूहन्ना 10:25)।

(4) चौथी गवाही "धर्मग्रंथों" की है, जिनमें पुराने नियम (Old Testament) की भविष्यवाणियाँ और ईश्वरीय संदेश पूरी तरह से शामिल हैं।

बाइबल सिर्फ़ शब्दों के शाब्दिक अध्ययन का ज़रिया या धर्म का दिखावा नहीं है। पुराने और नए नियमों (Old and New Testaments) का हर एक छोटा-सा हिस्सा अनंत सच्चाई का एक नियम है जो सिर्फ़ और सिर्फ़ पुत्र, यीशु मसीह की ओर इशारा करता है—और शानदार ढंग से उनके बारे में गवाही देता है। "तुम धर्मग्रंथों को खोजते हो क्योंकि तुम्हें लगता है कि उनमें तुम्हें अनंत जीवन मिलेगा; और वे ही मेरे बारे में गवाही देते हैं" (यूहन्ना 5:39)।

(5) पाँचवीं गवाही "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले (John the Baptist)" की है, जो मसीहा के लिए रास्ता तैयार करने के लिए जंगल में पुकारते थे।

यूहन्ना, जिन्हें परमेश्वर ने भेजा था, खुद ज्योति नहीं थे; बल्कि, वे एक वफ़ादार संदेशवाहक थे जिन्होंने—अपनी जान की बाज़ी लगाकर—यीशु मसीह (सच्ची ज्योति) का ऐलान किया और दुनिया के सामने उन्हें पेश किया, और सभी लोगों से आग्रह किया कि वे पुत्र पर विश्वास करें और अनंत जीवन पाएँ। "वह गवाह बनकर आया, ताकि ज्योति के बारे में गवाही दे, ताकि उसके ज़रिए सब विश्वास कर सकें" (यूहन्ना 1:7)। (6) छठी गवाही "प्रेरितों और चेलों" की है, जिन्होंने क्रूस और पुनरुत्थान को देखा और इस मकसद के लिए अपनी जान दे दी। चेलों की गवाही कोई अमूर्त दर्शन की बात नहीं थी। वे खून से सनी गवाहियाँ थीं—ऐसी घोषणाएँ जो उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी लगाकर की थीं—उस अनंत जीवन की सच्चाई के बारे में जिसे उन्होंने अपने हाथों से छुआ था और अपनी आँखों से साफ़-साफ़ देखा था: वह मुक्ति की कहानी कि पिता ने पुत्र को दुनिया के उद्धारकर्ता के रूप में भेजा। "वह जीवन प्रकट हुआ; हमने उसे देखा है और उसकी गवाही देते हैं, और हम तुम्हें उस अनंत जीवन के बारे में बताते हैं, जो पिता के साथ था और हमारे सामने प्रकट हुआ" (1 यूहन्ना 1:2); "हमने देखा है और गवाही देते हैं कि पिता ने अपने पुत्र को दुनिया का उद्धारकर्ता बनाकर भेजा है" (4:14)।

(7) सातवीं गवाही "पवित्र आत्मा परमेश्वर" की है, जो संतों के दिलों में वास करते हैं और क्रूस के प्रायश्चित की पुष्टि करते हैं।

आखिरकार, पवित्र आत्मा ही—जो सहायक और सच्चाई की आत्मा हैं—प्यार करने वाले पिता और सच्चे पुत्र द्वारा हासिल की गई मुक्ति की कृपा को हमारी आत्माओं पर लागू करते हैं; वही हैं जो तुरंत शैतान के आरोपों को कुचल देते हैं और हमारी सेवा को शक्ति देते हैं। "जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूँगा—सच्चाई की आत्मा जो पिता की ओर से निकलती है—तो वह मेरे बारे में गवाही देगा" (यूहन्ना 15:26)।

प्रेरित यूहन्ना की लिखी रचनाओं में सात गवाहियों की शानदार कड़ी है। इनमें सबसे अहम गवाही—जिसकी ओर 1 यूहन्ना 5:9 और 10 के आखिरी हिस्से इशारा करते हैं—बिना शक पहला स्तंभ है: "खुद परमपिता परमेश्वर की गवाही।" आयत 9 में, यूहन्ना इस ब्रह्मांडीय घोषणा को साफ-साफ बताते हैं: "...यह परमेश्वर की गवाही है कि उन्होंने अपने बेटे के बारे में गवाही दी है।" हमें पूरे आदर और श्रद्धा के साथ उस खास गवाही पर गौर करना चाहिए जो पूरे ब्रह्मांड के मालिक परमेश्वर ने इतिहास, समय और स्थान के बीच अपने सबसे प्यारे "बेटे" के बारे में दी है (आयत 9 और 10)। परमेश्वर ने हमारे—जो इसके लायक नहीं हैं—लिए अपने इकलौते बेटे यीशु के बारे में क्या गवाही दी है? इस अहम सवाल का सही सुसमाचार-आधारित जवाब पाने के लिए, हमें 1 यूहन्ना 5:1 और 5 में बताई गई महान सच्चाइयों को फिर से गहराई से समझना होगा—ये वे बातें हैं जिन पर हमने पहले भी आँसुओं और प्रार्थना के साथ मनन किया है। आयत 1 में, यूहन्ना ने मसीह के बारे में यह सच्चाई बताई: "जो कोई विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है...," और आयत 5 में, उन्होंने कहा, "...जब तक कोई यह विश्वास न करे कि यीशु परमेश्वर का बेटा है...," इस तरह उन्होंने प्रभु की पहचान से जुड़ी इन दो महान सच्चाइयों को आपस में साफ तौर पर जोड़ा। आज के वचन को इसी समानांतर ढांचे के नज़रिए से फिर से देखें। अगर आयत 9 और 10 में प्रेरित यूहन्ना ने साफ तौर पर परमेश्वर की गवाही के विषय को सिर्फ "अपना बेटा" (परमेश्वर का बेटा) बताया है, तो अब बस एक ही ज़रूरी सच्चाई बतानी बाकी रह जाती है कि यह बेटा ही असल में "मसीह" है। इस धर्म-संबंधी तर्क से सुसमाचार का सार बहुत साफ हो जाता है। परमपिता परमेश्वर द्वारा अनंत काल से तय की गई और आखिरकार इतिहास में पक्की और प्रमाणित की गई सबसे बड़ी गवाही यह शानदार सच्चाई है कि नासरत का यीशु—जो कुंवारी मरियम के ज़रिए सबसे साधारण जगह पर इंसानी रूप में आया—राजाओं का राजा है जिसने हमारे सारे पाप उठाए,

वह अनंत महायाजक है जिसने बीच की दीवार को हमेशा के लिए गिरा दिया, और वह सच्चा नबी है जिसने स्वर्ग के रहस्यों को पूरी तरह से ज़ाहिर किया; संक्षेप में, वही एकमात्र मसीह (मसीहा) है। सिर्फ़ वे लोग जो पवित्र आत्मा की रोशनी से इस ईश्वरीय पुष्टि पर पूरे दिल से विश्वास करते हैं और इसे मानते हैं, वे ही स्वर्ग के राज्य के सच्चे नागरिकों जैसा जीवन जी पाएँगे—ऐसा जीवन जो दुनिया पर जीत हासिल करता है।

तो फिर, परमेश्वर की इस "गवाही" का असल सार और ज़रिया क्या है, जिसके बारे में प्रेरित यूहन्ना आयत 9 में इतनी गंभीरता से बताते हैं? 1 यूहन्ना 5:6–12 की पवित्र सच्चाई में, प्रेरित यूहन्ना एक ज़बरदस्त और अटूट स्वर्गीय गवाही पेश करते हैं जिसके दो पहलू हैं।

(1) पहली शानदार गवाही आत्मा, पानी और लहू का तीन-गुना मेल है—एक ऐसी गवाही जिसे इतिहास की यादों में ईमानदारी से संजोकर रखा गया है। आयत 6 से 8 में लिखे शब्दों पर गहरे आदर के साथ सोचिए: "यही वह है जो पानी और लहू के ज़रिए आया—यीशु मसीह; सिर्फ़ पानी से नहीं, बल्कि पानी और लहू दोनों से। और आत्मा ही गवाही देती है, क्योंकि आत्मा ही सच्चाई है। क्योंकि तीन गवाही देने वाले हैं: आत्मा, पानी और लहू; और ये तीनों एक ही बात पर सहमत हैं" (रिवाइज़्ड न्यू कोरियन वर्शन)। "परमेश्वर का बेटा यीशु मसीह है, जो पानी और लहू के ज़रिए आया। वह सिर्फ़ पानी से नहीं आया, बल्कि पानी और लहू से आया। जो इस बात की गवाही देता है, वह पवित्र आत्मा है, क्योंकि पवित्र आत्मा खुद सच्चाई है। यहाँ तीन गवाह हैं: आत्मा, पानी और लहू। ये तीनों मिलकर गवाही देते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का बेटा है" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। प्रेरित यूहन्ना बताते हैं कि इतिहास में परमेश्वर ने अपने बेटे के बारे में जो महान गवाही कायम की है, उसका मुख्य आधार यह पक्का ऐतिहासिक सच है कि "परमेश्वर का बेटा यीशु मसीह है, जो पानी और लहू के ज़रिए आया।" इसके अलावा, यह पवित्र आत्मा ही है—जिसका मूल स्वभाव ही पूरी सच्चाई है—जो आज हमारे दिलों में प्रायश्चित की इस बहुत बड़ी और दिल को छू लेने वाली सच्चाई की पक्की गारंटी देती है और गवाही देती है। धर्मग्रंथ में यहाँ बताए गए तीन गवाह—आत्मा, पानी और लहू—किसी भी तरह से अलग-अलग और एक-दूसरे के उलट बातें करने वाली आवाज़ों का समूह नहीं हैं। जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्ज़न* (Contemporary Korean Version) साफ़ तौर पर बताता है, ये तीन शानदार गवाह पूरी तरह से "एकमत" हैं। वे इस एक सच पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि नासरत का यीशु जीवित परमेश्वर का पुत्र

है और एकमात्र मसीहा है जो पूरी मानवता का उद्धार करता है; इस तरह वे एक एकजुट और सुसंगत सुसमाचार का संदेश देते हैं। परमेश्वर ने हम अयोग्य लोगों को जो पक्का प्रमाण दिया है (पद 9–10), वह अस्पष्ट रहस्यवाद या इंसानी भावनाओं तक सीमित नहीं है। यह "पानी और लहू" से जुड़ी एक घटना है जो इंसानी समय और स्थान के बीच एक स्पष्ट छाप छोड़ते हुए आई; यह पवित्र आत्मा के हमारे भीतर सचमुच बसने का काम है, जो विश्वास करने वालों की अंतरात्मा और आत्मा में इस सच को एक अटूट विश्वास के रूप में पक्का करता है। हमें इतनी नादानी नहीं करनी चाहिए कि हम अपने विश्वास की नींव अपनी भावनाओं या हालात की बदलती रेत पर रखें। इसके बजाय, हमें अपने जीवन का लंगर मज़बूती से इस ठोस, तीन-गुना स्वर्गीय गवाही पर डालना चाहिए—जिसे स्वयं परमेश्वर पिता ने पानी और लहू के ज़रिए पक्का किया है और सच्चाई की पवित्र आत्मा ने उस पर मुहर लगाई है।

प्रेरित यूहन्ना द्वारा घोषित इस बात में—"परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह है, जो पानी और लहू के द्वारा आया"—हमें उद्धार के इतिहास में "पानी" और "लहू" के गहरे और कई पहलुओं वाले महत्व को समझना चाहिए।

आइए सबसे पहले "पानी" के धार्मिक अर्थ को समझें। यूहन्ना की पत्रियों में, प्रेरित यूहन्ना ने "पानी" शब्द का इस्तेमाल खास तौर पर इसी हिस्से में किया है—1 यूहन्ना 5:6 और 8। हालाँकि, जब हम उसी लेखक द्वारा लिखे गए यूहन्ना के सुसमाचार को देखते हैं, तो हमें इस छोटे से शब्द में छिपे गहरे स्वर्गीय रहस्य पता चलते हैं। यूहन्ना 1:26, 31 और 33 में, बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना ने गवाही दी है कि उसने जंगल में "पानी" से पश्चाताप का बपतिस्मा दिया था; इसके अलावा, यूहन्ना 3:22 और 4:12 के संदर्भों से पता चलता है कि यीशु ने खुद अपने चेलों के साथ मिलकर "पानी" से बपतिस्मा दिया था। बाइबल में, पानी मुख्य रूप से "शुद्धिकरण" और "पाप को धोने"—यानी भ्रष्ट मानवता की गंदगी को हटाने—का प्रतीक है। शुद्धिकरण के इस प्रतीक का आध्यात्मिक अर्थ उस शानदार घोषणा में पूरी तरह से स्पष्ट होता है जो यीशु ने निकोदेमुस से स्वर्ग के राज्य के बारे में की थी (निकोदेमुस रात में उनसे मिलने आया था)। यूहन्ना 3:5 में कहा गया है: "जब तक कोई जल और आत्मा से नया जन्म न ले, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" जैसा कि यहेजकेल 36:25–27 की भविष्यवाणी में भी दिखाया और पुष्टि की गई है, यहाँ बताए गए "जल और आत्मा" का अर्थ है नए जीवन (पुनर्जन्म) के लिए पूरी तरह से धोया जाना। इसमें परमेश्वर पवित्र आत्मा—जो सत्य की

आत्मा है—हमारे दिलों की सभी घृणित मूर्तियों और बुराइयों को धोकर उन्हें बर्फ़ की तरह शुद्ध कर देता है। इसके अलावा, जैसा कि यूहन्ना 4:13–14 में सामरी महिला के साथ बातचीत और यूहन्ना 7:37–39 में 'पर्व-कुटीर' (Feast of Tabernacles) के दौरान की गई घोषणा से पुष्टि होती है, जल "पवित्र आत्मा के वरदान" का भी प्रतीक है—जीवित जल की वह नदी जो भीतर से फूटती है, जिसे पुनर्जीवित यीशु मसीह अपने लोगों पर भरपूर मात्रा में बरसाते हैं। निष्कर्ष के तौर पर, यूहन्ना जिस "जल" की बात करते हैं, वह शुद्धिकरण के उस पवित्र कार्य को दर्शाता है जो पवित्र आत्मा की उपस्थिति के माध्यम से पापी के पूरे अस्तित्व को शुद्ध करता है।

तो फिर, उस "लहू" का क्या अर्थ है—जो इस जल के साथ ही आता है? हमने 1 यूहन्ना 1:7 के अंतिम भाग के माध्यम से इस लहू की अनंत शक्ति का गहरा अनुभव किया है: "...उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सभी पापों से शुद्ध करता है।" यूहन्ना 6:51–58 में स्वर्गीय पोषण के बारे में प्रभु की चौंकाने वाली घोषणा में, धर्मग्रंथ में बताए गए "लहू" का अर्थ यीशु मसीह की "आत्म-बलिदान वाली, प्रायश्चित करने वाली मृत्यु" है, जिसमें उनका शरीर पूरी तरह से क्षत-विक्षत हो गया था। यह एक आध्यात्मिक गवाही के रूप में कार्य करता है जो यह घोषित करता है कि इकलौते पुत्र के उस कष्टदायक कार्य के बिना—जिन्होंने अपना लहू बहाया और श्रापित वृक्ष पर अपने जीवन की शक्ति को अर्पित कर दिया—मानवता न तो पाप से शुद्ध होने की एक बूंद भी पा सकती थी और न ही स्वर्ग से अनंत जीवन का वरदान। लहू बहाए बिना पापों की क्षमा नहीं मिलती, और यीशु की मृत्यु के बिना पुनर्जन्म का आशीर्वाद नहीं मिल सकता।

यहाँ, हम यूहन्ना के धर्मशास्त्र (Johannine theology) में सबसे शानदार और अद्भुत आध्यात्मिक समानता में से एक को देखते हैं। यूहन्ना 19:34 के अनुसार, जब यीशु—जिन्हें महायाजकों की जलन के कारण क्रूस पर चढ़ाया गया था—प्राण त्याग चुके थे, तो एक सैनिक ने उनकी मौत की पुष्टि करने के लिए बेरहमी से एक तेज़ भाले से उनकी पसली में वार किया। धर्मग्रंथ इस पल को मानव इतिहास की सबसे असाधारण और दुखद घटनाओं में से एक बताते हैं: "...जब वे यीशु के पास आए और देखा कि वे पहले ही मर चुके हैं, तो उन्होंने उनकी टांगें नहीं तोड़ीं। इसके बजाय, एक सैनिक ने भाले से उनकी पसली में वार किया, और तुरंत

ही खून और पानी बह निकला" (पद 33–34)। यीशु के हृदय के घाव से बहने वाला वह पवित्र "खून और पानी" ही सुसमाचार का मूल सार है।

यह वह पल था जब ऐतिहासिक रूप से दो सच्चाइयों की पुष्टि हुई: पवित्र आत्मा का वरदान—जो हम अयोग्य लोगों पर ताज़गी भरी बारिश की तरह बरसा—प्रभु की उस कष्टदायक और प्रायश्चित करने वाली मृत्यु ("पानी") के कारण संभव हुआ; और क्रूस का प्रायश्चित—जिसने हमारी सभी बुरी निंदाओं को हमेशा के लिए मिटा दिया ("खून")। इसीलिए प्रेरित यूहन्ना, 1 यूहन्ना 5:8 के आज के अंश के माध्यम से, हम लोगों के सामने—जो पाखंड और नफ़रत के जाल में फंसी एक डगमगाती पीढ़ी में ठोकर खाते हैं—अंतिम जीत की इस शानदार और तीन-गुना गारंटी की घोषणा कर सके: "तीन हैं जो गवाही देते हैं: आत्मा, पानी और खून; और ये तीनों एक ही बात पर सहमत हैं" (संशोधित नया कोरियाई संस्करण)। "यहाँ तीन गवाह हैं: आत्मा, पानी और खून। ये तीनों गवाही देते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण)।

जब यीशु मसीह ने यरदन नदी में पानी से बपतिस्मा लिया, तो स्वर्ग खुल गया और परमेश्वर पिता की आवाज़ गूंजी, जिसमें कहा गया, "यह मेरा प्रिय पुत्र है"; और जब उन्होंने गोलगुथा में क्रूस पर अपना खून बहाया, तो पर्दा फट गया और प्रायश्चित का कार्य पूरा हो गया। इसके अलावा, पवित्र आत्मा—जो सच्चाई की आत्मा है—आज भी हमारी आत्माओं पर मुहर लगाती है और हमें भरोसा दिलाती है कि पानी और खून की ये घटनाएँ *हमारे लिए* परमेश्वर के पूर्ण प्रेम की अंतिम पुष्टि हैं। मैं प्रभु के नाम से पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करता हूँ कि आप इस मज़बूत, तीन-गुना गवाही को थामे रहें, हर दिन अपने भीतर के पाप पर जीत पाएँ—वह पाप जो कोयले के टुकड़े की तरह काला और भारी होता है—और परमेश्वर की सच्ची संतान के तौर पर जिएँ जो एक शानदार जीत का ऐलान करती है।

हमने पहले 1 यूहन्ना 5:1 में बताए गए दोबारा जन्म लेने के बुनियादी सिद्धांत पर गहराई से विचार किया है: "जो कोई विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से जन्मा है।" हमने सीखा कि "यीशु" नाम का अर्थ—जिसका मतलब है "यहोवा ही उद्धारकर्ता है"—उन्हें एकमात्र उद्धारकर्ता के रूप में दिखाता है जो

हम जैसे अयोग्य लोगों को पाप की बेड़ियों से छुड़ाते हैं। हमने "मसीह" (मसीहा) शब्द का अर्थ भी समझा, जिसका मतलब है "अभिषिक्त" (चुना हुआ): राजाओं का राजा जो धरती के सभी अधिकारों पर राज करता है, महायाजक जिसने हमेशा के लिए भेदभाव की दीवार को गिरा दिया, और सच्चा नबी जिसने स्वर्ग के रहस्यों को पूरी तरह से प्रकट किया। इसके अलावा, 1 यूहन्ना 5:5 के ज़रिए, हमने "इस विश्वास कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है" के गहरे महत्व को समझा। यह घोषणा कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, उनके अस्तित्व के बारे में एक पक्की बात थी—कि वे स्वयं सृष्टिकर्ता परमेश्वर हैं, और स्वभाव में पिता परमेश्वर के पूरी तरह बराबर हैं।

अब, आज के हिस्से (1 यूहन्ना 5:6–10) में, प्रेरित यूहन्ना हमें वह पक्का सबूत दिखाते हैं जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के बारे में दिया है। उद्धार के इतिहास में यह एक अटूट सच्चाई है कि परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह स्पष्ट रूप से "पानी और लहू" के द्वारा आए। हमें इस घटना—पानी और लहू के द्वारा उनके आने—की रहस्यमयी और उद्धार करने वाली शक्ति पर गहराई से सोचना चाहिए। इसे रोमियों 6 में बताए गए एकता के सिद्धांत से जोड़ना चाहिए, जो पौलुस की शिक्षाओं का मुख्य हिस्सा है: "इसलिए बपतिस्मा के द्वारा हम उनके साथ मृत्यु में दफ़नाए गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा से मरे हुओं में से जी उठाए गए, वैसे ही हम भी नए जीवन में चलें" (रोमियों 6:4)। इन शानदार और महत्वपूर्ण वचनों में बताए गए सुसमाचार का मुख्य अर्थ क्या है?

परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह की प्रायश्चित करने वाली मृत्यु ("लहू") के साथ जुड़कर पवित्र बपतिस्मा ("पानी") लेने का अर्थ है कि हमारा पूरा अस्तित्व रहस्यमयी और पूरी तरह से क्रूस पर यीशु के साथ जुड़ गया है और उनके साथ ही कब्र में दफ़ना दिया गया है। जैसा कि रोमियों 6:6 में बताया गया है, हमारा बुरा "पुराना स्वभाव"—जो कभी पैसे, वासना और नफ़रत का गुलाम था—यीशु मसीह के साथ पूरी तरह से क्रूस पर चढ़ाया गया और खत्म कर दिया गया। क्योंकि "पाप का शरीर"—वही ज़रिया जिसका इस्तेमाल शैतान ने हमें फँसाने के लिए किया था—पूरी तरह से खत्म और नष्ट कर दिया गया है, इसलिए हमें एक आध्यात्मिक आज़ादी मिली है; अब हम पाप की ताकत की बुरी गुलामी में जीने को मजबूर नहीं हैं। संक्षेप में, यीशु मसीह के कीमती लहू की खूबियों से जुड़कर—जो इतिहास में पानी और लहू के ज़रिए आए (1 यूहन्ना 5:6)—आप

और मैं अपनी पहचान में एक शानदार बदलाव से गुज़रे हैं: अब हम "पाप के लिए मरे हुए हैं, लेकिन मसीह यीशु में परमेश्वर के लिए जीवित हैं" (रोमियों 6:11)। जैसा कि रोमियों 6:22 का *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* साफ़ तौर पर कहता है, हम पाप की बेड़ियों से पूरी तरह आज़ाद हो गए हैं और पवित्र परमेश्वर के स्वेच्छा से सेवा करने वाले बन गए हैं। सिर्फ़ बाहरी दिखावे का पाखंडी नकाब उतारकर, अब हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में असल पवित्रता और भाईचारे वाले प्यार को अपनाते हैं; आज्ञाकारिता के इस रास्ते के आखिर में हमारा इंतज़ार करने वाला सबसे बड़ा फल स्वर्ग का कभी न खत्म होने वाला "अनंत जीवन" है। त्रिएक परमेश्वर द्वारा दी गई कानूनी पुष्टि और जुड़ाव की कृपा का सारांश बताते हुए—ये विषय रोमियों की पत्री की याद दिलाते हैं—प्रेरित यूहन्ना आज के हिस्से (1 यूहन्ना 5:11–12) में एक बहुत बड़ी, हमेशा रहने वाली घोषणा करते हैं जो हमारी आत्मा की गहराइयों को छू लेती है: "और गवाही यह है: परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया है, और यह जीवन उसके बेटे में है। जिसके पास बेटा है, उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का बेटा नहीं है, उसके पास जीवन नहीं है।"

(2) दूसरा, "परमेश्वर की गवाही" हमारे जीवन में "इंसानों की गवाही" के ज़रिए एक ठोस सच्चाई बन जाती है—एक ऐसी गवाही जो कलीसिया के इतिहास और प्रेरितों के जीवन-रक्त में लिखी हुई है।

परमेश्वर की एकदम सही पुष्टि का दूसरा ज़रिया—जिसे प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 5:6–12 में बताया है—हैरानी की बात है कि वे ऐतिहासिक लोग हैं जिन्होंने इतिहास में जीया और साँस ली; दूसरे शब्दों में, "इंसानों की गवाही"। आयत 9 में पाए गए अंतर पर ध्यान से सोचिए: "अगर हम इंसानों की गवाही को मानते हैं, तो परमेश्वर की गवाही उससे बड़ी है; क्योंकि परमेश्वर की गवाही यही है कि उसने अपने बेटे के बारे में गवाही दी है।" यहाँ, जॉन "इंसानों की गवाही"—एक ऐसा सबूत जिसे दुनिया में कानूनी मान्यता प्राप्त है—और "परमेश्वर की गवाही"—जिसे खुद सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर ने स्थापित किया है—के बीच एक स्पष्ट अंतर बताते हैं। वे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि अगर हम भरोसेमंद इंसानी गवाहों की बातों को कानूनी सच मानते हैं, तो पूरी दुनिया के मालिक परमेश्वर की कहीं ज़्यादा बड़ी और एकदम सही गवाही को ठुकराना कितना गंभीर और भयानक अपराध है।

तो फिर, "इंसानों की गवाही" की असल बात क्या थी जिसे शुरुआती चर्च के मानने वालों ने—जिन्हें यह पत्र सबसे पहले मिला था—देखा था, जिस पर भरोसा किया था और जिसे अपनाया था? 1 यूहन्ना 1:2 प्रेरितों से मिली उस खून से सनी गवाही की साफ़ सच्चाई को बताती है—जिसे यहाँ *Hyundai-inui Seonggyeong* (समकालीन कोरियाई संस्करण) में इस तरह बताया गया है: "यह जीवन दुनिया में आया है। मसीह को, जो अनंत जीवन हैं, खुद देखने के बाद, हम उनके बारे में गवाही देते हैं और आपको बताते हैं। वे पिता के साथ थे और हमारे सामने प्रकट हुए।" इस पत्र को पढ़ने वाले विश्वासियों को एक अनमोल तोहफ़ा मिला: बुज़ुर्ग प्रेरित यूहन्ना की पक्की, निजी गवाही—एक ऐसा व्यक्ति जो यीशु मसीह की छाती से सटा था, जिसने उनकी साँसों को महसूस किया था, और जिसने अपनी आँखों से क्रूस और पुनरुत्थान की महिमा को देखा था। इन प्रेरितों का लगातार प्रचार उस महान आज्ञा (Great Commission) को पूरा करना था—जिसे हमारे प्रभु ने स्वर्ग जाने से ठीक पहले जैतून के पहाड़ पर अपने शिष्यों के दिलों में एक जलते हुए तीर की तरह उतारा था—और जो प्रेरितों के काम 1:8 में दर्ज है: "लेकिन जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तो तुम्हें शक्ति मिलेगी; और तुम यरूशलेम में, और पूरे यहूदिया और सामरिया में, और धरती के छोर तक मेरे गवाह होगे।"

प्रेरित यूहन्ना एक अनुभवी आध्यात्मिक व्यक्ति थे, जो पवित्र आत्मा की शक्ति से पूरी तरह प्रभावित थे—वही आत्मा जो पेंटेकोस्ट के दिन मरकुस के घर के ऊपरी कमरे में उतरी थी। इंसानी जोश या महत्वाकांक्षा से नहीं, बल्कि अपने अंदर रहने वाले पवित्र आत्मा के अधिकार से प्रेरित होकर, उन्होंने बिना किसी दिखावे के उन संतों को—जिन्हें वे अपने बच्चों की तरह प्यार करते थे—परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के बारे में गवाही दी, जिन्हें उन्होंने खुद छुआ और देखा था। परमेश्वर ने इतिहास भर में ऐसे पवित्र आत्मा से भरे लोगों की सच्ची गवाहियों का इस्तेमाल एक पुल की तरह किया है, यह दिखाने के लिए कि उनका इकलौता बेटा, यीशु मसीह, ही सच्चा उद्धारकर्ता है; और आज भी, जब हम इन आखिरी दिनों में जी रहे हैं, वे कलीसिया के वफादार गवाहों के ज़रिए ज़बरदस्त तरीके से काम कर रहे हैं। आज, जब हम 1 यूहन्ना 5:10 में दी गई गहरी सच्चाई का सामना करते हैं, तो हमें एक गंभीर आध्यात्मिक मोड़ का पता चलता है जो पूरी इंसानियत की आत्माओं को साफ़-साफ़ दो हिस्सों में बाँट देता है: "जो कोई परमेश्वर के बेटे पर विश्वास करता है, उसके पास खुद में गवाही है; जो कोई परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता, उसने परमेश्वर को झूठा ठहराया है, क्योंकि उसने उस

गवाही पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने बेटे के बारे में दी है" (ESV)। प्रेरित यूहन्ना ने पहले ही दो पक्के ज़रियों के बारे में बताया था जिनसे परमेश्वर पिता ने—इतिहास के बीचों-बीच—यह पक्का किया कि उनका प्यारा बेटा, यीशु मसीह, ही इंसानियत का एकमात्र उद्धारकर्ता है, और साथ ही उनका राजा, महायाजक और नबी भी है। पहला ज़रिया था "आत्मा, पानी और लहू" की गवाही (पद 6–8)—एक ऐतिहासिक सच्चाई जिसने समय और जगह में अपने निशान छोड़े और त्रिएक परमेश्वर की मुहर का काम किया। दूसरा ज़रिया था "इंसानों की गवाही" (पद 9)—उन चेलों की लहू से सनी गवाही जो प्रभु की छाती से लगे रहते थे और जिन्होंने उनकी साँसों को महसूस किया और छुआ था। परमेश्वर ने पूरी दुनिया के सामने ये स्वर्गीय गवाहियाँ साफ़-साफ़ रखी हैं, जिनकी सच्चाई पक्की है। अब, पद 10 के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना बताते हैं कि जो इंसान परमेश्वर की इस गंभीर गवाही को सुनते हैं—एक ऐसी गवाही जो पूरे ब्रह्मांड को भरने के लिए काफ़ी है—उनके लिए कोई बीच का रास्ता या अस्पष्ट स्थिति नहीं है। सुसमाचार के सही पैमाने के सामने खड़े होकर, हर इंसान की ज़िंदगी साफ़ तौर पर—बिना किसी अपवाद के—दो आध्यात्मिक पहचानों में से एक में बँट जाती है। (1) पहला समूह—वे लोग जो बिना किसी शक के परमेश्वर की गवाही पर विश्वास करते हैं और अपनी आत्मा के भीतरी हिस्से में हमेशा की ज़िंदगी की शानदार गारंटी को संजोकर रखते हैं—वे और कोई नहीं बल्कि "वे लोग हैं जो परमेश्वर के बेटे पर विश्वास करते हैं।"

प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताए गए अटल पैमाने के सामने खड़े होकर, जो लोग सबसे पहले उद्धार की खुशी गाते हुए आगे आते हैं, वे "परमेश्वर के बेटे पर विश्वास करने वाले लोग" हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने परमेश्वर पिता की ओर से अपने पुत्र के बारे में दी गई स्वर्गीय गवाही पर पूरे दिल से "आमीन" कहा और उसे अपनाया; जैसा कि 1 यूहन्ना 5:1 और 4 में बताया गया है, वे "परमेश्वर से जन्मे हुए" लोग हैं। उनका नया जन्म इंसानी इच्छा या धार्मिक अच्छे कामों से नहीं हुआ था। यह प्यार का एक बहुत गहरा काम था—एक ऐसा काम जिससे नई ज़िंदगी मिली, जिसमें सच्चाई की पवित्र आत्मा ने हमारी मरी हुई आत्माओं में आकर नया जन्म दिया—और यह बदलाव का एक बहुत बड़ा काम था जिसने हमें खुलकर और पूरी तरह से यह विश्वास करने में मदद की कि नासरत का यीशु राजाओं का राजा और मसीह है। आज के वचन, 1 यूहन्ना 5:11 में प्रेरित यूहन्ना इस अद्भुत अनुग्रह के अंतिम लक्ष्य की शानदार पुष्टि करते हैं: "और गवाही यह है: कि परमेश्वर ने हमें अनंत

जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है" (NKJV)। "गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है" (Contemporary Korean Version)। सुसमाचार की यह कितनी दिल को छू लेने वाली घोषणा है!

इतिहास के बीच (पद 9-10) परमेश्वर पिता का अपने एकलौते पुत्र, यीशु मसीह के बारे में व्यक्तिगत रूप से गवाही देने का मुख्य उद्देश्य उन सभी लोगों को "अनंत जीवन" देना है जो उस पुत्र पर विश्वास और भरोसा करते हैं। प्रेरित यूहन्ना बताते हैं कि इस अनंत जीवन का निवास स्थान किसी अस्पष्ट शून्य या सांसारिक दर्शन में नहीं है, बल्कि यह पूरी तरह से "उनके पुत्र में"—यानी, स्वयं पुत्र यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्यों में—मौजूद है। वास्तव में, इस पत्र की शुरुआती आयतों (1 यूहन्ना 1:1-2) में, यूहन्ना ने उस बात की गवाही दी जिसे उन्होंने व्यक्तिगत रूप से देखा था; उन्होंने मसीह का वर्णन "शुरुआत से जीवन का वचन" और "वह अनंत जीवन जो हमारे सामने प्रकट हुआ" के रूप में किया। इस पत्र को पाने वालों को, असल में, अनंत जीवन की उसी सच्चाई का अनुभव मिला है—वह जीवन जिसे शिष्य ने अपनी आँखों से देखा और अपने हाथों से छुआ था। इसीलिए प्रेरित यूहन्ना 1 यूहन्ना 5:10 में साहसपूर्वक कह सके, "जो कोई परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, उसके भीतर ही वह गवाही मौजूद है।" विश्वासियों के दिलों में—वे लोग जो सत्य की पवित्र आत्मा के द्वारा नए सिरे से जन्मे और परिवर्तित हुए हैं और जिन्होंने एकलौते पुत्र को अपने उद्धारकर्ता के रूप में अपनाया है—एक अमिट छाप या मुहर होती है, जो उनके स्वर्गीय अनंत जीवन को प्रमाणित करती है—एक ऐसा प्रमाण जिसे दुनिया कभी छीन नहीं सकती: "जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके पास जीवन नहीं है" (पद 12)। क्योंकि हमने यीशु मसीह को—जो स्वयं अनंत जीवन हैं—हमेशा के लिए अपने दिलों के सिंहासन पर बिठाया है (पद 12, *समकालीन कोरियाई संस्करण*), इसलिए अब हम मृत्यु और दंड के भय से नहीं कांपते। आप परमेश्वर की सच्ची संतान बनें जो अनंत जीवन के इस महिमामयी राज्य का हिस्सा हैं और हर दिन धन्यवाद के गीत गाएं। (2) परमेश्वर की गवाही का विरोध करने वाले दूसरे समूह में "वे लोग शामिल हैं जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते"—ऐसे लोग जो अनंत जीवन की ज्योति को अस्वीकार करते हैं और सृष्टिकर्ता को घोर निंदा या अपमान की स्थिति में धकेल देते हैं।

प्रेरित यूहन्ना द्वारा घोषित उस कठोर और स्पष्ट मापदंड के सामने, हमारा सामना "उन लोगों" की कठोर सच्चाई से होता है जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते—वे लोग जो उनकी गवाही को पूरी तरह से नकार देते हैं। 1 यूहन्ना 5:10 के बीच वाले हिस्से पर गौर करें: "...जो कोई परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता, उसने उसे झूठा ठहराया है, क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के बारे में दी है।" इस गंभीर चेतावनी के भीतर, हमें उस जटिल मसीह-संबंधी समानांतर संरचना के सार को समझना होगा जिसे यूहन्ना ने तैयार किया है। संदर्भ की बारीकी से जांच करने पर एक ज़बरदस्त सवाल उठता है जिस पर गहराई से सोचने की ज़रूरत है:

(a) वाक्य की शुरुआत में "जो कोई परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है" कहने के बाद, प्रेरित यूहन्ना ने—"जो कोई पुत्र पर विश्वास नहीं करता" जैसे अपेक्षित विपरीत वाक्यांश का उपयोग करने के बजाय—जानबूझकर अपनी भाषा बदलकर "जो कोई परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता" क्यों कहा?

शब्दों के इस सूक्ष्म बदलाव में ईसाई धर्म के सबसे गहरे धार्मिक खजानों में से एक छिपा है। यूहन्ना द्वारा इन दो समूहों को इतनी सटीकता से एक समान मानने का असली कारण यह है कि पुत्र—यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र—स्वयं सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, जिसका अस्तित्व स्वयं से है। पुत्र को अस्वीकार करना केवल किसी नबी या ऐतिहासिक व्यक्ति को अस्वीकार करने जैसी नैतिक विफलता नहीं है; यह आध्यात्मिक दिवालियापन की स्थिति है—यह पूरी सृष्टि के सर्वोच्च शासक, पिता परमेश्वर के विरुद्ध सीधे तौर पर अवज्ञा का कार्य है। यूहन्ना 1:1 में, प्रेरित यूहन्ना ने पहले ही पुत्र यीशु के देवत्व को मज़बूती से स्थापित कर दिया था—जो समय और स्थान की रचना से पहले, अनंत काल से अस्तित्व में थे—इन शब्दों के साथ: "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" पवित्र 'वचन' (लोगोस) जिसके बारे में यूहन्ना यहाँ गवाही देते हैं, वे पुत्र यीशु मसीह हैं, जो हमारे बीच मनुष्य के रूप में आए। यूहन्ना बिना किसी समझौते के घोषणा करते हैं: "वचन परमेश्वर था।" इसके अलावा, स्वयं प्रभु ने यूहन्ना 10:30 में त्रिएक (Trinity) संबंधी महान घोषणा के माध्यम से इस शानदार मिलन के रहस्य की पुष्टि की: "मैं और पिता एक हैं।"

बाइबल में इस्तेमाल किया गया 'परमेश्वर का पुत्र' का शीर्षक किसी मानवीय पद या वंश को नहीं दर्शाता है। यह एक अस्तित्व-संबंधी घोषणा है—उनके वास्तविक स्वरूप के बारे में एक बयान—जो यह पुष्टि करता है कि पुत्र यीशु सार, महिमा और शक्ति में पिता परमेश्वर के साथ पूरी तरह से एक हैं, और वे स्वयं सृष्टिकर्ता परमेश्वर और अनंत जीवन हैं। इसलिए, जो कोई पुत्र पर विश्वास नहीं करता, वह पिता परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता; जो व्यक्ति परमेश्वर के पवित्र न्याय के विरुद्ध घोर निंदा का काम करता है, वह उस परमेश्वर का अपमान करता है जिसने इतिहास में पानी, लहू और पवित्र आत्मा के द्वारा अपने पुत्र के ईश्वरीय स्वरूप की पुष्टि की है। हमें मसीह के बारे में इस महान सत्य को अपनी आत्मा की गहराई में अच्छी तरह बसा लेना चाहिए।

(b) जो लोग परमेश्वर की गवाही को अस्वीकार करते हैं, वे ब्रह्मांड के रचयिता को 'झूठा' कहकर उनके विरुद्ध निंदा का भयानक पाप करते हैं, और वे अनंत जीवन से वंचित होकर आध्यात्मिक मृत्यु की स्थिति में रहते हैं। दूसरी सच्चाई जिसका हमें पूरे आदर और भय के साथ सामना करना चाहिए, वह उस घोर अपराध का स्वरूप है जो सुसमाचार को अस्वीकार करने वाले परमेश्वर के विरुद्ध करने का साहस करते हैं। प्रेरित यूहन्ना पद 10 में इसे स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं: "...जो कोई परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता, उसने परमेश्वर को झूठा ठहराया है, क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है।" एक सीमित प्राणी के लिए सर्वशक्तिमान रचयिता परमेश्वर को "झूठा" कहने का साहस करने का वास्तव में क्या अर्थ है? इस पत्र में पहले—विशेष रूप से 1 यूहन्ना 1:10 में—प्रेरित यूहन्ना ने पाखंड और झूठ की कैद में फंसी मानवता के पापपूर्ण स्वभाव के बारे में चेतावनी दी थी: "यदि हम दावा करते हैं कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम परमेश्वर को झूठा ठहराते हैं और उसका वचन हममें नहीं है।" परमेश्वर के सामने, जो पूर्ण ज्योति है और जिसमें ज़रा भी आध्यात्मिक अंधकार नहीं है (पद 5), यदि हम प्रभु के साथ पवित्र संगति का दावा तो करते हैं लेकिन पाप के अंधकारमय जीवन को छोड़ने में विफल रहते हैं, तो हम केवल झूठे हैं जो सच्चाई के अनुसार नहीं जीते हैं (पद 6)। फिर भी, प्रभु के सामने—जो धधकती आग जैसी आँखों से हृदय की जाँच करते हैं—खुद को विनम्र करने और ईमानदारी से अपने पापों को स्वीकार करने (पद 9) के बजाय, यदि हम बेशर्मी से यह ज़िद करते हैं कि "मुझमें कोई पाप नहीं है," तो हम न केवल खुद को धोखा दे रहे हैं (पद 8) बल्कि एक भयानक अपराध भी कर रहे हैं: निंदा करते हुए परमेश्वर को—जो पूरी

मानवता के पापों को उजागर करते हैं और प्रायश्चित का मार्ग प्रदान करते हैं—पूरी तरह से झूठा ठहरा रहे हैं। यह सिद्धांत मसीह-संबंधी विश्वास के क्षेत्र में भी आश्चर्यजनक सटीकता के साथ लागू होता है। यही कारण है कि प्रेरित यूहन्ना, आज के अंश (1 यूहन्ना 5:10) में, यह घोषणा करते हैं कि जो कोई परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता, उसने परमेश्वर को झूठा ठहराया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इंसान परमेश्वर की उस पवित्र घोषणा का मज़ाक उड़ाते हैं और उस पर विश्वास करने से इनकार करते हैं—जिसे आत्मा, पानी और लहू के ज़रिए, और प्रेरितों की साफ़, लहू-रंजित गवाहियों के माध्यम से पूरे ब्रह्मांड में इतिहास, समय और स्थान के बीच घोषित किया गया था—कि "यीशु, मेरा बेटा, ही एकमात्र मसीह और उद्धारकर्ता है।" जो लोग परमेश्वर द्वारा दिए गए पक्के भरोसे को ठुकरा देते हैं और उसे नकली मानकर खारिज कर देते हैं, वे सीधे तौर पर परमेश्वर के अस्तित्व और न्याय को नकार रहे होते हैं। बाइबल उन लोगों के लिए एक कठोर फ़ैसला सुनाती है जो यीशु मसीह के बारे में परमेश्वर की दी गई इस पक्की गवाही पर अविश्वास और विरोध करते रहते हैं। वे ऐसे लोग हैं जिनके दिलों में परमेश्वर का बेटा—जो अनंत जीवन है—नहीं है; संक्षेप में, वे "वे लोग हैं जिनके पास बेटा नहीं है" (5:12)। इसके अलावा, बाइबल अविश्वास करने वालों के समूह पर—जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर, यीशु मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं करते—एक भयानक आध्यात्मिक मौत की सज़ा सुनाती है: "जिसके पास बेटा है, उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का बेटा नहीं है, उसके पास जीवन नहीं है" (पद 12)। इस कथन का महत्व बहुत गंभीर है। यह घोषणा कि जिनके पास बेटा नहीं है, उनमें जीवन का अभाव है, उनकी आध्यात्मिक पहचान के बारे में एक दर्दनाक सच्चाई को उजागर करती है: वे "परमेश्वर से जन्मे" नहीं हैं (पद 1, 4), और न ही वे—किसी भी तरह से—ऐसे नए जीवन वाले व्यक्ति हैं जो पवित्र आत्मा द्वारा पूरी तरह से बदल दिए गए हैं। जैसा कि इफिसियों 2:1 का *कंटेम्पररी बाइबल* अनुवाद बताता है, वे शैतान के जाल, अवज्ञा और पाप की गंदगी के कारण लाश जैसी स्थिति में रहते हैं—आध्यात्मिक रूप से बेजान और ठंडे; नतीजतन, उनकी आत्माओं में अनंत जीवन की एक बूंद भी नहीं बह सकती। हमें खुद को ऐसी भयानक आध्यात्मिक कंगाली की स्थिति में नहीं पाना चाहिए। मैं प्रभु के नाम से पूरी ईमानदारी से प्रार्थना करता हूँ कि आप परमेश्वर की सच्ची संतान बनें—वे लोग जो पूरी तरह से विनम्र होकर परमेश्वर द्वारा अपने बेटे के बारे में दी गई उत्तम गवाही के सामने झुकते हैं, और जो अपने दिलों में बेटे का स्वागत करके रोज़ाना अनंत जीवन की अटूट दौलत का आनंद लेते हैं।

अब मैं इस मनन के समय को समाप्त करना चाहता हूँ। प्रियजनों, इस अंश के माध्यम से, प्रेरित यूहन्ना पूरे जोश के साथ गवाही देते हैं कि यीशु ही "मसीह" हैं—राजाओं के राजा, महायाजक और सच्चे भविष्यद्वक्ता—जिन्होंने मुझे पाप से बचाया (1 यूहन्ना 5:1), और वे जीवित "परमेश्वर के पुत्र" हैं जो पिता परमेश्वर के बिल्कुल समान हैं (पद 5)। यदि हम प्रेरित यूहन्ना और चेलों की सच्ची गवाही को खुशी-खुशी स्वीकार करते हैं—जिन्होंने अपनी आँखों से क्रूस और पुनरुत्थान की महिमा देखी थी—तो हमें परमेश्वर की उस "कहीं अधिक शक्तिशाली गवाही" को कितने आदर के साथ स्वीकार करना चाहिए जिसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने स्वयं इतिहास, समय और स्थान के बीच अंकित किया है? (पद 9; *समकालीन कोरियाई संस्करण*)। पिता परमेश्वर ने अपने प्रिय पुत्र के विषय में जो सबसे बड़ी गवाही दी है (पद 9), वह अत्यंत स्पष्ट है: नासरत का यीशु, जो साधारण मनुष्य के रूप में आए, वही एकमात्र मसीह और उद्धारकर्ता हैं जिनकी प्रतिज्ञा अनादि काल से की गई थी। परमेश्वर द्वारा स्थापित इस शानदार प्रमाण को "आत्मा, जल और लहू" के पवित्र त्रिविध मिलन के माध्यम से एक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में पूरी तरह से सिद्ध किया गया है। ये तीनों कभी भी अलग-अलग काम नहीं करते; बल्कि, वे सभी लगातार पूरी दुनिया को गवाही देते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं (पद 6–8; *समकालीन कोरियाई संस्करण*)। संक्षेप में, सुसमाचार के माध्यम से परमेश्वर जो गवाही देते हैं, उसका मुख्य सार यह है: परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह ने हमारे सभी पापों को अपने ऊपर ले लिया जब उन्होंने यरदन नदी में जल-बपतिस्मा लिया, और उन्होंने गोलगोथा में क्रूस पर स्वयं को बलिदान करते हुए प्रायश्चित की मृत्यु को पूरी तरह सहा, और बिना किसी संकोच के जल और लहू दोनों बहा दिए। इसके अलावा, पवित्र आत्मा—जो स्वयं सत्य हैं—आज हमारे हृदयों और अंतःकरणों पर मुहर लगाते हैं, और स्पष्ट रूप से हमें यह गारंटी देते और सिखाते हैं कि प्रभु की अत्यंत कष्टदायक मृत्यु के माध्यम से, हमें पवित्र आत्मा का वरदान ("जल" के समान) और पाप से हमेशा के लिए शुद्ध होने का उद्धार ("लहू" के समान) प्राप्त हुआ है—संक्षेप में, स्वर्ग का कभी न मुरझाने वाला "अनंत जीवन"।

परमेश्वर की इस भेदने वाली, न्यायपूर्ण गवाही के सामने खड़े होकर, हमें एक गंभीर और अंतिम निष्कर्ष का सामना करना होगा जो मानवता के भाग्य को दो रास्तों में विभाजित करता है। जो कोई इस शानदार स्वर्गीय गवाही को सुनता है, खुद को विनम्र बनाता है, और पूरे दिल से परमेश्वर के पुत्र पर भरोसा करता है (पद 10)—यानी, वह व्यक्ति जिसने "परमेश्वर के पुत्र को अपनी आत्मा के सिंहासन पर बिठाया है"—उसे हमेशा

का जीवन एक पक्की सच्चाई के रूप में मिलता है, जिससे सज़ा या न्याय का कोई भी डर तुरंत दूर हो जाता है (पद 13)। इसके विपरीत, जो लोग यीशु मसीह—जो परमेश्वर और पूरी दुनिया के मालिक हैं—के प्रायश्चित पर विश्वास करने से इनकार करते हैं और उसे ठुकरा देते हैं, वे एक बहुत बड़ा पाप करते हैं; परमेश्वर के स्वभाव और न्याय (जिसकी पुष्टि इतिहास में पानी और खून के ज़रिए हुई है) को पूरी तरह नकार कर, वे असल में बनाने वाले को "झूठा" ठहराते हैं, जो ईश्वर की निंदा करने का सबसे बड़ा काम है (पद 10)। उन "अविश्वासियों" के बारे में जिनके दिलों में परमेश्वर का पुत्र—जो हमेशा का जीवन है—नहीं रहता, बाइबल एक सख्त और साफ घोषणा करती है: क्योंकि उनकी आत्माएँ आध्यात्मिक रूप से मरी हुई होती हैं—पाप और आज्ञा न मानने की वजह से गंदी और मौत की हकदार ठंडी लाशें—इसलिए उनमें हमेशा के जीवन की एक बूंद भी नहीं बह सकती: "जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके पास जीवन नहीं है" (पद 12)। स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, हमें अब दिखावटी बातों और सिर्फ़ शब्दों के पाखंड को हिम्मत के साथ छोड़ देना चाहिए। आइए हम अपने विश्वास की नींव मनमानी भावनाओं या हालात के बदलते उतार-चढ़ाव पर न रखें; इसके बजाय, आइए हम अपने जीवन का लंगर पानी और खून के पक्के सुसमाचार पर मज़बूती से डालें—एक ऐसा सुसमाचार जिसकी पुष्टि खुद परमेश्वर ने की है और जिसकी गारंटी पवित्र आत्मा ने दी है। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम पर—जिन्होंने दुनिया को जीता और हमें हमेशा का जीवन दिया—दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसे पवित्र संत बनें जो हमेशा के जीवन के स्रोत, पुत्र का अपने दिलों में पूरा स्वागत करें; और जो अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी की असलियत में कामों और सच्चाई से अपने भाई-बहनों से सच्चा प्यार करके, पूरी दुनिया को हिम्मत के साथ दिखाएँ कि आपके पास सचमुच वह हमेशा का जीवन है जो परमेश्वर से मिलता है।

“तुम्हारे पास अनंत जीवन है।”

[1 यूहन्ना 5:13–21]

“मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, ताकि तुम जान सको कि तुम्हारे पास अनंत जीवन है। परमेश्वर के पास जाने में हमें यह भरोसा है: कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ भी माँगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। और यदि हम जानते हैं कि वह हमारी सुनता है—चाहे हम कुछ भी माँगें—तो हम जानते हैं कि जो हमने उससे माँगा है, वह हमें मिल गया है। यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते हुए देखता है जिससे मृत्यु नहीं होती, तो उसे प्रार्थना करनी चाहिए और परमेश्वर उसे जीवन देगा—मैं उनकी बात कर रहा हूँ जिनका पाप मृत्यु का कारण नहीं बनता। एक ऐसा पाप भी है जिससे मृत्यु होती है। मैं यह नहीं कह रहा कि उसके लिए प्रार्थना की जाए। हर गलत काम पाप है, और कुछ पाप ऐसे भी हैं जिनसे मृत्यु नहीं होती। हम जानते हैं कि जो परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप करता नहीं रहता; जो परमेश्वर से जन्मा है, वह उन्हें सुरक्षित रखता है, और दुष्ट उन्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकता। हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की संतान हैं, और पूरी दुनिया दुष्ट के नियंत्रण में है। हम यह भी जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आया है और उसने हमें समझ दी है, ताकि हम उसे जान सकें जो सच्चा है। और हम उसमें हैं जो सच्चा है—यानी उसके पुत्र, यीशु मसीह में। वही सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन है। प्यारे बच्चों, खुद को मूर्तियों से दूर रखो।”

प्रिय संतों, मैं इस संदेश की शुरुआत आपकी आत्माओं के लिए एक शानदार सवाल पूछकर करना चाहता हूँ—एक ऐसा सवाल जो हमारे मसीही विश्वास की गहराई तक उतरता है। सच में, बाइबल में बताए गए "अनंत जीवन" को आप क्या मानते हैं? जब हम परमेश्वर के समय—अनंत काल—और उद्धार के रहस्य पर विचार करते हैं, तो हमारा मन स्वाभाविक रूप से मसीही विश्वास की उस मुख्य आधारशिला की ओर मुड़ता है, जो पूरी मानवता के दिलों पर सबसे शानदार ढंग से अंकित है: यूहन्ना 3:16 की महान घोषणा: "क्योंकि परमेश्वर ने दुनिया से इतना प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, बल्कि अनंत जीवन पाए।" फिर भी, जब हम इन शब्दों से जुड़ी धार्मिक परिचितता को हटाकर, उस परमेश्वर के सामने इनके गहरे आध्यात्मिक महत्व का ईमानदारी से सामना करते हैं जो भस्म करने वाली आग के समान है, तो हमें खुद से एक गंभीर सवाल पूछना चाहिए: इस "अनंत जीवन" — इस शाश्वत अस्तित्व — का असली स्वरूप क्या है, जिसका बाइबल इतने गंभीर वादे के साथ ज़िक्र करती है?

सुसमाचार में बताए गए उद्धार की महान योजना में, बाइबल अनंत जीवन के रहस्य को एक अटूट आध्यात्मिक मोड़ से जोड़ती है: वह सच्चाई कि "जो कोई भी विश्वास करता है" — यानी जो यीशु मसीह (परमेश्वर के पुत्र) पर पूरी तरह भरोसा करता है और उन्हें अपने उद्धारकर्ता, राजा, महायाजक और आत्मा के नबी के रूप में स्वीकार करता है — उसे तुरंत यह अनंत जीवन मिल जाता है। यूहन्ना 3:16 का वचन हमें स्पष्ट रूप से सिखाता है: अनंत जीवन कोई ऐसा अस्पष्ट इनाम नहीं है जो दूर भविष्य में इंसानी नियमों के पालन, नैतिक सुधार या धार्मिक कर्मों के बदले मिलेगा। यह स्वर्ग से मिला एक सर्वोच्च और उत्तम "उपहार" है — जो यीशु मसीह में विश्वास के ज़रिए संतों को मुफ्त में दिया जाता है — और यह परमेश्वर पिता के प्रेम के विशाल, शुद्ध स्रोत से बहता है, जिन्होंने हम अयोग्य लोगों को बचाने के लिए अपने एकलौते पुत्र का जीवन बिना किसी संकोच के दे दिया।

जब हम 1 यूहन्ना अध्याय 5 की गहरी आध्यात्मिक बातों को विस्तार से समझते हैं, तो हमें एक सच्चाई को समझना होगा: प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताया गया अनंत जीवन समय और स्थान की कोई ऐसी अवधारणा नहीं है जो इस धरती पर हमारी आखिरी सांस लेने के बाद ही शुरू होती है। बल्कि, यह एक शानदार सच्चाई और एक पवित्र, सक्रिय शक्ति है — जो उसी पल शुरू हो जाती है जब हम यीशु मसीह का अपने दिलों में स्वागत करते हैं — जिसके ज़रिए स्वर्ग का अनंत DNA हमारे भीतर स्थापित हो जाता है, और हम पाप और नफ़रत

की दुनिया को विजयी होकर कुचलने और हर दिन एक बड़ी जीत की घोषणा करने में सक्षम हो जाते हैं। आइए, हम सुसमाचार के इस दिल को छू लेने वाले वादे के सामने खुद को पूरी तरह समर्पित करें, जो हमें अनंत जीवन की समृद्धि में आने का निमंत्रण देता है। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप हर तरह की सुस्ती और आलस को त्याग दें, पुत्र में छिपे उस अनंत जीवन की अद्भुत चौड़ाई, लंबाई, ऊँचाई और गहराई को पूरी तरह अपनाएँ, और सचमुच नए सिरे से जन्मे ऐसे बच्चे बनें जो हर दिन स्वर्ग के सुकून का आनंद लेते हैं। बाइबल बताती है कि पाप इतिहास में एक ही इंसान—इंसानियत के पूर्वज आदम—की घातक नाफ़रमानी से आया, और उस पाप की ताकत के सहारे "मौत" ने पूरी इंसानियत को निगल लिया (रोमियों 5:12)। जैसा कि प्रेरित पौलुस सख्ती से कहते हैं, पाप हमें जो एकमात्र सही सज़ा देता है, वह है भयानक "मौत" (6:23)। इस आध्यात्मिक निराशा की गंभीरता को समझने के लिए, हमें "मौत" के उन तीन आध्यात्मिक अर्थों का निडरता से सामना करना होगा—जिनकी पहचान बाइबल में की गई है।

पहला है "आध्यात्मिक मौत," यानी आत्मा का परमेश्वर—जो जीवन का स्रोत है—से पूरी तरह अलग हो जाना।

दूसरा है "शारीरिक मौत," वह पल जब सीमित इंसानी शरीर और आत्मा तय समय पर अलग हो जाते हैं।

तीसरा है "अनंत मौत" (दूसरी मौत)—आखिरी फैसले के बाद नरक की सज़ा के खौफ में डाल दिया जाना, और परमेश्वर से हमेशा और पूरी तरह अलग हो जाना।

फिर भी, सुसमाचार ने हमें इस तीन तरह की मौत की बेड़ियों में जकड़े हुए सड़ने के लिए नहीं छोड़ा। यीशु मसीह—वह एकमात्र इंसान जो हमारे अनंत कप्तान और "आखिरी आदम" के रूप में धरती पर आए—ने पूरी आज्ञाकारिता दिखाई, यहाँ तक कि श्रापित पेड़ पर मौत तक (1 कुरिन्थियों 15:45; फिलिप्पियों 2:8)। उस इकलौते बेटे के दिल को छू लेने वाले, बलिदानी प्रायश्चित के ज़रिए, हम—जो पूरी तरह अयोग्य थे—आखिरकार परमेश्वर की अदालत में धर्मी ठहराए गए हैं और हमारी स्थिति में एक बहुत बड़ा बदलाव आया है, जिससे हमें अनंत जीवन का आनंद लेने का सौभाग्य मिला है (रोमियों 5:18, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)।

रोमियों 6:23 के बाद वाले हिस्से का *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* अनुवाद इस शानदार बदलाव की गवाही गहरे जज़्बात के साथ देता है: "...परमेश्वर का मुफ्त तोहफा हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन है।"

तो फिर, उस शानदार "अनंत जीवन" के तीन गहरे अर्थ क्या हैं, जिसका आनंद वह विश्वासी लेता है जिसने यीशु मसीह का जीवन पाया है?

(1) पहला, अनंत जीवन का मतलब है यीशु मसीह के ज़रिए पूरे ब्रह्मांड के रचयिता, परमेश्वर पिता से पूरी तरह—ऊपर की ओर—जुड़े रहना। यह उसी सिद्धांत पर काम करता है जैसे माँ के गर्भ में एक नाज़ुक भ्रूण, जो एक अदृश्य गर्भनाल से माँ से मज़बूती से जुड़ा होता है; इस माध्यम से, यह सांस लेता है और जीवन और गति के लिए ज़रूरी सभी पोषक तत्व प्राप्त करता है। यीशु मसीह के ज़रिए—जो खुद जीवन हैं, जो हमेशा से मौजूद रहे हैं (1 यूहन्ना 1:2), और जो हमारी अटूट "अनंत गर्भनाल" के रूप में काम करते हैं—हम पवित्र परमेश्वर पिता के साथ जीवन-से-जीवन के स्तर पर मज़बूती से जुड़े हुए हैं; मिलन का यही रहस्य बाइबल में बताए गए अनंत जीवन का सार है (5:20)।

(2) दूसरा, अनंत जीवन एकमात्र सच्चे परमेश्वर और यीशु मसीह—जिन्हें उन्होंने भेजा है—के साथ एक घनिष्ठता—एक व्यक्तिगत पहचान—है।

हमारे उद्धारकर्ता यीशु ने क्रूस का सामना करने से पहले शांत एकांत में की गई अपनी महायाजकीय प्रार्थना में अनंत जीवन को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया: "अनंत जीवन यह है: कि वे आपको, एकमात्र सच्चे परमेश्वर को, और यीशु मसीह को, जिसे आपने भेजा है, जानें" (यूहन्ना 17:3)। यहाँ प्रभु द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द "जानना" (*यादा*) का अर्थ सतही ज्ञान या केवल धार्मिक सिद्धांतों से मन को भरने से कहीं अधिक है। इसका अर्थ है प्रेम का एक घनिष्ठ संबंध—जिसमें कर्मों और सच्चाई के माध्यम से प्रवेश किया जाता है—जहाँ पवित्र आत्मा (सत्य की आत्मा) के विस्तृत शासन और मार्गदर्शन में, कोई व्यक्ति रोज़ाना परमेश्वर पिता और उनके पुत्र यीशु मसीह के साथ जीवन की सांस साझा करता है (1 यूहन्ना 1:3)। केवल वे ही जो प्रभु से प्रेम करते हैं और उनकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, इस ज्ञान में प्रतिदिन बढ़ते हैं।

(3) तीसरा, अनंत जीवन एक स्वर्गीय वास्तविकता है जो प्रभु के दूसरे आगमन की सुबह पूरी होगी, जब वे बादलों पर महिमा के साथ लौटेंगे। यदि हम प्रभु की वापसी के उस विजयी दिन तक शरीर में जीवित रहते हैं, तो हम पलक झपकते ही महिमामय, अविनाशी आध्यात्मिक शरीरों में बदल जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:52–53)। वैकल्पिक रूप से, यदि उस दिन के आने से पहले ही हमने अपना सांसारिक डेरा छोड़ दिया है और मिट्टी में मिल गए हैं, तो हमारी शुद्ध आत्माएँ—जो स्वर्गलोक में विश्राम कर रही हैं—प्रभु की शक्ति से तेजस्वी आध्यात्मिक शरीरों के साथ पूरी तरह से फिर से जुड़ जाएंगी; वे पुनरुत्थान के पहले फल होंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:14–16)। इस तरह, हम आखिरकार नए स्वर्ग और नई पृथ्वी—यानी अनंत राज्य—में प्रवेश करेंगे, जहाँ अंधेरे, झूठ और नफ़रत से उपजे आँसुओं का हर निशान मिट जाएगा, और जहाँ हम हमेशा त्रिएक परमेश्वर के साथ आमने-सामने रहेंगे; यह ब्रह्मांडीय पूर्णता उस शानदार आशा की पराकाष्ठा है जिसका वादा अनंत जीवन से किया गया है (प्रकाशितवाक्य 21:1)।

फिर भी, प्रिय संतों, जब हम यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानते हैं और यह घोषित करते हैं कि हमें अनंत जीवन मिला है, तो हमें इस जीवन के बारे में अपनी समझ को कभी भी किसी अस्पष्ट चीज़ तक सीमित नहीं रखना चाहिए—जैसे कि यह केवल दूर के परलोक या हमारे सांसारिक शरीर के खत्म होने के बाद मिलने वाली कोई चीज़ हो। सुसमाचार का मूल सत्य अद्भुत है: अनंत जीवन केवल दूर के भविष्य का कोई हिस्सा नहीं है; यह एक स्वर्गीय वास्तविकता है जिसका अनुभव हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में ही करते हैं—आंशिक रूप से लेकिन स्पष्ट रूप से—पवित्र आत्मा की शक्ति से और यीशु मसीह में, जो स्वयं अनंत जीवन हैं। आज मुझमें समाया हुआ वचन का सामर्थ्य और अपने साथी विश्वासियों के प्रति गहरे प्रेम का इज़हार इस बात का सबसे शक्तिशाली और वर्तमान प्रमाण है कि अनंत जीवन मेरे भीतर बह रहा है। पूरी बाइबल में, प्रेरित यूहन्ना द्वारा लिखा गया यूहन्ना का सुसमाचार वह सबसे समृद्ध स्रोत है जहाँ "अनंत जीवन" शब्द सबसे प्रमुखता और गहराई से आता है। इस अनंत जीवन के रहस्य को अधिक मौलिक स्तर पर समझने के लिए, हमें पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखे गए मूल ग्रीक पाठ के संदर्भ में गहराई से जाना होगा। ग्रीक में, अनंत जीवन को *ज़ोए आयोनियोस* (Zoe Aionios) कहा जाता है। यह एक शानदार, स्वर्गीय अभिव्यक्ति है जो *ज़ोए*—जिसका अर्थ है "जीवन"—और विशेषण *आयोनियोस*—जो अनंत दिव्यता को दर्शाता है—के पूर्ण मिलन

से बनी है। धर्मशास्त्रीय और भाषाई दोनों दृष्टियों से, *ज़ोए आयोनियोस* हमारे लिए दो विशाल आध्यात्मिक क्षितिज खोलता है।

पहला, मात्रात्मक आयाम में, यह ऐसे जीवन को दर्शाता है जो हमेशा बना रहता है और कभी खत्म नहीं होता।

दूसरा, गुणात्मक आयाम में, यह एक ऐसे दिव्य जीवन को दर्शाता है जो मानवता के सीमित और भ्रष्ट जीवन से पूरी तरह अलग है।

दूसरे शब्दों में, अनंत जीवन का विचार दो खास आशीषों को बहुत अच्छे से समेटे हुए है: एक तो *स्थायित्व* की आशीष—ऐसा जीवन जो हमेशा बना रहता है और मृत्यु के बाद भी चलता रहता है—और दूसरी *विशिष्टता* की आशीष—एक ऐसा दिव्य जीवन जो त्रिएक परमेश्वर के साथ साझेदारी में मिलता है, जिसमें हम उनके पवित्र स्वभाव में शामिल होते हैं और उसका आनंद लेते हैं। जहाँ सिनॉप्टिक सुसमाचार (मत्ती, मरकुस और लूका) मुख्य रूप से अनंत जीवन को आने वाले जीवन में मिलने वाली एक अंतिम आशीष के रूप में दिखाते हैं, वहीं यूहन्ना का सुसमाचार अनंत जीवन की "वर्तमान वास्तविकता" पर बहुत ज़ोर देता है। यूहन्ना की लिखी बातों का शानदार संदेश साफ़ है: जो लोग परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं और उन्हें अपना उद्धारकर्ता मानते हैं, उनके पास अनंत जीवन "अभी" है—सिर्फ़ भविष्य में नहीं (यूहन्ना 5:24)—और वे इस धरती के जीवन की कठोर वास्तविकताओं के बीच भी प्रभु के साथ चलते हुए इन स्वर्गीय आशीषों का भरपूर आनंद ले सकते हैं। तो फिर, अनंत जीवन की वे कौन-सी ठोस आशीषें हैं जिनका अनुभव और आनंद हम, परमेश्वर की नई संतान के रूप में, पाप और नफ़रत से भरी इस अंधेरी दुनिया में *अभी* ले सकते हैं? यूहन्ना के सुसमाचार और उसकी पत्रियों में बताई गई बातों को समझने पर, हमें अनंत जीवन की महान वास्तविकता के कम से कम तीन पहलू मिलते हैं—ऐसी वास्तविकताएँ जिनका अनुभव हमें अपने रोज़मर्रा के जीवन में उतनी ही सहजता से करना चाहिए जितनी सहजता से हम साँस लेते हैं।

(1) अनंत जीवन की पहली आशीष है "पवित्रीकरण"—त्रिएक परमेश्वर के साथ गहरे, व्यक्तिगत संगति के ज़रिए यीशु मसीह के दिव्य स्वभाव जैसा बनना।

वर्तमान में हम जिस अनंत जीवन का आनंद लेते हैं, वह न तो कोई काल्पनिक विचार है और न ही कोई सिर्फ़ थ्योरी। यह परमेश्वर पिता, उनके पुत्र यीशु मसीह और हमारे भीतर रहने वाले पवित्र आत्मा के साथ एक वास्तविक संगति—साँस की साझेदारी—है (यूहन्ना 17:3)। इस गहरे आध्यात्मिक बंधन में, परमेश्वर हमें ऐसे लोगों के रूप में नहीं ढालते जो सांसारिक वासनाओं में डूबे रहकर विनाश की ओर बढ़ रहे हों, बल्कि हमें एक शानदार दिव्य स्वभाव के प्रतिनिधि के रूप में ढालते हैं जो सृष्टिकर्ता की पवित्रता को दर्शाता है। *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* में 2 पतरस 1:4 का अनुवाद देखें: "इसके द्वारा, मसीह ने हमें अनमोल और महत्वपूर्ण वादे दिए हैं; इन वादों के ज़रिए, उन्होंने आपको दुनिया की विनाशकारी वासनाओं से बचने और दिव्य स्वभाव में शामिल होने के योग्य बनाया है।" दूसरे शब्दों में, शानदार अनंत जीवन का सार—जिसका स्वाद हम आज यीशु मसीह में थोड़ा-बहुत चखते हैं—यीशु के कोमल और विनम्र स्वभाव के अनुरूप रोज़ाना ढलने की प्रक्रिया है, क्योंकि सच्चाई की पवित्र आत्मा पवित्रीकरण की शुद्ध करने वाली भट्टी में हमारे "पुराने स्वभाव" के दिखावे और ज़िद को जलाकर खत्म कर देती है।

(2) अनंत जीवन का दूसरा आशीर्वाद "प्रेम का जीवन" है जो हमारे रोज़मर्रा के जीवन में स्वर्ग की अनंत खुशी को दिखाता और प्रकट करता है।

परमेश्वर के *अगापे* (निस्वार्थ) प्रेम से प्रेरित होकर—जो पवित्र आत्मा के महान कार्य के द्वारा हमारे दिलों में झरने की तरह बहता है (रोमियों 5:5)—हम परमेश्वर की सर्वोच्च आराधना करते हुए (ऊपर की ओर) और अपने साथी विश्वासियों से अपने समान प्रेम करते हुए (बगल में) जीते हैं; ऐसा करते समय, स्वर्ग की शानदार खुशी विश्वासी की आत्मा के केंद्र से उमड़ती है। जिन ईसाइयों में अनंत जीवन की सच्ची जीवंतता होती है, वे आज्ञाओं को भारी बोझ नहीं मानते, बल्कि खुशी-खुशी राजा के नियम को मानते हैं। वे अपने जीवन की वेदी पर प्रभु की महान दोहरी आज्ञा को पूरी तरह से निभाते हैं: अपने पूरे दिल, आत्मा और मन से अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना (मत्ती 22:37, 39)। जैसा कि यूहन्ना 3:36 के पहले भाग में कहा गया है, "जो कोई पुत्र पर विश्वास करता है, उसे अनंत जीवन मिल चुका है।" हम मरने के बाद ही स्वर्ग के नागरिक नहीं बनते; बल्कि, शानदार स्वर्गीय राज्य के नागरिकों के रूप में (फिलिप्पियों 3:20), हम एक पवित्र स्वर्गीय जीवन का आनंद लेते हुए—थोड़ा-बहुत लेकिन शक्तिशाली रूप

से—आगे बढ़ते हैं, जहाँ परमेश्वर का प्रेमपूर्ण शासन महसूस होता है, ठीक यहीं उन रोज़मर्रा के संघर्षों के बीच जहाँ हम कदम रखते हैं। यही उस "अपने उद्धार को सिद्ध करने" के जीवन का सार है जिसे प्रेरित पौलुस ने हमें डर और कांपते हुए अपनाने के लिए कहा था (फिलिप्पियों 2:12); यह अनंत जीवन का एक वास्तविक जीवन है जो पूरी दुनिया को साबित करता है—अपने पड़ोसियों को अपनाकर—कि हमारे भीतर अनंत जीवन काम कर रहा है।

(3) अनंत जीवन का तीसरा आशीर्वाद "अलौकिक स्वर्गीय शांति" है जो दुनिया के उग्र तूफानों और कठोर परिस्थितियों पर जीत हासिल करती है। हम जिस पीढ़ी में जी रहे हैं, वह एक बंजर ज़मीन की तरह है जहाँ युद्ध, अकाल, बीमारी और नफ़रत की लहरें लगातार टकराती रहती हैं, और जहाँ सच्ची शांति का एक सेंटीमीटर भी नहीं है। फिर भी, शांति-रहित इस दुनिया में भी, जो लोग मानते हैं कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं—और इस तरह जीवन की एक डोर से उनसे मज़बूती से जुड़े हैं—वे इस धरती पर रहते हुए "परमेश्वर की अलौकिक शांति" का वास्तविक अनुभव करते हैं; यह अनंत जीवन का एक शानदार फल है जिसे दुनिया न तो दे सकती है और न ही समझ सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि शैतान चाहे हमारे हालात को कितना भी हिला दे या नफ़रत के जाल से हमें गिराने की कोशिश करे, हमारे भीतर रहने वाली पवित्र आत्मा मसीह की शांति के साथ हमारे दिलों और दिमागों की मज़बूती से रक्षा करती है। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप परमेश्वर की सच्ची संतान बनें—शांति का यह अटूट किला बनाएँ, दुनिया पर जीत पाने के लिए विश्वास की ढाल उठाएँ, और अपने पूरे अस्तित्व के ज़रिए अनंत जीवन की समृद्धि का गुणगान करें।

जब हम प्रेरित यूहन्ना द्वारा आँसुओं के साथ लिखे गए 1 यूहन्ना के गहरे अर्थों को ध्यान से समझते हैं, तो हमें उस शक्तिशाली आध्यात्मिक धड़कन का पता चलता है जो पूरी पत्री का आधार है: "अनंत जीवन।" इस पत्र में, इस शानदार शब्द का कम से कम छह बार गंभीरता से ज़िक्र किया गया है। छह अंशों की इस पवित्र कड़ी के माध्यम से, प्रेरित यूहन्ना एक बहुआयामी गवाही देते हैं कि कैसे एक शानदार रास्ते से अनंत जीवन हमारे भीतर एक जीवंत, वर्तमान वास्तविकता के रूप में स्थापित हो गया है।

(1) पहला, अनंत जीवन "यीशु मसीह का प्रकट होना" है, जो इतिहास के बीच एक व्यक्ति के रूप में सामने आए।

यूहन्ना अमूर्त दर्शन और अस्पष्ट रहस्यवाद को नकारते हैं। जिस अनंत जीवन की वे घोषणा करते हैं, वह स्वयं पुत्र, यीशु मसीह का अवतार है—वही जिसे चेलों ने अपने हाथों से छुआ और अपनी आँखों से साफ़-साफ़ देखा। "यह जीवन दुनिया में प्रकट हुआ। मसीह को व्यक्तिगत रूप से देखकर, जो अनंत जीवन हैं, हम उनके बारे में गवाही देते हैं और आपको बताते हैं। वे पिता के साथ थे और हमारे सामने प्रकट हुए" (1 यूहन्ना 1:2, *समकालीन कोरियाई संस्करण*)।

(2) दूसरा, अनंत जीवन "अनंत वाचा का वादा" है जिसे सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ स्थापित किया है। हम जिस जीवन का आनंद लेते हैं, वह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो हालात या माहौल के अनुसार बदलती रहती है। यह एक पक्के वादे का नतीजा है—एक सच्चे परमेश्वर द्वारा संतों को हमेशा के लिए दी गई गारंटी, जिसकी नींव मसीह का कीमती लहू है। "और यही वह वादा है जो उसने हमसे किया है—अनंत जीवन" (2:25)।

(3) तीसरा, अनंत जीवन भाईचारे के प्यार से दिखने वाला एक "शक्तिशाली, वर्तमान-काल का सबूत" है—यानी धरती पर साथ विश्वास करने वालों को ऐसे अपनाना जैसे वे खुद हम ही हों।

यह पक्का करने का सबसे सही तरीका कि क्या मैं सच में मौत के साये से निकलकर एक नई स्वर्गीय रचना बन गया हूँ, वह है अपने साथ विश्वास करने वालों के प्रति प्यार दिखाना। सिर्फ़ वही लोग अनंत जीवन पाते हैं जिनके ज़रिए प्यार बहता है। "हम जानते हैं कि हम मौत से जीवन में आ गए हैं क्योंकि हम भाइयों से प्यार करते हैं। जो अपने भाई से प्यार नहीं करता, वह मौत में ही रहता है" (3:14, *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल*)।

(4) चौथा, अनंत जीवन एक "खास स्वर्गीय तोहफ़ा" है जिसे परमेश्वर ने पूरी तरह से अपने बेटे के व्यक्तित्व और काम में रखा है।

परमेश्वर का अनंत जीवन का बहुत बड़ा आशीर्वाद—जो पूरी दुनिया को भरने के लिए काफ़ी है—सिर्फ़ एक ही ज़रिया में छिपा है: यीशु, परमेश्वर का बेटा। इसलिए, सिर्फ़ वे लोग ही स्वर्गीय लोग हैं और सच्चा जीवन

पाते हैं जिनके दिलों के सिंहासन पर परमेश्वर का बेटा रहता है। "और गवाही यह है: कि परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया है, और यह जीवन उसके बेटे में है। जिसके पास बेटा है, उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का बेटा नहीं है, उसके पास जीवन नहीं है" (5:11–12, *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल*)।

(5) पाँचवाँ, अनंत जीवन "मुक्ति का भरोसा" है, और यही वह मुख्य मकसद था जिसके लिए प्रेरित यूहन्ना ने यह पत्र लिखा था। यूहन्ना के इस पत्र को लिखने—जिसे उन्होंने आँसुओं के साथ लिखा था—के पीछे मुख्य मकसद यह पक्का करना था कि धोखे के दौर में जी रहे विश्वास करने वाले अब सज़ा के डर से डगमगाएँ या काँपें नहीं, बल्कि साफ़ तौर पर समझें और अपने अंदर बह रहे अनंत जीवन का भरोसा रखें। "मैं यह इसलिए लिख रहा हूँ ताकि तुम जो परमेश्वर के बेटे पर विश्वास करते हो, जान सको कि तुम्हारे पास अनंत जीवन है" (5:13, *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल*)। (6) छठी बात, अनंत जीवन की परम सच्चाई स्वयं यीशु मसीह ही हैं—जो सच्चे परमेश्वर हैं।

मसीह के बारे में उस आखिरी और शानदार घोषणा पर गौर करें जिसके साथ यूहन्ना अपना पत्र समाप्त करते हैं। अनंत जीवन केवल आध्यात्मिक अवस्थाओं या अमूर्त विचारों से कहीं बढ़कर है; यह यीशु मसीह की महिमामयी दिव्यता है—वे पुत्र जिन्होंने हमें ईश्वरीय समझ दी और हमें हमेशा के लिए पिता परमेश्वर से जोड़ दिया। "लेकिन परमेश्वर के पुत्र आए हैं और उन्होंने हमें समझ दी है ताकि हम सच्चे परमेश्वर को जान सकें। और इसलिए, हम सच्चे परमेश्वर में और उनके पुत्र, यीशु मसीह में हैं। यीशु मसीह ही सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन हैं" (5:20, *Contemporary Korean Bible*)।

प्रिय संतों, अनंत जीवन की इन छह शानदार घोषणाओं को देखें जिन्हें प्रेरित यूहन्ना ने अपने पूरे पत्र में बहुत बारीकी से पिरोया है। अनंत जीवन कोई ऐसी अस्पष्ट चीज़ नहीं है जो हमें केवल दूर भविष्य में, यानी इस दुनिया से जाने के बाद मिलेगी। बल्कि, यह वर्तमान के लिए एक शक्तिशाली शक्ति है—जो हमें एक जीवन-रेखा (वचन 20) के ज़रिए 'अनंत जीवन' यीशु मसीह से मज़बूती से जोड़ती है—और हमें आज की उथल-पुथल भरी दुनिया में भी शैतान के धोखों को परमेश्वर के वचन की तलवार से कुचलकर निर्णायक जीत हासिल

करने में सक्षम बनाती है। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं अनंत जीवन के इस अटूट भरोसे पर मज़बूती से खड़े रहें और हर दिन स्वर्ग की भरपूर शांति का आनंद लें।

जब मैंने प्रार्थना की शांति में 'अनंत जीवन' के उन छह शानदार स्तंभों की गहराई से तुलना और व्याख्या की, जो 1 यूहन्ना के पूरे संदर्भ में मजबूती से मौजूद हैं, तो मुझे एक बहुत बड़ी लेकिन जटिल साहित्यिक तकनीक का पता चला जिसने मेरी आत्मा को गहराई से झकझोर दिया। मुझे एहसास हुआ कि प्रेरित यूहन्ना ने इन छह आयतों को बस यूं ही नहीं लिखा था; बल्कि, उन्होंने उन्हें एक *काइएज़्म* (जिसे "सैंडविच संरचना" भी कहा जाता है) के शानदार ढांचे में व्यवस्थित किया था—एक ऐसी शैली जिसमें दोनों पक्ष गणितीय सटीकता के साथ सत्य के शिखर की ओर मिलते और जुड़ते हैं। इस अद्भुत धार्मिक समानता को एक नज़र में देखने और इसे अपने दिल में बसाने के लिए, मैंने अपनी पादरी की नोटबुक में "अनंत जीवन का काइएज़्म" का शानदार आरेख बनाना शुरू किया। (A) (1:2) अनंत जीवन का प्रकट होना ➔ "मसीह, जो अनंत जीवन है"
(1) (2:25) अनंत जीवन का वादा ➔ "जो वादा उन्होंने हमसे किया... वह अनंत जीवन है"
(a) (3:14) अनंत जीवन का आंतरिक भरोसा ➔ "क्योंकि हम भाइयों से प्रेम करते हैं... हम जानते हैं कि हमारे पास अनंत जीवन है"
(a') (5:11–12) अनंत जीवन का बाहरी भरोसा ➔ "परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया... जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है"
(1') (5:13) अनंत जीवन की निश्चितता ➔ "मैं यह इसलिए लिख रहा हूँ ताकि आप जान सकें कि आपके पास अनंत जीवन है"
(A') (5:20) अनंत जीवन के बारे में निष्कर्ष ➔ "यीशु मसीह सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन है"

जब मैं अनंत जीवन के बारे में इस रहस्यमय "काइएज़्म" चार्ट के सामने खड़ा हुआ—जो "सैंडविच" आयतों के संबंधित जोड़ों को एक साथ जोड़ता और समझाता है—तो मुझे सुसमाचार का शानदार सार दिखाई दिया। जब बाहरी ढांचे के तत्व (A) और (A'), आंतरिक संरचनात्मक तत्व (1) और (1'), और सबसे अंदर के मुख्य तत्व (a) और (a') को उनकी समान प्रकृति के अनुसार जोड़ा जाता है, तो प्रेरित यूहन्ना के तीन शक्तिशाली, मुख्य संदेश—जो हमारे लिए हैं क्योंकि हम इन अंतिम समयों से गुजर रहे हैं—पूरी स्पष्टता और हर विवरण

में सटीकता के साथ सामने आते हैं। (1) पहला, यीशु मसीह—जो सच्चे परमेश्वर हैं—स्वयं "अनन्त जीवन" हैं [(A) (1:2) और (A') (5:20)]।

प्रेरित यूहन्ना अनन्त जीवन का वर्णन किसी अस्पष्ट अवस्था या अमूर्त विचार के रूप में नहीं करते हैं। 1 यूहन्ना की शुरुआत में, लेखक ने घोषणा की कि यीशु मसीह—जिन्हें चेलों ने अपनी आँखों से देखा और अपने हाथों से छुआ—अनन्त जीवन हैं (1:2); और पत्री के बिल्कुल अंत में, उन्होंने मसीह के बारे में एक घोषणा (5:20) के साथ इस बात पर ज़ोर दिया कि केवल यीशु मसीह ही सच्चे परमेश्वर और अनन्त जीवन हैं। हमारा अनन्त जीवन एक ईश्वरीय वास्तविकता है जो पूरी तरह से यीशु के पवित्र व्यक्तित्व में निहित है, जो सच्चे परमेश्वर हैं।

(2) दूसरा, यीशु, जो अनन्त जीवन हैं, उन्होंने व्यक्तिगत रूप से हमें अनन्त जीवन का वादा किया और उस वादे को ईमानदारी से पूरा किया; इस प्रकार, एकमात्र पुत्र पर विश्वास करके, हम "अभी, इसी क्षण" अनन्त जीवन के अधिकारी बन जाते हैं [(1) (2:25) और (1') (5:13)]।

प्रभु ने हमसे जो वादा किया है, वह परिस्थितियों या माहौल के आधार पर बदलता नहीं है (2:25)। प्रभु अपनी कही हुई बात को ईमानदारी से निभाते हैं, और हममें से जो लोग परमेश्वर के पुत्र यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं, उनके लिए अनन्त विरासत को तुरंत सुरक्षित करते हैं। यूहन्ना ने यह पत्र एक अंतिम उद्देश्य के साथ आँसुओं के बीच लिखा था: ताकि हम धोखे की हवाओं से बह न जाएँ, बल्कि स्पष्ट रूप से महसूस करें और हमारे भीतर बह रहे इस "अटल अनन्त जीवन" का भरोसा रखें (5:13)।

(3) तीसरा, यीशु मसीह—जो अनन्त जीवन हैं—को अपने हृदयों के सिंहासन पर बिठाकर, हम—स्वर्ग के राज्य के नागरिकों के रूप में, जिनके पास पहले से ही अनन्त जीवन है—अपने दैनिक जीवन में "एक-दूसरे से भाई-बहनों की तरह गहरा प्रेम करते हैं" [(a) (3:14) और (a') (5:11-12)]।

इस 'कायासम' (chiasm) के मूल—यानी इसके हृदय—द्वारा बताए गए व्यावहारिक सार पर ध्यान दें। अगर हम सच में नए सिरे से जन्मे विश्वासी हैं जिन्होंने परमेश्वर के पुत्र को अपने दिलों में जगह दी है (5:11–12), तो उस विश्वास का सबूत ज़रूर दिखेगा—एक ऐसी ज़िंदगी के रूप में जिसमें हम अपने साथी सदस्यों (जो हमारे ठीक बगल में हैं) से खुद की तरह प्यार करते हैं, और यह प्यार काम और सच्चाई, दोनों से ज़ाहिर होता है (3:14)। भाईचारे के प्यार का भरपूर फल स्वर्ग में हमारी नागरिकता का सबसे पक्का सबूत है; यह पक्का करता है कि हमें मौत की दलदल से बचाया गया है और अब हमें हमेशा की ज़िंदगी मिल गई है।

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे संतों, अब समय आ गया है कि हम दिखावटी बातों और पाखंड के चोले को हिम्मत से उतार फेंकें। स्वर्ग के राज्य की सच्चाई—जिसकी हम अपने निजी कमरों और वेदी के सामने प्रार्थना करते हुए दिल से उम्मीद और चाहत रखते हैं—वह यहीं मिलती है। हम जो अपने प्रभु यीशु मसीह—जो सच्चे परमेश्वर और खुद हमेशा की ज़िंदगी हैं—पर भरोसा करते हैं और उन्हें मानते हैं (एक मज़बूत चट्टान की तरह), हमें अब—अपने अंदर रहने वाली पवित्र आत्मा के शक्तिशाली पवित्र करने वाले काम के बीच—अपने "पुराने स्वभाव" की बुरी ज़िद को क्रूस पर दफ़ना देना चाहिए। हमें रोज़ाना, गहरे और सच्चे समर्पण के साथ, यीशु के कोमल और नम्र स्वभाव जैसा बनने की कोशिश करनी चाहिए। अपने महान वादे के मुताबिक, वफ़ादार प्रभु ने हमें—जो पाप के कारण मौत के लायक थे—हमेशा की ज़िंदगी का शानदार तोहफ़ा मुफ़्त में दिया है। इसलिए, आइए हम ऐसे लोग न बनें जो दूर के परलोक की ओर देखते हुए आज के दिन को नज़रअंदाज़ कर दें; बल्कि, ऐसे लोगों के तौर पर जिनके दिलों में राजा की हमेशा की ज़िंदगी चमक रही है, आइए हम प्यार के उस महान दोहरे हुक्म के सामने झुकें—एक ऐसा हुक्म जिसे यीशु ने अपने ही खून से लिखा था। आइए हम अपने प्रभु परमेश्वर की सबसे ज़्यादा आराधना और महिमा करें—अपने पूरे दिल, अपनी पूरी आत्मा और अपने पूरे मन से। उस ऊँचे प्यार से ताकत पाकर, आइए हम अपने पड़ोसियों और कलीसिया के कमज़ोर सदस्यों से भी वैसे ही प्यार करें जैसे हम खुद से करते हैं। इस तरह, नफ़रत, झूठ और अंधेरे से भरी इस बंजर ज़मीन की लड़ाई के बीच भी, आइए हम सब आखिर तक दौड़ पूरी करें। हम अपनी आज की ज़िंदगी में हर दिन उस शानदार स्वर्गीय जीवन का स्वाद लें और उसका आनंद उठाएँ, जहाँ परमेश्वर का पवित्र राज और शांति कायम है, और साथ ही हमेशा की, कभी न खत्म होने वाली ज़िंदगी का

सुकून भी मिलता है। आइए हम प्रभु यीशु मसीह—जो राजाओं के राजा हैं, जिन्होंने दुनिया को जीत लिया है और हमें अनंत जीवन दिया है—के नाम में इसका अनुभव करें—भले ही आंशिक रूप से, लेकिन स्पष्ट और भरपूर तरीके से। आमीन।

प्रिय संतों, आज मैं स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च की पूरी मंडली के दिलों में सुसमाचार के सबसे पक्के वादे को खोलकर बताना चाहता हूँ। क्या आप चट्टान की तरह मज़बूत भरोसे के साथ यह मानते हैं कि आप निश्चित रूप से उद्धार पाएँगे और अनंत आनंद का मुकुट प्राप्त करेंगे—अपनी योग्यता या गुणों पर नहीं, बल्कि पूरी तरह से हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के प्रायश्चित्त वाले गुणों पर निर्भर रहकर?

भजन 287, "कम टू जीसस" (न्यू हाइमनल से)—जिसे हमें अपने पूरे जीवन में अनुग्रह से भरकर गाना चाहिए—का कोरस इसी शानदार भरोसे को बड़े जोश के साथ गाता है: "हमारे प्रभु पर विश्वास करके, हम सभी उद्धार पाते हैं और निश्चित रूप से अनंत आनंद का मुकुट प्राप्त करेंगे।" जैसा कि इसके बोल कहते हैं, जब हम यीशु मसीह—सर्वशक्तिमान परमेश्वर के एकलौते पुत्र—को अपनी आत्माओं के उद्धारकर्ता, राजा, महायाजक और भविष्यद्वक्ता के रूप में स्वीकार करते हैं और उन पर विश्वास करते हैं, तो हमें न केवल अनंत विनाश की सज़ा से बचाने वाला उद्धार मिलता है, बल्कि हम अपार स्वर्गीय आध्यात्मिक आशीषों के भी भागीदार बनते हैं—ऐसी आशीषें जो अनंत और असीम हैं, और जिनकी दुनिया नकल भी नहीं कर सकती। इफिसियों 1:3 में शानदार घोषणा के माध्यम से, प्रेरित पौलुस—जैसा कि *समकालीन कोरियाई बाइबिल* में बताया गया है—हमें मिली स्वर्गीय संपत्तियों की अद्भुत प्रकृति को स्पष्ट रूप से घोषित करते हैं: "हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की स्तुति हो। पिता परमेश्वर ने मसीह के द्वारा हमें स्वर्गीय स्थानों में हर आध्यात्मिक आशीष दी है।" सुसमाचार की यह कितनी दिल को छू लेने वाली घोषणा है!

बाइबिल बताती है कि पिता परमेश्वर ने *पहले ही*—न केवल भविष्य में—आप और मुझ पर, जो मसीह के बहुमूल्य लहू की योग्यता के माध्यम से उनसे जुड़े हैं, "स्वर्गीय स्थानों में हर आध्यात्मिक आशीष" दी है। तो, आखिर इस अनंत और शानदार "पाँच-गुना आध्यात्मिक आशीष" का सार क्या है—जिसे हम यीशु मसीह में

विश्वास के माध्यम से अपनी आत्माओं के सिंहासन पर विरासत के रूप में पहले से ही रखते हैं, और जो पूरी तरह से परमेश्वर के पूर्ण अनुग्रह और पहल से हमें मिली है? जब हम प्रेरित पौलुस द्वारा इफिसियों की पत्री में विस्तार से बताई गई बातों और 1 यूहन्ना में बताए गए वर्तमान और अनंत जीवन के नज़रिए को जोड़कर देखते हैं, तो हमें पाँच ऐसे पवित्र स्तंभ मिलते हैं जिन्हें आज की आध्यात्मिक लड़ाई के बीच हमें मज़बूती से थामे रखना और इस्तेमाल करना चाहिए:

(1) मसीह में हमें जो पहला आध्यात्मिक आशीर्वाद मिला है, वह है "परमेश्वर के साथ पूरी तरह से मेल-मिलाप और जीवन से जुड़ाव"—जो क्रूस पर बहाए गए लहू से अलगाव की दीवार के टूटने के बाद संभव हुआ।

हमें जो शानदार स्वर्गीय आशीषें मुफ़्त में मिली हैं, उनमें पहला स्तंभ है परमेश्वर पिता—जो ब्रह्मांड का रचयिता और जीवन का स्रोत है—के साथ एक अनंत और कभी न खत्म होने वाले रिश्ते की बहाली। असल में, हमें पहले आदम की नाफरमानी का असर विरासत में मिला था; हम आध्यात्मिक रूप से मरे हुए और ठंडे थे, हमारी आत्माएँ परमेश्वर से पूरी तरह कटी हुई थीं। हम क्रोध की संतान थे और नरक की भयानक सज़ा पाने के हकदार थे—पूरी तरह पापी और परमेश्वर के दुश्मन (रोमियों 5:10, 12)। इफिसियों 2:12 में, प्रेरित पौलुस मसीह के बिना जीवन की निराशाजनक सच्चाई को साफ-साफ बताते हैं—जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* अनुवाद में कहा गया है: "उस समय, मसीह के साथ आपका कोई रिश्ता नहीं था, आप इज़राइल के नागरिक नहीं थे, और परमेश्वर के वादे के नियमों से आपका कोई नाता नहीं था; आप इस दुनिया में बिना उम्मीद और बिना परमेश्वर के लोग थे।"

इतिहास के बीच में, त्रिएक परमेश्वर के विशाल और उद्धार करने वाले प्रेम ने हमारे लिए हस्तक्षेप किया—हम जो जीवन के स्रोत से कटकर बिना उम्मीद के खत्म हो रहे थे। परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह गोलगथा के शापित पेड़ पर लटके, उन्होंने अपना शुद्ध और पवित्र लहू बिना किसी रोक-टोक के बहाया और पूरी तरह से एक बलिदान वाली, प्रायश्चित करने वाली मौत सही। उन्होंने अपने शरीर पर परमेश्वर के उस पवित्र और न्यायपूर्ण क्रोध को सह लिया जो पापियों पर बरसना था; इस तरह, उन्होंने "क्रूस के ज़रिए हमारे और परमेश्वर

के बीच की दुश्मनी को पूरी तरह खत्म कर दिया" (इफिसियों 2:16) और हमें हमेशा के लिए परमेश्वर के साथ पूरी तरह से मिला दिया (रोमियों 5:10)।

सुसमाचार का सार, जिसकी ओर क्रूस पर हुई यह दिल को छू लेने वाली घटना इशारा करती है, बिल्कुल साफ़ है। जैसा कि यूहन्ना की पत्रियों में बताया गया है, यीशु मसीह की मृत्यु के ज़रिए—जो समय और स्थान के बनने से पहले से मौजूद "अनंत जीवन" हैं (1 यूहन्ना 1:2) और जो हमारी अटूट "अनंत जीवन-डोर" बन गए हैं (5:20)—हम, जो कभी परमेश्वर से अलग हो गए थे और मृत्यु के योग्य थे, आखिरकार परमेश्वर से मज़बूती से जुड़ गए हैं, जीवन से जीवन का मिलन हुआ है, और हमें अनंत मेल-मिलाप का आनंद मिला है। अब हम आध्यात्मिक रूप से अनाथ या अजनबी नहीं रहे। हम स्वर्ग के नागरिक बन गए हैं जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर को "अब्बा, पिता" कहकर बुलाते हैं और उनकी गोद में उनके राज्य के अनंत विश्राम का आनंद लेते हैं। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र बच्चे रोज़मर्रा की ज़िंदगी की चुनौतियों के बीच इस पहले आध्यात्मिक आशीर्वाद को मज़बूती से थामे रहें और हर दिन गहरे धन्यवाद के गीत गाएँ।

(2) मसीह में हमें जो दूसरा आध्यात्मिक आशीर्वाद मिला है, वह है पवित्र आत्मा की अगुवाई में परमेश्वर पिता और उनके पुत्र, यीशु मसीह के साथ "वास्तविक समय में घनिष्ठ, प्रेमपूर्ण संगति" का अनुभव करना।

शुरू में, पहले आदम के पाप के कारण, हम बहुत बुरी हालत में थे, जीवन के स्रोत—परमेश्वर—से अलग हो गए थे और उनके साथ शानदार संगति से पूरी तरह कट गए थे। हालाँकि, परमेश्वर ने हम पर असीम प्रेम बरसाया, जिन्हें उन्होंने दुनिया की नींव रखे जाने से पहले ही चुन लिया था (1 यूहन्ना 3:1)। क्रूस पर बहाए गए प्रायश्चित के लहू के ज़रिए, परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह ने उस दीवार को गिरा दिया जिसने हमें परमेश्वर का दुश्मन बना दिया था, हमें उनसे मिलाया (इफिसियों 2:16), और आखिरकार हमें "परमेश्वर की संतान" का शानदार और तेजस्वी दर्जा दिया। उनकी संतान बनने के बाद, अब हमें परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र (यीशु मसीह) और पवित्र आत्मा के साथ स्वर्गीय प्रेम की जीवंत, रोज़मर्रा की संगति में रहने का आशीर्वाद मिला है (1 यूहन्ना 1:3)।

त्रिएक परमेश्वर के साथ यह रहस्यमय और शानदार प्रेमपूर्ण संगति ही बाइबल में बताए गए सच्चे "अनंत जीवन" का सार है—जिसे वर्तमान में अनुभव किया जाता है। यूहन्ना 17:3 में अपनी महायाजकीय प्रार्थना के ज़रिए, हमारे उद्धारकर्ता यीशु ने हमारे लिए अनंत जीवन को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया: "अनंत जीवन यह है कि वे तुम्हें, जो एकमात्र सच्चे परमेश्वर हो, और यीशु मसीह को, जिसे तुमने भेजा है, जानें।" प्रभु जिस अनंत जीवन की बात करते हैं, वह केवल धार्मिक सिद्धांतों का ज्ञान हासिल करने या धार्मिक दिखावा करने की बात नहीं है। बल्कि, यह एक व्यक्तिगत जुड़ाव है—एक गहरा, प्रेमपूर्ण ज्ञान (*यादा*)—जिसकी विशेषता है एकमात्र सच्चे परमेश्वर पिता और उनके एकलौते पुत्र, यीशु मसीह से अपने पूरे दिल, मन और शक्ति से प्रेम करना।

इस समय भी, पवित्र आत्मा—हमारे सहायक जो हमारे भीतर एक मंदिर की तरह वास करते हैं—परमेश्वर के *अगापे* प्रेम को हमारे दिलों में एक नदी की तरह बहाते हैं (रोमियों 5:5)। अपनी कृपा से, वे हमारी आत्माओं को संभालते हैं, और हमें परमेश्वर पिता और उनके पुत्र, यीशु मसीह के साथ एक घनिष्ठ, प्रेमपूर्ण संगति का आनंद लेने में सक्षम बनाते हैं—एक ऐसा बंधन जो एक पल के लिए भी नहीं टूटता। इस घनिष्ठ संगति का आनंद, जिसका अनुभव हम अपनी निजी प्रार्थना के समय करते हैं, अंततः उस शानदार सुबह अपनी चरम सीमा पर पहुँचेगा जब हमारे प्रभु यीशु मसीह बादलों पर महिमा के साथ लौटेंगे। 1 कुरिन्थियों 13:12 के *कंटेंपररी कोरियन वर्शन* अनुवाद में बताए गए उस मर्मस्पर्शी और भविष्यसूचक सत्य पर विचार करें: "अभी हम धुंधला देखते हैं, जैसे किसी दर्पण में देख रहे हों, लेकिन तब हम आमने-सामने देखेंगे; अभी मैं थोड़ा-बहुत जानता हूँ, लेकिन तब मैं पूरी तरह से जानूँगा, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने मुझे जाना है।" जब वह दिन आएगा, तो हम इस अंधेरी दुनिया के धुंधले पर्दे के पीछे से प्रभु के लिए तरसेंगे नहीं। हम सीधे—आँखों में आँखें डालकर—यीशु मसीह के तेजस्वी चेहरे को देखेंगे, जो राजाओं के राजा हैं और जिन्होंने हमें अपने लहू से खरीदा है; और ठीक जैसे प्रभु ने हम अयोग्य लोगों को पूरी तरह से जाना और अपनाया, वैसे ही हम भी प्रभु की महिमा की गहराइयों को पूरी तरह से समझेंगे, और स्वर्गीय सिंहासन के सामने अनंत काल की पूर्णता में पूर्ण, शुद्ध प्रेम की संगति का आनंद लेंगे। यह दूसरी अनंत आध्यात्मिक आशीष की सच्चाई है—एक ऐसी आशीष जिसका आनंद आप और मैं, नए सिरे से जन्मे संतों के रूप में, *अभी* अपने जीवन में कुछ हद तक ले रहे हैं, और जिसे हम प्रभु की वापसी के दिन पूरी तरह से (100%) प्राप्त करेंगे।

(3) मसीह में हमें जो तीसरी आध्यात्मिक आशीष मिली है, वह है परमेश्वर के स्वरूप की बहाली—जो खो गया था—पवित्र आत्मा के पवित्र करने वाले काम के द्वारा, और 'हर दिन यीशु मसीह के ईश्वरीय स्वभाव जैसा बनने' की प्रक्रिया के माध्यम से।

तीसरी स्वर्गीय संपत्ति जो हमें मुफ्त में मिली है, वह है हमारे दर्जे की महिमा—हमारी आत्माओं की ज़रूरी सुंदरता, यानी 'परमेश्वर का स्वरूप' (image of God) वापस पाना, जो पाप के कारण पूरी तरह नष्ट और विकृत हो गया था। असल में, क्योंकि पहले आदम—इंसानियत के पूर्वज—ने भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल खाया और पाप किया (उत्पत्ति 2:17, 3:6; रोमियों 5:12), हम आध्यात्मिक रूप से मर गए और जीवन के स्रोत परमेश्वर से अलग हो गए; ऐसा करने से, हमने सृष्टि के समय हमें मिली शानदार "परमेश्वर की छवि" (*Imago Dei*) को पूरी तरह खो दिया (उत्पत्ति 1:27)। हम आध्यात्मिक रूप से कंगाल और दुखी थे, अंधेरे, झूठ और नफरत से पैदा हुए क्रोध की छाया में जी रहे थे।

फिर भी, इस निराशा की गहरी स्थिति में, सुसमाचार हमारे लिए एक ज़बरदस्त बदलाव की घोषणा करता है। यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र—जो इस धरती पर "अंतिम आदम" (1 कुरिन्थियों 15:45) के रूप में आए और खुद "परमेश्वर की पूर्ण और शुद्ध छवि" (2 कुरिन्थियों 4:4) हैं—शापित क्रूस पर चढ़े और बिना किसी संकोच के अपना पवित्र, कीमती लहू बहाया। प्रायश्चित के उस अत्यंत प्रभावशाली कार्य के गुण से, हमारे सभी बुरे पाप एक ही बार में मिटा दिए गए, और परमेश्वर के साथ अनंत मेल-मिलाप हुआ; नतीजतन, परमेश्वर की वह पवित्र छवि जिसे हमने खो दिया था, आखिरकार और शानदार ढंग से बहाल हो गई।

तो फिर, बाइबिल में घोषित परमेश्वर की इस बहाल छवि की सच्चाई क्या है? इसका मतलब है कि आपको और मुझे बनाई गई चीज़ों की सीमाओं से ऊपर उठकर त्रिएक परमेश्वर (Triune God) के स्वभाव में—यानी "ईश्वरीय स्वभाव" में—हिस्सा लेने का स्वर्गीय उपहार मिला है। 2 पतरस 1:4 के लिए *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* (Hyundai-in-ui Seong-gyeong) में दिए गए अनुवाद पर गौर करें: "इसके ज़रिए, मसीह ने

हमें कीमती और बहुत ज़रूरी वादे दिए हैं; इन वादों के ज़रिए, उन्होंने हमें दुनिया की विनाशकारी इच्छाओं से बचने और ईश्वरीय स्वभाव में शामिल होने के काबिल बनाया है।" यीशु मसीह में विश्वास के ज़रिए "ईश्वरीय स्वभाव" में हमारे शामिल होने का अर्थ निश्चित रूप से यह घमंडी और घिनौना विचार नहीं है कि हम, बनाए गए प्राणी होने के नाते, खुद को परमेश्वर के स्तर तक ऊँचा उठाते हैं। बल्कि, यह सुसमाचार का एक रहस्य है: पवित्रता की प्रक्रिया में—जहाँ हमारे अंदर रहने वाली पवित्र आत्मा वचन की आग से हमारी आत्माओं को शुद्ध करती है और हमें पवित्रता में ढालती है—हम अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के सुंदर चरित्र के जैसा बनने के काबिल हो जाते हैं, जो सच्चा प्रकाश, सत्य और प्रेम हैं—परमेश्वर की असली छवि।

पवित्रता की यह पवित्र यात्रा, जिसे हम अपनी निजी प्रार्थना की जगहों और वेदी पर सच्ची कोशिश के साथ करते हैं, आखिरकार अपनी शानदार ऊँचाई तक पहुँचेगी और उस विजयी सुबह पूरी होगी जब हमारे प्रभु यीशु मसीह बादलों पर महिमा के साथ लौटेंगे। प्रेरित पौलुस द्वारा 2 कुरिन्थियों 3:18 में बताई गई आध्यात्मिक बदलाव की शानदार कहानी पर गौर करें: "और हम सब, बिना नकाब के चेहरे के साथ, प्रभु की महिमा को देखते हुए, महिमा के एक स्तर से दूसरे स्तर तक उसी छवि में बदले जा रहे हैं। क्योंकि यह प्रभु से आता है जो आत्मा है।" जब वह दिन आएगा, तो हम अपरिपक्वता की स्थिति में नहीं रहेंगे—पाप के भारी बोझ तले लड़खड़ाते हुए और प्रभु के चरित्र की बस कमज़ोर नकल करते हुए। बिना नकाब वाले, साफ़ चेहरों के साथ, हम सीधे—आँखों में आँखें डालकर—प्रभु की चकाचौंध कर देने वाली महिमा को देखेंगे, जो न्याय करने वाले और दूल्हे दोनों हैं; उनकी एकदम सही और बेदाग छवि के बिल्कुल जैसा बनकर, हम हमेशा बढ़ती हुई महिमा में प्रवेश करेंगे। इसके अलावा, परमेश्वर पवित्र आत्मा हमारे साधारण शरीरों को—जो अभी बीमारी और घावों से भरे हैं, और सांसारिक इच्छाओं से फटे हुए हैं—पूरी तरह से प्रभु के अपने आध्यात्मिक और चमकदार "महिमामय शरीर" जैसा बना देंगे, जो पुनरुत्थान का पहला फल है (फिलिप्पियों 3:21)। यह तीसरी हमेशा रहने वाली आध्यात्मिक आशीष की सच्चाई है: एक ऐसी आशीष जिसका आनंद हम—जो यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानते हैं—*अभी* अपने जीवन में कुछ हद तक ले रहे हैं, और जो प्रभु की वापसी के दिन पूरी तरह से और एकदम सही ढंग से पूरी होगी।

(4) मसीह में हमें जो चौथी आध्यात्मिक आशीष मिली है, वह स्वर्ग के जीवन और उसके अनंत आनंद का अनुभव करना है—यहाँ पृथ्वी पर रहते हुए भी। यह अनुभव पवित्र आत्मा के फल, यानी "प्रेम" के ज़रिए यीशु की दोहरी आज्ञा का स्वेच्छा से पालन करने से मिलता है।

स्वर्ग की यह चौथी आशीष जो हमें मुफ़्त में मिली है, वह अपने बंजर चरित्र के ज़ोर से नियम का पालन करने का कोई जबरदस्ती का बोझ नहीं है; बल्कि, यह स्वर्ग के नागरिकों का विशेषाधिकार है कि वे राजा की महान आज्ञा को स्वेच्छा से पूरा करें। उन्हें यह शक्ति उस पवित्र प्रेम से मिलती है जिसे हमारे भीतर रहने वाली पवित्र आत्मा पैदा करती है। जैसा कि प्रेरित पौलुस ने रोमियों की पत्री में बताया है, जिस पल हमने प्रभु यीशु मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया और परमेश्वर की अपार कृपा से हमारा उद्धार हुआ, उसी पल हमारी आत्मा के केंद्र में एक शानदार और अद्भुत स्वर्गीय घटना घटी: "...परमेश्वर का प्रेम पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे दिलों में उंडेला गया है, जो हमें दिया गया है" (रोमियों 5:5)। यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने के उस पहले, रोमांचक पल में, हमने पूरी तरह से अपने भीतर *अगापे* (Agape)—वह दिव्य प्रेम जो त्रिएक परमेश्वर की पहचान है—और परमेश्वर पवित्र आत्मा, जो उस प्रेम को वास्तविकता बनाते हैं, दोनों का स्वागत किया। इसके अलावा, पवित्र आत्मा, जो हमारे भीतर वास करती हैं, "आत्मा के फल"—उनके सबसे तेजस्वी स्वरूप—को विकसित करती हैं (गलातियों 5:22)। ध्यान देने वाली बात है कि प्रेरित पौलुस द्वारा गलातियों 5:22 में इस्तेमाल किया गया ग्रीक शब्द *कारपोस* ("फल") बहुत सटीकता के साथ एकवचन रूप में आया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अन्य आठ पवित्र गुण—आनंद, शांति, धैर्य, दया, भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता और संयम—ऐसे दिव्य गुण हैं जो पूरी तरह से उस एक विशाल फल से निकलते हैं और उसमें समाए हुए हैं, जिसका सार और आधार "प्रेम" है।

पवित्र आत्मा हमारे अंदर इस प्रेम के फल को पकाता है और हमें लगातार यीशु के दोहरे आदेश—जो स्वर्ग के राज्य का सर्वोच्च नियम है—को मानने के लिए प्रेरित करता है। इसमें सबसे बड़ा और पहला आदेश शामिल है, "अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी आत्मा और अपने पूरे मन से प्रेम करो," और दूसरा, "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो" (मत्ती 22:37, 39)। प्रेम का यह दोहरा आदेश राज्य के नागरिकों के लिए एक पवित्र और व्यापक सिद्धांत है—जिसे दुनिया के तौर-तरीकों पर चलने वाले लोग कभी

नहीं अपना सकते। जैसा कि *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* में 1 कुरिन्थियों 15:48 के अनुवाद में बताया गया है, यह राजा का एक शानदार नियम है जिसे केवल वे ही खुशी-खुशी मान सकते हैं जो स्वर्ग के हैं—जो अंधकार के शासन से मुक्त हो चुके हैं और जिनमें स्वर्गीय DNA समाया हुआ है—और राज्य के वे पवित्र नागरिक जिनका अनंत घर अनदेखे स्वर्ग में है (फिलिप्पियों 3:20)।

हालाँकि हमारे "पुराने स्वभाव" का खोल—जो घावों और स्वार्थ से भरा है—किसी से भी पूरी तरह प्रेम करने की ज़रा भी क्षमता नहीं रखता, फिर भी निराश या डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पवित्र आत्मा, जो हमारे अंदर एक मंदिर की तरह वास करता है, रोज़ाना हमारे दिलों में अपनी अच्छी और मनभावन इच्छा को पूरा करने की एक ज़बरदस्त स्वर्गीय चाहत जगाता है। फिलिप्पियों 2:13 के *कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* अनुवाद में दिए गए इस गहरे और दिल को छू लेने वाले आश्वासन पर विचार करें: "परमेश्वर आपके अंदर काम करता है ताकि आपके दिल में एक इच्छा पैदा हो और आप खुशी-खुशी काम करने के लिए प्रेरित हों, और यह सब उसकी भली इच्छा को पूरा करने के लिए होता है।" यही "वर्तमान में अपने उद्धार को पूरा करने वाले आध्यात्मिक रूप से गहरे जीवन" का असली सार है—एक ऐसा जीवन जिसे प्रेरित पौलुस ने हमें डर और कांपते हुए पूरा करने के लिए कहा था (पद 12)। जब हम सच्चाई के पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करते हैं और परमेश्वर पिता और उनके पुत्र यीशु मसीह के साथ एक अटूट, करीबी और प्रेमपूर्ण संगति का आनंद लेते हैं—और जैसे-जैसे हम रोज़ाना, भक्ति के आँसुओं के साथ, आत्मा के पवित्र करने की आग में यीशु की कोमलता और विनम्रता को अपनाते हैं—तो आखिरकार हम विजेताओं के रूप में खड़े होते हैं जो खुशी-खुशी उस दोहरे आदेश का पालन करते हैं, और ऐसा हम आत्मा की प्रेम करने की अलौकिक शक्ति से करते हैं। आज्ञाकारिता की उस वेदी पर, इस बंजर धरती पर चलते हुए भी, हम एक शानदार विश्राम में प्रवेश करते हैं; हम वर्तमान पल की सच्चाई में स्वर्ग के राज्य के जीवन का स्वाद चखते हैं और उसका आनंद लेते हैं—आंशिक रूप से, फिर भी अपार शक्ति के साथ।

खुशी के ये अंश जिनका हम अपने रोज़मर्रा के जीवन में अनुभव करते हैं, वे आखिरकार 'दूसरी बार आगमन' (Second Coming) की सुबह अपनी पूर्ण और ब्रह्मांडीय परिणति तक पहुँचेंगे, जब हमारे प्रभु यीशु मसीह महिमा के साथ लौटेंगे। प्रभु के पुनरुत्थान की तुरही की आवाज़ सुनते ही, हम तुरंत एक अविनाशी रूप में

बदल जाएँगे, जो उनकी शानदार छवि को पूरी तरह से प्रतिबिंबित करेगा और एक शानदार आध्यात्मिक शरीर से सुसज्जित होगा। इस प्रकार, हम विजयी होकर 'नए यरूशलेम'—नए स्वर्ग और नई पृथ्वी—की महिमा में प्रवेश करेंगे, जहाँ अंधेरा, नफ़रत और आँसुओं की उदासी हमेशा के लिए मिटा दी गई होगी (प्रकाशितवाक्य 21:1–2)। उस शानदार स्वर्गीय सिंहासन के सामने, पवित्र आत्मा और प्रेम से पूरी तरह भरे हुए आध्यात्मिक जीवन के साथ—जिसमें ज़रा भी अशुद्धि न हो—हम खुशी-खुशी यीशु की दोहरी 'महान आज्ञा' (Great Commandment) को मानेंगे; प्रभु द्वारा तैयार किए गए अनंत आनंद का मुकुट पहनकर, हम हमेशा-हमेशा के लिए अंतिम विजय की महिमा का पूरा आनंद लेंगे। यह चौथी अनंत आध्यात्मिक आशीष की सच्चाई है—एक ऐसी आशीष जिसका आनंद हम, जो यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानते हैं, *अभी* अपने जीवन में पवित्र आत्मा के फल के माध्यम से आंशिक रूप से ले रहे हैं, और जो आखिरकार उनके भविष्य में 'दूसरी बार आगमन' के दिन 100% पूर्णता तक पहुँचेगी।

(5) मसीह में हमें जो पाँचवीं आध्यात्मिक आशीष मिली है, वह है "अलौकिक स्वर्गीय शांति" का आनंद, जो इस दुनिया के भयंकर तूफानों पर भी हावी हो जाती है।

हमें मुफ्त में मिली पाँच-गुना आध्यात्मिक आशीष का शानदार समापन 'पूर्ण विश्राम'—परमेश्वर की शांति—है, जिसे यह पापी और शैतान के प्रभाव वाली दुनिया कभी छीन नहीं सकती। पवित्र शास्त्र हमारे प्रभु को "शांति का राजकुमार" बताता है जो पृथ्वी पर सभी युद्धों को समाप्त कर देगा (यशायाह 9:6) और स्वयं-अस्तित्व वाले, सर्वशक्तिमान पिता की "शांति के परमेश्वर" के रूप में प्रशंसा करता है (रोमियों 15:33)। क्योंकि शांति के प्रभु ने मृत्यु तक आज्ञाकारिता का पालन किया और उस शापित क्रूस पर अपना लहू बहाया, इसलिए हम—जो कभी अपने पापों के कारण मरे हुए थे—ने आखिरकार परमेश्वर के साथ पूर्ण और अनंत मेल-मिलाप प्राप्त कर लिया है। कुलुस्सियों 1:20 में, प्रेरित पौलुस इस शानदार शांति के आगमन की घोषणा करते हैं: "उसने अपने क्रूस के लहू से शांति स्थापित की, और उसके द्वारा सब कुछ अपने साथ मिला लिया, चाहे वे पृथ्वी पर हों या स्वर्ग में।" क्योंकि प्रभु ने क्रूस के कीमती लहू से पूरी शांति हासिल की, इसलिए हम अब सज़ा और न्याय के डर से नहीं कांपते; बल्कि, हम स्वर्ग के नागरिक बन गए हैं और परमेश्वर के साथ पूरी शांति का आनंद लेते हैं (रोमियों 5:1)। सुसमाचार का एक और भी दिल को छू लेने वाला रहस्य यह है

कि क्रूस का यह प्रायश्चित का काम केवल परमेश्वर के साथ शांति तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे साथ रहने वाले दूसरे विश्वासियों के साथ शांति तक भी फैला हुआ है। यीशु मसीह, जो हमारी अनंत शांति हैं, ने अपने शरीर से अलगाव की उस बड़ी दीवार को तोड़ दिया—एक ऐसी दीवार जिसने मानव इतिहास में एकता को असंभव बना दिया था। इफिसियों 2:14–16 (समकालीन कोरियाई बाइबिल से) में दी गई शानदार घोषणा को सुनें: "मसीह हमारी शांति हैं। उन्होंने उस दीवार को गिरा दिया जो यहूदियों और गैर-यहूदियों को अलग करती थी, और दोनों को एक बना दिया। अपनी शारीरिक मृत्यु के द्वारा, यीशु ने उन नियमों को खत्म कर दिया जिन्होंने यहूदियों और गैर-यहूदियों को दुश्मन बना दिया था; उनका मकसद दोनों से एक नया समाज बनाना था, मेल-मिलाप लाना, क्रूस के द्वारा उनकी दुश्मनी को खत्म करना और उन्हें एक शरीर के रूप में एकजुट करना था ताकि वे परमेश्वर के साथ मेल कर सकें।" यह सचमुच दिल को छू लेने वाली और बहुत बड़ी उपलब्धि है। प्रभु ने खुद को मेल-मिलाप के बलिदान के रूप में पेश किया, और यहूदियों और गैर-यहूदियों के बीच खड़ी दुश्मनी और नियमों की दीवार को पूरी तरह से खत्म कर दिया। ऐसा करके, उन्होंने हमें मसीह में एक बिल्कुल नए समाज के रूप में फिर से बनाया। इस अद्भुत क्रूस की जीवन देने वाली शक्ति को पाकर, अब हम अपने स्वार्थी अहंकार और घावों को क्रूस के चरणों में दफन कर सकते हैं और अपने साथ रहने वाले भाई-बहनों के साथ सच्ची शांति से जी सकते हैं।

आज आप और मैं जिस दुनिया में रहते हैं, वह एक बंजर ज़मीन है जहाँ शांति का एक सेंटीमीटर भी नहीं है—एक ऐसी जगह जो लगातार युद्ध, बीमारी, नफरत और ईर्ष्या के तूफानों से जूझ रही है। फिर भी, शांति से रहित इस दुनिया के बीच भी, सच्चे विश्वासी जो यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानते हैं, परमेश्वर की शांति का आनंद लेते हुए चलते हैं—एक ऐसी शांति जो दुनिया के हालात से कहीं बढ़कर है। इसीलिए, ज़बरदस्त तूफ़ानों के बीच भी, हम अपने आँसू पोंछ सकते हैं और हिम्मत के साथ परमेश्वर की वेदी पर विश्वास का एक शानदार गीत गा सकते हैं—जैसा कि भजन 413, "मेरी आत्मा के लिए सब ठीक है" (It Is Well with My Soul) में कहा गया है: "जब शांति नदी की तरह मेरे रास्ते में आती है, जब दुख समुद्र की लहरों की तरह उमड़ते हैं; मेरी किस्मत में जो भी हो, तूने मुझे यह कहना सिखाया है, 'सब ठीक है, मेरी आत्मा के लिए सब ठीक है।'" इस शांति की सच्चाई—जिसका अनुभव हम यहाँ धरती पर वचन और प्रार्थना के ज़रिए करते हैं—आखिरकार उस दिन पूरी तरह से सिद्ध हो जाएगी जब हमारे प्रभु यीशु मसीह बादलों पर महिमा के

साथ वापस आएँगे। उस शानदार सुबह जब वह हमें अपने साथ हमेशा रहने के लिए हमारे अनंत स्वर्गीय घर में ले जाएँगे—जैसा कि उन्होंने वादा किया था (यूहन्ना 14:3)—तो हम परमेश्वर की पूरी और भरपूर शांति का अनुभव करेंगे, जो हमेशा के लिए किसी भी शैतानी आरोप या चिंता से परे होगी। यही पाँचवें अनंत आध्यात्मिक आशीर्वाद का सार है: एक ऐसा आशीर्वाद जिसका आनंद आप और मैं, नए सिरे से जन्मे संतों के रूप में, आज अपने जीवन में कुछ हद तक ले रहे हैं, और जिसे हम प्रभु के आने वाले दिन में पूरी तरह से पाएँगे।

आज के वचन—1 यूहन्ना 5:13—में प्रेरित यूहन्ना उस मुख्य उद्देश्य को बताते हैं जिसके लिए उन्होंने यह पत्र आँसुओं के साथ हमें लिखा था, जो धोखे और झूठ से भरी दुनिया में जी रहे हैं; वह सुसमाचार का मुख्य आधार बताते हैं: "मैंने ये बातें तुम्हें लिखी हैं जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, ताकि तुम जान सको कि तुम्हारे पास अनंत जीवन है।" "मैं यह इसलिए लिखता हूँ ताकि तुम जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हो, जान सको कि तुम्हारे पास अनंत जीवन है" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। हमने पहले देखा है कि कैसे परमेश्वर पिता ने मसीह के ज़रिए हमें स्वर्गीय स्थानों में हर आध्यात्मिक आशीर्वाद पहले ही मुफ़्त में दिया है। प्रेरित यूहन्ना अब साफ़ तौर पर घोषणा करते हैं कि हमें मिले ये शानदार अधिकार केवल अस्पष्ट अनुमान नहीं हैं जिनकी पुष्टि भविष्य में किसी तारीख पर होगी। प्रभु चाहते हैं कि उनके लोग—जो नए सिरे से जन्मे हैं और यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानते हैं—साफ़ तौर पर समझें और उद्धार की अटूट सच्चाई का भरोसा रखें, और इस धरती के जीवन की कठोर सच्चाइयों के बीच भी यह कहें, "मेरे पास पहले से ही अनंत जीवन है।" इस गंभीर घोषणा को आधार बनाकर, मैं 1 यूहन्ना के आखिरी हिस्से—आयत 13 से 21 तक—की गहराई से व्याख्या करना चाहता हूँ, जिसका शीर्षक है "तुम्हारे पास अनंत जीवन है।" इन आखिरी आयतों के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना "पाँच तरह की निश्चितता" को समझाते हैं—ये पाँच पक्के आध्यात्मिक विश्वास हैं जिन्हें स्वर्ग के नए जन्म पाए नागरिकों को अपनी आत्मा के भीतरी हिस्से में मज़बूती से संजोकर रखना चाहिए, ताकि वे दुनिया और शैतान के सभी आरोपों पर जीत हासिल कर सकें और उन्हें कुचल सकें। मैं इस लेख में बताए गए पाँच पवित्र स्तंभों के ज़रिए त्रिएक परमेश्वर की उस अंतरंग आवाज़ को गहराई से सुनना चाहता हूँ—जो हमारी सुस्त आत्माओं को जगाती है—और यह जानना चाहता हूँ कि परमेश्वर के पुत्र में विश्वास के ज़रिए हमें जो अनंत जीवन मिला है, उसकी वर्तमान समृद्धि कैसे हमारी प्रार्थनाओं और हमारे जीवन को

शक्तिशाली ढंग से बदल देती है। जब प्रेरित यूहन्ना 1 यूहन्ना के शानदार समापन की ओर बढ़ते हैं, तो पहला आध्यात्मिक सत्य जो वे हमारी आत्माओं में उतारते हैं—जो समय के बदलते दौर और शैतान के आरोपों को तुरंत बेअसर कर देता है—वह है "मुक्ति का भरोसा।" दूसरे शब्दों में, यह इस बात की पुष्टि करने वाली घोषणा है कि जो लोग यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानते और स्वीकार करते हैं, उनके पास पहले से ही पूरा अनंत जीवन है, जिसमें ज़रा भी शक या समझौते की गुंजाइश नहीं है।

कृपया आज के वचन, 1 यूहन्ना 5:13 पर ध्यान दें और इसे अपने मन-प्राण में गहराई से उतरने दें: "मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, ताकि तुम जान सको कि तुम्हारे पास अनंत जीवन है" (NKJV)। "मैं यह इसलिए लिख रहा हूँ ताकि तुम, जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हो, यह जान सको कि तुम्हारे पास अनंत जीवन है" (Contemporary Korean Version)। इस एक ही आयत में, प्रेरित यूहन्ना ने उस मुख्य उद्देश्य को स्पष्ट रूप से बताया है जिसके लिए उन्होंने इस पत्र को लिखने में अपना पूरा मन-प्राण लगा दिया। यूहन्ना के लेखन का सार यह है कि वे विश्वासियों को एक दुखी, आध्यात्मिक अनाथ की तरह जीने नहीं देना चाहते—जो बिना यह जाने कि वे उद्धार पा चुके हैं या नहीं, बिना किसी लक्ष्य के भटकते रहते हैं या सज़ा के डर से हमेशा डरे-सहमे रहते हैं। इसमें एक चरवाहे का भावुक प्रेम छिपा है; वे चाहते हैं कि हम यह महसूस करें और जानें—इतनी स्पष्टता से मानो अपनी आँखों से देख रहे हों—कि अनंत जीवन हमारे भीतर बह रहा है (भरोसा)। जब मैंने 1 यूहन्ना की पूरी किताब का बारीकी से अध्ययन किया, तो मुझे "लिखने के छह उद्देश्यों" का शानदार और पवित्र संदर्भ मिला, जिसे यूहन्ना ने पत्र की हर पंक्ति में बहुत कुशलता से पिरोया है। यूहन्ना द्वारा बताए गए उद्देश्य के ये छह स्तंभ एक बेहतरीन आध्यात्मिक सुरक्षा कवच का काम करते हैं, जो "उद्धार के भरोसे"—हमारी आत्मा की बुनियादी निश्चितता—की मज़बूती से रक्षा करते हैं। प्रेरित यूहन्ना द्वारा 1 यूहन्ना में बताए गए छह महान उद्देश्यों का सार इस प्रकार है:

(1) पहला, 1 यूहन्ना को लिखने का मुख्य उद्देश्य विश्वासियों को उस "असीम स्वर्गीय आनंद" का पूरा आनंद लेने में मदद करना है, जो त्रिएक परमेश्वर के साथ गहरे संग-साथ से मिलता है। 1 यूहन्ना की शुरुआत में ही, प्रेरित यूहन्ना इस पत्र को लिखने का पहला पवित्र मकसद स्पष्ट रूप से बताते हैं। 1 यूहन्ना 1:4 देखें:

"हम यह इसलिए लिखते हैं ताकि हमारा आनंद पूरा हो" (Revised Korean Version)। "हम यह इसलिए लिख रहे हैं ताकि आपके साथ असीम आनंद साझा कर सकें" (Contemporary Korean Version)। यीशु मसीह के प्रायश्चित के काम की घोषणा करने के बाद—जो हम जैसे अयोग्य लोगों के लिए पानी और लहू के साथ इतिहास में आए थे—यूहन्ना तुरंत बताते हैं कि इस पत्र का उद्देश्य अपने साथी विश्वासियों के दिलों को "पूरी तरह से स्वर्गीय आनंद" से भरना है। जैसा कि 'कंटेम्पररी कोरियन वर्शन' बताता है, यूहन्ना ने यह सच्चाई भरी चिट्ठी इसलिए लिखी ताकि वे मसीह के कीमती लहू से एक हुए विश्वासियों के साथ "स्वर्गीय आनंद की अधिकता" साझा कर सकें। जिस "आनंद" (या "अत्यधिक आनंद") का ज़िक्र यह बुज़ुर्ग प्रेरित इतने भरे हुए दिल से करते हैं, वह दुनिया की हालात, शोहरत या भौतिक सुख-सुविधाओं से मिलने वाली कुछ समय की खुशी नहीं है। बल्कि, जैसा कि पिछली आयत (आयत 3) में शानदार ढंग से बताया गया है, यह एक अलौकिक आनंद है जो पूरी तरह से परमेश्वर पिता (ब्रह्मांड के रचयिता), उनके पुत्र यीशु मसीह और पवित्र आत्मा के साथ गहरे और सीधे जुड़ाव—प्यार भरे मेल-मिलाप—से मिलता है। यूहन्ना की दिली इच्छा थी कि उनके साथी विश्वासी—जो धोखे की हवाओं से डगमगा रहे थे—वे भी त्रिएक परमेश्वर के साथ उसी मेल-मिलाप के रोमांच का अनुभव करें, जैसा उन्होंने खुद अपनी ज़िंदगी में, चाहे मंच पर उपदेश देते हुए या अपनी निजी प्रार्थना के समय, महसूस किया था। ऐसा इसलिए है क्योंकि केवल वे विश्वासी जो प्रभु के साथ गहरा मेल-मिलाप बनाए रखते हैं, उनमें दुनिया के अंधेरे को पूरी तरह से कुचलने और तोड़ने की ज़बरदस्त आध्यात्मिक शक्ति होती है। लिखने के इस पहले मकसद में शामिल "राजा के नियम" के अनुसार, मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी संत—यहाँ तक कि अपनी निजी प्रार्थना के समय भी—रोज़ाना परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप से मिलने वाले स्वर्गीय आनंद का भरपूर अनुभव करें और अपने उद्धार के भरोसे को मज़बूती से बनाए रखें।

(2) दूसरा, 1 यूहन्ना लिखने का मकसद पाप के उस कठोर बोझ को तोड़ना है जो परमेश्वर—जो ज्योति हैं—के साथ मेल-मिलाप को खत्म कर देता है, और इस तरह "प्रभु के लोगों को पाप करने से रोकना" है।

1 यूहन्ना 2:1 के पहले हिस्से में, प्रेरित यूहन्ना अपनी चिट्ठी का दूसरा पवित्र मकसद एक चरवाहे की तरह बताते हैं जो अपनी भेड़ों की परवाह करता है: "मेरे प्यारे बच्चों, मैं तुम्हें ये बातें इसलिए लिख रहा हूँ ताकि

तुम पाप न करो" (NKJV)। "विश्वास में मेरे बच्चों, मैं यह चिट्ठी इसलिए लिख रहा हूँ ताकि तुम पाप न करो" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। इसके पीछे का धार्मिक कारण साफ़ है कि क्यों यह बुज़ुर्ग प्रेरित इतनी मज़बूती से कहते हैं, "ताकि तुम पाप न करो।" ऐसा इसलिए है क्योंकि अगर कोई सिर्फ़ ज़ुबान से यह दावा करता है कि वह परमेश्वर के साथ पवित्र संगति का आनंद ले रहा है—जो पूरी तरह से ज्योति है और जिसमें ज़रा भी अंधकार नहीं है (1:5)—लेकिन रोज़मर्रा की ज़िंदगी में पाप से भरी अंधेरी जीवनशैली को जारी रखता है, तो वह एक बहुत बुरा झूठा है जो सच्चाई के अनुसार नहीं जीता है (वचन 6, कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)।

प्रेरित यूहन्ना कई नज़रियों से यह बताते हैं कि सच्ची कलीसिया का रहस्य क्या है। "अगर हम ज्योति में चलते हैं, जैसे परमेश्वर ज्योति में है, तो हमारी आपस में संगति होगी" (वचन 7)। सच्ची संगति—जो काम और ईमानदारी से पहचानी जाती है—कलीसिया (प्रभु की देह) में संतों के बीच आपस में (क्षैतिज रूप से) होती है। इसके लिए ज़रूरी है कि प्रेम की एक ऐसी संगति (ऊर्ध्वाधर या वर्टिकल) भी हो जो पवित्र आत्मा के ज़रिए पिता और पुत्र के साथ गहराई से जुड़ी हो। इसके अलावा, यह शानदार ऊर्ध्वाधर संगति तभी एक शक्तिशाली सच्चाई बनती है जब हम वचन की रोशनी में ज्योति में चलते हैं, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ज्योति में रहता है। अगर हम प्रभु के साथ संगति का धार्मिक दिखावा करते हुए भी ज़िद के साथ गुप्त पाप की अंधेरी जीवनशैली में बने रहते हैं, तो हम सीधे तौर पर अपने अंदर रहने वाली पवित्र आत्मा के शासन का विरोध कर रहे होते हैं। साथ ही, हम उस ऊर्ध्वाधर जीवन-रेखा को भी दूषित कर रहे होते हैं जो हमें परमेश्वर पिता—जो ज्योति है—और उनके पुत्र यीशु मसीह से जोड़ती है। इस विनाशकारी ऊर्ध्वाधर अलगाव के कारण, हम प्रभु में अपने भाई-बहनों के साथ शुद्ध और सच्ची संगति नहीं कर पाते; इसके बजाय, हम अंधेरे में भटकते रहते हैं और अपने दिलों में नफ़रत, जलन और अनसुलझी शिकायतों के कठोर, ठंडे पत्थर लिए फिरते हैं।

इसीलिए प्रेरित यूहन्ना ने सच्चाई का यह पत्र इतनी ज़ोरदार और ज़रूरी बात के साथ लिखा—ताकि यह पक्का किया जा सके कि मसीह के लहू से उनसे जुड़े उनके "विश्वास के बच्चे" शैतान द्वारा बिछाए गए पाखंड के जाल में न फँसें और अनंत जीवन की समृद्धि न खोएँ, बल्कि पाप करने से बचे रहें। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी संत सिर्फ़ ज़ुबान से की जाने वाली बातों के पाखंड

को तोड़ दें; ज्योति स्वरूप प्रभु के सामने रोज़ाना अपने दिलों की काली, पापपूर्ण अवस्था को स्वीकार करके पाप से दूर रहें; और अपने जीवन के ज़रिए स्वर्ग के राज्य के पवित्र नागरिकों की पहचान को शानदार ढंग से दिखाएँ। (3) तीसरा, 1 यूहन्ना को लिखने का तीसरा मकसद अंधेरे से पैदा हुई नफ़रत को दूर करना और विश्वासियों को—सच्ची रोशनी की संतान के तौर पर—उस महान आज्ञा का पूरी तरह पालन करने के लिए प्रेरित करना है कि "एक-दूसरे से प्रेम करो," एक ऐसी आज्ञा जिसे प्रभु ने अपने ही लहू से लिखा है।

1 यूहन्ना 2:7–8 के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना अपनी लेखनी के तीसरे पवित्र मकसद का ऐलान करते हैं—विश्वास का वह सबसे शानदार शिखर जिस तक पहुँचने की कोशिश विश्वासियों को जीवन भर करनी चाहिए: "हे प्रियों, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिख रहा हूँ, बल्कि वही पुरानी आज्ञा लिख रहा हूँ जो तुम्हें शुरू से मिली थी। पुरानी आज्ञा वह वचन है जिसे तुमने सुना है। साथ ही, यह एक नई आज्ञा भी है जो मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, जो उसमें और तुममें सच है, क्योंकि अंधेरा मिट रहा है और सच्ची रोशनी पहले से ही चमक रही है" (1 यूहन्ना 2:7–8)। प्रेरित यूहन्ना के सच्चाई की इस पत्री को आँसुओं के साथ लिखने का तीसरा साफ़ कारण यह था कि वे इसे पढ़ने वालों से आग्रह करें कि वे अपने दिलों को उस सच्ची आज्ञा के प्रति समर्पित करें—और उसका पालन करें—जिसे प्रभु ने आधारशिला के रूप में स्थापित किया था। प्रभु की सच्ची आज्ञा, जिसकी ओर सुसमाचार इशारा करता है, किसी भी तरह से जटिल और कानूनी नियमों का समूह नहीं है। यह बस परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करना और उस नियम के अनुसार "एक-दूसरे से सच्चे दिल से प्रेम करना" है जिसका उन्होंने आदेश दिया था (3:23)।

बुज़ुर्ग प्रेरित की दिली इच्छा थी कि उनके प्रिय साथी विश्वासी शैतान के चालाक धोखे का शिकार न बनें और पाप की कठोर दलदल में न डूबें—खासकर, "अपने भाई से नफ़रत करने" के पाप में (2:9)। इसके बजाय, वे चाहते थे कि वे परमेश्वर के धर्मी नियम का पालन करते हुए सच्चाई और कर्म से एक-दूसरे को अपनाएँ। प्रेम के इस महान नियम को बनाए रखने का ठोस कारण स्पष्ट है। ऐसा इसलिए है क्योंकि क्रूस पर प्रायश्चित के ज़रिए, वह आध्यात्मिक "अंधेरा जो हमारे पूरे अस्तित्व पर छाया हुआ था, मिट गया है, और सच्ची रोशनी हमारी आत्माओं पर शानदार ढंग से चमक रही है" (पद 8)। इसके अलावा, ऐसा इसलिए है क्योंकि हम—जो कभी अयोग्य और दीन-हीन थे—परमेश्वर पिता के गहरे और अपार प्रेम के ज़रिए "परमेश्वर की संतान"

होने के शानदार और अद्भुत दर्जे में पूरी तरह अपना लिए गए हैं (3:1)। इसलिए, प्रेरित यूहन्ना इस पत्र को पढ़ने वाले हर मसीही से ज़ोर देकर कहते हैं: अगर हम परमेश्वर—जो सच्चा प्रकाश है—के साथ जीवंत संगति का दावा करते हैं, तो हमें तुरंत ऐसी किसी भी पाखंडी और अंधेरे वाली जीवनशैली को छोड़ देना चाहिए जो केवल दिखावे के लिए धार्मिकता की बात करती है, जबकि हमारे दिलों में अपने भाइयों के लिए जलन और नफ़रत भरी होती है (1:6)।

हमें प्रकाश का जीवन जीना चाहिए—नफ़रत के मौजूदा माहौल को तोड़कर और अपने भाइयों से प्रेम करने की वास्तविक धार्मिकता का पालन करके—पवित्र आत्मा के द्वारा रोज़ाना शुद्ध होकर, ठीक वैसे ही जैसे यीशु मसीह, जिन्होंने हमें अपने लहू से मोल लिया है, धर्मी हैं (2:29, 3:10; 3:7)। जब कोई विश्वासी पवित्र आज्ञाकारिता के इस रास्ते पर मज़बूती से चलता है, तो परमेश्वर का पूर्ण *अगापे* प्रेम हमारे दिलों में पूरी तरह से बस जाता है (2:5), और हमें एक ऐसी आत्मिक निडरता मिलती है जिससे हमारी आत्मा या अंतःकरण में ठोकर खाने का कोई कारण नहीं बचता (वचन 10)। इस प्रकार, यह पक्का करने के लिए कि हम स्पष्ट रूप से समझें कि हम सच्चे सत्य से जुड़े हैं—और शैतान के धोखे हमें डिगा न सकें (3:19)—और ताकि हम सम्मान के साथ उन लोगों के रूप में जी सकें जिनके भीतर पहले से ही अनंत जीवन बह रहा है (वचन 14), प्रेरित यूहन्ना ने प्रेम के इस पवित्र नियम को अपने पत्र के केंद्र में बहुत मज़बूती और गहराई से लिखा है। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी संत अपने होंठों के पाखंड को पूरी तरह से क्रूस पर जड़ दें और उसे दफ़ना दें; और पवित्र आत्मा की शक्ति से, वे अपने साथ के सदस्यों से पूरे जीवन प्रेम करें, और इस तरह पूरी दुनिया को साबित करें कि वे प्रकाश की संतान हैं जिनके पास सचमुच अनंत जीवन है।

(4) चौथा, 1 यूहन्ना को लिखने का चौथा मकसद पापों की क्षमा के अनुग्रह, परमेश्वर के ज्ञान और वचन की शक्ति की पुष्टि करना है, ताकि विश्वासी "एंटीक्राइस्ट (मसीह-विरोधी) के ज़बरदस्त धोखे के बावजूद, दुष्ट को निर्णायक रूप से कुचल सकें और उस पर जीत हासिल कर सकें।"

1 यूहन्ना 2:12–14 में, प्रेरित यूहन्ना अपने पत्र के चौथे पवित्र उद्देश्य के बारे में एक शानदार और काव्यात्मक बात कहते हैं—एक ऐसा उद्देश्य जिसमें कलीसिया के सभी उम्र और आध्यात्मिक स्तरों के विश्वासियों को शामिल किया गया है: "हे बच्चों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि उसके नाम के कारण तुम्हारे पाप क्षमा कर दिए गए हैं। हे पिताओं, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम उसे जानते हो जो शुरू से है। हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुमने उस दुष्ट पर विजय पाई है। हे बच्चों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम पिता को जानते हो। हे पिताओं, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम उसे जानते हो जो शुरू से है। हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम बलवान हो, और परमेश्वर का वचन तुममें बना रहता है, और तुमने उस दुष्ट पर विजय पाई है।" यूहन्ना ने यह पत्र मुख्य रूप से इसलिए लिखा था ताकि पढ़ने वालों के मन में उद्धार की उन तीन शानदार सच्चाइयों को पक्का किया जा सके जिनका अनुभव वे पहले ही कर चुके थे: पापों की क्षमा का भरोसा, परमेश्वर का आध्यात्मिक ज्ञान, और शैतान पर मिली जीत का स्वरूप।

(a) पहला, यूहन्ना यह बताना चाहते थे कि उनके पाप पूरी तरह से केवल यीशु के नाम के द्वारा क्षमा किए गए थे।

हालाँकि विश्वासियों को ज्योति में चलना चाहिए और पाप से बचना चाहिए (1:6), फिर भी सुसमाचार में एक सुरक्षा का उपाय है जो हमें निराशा में डूबने से बचाता है, तब भी जब हम अपनी कमज़ोरी के कारण लड़खड़ा जाते हैं। यदि हम बस उस पाप को स्वीकार कर लें जो हमारे दिल में जलते हुए कोयले की तरह पड़ा है, तो विश्वासयोग्य और धर्मी परमेश्वर हमारे सभी पापों को क्षमा कर देता है और हमें हर तरह के अधर्म से शुद्ध करता है (पद 9)। इसके अलावा, भले ही हम पाप कर बैठें, हमारे पास "यीशु मसीह, जो धर्मी है" — हमारा वकील है जो पिता के सामने पूरी तरह से हमारा पक्ष रखता है और हमारे पापों के लिए प्रायश्चित का बलिदान है (2:1–2)। यूहन्ना चाहते थे कि विश्वासियों को क्षमा की इस महान कृपा का पूरा भरोसा हो।

(b) दूसरा, यूहन्ना ने यह पत्र इसलिए लिखा क्योंकि वे पहले से ही परमेश्वर के पुत्र को पूरी तरह से "जानते" थे—जीवन का वचन जो शुरू से अस्तित्व में था और स्वयं अनंत जीवन है (1:1–3)।

विश्वासी केवल पापों की क्षमा के अनुभव से आगे बढ़ चुके थे; वे ऐसे लोग बन गए थे जो त्रिएक परमेश्वर के साथ एक जीवंत और प्रेमपूर्ण संगति में शामिल थे। यूहन्ना की इच्छा थी कि वे उस अनंत जीवन और संगति से संतुष्ट होकर न रुक जाएं जो उन्हें पहले से मिली हुई थी, बल्कि वे अपने भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करें ताकि वे यीशु मसीह को और गहराई और भव्यता से जान सकें, और इस तरह उनके साथ अपनी घनिष्ठ संगति का दायरा बढ़ा सकें।

(c) तीसरा, यूहन्ना यह पक्का करना चाहते थे कि उन्होंने अपने दिलों में वास करने वाले वचन की शक्तिशाली तलवार का इस्तेमाल करके दुष्ट शैतान पर पहले ही जीत हासिल कर ली है (2:14)।

यूहन्ना चाहते थे कि ये विश्वासी—जो वचन से लैस युवा पुरुषों की तरह मजबूत थे—ऐसे सैनिक बनें जो सांसारिक इच्छाओं (जो प्रभु के लौटने पर धुएं की तरह जल्द ही गायब हो जाएंगी, पद 15) से प्रेम न करें, बल्कि स्वेच्छा से केवल परमेश्वर की पवित्र इच्छा को पूरा करें, जो हमेशा बनी रहती है (पद 17)। खास तौर पर, बुजुर्ग प्रेरित जोर देकर कहते हैं कि "यह आखिरी घड़ी है" और "कई मसीह-विरोधी पहले ही आ चुके हैं, जो जहरीली खरपतवार की तरह उग आए हैं" (पद 18)। आध्यात्मिक झूठ बोलने वालों—जो सुसमाचार की सच्चाई को कमजोर करते हैं (पद 22)—और धोखेबाज ताकतों—जो संतों को नरक के डर में फंसाना चाहती हैं (पद 26)—से भरे युद्ध के मैदान के बीच, लेखक की इच्छा थी कि इसे पढ़ने वाले अपने भीतर वास करने वाले परमेश्वर के वचन से मजबूती से जुड़े रहें। इसलिए, उन्होंने जीत की यह साहसी घोषणा लिखी ताकि उन्हें शैतान की चालों को तोड़ने, अपने सेनापति यीशु की जीत को अपनी जीत मानने और इस आध्यात्मिक युद्ध में पक्के तौर पर अंतिम विजेताओं के रूप में दौड़ पूरी करने के लिए सशक्त बनाया जा सके।

मैं प्रभु के नाम से पूरी लगन से प्रार्थना करता हूं कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी सैनिक दुनिया के धोखे और इच्छाओं के सामने पीछे न हटें, बल्कि दुष्ट को हराने और अपने उद्धार के भरोसे को शानदार ढंग से दिखाने के लिए अपने भीतर जीवित और सक्रिय वचन की शक्तिशाली तलवार का इस्तेमाल करें।

(5) पांचवां, 1 यूहन्ना को लिखने का पांचवां मकसद सच्चाई और झूठ के बीच की सीमा को स्पष्ट रूप से बताना है, ताकि विश्वासी उस सुसमाचार की सच्चाई पर अटूट रूप से कायम रह सकें जिसे उन्होंने शुरू से सुना था। 1 यूहन्ना 2:21 में, प्रेरित यूहन्ना आखिरी समय में रहने वाले विश्वासियों को—जो धोखे के धुंधलके में घिरा हुआ समय है—लिखने का यह पाँचवाँ पवित्र मकसद बताते हैं: "मैं तुम्हें इसलिए नहीं लिख रहा हूँ कि तुम सच नहीं जानते, बल्कि इसलिए कि तुम सच जानते हो, और सच से कोई झूठ नहीं निकलता" (रिवाइज़्ड न्यू कोरियन वर्शन)। "मैं यह पत्र इसलिए नहीं लिख रहा हूँ कि तुम सच नहीं जानते; बल्कि, मैं इसे इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम सच जानते हो और समझते हो कि झूठ सच से पैदा नहीं होता" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। प्रेरित यूहन्ना के इस सुसमाचार पत्र को लिखने का पाँचवाँ स्पष्ट मकसद उस सुसमाचार की सच्चाई को मज़बूती से स्थापित करना था जो संतों के पास पहले से थी और उन्हें बहुत बारीकी से सच और झूठ के बीच फ़र्क करने में सक्षम बनाना था।

बुज़ुर्ग प्रेरित ने इस सच्चाई का डटकर सामना किया कि "यह आखिरी घड़ी है" और "बहुत से मसीह-विरोधी पहले ही आ चुके हैं" (पद 18)। यूहन्ना ने जिन धोखेबाज़ ताकतों की पहचान की, वे असल में आध्यात्मिक "झूठे" थे। उन्होंने न केवल साफ़ तौर पर इस बात से इनकार किया कि यीशु—इंसानियत के उद्धारकर्ता—मसीह हैं, बल्कि वे भयानक "मसीह-विरोधी" भी थे जो परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के बीच के दिव्य मिलन को पूरी तरह खत्म करने पर आमादा थे; जैसा कि *ह्युंडाई-इनुई सोंगग्योंग* (मॉडर्न पीपल्स बाइबिल) अनुवाद में सही कहा गया है, वे शैतान द्वारा चलाए जा रहे "मसीह के दुश्मन" थे (पद 22)। यूहन्ना इस बात को उजागर करते हैं कि मसीह-विरोधियों का यह समूह शुरू से ही कभी यीशु मसीह का नहीं था और वे बस बाहरी लोग थे जिनका कीमती लहू से जुड़े कलीसियाई समुदाय से कोई नाता नहीं था (पद 19)। इस तरह, यूहन्ना यह पत्र इस आधार पर लिखते हैं कि उनके प्यारे संतों को पवित्र परमेश्वर से पवित्र आत्मा मिली है और वे पहले से ही "इन सभी आध्यात्मिक सच्चाइयों" को समझते हैं (पद 20)। उन्होंने सच्चाई का यह रिकॉर्ड इसलिए लिखा और भेजा ताकि यह पक्का किया जा सके कि मसीह-विरोधियों की बाढ़ के बीच, संत शैतान के जाल में न फँसें—बल्कि "जो तुमने शुरू से सुना है" उसे पूरी तरह अपने अंदर बसने दें; दूसरे शब्दों में, यह पक्का करने के लिए—जैसा कि *ह्युंडाई-इनुई सोंगग्योंग* की ज़ोरदार आवाज़ बताती है—कि वे सुसमाचार के सार को "कभी न भूलें" (पद 24)। तो फिर, "जो तुमने शुरू से सुना है"—उसका असली

स्वरूप क्या है, जिसे संतों को अपनी आत्मा के लिए किसी खजाने की तरह संजोकर रखना चाहिए? वह और कोई नहीं, बल्कि पुत्र, यीशु मसीह हैं—अनंत जीवन का वह साक्षात रूप जिसे प्रेरित यूहन्ना ने इतिहास में अपनी आँखों से देखा और छुआ था (1:1–2)। संक्षेप में, जिस जीवन को विश्वासियों को थामे रखना है, उसका सार कोई जटिल दर्शन नहीं, बल्कि केवल "यीशु मसीह के क्रूस का सुसमाचार" है। ठीक उस समय जब झूठ बोलने वाले और धोखा देने वाले कई मसीह-विरोधी (antichrists) सुसमाचार के अटल स्वरूप को नष्ट करने के लिए सामने आए, प्रेरित यूहन्ना ने इस पत्र के माध्यम से विश्वासियों के दिलों में उद्धार की एक शक्तिशाली और अडिग नींव रखी: "जो कोई विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर की संतान है" (5:1); "दुनिया पर कौन विजय पाता है, सिवाय उसके जो विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है?" (5:5)।

यूहन्ना द्वारा इस गंभीर और प्रभावशाली संदेश को घोषित करने का कारण स्पष्ट है: वह चाहते थे कि विश्वासी यह समझें कि उन्हें पहले ही यीशु मसीह के सुसमाचार का "जीवन-संचार" (transfusion) मिल चुका है और वे "सत्य" की नींव पर खड़े हैं (2:21)। यूहन्ना ने सुसमाचार के इस महान सिद्धांत को अपने पत्र में शानदार ढंग से अंकित किया ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि विश्वासी एक पल के लिए भी न भूलें—बल्कि दृढ़ता से थामे रहें—परमेश्वर की महिमामयी संतान के रूप में अपनी अटूट पहचान को; वह पहचान जो यह स्वीकार करने से सुरक्षित होती है कि यीशु ही मसीह और परमेश्वर के पुत्र हैं। मैं प्रभु के नाम से पूरी निष्ठा से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी सदस्य दुनिया के जटिल धोखों या झूठे धर्म-सिद्धांतों के कारण अपनी आत्मा को छिनने न दें; इसके बजाय, आप अपने विश्वास का लंगर "क्रूस के सुसमाचार के सत्य"—जिसे आपने शुरू से सुना है—पर मजबूती से डालें और परमेश्वर की नई जन्मी संतान के रूप में अपनी पहचान को शानदार ढंग से प्रकट करें। (6) छठा, 1 यूहन्ना को लिखने का अंतिम उद्देश्य—और पूरी पत्री का मुख्य लक्ष्य—यह सुनिश्चित करना है कि जिन लोगों ने परमेश्वर के पुत्र को ग्रहण किया है, वे स्पष्ट रूप से जानें कि "अनंत जीवन पहले से ही उनके भीतर शक्तिशाली रूप से बह रहा है।" 1 यूहन्ना 5:13 में, प्रेरित यूहन्ना इस अध्याय के मुख्य विषय और अपनी लिखी बातों के अंतिम निष्कर्ष को शानदार ढंग से बताते हैं: "मैं ये बातें तुम्हें लिखता हूँ जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, ताकि तुम जान सको कि तुम्हारे पास अनंत जीवन है" (रिवाइज़्ड न्यू कोरियन वर्शन)। "मैं यह इसलिए लिख रहा हूँ ताकि तुम, जो परमेश्वर के पुत्र

पर विश्वास करते हो, जान सको कि तुम्हारे पास अनंत जीवन है" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। यूहन्ना के इस पत्र को लिखने का छठा और आखिरी कारण संतों को—जो शैतान के राज वाली धोखेबाज़ दुनिया के खिलाफ खून बहाने तक के संघर्ष से जूझ रहे थे—उनकी पहचान के बारे में पक्का और अटूट भरोसा दिलाना था। बूढ़े प्रेरित को अच्छी तरह पता था कि यह पत्र पाने वाले भाई-बहनों ने पहले ही यीशु मसीह के सुसमाचार को जीवन देने वाले संचार के रूप में अपना लिया था और वे "मसीह, जो अनंत जीवन है" (1:2) पर पक्का विश्वास करते थे। उन्हें भरोसा था कि वे नासरत के यीशु को मसीह मानते थे—वह राजा, महायाजक और भविष्यद्वक्ता जिसने उनके पापों का पूरा प्रायश्चित किया था (5:1)—और वे बिना किसी शक के, परमेश्वर के पुत्र के रूप में उनकी सच्ची पहचान पर विश्वास करते थे, जो पिता परमेश्वर के बिल्कुल बराबर हैं (वचन 5)। यह जानते हुए कि विश्वास करने वाले सुसमाचार की शानदार सच्चाई पर मजबूती से खड़े थे, यूहन्ना को भरोसा था कि वे साफ तौर पर समझ जाएँगे कि मसीह-विरोधी लोगों के घिनौने "झूठ"—जो इस बात से इनकार करते थे कि यीशु ही मसीह और परमेश्वर के पुत्र हैं—सच्चाई से नहीं निकले थे (2:21)। इस तरह, 1 यूहन्ना के इस पत्र के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना पूरी दुनिया के सामने एक ज़ोरदार और अटूट घोषणा करते हैं। उन्होंने यह पत्र प्रभु के लोगों में एक साफ़ और अटूट भरोसा जगाने के लिए लिखा और भेजा था—वे लोग जिन्होंने पवित्र आत्मा के खास काम से नया जन्म पाकर और अनंत जीवन देने वाले यीशु मसीह को अपनी आत्मा का राजा मानकर, "परमेश्वर के पुत्र का स्वागत" अपने दिलों के सिंहासन पर किया है। वह चाहते थे कि वे पूरी साफ़-साफ़ समझें—मानो अपनी आँखों से देख रहे हों—कि उनके पास *अभी* पूरी तरह से वह अपार और कभी न खत्म होने वाला "अनंत जीवन" मौजूद है, जो परमेश्वर ने मसीह के कीमती लहू की वजह से उन्हें मुफ़्त और उदारता से दिया है (5:11–13)।

स्यूंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, 1 यूहन्ना की पूरी किताब में लिखे गए छह उद्देश्यों की शानदार कड़ी पर ध्यान दें। हमें स्वर्गीय आनंद से भरपूर होना चाहिए (1:4), रोशनी में चलकर गुप्त पापों को पूरी तरह से दूर करना चाहिए (2:1), और प्रभु की महान आज्ञा के अनुसार (पद 7-8) अपने भाइयों और बहनों से पूरे दिल से प्यार करना चाहिए। इसके अलावा, हमें अपने अंदर मौजूद वचन की शक्ति से दुष्ट—शैतान—पर जीत हासिल करनी चाहिए (पद 14), और शुरू से सुने गए क्रूस के सुसमाचार की सच्चाई पर मजबूती से खड़े होकर एंटीक्राइस्ट के धोखे को पूरी तरह से खत्म करना चाहिए (पद 21)। जब जीवन की ये पाँच दिशाएँ

और पवित्र गवाहियाँ हमारे जीवन की वेदी पर शानदार फल देती हैं, तो हम आखिरकार उस महान महिमा की रक्षा करते हैं जिसकी घोषणा 1 यूहन्ना 5:13 में की गई है: उद्धार का अटूट भरोसा कि "मेरे अंदर निश्चित रूप से अनंत जीवन है।" दुनिया की उथल-पुथल, लोगों की धमकियों या शैतान के आरोपों के सामने आध्यात्मिक अनाथों की तरह पीछे न हटें या डर से कांपें न। यीशु मसीह—जिन्होंने पहले ही दुनिया पर जीत हासिल कर ली है, और जो सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन हैं—सचमुच अभी हमारे अंदर जीवित हैं। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी जीवन भर उद्धार के इस शानदार भरोसे को एक पवित्र तलवार की तरह ऊँचा रखें, और—अपने साथ विश्वास करने वालों से सच्चे दिल से प्यार करके—पूरी दुनिया को निडरता से साबित करें कि हम वास्तव में स्वर्ग की संतान हैं जिनके पास अनंत जीवन है। आज के वचन—1 यूहन्ना 5:13—के माध्यम से, हम उस मुख्य उद्देश्य को जानते हैं जिसके लिए प्रेरित यूहन्ना ने यह पत्र लिखा था, और यूहन्ना के धर्मशास्त्र में एक शानदार और महत्वपूर्ण मोड़ पर रुकते हैं। यूहन्ना के लेखन का सार स्पष्ट है: वह चाहते हैं कि "आप जो विश्वास करते हैं"—जिन्होंने परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह को अपने दिलों में बसाया है—वे इन आखिरी दिनों के हर धोखे को तोड़ दें और उद्धार के अटूट भरोसे को स्पष्ट रूप से समझें और अपनाएँ, और घोषणा करें, "मेरे पास पहले से ही अनंत जीवन है" (पद 13, *समकालीन कोरियाई संस्करण*)। यहाँ, हम एक दिलचस्प और जटिल धार्मिक समानता देखते हैं। अगर हम उसी प्रेरित (Apostle) द्वारा लिखी गई यूहन्ना 20:31 को देखें, तो पाते हैं कि उन्होंने सुसमाचार (Gospel) लिखने का कारण साफ़-साफ़ बताया है: "लेकिन इसे लिखने का मकसद यह है कि आप विश्वास कर सकें कि यीशु ही मसीह हैं, परमेश्वर के पुत्र हैं, और उन पर विश्वास करके आप उनके नाम से जीवन पा सकें" (यूहन्ना 20:31, *Contemporary Korean Version*)। अपने सुसमाचार के आखिर में, प्रेरित यूहन्ना अपनी लेखनी का एक साफ़ "दोहरा मकसद" बताते हैं: पहला, पूरी दुनिया को इस बात पर विश्वास दिलाना कि नासरत के यीशु ही परमेश्वर के अनंत पुत्र और "मसीह" हैं—हमारे राजा, महायाजक और नबी; और दूसरा, बर्बादी की ओर बढ़ रही आत्माओं को उस पुत्र के नाम पर भरोसा और विश्वास करके "अनंत जीवन" पाने में मदद करना।

इन दो महान रचनाओं के मकसद को एक साथ रखें और उन पर गहराई से विचार करें। यूहन्ना के सुसमाचार के मुख्य पाठक वे लोग थे जो विश्वास नहीं करते थे—जिन्होंने अभी तक व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र से मुलाकात नहीं की थी या उन पर विश्वास नहीं किया था। यह एक चरवाहे जैसा सुसमाचार

प्रचार का काम था, जिसका मकसद अंधेरे में फँसे लोगों को क्रूस के सुसमाचार की महिमा बताना था, ताकि वे यीशु को प्रभु मानें और अनंत जीवन पाएँ। हालाँकि, जब यूहन्ना ने 'यूहन्ना की पहली पत्री' (First Epistle of John) लिखी, तब तक उनका ध्यान पूरी तरह बदल चुका था। इस पत्र को पाने वाले लोग बाहरी लोग नहीं थे जिन्हें सुसमाचार सुनाना था, बल्कि वे पवित्र विश्वासी थे जिन्होंने पहले ही यीशु मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर लिया था और एक अनमोल खजाने के रूप में अनंत जीवन पा लिया था। जैसा कि टीकाकार जॉन मैकआर्थर ने बहुत समझदारी से कहा है, 1 यूहन्ना का सार आध्यात्मिक रूप से मरे हुओं को जीवन देना नहीं है, बल्कि उन संतों में—जिनके पास पहले से ही जीवन है, लेकिन जो शैतान के आरोपों और मसीह-विरोधी (Antichrist) के धोखे के कारण डगमगा जाते हैं—एक अटूट, शानदार और चट्टान जैसी मज़बूत "उद्धार की पक्की उम्मीद" (assurance of salvation) जगाना है। अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में, हमें एक पल के लिए भी शक नहीं करना चाहिए कि हम स्वर्ग के राज्य के नागरिक हैं, अनंत जीवन की डोर से मसीह से हमेशा के लिए जुड़े हुए हैं (यूहन्ना 17:3; 1 यूहन्ना 5:20) और पूरे ब्रह्मांड की अनेक आध्यात्मिक आशीषें हमारे पास हैं। क्रूस के कीमती लहू के ज़रिए हर तरह की खोखली चिंता और डर को पूरी तरह से दूर कर दें। मैं प्रभु के नाम से पूरी श्रद्धा के साथ प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र संत उद्धार के उस भरोसे को—जो पहले ही आपमें पक्का हो चुका है—सुसमाचार की तेज़ तलवार की तरह ऊँचा बनाए रखें, और आज आप दुनिया और शैतान को शानदार जीत के साथ कुचल दें। मैं रोमियों 8:28–29 में बताए गए अनुग्रह के महान, बुनियादी सिद्धांतों पर गहराई से विचार कर रहा हूँ—ये वे सच हैं जो हमारी विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च कम्युनिटी को हमारे पास्टर एमेरिटस की निष्ठावान सेवा से मिले थे। रोमियों 8:28–29 की शानदार घोषणा पर गौर करें: "और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, और जिन्हें उसके मकसद के अनुसार बुलाया गया है, उनके लिए परमेश्वर हर चीज़ में भलाई के लिए काम करता है। क्योंकि जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जाना, उन्हें उसने पहले से ही अपने बेटे के स्वरूप में ढलने के लिए चुना, ताकि वह बहुत से भाई-बहनों में पहलौठा हो।" यह हिस्सा जिस परम "उद्धार" की ओर इशारा करता है, वह "वह महिमा है जो हममें प्रकट होगी"—जैसा कि प्रेरित पौलुस ने रोमियों 8:18 में कहा है—जो त्रिएक परमेश्वर के स्वभाव में पाए जाने वाले शानदार "अनंत जीवन" की ओर इशारा करता है। दूसरे शब्दों में, यहाँ जिस उद्धार की गारंटी दी गई है, वह भविष्य के उस उद्धार का परम पूरा होना है जो समय और स्थान की सीमाओं से परे है। यह एक ब्रह्मांडीय, शानदार परिणति का वादा है: दूसरी बार आगमन की सुबह, जब हमारे

उद्धारकर्ता यीशु मसीह महिमा के साथ बादलों पर लौटेंगे, तो हम पूरी तरह से जी उठेंगे और आध्यात्मिक शरीरों में बदल जाएँगे, स्वर्ग के तेजस्वी राज्य में प्रवेश करेंगे, और त्रिएक परमेश्वर के साथ हमेशा के लिए रहेंगे, और अनंत जीवन के आनंद का पूरा मज़ा लेंगे।

तो फिर, वे कौन लोग हैं जो अपनी आत्मा के सबसे गहरे स्थान में उद्धार के इस शानदार भरोसे की मज़बूती से रक्षा कर सकते हैं? बाइबल साफ़ तौर पर उनकी पहचान बताती है: वे लोग जो "परमेश्वर से प्रेम करते हैं" वही मुख्य पात्र हैं जो उद्धार के इस भरोसे को मज़बूती से थामे रहते हैं (रोमियों 8:28)। फिर भी, प्रेरित पौलुस तुरंत और साफ़ तौर पर उन लोगों की पहचान का स्रोत बताता है जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं: वे "वे लोग हैं जिन्हें उसके मकसद के अनुसार बुलाया गया है।" दूसरे शब्दों में, वह शक्ति जो एक विश्वासी को परमेश्वर से प्रेम करने में सक्षम बनाती है, वह किसी व्यक्ति के अपने व्यक्तित्व या अपनी मर्ज़ी से बने नैतिक चरित्र से नहीं आती है। बल्कि, क्योंकि उन्हें परमेश्वर पिता की अनंत इच्छा और योजना के तहत खास तौर पर "बुलाया" गया है, इसलिए वे उसी अनुग्रह से प्रेरित होकर पिता से प्रेम करने लगते हैं; इसके अलावा, परमेश्वर की अदालत में, उन्हें उपहार के रूप में उद्धार मिलने की गारंटी है—और उनमें से कोई भी इसमें असफल नहीं होता। यहाँ एक ऐसी आध्यात्मिक गहराई है जो हमारे दिलों को विस्मय से भर देती है। इस अंश में बताई गई "परमेश्वर की इच्छा" मानवता के उद्धार की अनंत मास्टर योजना से कम नहीं है, जबकि "जिन्हें बुलाया गया है" का अर्थ उन विश्वासियों से है जिन्होंने "प्रभावी बुलाहट" (या "विशेष बुलाहट") का अनुभव किया है—पवित्र आत्मा का वह खास काम जिसका विरोध नहीं किया जा सकता।

वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म (जो रिफॉर्म्ड आस्था का एक मुख्य आधार है) का 31वां सवाल पवित्र आत्मा के इस रहस्यमय और गहरे काम को ठीक-ठीक परिभाषित करता है: "प्रभावी बुलाहट परमेश्वर की आत्मा का काम है, जिसके द्वारा वह हमें हमारे पाप और दुख का एहसास कराता है (पश्चाताप), मसीह के ज्ञान से हमारे मन को रोशन करता है, और हमारी इच्छाशक्ति को नया करता है; वह हमें सुसमाचार में स्वतंत्र रूप से दिए गए यीशु मसीह को अपनाने के लिए प्रेरित और सक्षम बनाता है (धर्म-परिवर्तन)।" पवित्र आत्मा द्वारा नए सिरे से जन्मे और परिवर्तित हुए अपने बच्चों के लिए, सेनाओं का प्रभु एक ऐसी बड़ी गारंटी देता है जो हमारी आत्माओं के आधार को बनाए रखती है—जीवन के कठिन सफर से लेकर स्वर्ग के दरवाज़ों तक पहुँचने

तक। यह परमेश्वर की देखभाल (प्रोविडेंस) की एक शक्तिशाली घोषणा है कि हमारे जीवन में होने वाली "सभी बातें" "अंततः भलाई के लिए काम करती हैं" (रोमियों 8:28)।

इस अंश के वास्तविक अर्थ और महत्व पर विचार करें। परमेश्वर जो अंतिम भलाई लाता है, वह इस दुनिया की नाशवान दौलत और महिमा नहीं है, बल्कि "उद्धार" है—हमारी आत्माओं का अंतिम पूर्णत्व—और "पवित्रीकरण" है, यानी यीशु मसीह के स्वरूप में ढलने की प्रक्रिया। इस महिमा को पाने के लिए, त्रिएक परमेश्वर का सर्वशक्तिमान हाथ विश्वासी के जीवन की हर चीज़ को लेता है—न केवल समृद्धि और आशीर्वाद के समय को, बल्कि मुश्किल तूफानों, दर्द के आँसुओं और यहाँ तक कि हमारी दर्दनाक गलतियों और कमजोरियों के टुकड़ों को भी—और बिना किसी अपवाद के उन सबको बुनता और निखारता है, और हमें पक्का करके परमेश्वर के राज्य के दोषरहित बच्चों के रूप में ढालता है। इसलिए, जो लोग मानते हैं कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं, उन्हें ऐसे दुखी और अनाथों की तरह नहीं जीना चाहिए जो दुनिया की उथल-पुथल या शैतान के आरोपों से डरकर पीछे हट जाते हैं और अपने उद्धार की सच्चाई पर शक करते हैं। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च का हर सदस्य दुनिया पर विजयी हो—उद्धार के इस शानदार भरोसे की तलवार को ऊँचा उठाए रखे (जो हमारी अपनी काबिलियत पर नहीं, बल्कि परमेश्वर की सर्वोच्च योजना और वफ़ादारी पर आधारित है) और आज अपने साथ के विश्वासियों से सच्चे दिल से प्यार करे।

दूसरा स्तंभ जिसे एक विश्वासी को अपनी आत्मा में मज़बूती से थामे रखना चाहिए, वह है "प्रार्थना का जवाब मिलने का पक्का भरोसा"—यह यकीन कि जब हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कुछ माँगते हैं, तो सर्वशक्तिमान परमेश्वर ज़रूर हमारी बात सुनते हैं और जवाब देते हैं।

दूसरी पक्की बात जिसे प्रेरित यूहन्ना हमारी आत्माओं में स्थापित करते हैं—जब वे 1 यूहन्ना की शानदार समाप्ति करते हैं—वह है प्रार्थना की शक्ति जो स्वर्ग के सिंहासन को हिला देती है। कृपया 1 यूहन्ना 5:14–15 में दिए गए उस महान वादे पर ध्यान दें: "परमेश्वर के पास जाने में हमें यह भरोसा है: कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ भी माँगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। और यदि हम जानते हैं कि वह हमारी सुनता

है—चाहे हम कुछ भी माँगें—तो हम जानते हैं कि जो हमने उससे माँगा है, वह हमें मिल गया है।" प्यारे विश्वासियों, आज मैं आपके प्रार्थना जीवन के बारे में आपसे एक बहुत ज़रूरी और चुनौतीपूर्ण सवाल पूछना चाहता हूँ। जब आप अपनी निजी प्रार्थना में परमेश्वर के सामने दुख के आँसू बहाते हैं, तो क्या आपको यह अटूट और गहरा यकीन होता है कि आपकी प्रार्थना का एक भी शब्द बेकार नहीं जाएगा, बल्कि उसका पूरा जवाब मिलेगा?

8 नवंबर, 2020 को—पादरी के तौर पर सेवा के कठिन संघर्ष के बीच—मैं भजन संहिता 55:16–17 पर मनन कर रहा था। परमेश्वर के वचन रूपी आईने के सामने अपने कमज़ोर मन को पूरी तरह खोलते हुए, मैंने अपने ब्लॉग पर एक दुखभरी और दिल की बात कहने वाली पोस्ट लिखी, जिसका शीर्षक था, "मुझे यह भरोसा क्यों नहीं होता कि मेरी प्रार्थनाओं का जवाब मिलेगा?" शर्मिंदगी के बावजूद, मैं अपनी इस पीड़ा और ईमानदारी भरी बातों को उन सभी विश्वासियों और साथी सेवकों के साथ साझा कर रहा हूँ जिनकी प्रार्थना करते समय हिम्मत डगमगा रही हो सकती है:

ऐसा क्यों है कि परमेश्वर से इतनी शिद्दत से प्रार्थना करने के बावजूद, मुझे यह भरोसा नहीं होता कि वे ज़रूर मेरी प्रार्थनाओं का जवाब देंगे? प्रार्थना करने बैठते ही मेरी आत्मा क्यों डगमगाने लगती है? दर्दनाक सोच-विचार के बाद, मुझे इसकी कड़वी वजह समझ आई: मैं अपने सामने मौजूद कठोर हालात और माहौल से प्रभावित होकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था। जब भी मेरी मुश्किल स्थिति में ज़रा सा भी सुधार दिखता, तो मैं भरोसे के एक कमज़ोर एहसास को पकड़ लेता और खुद को यह सोचकर बहलाता कि परमेश्वर मेरी प्रार्थनाओं का जवाब दे रहे हैं। फिर भी, जैसे ही हालात तेज़ी से बिगड़ते, मैं प्रार्थना में ज़रा सा भी भरोसा बनाए रखने में असमर्थ पाता। एक और अहम वजह यह थी कि मैं परमेश्वर की सर्वोच्च सत्ता के बजाय अपनी निजी उम्मीदों और इच्छाओं के आधार पर उनसे प्रार्थना कर रहा था। मेरी इंसानी उम्मीद यह थी कि विश्वास रखने वाले वे प्यारे सदस्य—जो अभी बहुत ज़्यादा दुख झेल रहे हैं—जल्द ही अपने असहनीय दर्द और तंगी से आज़ाद हो जाएँ। मैं नहीं चाहता कि वे निराशा की अंधेरी सुरंग में और ज़्यादा खून के आँसू बहाएँ। मैं हर रात आँसुओं के साथ प्रार्थना करता हूँ और चाहता हूँ कि वे उन लतों या भयानक बीमारियों से पूरी तरह ठीक हो जाएँ जिन्होंने उन्हें जकड़ रखा है। एक पादरी के तौर पर, मैं प्रार्थना में ऐसी उम्मीदों को बिल्कुल स्वाभाविक, दयालु और सुसमाचार पर आधारित आशा मानता था। फिर भी, अगर हकीकत मेरी ज़ोरदार पुकार और

सच्ची उम्मीदों के मुताबिक नहीं होती—और हालात असल में और बिगड़ जाते—तो मैं प्रार्थना में भरोसा कैसे बनाए रख सकता था और परमेश्वर की वेदी के सामने घुटने कैसे टेक सकता था? मैं ऐसा नहीं कर पाता था। क्योंकि जिस पल मेरी उम्मीदें टूटती हैं, मेरी प्रार्थना के पीछे की प्रेरणा भी खत्म हो जाती है। मैं गेथसेमनी के बगीचे में हमारे उद्धारकर्ता यीशु की उस शानदार प्रार्थना से गहराई से सीखना चाहता हूँ, जहाँ उनका पसीना खून की बूंदों जैसा हो गया था: "हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह प्याला मुझ से टल जाए; तौभी मेरी नहीं, परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो" (मत्ती 26:39)। शैतान के आरोपों को तोड़ने और इस पक्के भरोसे के साथ उठने के लिए कि मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलेगा, मुझे तुरंत उस बचकानेपन को छोड़ना होगा जिसमें मैं बदलती परिस्थितियों या अपनी बदलती उम्मीदों पर ध्यान केंद्रित करके प्रार्थना करता हूँ। मुझे अपनी प्रार्थना का पूरा ध्यान केवल उस परमेश्वर के शाश्वत स्वरूप पर लगाना चाहिए जो इसे सुनता है—यानी परमेश्वर वास्तव में कौन हैं। अपने मूल स्वभाव से, हमारे परमेश्वर स्वयं उद्धार हैं; शानदार नाम "यीशु" का अर्थ ही है "यहोवा उद्धार है।" आज, मुझमें वास करने वाली पवित्र आत्मा मेरी आँखें खोलती है, जिससे मैं विश्वास के साथ केवल उद्धार के इस परमेश्वर की ओर देख सकूँ और साहस के साथ अपनी विनती कर सकूँ। इसके अलावा, हमारे परमेश्वर अपने अस्तित्व में ही पूर्ण प्रेम हैं (1 यूहन्ना 4:8, 16)। प्रेम के परमेश्वर ने मुझ जैसे पापी से बिना किसी शर्त के प्रेम किया—और *सबसे पहले* प्रेम किया: एक ऐसा व्यक्ति जो आज्ञा न मानने और पाप के कारण आध्यात्मिक रूप से मृत और ठंडा था, जो अनंत नरक के योग्य था, और परमेश्वर का पूरी तरह से दुश्मन था; उन्होंने अपने एकलौते पुत्र के लहू के द्वारा मुझे बचाया। यदि हम सचमुच त्रिएक परमेश्वर के इस शानदार, उद्धार करने वाले प्रेम को पूरे दिल से जानते हैं और उस पर विश्वास करते हैं, तो हम डगमगा नहीं सकते। जब हम पुत्र, यीशु मसीह—जिन्होंने सारी धार्मिकता को पूरी तरह से पूरा किया है—के शक्तिशाली नाम में प्रार्थना करते हैं, और पवित्र आत्मा के पूर्ण मार्गदर्शन का पालन करते हैं, जो पिता की इच्छा के अनुसार हमारे लिए ऐसी आहों के साथ विनती करती है जिन्हें शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता (रोमियों 8:27), तो हमें निश्चित रूप से प्रार्थना के शानदार उत्तरों का अटूट भरोसा मिलेगा, तब भी जब हमारी उम्मीदें टूट जाएँ और हमारी परिस्थितियाँ उथल-पुथल भरी हों।

प्रिय संतों, 1 यूहन्ना 5:14 में घोषित प्रतिज्ञा का रहस्य इसी में निहित है: "परमेश्वर के पास जाने में हमें यह भरोसा है: कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ भी मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है।" जो प्रार्थनाएँ केवल हमारी अपनी वासनाओं और स्वार्थी उम्मीदों को पूरा करने के लिए माँगों की सूची की तरह काम

करती हैं, वे हमें केवल चिंता और आध्यात्मिक ठहराव की ओर ले जाती हैं। हालाँकि, जो प्रार्थनाएँ त्रिएक परमेश्वर (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा) के अपार प्रेम पर पक्के भरोसे के साथ की जाती हैं—जिन्होंने हमें मृत्यु से बचाया—और जिनमें हमारा हृदय अपनी इच्छा के अनुसार नहीं, बल्कि "परमेश्वर की अच्छी और मनभावन इच्छा" के साथ पूरी तरह जुड़ा होता है, वे हमेशा सफल होती हैं। भले ही लाल सागर हमारा रास्ता रोक ले और हालात सबसे बुरे हो जाएँ, हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर अपने सही और तय समय पर सबसे अच्छा काम करेंगे। आइए हम प्रभु की सर्वोच्च सत्ता पर भरोसा रखें, जो हमारी उम्मीदों से कहीं बढ़कर है। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक इम्मानुएल में इस विश्वास को मज़बूत करें, प्रार्थना की शक्ति से अपने अंदर की चिंता को पूरी तरह खत्म करें, और प्रार्थना के उन विश्वसनीय उत्तरों के अधिकार का पूरा आनंद लें जो रोज़ाना स्वर्गीय सिंहासन से बरसते हैं।

1 यूहन्ना 5:14–15 में शानदार घोषणाओं के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना उस पूर्ण स्वर्गीय अधिकार की ज़ोरदार पुष्टि करते हैं जिसका इस्तेमाल परमेश्वर की संतानें—जिन्हें यीशु में विश्वास के ज़रिए अनंत जीवन मिला है—प्रार्थना के समय कर सकती हैं: "हमें उस पर यह भरोसा है कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ भी माँगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। और यदि हम जानते हैं कि वह हमारी सुनता है, तो हम यह भी जानते हैं कि जो कुछ हमने उससे माँगा है, वह हमें मिल गया है" (NKJV)। "हमें यह भरोसा है कि यदि हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कुछ भी माँगते हैं, तो वह हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है। यदि हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है, चाहे हम कुछ भी माँगें, तो हम यह भी जानते हैं कि हमने जो माँगा था, वह हमें मिल गया है" (Contemporary Korean Version)। प्रेरित यूहन्ना पूरी दुनिया और शैतान के सामने गंभीरता से घोषणा करते हैं, "हमें पहले से ही यह पक्का विश्वास है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है।" हमें जिस सच्चाई को गहरे और दिल को छू लेने वाले विस्मय के साथ समझना चाहिए, वह यह है कि प्रार्थना में यह प्रभावशाली साहस और उत्तर पाने का विशेषाधिकार किसी भी तरह से केवल महान प्रेरित यूहन्ना या दो हज़ार साल पहले के शुरुआती चर्च के विश्वासियों के लिए आरक्षित किसी विशेष चमत्कार का हिस्सा नहीं है। हम और आप—जिन्हें क्रूस के लहू और पवित्र आत्मा के नए जीवन देने वाले प्रेम के ज़रिए अनंत जीवन मिला है—भी प्रार्थना के उत्तर के इस शानदार भरोसे को पूरी तरह से अपना सकते हैं और उसका आनंद ले सकते हैं, भले ही हम आज दुख की कितनी भी बुरी सच्चाई के बीच खड़े हों। उस महान जीत का रहस्य, जो

स्वर्ग के सिंहासन को हिला देती है और आखिर में प्रार्थना के जवाब को शांति का ज़रिया बनाती है, बहुत ही आसान और साफ़ है: वह है "सिर्फ़ परमेश्वर की इच्छा के अनुसार माँगना" (पद 14, *कंटेम्पररी कोरियन वर्ज़न*)। जब हम हिम्मत करके उन प्रार्थनाओं को छोड़ देते हैं जो सिर्फ़ हमारी अपनी इच्छाओं और स्वार्थी उम्मीदों से प्रेरित माँगों जैसी होती हैं—और इसके बजाय ऐसे सेवक बन जाते हैं जो अपने पूरे वजूद और अपनी प्रार्थनाओं की दिशा को उस त्रिएक परमेश्वर की पवित्र और भली इच्छा के साथ मिला लेते हैं जिसने हमें मौत से बचाया है—तो हमारी प्रार्थना एक अजेय हथियार बन जाती है। फिर भी, जब हम सेवा के असल कामों और अपनी निजी प्रार्थना की जगहों पर प्रार्थना के इस महान अधिकार को जीने की कोशिश करते हैं, तो हमें ऐसी रुकावटों का सामना करना पड़ता है जो हमारे संकल्प को बुरी तरह हिला देती हैं और हमें आध्यात्मिक ठहराव की ओर धकेल देती हैं। प्रार्थना का जवाब मिलने के सच्चे भरोसे के साथ उठने के लिए, हमें—आदर भरे दिल के साथ—ईमानदारी से कम से कम तीन बुनियादी मुद्दों और आध्यात्मिक लड़ाइयों का सामना करना होगा और उन पर जीत हासिल करनी होगी:

(1) पहली रुकावट यह अज्ञानता है कि हम सिर्फ़ अपनी इच्छाओं और आराम को पूरा करने के लिए अंधे होकर पुकारते हैं, जबकि प्रार्थना में घुटने टेकते हुए भी हमें इस बात का बिल्कुल पता नहीं होता कि असल में "परमेश्वर की इच्छा" क्या है।

प्रार्थना के बारे में हमें जिस सबसे दर्दनाक सच्चाई का सामना करना पड़ता है, वह यह है कि अपनी निजी प्रार्थना की जगहों पर पूरी ताकत से पुकारते हुए भी, हम अक्सर अपनी अर्जियाँ ऐसी इच्छाओं के साथ रखते हैं जिनमें हमें परमेश्वर की उस इच्छा की ज़रा भी समझ नहीं होती जिसकी प्रभु हमसे उम्मीद करते हैं। प्यारे संतों, आप और मैं अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में परमेश्वर की इच्छा को कितनी साफ़ तौर पर समझते हैं? अफ़सोस की बात है कि कई बार हम परमेश्वर की इच्छा से अनजान रहते हैं—जबकि वह बाइबल की छियासठ किताबों में बहुत साफ़ तौर पर बताई गई है, जो वादों का वह शाश्वत नियम है जिसे उन्होंने हमारे हाथों में सौंपा है। आइए, हम सुसमाचार के उस पैमाने से अपनी ज़िंदगी को परखें जो परमेश्वर की इच्छा की तीन खास बातों को बताता है, जिन्हें पवित्र शास्त्र में साफ़ और सटीक रूप से परिभाषित किया गया है:

(a) पहला, 1 थिस्सलुनीकियों 5:16–18 पिता की उस इच्छा को साफ़ तौर पर दिखाता है जो उन्हें खुश करती है: "हमेशा आनंदित रहो, लगातार प्रार्थना करो, हर हाल में धन्यवाद करो; क्योंकि मसीह यीशु में तुम्हारे लिए परमेश्वर की यही इच्छा है।" (b) दूसरा, 1 थिस्सलुनीकियों 4:3 का पहला हिस्सा उस जीवन-मकसद को बताता है जिसके लिए एक संत को अपना पूरा जीवन समर्पित कर देना चाहिए: "क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यही है, कि तुम पवित्र बनो..." (रिवाइज्ड न्यू कोरियन वर्शन)। "परमेश्वर की इच्छा है कि तुम पवित्र जीवन जियो" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)।

(c) तीसरा, यूहन्ना 6:40 का पहला हिस्सा उद्धार के उस महान और दिल को छू लेने वाले आदेश को बताता है—वही कारण जिसके लिए त्रिएक परमेश्वर ने मानव इतिहास रचा: "क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यही है, कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, उसे अनंत जीवन मिले..."

हमें अपनी स्वार्थी प्रार्थनाओं को परमेश्वर के इस तीखे और शक्तिशाली वचन के आईने में देखना चाहिए और उनकी अच्छी तरह जाँच करनी चाहिए। क्या हमने कभी, एक बार भी, प्रार्थना के एकांत में अपना दिल खोलकर यह विनती की है: "हे परमेश्वर, भले ही दुनिया के तौर-तरीके मुझे हर तरफ से घेर लें, फिर भी मुझे एक सच्चा संत बना—जो तेरी उस इच्छा के अनुसार, जिसे तूने अपने लहू से लिखा है, हमेशा आनंद मनाए, लगातार प्रार्थना करे और हर हाल में धन्यवाद दे"? हमने कितने जोश के साथ यह पुकार लगाई है—भले ही इसके लिए हमें अपना घमंड और लालच छोड़ना पड़े—"हे परमेश्वर, विनाशकारी इच्छाओं से दूर भागने में मेरी मदद कर और मेरे जीवन को ऐसी गहरी पवित्रता में अलग कर कि लोग भावुक हो जाएँ, ताकि मैं सचमुच तेरी छवि को दिखा सकूँ"? इसके अलावा, हम कितनी लगन से रात-दर-रात वेदी पर टिके रहते हैं और पिता की उस महान, ब्रह्मांडीय इच्छा को पूरा होते देखने के लिए अपना जीवन तक दांव पर लगा देते हैं: कि हमारे प्यारे परिवार के सदस्य और मरते हुए, अविश्वासी पड़ोसी यीशु मसीह पर—जो अनंत जीवन का स्रोत है—अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करें और अनंत जीवन पाएँ?

(2) दूसरी बाधा एक स्वार्थी ज़िद है जो हमें परमेश्वर के सामने अपनी "अपनी मर्ज़ी और इच्छाओं" को ही पूरा करने पर ज़ोर देने के लिए उकसाती है, बजाय इसके कि हम यह समझने की कोशिश करें कि असल में उनकी मर्ज़ी क्या है।

अगर हम ईमानदारी से अपनी प्रार्थनाओं पर गौर करें, तो हमें मानना होगा कि उनमें से ज़्यादातर हमारी अपनी सोच और इच्छाओं के लिए होती हैं; बहुत कम ही ऐसी होती हैं जिनमें हम सचमुच परमेश्वर की मर्ज़ी पूछते या खोजते हैं। जैसा कि पहले बताया गया है, इस दुखद स्थिति का एक सतही कारण परमेश्वर की मर्ज़ी के बारे में हमारी जानकारी की कमी है। चूँकि हम अनजान रहते हैं और बाइबल के ज़रिए उनके शाश्वत नियमों को नहीं सीखते, इसलिए हमारी प्रार्थनाओं का दायरा "मेरी अपनी मर्ज़ी" की संकीर्ण सीमाओं तक ही सिमट कर रह जाता है—जो पूरी तरह से शारीरिक आराम और दुनियावी समृद्धि पर केंद्रित होता है। जब हम परमेश्वर की मर्ज़ी को जानते ही नहीं, तो हम उसके अनुसार पूरी तरह से प्रार्थना कैसे कर सकते हैं? नतीजतन, हम खुद को एक दयनीय स्थिति में पाते हैं जहाँ प्रार्थना के एकांत में भी, हम बस अपनी मर्ज़ी के लिए—लगभग एक बिगड़े हुए बच्चे की तरह—चिल्लाते रहते हैं, जिस पर हमने अपना लालच थोप रखा होता है।

(3) तीसरी बाधा एक धोखेबाज़ धार्मिकता है जो, बाइबल के ज़रिए परमेश्वर की मर्ज़ी को स्पष्ट रूप से जानने के बावजूद, आखिरकार उसे ठुकरा देती है क्योंकि वह हमारे अपने हितों और पसंद के खिलाफ होती है, और साथ ही ज़िद करती है कि परमेश्वर वही दें जो *हम* चाहते हैं।

यह महज़ अज्ञानता से कहीं ज़्यादा भयानक और घृणित आध्यात्मिक अपराध है। भले ही हम परमेश्वर के वचन द्वारा दिखाए गए पवित्र मार्ग को स्पष्ट रूप से समझते हैं, फिर भी हम बार-बार अपनी मर्ज़ी पर अड़े रहने की ज़िद दिखाते हैं—अपने अहंकार को झुकाने या शारीरिक इच्छाओं को छोड़ने से इनकार करते हैं। इस हद तक कि, परमेश्वर की सर्वोच्च सत्ता के सामने घुटने टेकने और समर्पण करने के बजाय, हम अक्सर भयानक पाखंडपूर्ण प्रार्थनाएँ करते हैं—सर्वशक्तिमान परमेश्वर को अपनी इच्छाओं का सेवक मानते हैं और उनके सिंहासन पर अपनी ज़िद थोपने की कोशिश करते हैं। इसलिए, हमें अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह द्वारा परमेश्वर पिता से की गई उस महान प्रार्थना से गहराई से सीखना चाहिए और जीवन भर उसका

अनुकरण करना चाहिए—जो उन्होंने जैतून के पहाड़ पर गेथसेमने की वेदी पर, क्रूस पर भयानक मौत की संभावना के बीच की थी: "हे पिता, यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मुझ से हटा ले; तौभी मेरी नहीं, पर तेरी ही इच्छा पूरी हो" (लूका 22:42)। क्योंकि यीशु ने एक सच्चे इंसान का शरीर धारण किया था, इसलिए वे क्रूस की पीड़ा और उसके श्राप के बोझ को पूरी तरह समझते थे; उन्होंने ईमानदारी से पिता के सामने शरीर की उस कमज़ोरी को रखा जो चाहती थी कि अगर मुमकिन हो तो यह प्याला (दुख का समय) उनसे दूर हो जाए। फिर भी, प्रभु की प्रार्थना वहीं नहीं रुकी। यह मानते हुए कि उद्धार के लिए परमेश्वर की सर्वोच्च योजना उनकी अपनी निजी इच्छाओं से कहीं बड़ी थी, उन्होंने आखिरी पल में अपनी इच्छा को पूरी तरह त्याग दिया और अपनी प्रार्थना को पूरी आज्ञाकारिता के काम से पक्का किया: "मेरी नहीं, बल्कि आपकी इच्छा पूरी हो।" प्रभु ने आज्ञाकारिता में खुद को इतना विनम्र बनाया, इसी वजह से क्रूस की महान जीत—सारी मानवता को बचाने की जीत—आखिरकार हासिल हो सकी।

प्यारे संतों, ताकि हमारी प्रार्थनाएँ शैतान के आरोपों को तोड़ सकें और प्रार्थना के जवाब के पक्के भरोसे के साथ ऊपर उठ सकें, जैतून के पहाड़ पर प्रभु द्वारा की गई आज्ञाकारिता की यह प्रार्थना सचमुच हमारी अपनी प्रार्थना बननी चाहिए। आइए हम तुरंत उस लालच के शोर को शांत करें जो हमारी अपनी इच्छा थोपना चाहता है; इसके बजाय, आइए हम पूरे दिल से उस त्रिएक परमेश्वर के भरोसेमंद स्वभाव पर विश्वास करें—जिन्होंने हमें जीवन दिया—और घुटने टेककर प्रार्थना करें, और कहें, "मेरे जीवन में केवल पिता की इच्छा पूरी हो।" जब हम परमेश्वर की ओर देखते हैं—जो सबसे अच्छा परिणाम लाते हैं—और मज़बूती से आज्ञा मानते हैं, तब भी जब हमारी उम्मीदें टूट जाती हैं और हालात उथल-पुथल भरे होते हैं, तो हम विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के पवित्र सैनिक बन जाएँगे। हम प्रार्थना के जवाब की महान शक्ति का पूरा आनंद लेंगे और हर दिन जीत की घोषणा करेंगे।

यही वह असली आध्यात्मिक कारण है कि जब हम प्रार्थना के लिए एकांत में जाते हैं, तो हमें अपनी मनमानी करने के लालच को शांत करना चाहिए और इसके बजाय यह स्वीकार करना चाहिए—ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने जैतून के पहाड़ पर किया था—"मेरी इच्छा के अनुसार नहीं, बल्कि आपकी इच्छा के अनुसार।"

विश्वास की एक गहरी सच्चाई है जो हमें प्रार्थना के जवाब के बारे में निराश न होने और आत्मविश्वास बनाए रखने में मदद करती है, तब भी जब हमारी उम्मीदें पूरी तरह टूट जाती हैं और हम बिना किसी रास्ते के दुख के बीच घिर जाते हैं। जब भी मेरा अपना प्रार्थना जीवन डगमगाता है, तो मैं अक्सर पादरी बेंजामिन श्मोलक की आंसुओं भरी कहानी के बारे में सोचता हूँ; एक ऐसे व्यक्ति जिन्होंने अपना जीवन आँसुओं के साथ सुसमाचार की वेदी की रक्षा करते हुए बिताया और ईसाई इतिहास में विश्वास की सबसे दर्दनाक लेकिन शानदार विरासतों में से एक छोड़ी। 1704 की सर्दियों का समय था। यूरोप में मार्टिन लूथर के सुधार आंदोलन (Reformation) को एक सदी से ज़्यादा समय बीत चुका था, और लूथरन चर्च आध्यात्मिक ठहराव के दौर से गुज़र रहा था। 32 साल के युवा पादरी श्मोलक (Pastor Schmolck) पूरी निष्ठा से अपनी छोटी सी मंडली की देखभाल कर रहे थे। वे अपनी पत्नी के साथ एक बड़े इलाके में फैले हुए अपने लोगों (मंडली के सदस्यों) से मिलने और उनकी देखभाल करने के लिए निकले। हालाँकि उनका मन भारी था—उन्हें पीछे छूटे अपने दो छोटे बेटों की चिंता सता रही थी—फिर भी वे लोगों की आध्यात्मिक सेवा के लिए निकलने को मजबूर महसूस कर रहे थे, क्योंकि यह प्रभु का बुलावा था जिसे उन्होंने लंबे समय से टाल रखा था। लेकिन, अगले दिन जब वे अपनी यात्रा पूरी करके थके-हारे घर लौटे, तो पादरी श्मोलक और उनकी पत्नी को ऐसा सदमा लगा कि वे ज़मीन पर गिर पड़े। जिस घर में वे रहते थे, वह एक रहस्यमयी आग में पूरी तरह जलकर राख हो चुका था और केवल जले हुए मलबे में बदल गया था। घर खोने का दुख उतना बड़ा नहीं था; असली त्रासदी उनके दो प्यारे बेटों की हालत थी, जो राख के ढेर में पड़े थे। दुख और पीड़ा से बिलखते हुए, उस जोड़े ने अपने नंगे हाथों से काले पड़ चुके मलबे को खोदना शुरू किया, और उन्हें अपने बच्चों के ठंडे, जले हुए शव मिले, जो डर के मारे एक-दूसरे से लिपटे हुए बुरी तरह जलकर मर गए थे। "हे परमेश्वर! आपने हमारे साथ इतनी क्रूर घटना कैसे होने दी? हम तो आपके चर्च के लिए लोगों की सेवा कर रहे थे—और कुछ नहीं कर रहे थे—तो आपने मेरे दो प्यारे बेटों को आग की उन दीवारों के बीच इतनी बुरी तरह जलकर मरने कैसे दिया?" टूटते हुए दिलों के साथ, वे गहरे और असहनीय दुख में चीख पड़े। यह दुख का ऐसा गहरा सागर था जहाँ कोई मानवीय सांत्वना या तरीका नहीं पहुँच सकता था। फिर भी, ठीक उसी समय जब वे पूरी तरह थककर गिरने ही वाले थे, पवित्र आत्मा ने शोक-संतप्त पादरी श्मोलक की आत्मा को सुसमाचार (Gospel) की अद्भुत और शक्तिशाली रोशनी से रोशन कर दिया। हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह की दिल को छू लेने वाली छवि—जिन्होंने मुझे बचाने के लिए गेथसेमनी के बगीचे में तब तक प्रार्थना की जब तक कि उनका

पसीना खून की बूंदों में नहीं बदल गया, और कहा, "मेरी नहीं, बल्कि आपकी इच्छा पूरी हो," और जिन्होंने चुपचाप क्रूस का प्याला स्वीकार किया—उनकी आत्मा के भीतर 'नियम-संदूक' (Ark of the Covenant) पर स्पष्ट रूप से उभर आई। प्रभु की पूर्ण आज्ञाकारिता को देखकर, पादरी श्मोलक ने अपनी मानवीय उम्मीदों और शिकायतों को क्रूस के चरणों में पूरी तरह समर्पित कर दिया; खून की बूंदों जैसे आंसुओं के साथ, उन्होंने विश्वास की एक महान कविता लिखना शुरू किया—जो जीवन भर का आध्यात्मिक समर्पण था। यह भजन 549, "हे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो," के जन्म की शानदार कहानी है, जिसे हम हर आराधना वेदी पर पूरे जोश और समर्पण के साथ गाते हैं: (पद 1) हे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो; मैं अपना तन-मन तुझे सौंपता हूँ। इस दुनिया के सुख-दुख में, तू मेरी अगुवाई कर और मुझ पर शासन कर; तेरी इच्छा पूरी हो। (पद 2) हे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो; बड़े दुख में भी मेरा हौसला न टूटने दे। तू भी कभी रोया था; मुझ पर शासन कर और तेरी इच्छा पूरी हो। (पद 3) हे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो; मैं अपने सारे काम तुझे सौंपता हूँ और चुपचाप स्वर्गीय नगर की ओर बढ़ता हूँ। चाहे मैं जीऊँ या मरूँ, तेरी इच्छा पूरी हो। आमीन।

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप समर्पण की इस महान घोषणा पर गहराई से विचार करें—"चाहे मैं जीऊँ या मरूँ, प्रभु की इच्छा पूरी हो"—जिसे पादरी श्मोलक ने अपने दो बच्चों की राख के सामने कहा था। यह प्रार्थना हार नहीं है; यह प्रार्थना के उत्तर का सच्चा शिखर है, जो इस अटूट विश्वास से पैदा हुआ है कि परमेश्वर की इच्छा—उसकी इच्छा जिसने मुझे बचाया—अतुलनीय रूप से अच्छी और पूर्ण है, और मेरी अपनी इच्छाओं से कहीं बढ़कर है। आइए हम साहसपूर्वक विश्वास के उस सतही स्तर को छोड़ दें जहाँ हम प्रार्थना में तभी आश्वस्त महसूस करते हैं जब हकीकत हमारी उम्मीदों के अनुसार होती है। भले ही हालात सबसे बुरे दौर में पहुँच जाएँ, या हम अपनी सबसे प्यारी चीज़ें पूरी तरह खो दें, इमैनुएल—हमारे साथ रहने वाला परमेश्वर—हर आँसू पोंछ देगा और निश्चित रूप से अनंत जीवन और उद्धार की परम भलाई को पूरा करेगा (रोमियों 8:28)। आइए हम अपनी प्रार्थनाओं को अपनी चंचल इच्छाओं पर नहीं, बल्कि शांति के राजकुमार परमेश्वर के विश्वसनीय स्वभाव पर टिकाएँ। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से पूरी श्रद्धा के साथ प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसे पवित्र सैनिक बनें जो पास्टर श्मोलक के आँसुओं से भरे भजन को जीवन भर एक आध्यात्मिक तलवार की तरह थामे रहें और प्रार्थना की शक्ति से चिंता और निराशा

के धोखे को कुचलते हुए, आज के युद्ध के मैदान में स्वर्ग की अलौकिक शांति और प्रार्थना का उत्तर मिलने की महान शक्ति का पूरा आनंद लें।

1 यूहन्ना की अपनी पूरी व्याख्या के दौरान, प्रेरित यूहन्ना ने प्रार्थना की शक्ति को केवल एक अलग-थलग सबक तक सीमित नहीं रखा। आज के अंश—1 यूहन्ना 5:14 और 15—में दी गई शानदार बातों तक पहुँचने से पहले, यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 3:21–22 में अपनी विस्तृत व्याख्या के ज़रिए प्रार्थना के उन सिद्धांतों को पहले ही बता दिया था जो सुसमाचार के स्तंभ हैं: "प्रिय लोगों, यदि हमारा हृदय हमें दोषी नहीं ठहराता, तो परमेश्वर के सामने हमें भरोसा होता है और हम उनसे वह सब कुछ पाते हैं जो हम माँगते हैं, क्योंकि हम उनकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और वही करते हैं जो उन्हें भाता है।" "प्रिय दोस्तों, यदि हमारा अंतःकरण हमें दोषी नहीं ठहराता, तो परमेश्वर के सामने हमें भरोसा होता है और हम जो कुछ भी माँगेंगे, वह हमें मिलेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम उनकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और वही करते हैं जो उन्हें भाता है" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। प्रेरित यूहन्ना उस महान रहस्य को स्पष्ट रूप से बताते हैं जिससे प्रार्थना का उत्तर मिलने के भरोसे में शांति मिलती है: एक ऐसा जीवन जिसमें हम पूरे दिल और आत्मा से प्रभु की आज्ञाओं का पालन करते हैं, और उनकी जलती हुई लौ जैसी आँखों के सामने ठीक वही करते हैं जो उन्हें भाता है।

तो फिर, उस जीवन का सार क्या है जो सचमुच हमारे पवित्र परमेश्वर और पिता को प्रसन्न करता है? बाइबल केवल बाहरी धार्मिक कामों की मांग नहीं करती। बल्कि, यह परमेश्वर द्वारा दिए गए उस शाश्वत और सर्वोपरि आदेश का पालन करने के लिए कहती है: उनके पुत्र, यीशु मसीह पर—जो हमारी आत्माओं के उद्धारकर्ता और राजा हैं—दृढ़ विश्वास रखना, और एक-दूसरे से वैसे ही गहरा प्रेम करना जैसा हम स्वयं से करते हैं—उस नए नियम के अनुसार जिसे उन्होंने अपने लहू से हमारे लिए पक्का किया है (पद 23)। जिस सच्चे विश्वास को हमें अपनाना है, वह किसी भी तरह से केवल बौद्धिक विचार या ज्ञान का समूह नहीं है। यह एक जीवित और सक्रिय विश्वास है—जो रोज़मर्रा की ज़िंदगी में तब दिखता है जब हम अपने साथी विश्वासियों से प्रेम करने के यीशु के आदेश का पालन करते हैं। प्रेम के इस अभ्यास के बारे में, यूहन्ना एक कड़ी चेतावनी देते हैं जो बेरहमी से हमारे मुखौटों को उतार फेंकती है। वे हमारे लिए एक मापदंड तय करते हैं: हमें किसी भी ऐसे दिखावटी प्रेम को तोड़ देना चाहिए जो केवल खोखले शब्दों और बातों तक सीमित हो, और इसके बजाय

ठोस कामों और सच्चे दिल से प्रेम करना चाहिए (पद 18)। जब कोई विश्वासी अपने अंदर के स्वार्थ और अहंकार को क्रूस पर दफ़ना देता है और कामों और सच्चाई के ज़रिए साथी विश्वासियों से प्रेम करने के रास्ते पर चलता है, तो उसकी आत्मा को एक गहरा, स्वर्गीय भरोसा मिलता है। हमें स्पष्ट रूप से एहसास होता है कि हम सच्चाई के हैं और प्रभु के सिंहासन के सामने अपने दिलों को चट्टान की तरह मज़बूत और स्थिर रखने में सक्षम हो जाते हैं (पद 19)। तभी हमारे अंदर दोषी होने की कठोर भावना और शैतान के आरोप पूरी तरह से कुचल दिए जाते हैं; हमारी आत्माएँ और अंतःकरण दोष-मुक्त पवित्रता की स्थिति में पहुँच जाते हैं, और हम ब्रह्मांड के न्यायकर्ता, परमेश्वर पिता के सामने बिना किसी डर के एक पूर्ण "पवित्र भरोसा" पाते हैं (पद 21)। यही उस "बिना ठोकर खाए प्रेम" का सार है—एक ऐसा प्रेम जिसमें दिल में कोई आध्यात्मिक फंदा या चोट पहुँचाने वाला पत्थर नहीं बचता—जिसकी घोषणा प्रेरित यूहन्ना ने पहले 2:10 में बहुत ज़ोरदार ढंग से की थी। इस तरह प्रेमपूर्ण आज्ञाकारिता के ज़रिए अपने दिलों में एक मज़बूत प्रहरी-मीनार स्थापित करने के बाद, संत—यूहन्ना की अगुवाई में—आज के पाठ, 1 यूहन्ना 5:14 में बताई गई प्रार्थना की शानदार और अधिकारपूर्ण दुनिया में निडरता से कदम रखते हैं: "परमेश्वर के पास जाने में हमें यह भरोसा है: कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ भी मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है।" *ह्युंडई-इन-उई सियोंग-ग्योंग* (आधुनिक कोरियाई बाइबिल) का अनुवाद इस रहस्य को जीत के एक शानदार गीत की तरह बताता है: "हमें भरोसा है कि अगर हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कुछ भी मांगते हैं, तो वह हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देगा।"

प्यारे संतों, 1 यूहन्ना 3:22 और 5:14 के दो महान स्तंभ जिस अंतिम सुसमाचार निष्कर्ष की ओर इशारा करते हैं, उसे अपनी आत्मा के भीतरी हिस्से में अच्छी तरह से अंकित कर लें। दुनिया के अनगिनत सुसमाचार प्रचार कार्यक्रम और प्रार्थना के सतही तरीके हमें केवल एक सरल फ़ॉर्मूला सिखाते हैं—"परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मांगो"—ताकि हम बस अपनी इच्छाओं को पूरा कर सकें। फिर भी, प्रार्थना का जवाब पाने का सच्चा मास्टर प्लान—जो पक्की जीत की गारंटी देता है और जैसा कि पवित्र शास्त्र में बताया गया है—पूरी तरह से अलग स्तर पर काम करता है। यह केवल ज़ुबानी बातों से परमेश्वर की इच्छा की अपरिपक्व नकल नहीं है; बल्कि, यह पवित्रता का जीवन है—जो रोज़मर्रा की ज़िंदगी की लड़ाइयों के बीच परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पवित्रता में जिया जाता है, और जिसमें केवल वही मांगा जाता है जो उसे प्रसन्न करता है। पाखंड—यानी प्रार्थना में प्रभु की इच्छा जानने का दिखावा करना जबकि ज़िंदगी अस्त-व्यस्त हो और इंसान साथी

विश्वासियों से नफ़रत के अंधेरे में डूबा हो—स्वर्ग के सिंहासन को ज़रा भी नहीं हिला सकता। आइए हम सबसे पहले एक "जीवित बलिदान" चढ़ाएं—एक ऐसा जीवन जो रोशनी में बसा हो और जिसमें हम अपने भाइयों से पूरे दिल से प्यार करते हों—और यह सब उस त्रिएक परमेश्वर के अपार और बचाने वाले प्रेम से प्रेरित हो जिसने हमें जीवन दिया है। जब हम पूरी आज्ञाकारिता वाले सेवक बन जाते हैं जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीते हैं और केवल उसकी इच्छा के लिए पुकारते हैं, तो हमारी प्रार्थनाएं एक ऐसा शक्तिशाली हथियार बन जाएंगी जो शैतान के सिर को कुचल देंगी। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूं कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक प्रार्थना का जवाब पाने के इस अटूट अधिकार को मज़बूती से थाम लें; आज अपने साथ रहने वाले साथी विश्वासियों से सच्चे दिल से प्यार करके, हम यहीं धरती पर स्वर्ग के आराम और अनंत जीवन की शांति का भरपूर आनंद ले सकें।

हालाँकि, प्रार्थना के समय हमें जिस सबसे बुनियादी समस्या का सामना करना पड़ता है—जैसा कि हमने दुख के साथ माना है—वह है हमारी अफ़सोसनाक अज्ञानता: यह सच्चाई कि हम बस यह नहीं जानते कि परमेश्वर की अच्छी और उत्तम इच्छा क्या है। जब मैं अपनी चर्च की 41वीं सालगिरह के जश्न में रोमियों अध्याय 8 को पूरी तरह से याद करने के लिए मंडली के साथ तैयारी कर रहा था, तो मुझे यकीन हो गया कि परमेश्वर की मास्टर योजना—जो अज्ञानता की इस समस्या को तुरंत हल करती है—रोमियों 8:26–27 और 34 के शब्दों में छिपी है; इन आयतों ने एक शक्तिशाली आध्यात्मिक लहर की तरह मेरे दिल को छू लिया और मुझे गहरा सुकून दिया। रोमियों 8:26–27 और 34 में कही गई शानदार बातों को ध्यान से सुनें: "इसी तरह, आत्मा हमारी कमज़ोरी में हमारी मदद करती है। हम नहीं जानते कि हमें किस बात के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, लेकिन आत्मा खुद हमारे लिए ऐसी आहों के साथ विनती करती है जिन्हें शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। और जो हमारे दिलों को परखता है, वह आत्मा की सोच को जानता है, क्योंकि आत्मा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पवित्र लोगों के लिए विनती करती है... दोषी कौन ठहराता है? मसीह यीशु, जो मर गया—और उससे भी बढ़कर, जो जी उठा—परमेश्वर के दाहिने हाथ पर है और हमारे लिए विनती भी कर रहा है।" दुख से थकी हुई हमारी आत्माओं को इस महान खुलासे से जो अद्भुत सुकून और नई ताकत मिलती है, उसका सार इसी बात में है कि "परमेश्वर पवित्र आत्मा खुद हमारी दयनीय कमज़ोरी में मदद के लिए आते हैं" (आयत 26)। तो फिर, उस घातक कमज़ोरी का स्वरूप क्या है जिसे बाइबल यहाँ उजागर

करती है? यह तथ्य है कि हम अंधेपन की स्थिति में हैं, यह समझने में असमर्थ हैं कि हमें किस बात के लिए प्रार्थना करनी चाहिए—या हमारी प्रार्थनाओं की विषय-वस्तु क्या होनी चाहिए (आयत 26)। हम उस चीज़ के सच्चे सार को समझने में क्यों विफल रहते हैं जिसे हमें खोजना चाहिए? ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर की प्रकट इच्छा से अनजान होकर, हम अपनी इच्छाओं और लगातार बदलते हालात से बंधे रहते हैं, और अपनी प्रार्थनाओं में केवल मांगों की एक सूची पेश करते हैं। नतीजतन, हम अपनी ताकत से उस "परिपक्व प्रार्थना" का एक छोटा सा हिस्सा भी पेश करने में पूरी तरह असमर्थ हैं "जो केवल स्वर्ग की इच्छा को खोजती है," जैसा कि आज के अंश, 1 यूहन्ना 5:14 में गंभीरता से आदेश दिया गया है। यह हमारे स्वभाव की वह बुनियादी कमज़ोरी है जिस पर पौलुस ने दुख जताया और रोमियों 8:26 में उसे उजागर किया।

फिर भी, इसी दयनीय लाचारी के बीच, सुसमाचार त्रिएक परमेश्वर के अलौकिक हस्तक्षेप की घोषणा करता है। पवित्र आत्मा परमेश्वर ऐसे नहीं हैं जो हाथ पर हाथ धरे बस हमारी कमज़ोरियों को देखते रहें। बल्कि, सच्चाई की आत्मा खुद पापियों की फंसी हुई आत्माओं के लिए—जो हर तरफ से घिरी हुई हैं—ऐसी "अनकही स्वर्गीय आहों" के साथ विनती करती हैं जो इंसानी भाषा और समझ से परे हैं (रोमियों 8:26)। हमारे दिल की गहराइयों में रहकर विनती करते हुए, पवित्र आत्मा परमेश्वर पिता के सामने पूरी आज्ञाकारिता के साथ प्रार्थना करती हैं—ऐसी प्रार्थनाएँ जो हमारे लिए "परमेश्वर की इच्छा के अनुसार" होती हैं (वचन 27)। "आत्मा *भी*" वाक्यांश में छिपी गहरी और पवित्र गंभीरता से हमारा दिल पूरी तरह से भर जाना चाहिए। इस "भी" शब्द को जोड़ने का पवित्र कारण यह है कि पुत्र, यीशु मसीह—जिन्होंने मौत की ताकत को तोड़ा, फिर से जी उठे, और अब पवित्रता के साथ परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठे हैं—वे भी इसी पल हमारे लिए विनती और गुहार लगा रहे हैं (रोमियों 8:34b)।

तो फिर, यह पुत्र, यीशु कौन हैं? वे पूरी आज्ञाकारिता वाले राजा हैं जिन्होंने जैतून के पहाड़ पर गेथसेमनी की वेदी पर—जहाँ पसीने की तरह खून की बूंदें गिरी थीं—पुकारकर कहा था, "हे पिता, यदि तू चाहे तो यह प्याला मुझ से हटा ले; फिर भी मेरी नहीं, बल्कि तेरी ही इच्छा पूरी हो," और इस तरह आज्ञाकारिता में खुद को पूरी तरह से क्रूस के लिए समर्पित कर दिया (लूका 22:42)। जब वे धर्मी यीशु मसीह—जिन्होंने पूरी तरह से परमेश्वर पिता की इच्छा को ही खोजा और पूरा किया—पिता के दाहिने हाथ बैठकर आप और मुझ जैसे

अयोग्य लोगों के लिए विनती करते हैं, तो क्या वे पिता की उत्तम इच्छा के अलावा किसी स्वार्थी इच्छा से प्रेरित होकर प्रार्थना करेंगे? यह नामुमकिन है। दूसरे शब्दों में, यह शानदार सच्चाई है: आप और मेरे लिए—जो इस दुनिया के तूफानों और शैतान के आरोपों के बीच लड़खड़ा रहे हैं—पुत्र, यीशु मसीह, स्वर्गीय सिंहासन के दाहिने हाथ पिता की इच्छा के अनुसार पूरी तरह से विनती कर रहे हैं; वहीं दूसरी ओर, हमारे दिलों की गहराइयों में, पवित्र आत्मा परमेश्वर आँसुओं भरी, अनकही आहों के साथ, सिर्फ़ उस इच्छा के अनुसार गुहार लगा रही हैं जो पिता को भाती है। क्या परमेश्वर पिता, जो पूरी कायनात के शासक हैं, कभी अपने सबसे प्यारे बेटे यीशु की खून से सनी प्रार्थनाओं या पवित्र आत्मा—जो खुद सच्चाई है—की सच्ची कराहों को नज़रअंदाज़ करेंगे या उन्हें हल्के में लेंगे? ऐसा मुमकिन नहीं है। परमेश्वर पिता बेटे और पवित्र आत्मा द्वारा हमारे लिए की गई उस त्रिएक परमेश्वर की मध्यस्थता वाली प्रार्थना को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक 100% सटीकता के साथ सुनते और पूरा करते हैं। इसीलिए प्रेरित यूहन्ना, आज के वचन 1 यूहन्ना 5:15 में, हिम्मत के साथ एक विजयी गीत गाते हैं जिस पर हम अपनी आत्माओं को टिका सकते हैं: "और अगर हम जानते हैं कि वह हमारी सुनता है—चाहे हम कुछ भी मांगें—तो हम जानते हैं कि जो हमने उससे मांगा है, वह हमें मिल गया है" (NKJV)। "अगर हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाएं सुनते हैं, चाहे हम कुछ भी मांगें, तो हम यह भी जानते हैं कि जो हमने मांगा था, वह हमें मिल गया है" (1 यूहन्ना 5:15, *Contemporary Korean Version*)।

अब हमें अपनी अज्ञानता या मुश्किल हालात की वजह से प्रार्थना की जगह पर डर से कांपने की ज़रूरत नहीं है। चूंकि बेटा यीशु और पवित्र आत्मा अभी भी हमारी ओर से पूरी तरह से मध्यस्थता कर रहे हैं—पूरी तरह से परमेश्वर की मर्ज़ी के अनुसार—अगर हम बस प्रार्थना में घुटने टेकें और आज्ञाकारिता के रास्ते पर चलें, और सिर्फ़ वही मांगें जो परमेश्वर की मर्ज़ी के मुताबिक हो (1 यूहन्ना 5:14), तो हमें साफ़-साफ़ समझ आ जाएगा—मानो अपनी आँखों से देख रहे हों—वह सुसमाचार की सच्चाई कि परमेश्वर हमारी कमज़ोर कराहों और प्रार्थनाओं को पूरी वफ़ादारी से सुनते हैं (वचन 15)। आइए हम उस धार्मिक पाखंड के लिए पूरी तरह से पछतावा करें जिसने हमारी अपनी मर्ज़ी और उम्मीदों को मूर्तियों की तरह थोपने की कोशिश की। आइए हम त्रिएक परमेश्वर के स्वभाव पर पूरे दिल से भरोसा करें, जो स्वर्गीय सिंहासन और हमारे दिलों, दोनों जगहों से हमारी ओर से काम करते हैं, और आइए हम अपनी प्रार्थनाओं की दिशा को सिर्फ़ उस मर्ज़ी के साथ जोड़ें जो पिता को खुश करती है। इस तरह, मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक प्रार्थना की शक्ति से शैतान के धोखे और अपनी अंदरूनी चिंताओं को पूरी तरह से कुचल दें, स्वर्गीय सिंहासन से रोज़ाना मिलने वाली प्रार्थनाओं के जवाब के शानदार भरोसे का पूरा आनंद लें, और आखिरकार अंतिम जीत हासिल करें।

1 यूहन्ना 5:16–17 में दी गई पवित्र शिक्षा के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना यह साफ़ और ठोस उदाहरण देते हैं कि प्रार्थना का वह महान सिद्धांत—जिसका ज़िक्र पहले आयत 14 में किया गया था कि "सिर्फ़ परमेश्वर की इच्छा के अनुसार ही माँगो"—उसे पादरी की सेवा और हमारी निजी प्रार्थना के समय में असल में कैसे लागू किया जाना चाहिए। आयत 16 और 17 पर गहरे आदर के साथ विचार करें: "अगर कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते हुए देखता है जिससे मौत नहीं होती, तो उसे प्रार्थना करनी चाहिए और परमेश्वर उसे जीवन देगा—मेरा मतलब है वे लोग जिनका पाप मौत का कारण नहीं बनता। एक ऐसा पाप भी है जिससे मौत होती है। मैं यह नहीं कह रहा कि उसके बारे में प्रार्थना की जाए। हर गलत काम पाप है, और कुछ पाप ऐसे भी हैं जिनसे मौत नहीं होती" (NIV/NKJV)। "जब आप किसी भाई को पाप करते हुए देखें, और अगर वह ऐसा पाप नहीं है जिससे मौत होती है, तो परमेश्वर से माफ़ी माँगें। तब परमेश्वर उसे जीवन देगा। हालाँकि, एक ऐसा पाप भी है जिससे मौत होती है; मैं यह नहीं कहता कि आपको उसके बारे में प्रार्थना करनी चाहिए। हर अधर्म पाप है, फिर भी कुछ पाप ऐसे हैं जिनका नतीजा मौत नहीं होता" (Contemporary Korean Version)। प्रेरित यूहन्ना एक पादरी की तरह सलाह देते हैं: जब आप समुदाय के किसी साथी सदस्य या भाई को कमियों और कमज़ोरियों के कारण पाप करते हुए देखें, तो उँगली उठाने, आलोचना करने या निंदा करने के शैतानी लालच में न पड़ें; इसके बजाय, सीधे परमेश्वर के सिंहासन के सामने जाएँ और उस कमज़ोर भाई के पाप की शुद्धि और माफ़ी के लिए सच्चे दिल से विनती करें। तो फिर, यूहन्ना यहाँ जिस "भाई के ऐसे पाप जिससे मौत नहीं होती" का वर्णन करते हैं, उसका असल में उद्धार-संबंधी (soteriological) स्वरूप क्या है? जब मैं यूहन्ना की पत्रियों में मौजूद 'अंतर बताने वाले धर्मशास्त्र' (theology of contrast) के ढाँचे को समझता हूँ और गहराई से व्याख्या करता हूँ, तो मुझे यकीन हो जाता है कि "मौत न लाने वाले पाप"—यानी इंसानी कमज़ोरी वाला पाप—का मूल कारण यह है कि हम अपने आस-पास के भाई-बहनों से पूरी तरह प्रेम नहीं करते, बल्कि उनके प्रति नफ़रत पालते हैं। मेरे विश्वास का एक मज़बूत बाइबिल-आधारित कारण 1 यूहन्ना 3:14 की बात है, जिस पर हमने पहले भी भावुक होकर मनन किया है: "हम जानते हैं कि हम मृत्यु से जीवन में आ गए हैं क्योंकि हम अपने भाइयों से प्रेम करते हैं; जो प्रेम नहीं करता, वह मृत्यु में ही रहता है" (कंटेंपररी

कोरियन वर्शन)। जब हम इस पर सुसमाचार की पैनी दृष्टि डालते हैं, तो उस पाप का सार यह है कि इंसान शैतान के घिनौने धोखे में आकर, पल भर के लिए अपने दिल में नाराज़गी, ईर्ष्या और जलन पाल लेता है, और इस तरह अपने भाई से नफ़रत करके "हत्या का पाप" करता है। 1 यूहन्ना 3:15 में दी गई गंभीर और न्यायपूर्ण घोषणा पर विचार करें: "जो कोई अपने भाई से नफ़रत करता है, वह हत्यारा है, और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनंत जीवन नहीं होता" (रिवाइज़्ड न्यू कोरियन स्टैंडर्ड वर्शन)। "जो कोई भाई से नफ़रत करता है, वह हत्यारा है; तुम जानते हो कि हत्यारे के पास अनंत जीवन नहीं होता" (कंटेंपररी कोरियन वर्शन)।

ठीक इसी मोड़ पर प्रार्थना की वह ज़बरदस्त शक्ति काम करती है, जिसकी ओर प्रेरित यूहन्ना इशारा करते हैं। स्वभाव से, जब हम दूसरों को अपने भाइयों से नफ़रत करने के पाप के अंधेरे में फँसा हुआ देखते हैं, तो हम पाखंडी की तरह व्यवहार करते हैं—अपने नैतिक मापदंडों के आधार पर तुरंत उन्हें परखने और दोषी ठहराने लगते हैं। लेकिन, एक ऐसा विश्वासी जिसके पास सच्चा अनंत जीवन है और जो उद्धार के भरोसे पर खड़ा है—जब वह किसी साथी विश्वासी को नफ़रत की बेड़ियों में जकड़ा हुआ और आध्यात्मिक ठहराव की ओर बढ़ते हुए देखता है—तो वह घुटनों के बल बैठकर माफ़ी के लिए आँसुओं भरी, दूसरों के लिए प्रार्थना करता है: "हे परमेश्वर, कृपया उस कमज़ोर सदस्य की नफ़रत को माफ़ कर दें और उसकी आत्मा को शुद्ध करें" (पद 16)। जब हम अपने अहंकार को त्यागकर ऐसी प्रार्थनाएँ करते हैं—ऐसी प्रार्थनाएँ जो पिता को पसंद हैं—तो बाइबिल एक अद्भुत परिणाम की गारंटी देती है: "वह उसे जीवन देगा, उन लोगों के लिए जिनका पाप मृत्यु का कारण नहीं बनता।" जैसा कि *कंटेंपररी कोरियन वर्शन* (ह्युंडाई-इन-उई सोंग-ग्योंग) भावपूर्ण ढंग से कहता है, पवित्र परमेश्वर हमारी प्रार्थना को सुनेंगे और चमत्कारिक रूप से उस भाई की आत्मा को फिर से जीवित करेंगे—जो शैतान की पकड़ में फँसकर मर रहा था—और उसे अनंत जीवन की भरपूरता वापस देंगे। यही "सच्ची प्रार्थना" का असली सार है—जो मेरी अपनी इच्छाओं को खत्म करती है और केवल परमेश्वर की इच्छा को खोजती है—जैसा कि 1 यूहन्ना 5:14 में बताया गया है; यह उस पक्के भरोसे के साथ उठने का शानदार रहस्य है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का 100 प्रतिशत जवाब देते हैं।

जिस पक्के सुसमाचार की नींव पर हम हिम्मत के साथ माफी की यह मध्यस्थता वाली प्रार्थना कर सकते हैं, वह यह है कि हमारे कप्तान यीशु मसीह ने गोलगोथा में क्रूस की वेदी पर खुद इस प्रार्थना का उदाहरण पेश किया। श्राप के उस भयानक पेड़ पर लटके हुए—जब उनका शरीर फट गया था और उनका खून बह रहा था—प्रभु ने उन दुश्मनों के लिए प्रार्थना में अपनी आत्मा उड़ेल दी जिन्होंने उनका मज़ाक उड़ाया और उन्हें क्रूस पर चढ़ाया: "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं" (लूका 23:34)। डीकन स्टीफन—जिनके पवित्र घुटनों को यीशु की खून से सनी प्रार्थना की शक्ति मिली थी—ने दिखाया कि वे भी शानदार जीत के इन कदमों पर चल रहे थे, जैसा कि प्रेरितों के काम 7:60 में दर्ज है। पवित्र आत्मा की महान शक्ति से भरे स्टीफन घुटने टेककर कठोर भीड़ के बीच ज़ोर से चिल्लाए—वे लोग जो जिद्दी थे, जिनका दिल कठोर था, और जो गुस्से में पत्थर फेंक रहे थे—जबकि उनका अपना शरीर दर्द से कुचला जा रहा था: "हे प्रभु, इस पाप का दोष उन पर न लगा।" वेदी पर अपने दुश्मनों के लिए पूरी तरह से माफी की यह मध्यस्थता वाली प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने आखिरी सांस ली और एक विजेता के रूप में स्वर्ग के शानदार आराम में प्रवेश किया।

प्यारे संतों, जिस तरह सिंहासन के दाहिने हाथ पर यीशु और हमारे अंदर रहने वाली पवित्र आत्मा अभी भी परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हमारे लिए मध्यस्थता कर रहे हैं (रोमियों 8:26–27, 34), हमारी प्रार्थनाओं में भी गहरा बदलाव आना चाहिए; हमें अपनी स्वार्थी इच्छाओं के खोल को तोड़ना होगा और माफी और जीवन की प्रार्थनाएँ करनी होंगी जो हमारे पीड़ित भाइयों और बहनों को बहाल करें। आइए हम अपने अंदर से नफरत के जलते हुए अंगारों को बाहर निकालें, अपने कमजोर साथी सदस्यों से कामों और सच्चाई के साथ प्यार करें, और खून के आँसुओं के साथ उनकी आत्माओं के लिए मध्यस्थता करें। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से पूरी श्रद्धा के साथ प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक प्रार्थना की शक्ति से शैतान द्वारा बिछाए गए फूट डालने के हर जाल को तोड़ दें, और आप अपने रोज़मर्रा के जीवन में स्वर्गीय नागरिकता के भरपूर और अनंत आशीषों का आनंद लें, साथ ही स्वर्गीय सिंहासन से मिलने वाले शानदार प्रार्थना-जवाबों का अटूट भरोसा भी पाएँ। इससे पहले, प्रेरित यूहन्ना ने विश्वासियों को उन साथी सदस्यों के लिए मध्यस्थता की प्रार्थना करने का निर्देश दिया था जो लड़खड़ा रहे थे या कमजोरी और नफरत के जाल में फँसे हुए थे—खासकर उस "पाप के बारे में जो मृत्यु की ओर नहीं ले जाता" (1 यूहन्ना 5:16a)। फिर भी,

इसके ठीक बाद, 1 यूहन्ना 5:16 के दूसरे हिस्से में, यूहन्ना सुसमाचार की एक ऐसी सख्त सीमा रेखा खींचते हैं जो हमें अंदर तक हिला देती है: "...एक ऐसा पाप है जो मृत्यु की ओर ले जाता है; मैं यह नहीं कहता कि उसके लिए प्रार्थना की जाए" (NKJV)। "लेकिन एक ऐसा पाप है जो मृत्यु की ओर ले जाता है। मैं उसके बारे में प्रार्थना करने के लिए नहीं कहता" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। इस गंभीर और भारी घोषणा का सामना करते हुए, हमें गहरे धार्मिक विस्मय के साथ पूछना चाहिए: "मृत्यु की ओर ले जाने वाले इस पाप" की भयानक सच्चाई क्या है—वह पाप जिसके बारे में महान प्रेरित यूहन्ना प्रार्थना की शक्ति को ही रोक देते हैं और कहते हैं कि हमें उसके लिए मध्यस्थता भी नहीं करनी चाहिए? यह किस तरह का घोर अपराध है जो ऐसी पक्की लकीर खींचता है, जिसका अर्थ है कि इसे संतों की उन आंसुओं भरी प्रार्थनाओं से भी नहीं बदला जा सकता जो स्वर्गीय सिंहासन को हिला देती हैं?

जब हम यूहन्ना की पत्रियों के व्यवस्थित धार्मिक ढांचे के आधार पर इस पाठ की व्याख्या करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि "मृत्यु की ओर ले जाने वाले इस पाप" का संबंध न तो किसी अलग-थलग नैतिक विफलता से है और न ही रोज़मर्रा के जीवन में किसी विश्वासी द्वारा महसूस की गई नफरत की अस्थायी स्थिति से। बल्कि, यह धर्मत्याग का पाप है—यानी पूरे दिल से "मसीह-विरोधी" (Antichrist) की चालाक चालों को अपनाना और उनका पालन करना; वह "झूठा" और शैतान का आध्यात्मिक सरदार जिसे 1 यूहन्ना 2:22 ने बेरहमी से बेनकाब किया था। दूसरे शब्दों में, यह पूरी तरह से अविश्वास की स्थिति है—एक ऐसी हालत जहाँ किसी की आत्मा को एंटीक्राइस्ट (मसीह-विरोधी) और आखिरी दिनों के धोखेबाज़ों के भयानक झूठ ने पूरी तरह से चुरा लिया हो। इसके कारण वे जानबूझकर और पूरे भरोसे के साथ इस बात से इनकार करते हैं कि नासरत का यीशु—जो इतिहास के बीच में आया था—वही मसीह है। साथ ही, वे परमेश्वर पिता के पुत्र के रूप में यीशु मसीह के ईश्वरीय स्वरूप और उनके अस्तित्व का पूरी तरह से अपमान करते हैं और उसे नकारते हैं (2:18, 21–22, 26)। जैसा कि *KJV बाइबल कमेंट्री* में साफ़ तौर पर बताया गया है, जिस शुरुआती कलीसियाई समुदाय को यह पत्र मिला था, उसके बीच असल में धर्मत्यागी (विश्वास छोड़ने वाले) छिपे हुए थे—ऐसे लोग जो झूठे शिक्षकों की चालाकी भरी गलत शिक्षाओं और नॉस्टिक (Gnostic) धोखों के आगे पूरी तरह झुक गए थे। वे सक्रिय रूप से कलीसिया को बाँट रहे थे और उसे तोड़ रहे थे, क्योंकि वे साफ़ तौर पर इस बात से इनकार करते थे कि यीशु ही मसीहा और परमेश्वर का पुत्र है। इस बुरे समूह के बारे में,

प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:19 में उनकी असली आध्यात्मिक पहचान को साफ़ तौर पर उजागर कर दिया था: "वे हमारे बीच से निकले, लेकिन वे हमारे नहीं थे; क्योंकि अगर वे हमारे होते, तो वे हमारे साथ बने रहते; लेकिन वे इसलिए निकले ताकि यह ज़ाहिर हो सके कि उनमें से कोई भी हमारा नहीं था।" हालाँकि वे कुछ समय के लिए कलीसिया के बाहरी दिखावे में बने रहे, लेकिन वे कभी भी सच में यीशु मसीह के नहीं थे—उन्होंने न तो क्रूस पर उनके लहू की शुद्ध करने वाली शक्ति का अनुभव किया था और न ही पवित्र आत्मा के जीवन देने वाले प्रेम का—और न ही वे उस लहू से जुड़े स्वर्ग के सच्चे नागरिकों में से थे; असल में, वे पूरी तरह से दुश्मन थे। ये वे लोग हैं जो इन "आखिरी दिनों" में अपनी मर्ज़ी से एंटीक्राइस्ट के प्रभाव में आ गए हैं और सच्चाई की आत्मा को ठुकरा दिया है; वे लगातार सृष्टिकर्ता को झूठा बताकर उनका अपमान करते रहे हैं। वे उस शानदार "स्वर्गीय गवाही" का मज़ाक उड़ाते हैं—उसे महज़ नकली बताते हैं—जिसे परमेश्वर ने इतिहास में आत्मा, पानी और लहू के ज़रिए अपने पुत्र के बारे में स्थापित किया था (5:10)। जो लोग इस तरह व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर की अनंत सच्चाई को ठुकराते हैं और—लगातार कठोर दिल और अविश्वास के कारण—अपनी आध्यात्मिक साँस को पूरी तरह से काट लेते हैं, उनके लिए सही सज़ा के तौर पर "अनंत मृत्यु" के अलावा कुछ नहीं बचता—यानी न्याय के दिन नरक की वह भयानक सज़ा। क्योंकि इस तरह पूरी तरह से नकारना और अविश्वास करना ही इस बात का सबूत है कि व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से मृत है और उसमें जीवन नहीं है, इसलिए प्रेरित यूहन्ना ने कलीसिया की एकता और संतों की आत्माओं की रक्षा के लिए अपनी चिट्ठी का समापन इस चेतावनी के साथ किया: “उस भयानक पाप के लिए अपनी कीमती प्रार्थनाएँ बर्बाद न करें जो मौत की ओर ले जाता है” (पद 16, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)।

स्यूंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, सच्चाई और झूठ के बीच की बहुत बारीक सीमा पर खड़े होकर, हमें आध्यात्मिक सतर्कता की गहरी भावना को फिर से जगाना होगा। आइए हम अपनी आत्मा का एक इंच भी हिस्सा दुनियादारी के चलन या एंटीक्राइस्ट (मसीह-विरोधी) की चालाक चालों के हवाले न करें। आइए हम अपने विश्वास को क्रूस के सुसमाचार की सच्चाई में मज़बूती से जमाए रखें—वह संदेश जो हमने शुरू से ही सुना है। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप स्वर्ग के राज्य के सच्चे, नए जन्म वाले नागरिक बनें: यीशु मसीह का—जो अनंत जीवन हैं—अपने भीतर राजा के रूप में स्वागत करें;

वचन की तलवार से नफ़रत और झूठ के जाल को पूरी तरह कुचल दें; और आज के संघर्षों के बीच स्वर्ग की अलौकिक शांति और पूर्ण उद्धार के भरोसे का रोज़ ऐलान करें।

मुझे आज भी प्रार्थना के जवाब के भरोसे से जुड़ी वह आयत अच्छी तरह याद है—जो "उद्धार के पाँच भरोसे" में से एक थी और जिसे मैंने यूनिवर्सिटी के दिनों में कड़ी शिष्यत्व ट्रेनिंग के दौरान अपने दिल में बसाया था। जिस आयत ने मुझे प्रार्थना का जीवन जीने के लिए प्रेरित किया, वह थी यूहन्ना 16:24: "अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा। माँगो, और तुम्हें मिलेगा, ताकि तुम्हारी खुशी पूरी हो सके।" इस वादे से प्रभावित होकर, मैंने ईसाई छात्र समूह के लिए सुबह की प्रार्थना सभाओं का नेतृत्व करने की पवित्र ज़िम्मेदारी ली, जहाँ मैं अपने जूनियर और सीनियर वर्षों में लीडर के तौर पर सेवा करता था। हालाँकि यह एक साधारण सभा थी—जो भोर में नहीं बल्कि सुबह 7:00 बजे यूनिवर्सिटी के एक खाली क्लासरूम में होती थी—लेकिन वह जगह जहाँ मैंने उत्सुक नए छात्रों (फ्रेशमेन और सोफोमोर्स) के साथ मिलकर प्रभु को पुकारा, मेरी आत्मा के जलते हुए "पहले प्यार" की वेदी बन गई। हालाँकि, कॉलेज से ग्रेजुएट होने और परमेश्वर के बुलावे पर सेमिनरी में जाने के बाद, जल्द ही मेरे प्रार्थना जीवन पर आध्यात्मिक ठहराव और सुस्ती का अंधेरा छा गया। पहले दो सालों तक, मैं कोरियाई छात्र संघ द्वारा आयोजित सुबह की प्रार्थना सभाओं में कभी शामिल नहीं हुआ। बाइबिल की भाषाओं के अध्ययन और पढ़ाई के भारी बोझ के कारण, मैंने बहुत व्यस्त होने और पढ़ाई के दबाव का बहाना बनाकर प्रार्थना की जगह से पूरी तरह दूरी बना ली। फिर, अपने तीसरे साल में, अचानक मुझे कोरियाई छात्र संघ के अध्यक्ष के तौर पर सेवा करने की बड़ी ज़िम्मेदारी उठानी पड़ी। अपने साथी पादरी उम्मीदवारों के सामने एक मिसाल कायम करने की ज़िम्मेदारी और मजबूरी के एहसास के कारण, मेरे पास सुबह की प्रार्थना के लिए वेदी तक जाने और एक बार फिर घुटने टेकने के अलावा कोई चारा नहीं था। पीछे मुड़कर देखने पर, यह मेरा अपना उत्साह नहीं था, बल्कि उस जगह पर बरसी परमेश्वर की भरपूर कृपा और दया थी—जहाँ मैं बहुत अनिच्छा से गया था—जिसने मुझे उस आध्यात्मिक संकट से उबरने और अपनी पूरी सेमिनरी शिक्षा को सफलतापूर्वक पूरा करने में मदद की।

फिर भी, मेरा भ्रष्ट मानवीय स्वभाव आसानी से नहीं बदला। सेमिनरी से स्नातक होने के बाद, हमारा चर्च "बेवर्ली" इमारत में चला गया और अपनी सेवा का दायरा बढ़ाने लगा। हालाँकि मैं एक प्रचारक था जिस पर चर्च के आध्यात्मिक मोर्चे की रक्षा करने की ज़िम्मेदारी थी—और मैं दूसरी मंजिल पर एक कमरे में रहता

और खाता-पीता भी था—फिर भी मैं तीसरी मंजिल पर वरिष्ठ पादरी द्वारा आयोजित सुबह की प्रार्थना सभाओं में शामिल होने में विफल रहा; ऐसी सभाएँ जहाँ वे प्रार्थना में अपनी आत्मा उड़ेल देते थे। जबकि मेरा शरीर प्रार्थना-स्थल से ठीक एक मंजिल नीचे था, मेरी आत्मा सोई हुई थी और वेदी तक नहीं पहुँच पा रही थी; प्रार्थना के मामले में मैं पूरी तरह से आध्यात्मिक रूप से कंगाल हो चुका था। इस प्रकार, मेरे विश्वास का सफर न तो वीरतापूर्ण था और न ही अडिग। मेरा जीवन हमेशा अस्त-व्यस्त रहा, और जब भी मैंने प्रार्थना में घुटने टेके, तो वे अक्सर मजबूरी में किए गए काम थे—जो गहरी शर्म का कारण थे। फिर भी, जो बात मुझे सचमुच भावुक कर देती है, वह यह एहसास है कि परमेश्वर ने मुझ पर अपनी कृपा की असीम शक्ति बरसाई, जबकि मैं लगातार प्रार्थना की जगह से भागने और उसे छोड़ने की कोशिश करता रहा।

लगभग अठारह साल पहले, जब मुझे ऐसी सच्चाई का सामना करना पड़ा जहाँ हर रास्ता बंद लग रहा था, तो प्रभु ने मेरी आत्मा से मत्ती 16:18 में पाया जाने वाला शानदार और अटूट वादा कहा: "...मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" इस वादे को जीवन-रेखा की तरह मेरे हाथों में सौंपते हुए, उन्होंने चमत्कारिक रूप से मुझे कोरिया से यहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका में विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च में वापस लाया। आखिरकार, जब मुझे विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के वरिष्ठ पादरी के रूप में सेवा करने के लिए बुलाया गया और मैंने आँसुओं के साथ सुबह की प्रार्थना वेदी का नेतृत्व करना शुरू किया, तो मुझे आखिरकार उस भरपूर कृपा और स्वर्गीय शांति का अनुभव हुआ जिसका आनंद एक पादरी सचमुच ले सकता है। इस कलीसिया की अगुवाई करते हुए इतने सालों में, मेरे अंदर बसने वाले पवित्र आत्मा ने मेरे जीवन और सेवा-कार्य को अपनी मर्जी से चलाया है। उन्होंने मुझे अपनी काबिलियत पर भरोसा करने के बजाय प्रभु के वादे पर पूरी तरह से टिके रहने के लिए प्रेरित किया। इस पवित्र योजना का कारण साफ़ था: वे क्रूस पर मेरे सेवा-कार्य से जुड़े घमंड और महत्वाकांक्षा को खत्म करना चाहते थे। वे चाहते थे कि मैं धीरे-धीरे—और दर्दनाक तरीके से—अपनी पूरी आध्यात्मिक कंगालियत को समझूँ और मानूँ, और यह स्वीकार करूँ कि मैं अपनी ताकत से विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च को एक मिलीमीटर भी नहीं बना सकता। ठीक उसी पल जब मैंने अपनी बेबसी को माना, पवित्र आत्मा ने—प्रभु के वादे के अनुसार—मेरे दिल में एक अटूट और पक्का विश्वास जगाया: कि प्रभु की कलीसिया सिर्फ़ प्रभु खुद ही बनाते हैं, जो राजाओं के राजा हैं।

उस प्रार्थना के आध्यात्मिक संघर्ष के बीच, पवित्र आत्मा ने प्रार्थना के बारे में मेरी सोच को पूरी तरह से बदल दिया—खासकर रोमियों अध्याय 8 को याद करने के उस अभ्यास के ज़रिए, जिसे हमारी कलीसिया की स्थापना के समय शुरू किया गया था। रोमियों 8:26–27 और 34 में मिली गहरी समझ के ज़रिए, उन्होंने मुझे एहसास कराया कि मेरी प्रार्थनाओं के जवाब मिलने का असली आधार न तो मेरे चरित्र की अच्छाई थी और न ही मेरी प्रार्थनाओं की सच्चाई। उन्होंने मेरी आत्मा की आँखें खोलीं ताकि मैं धीरे-धीरे देख सकूँ कि प्रार्थना का जवाब मिलने का पक्का भरोसा पूरी तरह से दो चीज़ों पर टिका है: यीशु मसीह की मध्यस्थता—जिन्होंने मौत की ताकत को तोड़ा, फिर से जी उठे, और अब भी परमेश्वर के दाहिने हाथ खड़े होकर मेरे लिए लगातार अपने खून से सने हाथ उठाकर विनती कर रहे हैं—और पवित्र आत्मा का काम, जो मेरे कमज़ोर दिल में अपने मंदिर के रूप में रहते हैं और परमेश्वर की भली इच्छा के अनुसार, ऐसी स्वर्गीय आहों के साथ मेरे लिए विनती करते हैं जिन्हें शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।

इसलिए, त्रिएक परमेश्वर की इस बेहतरीन मध्यस्थता वाली कृपा से ताकत पाकर, हमारी एकमात्र आध्यात्मिक ज़िम्मेदारी साफ़ है: हमें अपनी भावनाओं और उम्मीदों के बाहरी आवरण को हटाना होगा, विश्वास की ढाल उठानी होगी जो इस वादे वाले वचन पर 100% भरोसा करती है, और ऐसे सेवक बनना होगा जो—पवित्र आत्मा की कोमल अगुवाई में—सिर्फ़ परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करें। खासकर, हमें अपने उद्धारकर्ता यीशु की आज्ञाकारिता की प्रार्थना को पूरे दिल से सीखना चाहिए—जिन्होंने गेथसेमनी की वेदी पर अपनी इच्छा पूरी तरह से समर्पित कर दी थी, जहाँ पसीने की तरह खून की बूंदें गिरी थीं: "मेरी नहीं, बल्कि आपकी इच्छा पूरी हो" (लूका 22:42)। जब हम अपनी ज़िद और इच्छाओं को क्रूस पर चढ़ा देते हैं और अपनी प्रार्थनाओं की दिशा को पूरी तरह से परमेश्वर की पसंद की इच्छा के अनुसार कर लेते हैं, तो हमें 1 यूहन्ना 5:14 में जीत का शानदार गीत मिलेगा—"परमेश्वर के पास जाने में हमें यह भरोसा है: कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ भी मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है"—जो हमारे रोज़मर्रा के जीवन में एक चमकदार, अनंत समृद्धि के रूप में होगा। आइए हम उस अपरिपक्वता के लिए पूरी तरह से पश्चाताप करें जिसके कारण हमें चिंता हुई जब हमने अपनी इच्छा थोपने की कोशिश की। आइए हम अपनी सभी प्रार्थनाओं को त्रिएक परमेश्वर के विश्वसनीय स्वभाव पर मज़बूती से टिकाएं, जो स्वर्गीय सिंहासन से और हमारे दिलों के भीतर, दोनों जगह हमारी ओर से काम करते हैं। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से पूरी गंभीरता से प्रार्थना करता

हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक पूरी आज्ञाकारिता के सेवक बनें—जो केवल परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जिएं और मांगें, प्रार्थना के घुटनों के नीचे शैतान के हर धोखे को कुचल दें, स्वर्गीय सिंहासन से रोज़ाना बरसने वाली प्रार्थनाओं के उत्तर के गहरे आश्वासन का आनंद लें, और अंततः अंतिम जीत हासिल करें।

तीसरी स्वर्गीय गारंटी जो हमें पूरी जीत का गीत गाने में सक्षम बनाती है—बिना पाप और शैतान के लगातार आरोपों और प्रलोभनों के युद्ध के मैदान में मुरझाए पत्तों की तरह गिरे—वह है "जीत का पवित्र आश्वासन," जो इस ज्ञान पर आधारित है कि परमेश्वर जलती हुई आग जैसी आँखों से हमारी देखरेख करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि दुष्ट व्यक्ति हम पर उंगली भी न रख सके। 1 यूहन्ना 5:18 में गंभीर और शानदार घोषणा के माध्यम से, प्रेरित यूहन्ना विश्वासियों द्वारा सामना की जाने वाली आध्यात्मिक सच्चाई की पुष्टि करते हैं—वे जिनके पास यीशु में विश्वास के माध्यम से अनंत जीवन है और जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलते हैं: "हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप करता नहीं रहता, बल्कि जो परमेश्वर से जन्मा है वह उसकी रक्षा करता है, और दुष्ट व्यक्ति उसे छूता नहीं है" (ESV)। प्रेरित यूहन्ना घोषणा करते हैं कि जो लोग परमेश्वर से नए सिरे से जन्मे हैं, वे आदतन, लगातार पाप की स्थिति में नहीं रहते हैं। इसकी वजह यह है कि यीशु मसीह—जो परमेश्वर के पुत्र, एकमात्र और राजाओं के राजा हैं—खुद हमारी आत्माओं की रखवाली करते हैं और चौबीसों घंटे हमें घेरे रहकर हमारी सुरक्षा करते हैं। इस तरह, वे पूरी सुरक्षा और विजयी अधिकार का संदेश देते हैं और यह पक्का करते हैं कि नरक की ताकतें और शैतान की शक्तियाँ हमारी आत्माओं को छूने की हिम्मत भी न कर सकें।

"मुक्ति के पाँच आश्वासनों" में—जो शिष्यत्व प्रशिक्षण के बुनियादी तत्व हैं और जिन्हें हमें जीवन भर थामे रखना चाहिए—एक मुख्य स्तंभ है जो इस विचार से पूरी तरह मेल खाता है: "जीत का आश्वासन।" आइए हम अपनी आत्मा की गहराइयों में उस सच्चाई को गहराई से उतारें जो 1 कुरिन्थियों 10:13 में मिलती है, और जो एक आध्यात्मिक मापदंड का काम करती है: "तुम पर कोई ऐसी परीक्षा नहीं आई जो मनुष्यों के लिए आम न हो। और परमेश्वर सच्चा है; वह तुम्हें तुम्हारी सहनशक्ति से ज़्यादा परीक्षा में नहीं पड़ने देगा। बल्कि जब तुम परीक्षा में पड़ोगे, तो वह उससे निकलने का रास्ता भी देगा ताकि तुम उसे सह सको" (NIV)। यहाँ,

हमें उस "परीक्षा" (*peirasmos*) के असली आध्यात्मिक स्वरूप को सही ढंग से समझना चाहिए जिसके बारे में बाइबल चेतावनी देती है और बात करती है। इस अंश में बताई गई परीक्षा का मतलब परमेश्वर की ओर से आने वाली नेक "आज़माइश" नहीं है—जैसे कि वह आज़माइश जिसकी इजाज़त पिता परमेश्वर ने उत्पत्ति 22 में मोरियाह पर्वत की वेदी पर अब्राहम के विश्वास को पूरी तरह तौलने और साबित करने के लिए दी थी। बल्कि, 1 कुरिन्थियों 10:13 में बताई गई परीक्षा का मतलब है "शैतान की परीक्षा"—उसके चालाक और विनाशकारी प्रलोभन और जाल, जिनका मकसद विश्वास करने वाले को गिराना, उन्हें पाप की खाई में धकेलना और आखिरकार उन्हें बर्बाद करना है। हालाँकि शैतान हमें हर तरफ से घेरे रहता है और हम पर परीक्षा के आग वाले तीर चलाता है, फिर भी हमारा परमेश्वर सच्चा और विश्वसनीय है; वह हमें हमारी सहनशक्ति से ज़्यादा परीक्षा में नहीं पड़ने देता—ऐसी परीक्षाएँ जिनसे प्रार्थना की शक्ति के ज़रिए पार न पाया जा सके। इसके बजाय, जब हम परीक्षा के मुहाने पर खड़े होकर आँसुओं के साथ प्रभु को पुकारते हैं, तो वह निकलने का एक अकल्पनीय, अलौकिक रास्ता तैयार करता है, जिससे हम जीत हासिल कर पाते हैं।

अपनी आत्मा के प्रहरी-दुर्ग को मज़बूती से स्थापित करने और लगातार जीत हासिल करने के लिए, हमें धर्मग्रंथ की बातों के पीछे छिपे शैतान की परीक्षाओं के तरीकों और उनकी खतरनाक सच्चाई को बारीकी से समझना होगा। जब मैंने परमेश्वर के वचन का लगन से अध्ययन और व्याख्या की है, तो मैंने शैतान द्वारा बुनी गई धोखे की "तिहरी ज़ंजीर" के बारे में तीन महत्वपूर्ण आध्यात्मिक बातें नोट की हैं; मैं अब उन्हें आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। (1) सबसे पहले, शैतान ने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह का लगातार पीछा किया—न केवल उनके सार्वजनिक सेवा-कार्य की *शुरुआत* में, बल्कि उस *आखिरी पल* तक भी जब वे अपने उद्धार के काम को पूरा कर रहे थे—और लगातार उनके सामने तीन तरह के जाल बिछाता रहा।

हमने पहले उन तीन खतरनाक परीक्षाओं की सच्चाई पर गौर किया है जिनका सामना यीशु ने जंगल में शैतान से किया था, ठीक अपने सार्वजनिक सेवा-कार्य को *शुरू* करने से पहले। फिर भी, एक सचमुच चौंकाने वाली बात यह है कि उस गंभीर पल में जब प्रभु को क्रूस पर कीलों से जड़ा गया—उनका शरीर क्षत-विक्षत हो गया था—ताकि वे इंसानियत के उद्धार के काम को पूरी तरह से *पूरा* कर सकें, शैतान ने एक

बार फिर बुरे लोगों के मुँह से उन पर तीन बार हताशापूर्ण और धोखे से भरा ताना मारा: "खुद को बचाओ," और उन्हें क्रूस की बेड़ियों से आज़ाद होने के लिए उकसाया।

(a) यहूदी नेताओं के मुँह से शैतान का उकसावा। "लोग खड़े होकर देख रहे थे, और शासक भी उनका मज़ाक उड़ाते हुए कह रहे थे, 'उसने दूसरों को बचाया; अगर वह परमेश्वर का मसीहा, चुना हुआ व्यक्ति है, तो खुद को बचाए'" (लूका 23:35)।

(b) रोमन सैनिकों के मुँह से शैतान का मज़ाक।

"सैनिक भी पास आए और उनका मज़ाक उड़ाया। उन्होंने उन्हें सिरका पीने को दिया और कहा, 'अगर तुम यहूदियों के राजा हो, तो खुद को बचाओ'" (पद 36–37)।

(c) दोनों तरफ लटके अपराधियों के मुँह से शैतान की बदनामी।

"वहाँ लटके अपराधियों में से एक ने उनका अपमान किया: 'क्या तुम मसीहा नहीं हो? खुद को और हमें बचाओ!'" (पद 39)।

जंगल की परीक्षा और गोलगोथा में मज़ाक—दोनों के पीछे शैतान का बस एक ही घिनौना मकसद था: प्रायश्चित के रास्ते को पूरी तरह से रोकना—जिसके ज़रिए यीशु, जो इंसानियत के एकमात्र उद्धारकर्ता हैं, हमारे भयानक पापों का बोझ उठाते और श्रापित पेड़ पर मरते—और इस तरह क्रूस को खत्म कर देते। इस प्रकार, शैतान की ज़बरदस्त तीन तरह की परीक्षाएँ हमेशा प्रभु के पवित्र मसीही मिशन की शुरुआत और अंत दोनों समय मौजूद रहीं। (2) दूसरा, आज नए सिरे से विश्वास करने वालों और चर्च के सामने शैतान का सबसे धोखेबाज़ प्रलोभन एक खोखला धार्मिक दिखावा है, जिसकी पहचान है—"बिना दुख-तकलीफ के क्रूस," "बिना क्रूस के सुसमाचार," और "बिना सुसमाचार के मसीह का चर्च।"

शैतान हमें चर्च छोड़ने की सीधी धमकी नहीं देता। इसके बजाय, वह अपनी चालों को चालाकी भरे प्रचार के तरीकों और कार्यक्रमों में लपेटकर पेश करता है। वह हमें एक नकली क्रूस थमाता है जो हमें सिर्फ़ जी उठने की महिमा का दावा करने के लिए उकसाता है, जबकि यीशु जैसा बनने के लिए ज़रूरी तंग रास्ते पर आने वाले दुख-दर्द को नज़रअंदाज़ कर देता है। यह लोगों को एक ऐसे बेअसर सुसमाचार पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करता है जिसमें क्रूस के वे दर्द भरे निशान नहीं हैं जो हमारे स्वार्थ और बुरी इच्छाओं को खत्म करते हैं। आखिरकार, यह चर्च को सुसमाचार की असली, जीवन देने वाली शक्ति से रहित और इंसानी कामों व संख्या बढ़ाने की होड़ (मूर्तिपूजा) से भरे एक पाखंडी स्थान में बदल देता है। शैतान की इस खामोश और चालाक चाल का सामना करने के लिए हमें आध्यात्मिक रूप से पूरी तरह जागृत और सावधान रहना होगा।

(3) तीसरा, प्रेरितों के काम (Acts) 21 की घटनाओं में, शैतान ने प्रेरित पौलुस की यरूशलेम की यात्रा—जो सुसमाचार के मकसद से की जा रही थी—को रोकने के लिए "हंगामे," "अफ़वाहों" और "हिंसा" का तिहरा हमला किया।

जब पौलुस गैर-यहूदियों (Gentiles) के त्याग और समर्पण से खरीदी गई भेंट लेकर यरूशलेम के मंदिर पहुँचा, तो दुश्मन—शैतान—ने ज़बरदस्त "हंगामा" खड़ा कर दिया जिसने पूरे शहर को हिलाकर रख दिया (Acts 21:30)। उसने एक घिनौनी "अफ़वाह" फैलाकर भीड़ को गुमराह किया—यह झूठी खबर फैलाई कि पौलुस चर्च को नष्ट करने वाला है (v. 31)। आखिर में, उसने सैनिकों के हाथों बेरहम "हिंसा" करवाकर मिशन पर निकले पौलुस की यात्रा को पूरी तरह रोकने की हताश कोशिश की, और उसकी हड्डियाँ तक तोड़ने की कोशिश की (v. 35)।

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, शैतान द्वारा फैलाए गए इस विशाल और लगातार चलने वाले तिहरे प्रलोभन को देखिए। चाहे अतीत में हो या आज के इन "आखिरी दिनों" में जिनमें हम जी रहे हैं, शैतान हमें डराने-धमकाने के लिए हंगामे, अफ़वाहों और हिंसा का इस्तेमाल करता है; वह हमारी अपनी इच्छाओं और बुरी वासनाओं को भड़काकर हमें लगातार प्रलोभन देता है, और हमें अपने भाई-बहनों से नफ़रत करने और क्रूस के दुख-दर्द से भागने के लिए उकसाता है। फिर भी, इस आध्यात्मिक युद्ध के बीच भी हम डर से कांपते

नहीं हैं। जैसा कि 1 यूहन्ना 5:18 में भरोसा दिलाया गया है, हम—परमेश्वर से जन्मी नई रचनाएँ—अपने सेनापति यीशु मसीह के लहू से सने हाथों में सुरक्षित हैं; इसलिए, हमें पूरा यकीन है कि शैतान हमारी आत्माओं को छू भी नहीं सकता। आइए हम उस खोखले सुसमाचार को हिम्मत से दूर करें जिसमें दुख की सच्चाई नहीं है। मैं प्रभु के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप पवित्र सैनिक बनें जो अपने भीतर बसे वचन की शक्तिशाली तलवार का इस्तेमाल करके शैतान के सभी हंगामों और धोखों को तुरंत चकनाचूर कर दें, और साथ ही क्रूस के संकरे रास्ते पर मजबूती से चलते हुए अंतिम जीत का ऐलान करें।

दुश्मन, यानी शैतान, सिर्फ़ प्रेरितों के समय का दुश्मन नहीं है; वह अतीत का कोई स्थिर विरोधी नहीं है। इस समय भी, शैतान पवित्र कलीसियाई समुदाय—जिसे परमेश्वर ने अपने ही लहू से खरीदा है—को तोड़ने की कोशिश कर रहा है। वह संतों के दिलों में हलचल मचाने के लिए घिनौनी, बेबुनियाद अटकलें और गलतफहमियाँ फैलाता है और खतरनाक "हंगामे" भड़काता है जो कलीसिया को बुरी तरह हिला देते हैं। इसके अलावा, शैतान चुपके से खतरनाक अफवाहें फैलाता है—जो जानलेवा धारदार हथियारों की तरह होती हैं—और ऐसी क्रूर बातें फैलाता है जिससे विश्वासियों के बीच का भरोसा खत्म हो जाता है। इसके अलावा, वह कमजोर लोगों को धोखा देता रहता है और उन्हें क्रूर "हिंसा" करने के लिए उकसाता है—कांटों जैसी तीखी बातों और कामों से साथी विश्वासियों के दिलों पर कभी न भरने वाले, बर्बर घाव देता है। धर्मग्रंथ पर गहराई से मनन करते हुए और शैतान के प्रलोभनों के तीन आम तरीकों से आगे बढ़कर, मैंने एक बार "शैतान की रणनीतियाँ" शीर्षक के तहत नौ गहरे पादरी-संबंधी विचार लिखे थे, ताकि हमें फँसाने की कोशिश करने वाले अंधेरे की असली प्रकृति को समझा जा सके। दुनिया भर में मशहूर इवेंजेलिकल कमेंटेटर जॉन मैकआर्थर ने बड़ी समझदारी से उन लगातार तरीकों की पहचान की है जिनका इस्तेमाल शैतान कलीसिया का शिकार करने के लिए करता है: "शैतान की मुख्य रणनीति दुनिया और कलीसिया में जितना हो सके उतना झूठ फैलाना है—जिससे लोग शाश्वत सत्य को पूरी तरह से नकार दें, धीरे-धीरे उसे बिगाड़ दें, और आखिर में ऐसी उलझन पैदा कर दें कि सच और झूठ के बीच फर्क करना ही नामुमकिन हो जाए।" यह सचमुच एक गंभीर आध्यात्मिक समझ है।

इन "आखिरी दिनों" में रहने वाले ईसाइयों की सोच और विचारधारा पर गौर करें। हमने सुसमाचार के बुनियादी ढांचे को खो दिया है और एक ऐसी दुनिया की नकली प्रतिष्ठा और झूठ से बुरी तरह प्रभावित हो गए हैं जो न तो बाइबिल के अनुसार है और न ही सच है। "आपसी सम्मान" और "सबको साथ लेकर चलने" (inclusivity) जैसे मौजूदा सांस्कृतिक रुझानों और मानवीय सोच के बहाव में बहकर, हम सच और झूठ के बीच का फ़र्क नहीं समझ पाते—एक ऐसी रेखा जिसे किसी ब्लेड की तेज़ और सटीक धार की तरह स्पष्ट रूप से खींचा जाना चाहिए। नतीजतन, हम अब गहरी आध्यात्मिक उलझन में फँस गए हैं और एक धोखेभरे "मिश्रित विश्वास" को अपना रहे हैं—जो धर्मनिरपेक्ष मूल्यों और बाइबिल के सच का एक भद्दा मिश्रण है और बस ऊपर-ऊपर से धार्मिकता का दिखावा करता है।

शैतान की चालों का इस तरह से विश्लेषण और दस्तावेज़ीकरण करने का मेरा मुख्य कारण—परमेश्वर के वचन के सही पैमाने पर टिके रहते हुए—साफ़ है। क्योंकि जब हम परमेश्वर के जीवित वचन के ज़रिए दुश्मन की चालों को बारीकी से समझते और पहचानते हैं, तभी हम अपनी प्रार्थनाओं की दिशा तय कर सकते हैं—सुसमाचार के अनुरूप प्रतिक्रिया देते हुए—और शानदार जीत हासिल करने के लिए आखिर तक लड़ सकते हैं। इस विशाल और कठोर आध्यात्मिक युद्ध को लड़ने में, हमें अपनी ताकत पर भरोसा करने के बजाय—पूरे दिल और जान से—प्रभु द्वारा पक्की की गई "जीत के भरोसे" को थामे रखना होगा। इस तरह, जीत की वह "मास्टर चाबी" जिसका इस्तेमाल हमें जीवन भर करना है—और जो 1 कुरिन्थियों 10:13 में मिलती है—बेहद ज़रूरी है। इस महान वाचा के वादे के भीतर अटूट सैनिकों के रूप में खड़े होने के लिए, हमें नीचे दी गई तीन पक्की बातों को अपने दिलों में गहराई से उतारना होगा:

(a) पहली बात यह भरोसा है कि, यीशु में विश्वास के ज़रिए नया जन्म पाने वाले संत के लिए भी, इस धरती पर रहते हुए शैतान के ज़बरदस्त प्रलोभनों का सामना करना एक पूरी तरह से "सामान्य सच्चाई" है।

(a) जब दुश्मन, यानी शैतान के प्रलोभन आपके सामने आएं, तो निराश या हताश न हों और यह न सोचें कि "क्या मैं इस परीक्षा का सामना इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मुझमें विश्वास की कमी है?" यह एक ऐसी

आध्यात्मिक लड़ाई है जिससे हर उस व्यक्ति को गुज़रना पड़ता है जो अपने स्वर्गीय घर की यात्रा कर रहा है। "जिन प्रलोभनों का आप सामना करते हैं, वे वही हैं जिनका सामना हर कोई करता है" (1 कुरिन्थियों 10:13a, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)।

(b) दूसरी बात, क्योंकि हमारे परमेश्वर "पूरी तरह से विश्वसनीय" हैं—जो छोटी-छोटी बातों में भी कभी नहीं बदलते—इसलिए हम निश्चिंत हो सकते हैं कि वे हमें कभी भी हमारी क्षमता से ज़्यादा बड़े प्रलोभन का सामना नहीं करने देंगे, या ऐसा कोई प्रलोभन नहीं आने देंगे जिसे प्रार्थना से दूर न किया जा सके।

चाहे शैतान हमें चारों तरफ़ से घेर ले या डराए-धमकाए, ब्रह्मांड में ऐसी कोई भी शैतानी बाधा नहीं है जो राजाओं के राजा, परमेश्वर की सर्वोच्च मंज़ूरी और नियंत्रण से बच सके। प्रभु हमारी कमज़ोरियों के बोझ को अच्छी तरह तौलते हैं और, सबसे दयालु पहरेदार के रूप में, केवल उन्हीं आध्यात्मिक लड़ाइयों की अनुमति देते हैं जिन्हें सहने की क्षमता हममें होती है। "...परमेश्वर विश्वसनीय हैं; वे आपको आपकी क्षमता से ज़्यादा बड़े प्रलोभन का सामना नहीं करने देंगे..." (1 कुरिन्थियों 10:13b, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)।

(c) तीसरी बात, हमें यह भरोसा है कि विश्वसनीय परमेश्वर—ठीक उसी पल जब हम प्रलोभन की कगार पर पहुँच जाते हैं और दुख के आँसू बहाते हैं—हमारी कल्पना से परे एक अलौकिक "बचने का रास्ता" तैयार करते हैं, जिससे हम उस परीक्षा को सफलतापूर्वक सह सकें। शैतान हमें पाप की दलदल में धकेलने और अनंत जीवन की भरपूरता से अलग करने की पूरी कोशिश करता है; फिर भी, जब कोई विश्वासी परमेश्वर के वचन की तलवार चलाता है और पिता को पुकारता है, तो प्रभु निश्चित रूप से क्रूस की विजयी शक्ति बरसाते हैं, जिससे बचने का रास्ता और जीतने के लिए आध्यात्मिक शक्ति मिलती है। "...जब आप परीक्षाओं का सामना करते हैं, तो वे बचने का रास्ता देंगे ताकि आप उन्हें सह सकें" (1 कुरिन्थियों 10:13b, *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल*)।

प्रिय संतों, इसमें एक गहरा रहस्य छिपा है: 1 यूहन्ना 5:18 में घोषित जीत की महान गारंटी—कि "जो परमेश्वर से जन्मा है, वह उसकी रक्षा करता है, और दुष्ट उसे छू भी नहीं सकता"—पूरी तरह से 1 कुरिन्थियों में बताई

गई शांति से मेल खाती है। आइए हम दुनिया के मिले-जुले विचारों या शैतान के उस शोर-शराबे से अपनी आत्मा को न चुराने दें जो कलीसिया को अस्थिर करना चाहता है। आइए हम अपने विश्वास को इम्मानुएल की वफ़ादारी पर मज़बूती से टिकाए रखें—वह परमेश्वर जो हमारे लिए बचने का रास्ता बनाता है और जलती हुई आग जैसी आँखों से चौबीसों घंटे हमारी रक्षा करता है। इसलिए, मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप सभी विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के पवित्र सैनिक बनें—ऐसे सैनिक जो घुटने टेककर प्रार्थना में, अपने भीतर फूट और नफ़रत की पाखंडी चिंगारियों को पूरी तरह कुचल दें, और जो अपने जीवन की वेदी पर उस क्रूस की महान जीत को शानदार ढंग से दिखाएँ जो पहले ही हासिल हो चुकी है। 1 यूहन्ना 5:18 में, प्रेरित यूहन्ना हमारी आत्माओं के ढाँचे में जीत की एक मज़बूत नींव रखता है—एक ऐसा ढाँचा जो पाप के धोखे और शैतान के आरोपों के सामने पीछे हटने का खतरा रखता है: "हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप करता नहीं रहता, बल्कि जो परमेश्वर से जन्मा है वह उसकी रक्षा करता है, और दुष्ट उसे छूता नहीं है" (ESV/NKJV)। "हम जानते हैं कि परमेश्वर की संतान पाप करती नहीं रहती; क्योंकि परमेश्वर का पुत्र उसकी रक्षा करता है, दुष्ट शैतान उस पर हाथ नहीं डाल सकता" (Contemporary Korean Version)। "परमेश्वर से जन्मे व्यक्ति" की पहचान—जिसे प्रेरित यूहन्ना यहाँ एक शानदार जीत के नायक के रूप में बताता है—पूरी तरह से 1 यूहन्ना 5:1 और 5 में स्थापित बुनियादी बातों से मेल खाती है, जिनकी हमने पहले गहरे चिंतन और प्रार्थना के माध्यम से जाँच की थी। आयत 5:1 स्पष्ट रूप से नए सिरे से जन्मे विश्वासी की मसीह-संबंधी पहचान को परिभाषित करती है: "जो कोई विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से जन्मा है..." दूसरे शब्दों में, यह एक घोषणा है कि जो कोई भी पूरे दिल से भरोसा करता है और मानता है कि यीशु राजाओं का राजा, महायाजक और सच्चा भविष्यद्वक्ता है—जिसने उनके सभी पापों का प्रायश्चित किया है—वह ऐसा व्यक्ति है जो मानवीय वंश या धार्मिक कार्यों से नहीं, बल्कि केवल परमेश्वर की अपनी पहल से नया जन्म पाता है। इसके अलावा, 1 यूहन्ना 5:4-5 के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना ने जीत का एक शानदार गीत गाया—उस महान जीत के सिद्धांत की घोषणा की जो उन लोगों की है जिन्हें यह स्वर्गीय DNA मिला है: "क्योंकि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह दुनिया पर जीत हासिल करता है। और यही वह जीत है जिसने दुनिया पर जीत हासिल की है—हमारा विश्वास। दुनिया पर जीत हासिल करने वाला और कौन है, सिवाय उसके जो यह मानता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है?" *ह्युंडाई-इन-उई सोंगग्योंग*

(समकालीन कोरियाई संस्करण) स्पष्ट रूप से इस शानदार मुक्ति की स्थिति को "परमेश्वर की संतान" के रूप में पहचानता है और आयत 4 और 5 के रहस्य को इस प्रकार बताता है: "क्योंकि परमेश्वर की सभी संतानें दुनिया पर जीत हासिल कर सकती हैं। यह हमारा विश्वास है जिसने दुनिया पर जीत हासिल की है। जो यह मानता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, उसके अलावा और कौन दुनिया पर जीत हासिल करेगा?"

आखिरकार, आयत 18 में की गई घोषणा का धार्मिक सार—"जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप नहीं करता"—किसी भी तरह से कोई नैतिक भ्रम नहीं है जो यह सुझाव दे कि हम पृथ्वी पर रहते हुए पूरी तरह से पाप-रहित या पूर्णता की स्थिति प्राप्त कर सकते हैं। बल्कि, इसका अर्थ है कि सच्चे "परमेश्वर की संतान"—जो यीशु में विश्वास के माध्यम से अनंत जीवन की डोर से जुड़े हैं—अब शैतान के शासन वाली अंधेरे, नफरत और झूठ की दुनिया का हिस्सा नहीं हैं; वे अब आदत के तौर पर पाप करने और उसके गुलाम बनकर जीने वाले हारे हुए जीवन में नहीं रहते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि विश्वास करने वाले का पूरा अस्तित्व सांसारिक इच्छाओं से मुक्त हो गया है और सच्चाई के एक सैनिक के रूप में फिर से बनाया गया है जो स्वेच्छा से परमेश्वर की इच्छा को पूरा करता है। हमें उस आध्यात्मिक अपरिपक्वता को साहसपूर्वक त्याग देना चाहिए जो हमें बदलती परिस्थितियों या इंसानी खतरों के सामने डगमगाने—हमारे उद्धार के आश्वासन पर संदेह करने—के लिए प्रेरित करती है। इस पक्के विश्वास को मज़बूती से थामे रखें कि क्योंकि यीशु—हमारे सेनापति जिन्होंने हमें अपने लहू से खरीदा है—धधकती आग जैसी आँखों से हमारी रक्षा और सुरक्षा करते हैं, इसलिए न तो दुष्ट शैतान और न ही इस दुनिया की ताकतें हमारी आत्माओं के उद्धार को छूने की हिम्मत कर सकती हैं। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से पूरी गंभीरता से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी संत जीत के इस अटूट आश्वासन को अपने पूरे जीवन में सुसमाचार की तेज़ तलवार की तरह इस्तेमाल करें; और अपने साथी सदस्यों से खुद की तरह ही गहरा प्रेम करके, वे जीवन की वेदी पर शानदार ढंग से यह दिखा सकें कि वे सचमुच परमेश्वर की नई संतान हैं जिन्होंने दुनिया पर जीत हासिल की है।

प्रेरित यूहन्ना द्वारा की गई जीत की शानदार घोषणा के सामने, हम उस महान और ज़रूरी बात को देखते हैं कि क्यों हम—स्वर्ग के राज्य के नए नागरिक होने के नाते—पाप की बेड़ियों को तोड़ने और जीत हासिल करने के लिए बाध्य हैं। 1 यूहन्ना 5:5 के दूसरे भाग में जीत का शानदार गीत यह घोषणा करता है: "दुनिया

पर जीत कौन हासिल करता है, सिवाय उसके जो यह विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है?" विश्वास की यह तेजस्वी शक्ति परमेश्वर पिता के उस अद्‌भुत और पहल करने वाले प्रेम पर मजबूती से टिकी है—वह प्रेम जिसे प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 3:1 में गहरी भावना के साथ व्यक्त किया: "देखो, पिता ने हमें कैसा प्रेम दिया है, कि हम परमेश्वर की संतान कहलाएँ; और हम हैं भी..." (संशोधित कोरियाई संस्करण)। "सोचो कि परमेश्वर पिता ने हम पर कितना महान प्रेम किया है। उस महान प्रेम के द्वारा, हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप उद्धार के इन दो महान संदर्भों को देखें और समझें कि वे कैसे स्वाभाविक रूप से आपस में जुड़े हुए हैं। वे जो "परमेश्वर से जन्मे" हैं—सच्ची "परमेश्वर की संतान" जिनका नया जन्म हुआ है और जो पूरे दिल से इस मसीही सच्चाई को स्वीकार करते हैं कि नासरत का यीशु ही मसीहा और राजाओं का राजा है जिसने उनके सभी बुरे पापों का बोझ उठाया—वही यीशु की दुनिया पर जीत को अपनी जीत मानते हैं, और इस तरह हर दिन शानदार जीत हासिल करते हैं। यही कारण है कि प्रेरित यूहन्ना ने आज के वचन, 1 यूहन्ना 5:18 में घोषणा की, "हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप करता नहीं रहता," एक आध्यात्मिक आश्वासन जिसकी पुष्टि *ह्युंडाई-इन-उई सोंग-ग्योंग* (समकालीन कोरियाई संस्करण) अनुवाद द्वारा स्पष्ट रूप से की गई है: "हम जानते हैं कि परमेश्वर की संतान पाप करती नहीं रहती।" यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 3:9 में अनंत जीवन की इसी महान और वर्तमान-काल की शक्ति पर लगातार ज़ोर दिया है: "जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप नहीं करता, क्योंकि परमेश्वर का बीज उसमें बना रहता है; और वह पाप करते नहीं रह सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से जन्मा है" (रिवाइज़्ड न्यू कोरियन स्टैंडर्ड वर्शन)। "परमेश्वर की संतानें पाप करती नहीं रहतीं। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर का बीज उनके भीतर है। चूँकि वे परमेश्वर से जन्मे हैं, इसलिए वे पाप करते नहीं रह सकते" (*ह्युंडाई-इन-उई सोंग-ग्योंग*)। इन दो आयतों के ज़रिए प्रेरित यूहन्ना संतों के दिलों में सुसमाचार की कौन सी मुख्य बात बिठाना चाहते हैं? यह भरोसा कि मसीह के कीमती लहू से नया जन्म पाने वाली परमेश्वर की संतानें अब शैतान के धोखे में नहीं फँसतीं और न ही हारे हुए व्यक्ति का जीवन जीती हैं—जो आदतवश पाप करता है और अंधेरे, झूठ और नफ़रत की दलदल में पाप करता रहता है। पाप पर इस शानदार जीत के पीछे की मुख्य शक्ति—जिसे यूहन्ना ने इतने ज़ोरदार ढंग से बताया है—किसी भी तरह से इंसानी नैतिक सुधार नहीं है। बल्कि, ऐसा इसलिए है क्योंकि "परमेश्वर का बीज" नए

जन्म पाए बच्चे की आत्मा के "नियम-संदूक" (ark of the covenant) में हमेशा बना रहता है और एक पल के लिए भी दूर नहीं होता (आयत 9)।

तो फिर, परमेश्वर के इस पवित्र "बीज" का असली सार क्या है जो शैतान की रुकावटों को बेअसर कर देता है? 1 पतरस 1:23–25 में दिए गए प्रकाशन के ज़रिए, प्रेरित पतरस इस स्वर्गीय रहस्य को पूरी तरह साफ़ कर देते हैं: "तुम्हारा नया जन्म हुआ है, नाश होने वाले बीज से नहीं, बल्कि कभी न नाश होने वाले बीज से—परमेश्वर के जीवित और हमेशा बने रहने वाले वचन के द्वारा। क्योंकि, 'सभी लोग घास की तरह हैं, और उनकी सारी महिमा खेत के फूलों की तरह है; घास सूख जाती है और फूल झड़ जाते हैं, लेकिन प्रभु का वचन हमेशा बना रहता है।' और यही वह वचन है जिसका प्रचार तुम्हें सुसमाचार के रूप में किया गया था" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। यह उद्धार के इतिहास में कितनी अद्भुत समानता है! "परमेश्वर का बीज"—आत्मा का वह मूल हिस्सा जिसका ज़िक्र यूहन्ना ने किया है (1 यूहन्ना 3:9)—वही "परमेश्वर का अविनाशी बीज" है जिसके बारे में पतरस ने गवाही दी है कि यह शैतान के आरोपों को तुरंत शांत कर देता है; यह "परमेश्वर का जीवित वचन" है जो हमेशा जीवंत रहता है, और जिसका एक भी अक्षर या मात्रा कभी नहीं मिटती, भले ही समय और स्थान ही क्यों न खत्म हो जाएं (1 पतरस 1:23)। संक्षेप में, हमारी रक्षा के लिए हमारे भीतर बोया गया महान बीज कोई सांसारिक दर्शन नहीं, बल्कि केवल "यीशु मसीह के प्रायश्चित का सुसमाचार" है (पद 25)।

रोमियों 1:16 के ज़रिए, प्रेरित पौलुस ने हमारे दिलों पर इस अनंत बीज की अद्भुत शक्ति को प्रकट किया: "...यह सुसमाचार हर उस व्यक्ति के उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति है जो विश्वास करता है।" *ह्युंडई-इनुई सोंगग्योंग* (समकालीन कोरियाई संस्करण) शानदार ढंग से घोषणा करता है, "क्योंकि यह परमेश्वर की शक्ति है जो विश्वास करने वाले सभी लोगों को बचाती है।" इस महान घोषणा के गहरे अर्थों पर अपने पूरे मन-प्राण से विचार करें। 1 यूहन्ना 3:9 में प्रकट पवित्र "परमेश्वर का बीज" कोई साधारण सिद्धांत या केवल कागज़ पर लिखी बात नहीं है। यह त्रिएक परमेश्वर की अलौकिक "उद्धार करने वाली शक्ति" है—और "सुसमाचार की जीवित सच्चाई" है—जो मृत्यु की शक्ति को तोड़ती है और हमारी आत्माओं का पूरी तरह से नया निर्माण करके उन्हें बचाती है। चूँकि परमेश्वर की यह सर्वशक्तिमान उद्धार करने वाली शक्ति और उनके वचन की शक्तिशाली तलवार हमारे भीतर बस गई है—और हमेशा के लिए हमारे भीतर जम गई है, भले ही

हम कभी पाप की ओर तेज़ी से भागते थे (1 यूहन्ना 3:9)—इसलिए हमें उन तीन बड़ी सांसारिक लालसाओं (शरीर की लालसा, आँखों की लालसा, और जीवन का अहंकार) या शैतान द्वारा फैलाई गई धोखे भरी नफ़रत के आगे कभी नहीं झुकना चाहिए; इसके बजाय, हम विजयी होकर उठ सकते हैं और "अंधेरे की गुलामी की उस अवस्था" को पूरी तरह कुचल सकते हैं जहाँ इंसान आदत के तौर पर पाप करता है।

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्रिय सदस्यों, हमें अपने जीवन भर के विश्वास की नींव को इस तीसरी पक्की सच्चाई पर मज़बूती से स्थापित करना चाहिए: "जीत का भरोसा।" आइए हम उस धार्मिक अपरिपक्वता को हमेशा के लिए त्याग दें जिसने हमें निंदा और चिंता की दलदल में धकेल दिया था, और जब भी कमज़ोरी में हमारा चरित्र डगमगाता था, तो हम यह सवाल करने लगते थे कि क्या हम सचमुच बचाए गए हैं। आइए हम चट्टान की तरह मज़बूत भरोसा रखें—अपनी काबिलियत पर नहीं, बल्कि परमेश्वर के विश्वसनीय स्वभाव पर—जिन्होंने हमारी आत्माओं की गहराई में अनंत सुसमाचार का अविनाशी बीज बोया है और जो सिंहासन के दाहिने हाथ पर बैठे यीशु और हमारे भीतर रहने वाले पवित्र आत्मा के ज़रिए चौबीसों घंटे हमारी रक्षा करते हैं। हमारे भीतर जीवित और सक्रिय शक्तिशाली वचन से सशक्त होकर, आइए हम—पाप से मुक्त होकर परमेश्वर के राज्य की संतान के रूप में—अपने साथी विश्वासियों से अपने पूरे जीवन के साथ, कामों और सच्चाई, दोनों के ज़रिए प्रेम करें। इसलिए, मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से पूरी श्रद्धा के साथ प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक प्रार्थना के ज़रिए शैतान के हर हंगामे और धोखे को पूरी तरह से खत्म कर दें, यहीं धरती पर परमेश्वर के राज्य की नागरिकता के भरपूर और अनंत आशीषों का ऐलान करें, और आखिर में पूरी जीत हासिल करें।

इस मोड़ पर, हमारा सामना एक बहुत ही ईमानदार और दिल को छू लेने वाले आध्यात्मिक विरोधाभास से होता है। हालाँकि परमेश्वर के सुसमाचार का कभी न खत्म होने वाला बीज हमारी आत्माओं में बोया गया है, जिससे उद्धार की शक्ति बहती है (1 यूहन्ना 3:9), फिर भी हमारे बेकाबू शरीर क्यों लड़खड़ाते हैं, पाप करते हैं, और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में हर पल गिरते हैं? 1 यूहन्ना 3:2-3 के आधार पर, प्रेरित यूहन्ना—*कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल* की भाषा में—अतीत, वर्तमान और भविष्य को जोड़ने वाले तीन-स्तरीय उद्धार के सिद्धांत के उस रहस्य को पूरी तरह से उजागर करते हैं, जिसका सामना इस भयंकर आध्यात्मिक युद्ध के मैदान में

फँसे संतों को करना पड़ता है: "प्यारे दोस्तों, अब हम परमेश्वर की संतान हैं। हम अभी नहीं जानते कि हम क्या बनेंगे, लेकिन जब यीशु प्रकट होंगे, तो हम उनके जैसे बन जाएँगे और उन्हें वैसा ही देखेंगे जैसे वे वास्तव में हैं। जो कोई भी मसीह में यह उम्मीद रखता है, उसे खुद को पवित्र रखना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यीशु पवित्र हैं" (*कंटेम्पररी कोरियन बाइबिल*)। जब मैंने अपने कमरे के एकांत में दिन-रात इस अंश पर मनन किया, तो मैंने उन ठोस कारणों को तीन पवित्र आध्यात्मिक दायरों में व्यवस्थित किया कि हमें इस धरती पर पाप और शैतान के धोखे के खिलाफ क्यों लड़ना चाहिए, यहाँ तक कि खून बहाने की हद तक भी।

(1) पहला, यह वह शानदार "भविष्य की उम्मीद" (यानी "जो अभी नहीं हुआ है") है जिसे हम प्रभु के बारे में संजोकर रखते हैं।

इस अंश में शामिल ब्रह्मांडीय वादे का मुख्य बिंदु यह घोषणा है कि उस विजयी सुबह जब हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह बादलों पर महिमा के साथ इस दुनिया में लौटेंगे, तो हम आखिरकार पूरी तरह पवित्र प्राणियों में बदल जाएँगे—न केवल एक भी पाप करने से मुक्त, बल्कि पाप के दाग या परछाईं की मौजूदगी से भी पूरी तरह मुक्त (1 यूहन्ना 3:3)। पुनरुत्थान की आखिरी तुरही की आवाज़ पर, हम तुरंत और अचानक कभी न खत्म होने वाले, आध्यात्मिक शरीरों में बदल जाएँगे (1 कुरिन्थियों 15:51)। प्रभु, जो राजाओं के राजा हैं, अभी भी हमारे इन "कमज़ोर शरीरों" को—जो बीमारी और ज़ख्मों से भरे हैं—ऐसे पुनरुत्थान वाले शरीरों में बदलने की तैयारी कर रहे हैं जो पूरी तरह से उनके अपने शानदार "महिमामय शरीर" (जो पुनरुत्थान का पहला फल है) जैसे होंगे (फिलिप्पियों 3:21)। वह महिमामय शरीर स्वर्ग के एक आदर्श नागरिक का चमकदार रूप है—ऐसा रूप जो यीशु की तरह पाप करने में पूरी तरह असमर्थ है और पाप के प्रलोभनों से ज़रा भी नहीं डगमगाता।

(2) दूसरी बात, यह एक मज़बूत "बीती हुई सच्चाई" (यानी "जो हो चुका है") है जो हमें क्रूस पर पहले ही मिल चुकी है। हम और आप, जो यीशु मसीह के प्रायश्चित करने वाले लहू और उनकी ज़बरदस्त पुनरुत्थान शक्ति पर पूरे दिल से भरोसा करते हैं, प्रभु के साथ कब्र में पूरी तरह दफ़ना दिए गए हैं—पवित्र बपतिस्मा के ज़रिए यीशु की मृत्यु के साथ रहस्यमय रूप से जुड़ गए हैं (रोमियों 6:4)। जैसा कि पौलुस ने पूरे जोश के साथ कहा, मसीह के कीमती लहू की बदौलत, हम वे लोग हैं जो "पाप के लिए हमेशा के लिए मर चुके हैं" (पद 2,

कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। यह भविष्य में बदलने वाला कोई वादा नहीं है, बल्कि एक पूरा हो चुका ऐतिहासिक तथ्य है जिसे दो हज़ार साल पहले गोलगोथा की पहाड़ी पर कानूनी और पूरी तरह से पक्का कर दिया गया था। हम मसीह के साथ क्रूस पर पहले ही मर चुके हैं (पद 5)। सुसमाचार की पैनी दृष्टि से इसका अर्थ समझें तो: क्योंकि हमारा बुरा "पुराना स्वभाव"—जो कभी पैसे, वासना और नफ़रत का गुलाम बनकर जीता था—उसे बेरहमी से क्रूस पर कीलों से जड़ा गया और यीशु मसीह के साथ खत्म कर दिया गया, इसलिए हमारा "पाप का शरीर" (जिसे शैतान पाप की सज़ा के आधार पर फंदे के तौर पर इस्तेमाल करता था) पूरी तरह मर चुका है; इस तरह, हम अब पाप की दयनीय गुलामी में नहीं जीते—यह हमारी पहचान में एक गहरा बदलाव है (पद 6)। रोमियों 6:7 के ज़रिए, प्रेरित पौलुस ने पाप से आज़ादी के इस शानदार आदेश को ज़ोरदार ढंग से समझाया: "जो कोई पाप के लिए मर चुका है, वह पाप से आज़ाद हो गया है" (*कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)।

(3) तीसरी बात, "वर्तमान का जीवन" (यानी "अभी") है जिसे हमें आज जीना है; यह अतीत और भविष्य की दो विशाल मज़बूत नींवों के बीच स्थित है। सुसमाचार में, हम पहले से ही—यीशु की मृत्यु में शामिल होकर—ऐसे आज़ाद लोग बन चुके हैं जो पाप के लिए पूरी तरह मर चुके हैं; फिर भी, साथ ही, हम "अभी नहीं" वाले दौर में जी रहे हैं—उस पल का इंतज़ार कर रहे हैं जब यीशु लौटकर हमें आध्यात्मिक शरीरों में बदल देंगे—और इस तरह, नाशवान शारीरिक रूप में रहते हुए एक कठिन और सुनसान रास्ते पर चलने की सीमाओं से बंधे हुए हैं (रोमियों 6:4–5; 1 कुरिन्थियों 15:51; फिलिप्पियों 3:21; 1 यूहन्ना 3:2)। इस मोड़ पर, एक बहुत ही बुनियादी और गंभीर मसीही सवाल उठता है: "तो फिर, 'आज' की सच्चाई के बीच हम प्रभु में कैसे जिएं—मसीह द्वारा अतीत में पूरी की गई संपूर्ण आज़ादी और भविष्य में उनके द्वारा पूरे किए जाने वाले राज्य की शानदार उम्मीद के बीच के अंतर को कैसे पार करें?" हमारे कमज़ोर शरीर की कमज़ोरी का फ़ायदा उठाते हुए, शैतान लगातार हमारे दिलों में निराशा बोता है और वासना के जलते हुए तीर चलाता है, जिससे हम अपने साथी विश्वासियों से नफ़रत करने लगते हैं। इस ज़बरदस्त आध्यात्मिक युद्ध के बीच, जीत के लिए वे कौन से ठोस सिद्धांत और व्यावहारिक दिशा-निर्देश हैं जिन्हें पवित्र आत्मा हमारे हाथों में सौंपता

है, ताकि हम—परमेश्वर की नई संतान के रूप में—दुनिया पर जीत हासिल कर सकें और अंतिम विजय प्राप्त कर सकें?

मुझे पूरा यकीन है कि "पहले से ही" (Already) और "अभी नहीं" (Not Yet)—इन दो बड़े धार्मिक स्तंभों के बीच फँसे हुए कलीसिया के युग में रहते हुए, हम "आज" की सच्चाई में कैसे चलें—यह सवाल सबसे बुनियादी और गंभीर मुद्दा है जो एक विश्वासी के पूरे विश्वास को आकार देता है। आज, कोरियाई कलीसिया में अनगिनत ईसाई उद्धार के इन कालों और अनुग्रह के सिद्धांतों के बारे में बहुत गलतफहमियाँ पाले हुए हैं। उन्होंने उद्धार के भरोसे को—यानी इस विश्वास को कि "मैंने एक बार यीशु पर विश्वास किया और अपना उद्धार पूरी तरह से पक्का कर लिया, इसलिए मैं इसे कभी नहीं खो सकता"—आध्यात्मिक मनमानी करने की ढाल बना लिया है। नतीजतन, आज की कलीसिया की दुखद और कड़वी सच्चाई यह है: लोग बेरहमी से परमेश्वर के जीवित वचन की अवज्ञा करते हैं और अपने अंदर नफ़रत और सांसारिक वासनाएँ पालते हैं, फिर भी वे बिना किसी डर या कांपने के, धोखे भरी हिम्मत के साथ पाप की दलदल में डूबे रहते हैं। अपनी मनमानी और आराम-पसंद ज़िंदगी के खोल को तोड़ने के लिए, प्रेरित पौलुस फिलिप्पियों 2:12 में हमारी आत्माओं की गहराई पर एक ज़ोरदार शाही हुक्म देता है: "इसलिए, मेरे प्यारो, जैसे तुमने हमेशा आज्ञा मानी है—न सिर्फ़ मेरी मौजूदगी में, बल्कि अब मेरी गैर-मौजूदगी में और भी ज़्यादा—वैसे ही डर और कांपते हुए अपने उद्धार को पूरा करो।" तो फिर, "डर और कांपते हुए उद्धार को पूरा करने"—यानी पवित्रता की इस प्रक्रिया—का सही अर्थ क्या है, जब हम अतीत के उद्धार और भविष्य में पूरे होने वाले उद्धार के बीच खड़े हैं? यूहन्ना और पौलुस की पत्रियों में उद्धार के संदर्भ में, "उद्धार" का मतलब "अनंत जीवन" के अलावा और कुछ नहीं है। दूसरे शब्दों में, प्रेरित पौलुस फिलिप्पी के संतों से—और हममें से हर एक से, जो इन आखिरी दिनों की लड़ाई में लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ रहे हैं—यह आग्रह कर रहा था कि "अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में एक साफ़ रास्ते से उस पवित्र, अनंत जीवन को शानदार ढंग से साकार करो जो पहले से ही तुम्हारी आत्माओं में बह रहा है! अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी ऐसे जियो जैसे तुम राजा का जीवन जी रहे हो, और स्वर्ग के राज्य के नागरिक होने की सच्चाई को साबित करो!" स्वर्ग के नागरिक के लिए जीवन का एक ही पक्का तरीका है—आज का दिन उस अनंत जीवन के लायक जीना जो हमें पहले से मिला है और उस नए जन्म वाले स्वर्ग के

लोगों के तौर पर जीना जो हम बन चुके हैं—और यह तरीका कोई दिखावटी या बड़ा-चढ़ाकर बताया गया तरीका नहीं है। यह बस हमारे उद्धारकर्ता यीशु द्वारा पूरी मानवता के लिए घोषित राज्य की महान "महान आज्ञा" का पूरे दिल से पालन करने वाला जीवन है: एक दोहरी आज्ञा—परमेश्वर पिता की अपने पूरे दिल, आत्मा और मन से सबसे बढ़कर आराधना करना (ऊपर की ओर), और अपने साथी विश्वासियों और पड़ोसियों से खुद की तरह ईमानदारी से प्यार करना (बगल में) (मत्ती 22:37–39)। क्योंकि भाईचारे के प्यार की सच्चाई एक पक्के, आज के सबूत के तौर पर काम करती है जो यह साबित करता है कि अनंत जीवन की डोर मेरे अंदर जुड़ी हुई है।

प्यारे संतों, भले ही हमारे भ्रष्ट मानवीय स्वभाव में—जो घावों और स्वार्थ से भरा है—मसीह की देह के किसी एक सदस्य से भी सच्चा प्रेम करने की ज़रा सी भी क्षमता नहीं है, फिर भी हमें कभी निराश या हताश नहीं होना चाहिए। फिलिप्पियों 2:13 के माध्यम से, पौलुस हमें हमारे भीतर काम करने वाली सर्वशक्तिमान परमेश्वर की अद्भुत और प्रेरित करने वाली शक्ति का भरोसा दिलाता है: "क्योंकि परमेश्वर ही है जो अपनी भलाई के लिए तुम्हें इच्छा करने और काम करने की शक्ति देता है।" परमेश्वर पिता कोई कठोर हृदय वाला राजा नहीं है जो हमें केवल उद्धार का दर्जा देकर चुपचाप खड़ा रहता है। आज, पवित्र आत्मा उन विश्वासियों के दिलों में व्यक्तिगत रूप से वास करता है जो यीशु मसीह पर उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करते हैं, और उनके अंतर्मन को अपना मंदिर बनाता है; वह न केवल परमेश्वर की सुखद इच्छा को पूरा करने की पवित्र, स्वर्गीय इच्छा और संकल्प को एक प्रज्वलित लौ में बदलता है, बल्कि प्रेम के नियम का भरपूर पालन करने और हमारे दैनिक जीवन में विजय प्राप्त करने के लिए आवश्यक अलौकिक, स्वर्गीय शक्ति भी प्रदान करता है। सत्य का आत्मा उस एक स्तंभ को—जिसमें नौ अलग-अलग रंग हैं, यानी "आत्मा का फल: प्रेम"—हमारी आत्मा के भीतरी कक्षों में भरपूर रूप से पकाता है, जिसे हमारी रात की प्रार्थनाओं के आँसुओं से सींचा जाता है (गलातियों 5:22–23)। इस प्रकार, वह हमें जबरदस्ती थोपे गए जुए के बोझ से दूर ले जाकर अनुग्रह के स्वेच्छापूर्ण, आध्यात्मिक मार्ग पर ले जाता है; वह हमारे जीवन को शक्तिशाली ढंग से संचालित करता है ताकि हम अंततः परमेश्वर पिता की सर्वोच्च आराधना कर सकें और अपने आस-पास के कमजोर भाई-बहनों से पूरे दिल और आत्मा से प्रेम करने के लिए प्रेरित हों। आइए हम क्रूस के चरणों में उस धोखेबाज धार्मिक पाखंड को पूरी तरह से दूर कर दें, जिसने हमें कभी अपने उद्धार के आश्वासन में निश्चिंत रहते हुए बेझिझक पाप करने के लिए प्रेरित किया था। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से गंभीरता से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री

प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी संत—वचन के बीज और भीतर वास करने वाले पवित्र आत्मा के फल से सशक्त होकर—पूरी दुनिया को साहसपूर्वक दिखाएँ कि वे उस राज्य की संतान हैं जिनके पास सच्चा अनंत जीवन है, और वे हर दिन उस दोहरे आदेश का स्वेच्छा से पालन करते हैं।

हमने "उद्धार की वर्तमान वास्तविकता" के सच्चे अर्थ को गहराई से समझा है—जैसा कि प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पियों 2:12 में घोषित किया है: "डर और कांपते हुए अपने उद्धार [पवित्रीकरण] को पूरा करो।" खास बात यह है कि प्रेरित यूहन्ना—1 यूहन्ना 2:29 के गहरे प्रकाशन के ज़रिए—पौलुस द्वारा बताए गए पवित्रीकरण के सार से पूरी तरह मेल खाते हैं और उसे मज़बूत करते हैं। वे इसे "धार्मिकता का अभ्यास करने" जैसे शक्तिशाली मसीही शब्द के ज़रिए बताते हैं। 1 यूहन्ना 2:29 का पाठ देखें: "यदि तुम जानते हो कि वह धर्मी है, तो तुम यह भी जानते हो कि जो कोई धार्मिकता का अभ्यास करता है, वह उसी से जन्मा है" (NKJV)। "यदि तुम जानते हो कि परमेश्वर धर्मी है, तो यह मत भूलो कि जो लोग धार्मिकता से जीते हैं, वे सब उसकी संतान हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। यूहन्ना की घोषणा—"जो कोई धार्मिकता का अभ्यास करता है, वह उसी से जन्मा है"—का अर्थ बिल्कुल साफ़ है। क्योंकि हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह को क्रूस पर हमारे पापों के लिए सौंपा गया था और हमें धर्मी ठहराने के लिए वे महिमा के साथ जी उठे थे, इसलिए हम—जो पूरे दिल से उनके प्रायश्चित और पुनरुत्थान पर विश्वास करते हैं—पवित्र और धर्मी लोग हैं जिन्हें परमेश्वर की अदालत में पहले ही पूरी तरह से "धर्मी ठहराया" जा चुका है (रोमियों 4:25)। बाइबल में बताया गया पवित्रीकरण का महान सिद्धांत अद्भुत है। स्वर्ग की संतानें, जिन्होंने क्रूस के कीमती लहू के ज़रिए पहले ही धर्मी दर्जा (होना) पा लिया है, उन्हें अब अपने रोज़मर्रा के जीवन में सक्रिय रूप से धार्मिकता का अभ्यास (करना) करते हुए जीना चाहिए—पवित्र आत्मा की अगुवाई में, जो उन्हें वचन के ज़रिए विस्तार से रोशन और निर्देशित करती है। यही उस बात का असली सार है जिस पर यूहन्ना ने इतना ज़ोर दिया था: पाखंड के वस्त्र उतार फेंकना और "प्रभु में" एक पवित्र जीवन जीना।

इस कलीसिया के युग में—जो अतीत में मसीह द्वारा पूरी की गई आज़ादी और भविष्य में उनके द्वारा पूरी की जाने वाली महिमा के बीच स्थित है—"धार्मिकता का अभ्यास करने" के वे दो खास और स्पष्ट सुसमाचार-

संबंधी अर्थ क्या हैं जिन्हें हमें, यानी नए सिरे से जन्मे लोगों को, रोज़ाना अपने जीवन की वेदी पर अर्पित करना चाहिए? हमें "नियम-संदूक" (Ark of the Covenant)—मत्ती 6:33 में प्रभु की सर्वोच्च आज्ञा—को मज़बूती से थामे रखना चाहिए और सबसे पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करनी चाहिए। हमें अपनी आत्माओं के जुड़ाव को मज़बूती से धर्मी यीशु मसीह (1 यूहन्ना 2:1) से जोड़ना चाहिए, पृथ्वी पर उनके पवित्र जीवन के नक्शेकदम पर चलना चाहिए, और अपने पूरे अस्तित्व को उनकी महान आज्ञा (वचन 6) के अधीन कर देना चाहिए। उस सर्वोच्च नियम पर ध्यान दें—जिसे प्रभु ने अपने लहू से हमारी आत्माओं में लिखा है—जिसे प्रेम की दोहरी आज्ञा के रूप में जाना जाता है: "यीशु ने उससे कहा, 'तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन, अपनी सारी आत्मा और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रखना। यह पहली और बड़ी आज्ञा है। और दूसरी इसके समान है: 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।' इन्हीं दो आज्ञाओं पर सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की बातें टिकी हैं'" (मत्ती 22:37–40)। (1) सबसे पहले, धार्मिकता का पालन करने का अर्थ है—यीशु की दोहरी आज्ञाओं में से पहली और सबसे बड़ी आज्ञा के अनुसार—प्रभु परमेश्वर की आराधना करना और उनसे अपने पूरे मन, आत्मा और बुद्धि से प्रेम करना।

यदि हम 1 यूहन्ना की गहरी दृष्टि से पिता परमेश्वर से पूरे मन से प्रेम करने के व्यावहारिक प्रमाण की जाँच करें, तो यह उस जीवन से सिद्ध होता है जो 1 यूहन्ना 2:15–17 में राजा की दृढ़ आज्ञा का स्वेच्छा से पालन करता है: "संसार से या संसार की किसी भी चीज़ से प्रेम न करो। यदि कोई संसार से प्रेम करता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि संसार की हर चीज़—शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा, और जीवन का घमंड—पिता से नहीं, बल्कि संसार से आती है। संसार और उसकी इच्छाएँ मिट जाती हैं, लेकिन जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है, वह हमेशा जीवित रहता है।" यहाँ, परमेश्वर की सच्ची इच्छा जिसे एक विश्वासी को खोजना चाहिए, स्पष्ट है: यह इस भ्रष्ट संसार पर—जो प्रभु के लौटने पर धुएँ की तरह एक पल में गायब हो जाएगा—या शैतान के तीन-गुना सांसारिक जाल—"शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा, और जीवन का घमंड"—की इच्छाओं पर अपने कीमती जीवन का एक मिलीमीटर भी बर्बाद न करने या नज़रअंदाज़ न करने का दृढ़ संकल्प है।

भविष्य के लिए एक शानदार स्वर्गीय आशा को संजोना और रोज़ाना—अक्सर आँसुओं के साथ—खुद को पवित्र रखने का प्रयास करना, ठीक वैसे ही जैसे यीशु पवित्र हैं (1 यूहन्ना 3:3), किसी भी तरह से कोई काल्पनिक धार्मिक कार्य नहीं है। बल्कि, मेरे भीतर जीवित और काम करने वाले परमेश्वर के वचन के बीज से सशक्त होकर, यह धार्मिकता का एक सक्रिय अभ्यास है: सांसारिक मूल्यों और इच्छाओं को—जिनका अंत निश्चित है—साहसपूर्वक कूड़े में फेंक देना, और स्वेच्छा से केवल परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए जीना, जो हमेशा बनी रहती है और उन्हें प्रसन्न करती है। (2) दूसरा, धार्मिकता का अभ्यास करने का अर्थ है—यीशु की दो महान आज्ञाओं में से दूसरी के अनुसार—मसीही परिवार के सदस्यों और अपने पड़ोसियों से वैसे ही गहरा प्रेम करना जैसे हम स्वयं से करते हैं, और ऐसा कर्म और सच्चाई दोनों के द्वारा करना।

यदि हम इस पवित्र, आपसी प्रेम के पूरा होने को 1 यूहन्ना के संदर्भ में समझें, तो यह एक ऐसे जीवन का वर्णन करता है जो पूरी तरह से उस अंश के प्रति अपना हृदय समर्पित कर देता है जिस पर हमने पहले गहराई से मनन किया था: 1 यूहन्ना 2:3–11। प्रेम पर आधारित इस शानदार अंश का मुख्य संदेश, जैसा कि यूहन्ना ने प्रस्तुत किया है, बहुत स्पष्ट और सटीक है। यह राजा का गंभीर आदेश है कि हम अपने भीतर छिपी ईर्ष्या, जलन और नाराजगी की जहरीली खरपतवार को पूरी तरह से—क्रूस के चरणों में—दफन कर दें, और बिना एक पल के लिए भी नफरत रखे अपने भाइयों से प्रेम करें। जब कोई विश्वासी, अपनी ताकत के बजाय अपने भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा के शक्तिशाली पवित्र करने वाले कार्य पर भरोसा करते हुए, यीशु की इस आज्ञा का पालन करता है और अपने सामने मौजूद भाई-बहनों से पूरे दिल और जीवन से प्रेम करने लगता है, तो सुसमाचार का एक अत्यंत हृदयस्पर्शी और गहरा रूप हमारी आत्माओं में दिखाई देने लगता है।

प्रेरित यूहन्ना की शानदार घोषणा पर विचार करें: "...परंतु जो कोई उसके वचन का पालन करता है, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हो जाता है" (1 यूहन्ना 2:5)। जिस विश्वासी के हृदय में केवल दिखावटी बातों का पाखंडी मुखौटा साहसपूर्वक हटा दिया जाता है और जो कर्म और सच्चाई से अपने साथी सदस्यों से प्रेम करता है, उसमें परमेश्वर का पूर्ण *अगापे* (निस्वार्थ) प्रेम अंततः पूरी तरह से और शानदार ढंग से फलता-

फूलता है। इस प्रकार, जैसा कि *ह्युंडाई-इनुई सोंगग्योंग* (समकालीन कोरियाई बाइबिल) अनुवाद में सशक्त रूप से पुष्टि की गई है, क्योंकि हम उस "तेज प्रकाश" में रहते हैं जहाँ अंधकार की बाधा टूट चुकी है, हम अपनी वर्तमान वास्तविकता में पूरे अधिकार के साथ उस परम स्वर्गीय विश्राम और अनंत जीवन की शांति का आनंद लेते हैं; हम उन आध्यात्मिक जालों से मुक्त होते हैं जो हमें गिरा सकते हैं या उन ठोकर की बातों से जो हमें रोक सकती हैं (पद 10)। विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, आइए हम अतीत के उस घिनौने धार्मिक पाखंड के लिए पूरी तरह से पश्चाताप करें—जब हम अपनी मुक्ति को लेकर लापरवाह हो गए थे, परमेश्वर के वचन की अवज्ञा करते हुए बेधड़क पाप करते थे। हम वे लोग हैं जो पहले ही आज़ाद हो चुके हैं और पाप के प्रति पूरी तरह मर चुके हैं; हम पवित्र विजेता हैं जिन्हें शानदार स्वर्गीय शरीर मिलने वाले हैं। आइए हम अपने विश्वास को अतीत और भविष्य को जोड़ने वाली इस महान नींव पर मज़बूती से टिकाएं; आइए हम आज की सच्चाई में परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करें, और केवल वचन की इच्छा के अनुसार सही काम करें। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से पूरी गंभीरता से प्रार्थना करता हूँ कि आप सभी विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के पवित्र सैनिक बनें—वचन की तलवार से दुनिया की तीन तरह की लालसाओं को कुचल दें और अपने साथी विश्वासियों से पूरे दिल और जान से प्रेम करें, और इस तरह पूरी दुनिया को शानदार ढंग से दिखाएं कि आप सचमुच स्वर्ग की संतान हैं और आपके पास अनंत जीवन है।

प्यारे संतों, सुसमाचार में हमारी पहचान समय और स्थान से परे, शानदार ढंग से पक्की हो गई है। हम इस धरती के नहीं हैं; बल्कि हम "परमेश्वर से जन्मे" हैं—परमेश्वर की शानदार संतानें, जिन्हें पवित्र आत्मा के महान कार्य द्वारा पाप की कब्र से उठाया गया है। इसलिए, हमें अपनी आत्माओं को आध्यात्मिक सुस्ती या अलग-अलग धर्मों/विचारों को मिलाने की सांसारिक प्रवृत्ति का शिकार नहीं होने देना चाहिए; इसके बजाय, पाप से बचने और अपने भीतर की नफरत को दूर करने के लिए, हमें अपने दुश्मन—शैतान—का डटकर सामना करना चाहिए और उससे लड़ना चाहिए, यहाँ तक कि खून बहाने की हद तक भी। इस महान आध्यात्मिक युद्ध में हमें जो तलवार चलानी है, वह केवल हमारा अपना संकल्प नहीं है, बल्कि "जीत का पक्का भरोसा" है—यह निश्चितता कि परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह ने दो हज़ार साल पहले गोलगोथा के क्रूस पर पाप की कीमत चुकाकर और मौत की ताकत व शैतान के सिर को पूरी तरह कुचलकर जीत हासिल कर ली है। हम हार के डर से कांपते हुए हारे हुए सैनिक नहीं हैं। उस पहले से हासिल शानदार जीत का गीत अपने होंठों

पर और सच्चे सैनिकों की भावना अपने भीतर लिए, हमें हर दिन विश्वास का एक लड़ाकू जीवन जीना चाहिए। खासकर, मसीह द्वारा हासिल की गई पिछली मुक्ति (धर्मी ठहराए जाने) को अपनी सीढ़ी बनाकर, हमें विश्वास की नज़रों से उस शानदार "भविष्य की आशा" (महिमा पाने) को स्पष्ट रूप से देखना चाहिए जो हमारे प्रभु यीशु की शानदार वापसी की सुबह पूरी होगी (1 यूहन्ना 3:2–3)। जब वह दिन आएगा, तो हम अपने नाशवान, भौतिक शरीर को उतार फेंकेंगे और पलक झपकते ही बदल जाएंगे; यीशु की तरह, हम एक उत्तम, बेदाग और शानदार स्वर्गीय शरीर धारण करेंगे—जो पाप करने में असमर्थ होगा और पाप के प्रलोभन की पहुँच से भी दूर होगा। भविष्य की यह गहरी आशा हमारी आत्माओं के लिए सबसे शक्तिशाली ढाल का काम करती है, जब हम आज के बंजर रेगिस्तान से गुज़रते हैं।

इस भीषण युद्ध के बीच, पवित्र आत्मा हमें शैतान के खिलाफ लड़ने का आदेश देता है, और 1 यूहन्ना 5:18 के दूसरे भाग में दिए गए तीखे, अटूट वादे को हमारे दिलों में गहराई से उतारता है: "...जो परमेश्वर से जन्मा है, वह उसकी रक्षा करता है, और दुष्ट उसे छूता तक नहीं है।" जिस "दुष्ट" के बारे में यूहन्ना चेतावनी देते हैं, वह उस दुश्मन—शैतान—की ओर इशारा करता है जो हर तरह के पाखंड और धोखे से कलीसिया को हिला देता है और भाइयों के बीच नफरत पैदा करता है। जैसा कि टीकाकार जॉन मैकआर्थर ने ज़ोरदार ढंग से समझाया है, प्रेरित यूहन्ना सुरक्षा का एक बहुत बड़ा ऐलान करते हैं: यह दुष्ट, यानी शैतान, स्वर्ग के सच्चे नागरिकों—यानी परमेश्वर से नए सिरे से जन्मे लोगों—को "छूने की हिम्मत भी नहीं कर सकता"। इसका मतलब है कि वह किसी भी बुरी चाल या रुकावट से संत की आत्मा को नुकसान नहीं पहुँचा सकता या उसे नष्ट नहीं कर सकता। दुश्मन शैतान के हम पर गुर्राने के बावजूद हम पर उंगली तक न रख पाने का पक्का सुसमाचार वाला कारण बहुत शानदार है: ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह—जो पवित्र आत्मा से पूरी तरह से जन्मे थे (मत्ती 1:18, 20), जो इंसानी इतिहास में सही इंसानी रूप में आए (1 यूहन्ना 1:2), और जो सच्चे परमेश्वर और "परमेश्वर के पुत्र" हैं (5:5)—अपने कीमती लहू से नए सिरे से जन्मे अपने बच्चों की एक ऐसी सुरक्षा से रक्षा कर रहे हैं जिसे कोई भेद नहीं सकता (पद 18)।

सर्वशक्तिमान की सुरक्षा का वह शानदार काम, जिसके बारे में पुराने नियम के भजनकार ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से गाया था, आज यीशु मसीह के ज़रिए आपके और मेरे जीवन में एक पक्की सच्चाई के रूप में बह रहा है। आइए हम भजन संहिता 121:3–8 के शानदार वादों को अपनी आत्मा में बसा लें: "वह तुम्हारे

पैर को फिसलने नहीं देगा—जो तुम्हारी रखवाली करता है, वह ऊँघेगा नहीं; सचमुच, जो इस्राएल की रखवाली करता है, वह न तो ऊँघेगा और न ही सोएगा। प्रभु तुम्हारी रखवाली करता है—प्रभु तुम्हारे दाहिने हाथ की ओर तुम्हारी छाया है; दिन में सूरज तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाएगा, और न ही रात में चाँद। प्रभु तुम्हें हर नुकसान से बचाएगा—वह तुम्हारे जीवन की रखवाली करेगा; प्रभु तुम्हारे आने-जाने की रखवाली करेगा, अभी और हमेशा के लिए।" इस महान यात्रा के लिए कितना रोमांचक भरोसा है! यहोवा परमेश्वर, जिसने हमें अनंत जीवन के सिपाही के रूप में बुलाया है, कभी थकता नहीं है, और न ही वह एक पल के लिए भी ऊँघता या सोता है। यहाँ तक कि जब दुनिया और शैतान हमें गिराने की कोशिश में उथल-पुथल, अफवाहों और हिंसा से हम पर हमला करते हैं, तब प्रभु हमारे ठीक बगल में—हमारे दाहिने हाथ की ओर—खड़े होकर अपने सर्वशक्तिमान पंखों की छाया देते हैं। इस तरह, वह हमें हर मुसीबत से बचाता है और यह पक्का करता है कि न तो तेज़ धूप जैसा कठोर उत्पीड़न और न ही चाँद जैसी दुनियावी इच्छाओं के छिपे हुए लालच हमारी आत्मा को चोट पहुँचा सकें या नुकसान पहुँचा सकें। हमारे सेनापति, यीशु मसीह, हमारे आने-जाने पर पूरी तरह नज़र रखते हैं—अभी से लेकर हमेशा तक।

इसलिए, उद्धार की मज़बूत चट्टान पर खड़े होकर, हमें अपनी कमज़ोरियों या मुश्किल हालात की वजह से पीछे हटने या डरने की ज़रूरत नहीं है। आइए हम उस प्रभु के भरोसेमंद स्वभाव पर पूरा भरोसा करें जो हमारी रक्षा करता है, और प्रार्थना की शक्ति से अपने अंदर की हर चिंता को पूरी तरह खत्म कर दें। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक—अपने अंदर बसे वचन की तलवार उठाकर और प्रभु के लहू से लिखे दोहरे हुक्म के अनुसार, सबसे ऊपर परमेश्वर की आराधना करें और अपने साथी सदस्यों से खुद की तरह सच्चा प्यार करें—आखिरकार शैतान का सिर कुचल दें और रोज़मर्रा की ज़िंदगी के बीच स्वर्गीय नागरिकता के अनंत आशीर्वादों का शानदार ढंग से प्रचार करते हुए आगे बढ़ें।

चौथा स्तंभ जिसे एक विश्वासी को अपनी आत्मा के केंद्र में मज़बूती से थामे रखना चाहिए, वह है "परमेश्वर का अपना होने का पक्का यकीन"—यह भरोसा कि कोई व्यक्ति शैतान के राज वाले गिरे हुए, दुनियावी खेमे का कैदी नहीं है, बल्कि हमेशा के लिए सृष्टिकर्ता परमेश्वर की सर्वशक्तिमान गोद में सुरक्षित है।

चौथा पक्का यकीन जिसे प्रेरित यूहन्ना हमारी आत्माओं के लिए एक प्रहरी-मीनार के तौर पर स्थापित करते हैं, जब वे 1 यूहन्ना का शानदार समापन करते हैं, वह है आध्यात्मिक निष्ठाओं का साफ़-साफ़ बंटवारा—एक ऐसा दायरा जहाँ कोई "धुंधला क्षेत्र" (gray area) नहीं होता। 1 यूहन्ना 5:19 में कही गई ज़बरदस्त बात पर ध्यान दें: "हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के हैं, और पूरी दुनिया उस दुष्ट के कब्ज़े में है" (NKJV)। "हम परमेश्वर के हैं, और पूरी दुनिया शैतान के राज में है" (Contemporary Korean Version)। प्यारे संतों, प्रेरित यूहन्ना इस ब्रह्मांड और इतिहास में मौजूद इंसानियत के लिए एक निर्णायक पैमाना (plumb line) रखते हैं। जैसा कि टीकाकार जॉन मैकआर्थर बारीकी से देखते हैं, धन, रुतबा, नस्ल या वंश जैसे बाहरी फ़र्कों के बावजूद, इस धरती पर केवल दो तरह की आध्यात्मिक इंसानियत मौजूद है: पहली, परमेश्वर की पवित्र संतानें; और दूसरा, शैतान की घृणित संतान। 1 यूहन्ना 3:10 इन दोनों समूहों के बीच बिना किसी समझौते वाले अंतर को स्पष्ट रूप से बताता है: "इससे परमेश्वर की संतान और शैतान की संतान की पहचान होती है: जो कोई धार्मिकता का पालन नहीं करता या अपने भाई से प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर का नहीं है" (संशोधित नया कोरियाई संस्करण)। "इस तरह परमेश्वर की संतान और शैतान की संतान में स्पष्ट अंतर किया जाता है। जो कोई सही काम नहीं करता या अपने भाई से प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर की संतान नहीं है" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। प्रेरित यूहन्ना कहते हैं कि कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे के असली स्वभाव को स्पष्ट रूप से पहचान सकता है—चाहे वे बाहर से कितने भी पवित्र क्यों न दिखते हों या उन्होंने कोई भी धार्मिक उपाधि क्यों न धारण कर रखी हो। किसी की आध्यात्मिक पहचान को परखने का पैमाना बिल्कुल स्पष्ट है। यह एक पक्का ऐलान है कि जो कोई भी अपने रोज़मर्रा के जीवन में "धार्मिकता का पालन" नहीं करता, वह "परमेश्वर की संतान नहीं है, बल्कि शैतान का है" (पद 10)। इस संदर्भ में, जो व्यक्ति "धार्मिकता का पालन नहीं करता"—यूहन्ना के धार्मिक नज़रिए से—वह व्यक्ति है जो "मसीही समुदाय के अन्य सदस्यों और अपने आस-पास के भाइयों-बहनों से प्रेम करने में विफल रहता है।" दूसरे शब्दों में, जो लोग शैतान के अधिकार में हैं, वे धार्मिकता का पालन नहीं कर सकते क्योंकि उनके "जीवन की उपासना" खत्म हो चुकी है; नतीजतन, वे अनिवार्य रूप से अंधेरे में डूबे रहते हैं, ईर्ष्या और नफ़रत करते हैं, और अपने भाइयों से प्रेम करने में विफल रहते हैं।

हालाँकि, "परमेश्वर की संतान"—जिन्होंने क्रूस के कीमती लहू के माध्यम से पवित्र आत्मा के जीवन-बदलने वाले प्रेम का अनुभव किया है—एक अलग स्तर पर हैं। धार्मिक पहचान (अस्तित्व) पा लेने के बाद, वे ऐसे लोग हैं जो स्वाभाविक रूप से अपने रोज़मर्रा के जीवन में "धार्मिकता का पालन" करते हैं; स्वाभाविक रूप से, वे ऐसे जीवन का प्रमाण देते हैं जो कर्म और सच्चाई दोनों के माध्यम से "अपने भाइयों से सच्चे दिल से प्रेम करने" से चिह्नित होता है (पद 7, 10)। 1 यूहन्ना 3:7 में दिए गए शानदार वादे पर विचार करें: "हे बच्चों, कोई तुम्हें धोखा न दे। जो धार्मिकता का पालन करता है, वह धर्मी है, ठीक वैसे ही जैसे वह धर्मी है" (NKJV)। प्रेरित यूहन्ना मसीह-विरोधी धोखे की बाढ़ के बीच संतों की आँखें खोलते हैं। "धार्मिकता का पालन करने वाला" होना किसी के अपने प्रशंसनीय मानवीय चरित्र की बात नहीं है; बल्कि, यह इस बात का भरोसा है कि कोई व्यक्ति "सचमुच धर्मी है, ठीक वैसे ही जैसे वे धर्मी हैं"—यहाँ हमारे उद्धारकर्ता, यीशु मसीह की उत्तम और पवित्र धार्मिकता की बात हो रही है। 1 यूहन्ना 2:1 के ज़रिए, हमने अपने दिलों में "धर्मी यीशु मसीह" को—जो हमारे उत्तम वकील हैं—अपना लिया है। इसके अलावा, 2:6 में हमने पवित्रता बनाए रखने की ज़िम्मेदारी के बारे में सीखा: जो कोई भी प्रभु के पवित्र दायरे में रहने का दावा करता है—और जीवन की डोर से उनसे जुड़ा हुआ है—उसे "ठीक वैसे ही चलना चाहिए जैसे वे चले थे," यानी यीशु मसीह के उन पवित्र कदमों पर चलना चाहिए जो उन्होंने इस धरती पर उठाए थे। दूसरे शब्दों में, जो लोग धार्मिकता का पालन करते हैं (3:7)—वे अपनी ताकत पर भरोसा करने के बजाय (2:1) हमारे अगुआ यीशु मसीह की धार्मिकता का सहारा लेते हैं—और सक्रिय रूप से धार्मिकता का पालन करते हुए आगे बढ़ते हैं, उसी संकरे रास्ते पर चलते हैं जिस पर प्रभु चले थे (वचन 6)।

यूहन्ना की शानदार पत्रियों में ईसा मसीह से जुड़े संदर्भों पर विचार करें, उन्हें अपने पूरे अस्तित्व में उतारें और आज के पाठ (1 यूहन्ना 5:19) में दिए गए ब्रह्मांडीय संदेश से स्वाभाविक रूप से जोड़ें। सुसमाचार का अंतिम निष्कर्ष शानदार और सटीक है। जो संत उद्धार का अटूट भरोसा रखते हैं—यह जानते हुए कि वे शैतान के चालाक शासन से पूरी तरह मुक्त हो चुके हैं और पूरी तरह से केवल परमेश्वर के हैं—वे धार्मिकता का दिखावा करने के पाखंड को साहसपूर्वक त्याग देते हैं। परमेश्वर के वचन के शक्तिशाली बीज और अपने भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा की इच्छाओं से सशक्त होकर, वे ऐसे सेवक हैं जो—ठीक वैसे ही जैसे

यीशु मसीह ने किया और उदाहरण स्थापित किया—अपने दैनिक जीवन में क्रूस के दुख से पीछे हटे बिना, परमेश्वर की प्रसन्न करने वाली इच्छा के अनुसार धार्मिकता का जीवन जीते हैं। आइए हम शैतान की उस चाल से अपनी आत्मा को न चुराने दें, जिसमें वह सांसारिक मेल-मिलाप और आपसी सम्मान की पाखंडी धारणा की आड़ में सच और झूठ को मिला देता है। यदि हम परमेश्वर के हैं, तो हमें उस दोहरे आदेश का पालन करना चाहिए जो उसे प्रसन्न करता है: सबसे ऊपर परमेश्वर की आराधना करना और अपने साथी विश्वासियों से खुद की तरह प्रेम करना। आइए हम अपने भीतर से नफरत की चिंगारी को पूरी तरह मिटा दें और केवल धार्मिकता का अभ्यास करें। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से पूरी गंभीरता से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक—प्रार्थना की शक्ति के माध्यम से—शैतान के हर हंगामे और धोखे को पूरी तरह से चकनाचूर कर दें, पूरी दुनिया को शानदार ढंग से दिखाएँ कि वे परमेश्वर के राज्य की सच्ची संतान हैं, और अनंत जीवन के आशीष का पूरा आनंद लें। 1 यूहन्ना 5:19 के पहले भाग में, प्रेरित यूहन्ना स्पष्ट रूप से उस आध्यात्मिक नागरिकता के स्रोत की घोषणा करता है जिसे विश्वासियों को अंधकार की दुनिया के बीच मजबूती से थामे रखना चाहिए: "हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के हैं..."। तो फिर, प्रेरित द्वारा ब्रह्मांड और इतिहास के सामने घोषित इस स्वीकारोक्ति—"हम परमेश्वर के हैं"—का वास्तविक और गहरा अर्थ क्या है? हमें पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखे गए मूल ग्रीक पाठ के संदर्भ की जाँच करके इस शानदार जुड़ाव के रहस्य को गहराई से समझना चाहिए। ग्रीक भाषा का शाब्दिक अनुवाद इसका अर्थ बताता है: "हम परमेश्वर की ओर से हैं" (*ek tou Theou esmen*)। फिर भी, यहाँ एक वास्तव में दिलचस्प और जटिल धार्मिक (धर्म-संबंधी) सामंजस्य छिपा हुआ है। "परमेश्वर से जन्मा" (*ek tou Theou gegennetai*) वाली बात, जिस पर हमने पहले 1 यूहन्ना 5:1 और 4 में विचार किया था, उसका बिल्कुल वही शाब्दिक अर्थ है: "वह परमेश्वर से जन्मा है।" इन दो वाक्यांशों के बीच के ईश्वरीय संबंध से सुसमाचार का सार बहुत स्पष्ट हो जाता है। आज के पाठ (पद 19) में कही गई बात—"हम परमेश्वर के हैं"—और पद 1 और 4 में कही गई बड़ी बातें—"परमेश्वर से जन्मा"—पूरी तरह से एक ही मुख्य बिंदु पर मिलती हैं: यह सच्चाई कि हमारी मूल पहचान और हमारी नागरिकता केवल परमेश्वर से ही आती है। दूसरे शब्दों में, यह पक्का होना कि मैं परमेश्वर का हूँ, मेरी अपनी कोशिशों या गुणों का इनाम नहीं है; बल्कि, यह उद्धार की एक अटल सच्चाई है जो केवल इसलिए मिली है क्योंकि मैं परमेश्वर की संतान बन गया हूँ—सचमुच उसी से नया जन्म पाया है।

इस तरह परमेश्वर से महिमा के साथ जन्म लेने के बाद, हम—आप और मैं—वे लोग हैं जो नासरत के यीशु के "मसीह" होने (पद 1) पर विश्वास करते हैं, और उन्हें ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति मानते हैं जिन्होंने हमारे सारे पाप मिटा दिए हैं, जैसा कि प्रेरित यूहन्ना ने अपनी जान जोखिम में डालकर गवाही दी थी (पद 9)। हम ऐसे लोग हैं जो पूरे दिल से भरोसा करते हैं और मानते हैं कि वह सच्चे "परमेश्वर के पुत्र" हैं, जो पिता के बिल्कुल बराबर हैं (पद 5)। इसके अलावा, हम सच्चे विश्वासी हैं जिन्होंने परमेश्वर की उस महान "गवाही" के सामने पूरी श्रद्धा से अपना सिर झुकाया है—जिसकी पुष्टि इतिहास में आत्मा, पानी और लहू ने की है (पद 9-10)। ऐसे नए जन्म पाए बच्चों के दिलों में, जो परमेश्वर के पुत्र का अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वागत करते हैं, प्रभु ने एक शानदार, स्वर्गीय "अनंत जीवन" रखा है—एक ऐसी गारंटी जिसे दुनिया न तो छीन सकती है और न ही हिला सकती है (पद 11-12)।

जब प्रेरित यूहन्ना आज के पाठ की शुरुआत करते हैं, तो वे केवल यह तथ्य नहीं बताते कि हम परमेश्वर के हैं; वे एक शक्तिशाली और भरोसे भरे वाक्यांश से शुरुआत करते हैं, "और हम जानते हैं।" यूहन्ना ने जान-बूझकर वाक्य की शुरुआत में "और" (And) शब्द क्यों जोड़ा, इसके पीछे एक स्पष्ट धार्मिक कारण है: ऐसा इसलिए है क्योंकि ठीक पहले वाले वचन (वचन 18) में, उन्होंने पहले ही एक विजयी सच्चाई बताई थी—"हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप करता नहीं रहता।" इसी विश्वास को आगे बढ़ाते हुए, यूहन्ना वचन 19 में स्पष्ट रूप से कहते हैं "हम जानते हैं" और अगले वचन, यानी वचन 20 में भी "हम जानते हैं" वाक्यांश को दोहराकर इस निश्चितता को और पक्का करते हैं। प्रेरित यूहन्ना द्वारा दिखाई गई निश्चितता के लहजे पर ध्यान दें। अकेले 1 यूहन्ना अध्याय 5 में, वे बार-बार—लगभग लगातार—जोर देकर कहते हैं, "हम जानते हैं।" वचन 2 में, वे घोषणा करते हैं, "हम जानते हैं कि जब हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो हम परमेश्वर की संतानों से भी प्रेम करते हैं"; और वचन 15 तक आते-आते, वे एक ही वचन में दो बार इस निश्चितता को बताते हैं: "हम जानते हैं कि हम जो कुछ भी मांगते हैं, वह हमारी सुनता है, और हम जानते हैं कि हमने उससे जो मांगा है, वह हमें मिल गया है।" तो फिर, 1 यूहन्ना के इस छोटे से आखिरी अध्याय में प्रेरित यूहन्ना का यह साहसिक ऐलान—"हम जानते हैं"—कम से कम छह बार करने का असली अर्थ क्या है?

जैसा कि बाइबिल के विद्वानों (जैसे *The KJV Bible Commentary*) ने बहुत अच्छे से समझाया है, यूहन्ना यहाँ जिस ज्ञान की बात कर रहे हैं, वह किसी भी तरह से बदलते हुए अनुमान या सतही जानकारी की बात नहीं है। इसका मतलब है, सबसे पहले, "पूरी तरह से जानना—बिना किसी शक के—कि मेरे अंदर अनंत जीवन बह रहा है।" साथ ही, इसका मतलब है "आज मेरे जीवन की सच्चाई के बीच, त्रिएक परमेश्वर द्वारा दिए गए अनंत सत्य के खजाने का लगातार आनंद लेना और उसके लिए हमेशा आभारी रहना।" जो विश्वासी उद्धार का सच्चा भरोसा रखता है, वह सच्चाई को केवल दिमागी ज्ञान तक सीमित नहीं रखता; बल्कि, वे अपने रोज़मर्रा के जीवन में उस सच्चाई की शक्ति का आध्यात्मिक आनंद लेते हुए जीते हैं।

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, यह उचित है कि हम अपने जीवन भर के विश्वास की नींव इस चौथे पक्के भरोसे पर रखें: 'अपना होने का भरोसा' (assurance of belonging)। आइए हम उस आध्यात्मिक अपरिपक्वता (नासमझी) के लिए पूरी तरह से पश्चाताप करें जिसके कारण हमें अपने उद्धार पर शक हुआ और दुनिया के चलन और शैतान के शोर-शराबे को देखकर चिंता हुई। आइए हम अपनी काबिलियत पर नहीं, बल्कि परमेश्वर के भरोसेमंद स्वभाव पर अटूट विश्वास रखें—जिन्होंने हमारी आत्माओं में गहराई से स्वर्ग की संतान होने की पहचान बसाई है, जो परमेश्वर से जन्मे हैं (1 यूहन्ना 5:1, 4) और जो वचन के बीज और पवित्र आत्मा की मध्यस्थता के ज़रिए हमारी सुरक्षा करते हैं (रोमियों 8:26–27; 1 यूहन्ना 3:9)। यह पक्का जानकर कि हम स्वर्ग के सच्चे लोग हैं जो परमेश्वर की ओर से आए हैं, आइए हम अपने साथी विश्वासियों से पूरे दिल, काम और सच्चाई से प्रेम करके रोज़मर्रा की ज़िंदगी में इस अनंत जीवन की महिमा का आनंद लें और उसकी प्रशंसा करें। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आप विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के पवित्र सैनिक बनें—प्रार्थना के ज़रिए शैतान के हर धोखे को तोड़ें, और पृथ्वी पर स्वर्ग की नागरिकता के अनंत आशीर्वादों का शानदार ढंग से प्रचार करते हुए आगे बढ़ें।

हमने 1 यूहन्ना अध्याय 5 में पाए जाने वाले दिव्य सिद्धांत पर विचार किया है, जहाँ प्रेरित यूहन्ना ज़ोर देकर कम से कम छह बार कहते हैं "हम जानते हैं"; वे सिखाते हैं कि हमारे पास पक्का ज्ञान होना चाहिए—यह निश्चित रूप से जानना—कि अनंत जीवन हमारे भीतर बह रहा है, और हमें लगातार और खुशी से उस सच्चाई का आनंद लेना चाहिए। फिर भी, शानदार भरोसे की यह बात केवल अध्याय 5 में पत्र के अंत में अचानक

नहीं आई है। अध्याय 1 से 4 तक भी, यूहन्ना ने "हम जानते हैं" की मज़बूत सच्चाई का कम से कम दस बार साहसपूर्वक प्रचार किया, और संतों के दिलों में संजोने के लिए निश्चितता के सबूत सावधानीपूर्वक तैयार किए। आइए हम आदर के साथ इस शानदार "दस-गुना भरोसे" को देखें जिसे प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना के पहले भाग में हमारी आत्माओं की वेदी पर मज़बूती से स्थापित किया है।

(1) उनकी आज्ञाओं का पालन करके "परमेश्वर को जानने" का भरोसा।

हम यह तय कर सकते हैं कि क्या हम सचमुच पिता को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं—सिर्फ़ होंठों के धार्मिक दिखावे से परे—यह केवल राजा की आज्ञाओं के पवित्र पालन से ही हो सकता है। "और इस से हम को निश्चय होता है, कि हम उसे जान गए हैं, यदि हम उस की आज्ञाओं को मानते हैं" (1 यूहन्ना 2:3)।

(2) उनके वचन की रक्षा करके "मसीह के साथ एकता और उनमें बने रहने" का भरोसा। जो व्यक्ति प्रभु के शाश्वत सत्य को थामे रखता है—भले ही यह उसकी अपनी स्वाभाविक इच्छा के विरुद्ध हो—उसके हृदय में परमेश्वर का *अगापे* (निस्वार्थ) प्रेम पूर्णता की अवस्था तक पहुँच जाता है; वहाँ, उसे उस रहस्यमय मिलन की गूँज सुनाई देती है, जो प्रभु के साथ एक मज़बूत बंधन की पुष्टि करती है। "पर जो कोई उसके वचन का पालन करता है, सचमुच उसमें परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हो जाता है। इसी से हम जानते हैं कि हम उसमें हैं" (पद 5)।

(3) मसीह-विरोधी (Antichrist) के प्रकट होने के माध्यम से "अंतिम दिनों के बारे में सही समझ" का आश्वासन।

संत समय को देखते हुए बिना किसी उद्देश्य के इधर-उधर नहीं भटकते। सुसमाचार की पूर्ण सत्यता को कमज़ोर करने वाली धोखे की ताकतों को देखकर, वे स्पष्ट रूप से समझ जाते हैं कि वे अंतिम दिनों के बीच खड़े हैं—एक ऐसा समय जब इतिहास की गति प्रभु के दूसरे आगमन की ओर तेज़ी से बढ़ रही है। "हे बालकों, यह अंतिम घड़ी है; और जैसा तुमने सुना था कि मसीह-विरोधी आने वाला है, वैसे ही अब बहुत से मसीह-विरोधी प्रकट हो गए हैं। इसी से हम जानते हैं कि यह अंतिम घड़ी है" (पद 18)।

(4) "रूप के पूर्ण परिवर्तन (महिमा)" का आश्वासन, जो प्रभु के दूसरे आगमन पर पूरा होगा।

हालाँकि आज हम अपने कमज़ोर शरीर की सीमाओं के कारण कराहते हैं, फिर भी हम उस भविष्य की आशा को स्पष्ट रूप से समझते हैं कि जब प्रभु महिमा के साथ लौटेंगे, तो हम उनके पूर्ण और दोषरहित वास्तविक स्वरूप को आमने-सामने देखेंगे और तुरंत उनके ही स्वरूप में बदल जाएँगे। "हे प्रिय मित्रों, अब हम परमेश्वर की संतान हैं, और हम क्या होंगे, यह अभी तक प्रकट नहीं हुआ है। लेकिन हम जानते हैं कि जब मसीह प्रकट होंगे, तो हम उनके समान होंगे, क्योंकि हम उन्हें वैसा ही देखेंगे जैसे वे वास्तव में हैं" (3:2)।

(5) "अनंत जीवन—मृत्यु से जीवन में प्रवेश करना"—का आश्वासन, जो कार्यों और सत्य के माध्यम से प्रदर्शित होता है।

इस बात का सबसे पक्का सबूत कि मुझे सचमुच विनाश की नर्क जैसी सज़ा से बचाया गया है और मैं एक नई स्वर्गीय रचना में बदल गया हूँ, वह है मेरे साथ विश्वास करने वाले साथियों के प्रति प्यार दिखाना। जो लोग अपने भाइयों से प्यार करते हैं, वे ही जानते हैं कि वे मौत से निकलकर हमेशा के जीवन में आ चुके हैं। "हम जानते हैं कि हम मौत से निकलकर जीवन में आ गए हैं क्योंकि हम भाइयों से प्यार करते हैं। जो प्यार नहीं करता, वह मौत में ही रहता है" (पद 14)।

(6) क्रूस पर यीशु मसीह के प्रायश्चित वाले बलिदान के ज़रिए उनके सच्चे *अगापे* (ईश्वरीय) प्यार का भरोसा।

प्यार न तो कोई अमूर्त दर्शन है और न ही कोई सतही, सांसारिक भावना। केवल इकलौते बेटे के उस दर्दनाक बलिदान के ज़रिए—जिन्होंने हमारे लिए श्रापित पेड़ पर अपनी जान दे दी और हमारे लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया—हम आखिरकार प्यार की ब्रह्मांडीय सच्चाई को स्पष्ट रूप से समझते और महसूस करते हैं। "हम प्यार को इसी से जानते हैं कि उन्होंने हमारे लिए अपनी जान दे दी, और हमें भी भाइयों के लिए अपनी जान देनी चाहिए" (पद 16)।

(7) कामों में दिखाए गए प्यार के ज़रिए इस बात का भरोसा कि "मेरी आत्मा सच्चाई की है" और मुझे "आध्यात्मिक हिम्मत" मिलती है।

जब हम सिर्फ़ शब्दों और खोखली बातों के पाखंड को क्रूस पर दफ़ना देते हैं और ठोस कामों से अपने भाइयों की सेवा करते हैं, तो हमारे अंदर दोषी होने का कड़ा एहसास और शैतान के आरोप पूरी तरह कुचल दिए जाते हैं; इससे हमारा दिल प्रभु के सिंहासन के सामने चट्टान की तरह मज़बूती से खड़ा हो पाता है। "इसी से हम जानेंगे कि हम सच्चाई के हैं और उसके सामने अपने दिल को तसल्ली देंगे" (पद 19)।

(8) प्रेरितों की घोषणा पर ध्यान देने के ज़रिए "सच्चाई की आत्मा और भ्रम की आत्मा" के बारे में भरोसा।

यह पहचानने का पैमाना साफ़ है कि कौन सचमुच पवित्र आत्मा वाला व्यक्ति है और कौन शैतान के कब्ज़े में फँसा हुआ झूठा व्यक्ति है। केवल वे ही लोग सचमुच सच्चाई के लोग हैं जो क्रूस के सुसमाचार की अटल सच्चाई को ध्यान से सुनते हैं और उसे मानते हैं—यह सुसमाचार परमेश्वर का है और प्रेरितों ने इसे अपने ही लहू से घोषित किया था। "हम परमेश्वर की ओर से हैं, और जो परमेश्वर को जानता है वह हमारी बात सुनता है; लेकिन जो परमेश्वर की ओर से नहीं है, वह हमारी बात नहीं सुनता। इसी तरह हम सच्चाई की आत्मा और झूठ की आत्मा को पहचानते हैं" (4:6)। (9) यह 'त्रिएक परमेश्वर के साथ आपसी जुड़ाव' का भरोसा है, जो सलाहकार (पवित्र आत्मा) को एक उपहार के रूप में पाने से मिलता है।

एक विश्वासी कभी अकेला नहीं होता, यहाँ तक कि कठोर जंगल में भी नहीं; इसका कारण उसकी अपनी कोई खूबी नहीं है, बल्कि यह है कि परमेश्वर ने अपनी सबसे कीमती पवित्र आत्मा को हमारी आत्मा के भीतरी स्थान में एक उपहार के रूप में उंडेला है। उस पवित्र आत्मा की मुहर के द्वारा, हम जानते हैं कि प्रभु हमारे भीतर वास करते हैं और हम उनमें वास करते हैं। "हम जानते हैं कि हम उसमें रहते हैं और वह हममें, क्योंकि उसने हमें अपनी आत्मा दी है" (पद 13)।

(10) यह 'पूर्ण भरोसे' का आश्वासन है, जो परमेश्वर के प्रेम के व्यक्तिगत अनुभव से मजबूती से अंकित होता है।

हमारा विश्वास अस्पष्ट अटकलों पर आधारित नहीं है। यह अटूट भरोसे का काम है—जो उस प्रेम की चट्टान पर मजबूती से टिका है—और यह परमेश्वर पिता के विशाल और शुद्ध प्रेम को अपने पूरे अस्तित्व से गहराई से अनुभव करने से पैदा हुआ है; उसी पिता ने मुझ जैसे पापी को—जो आध्यात्मिक मृत्यु के योग्य शत्रु था—सबसे पहले ढूंढा और जीवित किया। "और इसलिए हम जानते हैं और उस प्रेम पर भरोसा करते हैं जो परमेश्वर हमसे करता है। परमेश्वर प्रेम है। जो कोई प्रेम में रहता है, वह परमेश्वर में रहता है, और परमेश्वर उसमें" (पद 16)।

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्रिय सदस्यों, मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप ज्ञान की उन शानदार कड़ियों को ध्यान से देखें जिन्हें प्रेरित यूहन्ना ने यूहन्ना की पहली पत्री में स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से लिखा है। यूहन्ना की पत्रियों में, "हम जानते हैं" वाक्यांश का अर्थ केवल बौद्धिक सहमति या धार्मिक सिद्धांतों के ज्ञान को इकट्ठा करने से कहीं अधिक है। यह स्वर्गीय अधिकार की वास्तविकता को दर्शाता है—जिसे परमेश्वर की वे संतानें अनुभव करती हैं जिनका अस्तित्व पवित्र आत्मा के सर्वोच्च कार्य द्वारा बदल दिया गया है। वचन की "सुनहरी कुल्हाड़ी" से लैस होकर, वे शैतान के झूठ को तेजी से काटते हैं, साथ ही वे हर दिन अनंत जीवन की समृद्धि और अपने भीतर बहने वाले भाईचारे के प्रेम की शक्ति को साबित करते हैं, उसका स्वाद लेते हैं और खुशी से उसका गुणगान करते हैं। आइए हम उस आध्यात्मिक अपरिपक्वता के लिए पूरी तरह से पश्चाताप करें जिसके कारण हम दुनिया के मिश्रित विचारों और चर्च को अस्थिर करने के शैतान के शोर-शराबे वाले प्रयासों के सामने डगमगाए और अपने उद्धार पर संदेह किया। आइए हम अपने पूरे विश्वास की नींव को आश्वासन के इन दस महान स्तंभों पर मजबूती से टिकाएं। आइए हम पूरी तरह से समझ लें कि हम स्वर्ग के सच्चे नागरिक हैं—परमेश्वर से जन्मे और पूरी तरह से उन्हीं के हैं—और आइए हम अपने साथी विश्वासियों से पूरे दिल और आत्मा से, अपने कामों और सच्चाई के ज़रिए प्यार करें। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हम विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के पवित्र सिपाही बनें—प्रार्थना के ज़रिए शैतान के हर धोखे को तोड़ें, धरती पर स्वर्ग के राज्य की भरपूर और अनंत खुशी का निडरता से प्रचार करें, और हमेशा जीत की ओर आगे बढ़ें।

मैंने प्रार्थना की शांत जगह में ब्रह्मांडीय आश्वासन वाले इन वचनों की गहराई से तुलना और व्याख्या की है: 1 यूहन्ना के अध्याय 1 से 4 तक बुने हुए "जानने" के दस बयान, और अध्याय 5 में मिले छह अतिरिक्त बयान जो इस पत्र को शानदार ढंग से पूरा करते हैं—कुल मिलाकर सोलह बार। ऐसा करते हुए, हमें एक प्रेरणादायक रास्ता मिलता है—"परमेश्वर के होने का 15-गुना आश्वासन"—जो दिखाता है कि कैसे प्रेरित यूहन्ना, शुरुआती चर्च के संत, और हम खुद—जो अंत के समय की मुश्किल परिस्थितियों में चल रहे हैं—बिना किसी शक के, परमेश्वर के होने की अपनी आध्यात्मिक पहचान की मज़बूती से रक्षा कर सकते हैं। ब्रह्मांड के न्यायकर्ता परमेश्वर के स्वर्ग के शानदार नागरिक होने के नाते, हमारे जीवन में ये स्पष्ट सबूत और सच्चाईयाँ हैं:

(1) हम वे लोग हैं जो अपनी आत्मा में सच्चे यीशु को गहराई से "जानते" हैं।

यह पक्का सबूत कि कोई संत मसीह को जानता है, एक ऐसे जीवन से दिखता है जो खुशी-खुशी यीशु की आज्ञाओं को मानता है और उन पर चलता है—जो राजा का कानून और हुक्म हैं। "अगर हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो हम जानते हैं कि हम उसे जान गए हैं" (1 यूहन्ना 2:3)।

(2) हम वे लोग हैं जो प्रभु, राजाओं के राजा के साथ "जुड़े" हुए हैं, और हमने खुद को मज़बूती से उनमें टिकाया हुआ है।

जो लोग यीशु मसीह में बने रहते हैं, वे प्रभु के जीवन देने वाले वचन को मानते हैं—इंसानी भावनाओं के आधार पर काम नहीं करते—और उस आज्ञाकारिता की वेदी पर, परमेश्वर का संपूर्ण *अगापे* (निस्वार्थ) प्रेम पूरी तरह से फलता-फूलता है, जिससे हमें पूर्णता का अनुभव होता है। "लेकिन अगर कोई उसके वचन को मानता है, तो परमेश्वर के लिए प्रेम उनमें सचमुच पूरा हो जाता है। इसी तरह हम जानते हैं कि हम उसमें हैं" (वचन 5)। (3) हम वे लोग हैं जिन्हें "अंत के समय की समझ" मिली है, और हम बिना भटके इतिहास के उतार-चढ़ाव को समझ सकते हैं। हमने सुना है कि एंटीक्राइस्ट (मसीह-विरोधी) आने वाला है, और जब हम देखते हैं कि अनगिनत धोखेबाज़ ताकतें ज़हरीली खरपतवार की तरह सुसमाचार (गॉस्पेल) की सच्चाई को

नष्ट करने के लिए उठ रही हैं, तो हम साफ़ तौर पर समझते हैं कि "यह सचमुच आखिरी घड़ी है।" "हे बच्चों, यह आखिरी घड़ी है; और जैसा कि तुमने सुना था कि एंटीक्राइस्ट आने वाला है, वैसे ही अब बहुत से एंटीक्राइस्ट आ गए हैं। इसी से हम जानते हैं कि यह आखिरी घड़ी है" (वचन 18)।

(4) हम वे लोग हैं जो पुनरुत्थान की सुबह होने वाले "शानदार बदलाव" (महिमा-प्राप्ति) की भविष्य की उम्मीद को संजोकर रखते हैं।

जब हमारे उद्धारकर्ता यीशु बादलों पर महिमा के साथ फिर से प्रकट होंगे, तो हम अपने नाशवान सांसारिक शरीरों को पूरी तरह त्याग देंगे; एक पल में, हम प्रभु के स्वरूप जैसे आध्यात्मिक शरीरों में बदल जाएंगे और उनके तेजस्वी, सच्चे रूप को आमने-सामने देखेंगे। "प्यारे दोस्तों, अब हम परमेश्वर की संतान हैं, और हम भविष्य में क्या होंगे, यह अभी तक पता नहीं चला है। लेकिन हम जानते हैं कि जब मसीह प्रकट होंगे, तो हम उनके जैसे होंगे, क्योंकि हम उन्हें वैसा ही देखेंगे जैसे वे वास्तव में हैं" (3:2)।

(5) हम वे लोग हैं जो मृत्यु के भयानक दलदल से बाहर निकल आए हैं और "पहले ही अनंत जीवन में प्रवेश कर चुके हैं।"

अपनी पहचान का सबसे पक्का सबूत—यह दिखाना कि मैं सचमुच नरक की सज़ा के डर से आज़ाद हो गया हूँ और स्वर्ग का नागरिक बन गया हूँ—वह ठोस प्यार है जो मैं अपने साथ के विश्वासियों को दिखाता हूँ। केवल वही व्यक्ति मृत्यु से जीवन में पार हुआ है जो अपने भाई से प्यार करता है। "हम जानते हैं कि हम मृत्यु से जीवन में पार हो गए हैं, क्योंकि हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं। जो कोई प्यार नहीं करता, वह मृत्यु में ही रहता है" (वचन 14)।

(6) हम वे लोग हैं जिन्होंने इकलौते पुत्र के कीमती, बहाए गए लहू के द्वारा "सच्चे *अगापे* (ईश्वरीय) प्रेम के सार को समझा है।"

प्यार कोई स्वार्थी भावना नहीं है। सिर्फ़ प्रायश्चित के उस बेहद दर्दनाक काम के ज़रिए—जिसमें हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह ने हमें बचाने के लिए बिना किसी हिचकिचाहट के खुद को श्राप के पेड़ पर चढ़ा दिया और अपनी जान दे दी—हम आखिरकार प्यार की उस विशाल गहराई को ठीक से समझ पाते हैं। "इसी से हम प्रेम को जानते हैं, कि उसने हमारे लिए अपना प्राण दिया; और हमें भी भाइयों के लिए अपना प्राण देना चाहिए" (पद 16)।

(7) हम वे लोग हैं जो मज़बूती से यह मानते हैं कि हम सच्चाई के साथ जुड़े हुए हैं, और यह सच्चाई हमारे कामों और ईमानदारी भरी आज्ञाकारिता से ज़ाहिर होती है।

जब हम सिर्फ़ बातों और खोखले दावों के पाखंडी मुखौटे को हिम्मत से हटा देते हैं और असल कामों से अपने भाइयों और बहनों से प्यार करते हैं, तो हमारे अंदर खुद को दोषी ठहराने वाली कड़वी भावना और शैतान के आरोप पूरी तरह खत्म हो जाते हैं; इस तरह, हम प्रभु के सिंहासन के सामने चट्टान की तरह अपने दिलों की रक्षा कर सकते हैं। "इसी से हम जानेंगे कि हम सत्य के हैं, और उसके सामने अपने मन को तसल्ली देंगे" (पद 19)।

(8) हम 'आध्यात्मिक पहरेदार' हैं जो पवित्र आत्मा—यानी सच्चाई की आत्मा—और शैतान की धोखेबाज़ आत्मा के बीच बारीकी से फ़र्क समझते हैं।

क्योंकि हम परमेश्वर के हैं, इसलिए सच्चे विश्वासी जो परमेश्वर को पूरे दिल से जानते हैं, वे प्रेरितों द्वारा अपने खून की कीमत पर सुनाए गए सुसमाचार की आवाज़ को सुनते और मानते हैं; इसके उलट, बाहरी लोग और झूठे लोग जो परमेश्वर के नहीं हैं, वे क्रूस की सच्चाई का मज़ाक उड़ाते हैं और उस वचन को सुनने से इनकार करते हैं। "हम परमेश्वर के हैं; जो परमेश्वर को जानता है, वह हमारी सुनता है; जो परमेश्वर का नहीं, वह हमारी नहीं सुनता। इसी से हम सत्य की आत्मा और भ्रम की आत्मा को पहचानते हैं" (4:6)।

(9) पवित्र आत्मा—यानी दिलासा देने वाले—की मुहर से शक्ति पाकर, हम वे लोग हैं जो 'त्रिएक परमेश्वर के साथ मिलकर रहते हैं।' इस बात की पक्की गारंटी कि हम अकेले नहीं हैं—यहाँ तक कि किसी ऊबड़-खाबड़ जंगल के बीच भी—यह है कि परमेश्वर ने अपनी सबसे कीमती पवित्र आत्मा को एक तोहफ़े के तौर पर हमारी आत्मा के भीतरी हिस्से में उंडेला है। उस पवित्र आत्मा के ज़रिए, हम जानते हैं कि प्रभु हमारे अंदर रहते हैं और हम उनके अंदर रहते हैं। "इसी से हम जानते हैं कि हम उसमें बने रहते हैं और वह हम में, क्योंकि उसने हमें अपनी आत्मा में से कुछ दिया है" (पद 13)। (10) हम वे लोग हैं जो हमारे लिए पिता परमेश्वर के अपार और उद्धार करने वाले प्रेम का 'व्यक्तिगत रूप से अनुभव करते हैं और उस पर पूरा भरोसा रखते हैं'।

हमारा विश्वास कोई अस्पष्ट कल्पना नहीं है। हमने परमेश्वर पिता के उस विशाल और पवित्र प्रेम को अपने पूरे अस्तित्व से गहराई से महसूस किया है—जिन्होंने सबसे पहले मुझ जैसे पापी दुश्मन (जो आध्यात्मिक मृत्यु के लायक था) को ढूंढा और जीवन दिया—और हमने अपनी आत्माओं का लंगर विश्वास की चट्टान पर डाला है। "और इसलिए हम जानते हैं और उस प्रेम पर भरोसा करते हैं जो परमेश्वर हमसे करता है। परमेश्वर प्रेम है। जो कोई प्रेम में रहता है, वह परमेश्वर में रहता है, और परमेश्वर उसमें" (पद 16)।

(11) हम वे लोग हैं जो परमेश्वर से सबसे अधिक प्रेम करते हैं और उस प्रेम से प्रेरित होकर, अपने साथ के विश्वासियों से वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे हम खुद से करते हैं।

एक सच्चा संत—जो परमेश्वर पिता की सबसे ऊपर आराधना करता है और दृढ़ता से उसकी आज्ञाओं का पालन करता है—वह निश्चित रूप से उन भाइयों और बहनों को अपनाएगा और उनकी सेवा करेगा (काम और सच्चाई से) जो उसके साथ परमेश्वर से जन्मे हैं। "हम कैसे जानते हैं कि हम परमेश्वर की संतानों से प्रेम करते हैं: परमेश्वर से प्रेम करके और उसकी आज्ञाओं का पालन करके" (5:2)।

(12) हम वे लोग हैं जिन्हें प्रार्थना के समय पूरा भरोसा होता है कि हमारा स्वर्गीय पिता हमारी पुकार को पूरी एकाग्रता के साथ सुन रहा है।

क्योंकि हम परिपक्व सेवक हैं जो—अपनी इच्छाओं से पैदा हुई मांगों की सूची पेश करने के धोखे में पड़ने के बजाय—उस प्रभु के भरोसेमंद स्वभाव पर भरोसा करते हैं जिसने हमें बचाया और केवल वही मांगते हैं जो परमेश्वर को भाता है, इसलिए प्रभु हमारी धीमी कराहों और सच्ची प्रार्थनाओं को पूरी तरह से और सही समय पर सुनता और पूरा करता है। "और यदि हम जानते हैं कि वह हमारी सुनता है—चाहे हम कुछ भी मांगें—तो हम जानते हैं कि हमें वह मिल गया है जो हमने उससे मांगा था" (पद 15)।

(13) परमेश्वर से जन्मी पवित्र संतानों के रूप में, हम वे लोग हैं जो आदतन और लगातार किए जाने वाले पाप के अधीन नहीं रहते। हमारी आत्माओं के सबसे गहरे स्थान में अनंत सुसमाचार का अविनाशी बीज बसता है (3:9); क्योंकि यीशु मसीह, जो पुनरुत्थान के राजा हैं, धधकती आग जैसी आँखों से चौबीसों घंटे हमारी सुरक्षा करते हैं, इसलिए दुष्ट—शैतान—की हिम्मत नहीं होती कि वह हम पर उंगली भी उठाए। "हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप करता नहीं रहता, बल्कि जो परमेश्वर से जन्मा है, वह उसकी रक्षा करता है, और दुष्ट उसे छूता नहीं" (5:18)।

(14) हम वे लोग हैं जो मानते हैं कि परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह, हमारी आत्माओं में आए हैं और हमें 'स्वर्ग से सच्ची आत्मिक समझ' दी है।

दुनिया भर में दुश्मन, यानी शैतान द्वारा फैलाई गई मिलावट और झूठी बातों के बीच भी, हम प्रभु द्वारा दी गई आत्मिक समझ और परख की तेज़ तलवार का इस्तेमाल करते हैं; इस तरह, हम सुसमाचार और मसीह-विरोधी (Antichrist) की धोखे वाली चालों के बीच साफ़ फ़र्क कर पाते हैं। "और हम जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आया है और उसने हमें समझ दी है..." (वचन 20a)।

(15) उस आत्मिक समझ से सशक्त होकर, हम वे लोग हैं जो जानते हैं कि हम 'पूरी तरह से यीशु मसीह की गोद में बने हुए हैं,' जो सच्चे परमेश्वर और स्वयं अनंत जीवन हैं।

यह एक ब्रह्मांडीय जीत का आखिरी दौर है, जिसकी घोषणा भरोसे की सोलह घंटियों ने की है। हम इस दुनिया की नाशवान इच्छाओं के गुलाम नहीं हैं; बल्कि, जीवन की डोर से पुत्र, यीशु मसीह—जो सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन हैं—से मज़बूती से जुड़े हुए, हम विजेताओं की तरह चलते हैं। हम आज की सच्चाई में भी उस शानदार, स्वर्गीय राज का अनुभव इतनी गहराई से करते हैं कि हमारी आँखों में आँसू आ जाते हैं। "... [उन्होंने] हमें समझ दी है ताकि हम उन्हें जान सकें जो सच्चे हैं; और हम उनमें हैं जो सच्चे हैं, यानी उनके पुत्र यीशु मसीह में। यही सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन हैं" (वचन 20b)।

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप पूरे दिल से और सुसमाचार के एक शक्तिशाली हथियार के रूप में, भरोसे के उन सोलह स्तंभों को थामे रखें—जिनके बारे में कहा गया है कि "हम जानते हैं"—और जिन्हें प्रेरित यूहन्ना ने इस पूरे पत्र में बहुत प्रभावशाली ढंग से पिरोया है। अगर यूहन्ना का सुसमाचार एक ऐसा प्रचार-संबंधी ग्रंथ था जिसका मकसद आध्यात्मिक रूप से मरे हुए लोगों को यीशु पर विश्वास करने और अनंत जीवन पाने के लिए प्रेरित करना था, तो 1 यूहन्ना एक चरवाहे की ओर से भरोसे का दिल से किया गया ऐलान है—जिसे आंसुओं के साथ लिखा गया है—जिसका मकसद हममें से उन लोगों के दिलों में, जिन्होंने पहले ही पुत्र को पा लिया है (पद 13), चट्टान की तरह मज़बूती से "मुक्ति के उस अटूट पंद्रह-स्तरीय भरोसे" की रक्षा करना है। आइए हम दुनिया के बुरे शोर-शराबे, बुरी अफ़वाहों या शैतान की उन चालों से अपनी आत्मा के एक मिलीमीटर हिस्से को भी चोरी न होने दें, जो हमारी कमज़ोरियों का फ़ायदा उठाकर हमें क्रूस के दुख से बचने के लिए उकसाती हैं। हम फरीसी नहीं हैं जो सिर्फ़ धार्मिक ज्ञान से अपना दिमाग भरते हैं। क्योंकि हम परमेश्वर के हैं, आइए हम आज जहाँ हैं वहीं उसके राज्य और उसकी धार्मिकता को खोजें, और उसके वचन के अनुसार सच्ची धार्मिकता का पालन करें। आइए हम घुटनों के बल प्रार्थना करते हुए अपने अंदर छिपे पाखंड और नफ़रत की चिंगारियों को पूरी तरह कुचल दें, और अपने साथी विश्वासियों से पूरी ज़िंदगी, जोश और सच्चाई के साथ प्यार करें। इसलिए, मैं प्रभु यीशु मसीह—राजाओं के राजा—के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक

यीशु मसीह के साथ कदम मिलाकर चलें, जो सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन है। आप स्वर्ग के राज्य के भरपूर, अनंत आशीर्वादों और प्रार्थना का जवाब मिलने की ज़बरदस्त शक्ति का पूरा आनंद लें और उसकी तारीफ़ करें, भले ही हम "आज" जिसे कहते हैं उस बंजर ज़मीन के बीच हों, और आख़िरकार एक शानदार अंतिम जीत हासिल करें। आमीन।

मैंने एक बार फिर 1 यूहन्ना के अध्याय 1 से 5 में बुने गए पक्के भरोसे के सोलह बयानों—"हम जानते हैं"—की कड़ी और उनसे निकले मुक्ति से जुड़े पंद्रह मुख्य नतीजों के नक्शे पर गहराई से सोचा है। नतीजतन, पद 20 के मसीह से जुड़े अंतिम ऐलान को बाद में सोचने के लिए अलग रखते हुए, मैंने अनंत जीवन के बाकी पवित्र सबूतों को "परमेश्वर के होने के तीन मुख्य सबूतों" में व्यवस्थित किया है। मैंने इन बिंदुओं को साफ़ और असरदार ढंग से व्यवस्थित किया है ताकि हमारे संत एक नज़र में ही इन्हें आसानी से समझ सकें। हममें से जो लोग परमेश्वर—पूरे ब्रह्मांड के मालिक—के हैं और जिन्हें स्वर्गीय DNA मिला है, उनके जीवन में सुसमाचार की ये तीन सच्चाइयाँ साफ़ तौर पर ज़िंदा हैं; ऐसी सच्चाईयाँ जिनकी न तो दुश्मन (शैतान) नकल कर सकता है और न ही उन्हें बिगाड़ सकता है:

(1) पहली बात, परमेश्वर के लोगों के तौर पर, हम ऐसे "उपासक हैं जो त्रिएक परमेश्वर के अपार और पाप-क्षमा करने वाले प्रेम पर पूरा भरोसा करते हैं और प्रार्थना की शक्तिशाली सामर्थ्य का आनंद लेते हैं।" अगर हम शैतान के राज वाली इस दुनिया से पूरी तरह आज़ाद हो चुके हैं और सचमुच परमेश्वर के नए जन्म पाए हुए विश्वासी हैं, तो हम वे लोग हैं जो—अपने पूरे वजूद के साथ—पिता परमेश्वर के उस विशाल और पवित्र प्रेम को गहराई से महसूस करते हैं, जानते हैं और उस पर अटूट विश्वास करते हैं, जिसने हमें जीवन दिया (1 यूहन्ना 4:16)। सुसमाचार की धार से इस बात को और स्पष्ट करें तो: हम वे लोग हैं जो इकलौते बेटे, यीशु मसीह के दर्दनाक बलिदान के ज़रिए इस प्रेम की ब्रह्मांडीय सच्चाई को साफ-साफ समझते हैं; उन्होंने—उस श्रापित क्रूस पर—बिना किसी रोक-टोक के अपना पूरा जीवन न्योछावर कर दिया और हमारी जगह अपनी जान दे दी (1 यूहन्ना 3:16)।

परमेश्वर हमें सिर्फ़ कोई दर्जा देकर चुपचाप नहीं बैठ जाते। क्योंकि पिता और पुत्र ने पवित्र आत्मा—जो सबसे अनमोल सलाहकार हैं—को हमारी आत्मा के भीतरी हिस्से में एक तोहफ़े के तौर पर दिया है, इसलिए हम साफ़-साफ़ सुनते और महसूस करते हैं—जैसे आत्मा के भीतर कोई घंटी बज रही हो—कि प्रभु हमारे साथ मज़बूती से जुड़े हुए हैं—वे हममें हैं, और हम उनमें हैं (4:13)। इसलिए, इस ज़बरदस्त, त्रिएक और उद्धार करने वाले प्रेम में डूबे हुए, हम उस नासमझी के लिए पूरी तरह पछतावा करते हैं जिसने कभी हमें अपनी मर्ज़ी और इच्छाओं के पीछे बेचैनी से भागने पर मजबूर किया था; इसके बजाय, हम अपनी प्रार्थनाओं की दिशा को सिर्फ़ उस इच्छा के साथ जोड़ते हैं जो पिता को भाती है और पूरे भरोसे के साथ मांगते हैं। क्योंकि हमें पक्का भरोसा है कि पिता के दाहिने हाथ बैठे यीशु और हमारे भीतर मौजूद पवित्र आत्मा हमारी ओर से मिलकर काम कर रहे हैं, इसलिए जब भी हम यीशु के शक्तिशाली नाम में पिता परमेश्वर को पुकारते हैं, तो हमें इस बात का पूरा भरोसा और आनंद मिलता है कि प्रभु हमारी हर धीमी कराह और विनती को पूरी वफ़ादारी से सुनते हैं, और हमारी एक भी बात को बिना जवाब के खाली नहीं जाने देते (5:15)। (2) दूसरी बात, परमेश्वर के लोगों के तौर पर, हम व्यावहारिक धार्मिकता का पालन करने वाले हैं जो होंठों के दिखावे को हिम्मत के साथ छोड़ देते हैं और कामों और सच्चाई के ज़रिए अपने भाइयों से प्रेम करते हैं। अगर हम अंधेरे की ताकत से आज़ाद हो गए हैं और सच में परमेश्वर के हैं, तो हम वे लोग हैं जो अपनी आत्मा की गहराई में सच्चे यीशु को जानते हैं और पूरी ज़िंदगी उनके शाही हुक्मों और नियमों को मानते हैं (1 यूहन्ना 2:3, 5)। यीशु का हुक्म, जो यूहन्ना की शिक्षाओं में साफ़ तौर पर बताया गया है, बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है। इसका मतलब है कि हमारे अंदर छिपी ईर्ष्या, जलन और नाराज़गी जैसी ज़हरीली बुराइयों को क्रूस पर पूरी तरह खत्म कर देना, और अपने साथी सदस्यों और भाई-बहनों—जो हमारे आस-पास हैं—से वैसे ही गहरा प्यार करना जैसे हम अपने शरीर से करते हैं (3:14; 5:2)। धार्मिक दिखावा—सिर्फ़ ज़ुबान से प्यार की बातें करना और पवित्रता का ढोंग करना—परमेश्वर के लोगों की पहचान नहीं है। परमेश्वर का सच्चा मानने वाला असल कामों से प्यार दिखाता है; वह सच्चे दिल से और ठोस कामों के ज़रिए साथी सदस्यों से प्यार करता है (3:19)। क्योंकि परमेश्वर के वचन का कभी न मिटने वाला बीज हमारी आत्मा में बसा है और हमें मज़बूती से थामे हुए है, इसलिए हम शैतान के धोखे में नहीं आते और न ही पाप की उस कठोर गुलामी में रहते हैं जो हमें लगातार अपने भाइयों से ईर्ष्या और नफ़रत करने पर मजबूर करती है (5:18)।

जैसे-जैसे हम आज्ञाकारिता के इस रास्ते पर मज़बूती से चलते हैं—और अपने पड़ोसियों को अपनाते हैं—हम पर स्वर्ग की एक पक्की पहचान लग जाती है, एक ऐसी छाप जिसे दुनिया न तो दे सकती है और न ही समझ सकती है। हमें न सिर्फ़ यह अंदरूनी भरोसा मिलता है कि हमें मौत की बुरी दलदल से बचा लिया गया है और हम पूरी तरह से अनंत जीवन में आ गए हैं (3:14), बल्कि हम उस पवित्र हिम्मत की चट्टान की तरह मज़बूती से रक्षा भी करते हैं जो हमारी आत्मा के स्वर्गीय सच्चाई के दायरे से जुड़े होने के भरोसे को पक्का करती है (वचन 19)।

(3) तीसरी बात, परमेश्वर के लोगों के तौर पर, हम ऐसे सैनिक हैं जो अंत के समय की आध्यात्मिक मिलावट को तेज़ी से तोड़ते हैं और क्रूस के सुसमाचार की पूरी सच्चाई का मज़बूती से बचाव करते हैं।

अगर हम सच में परमेश्वर के हैं, तो हम वे लोग हैं जो वर्तमान में मज़बूती से खड़े रहते हैं और अपनी नज़रें उस शानदार भविष्य की उम्मीद पर टिकाए रखते हैं—यानी हमारी अंतिम महिमा—जो हमारे प्रभु यीशु के बादलों पर महिमा के साथ लौटने की सुबह पूरी होगी (वचन 2)। हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि हमें पूरा भरोसा है कि जब वह दिन आएगा, तो हम अपने नाशवान, नश्वर शरीर को उतार फेंकेंगे और तुरंत बदल जाएंगे; हम यीशु के बेदाग, तेजस्वी रूप जैसे शरीर के साथ जी उठेंगे और उन्हें आमने-सामने देखेंगे, जैसे वे सच में हैं (वचन 2)। अपनी आत्माओं के लिए ढाल के रूप में भविष्य की इस दिल को छू लेने वाली उम्मीद को थामे हुए, हम सांसारिक बेफिक्री में सोने से इनकार करते हैं; इसके बजाय, अंत के समय के नज़रिए से, हम साफ़ तौर पर समझते हैं कि हम आखिरी घड़ी के बीच जी रहे हैं (2:18)। हमारे अंदर रहने वाले पवित्र आत्मा—सत्य के आत्मा—की गहरी समझ से शक्ति पाकर, हम पूरे दिल से केवल परमेश्वर के उन वफ़ादार सेवकों की बात सुनते हैं जो उनके हैं और सुसमाचार का प्रचार करते हैं; हम अपनी आत्मा का एक इंच भी हिस्सा उन मसीह-विरोधियों (Antichrists) के घिनौने धोखे के आगे नहीं झुकने देते, जो "आपसी सम्मान" के बहाने सच्चाई को बिगाड़ने और भ्रमित करने की कोशिश करते हैं (4:6)। संक्षेप में, परमेश्वर के पवित्र संत अपना पूरा जीवन केवल "यीशु मसीह के सच्चे सुसमाचार"—प्रकाशितवाक्य 14:6 में बताए गए "अनंत सुसमाचार"—को सुनने और बनाए रखने में लगाते हैं; यह सुसमाचार समय और स्थान की सीमाओं से परे, हमेशा कायम रहता है। हमें आध्यात्मिक झूठ बोलने वालों की ज़हरीली बातों को दृढ़ता से काटना चाहिए और उन्हें सुनने से इनकार करना चाहिए—वे लोग जो चुपके से इस बात से इनकार करते हैं कि नासरत का

यीशु ही मसीह है और परमेश्वर पिता और उनके पुत्र, यीशु मसीह के बीच के दिव्य मिलन को पूरी तरह से नष्ट करना चाहते हैं। हमें उस झूठी धर्मशिक्षा—उस "अलग सुसमाचार" या "नकली सुसमाचार"—को अस्वीकार करना चाहिए जिसके खिलाफ गलातियों और 2 कुरिन्थियों की पत्रियों में इतने कड़े श्राप और चेतावनियाँ दी गई हैं (गलातियों 1:6–9; 2 कुरिन्थियों 11:4; 1 यूहन्ना 2:22)।

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, आइए हम अपने पूरे विश्वास की नींव को भरोसे के तीन-स्तरीय स्तंभ पर मज़बूती से टिकाएँ: कि हम परमेश्वर से जन्मे हैं और स्वर्ग के सच्चे लोगों के रूप में पूरी तरह से केवल उन्हीं के हैं। आइए हम उस आध्यात्मिक अपरिपक्वता (immaturity) के लिए पूरी तरह से पश्चाताप करें, जिसके कारण दुनिया के मिलावटी विचारों और शैतान के हंगामों के सामने, जो कलीसिया को परेशान करते हैं, हम डगमगाए और अपनी मुक्ति पर शक किया। आइए हम पूरे दिल से त्रिएक परमेश्वर (Triune God) के स्वभाव पर भरोसा करें, जो हमारे लिए बचने का रास्ता खोलते हैं (1 कुरिन्थियों 10:13) और हमारे लिए मध्यस्थता करते हैं—चाहे वह स्वर्ग के सिंहासन से हो या हमारे अपने दिलों के भीतर (रोमियों 8:26–27, 34)। आइए हम परमेश्वर के वचन की तलवार से दुनिया की तीन तरह की लालसाओं को पूरी तरह कुचल दें, और—अपने साथी विश्वासियों से कामों और सच्चाई से प्रेम करके, भले ही इसके लिए हमें अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े—पूरी दुनिया को शानदार ढंग से दिखाएं कि हम स्वर्ग की संतान हैं जिनके पास सच्चा अनंत जीवन है। इस प्रकार, "आज" की बंजर ज़मीन के बीच भी, आप सभी विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के पवित्र सैनिक बनें जो रोज़ाना स्वर्गीय नागरिकता के भरपूर, अनंत आशीर्वादों और प्रार्थना का उत्तर मिलने की महान शक्ति का आनंद लें; आप स्तुति के गीत गाएं और अंततः महान, अंतिम विजय प्राप्त करें—यह सब प्रभु यीशु मसीह के नाम में हो। आमीन। 1 यूहन्ना 5:19 के दूसरे भाग में, परमेश्वर के लोगों की शानदार पहचान बताने के तुरंत बाद, प्रेरित यूहन्ना उस दुनिया की क्रूर और दयनीय सच्चाई को बेबाकी से सामने लाते हैं जिसका सामना हम रोज़ करते हैं: "...पूरी दुनिया उस दुष्ट के वश में है" (NKJV); "पूरी दुनिया शैतान के अधिकार में है" (Contemporary Korean Version)। प्रेरित यूहन्ना द्वारा इतिहास और हर पीढ़ी को दी गई इस कठोर बात का सही अर्थ क्या है? इसका मतलब है कि यह पूरी पापी और बुरी दुनिया—जो यीशु को मसीह मानने से इनकार करती है—पूरी तरह से दुश्मन, शैतान (Satan) की पकड़ में है, उसकी चालाकी से बनाई गई सीमाओं और अधिकार क्षेत्र में फंसी हुई है, और दुख में कराह रही है। हालाँकि आप और मैं अभी

इस गिरे हुए युग के बीच चल रहे हैं—शैतान के दमघोंटू शासन के बोझ तले दबे हुए हैं—फिर भी सुसमाचार (Gospel) में हमारी पहचान बिल्कुल अलग है। कीमती लहू के द्वारा नया जन्म पाकर और पूरी तरह से केवल परमेश्वर के होकर (वचन 19a), हम वे लोग हैं जिन्हें एक मिशन के लिए बुलाया गया है; हम आगे बढ़ते हैं और अपनी आत्माओं को उस शानदार "आने वाले युग" की महिमा में टिकाए रखते हैं, जो प्रभु के लौटने पर पूरी तरह से साकार होगा। इसलिए, शांति से रहित इस दुनिया में भी, विश्वास करने वाले दुनिया की तीन तरह की लालसाओं (शरीर की लालसा, आँखों की लालसा और जीवन का घमंड) में नहीं ढलते। इसके बजाय, हम पवित्र सैनिकों की तरह जीते हैं जो इस धरती पर साहस के साथ छाए रहते हैं—स्वर्ग के नागरिकों के रूप में दुनिया से अलग। हम प्रेरित पौलुस (1 कुरिन्थियों 15:48) द्वारा बताए गए शानदार "स्वर्गीय लोग" और पवित्र "स्वर्ग के नागरिक" (फिलिप्पियों 3:20) हैं, जिनका हमेशा रहने वाला, खजाने जैसा घर ऊपर के राज्य में है। धोखे के इस भयंकर और कठिन युद्धक्षेत्र में, स्वर्ग से ताल्लुक रखने वाले व्यक्ति के तौर पर—परमेश्वर के राज्य के सच्चे नागरिक के रूप में—आज का दिन जीने का असली और ज़रूरी मतलब क्या है? अभी भी, शैतान लगातार हमें स्वर्ग की संतान के रूप में अपनी पहचान भूलने और नफरत की दलदल में धंसने के लिए उकसाता है; वह चर्च में अशांति फैलाने, साथी विश्वासियों के बीच रिश्तों को तोड़ने वाली बुरी अफवाहें फैलाने और कठोर शब्दों से हमला करने जैसे हथकंडे अपनाता है। तो फिर, पवित्र आत्मा हमसे किस तरह के जीवन और आज्ञाकारिता की उम्मीद करता है—ताकि हम वचन की तलवार से शैतान की इस धोखे वाली चाल को काट सकें और अपने रोज़मर्रा के जीवन की वेदी पर शानदार ढंग से दिखा सकें कि हम सचमुच परमेश्वर की संतान और स्वर्ग के नागरिक हैं?

मैं आपके साथ एक पवित्र बुलाहट की वे बातें साझा करना चाहता हूँ जिन्हें मैंने 29 सितंबर, 2014 को अपनी पादरी की नोटबुक में "स्वर्ग के नागरिक का जीवन" शीर्षक के तहत लिखा था—जब मैं पादरी की सेवा की वेदी के सामने अनंत जीवन की वर्तमान सच्चाई पर गहराई से विचार कर रहा था।

हमारी नागरिकता इस धरती की नाशवान ताकतों से नहीं बंधी है, बल्कि पूरी तरह से अनंत स्वर्ग में है (फिलिप्पियों 3:20)। इसलिए, जब हम इस धरती पर परदेशी के रूप में रहते हैं, तो हमें स्वर्ग के नागरिकों के पवित्र दायित्वों को पूरा करना चाहिए (1:27)। स्वर्ग के नागरिक के तौर पर आध्यात्मिक ज़िम्मेदारी का

सार यह है कि दुनिया के चलन की धारा के विपरीत चला जाए और "स्वर्ग के नियम"—जो राजा का सर्वोच्च कानून है—का पालन और अभ्यास किया जाए। स्वर्ग का यह नियम न तो अमूर्त विचारों से बना है और न ही जटिल कानूनों से। यह हमारे प्रभु यीशु द्वारा बताया गया प्रेम का महान दोहरा आदेश है: "अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी आत्मा, अपनी पूरी ताकत और अपने पूरे मन से प्रेम करो, और अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जैसे तुम खुद से करते हो" (लूका 10:27; मत्ती 22:37–39)। जब हम अपने पूरे अस्तित्व के साथ—अपनी स्वाभाविक इच्छाओं के विरुद्ध भी—इस आदेश का पालन करते हैं, तो हम अंततः ऐसे लोग बन जाते हैं जो दुनिया से अलग होकर स्वर्ग के राज्य के नागरिकों की जिम्मेदारियों को पूरी तरह से निभाते हैं। विशेष रूप से, जब हम अपने अनमोल परिवारों में—अपने जीवनसाथी और बच्चों के प्रति—इस दोहरे आदेश को पूरा करने के लिए आँसुओं के साथ प्रयास करते हैं, तो प्रभु स्वयं हमारे घरों को—जो कभी शैतान के हमलों के प्रति संवेदनशील थे—चमकदार "स्वर्ग" में बदल देंगे, जहाँ परमेश्वर का पवित्र शासन चलता है। और जैसे ही हमारे परिवार प्रभु के प्रेम से भरे स्वर्ग में बदल जाते हैं, प्रभु—राजाओं का राजा—उन्हें शक्तिशाली "गवाही देने वाले समुदायों" के रूप में संजोएंगे और उनका उपयोग करेंगे जो दुनिया के अंधेरे को मिटा देते हैं। वह हमें केवल शब्दों और बातों के पाखंड से मुक्त करेंगे, और इसके बजाय पूरे परिवार के वास्तविक, जीते-जागते अनुभवों के माध्यम से प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के सुसमाचार की शानदार गवाही देंगे। क्योंकि एक पवित्र परिवार जो मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीता है, वह दैनिक जीवन की दिनचर्या के माध्यम से यीशु की सुगंध को प्रकट करता है।

प्रिय संतों, यह पवित्रता का जीवन है—एक ऐसा जीवन जहाँ हम वर्तमान की कठोर वास्तविकता के बीच उस प्रेरक "अनंत जीवन" का आंशिक रूप से और पहले से ही स्वाद लेते हैं और आनंद लेते हैं, जिसकी घोषणा प्रेरित यूहन्ना ने अपने पत्रों में इतने उत्साह के साथ की थी, और जिसका अनुभव हम एक दिन स्वर्ग के राज्य में पूरी तरह से करेंगे। जब हम प्रार्थना के गुप्त स्थान में त्रिएक परमेश्वर के विशाल और शुद्ध *अगापे* (निस्वार्थ) प्रेम को प्राप्त करते हैं, क्रूस पर अपने अहंकार और घावों को दफन करते हैं, और अपने पूरे जीवन के साथ एक-दूसरे से प्रेम करना शुरू करते हैं, तो हमारे भीतर एक शानदार स्वर्गीय शांति—जिसे दुनिया न तो दे सकती है और न ही समझ सकती है—उमड़ पड़ती है। यूहन्ना 15:9–12 में प्रभु के उस आश्वासन पर

विचार करें: जैसे पिता ने पुत्र से प्रेम किया, वैसे ही प्रभु ने हमसे प्रेम किया है; इसलिए, जब हम उसके प्रेम में बने रहते हैं, उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, और एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो प्रभु का अनंत स्वर्गीय आनंद हमारी आत्माओं में पूरी तरह समा जाता है और हमें तब तक भरता है जब तक हमारा आनंद पूरा न हो जाए। जब हम रोज़मर्रा की ज़िंदगी की लड़ाइयों के बीच दुनिया और अपने परिवारों में यीशु मसीह के प्रेम की शानदार रोशनी फैलाते हैं, तो अनंत जीवन का एक ज़बरदस्त आनंद—जिसे दुश्मन, यानी शैतान, कभी नहीं छीन सकता—हमारे दिलों में लहरों की तरह उमड़ता है। यह उन सैनिकों का रहस्य है जो शैतान के राज वाले इस दौर में भी, आने वाले युग के शानदार जीवन का आज ही ऐलान करते हुए जीते हैं।

भजन 293, "व्हेन द लॉर्ड्स लव शाइन्स" (नया भजन-संग्रह)—एक ऐसा गीत जिसे हमें एक सैनिक की भावना के साथ जीवन भर गाना चाहिए—के पहले और चौथे पद इस शानदार विश्राम के बारे में जोश के साथ गाते हैं: (पद 1) जब प्रभु का प्रेम चमकता है, तो आनंद आता है; चिंताएँ और परेशानियाँ गायब हो जाती हैं, और हम स्तुति-गीत गाते हैं। प्रार्थनाओं का उत्तर मिलने पर हम प्रभु की स्तुति करते हैं; जब प्रभु का प्रेम चमकता है, तो आनंद आता है। (पद 4) जब प्रभु का प्रेम चमकता है, तो दुनिया रोशन हो जाती है; सारी नफ़रत मिट जाती है, और शांति छा जाती है। एक-दूसरे से प्रेम करते हुए हम प्रभु की सेवा करते हैं; जब प्रभु का प्रेम चमकता है, तो दुनिया रोशन हो जाती है। हमारे सेनापति, यीशु मसीह, ने पहले ही दुनिया पर जीत हासिल कर ली है; उन्होंने हमें परमेश्वर के राज्य का नागरिक बनाया है और वे हमेशा के लिए हमारी पूरी तरह से रक्षा कर रहे हैं (1 यूहन्ना 5:18–19)। आइए हम "अपनेपन के भरोसे"—जो हमारा चौथा पक्का यकीन है—को जीवन भर एक पवित्र तलवार की तरह थामे रखें, और प्रार्थना की शक्ति से अलग-अलग धर्मों के मेल-जोल (सिंक्रेटिज़्म) के सांसारिक चलन और झूठे सुसमाचारों के धोखे को पूरी तरह से तोड़ दें। आइए हम पाखंड के उन नकाबों को उतार फेंकें जो सिर्फ़ शब्दों और ज़बान से बात करते हैं, और इसके बजाय अपने साथी विश्वासियों से अपने पूरे जीवन के साथ—कामों और सच्चाई के ज़रिए—प्रेम करें, जिसकी शुरुआत हमारे अपने परिवारों और काम की जगहों से हो। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से पूरी श्रद्धा के साथ प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक अपने जीवन की वेदी पर पवित्रता के शुद्ध फल लाकर पूरी दुनिया के सामने निडरता से यह साबित करें कि वे सचमुच परमेश्वर के राज्य के नागरिक

के तौर पर परमेश्वर के हैं, और वे आज की सच्चाई के बीच स्वर्गीय अनंत आनंद की भरपूरता और प्रार्थना के उत्तर की महान शक्ति का भरपूर आनंद उठाएँ।

1 यूहन्ना 5:19 के दूसरे हिस्से—जो आज हमारा मुख्य विषय है—के ज़रिए हमने इस कठोर सच्चाई का सामना किया है कि पूरी दुनिया दुश्मन, यानी शैतान (सैटन) के क्रूर शासन में दुख और पीड़ा से कराह रही है। तो फिर, आप और मैं—जो रोज़ाना इस अंधेरे दौर से गुज़र रहे हैं—प्रभु के उस सदाबहार मिशनरी आदेश को अपनी ज़िंदगी में कैसे पूरा कर सकते हैं: "देखो, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच भेड़ों की तरह भेजता हूँ; इसलिए साँपों की तरह समझदार और कबूतरों की तरह मासूम बनो" (मत्ती 10:16)? जब हम यूहन्ना की पत्रियों की पैनी नज़र से इस युद्ध के मैदान को देखते हैं, तो विश्वास करने वाले के पास सिर्फ़ एक ही रास्ता बचता है: "संघर्षपूर्ण, व्यावहारिक और ज़बरदस्त जीत" वाली ज़िंदगी जीना, जो परमेश्वर के वचन की शक्ति से उस दुष्ट—शैतान—की नफ़रत और झूठ की साज़िशों को तुरंत कुचल दे। इस भरोसेमंद घोषणा का बाइबिल-आधारित आधार—जो उद्धार के इतिहास और व्यवस्थित धर्मशास्त्र पर टिका है—पूरी जीत की उस मास्टर योजना में है, जिसे 1 यूहन्ना के अध्याय 2 और 4 में साफ़ और सटीक रूप से बताया गया है: "...हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ क्योंकि तुमने उस दुष्ट पर जीत हासिल की है" (2:13); "हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ क्योंकि तुम मज़बूत हो, और परमेश्वर का वचन तुममें बना रहता है, और तुमने उस दुष्ट पर जीत हासिल की है" (2:14); "हे छोटे बच्चों, तुम परमेश्वर के हो और तुमने उन पर जीत हासिल की है, क्योंकि जो तुममें है, वह उससे कहीं ज़्यादा महान है जो दुनिया में है" (4:4)। *ह्युंडई-इन* (आधुनिक लोगों की) बाइबिल का अनुवाद इन शानदार आध्यात्मिक योद्धाओं की पहचान के बारे में जीत का एक बेहतरीन गीत पेश करता है, जिसमें कहा गया है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि "तुम हमेशा परमेश्वर के वचन पर अडिग रहे हो और शैतान को हराया है," और क्योंकि "जो तुम्हारे अंदर है, वह दुनिया के शैतान से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली है।"

इस आध्यात्मिक युद्ध में लगातार जीत हासिल करने का पक्का राज़ न तो इंसानी नैतिक संकल्प में है और न ही प्रचार करने के आधुनिक और जटिल तरीकों में। बल्कि, यह हमारे "जीवंत, सक्रिय विश्वास" (5:4) में पाया जाता है—एक ऐसा विश्वास जो पूरे दिल से उस अटूट सच्चाई को अपनाता है कि पवित्र आत्मा जो हमारी आत्माओं में वास करती है (जो पूरी तरह से परमेश्वर की हैं) और यीशु मसीह, जो पिता के दाहिने हाथ बैठे

हैं, शैतान और इब्लीस से कहीं अधिक महान और शक्तिशाली हैं (पद 4); और यह पक्का विश्वास कि परमेश्वर का शक्तिशाली सुसमाचार—जो समय और स्थान के खत्म होने पर भी बना रहता है—हमारे भीतर जीवन की एक नाभि-रज्जु (umbilical cord) की तरह बसा हुआ है (2:14)। अनंत जीवन की जीत के इस महान सिद्धांत से लैस होकर, हमें शैतान के शासन में उथल-पुथल भरी दुनिया के बीच सुसमाचार पर आधारित दो दिशा-निर्देशों और सिद्धांतों को मजबूती से थामना और अमल में लाना चाहिए:

(1) शैतान के चालाक शासन में उथल-पुथल भरे इस "युग" में—भेड़ की तरह पीछे हटे बिना—जीत हासिल करने की पहली व्यावहारिक रणनीति यह है कि हम अपने निजी जोश पर निर्भर रहने की अपरिपक्वता को छोड़ दें और इसके बजाय हर दिन उस प्रभु की महानता के ज्ञान में बढ़ें जो हमारे भीतर वास करते हैं। 1 यूहन्ना 2:13 के पहले भाग में शानदार घोषणा के माध्यम से, प्रेरित यूहन्ना ने कलीसिया के आध्यात्मिक पिताओं को लिखे अपने पत्र के पवित्र उद्देश्य की पुष्टि की: "हे पिताओं, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ क्योंकि तुम उसे जानते हो जो शुरू से है..."। तो फिर, यह "वह जो शुरू से है" कौन है, जिसे प्रेरित यूहन्ना इतने गहरे आध्यात्मिक आदर के साथ पहचानते हैं? उसी लेखक ने 1 यूहन्ना 1:1–2 में उनकी पहचान को पूरी तरह से उजागर किया। वह "जीवन का वचन" हैं जो अनंत काल से—समय और स्थान की रचना से पहले—परमेश्वर पिता के साथ मौजूद थे; वह पुत्र, यीशु मसीह हैं, जो इतिहास के बीच में, पूर्ण मानवीय शरीर धारण करके, हमें बचाने के लिए प्रकट हुए—जबकि हम इसके योग्य नहीं थे। यीशु मसीह की उद्धार करने वाली सच्चाई—जिसे हमें अपने पूरे अस्तित्व के साथ गहराई से जानने का प्रयास करना चाहिए—को दो महान मसीह-संबंधी कार्यों (Christological works) द्वारा संक्षेप में बताया गया है:

(a) प्रभु वह पूर्ण "प्रायश्चित" (Propitiation) हैं जिन्होंने हमारे सभी पापों को मिटा दिया है। यीशु मसीह हमेशा के लिए बलिदान का माध्यम—पास्का का मेमना—बने। उन्होंने उस शापित क्रूस पर अपना शरीर कटने और अपना लहू बहाने के द्वारा, पाप के विरुद्ध परमेश्वर के न्यायपूर्ण क्रोध का पूरा बोझ खुद उठाया; ऐसा क्रोध जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता था। ऐसा करके, उन्होंने परमेश्वर के पवित्र न्याय की सभी माँगों को पूरा किया और परमेश्वर और हमारे बीच की अलगाव की दीवार को पूरी तरह से गिरा दिया, जिससे मेल-मिलाप हुआ (1 यूहन्ना 2:2)।

(b) प्रभु वह धर्मी "वकील" हैं जो पिता परमेश्वर के सामने हमारा पक्ष रखते हैं। जब शैतान—वह दुष्ट—परमेश्वर की अदालत में हम पापियों पर कड़ा मुक़दमा चलाता है और पवित्र व न्यायपूर्ण न्यायाधीश (पिता परमेश्वर) के सामने हम पर दोष लगाता है, तो यीशु—हमारे धर्मी और एकमात्र बचाव पक्ष के वकील—क्रूस के अपने निशानों को दिखाकर न्यायाधीश के सामने हमारा पूरी तरह से बचाव और सुरक्षा करते हैं (पद 1)। प्रेरित यूहन्ना यहीं नहीं रुकते; 1 यूहन्ना 2:14 के पहले भाग में, वे कलीसिया में "छोटे बच्चों" (नए विश्वासियों) से बार-बार कहते हैं: "हे छोटे बच्चों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम पिता को जान गए हो..." हमें अपनी आत्मा की पूरी शक्ति न केवल अपने अनंत वकील यीशु मसीह को जानने में लगानी चाहिए, बल्कि पिता परमेश्वर को भी गहराई से जानने में लगानी चाहिए, जिन्होंने हमारे लिए अपने पुत्र को बिना किसी संकोच के दे दिया।

प्रेरित यूहन्ना द्वारा अपनी पत्रियों में बताए गए पिता परमेश्वर के दो महान ईश्वरीय गुण हमारे विश्वास की मुख्य नींव हैं।

(a) पहला, जैसा कि 1 यूहन्ना 1:5 कहता है, "हमारा परमेश्वर पूर्ण ज्योति है।"

क्योंकि परमेश्वर स्वभाव से ही शुद्ध ज्योति हैं, इसलिए उनमें अंधकार, झूठ या पाखंड की कालिख का ज़रा सा भी अंश नहीं है।

(b) दूसरा, जैसा कि 1 यूहन्ना 4:8 और 16 में बहुत ही प्रभावशाली ढंग से कहा गया है, "हमारा परमेश्वर अपने मूल स्वरूप में पूर्ण प्रेम (*agapē*) है।" हमारे सभी बुरे पापों और अधर्म (पद 10) का प्रायश्चित करने के लिए, परमेश्वर—जो स्वयं ज्योति हैं—ने अपनी मर्ज़ी से और व्यक्तिगत रूप से अपने सबसे अनमोल और एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को इस शापित दुनिया में प्रायश्चित के बलिदान के रूप में भेजा (पद 9–10)। विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, 1 यूहन्ना 4:4 के *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* में बताए गए सुसमाचार की शानदार शक्ति को अपने दिलों में बसा लें: "बच्चों, तुम परमेश्वर के हो और तुमने झूठे नबियों पर जीत हासिल की है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो तुममें है, वह दुनिया में मौजूद शैतान से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली है।"

आइए हम उस आध्यात्मिक अपरिपक्वता के लिए पूरी तरह से पश्चाताप करें, जिसके कारण हम दुनिया के भयानक हंगामे और मिली-जुली विचारधाराओं के सामने अपनी कमज़ोरी से डरकर कांपने लगे थे। त्रिएक परमेश्वर—जो हमारे भीतर वास करते हैं और राजा के रूप में शासन करते हैं—पूरी सृष्टि के स्वामी हैं; वे शैतान से—जो इस पापी दुनिया पर हावी है—अतुलनीय रूप से महान और शक्तिशाली हैं। आइए हम प्रभु के विश्वसनीय स्वभाव और शक्ति पर पूरा भरोसा रखें, जो अपने सिंहासन से हमारे लिए विनती करते हैं और हमारे दिलों में हमारी ओर से आहें भरते हैं (रोमियों 8:26–27, 34)। आइए हम अपने भीतर वास करने वाले वचन की शक्तिशाली तलवार को ऊंचा उठाएं और अपनी प्रार्थनाओं की दिशा को हर दिन प्रकाश और प्रेम के पिता की इच्छा के अनुरूप बनाएं। प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, मैं दिल से प्रार्थना करता हूं कि आप पवित्र सैनिक बनें जो—प्रार्थना की शक्ति के माध्यम से—शैतान के हर धोखे को पूरी तरह से चकनाचूर कर दें, पूरी दुनिया को शानदार ढंग से दिखाएं कि आप परमेश्वर के राज्य की संतान हैं जो परमेश्वर के हैं और जिन्होंने दुनिया पर जीत हासिल की है, और अनंत जीवन के आशीष का पूरा आनंद लें। (2) दूसरी बात, हमें "परमेश्वर के शक्तिशाली वचन" को—जो हमारे दिलों की गहराइयों में जीवित है और काम करता है—आत्मा की तलवार के रूप में ऊंचा उठाना चाहिए; हमें शैतान के हर धोखे को पूरी तरह से कुचल देना चाहिए और आध्यात्मिक युद्ध में अंतिम, ज़बरदस्त जीत की घोषणा करनी चाहिए।

शैतान के दबदबे वाली इस पापी दुनिया में, स्वर्ग के नागरिकों के रूप में—कबूतरों की तरह पवित्र—अपनी पहचान बनाए रखने का दूसरा व्यावहारिक तरीका यह है कि हम अपनी मानवीय इच्छा या संकल्प पर निर्भर रहने की मूर्खता को साहसपूर्वक त्याग दें और इसके बजाय, खुद को पूरी तरह से परमेश्वर के पूरे कवच से सुसज्जित करें। 1 यूहन्ना 2:14 के दूसरे हिस्से में दी गई शानदार और ज़ोरदार घोषणा के ज़रिए, प्रेरित यूहन्ना हमारी आत्माओं को नतमस्तक करते हैं और इस बड़ी जीत की रणनीति बताते हैं: "... जवानों, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ क्योंकि तुम मज़बूत हो, और परमेश्वर का वचन तुममें बना रहता है, और तुमने उस दुष्ट पर जीत हासिल की है" (NKJV)। "... जवानों, मैं यह पत्र इसलिए लिखता हूँ क्योंकि तुम परमेश्वर के वचन पर मज़बूती से खड़े हो और तुमने शैतान को हराया है" (Contemporary Korean Version)। जीत का यह दिल को छू लेने वाला गीत हमें सुसमाचार की कौन सी मुख्य बात सिखाता है—हम जो दुख के युद्धक्षेत्र में खून के आँसू बहाते हैं? परमेश्वर की नई ज़िंदगी पाने वाले बच्चे, दुष्ट शैतान और हवा की ताकतों के शासक शैतान के

ख़िलाफ़ लड़ाई में कैसे पूरी जीत हासिल कर सकते हैं, इसका पक्का राज़ सिर्फ़ एक बात में है: ऐसा इसलिए है क्योंकि हम मसीह में मज़बूत हैं, और जीवन का वह अनंत वचन—जो समय और स्थान के खत्म होने पर भी एक बिंदु या मात्रा तक नहीं बदलेगा—हममें मज़बूती से बसा हुआ है।

हमें "हम मज़बूत हैं" वाली इस महान घोषणा के आध्यात्मिक अर्थ को गलत नहीं समझना चाहिए। इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि हमारे पास कोई असाधारण नैतिक संकल्प या अपना कोई अटूट, नेक चरित्र है। बल्कि, इसका मतलब यह है कि "परमेश्वर के वचन की महान शक्ति"—जो तुरंत अंधेरे की दीवार को तोड़ देती है और शैतान का सिर कुचल देती है—हमारे भीतर गहराई से बस गई है और अपना स्थान बना चुकी है; इसलिए हम उस शक्ति से भर जाते हैं और शैतान का सामना करने में सक्षम ज़बरदस्त योद्धाओं के रूप में उठ खड़े होते हैं। इसके अलावा, हमारी आत्माओं की गहराई में परमेश्वर के वचन का वास होना हमारे विश्वास की दृढ़ता का पक्का सबूत है; ऐसा विश्वास जो जीवन के नियम और सुसमाचार की सच्चाई पर चट्टान की तरह भरोसा करता है, और दुनियादारी के चलन या "आपसी सम्मान" के धुंधले पाखंड से डगमगाता नहीं है। सच्चा विश्वास तभी बढ़ता है जब वचन हमारे भीतर बसता है, और विश्वास की वह मज़बूत ढाल शैतान के हर चालाक, आग वाले तीर को बेअसर कर देती है। इसीलिए प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 5:4 में—जो उनके संदेश की जीत का सबसे अहम हिस्सा है—पूरी दुनिया और हवा की ताकतों के सामने जीत का एक शानदार और न रुकने वाला ऐलान किया: "क्योंकि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह दुनिया पर जीत हासिल करता है। और यही वह जीत है जिसने दुनिया पर जीत हासिल की है—हमारा विश्वास" (रिवाइज़्ड न्यू कोरियन वर्ज़न)। "क्योंकि परमेश्वर की सभी संतानें दुनिया पर जीत हासिल कर सकती हैं। हमारा विश्वास ही है जिसने दुनिया पर जीत हासिल की है" (कंटेम्पररी कोरियन वर्ज़न)।

स्यूंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, अगर हम अपनी ताकत और साधनों से पाप पर जीत पाने की कोशिश करते हैं, या अपनी इच्छा से दुनिया को जीतने की कोशिश करते हैं, तो हमें बार-बार हार का सामना करना पड़ेगा और हम निराशा और हताशा के दलदल में डूब जाएंगे। हालाँकि, जब हम आगे बढ़ते हैं—उस त्रिएक परमेश्वर के असीम, बचाने वाले प्रेम से प्रेरित होकर जिसने हमें जीवन दिया और हमारी आत्माओं में वाचा के संदूक को उनके वचन के अविनाशी बीजों से भरकर—तो हम नफरत और मिलावट के उस अंधेरे

को तुरंत मिटा सकते हैं जो हमें हिलाने की कोशिश करता है। आइए हम दुनिया की आधुनिक, मसीह-विरोधी संस्कृति या चर्च को अस्थिर करने के लिए शैतान के शोर-शराबे को देखकर पीछे न हटें या निराश न हों। हमारे भीतर का प्रभु शैतान से कहीं अधिक महान है, और हमारे भीतर बसने वाले वचन की शक्तिशाली शक्ति हमें अंतिम जीत की ओर ले जाती है। आइए हम इस शानदार पाँचवें पक्के भरोसे—"जीत और समझ का भरोसा"—को अपने पूरे जीवन में एक तेज तलवार की तरह ऊँचा रखें। वचन की इस भीतर बसने वाली तलवार से सशक्त होकर, और यीशु के उदाहरण का पालन करते हुए, आइए हम स्वेच्छा से अपने दैनिक जीवन और घरों में दोहरे आदेश का पालन करें, और अपने साथी विश्वासियों से पूरे दिल और आत्मा से प्यार करें। इस प्रकार, आप सभी स्यूंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च के पवित्र सैनिक बनें जो—प्रार्थना के माध्यम से शैतान की हर चाल को कुचलकर—आज की बंजर ज़मीन के बीच भी स्वर्गीय नागरिकता के भरपूर, अनंत आशीर्वादों और सुनी गई प्रार्थनाओं की शक्तिशाली शक्ति का पूरा आनंद लें, और अंततः एक शानदार, अंतिम जीत हासिल करें। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम पर ईमानदारी से यह प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

स्यूंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, सुसमाचार आज पूरी दुनिया में हमारी आत्माओं की नागरिकता और पहचान की स्पष्ट घोषणा करता है। आप और मैं—हम वास्तव में परमेश्वर के हैं। आप और मैं—परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु मसीह पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करके पवित्र आत्मा के संप्रभु कार्य के माध्यम से पाप की कब्र से पुनर्जन्म लेने वाले परमेश्वर की संतान हैं—बिना किसी अपवाद के, स्वर्ग के राज्य के पवित्र नागरिक हैं जो पूरी तरह से परमेश्वर के हैं। हमें इस सार्वभौमिक सत्य को अपनी आत्माओं के केंद्र में मजबूती से पकड़ना चाहिए, यहाँ तक कि शैतान द्वारा फैलाए गए पाखंड और चिंता के धुंध के बीच भी। हमें पूरी तरह से निश्चित होना चाहिए—सटीकता के साथ—कि हम किसके हैं और हमारी आत्माओं की नागरिकता वास्तव में कहाँ है। भले ही हम अभी शैतान—जो हवा की ताकतों का शासक है—के दबदबे वाले इस बुरे दौर में जी रहे हैं, लेकिन सुसमाचार के अनुसार हमारी नागरिकता बिल्कुल अलग है। परमेश्वर के स्वर्गीय सैनिकों और आने वाले युग (स्वर्ग के अनंत राज्य) के नागरिकों के तौर पर—जो प्रभु की वापसी के साथ आएगा—हमें यीशु की महान दोहरी आज्ञा का पूरे दिल से पालन करते हुए जीना चाहिए।

अभी भी, दुश्मन—यानी शैतान—हम पर चालाकी भरे और धोखे वाले "आग के तीर" चलाता है। वह लगातार हमारे अंदर नाराज़गी, ईर्ष्या और जलन के ज़हरीले बीज बोने की कोशिश करता है ताकि हम उन भाई-बहनों से नफ़रत करने लगें जिनके साथ हमारा खून का रिश्ता है और जो एक ही शरीर का हिस्सा हैं। आइए, हम कभी भी शैतान की ऐसी बुरी चालों से अपनी आत्मा को न छिनने दें जिनका मकसद समुदाय में फूट डालना है। हम वे लोग हैं जो पहले ही क्रूस के लहू से शुद्ध हो चुके हैं और जिन्हें स्वर्ग का कभी न खत्म होने वाला अनंत जीवन मिला है। स्वर्ग के नागरिकों के तौर पर, जिनके पास पहले से ही अनंत जीवन है, आइए हम मज़बूती से ऐसा जीवन जिएं जिसमें हम पूरे दिल से परमेश्वर पिता की—जिन्होंने हमें जीवन दिया—आराधना करें और सच्चाई और कामों से अपने साथी सदस्यों से सच्चा प्रेम करें। ऐसा करते हुए हम प्रभु के लहू से लिखे गए नए नियम का पालन करें। जिस क्रूर और भयंकर आध्यात्मिक युद्ध का हम सामना कर रहे हैं, उसमें पूरी जीत का गीत गाने का राज़ बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है। हमें उस शानदार आध्यात्मिक ज्ञान में बढ़ना चाहिए—और ऐसा करते हुए हमारी आँखों में आँसू होने चाहिए—जो सर्वशक्तिमान प्रभु और पवित्र परमेश्वर पिता को व्यक्तिगत रूप से जानने से मिलता है, क्योंकि वे हमारे अंदर एक मंदिर की तरह वास करते हैं। इसके अलावा, हमें ज़बरदस्त जीत वाला जीवन जीना चाहिए: परमेश्वर के शक्तिशाली और जीवन देने वाले वचन पर चट्टान की तरह मज़बूती से खड़े रहना चाहिए—यह वचन तब भी नहीं हिलता जब समय और स्थान खत्म हो जाते हैं और यह हमारे दिलों में गहराई से बसा होता है—साथ ही, हमारे अंदर बसे वचन की तलवार को ऊँचा उठाना चाहिए और विश्वास की ढाल से शैतान के हर प्रलोभन को कुचल देना चाहिए।

आइए अब हम हिम्मत के साथ उस आध्यात्मिक अपरिपक्वता को दूर करें जिसके कारण हमें अपनी मुक्ति पर शक हुआ और दुनिया के मिले-जुले विचारों और झूठे सुसमाचारों के धोखे के कारण हम बेचैन हुए। भले ही हम शैतान के शासन वाली इस बंजर और बुरी दुनिया से गुज़र रहे हैं, लेकिन असल में हम परमेश्वर के राज्य की शानदार संतान हैं। आइए हम उस त्रिएक परमेश्वर के विशाल और पवित्र प्रेम से शक्ति प्राप्त करें, जिसने हमसे सबसे पहले प्रेम किया और बिना किसी संकोच के अपने एकलौते पुत्र का जीवन हमें दे दिया। आइए हम अपने पड़ोसियों और भाई-बहनों से अपने पूरे जीवन के साथ प्रेम करें, और इसकी शुरुआत वहीं से करें जहाँ हम अभी हैं—यानी अपने घरों और कार्यस्थलों से। इस प्रकार, अपने जीवन की वेदी पर पवित्रता के फल लाकर, हम पूरी दुनिया के सामने यह शानदार ढंग से साबित कर सकें कि हम परमेश्वर के हैं और

स्वर्ग के सच्चे नागरिक हैं; और हम—आप और मैं—अपने सेनापति यीशु के शानदार दूसरे आगमन और स्वर्ग में अनंत विश्राम के जीवन के लिए खुद को सबसे नेक और बेदाग तरीके से तैयार कर सकें। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम पर इसके लिए पूरी निष्ठा से प्रार्थना करता हूँ, जिन्होंने दुनिया पर विजय प्राप्त की और हमें अनंत जीवन दिया। आमीन। प्रेरित यूहन्ना ने हमारी आत्माओं के भीतर जिस पाँचवीं और अंतिम पक्की बात को गहराई से स्थापित किया है—जो यूहन्ना की पहली पत्री को एक शानदार निष्कर्ष तक पहुँचाती है—वह यीशु मसीह की पूर्ण दिव्यता और पहचान की एक दृढ़ घोषणा है, जो हमारे विश्वास के अल्फा और ओमेगा (शुरुआत और अंत) हैं।

आज के पाठ, 1 यूहन्ना 5:20 में दी गई शानदार घोषणा को ध्यान से सुनें: "...वही सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन है।" प्रिय संतों, मैं इस संदेश की शुरुआत आपकी आत्माओं के सामने सुसमाचार के सबसे महान और गंभीर सवालों में से एक को रखकर करना चाहता हूँ: आप वास्तव में यीशु—हमारे प्रभु जिन्होंने हमें पाप से बचाया—को क्या मानते हैं? जब हम ईमानदारी से इस सवाल के मुक्ति-संबंधी और ऐतिहासिक महत्व पर विचार करते हैं, तो हमारे दिल स्वाभाविक रूप से मत्ती 16 की उस शानदार बातचीत की ओर खिंचे चले आते हैं—जो कैसरिया फिलिप्पी के इलाके में हुई थी—जहाँ यीशु ने अपने शिष्यों की आत्माओं को संबोधित किया था। वह पल सुसमाचार की एक शानदार आधारशिला है जिसने पूरी मानवता के आध्यात्मिक परिदृश्य को स्पष्ट रूप से विभाजित कर दिया है। यीशु ने अपने शिष्यों को इकट्ठा किया और पूछा, "लोग मनुष्य के पुत्र के बारे में क्या कहते हैं?" (मत्ती 16:13)। दुनिया की सतही राय और "नकली खबरों" को दोहराते हुए, शिष्यों ने उत्तर दिया, "कुछ लोग कहते हैं कि वह बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना है; दूसरे कहते हैं कि वह एलिय्याह है; और कुछ अन्य कहते हैं कि वह यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक है" (पद 14)। इन आम जवाबों को सुनकर, प्रभु ने—अपनी आग जैसी तेज़ आँखों से उनके दिलों की गहराई तक झाँकते हुए—एक तीखा और गहरा सवाल पूछा जो सीधे विश्वास की जड़ पर चोट करता था: "लेकिन तुम लोग क्या कहते हो? तुम किसे कहते हो कि मैं कौन हूँ?" (पद 15)। उस सन्नाटे और तनाव के बीच, प्रेरित पतरस ने विश्वास की एक शानदार घोषणा की—जो ईसाई इतिहास की हमेशा कायम रहने वाली, अटूट नींव बनने वाली थी—और यह पूरी दुनिया और हवा की ताकतों को संबोधित थी: "शमौन पतरस ने जवाब दिया और कहा, 'आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र'" (पद 16)। हमारे प्रभु की उस ज़ोरदार आवाज़ को देखिए जब उन्होंने यह

बात सुनी, और कलीसिया की सुरक्षा के बारे में उनका शानदार वादा सुनिए: "धन्य है तू, शमौन बार-योना, क्योंकि यह बात तुझे किसी इंसान ने नहीं, बल्कि स्वर्ग में रहने वाले मेरे पिता ने बताई है। और मैं तुझसे यह भी कहता हूँ कि तू पतरस है, और इसी चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और पाताल के फाटक उस पर हावी नहीं हो पाएँगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की चाबियाँ दूँगा..." (पद 17–19)।

मैंने मत्ती 16:18 में लिखे प्रभु के इस अटूट वादे को—वह शाही हुक्म जो कहता है, "मैं खुद इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा"—अपनी आत्मा के लिए एक सहारे के तौर पर अपनाया; इसी ने मुझे कोरिया और विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च—प्रभु का वह शरीर जिसे उन्होंने अपने ही लहू से खरीदा था—में चमत्कारिक रूप से लौटने में मदद की। तब से, पादरी के तौर पर सेवा करते हुए मुश्किल हालात का सामना करते हुए भी, मैंने प्रभु के इस एक सच्चे वादे को मज़बूती से थामे रखा है। इस तरह, मेरे लिए, मत्ती 16:18 के शब्द सुसमाचार का मुख्य आधार हैं—मेरे जीवन का सबसे ज़रूरी और दिल के सबसे करीब का सच, और वह चीज़ जिस पर मैं अपनी हर साँस और अपने बुलावे के साथ भरोसा करता हूँ। आज भी, प्रार्थना की एकांत जगह में, मैं अपनी इच्छाओं और पादरी के तौर पर अपनी महत्वाकांक्षाओं के कागज़ात फाड़ देता हूँ; सिर्फ़ परमेश्वर के वचन की सर्वोच्च सत्ता पर भरोसा करते हुए, मैं परमेश्वर से पुकारता हूँ: "हे प्रभु, तूने वादा किया था कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च—वह चर्च जिसे तूने अपने ही बहाए हुए लहू से खरीदा है—वह एक पास्टर के तौर पर मेरी ताकत से नहीं, बल्कि सिर्फ़ तेरी ताकत से बनेगा। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू अपनी भली और उत्तम इच्छा के अनुसार इस चर्च को मज़बूती से स्थापित करे!" पास्टर के तौर पर की गई इस सच्ची प्रार्थना के बीच, मैं रोता हूँ और दिल से चाहता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च का हर सदस्य और पवित्र सिपाही—प्रेरित पतरस की तरह—सच्ची और सही गवाही देने वाला बने; वे पवित्र आत्मा के प्रकाशन से यह पहचानें कि यीशु ही उनके जीवन का प्रभु और जीवित परमेश्वर का पुत्र है। मेरी दिली इच्छा है कि हम ऐसे फरीसी न बनें जो सिर्फ़ सुंदर शब्दों से अपने विश्वास को सजाते हैं, बल्कि यीशु मसीह के सच्चे चेले बनें जो विश्वास की वेदी पर अपना जीवन न्योछावर कर दें और जिस सुसमाचार को हम मानते हैं, उसके परम सत्य के अनुसार जिएं। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हम सबको "अटल गवाही की चट्टान" पर मज़बूती से थामे रखे—दुनिया की मिली-जुली विचारधाराओं और शैतान के उन शोर-शराबों के बीच भी जो चर्च को परेशान करते हैं—ताकि हम एक मज़बूत और अडिग चर्च के रूप में खड़े रह सकें, और किसी भी तूफ़ान

या खतरे के सामने डगमगाएं नहीं। इसके अलावा, मैं प्रभु से दिल से प्रार्थना और विनती करता हूँ कि वह हमारे विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च को ऐसा चर्च बनाए जिस पर पाताल की ताकतें एक मिलीमीटर भी हावी न हो सकें—एक ऐसा चर्च जो शक्तिशाली योद्धाओं से बना हो, जो अपने अंदर छिपे पापों और अविश्वास को कुचल दें, इस अंधेरी और शैतान के राज वाली दुनिया के धोखे का सामना करें, और आखिरकार मौत के डर को खत्म करके एक शानदार और अंतिम जीत का ऐलान करें।

जब प्रेरित यूहन्ना '1 यूहन्ना' की शानदार समाप्ति करते हैं, तो पाँचवाँ और आखिरी स्तंभ—जो हमारी आत्मा के केंद्र पर ज़ोरदार असर डालता है—मसीही विश्वास का दिल और सुसमाचार का सबसे अहम हिस्सा बन जाता है। आज के वचन, '1 यूहन्ना 5:20' में दी गई शानदार घोषणा को ध्यान से सुनें: "और हम जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आया है और उसने हमें समझ दी है, ताकि हम उसे जान सकें जो सच्चा है; और हम उसमें हैं जो सच्चा है, यानी उसके पुत्र यीशु मसीह में। वही सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन है" (NKJV)। "लेकिन परमेश्वर का पुत्र आया है और उसने हमें समझ दी है ताकि हम सच्चे परमेश्वर को जान सकें। इस तरह, हम सच्चे परमेश्वर और उसके पुत्र, यीशु मसीह में आ गए हैं। यीशु मसीह ही सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन है" (Contemporary Korean Version)। इस एक ही वचन में, प्रेरित यूहन्ना पूरी पत्री की आत्मा को समाहित करते हैं और मसीह के बारे में अपनी आखिरी घोषणा के शिखर पर पहुँचते हैं। जैसा कि मशहूर इवेंजेलिकल धर्मशास्त्री जॉन मैकआर्थर ने गौर किया है, भरोसे का यह पाँचवाँ सच ही वह मूल आधार—यानी "सार"—है जो यूहन्ना की पहली पत्री की पूरी बात को बखूबी समेटता है। इस दुनिया के अंधेरे को तोड़ने वाले विजयी सैनिकों की तरह खड़े होने के लिए, और मसीह को अपने दिलों में बसाकर अनंत जीवन पाने वाले गवाहों की तरह जीने के लिए, हमें वचन 20 की इस शानदार घोषणा में तीन ज़रूरी आध्यात्मिक खजाने मिलते हैं—ऐसे सच जिन्हें हमें अपनी रग-रग में बसा लेना चाहिए और कभी नहीं भूलना चाहिए। (1) पहला, वह मुख्य खजाना जिसकी हमें अपनी आत्मा के भीतरी हिस्से में रक्षा करनी है, वह यह जानने का अनुग्रह है कि परमेश्वर का पुत्र स्वयं हमारे भीतर रहने आया है। वह हमें एक अलौकिक, स्वर्गीय समझ देता है जो दुनिया के धोखों को तोड़ देती है।

'1 यूहन्ना 5:20' की शानदार घोषणा से हमें जो पहला व्यवस्थित धर्मवैज्ञानिक सच आदर के साथ समझना चाहिए, वह यह है कि ज्ञान का नज़रिया और समझ का स्रोत, जिसकी ओर सुसमाचार इशारा करता है, मेरी अपनी बुद्धि या तर्क से नहीं आते; बल्कि, वे पूरी तरह से परमेश्वर के अपने रहस्योद्घाटन (प्रकटीकरण) का नतीजा हैं। आयत 20 की शुरुआत पर गौर करें और इसे अपनी आत्मा में गहराई से उतरने दें: "और हम जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें समझ दी है, ताकि हम उसे जान सकें जो सच्चा है..." (NKJV)। "लेकिन परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें समझ दी है, जिससे हम सच्चे परमेश्वर को जान सकें" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। इससे पहले, इस पत्र की शुरुआत में (1 यूहन्ना 1:2), प्रेरित यूहन्ना ने श्रद्धा के साथ अपनी आँखों देखी गवाही दी थी: कि वह शानदार "जीवन"—जो शुरुआत से ही मौजूद था, समय और स्थान के बनने से भी पहले—दुनिया में प्रकट हुआ था, और इतिहास में अपनी एक अलग छाप छोड़ी थी। अब, जब वह आयत 20 में पत्र को एक शानदार निष्कर्ष पर लाते हैं, तो वे फिर से घोषणा करते हैं, "परमेश्वर का पुत्र आ गया है [वह यहाँ है (*hēkei*)]", और इस तरह हमारी आत्माओं पर ईसाई विश्वास के उस अद्भुत रहस्य—उनकी उपस्थिति की सच्चाई—की मुहर लगाते हैं। जैसा कि *जेमिसन-फॉसेट-ब्राउन क्रिटिकल एंड एक्सप्लेनेटरी कमेंट्री* में बारीकी से बताया गया है, यूहन्ना द्वारा यहाँ इस्तेमाल की गई क्रिया "आ गया है" (*hēkei*) में "प्रेजेंट परफेक्ट (present perfect) के प्रभाव वाली उपस्थिति" का गहरा अर्थ छिपा है—यह केवल अतीत में हुई और बीत गई किसी यात्रा से कहीं अधिक है। यह एक ब्रह्मांडीय घोषणा से कम नहीं है कि परमेश्वर का पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह, जीवित हैं और ठीक यहीं और अभी मौजूद हैं—हमारे दिलों के बिल्कुल केंद्र में ("वह यहाँ है")। तो फिर, हम इस शानदार उपस्थिति के गहरे अर्थ को अपने जीवन में व्यावहारिक रूप से कैसे लागू करें? इसका बेहतरीन सुसमाचार-संबंधी जवाब उस मसीह-केंद्रित घोषणा में छिपा है जो आयत 20 के दूसरे भाग में तुरंत आती है: वह महान स्वीकारोक्ति कि "यीशु मसीह ही सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन हैं।" दूसरे शब्दों में, सुसमाचार की सच्चाई—कि यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र और राजाओं के राजा, आज मेरे जीवन के भीतरी पवित्र स्थान में व्यक्तिगत रूप से मौजूद हैं—शांति की एक बहुत ही प्रभावशाली घोषणा का काम करती है। हममें से जो लोग नए सिरे से जन्मे बच्चे हैं—जो इस स्वीकारोक्ति के माध्यम से कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं, अनंत जीवन की डोर से जुड़े हैं—उनके लिए अनंत जीवन इसी क्षण हमारे भीतर शक्तिशाली रूप से बह रहा है (5:13); इस प्रकार, यीशु मसीह, जो स्वयं अनंत

जीवन हैं, हमें एक पल के लिए भी नहीं छोड़ते, बल्कि यहाँ हमारे साथ जीवित और मौजूद रहते हैं। इसके अलावा, यीशु मसीह—परमेश्वर के पुत्र जो यहाँ हमारे साथ हैं—हमें खुशी-खुशी "समझ" (पद 20) देते हैं, जो स्वर्ग का सबसे तेज़ हथियार है, जब हम शैतान के अधिकार वाली इस शोर-शराबे वाली दुनिया से गुज़रते हैं। प्रेरित यूहन्ना ने अपनी पहली पत्री में "समझ" शब्द का इस्तेमाल सिर्फ़ एक बार किया है—खासकर यहाँ 5:20 में—और ऐसा उन्होंने जान-बूझकर ज़ोर देते हुए और इसके महत्व को समझते हुए किया है। मूल ग्रीक संदर्भ को देखने पर पता चलता है कि यह शब्द *dianoia* है—एक शानदार, स्वर्गीय शब्द जो प्रीपोजिशन *dia* ("के माध्यम से") और नाउन *nous* ("मन" या "बुद्धि") के सही मेल से बना है। इसका अर्थ है "मन की आध्यात्मिक आँख और ज्ञान का प्रकाश" जो मानवीय सोच की बुराई और सीमाओं को भेदता है, और पवित्र आत्मा की रोशनी से मिलता है। उद्धार के इतिहास के ढांचे में *dianoia* की रहस्यमयी शक्ति को समझने के लिए, हमें इसकी तुलना निर्गमन 36:1 के वृत्तांत से करनी होगी—एक ऐसा अंश जो सर्वशक्तिमान के अभिषेक के काम को दर्शाता है: "बेसललेल और ओहोलीआब और हर वह कारीगर जिसमें प्रभु ने पवित्र स्थान की सेवा के लिए सभी काम करने की बुद्धि और समझ डाली है, वे वैसा ही करेंगे जैसा प्रभु ने आज्ञा दी है" (निर्गमन 36:1)। जैसा कि यह पद गवाही देता है, जब सेनाओं के प्रभु ने पवित्र निवास (Tabernacle) बनाने वाले सेवकों के दिलों में झरने की तरह स्वर्गीय बुद्धि और समझ डाली, तो उनकी बंद आँखें अचानक खुल गईं; उनमें गहरा बदलाव आया, और वे "बुद्धिमान हृदय" वाले व्यक्ति बन गए जो बिना किसी गलती के पवित्र स्थान के लिए ज़रूरी हर पवित्र काम को सहजता से कर सकते थे। वाचा का यह नियम मत्ती 16:17 में यीशु द्वारा घोषित महान सुसमाचार सिद्धांत के साथ पूरी तरह मेल खाता है—कैसरिया फिलिप्पी की पृष्ठभूमि में पतरस के शानदार मसीही कबूलनामे, "आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र," को सुनने के ठीक बाद: "धन्य है तू, शमौन बार-योना! क्योंकि मांस और लहू ने यह तुझ पर प्रकट नहीं किया है, बल्कि मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है।" यह घोषणा पक्के तौर पर कहती है कि कोई भी इंसान सिर्फ़ अपनी वंशावली या तर्क-बुद्धि से यीशु को नहीं पहचान सकता; कोई यीशु को परमेश्वर के रूप में तभी मान सकता है जब स्वर्ग में मौजूद पिता की ओर से अलौकिक रूप से उन्हें "प्रकटीकरण" (revelation) मिले। इसलिए, आइए हम दुनिया के अलग-अलग धर्मों या विचारधाराओं को मिलाने के चलन (syncretism) या शैतान की उस चाल से अपनी आत्मा को न छिनने दें, जिसमें वह "आपसी सम्मान" के नाम पर सच और झूठ के बीच का फ़र्क धुंधला कर देता है। इस सच्चाई पर पूरी मज़बूती से डटे रहें कि यीशु मसीह हमारे अंदर रहते हैं और उन्होंने

हमें वह आध्यात्मिक समझ और दृष्टि मुफ़्त में दी है जिससे हम शैतान के झूठ को साफ़-साफ़ पहचानकर उसे काट सकें। हमारे अंदर काम कर रही इस शक्तिशाली और सच्चाई दिखाने वाली दृष्टि से मज़बूत होकर, आइए हम रोज़ रोशनी में चलें और अपने साथी विश्वासियों से—जो हमारे साथ हैं—पूरे दिल और जान से, अपने कामों और सच्चाई के ज़रिए, सच्चे मन से प्यार करें। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक प्रार्थना के ज़रिए शैतान के शोर-शराबे और धोखे को पूरी तरह से तोड़ दें, स्वर्ग की नागरिकता की भरपूर और अनंत आशीषों और प्रार्थना का जवाब मिलने की ज़बरदस्त शक्ति का आनंद यहीं धरती पर लें, और आखिर में एक शानदार और पक्की जीत हासिल करें। (2) दूसरी बात, परमेश्वर के पुत्र ने हमें यह अलौकिक और स्वर्गीय दृष्टि इसलिए दी है ताकि हम अंधेरे की मूर्तियों और झूठ को पूरी तरह से ठुकरा सकें, एकमात्र सच्चे परमेश्वर—"सच्चे परमेश्वर"—को साफ़-साफ़ जान सकें और यीशु मसीह के साथ अपने जुड़ाव की सच्चाई को समझ सकें।

हमने देखा है कि राजाओं के राजा यीशु मसीह अभी और यहीं हमारे साथ जीवित और मौजूद हैं, और उन्होंने हमें एक तोहफ़े के तौर पर सच्चाई दिखाने वाली दृष्टि (*dianoia*) दी है, जो पवित्र आत्मा की रोशनी से हमारे बंद दिलों को भेद देती है। तो फिर, उस बुलाहट का असली मकसद क्या है जिसके लिए प्रभु ने हमें इतनी उदारता से यह गहरी बुद्धि और समझ दी है? प्रेरित यूहन्ना 1 यूहन्ना 5:20 के बीच वाले हिस्से में इस शानदार मकसद को बताते हैं: "...कि उसने हमें समझ दी है, ताकि हम उसे जान सकें जो सच्चा है; और हम उसमें हैं जो सच्चा है, यानी उसके पुत्र यीशु मसीह में..." (NKJV)। प्रेरित यूहन्ना ने जिस संदर्भ में यह सुसमाचार-पत्र लिखा, वह एक ज़बरदस्त आध्यात्मिक युद्ध का मैदान था—जैसा कि 1 यूहन्ना 2:18 में बताया गया है—जहाँ, जैसा कि पहले ही भविष्यवाणी की गई थी कि मसीह-विरोधी (Antichrist) आएगा, "कई मसीह-विरोधी पहले ही आ चुके थे," जिससे यह स्पष्ट हो गया कि यह "अंतिम घड़ी" है।

यहाँ, हमें यूहन्ना के धर्मशास्त्र में बताए गए ब्रह्मांडीय "महान विरोधाभास" के सामने श्रद्धा और विस्मय के साथ खड़ा होना चाहिए। "इस युग" का पूरा हिस्सा—वह दुनिया जिसमें हम अभी जी रहे हैं—शैतान, यानी "दुष्ट" के ज़ालिम शासन में फँसा हुआ है; यह एक ऐसी जगह है जो असल में आध्यात्मिक बुराई और वासना से भरी हुई है (5:19)। शैतान के दायरे में फँसे बहुत सारे झूठे शिक्षक और मसीह-विरोधी लोग चालाकी भरे

झूठ और धोखेबाज़ी वाली बातें फैलाते हैं; वे न केवल इस सच्चाई को पूरी तरह नकारने की कोशिश करते थे—जिसकी पुष्टि इतिहास में आत्मा, पानी और लहू से हुई है कि यीशु ही मसीह (क्राइस्ट) हैं जो मानवता का उद्धार करते हैं—बल्कि वे परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के दैवीय रूप से एक होने की शिक्षा को भी पूरी तरह खत्म करने की पुरज़ोर कोशिश करते थे (2:18, 22, 26)। फिर भी, ऐसे मुश्किल हालात में जहाँ हर तरफ़ अंधेरे और झूठ का पहरा था, यीशु मसीह—परमेश्वर के पुत्र और "आने वाले युग" के सच्चे शासक—ने खुद आकर हमें स्वर्गीय समझ दी। इस समझ के ज़रिए, प्रभु ने तुरंत शैतान की "फ़ेक न्यूज़" को काट दिया और हमें उस एकमात्र सच्चे परमेश्वर पिता—"सच्चे परमेश्वर" जो अनंत जीवन का सार हैं—को जानने और पूरे दिल से उनसे प्रेम करने का रास्ता दिखाया (यूहन्ना 17:3)।

प्रेरित यूहन्ना द्वारा बताई गई इस बात का सबसे अहम हिस्सा तब एक ज़बरदस्त और आत्मा को झकझोर देने वाला आध्यात्मिक अनुभव पैदा करता है जब हम उस गंभीर आज्ञा को सुनते हैं जो इस पत्र का आखिरी हिस्सा है: "हे बच्चों, अपने आप को मूर्तियों से बचाए रखो" (1 यूहन्ना 5:21)। "प्यारे बच्चों, अपने आप को सभी मूर्तियों से दूर रखो" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। प्रेरित यूहन्ना अपने पत्र के आखिर में, जो एक वसीयत की तरह है, अचानक मूर्तियों को नकारने के बारे में यह गंभीर मानक—एक तरह से सही माप या कसौटी—क्यों तय करते हैं? ऐसा इसलिए है ताकि "परमेश्वर, जो सच्चे हैं" (पद 20) और "मूर्तियाँ, जो झूठे दिखावे हैं" (पद 21) के बीच एक बेहतरीन और कई पहलुओं वाला अंतर दिखाया जा सके। बूढ़े प्रेरित का चरवाहे जैसा दिल गहरे जोश से भर जाता है। क्योंकि परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह ने आकर हमें आत्मिक समझ दी है, इसलिए हम सच्चे परमेश्वर को स्पष्ट रूप से जान पाए हैं; साथ ही, हमें पक्का यकीन हो गया है कि हम सच्चे परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह की शानदार गोद में पूरी तरह से एक और जुड़े हुए हैं—जीवन की डोर से बंधे हुए। इसलिए, प्रेरित विश्वासियों को मज़बूती से सलाह देते हैं कि वे अपनी पूरी हिफ़ाज़त करें और दूर रहें, और अपनी आत्मा की भक्ति का ज़रा सा भी हिस्सा गंदी मूर्तियों की वेदियों को न सौंपें।

जैसा कि इवेंजेलिकल कमेंटेटर पादरी जॉन मैकआर्थर चर्च का आत्मिक ढांचा समझाते हुए ज़ोरदार ढंग से बताते हैं, जो लोग नए सिरे से जन्मे बच्चे हैं—जिनके पास सच्चे परमेश्वर को गहराई से जानने और यीशु मसीह में मज़बूती से जुड़े रहने का चौथा और पांचवां पक्का यकीन है—वे जीवन जीने का एक अलग तरीका अपनाते

हैं। हम अब सच्चाई को झूठ के साथ मिलाकर आत्मिक ढिलाई का पाप नहीं करते, सिर्फ़ "आपसी सम्मान" के पाखंडी सांस्कृतिक चलन के साथ चलने के लिए। परमेश्वर के लोगों के तौर पर (1 यूहन्ना 5:19), हमें संस्कृति और विचारधारा की आड़ में शैतान—इस अंधेरी दुनिया का शासक—द्वारा फुसफुसाए गए सभी धोखे वाले झूठों के ख़िलाफ़ परमेश्वर के वचन की तलवार से अपनी आत्माओं और परिवारों की मज़बूती से रक्षा करनी चाहिए। हमें मसीह-विरोधी (Antichrist) जैसी हर उस उकसावे का विरोध करना चाहिए जो यह दावा करके सुसमाचार की सच्चाई को हिलाने और भ्रष्ट करने की कोशिश करता है कि "यीशु मसीह नहीं हैं," "यीशु परमेश्वर के पुत्र नहीं हैं," या "नासरत का यीशु स्वयं परमेश्वर नहीं हो सकता।"

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, आइए हम उस अपरिपक्वता को हिम्मत से दूर करें जिसके कारण हमें अपने उद्धार पर शक हुआ—एक ऐसा शक जो अलग-अलग धर्मों के मेल-जोल (syncretism) के मौजूदा चलन और शैतान द्वारा फैलाई गई झूठी बातों के धुंधलके से पैदा हुआ था। हम स्वर्ग के अपने लोग हैं, जो सच्चे परमेश्वर और उनके पुत्र यीशु मसीह में पूरी तरह से छिपे और जुड़े हुए हैं। हमारे भीतर जीवित शक्तिशाली और सच्चाई बताने वाली समझ से सशक्त होकर, आइए हम तुरंत उस अंधेरे वाले जीवन को क्रूस के चरणों में त्याग दें—जहाँ हम कभी दुनिया की तीन तरह की लालसाओं (शरीर की लालसा, आँखों की लालसा, और जीवन का घमंड) में ऐसे डूबे रहते थे जैसे मूर्तियों की पूजा कर रहे हों (1 यूहन्ना 2:15–17)। आइए हम वहीं रोशनी में चलें जहाँ हम रहते हैं और अपने साथी विश्वासियों से पूरे दिल और जान से, कामों और सच्चाई, दोनों के ज़रिए सच्चा प्यार करें (3:18)। इसलिए, मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हम ऐसे पवित्र सिपाही बनें जो—प्रार्थना की शक्ति से—शैतान की उन सभी फूट डालने वाली चालों को पूरी तरह से तोड़ दें जिनका इस्तेमाल वह कलीसिया को बर्बाद करने के लिए करता है; जो पूरी दुनिया को हिम्मत के साथ साबित करें कि हम स्वर्ग के नागरिक हैं और खुद को मूर्तियों से दूर रखकर पवित्र बनाए रखें; और जो हमेशा के जीवन की आशीष का पूरा आनंद लें। (3) तीसरा, मसीह के बारे में उस घोषणा का शिखर, जो यूहन्ना की पहली पत्री के शानदार अंत को चिह्नित करता है, यह पक्का यकीन है कि नासरत का यीशु मसीह—जिसका यहूदी धार्मिक नेताओं ने ईशनिंदा करने वाले के तौर पर मज़ाक उड़ाया और उसे बुरा-भला कहा—कोई और नहीं बल्कि "सच्चा परमेश्वर," पूरी दुनिया का बनाने वाला, और "खुद हमेशा का जीवन," यानी हमारे उद्धार की हमेशा की नींव है।

हमने देखा है कि परमेश्वर के पुत्र का हमारे अंदर आकर बसने (1 यूहन्ना 5:20a)—और हमें मूर्तियों के झूठ को तुरंत पहचानने की समझ देने—का मकसद हमें सच्चे परमेश्वर को गहराई से जानने और उनसे जुड़ने के काबिल बनाना है। प्रेरित यूहन्ना अब उद्धार से जुड़ी इस पूरी बहस के आखिर में एक बड़ा पूर्ण-विराम लगाता है, और अपनी पाँचवीं निश्चितता का नतीजा बताता है—जो हमारे मसीही विश्वास का एक अटूट स्तंभ है। 1 यूहन्ना 5:20 के दूसरे हिस्से में दी गई ज़बरदस्त घोषणा को ध्यान से देखें: "...वही सच्चा परमेश्वर और हमेशा का जीवन है" (रिवाइज़्ड न्यू कोरियन स्टैंडर्ड वर्शन)। "...यीशु मसीह सच्चा परमेश्वर और हमेशा का जीवन है" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। जब प्रेरित यूहन्ना ने अपनी पत्री में यह शानदार घोषणा की, तो उस ऐतिहासिक घटना की साफ़ और दिल दहला देने वाली बातें—जहाँ उद्धारकर्ता यीशु ने क्रूस पर पानी और खून बहाते हुए भयानक मौत सही—ज़रूर उसके दिमाग में तेज़ी से कौंधी होंगी। यूहन्ना किसी भी और व्यक्ति से बेहतर यह समझता था कि यहूदी धार्मिक नेताओं और भीड़ ने इतनी दीवानगी के साथ क्यों चिल्लाया था, "इसे क्रूस पर चढ़ाओ!": अपने अंधे और नियम-कानूनों पर बहुत ज़्यादा ज़ोर देने वाले नज़रिए से, उन्होंने यीशु को ईशनिंदा के घिनौने अपराध का मुख्य दोषी ठहराया था (यूहन्ना 19:6)। लूका 5:21 में उनके मन में छिपी निंदा की तीखी भावना का पता चलता है: “तब शास्त्री और फरीसी यह सोच-विचार करने लगे कि ‘यह कौन है जो परमेश्वर की निंदा करता है? परमेश्वर को छोड़कर पापों को कौन क्षमा कर सकता है?’” (लूका 5:21)। शास्त्रियों और फरीसियों के इतने गुस्से और बड़बड़ाहट की असली वजह क्या थी? वजह यह थी कि जब यीशु ने एक लकवाग्रस्त व्यक्ति की भयानक पीड़ा देखी—और उन लोगों के सच्चे जज़्बे को देखा जिन्होंने छत की टाइलें हटाकर उस व्यक्ति को उसकी चटाई समेत भीड़ के बीच नीचे उतारा था—तो उन्होंने पापों को क्षमा करने का सर्वोच्च अधिकार जताते हुए कहा, “हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा किए गए” (पद 18–20)। यहूदी मान्यताओं के कारण, उनकी सोच यह थी कि स्वर्ग के सर्वशक्तिमान परमेश्वर के अलावा किसी और के पास पापों को क्षमा करने का अधिकार नहीं है; इसलिए, जब उनके सामने खड़े युवा यीशु ने पापों की क्षमा की घोषणा करने की हिम्मत की, तो उन्होंने इसे एक बहुत बड़ा अपराध—परमेश्वर के विरुद्ध सीधा अपमान—माना। संक्षेप में, उनके घटिया नज़रिए से, नासरत के यीशु के लिए—जो इंसानी रूप में आए थे—परमेश्वर को “मेरा पिता” (मत्ती 11:27) कहने और खुद को जीवित “परमेश्वर का पुत्र” (27:43) बताने की

हिम्मत करना, ईश्वरीय अधिकार को हड़पने जैसा घिनौना अपराध था; यह मानते हुए कि वह व्यवस्था के श्राप और क्रूस पर मृत्यु के लायक हैं, वे भयंकर गुस्से में चिल्लाने लगे।

इसके अलावा, प्रेरित यूहन्ना ने उन आध्यात्मिक "झूठों" की असलियत को साफ तौर पर पहचाना जो उनकी सेवकाई के दौरान सुसमाचार के परम सत्य को कमज़ोर करने की कोशिश कर रहे थे। वे मसीह-विरोधी लोगों का एक समूह था, जिन्होंने न केवल चालाकी से इस बात से इनकार किया कि यीशु ही मसीह—यानी मानवता को बचाने के लिए आए मसीहा—हैं, बल्कि परमेश्वर पिता और पुत्र के बीच के ईश्वरीय मिलन को भी नकारा (1 यूहन्ना 2:22)। साथ ही, कलीसिया अविश्वास के एक ऐसे जिद्दी गुट को देख रही थी—जो मुँह से यह मानने को तैयार नहीं थे कि यीशु पूरी तरह से परमेश्वर हैं—और जो कलीसियाई समुदाय की नींव को ही हिला रहे थे (4:15)। इस तरह, जब जॉन ने 1 जॉन अध्याय 5 के मुख्य निष्कर्ष पर बात की, तो उन्होंने धार्मिकता के आधार को फिर से पक्का किया—शुरुआत में ही यह कहा कि "जो कोई विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से जन्मा है" (5:1)—और जीत का झंडा बुलंद करते हुए गवाही दी, "दुनिया पर कौन जीत हासिल करता है, सिवाय उसके जो विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है?" (वचन 5)। अगर एक अकेले, कमज़ोर प्रेरित की निजी गवाही—जिसे उसने अपनी जान जोखिम में डालकर दिया—कानूनी तौर पर मायने रखती है, तो हमें खुद परमेश्वर की कहीं ज़्यादा बड़ी और एकदम सही गवाही को पूरी तरह मानकर स्वीकार क्यों नहीं करना चाहिए? क्योंकि परमेश्वर ने ब्रह्मांड, समय और स्थान के केंद्र पर—पानी, लहू और आत्मा के ज़रिए—अपनी मुहर लगाई है और घोषणा की है, "मेरा पुत्र यीशु ही एकमात्र उद्धारकर्ता है और परमेश्वर है" (वचन 9)।

प्रेरित यूहन्ना साफ़ तौर पर कहते हैं कि प्रभु के सभी लोग—जो परमेश्वर पिता की इस बहुत बड़ी और दिल को छू लेने वाली गवाही को "आमीन" कहकर स्वीकार करते हैं—उन्हें एक कभी न मिटने वाला, हमेशा रहने वाला स्वर्गीय जीवन मिलता है जिसे दुनिया छीनने की हिम्मत नहीं कर सकती (पद 11–12)। फिर वे आज के हिस्से, 1 यूहन्ना 5:20 के शानदार निष्कर्ष की ओर बढ़ते हैं, और "और हम जानते हैं..." शब्दों के साथ हमारी आत्मा की गहराइयों में पक्की जीत का निशान बनाते हैं। जैसा कि *KJV बाइबल कमेंट्री* बहुत अच्छे

से बताती है, इस "जानने" का रहस्य—जिसे यूहन्ना पूरे दिल से बताते हैं—कोई ऐसी बात नहीं है जिस पर अलग-अलग अंदाज़े लगाए जा सकें या जो सिर्फ़ दिमाग में जमा धार्मिक जानकारी हो। बल्कि, इसका मतलब है आत्मा की गहराइयों में पूरी पक्की यकीन के साथ मानना—बिना ज़रा भी डगमगाए—कि यीशु मसीह, जिन्होंने मुझे पाप से बचाया, सच्चे परमेश्वर हैं। साथ ही, इसका मतलब है दुनिया की चालाक मिलावट और शैतान के आरोपों के बीच यह साफ़-साफ़ समझना कि मैं असल में कहाँ का हूँ, और—अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में—उस सुसमाचार की पक्की सच्चाई में लगातार और खुशी-खुशी आनंद लेना जिसे मैं जानता हूँ।

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, पास्टर जॉन मैकआर्थर द्वारा बताई गई पाँच तरह की पक्की बातों की बुनियाद—जो 1 यूहन्ना की पूरी पत्री का मुख्य हिस्सा है—मसीह के बारे में इस महान सच्चाई पर टिकी है। जहाँ दुनिया के शासकों और फरीसियों ने यीशु के परमेश्वर होने से इनकार किया और उन्हें ईशनिंदा करने वाला बताकर उन पर निंदा के पत्थर बरसाए, वहीं हम—पवित्र आत्मा से मिली महान समझ और ज्ञान के साथ—महान प्रेरित यूहन्ना के साथ हिम्मत से मानते हैं। यीशु मसीह, जिन्होंने मुझे अपने लहू से खरीदा है, सच्चे परमेश्वर हैं जो हमेशा से खुद-ब-खुद मौजूद रहे हैं, और वे हमारे अनंत जीवन की जीवन-डोर हैं—एक ऐसा बंधन जिसे कभी तोड़ा नहीं जा सकता! आइए हम उस घिनौने धार्मिक पाखंड के लिए पूरी तरह से पछतावा करें, जिसके कारण हम पिछली मुक्ति के भरोसे आराम से बैठकर हिम्मत के साथ पाप करते रहे और परमेश्वर के वचन की आज्ञा नहीं मानी। यीशु मसीह—सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन—सचमुच अभी मेरे अंदर जीवित हैं (वे यहाँ हैं)। अपनी पहचान और जुड़ाव के इस पक्के विश्वास की तेज़ तलवार को ऊँचा रखते हुए, हमें शैतान को झूठे उपदेशों और मूर्तियों के झूठ के ज़रिए अपनी आत्मा का ज़रा सा भी हिस्सा चुराने नहीं देना चाहिए। हमारे अंदर बसने वाले शक्तिशाली वचन से ताकत पाकर और यीशु की मिसाल पर चलकर, आइए हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी और घरों में उस दोहरे हुक्म को खुशी-खुशी मानें—परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से प्यार करना; आइए हम अपने साथ के विश्वासियों से पूरे दिल से, अपनी पूरी ज़िंदगी लगाकर, कामों और सच्चाई दोनों से प्यार करें। इस तरह, आप सभी विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के पवित्र सिपाही बनें—प्रार्थना के ज़रिए शैतान की फूट डालने वाली हर साज़िश को तोड़ें, धरती पर ही अनंत जीवन की भरपूर आशीषों और सुनी गई प्रार्थनाओं की ज़बरदस्त शक्ति का पूरा आनंद लें, और आखिर में शानदार

जीत हासिल करें। मैं राजाओं के राजा और प्रभु यीशु मसीह के नाम में दिल से यह प्रार्थना करता हूँ, जिन्होंने दुनिया पर जीत हासिल की और हमें अनंत जीवन दिया है। आमीन।

प्रेरित यूहन्ना ने अपनी पहली पत्री में जो चरवाहे जैसा जोश दिखाया है, उसका मूल भाव बहुत साफ़ और अलग है। यूहन्ना नहीं चाहते थे कि उनके प्यारे साथी विश्वासी नासमझी की हालत में रहें, जहाँ वे बस इस बात को मान लें कि नासरत का यीशु ही वह मसीह है जिसने उनके पापों को माफ़ किया (1 यूहन्ना 5:1) और वह जीवित परमेश्वर का बेटा है (वचन 5)। एक जलते हुए दिल के साथ, उस बुज़ुर्ग प्रेरित की इच्छा थी कि संत—बिना ज़रा भी डगमगाए—*पक्के तौर पर जानें* कि बेटा खुद ही अपने आप में मौजूद, सर्वशक्तिमान "सच्चा परमेश्वर" है, और वे हर पल अपनी ज़िंदगी में उस महान सच्चाई की अहमियत का *लगातार आनंद लें*। इसके अलावा, उनकी दिली इच्छा थी कि वे पूरी तरह से समझें कि यीशु मसीह—सच्चा परमेश्वर, अपने व्यक्तित्व और पापों का प्रायश्चित करने वाले काम में—एकमात्र "अनंत जीवन" है जो इंसानियत को बचाता है, जिससे वे शैतान के आरोपों को तोड़ सकें और अनंत जीवन को मज़बूती से थामे रख सकें। यहाँ, हम यूहन्ना की धर्म-शिक्षा में सबसे अद्भुत और हैरान करने वाली "धर्म-संबंधी *इनक्लूसियो*" (घेरे वाली) संरचना को देखते हैं, और आत्मा की गहरी शुद्धि का अनुभव करते हैं। यूहन्ना की बारीकी से की गई रचना को ध्यान से देखें। पत्र की शुरुआत में ही—1 यूहन्ना 1:1–2 में—प्रेरित यूहन्ना ने अपनी बात इस तरह शुरू की कि उन्होंने यीशु मसीह, जो सच्चे परमेश्वर हैं, को "जीवन का वचन जो शुरू से था" और "वही अनंत जीवन" बताया, जिसे उन्होंने अपनी आँखों से देखा और अपने हाथों से छुआ था। फिर भी, जब वे इस लंबे, बचाव-पक्ष वाले पत्र के आखिरी नतीजे पर पहुँचे—5:20 के दूसरे हिस्से में—तो उन्होंने पूरी दृढ़ता के साथ अपनी बात खत्म करते हुए एक बार फिर कहा: "यीशु मसीह ही सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन हैं।" यह पत्र अपनी शुरुआत और अंत दोनों ही जगहों पर "मसीह, जो अनंत जीवन हैं" के एक ही, मज़बूत आधार पर टिका हुआ है, जिससे इसकी बनावट में एक बेहतरीन संतुलन और समानता दिखाई देती है।

धर्म-विज्ञान से जुड़ी यह गहरी और प्रभावशाली समानता, यूहन्ना के सुसमाचार में भी बहुत सटीकता के साथ दिखाई देती है—जिसे उसी लेखक, प्रेरित यूहन्ना ने ईश्वरीय प्रेरणा से लिखा था। यूहन्ना का सुसमाचार यूहन्ना 1:1 में एक शानदार शुरुआत के साथ शुरू होता है, जिसमें पुत्र यीशु की स्वर्गीय दिव्यता की घोषणा की

जाती है—जो समय और स्थान के बनने से पहले, अनंत काल से मौजूद थे—इन शब्दों के साथ: "शुरू में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" फिर यह अपने आखिरी नतीजे और मुख्य बात तक पहुँचता है—यूहन्ना 20:31—जहाँ यह सुसमाचार लिखने का पक्का मकसद एक मज़बूत खूँटे की तरह साफ-साफ बताता है: "लेकिन ये बातें इसलिए लिखी गई हैं ताकि तुम विश्वास करो कि यीशु ही मसीह, परमेश्वर का पुत्र है, और विश्वास करने से तुम्हें उसके नाम से जीवन मिले।"

बाइबल की इन दो बेहतरीन रचनाओं—यूहन्ना का सुसमाचार और यूहन्ना का पहला पत्र—की बनावट को अगल-बगल रखें और अपनी आत्मा की आँखों से उनके तीनों पहलुओं को देखें। त्रिएक परमेश्वर (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा) के उस महान प्रकटीकरण का सफर, जिसने प्रेरित यूहन्ना को मंत्रमुग्ध कर दिया था, दोनों में एक जैसा है। सुसमाचार और पत्र, दोनों में ही यूहन्ना शानदार ढंग से यीशु मसीह—जो सच्चे परमेश्वर हैं—की महान दिव्यता की महिमा करते हुए शुरुआत करते हैं और एक ही, पक्के ईश्वरीय मकसद के साथ लिखते हैं: उन लोगों तक "अनंत स्वर्गीय जीवन" पहुँचाना और उसे पक्का करना जो पुत्र के नाम पर भरोसा और विश्वास करते हैं। अगर यूहन्ना का सुसमाचार (Gospel of John) एक ऐसी किताब थी जिसका मकसद उन लोगों को—जिनमें आध्यात्मिक जीवन नहीं है—यीशु पर विश्वास करने और अनंत जीवन पाने के लिए प्रेरित करना था, तो '1 यूहन्ना' (1 John) शिष्यत्व और भरोसे की एक शानदार किताब है। यह उन लोगों के लिए है जिनके दिलों में पहले से ही परमेश्वर का पुत्र वास करता है, जो हमें उद्धार का अटूट भरोसा और अनंत जीवन की शक्ति का हमेशा आनंद लेने में सक्षम बनाता है—एक ऐसी चीज़ जिसे शैतान कभी भी हिला नहीं सकता (1 यूहन्ना 5:13)।

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, सुसमाचार के उस शानदार निष्कर्ष को देखें जिसे यूहन्ना की धर्म-शिक्षा हमारे दिलों पर अंकित करती है। हमारा विश्वास किसी भी तरह से अस्थिर नैतिकता या क्षणभंगुर भावनात्मक भावनाओं का मामला नहीं है। यीशु मसीह—वह सच्चा परमेश्वर जो शुरू से अस्तित्व में था और स्वयं अनंत जीवन है—अभी हमारी आत्माओं के भीतर जीवित है। आइए हम उस घृणित धार्मिक पाखंड के लिए पूरी तरह से पश्चाताप करें जिसने हमें कभी उद्धार के झूठे भरोसे में रहते हुए निडर होकर पाप करने

और परमेश्वर के वचन की अवज्ञा करने के लिए प्रेरित किया था। क्योंकि सच्चा परमेश्वर हमारा अपना हो गया है और हम उसकी गोद में एक हो गए हैं, इसलिए हमें शैतान को दुनिया में प्रचलित मिलावटी विचारों या नकली सुसमाचार की "फर्जी खबरों" के माध्यम से हमारी आत्मा का एक मिलीमीटर भी चुराने नहीं देना चाहिए। हमारे भीतर जीवित और सक्रिय शक्तिशाली वचन से सशक्त होकर, आइए हम स्वेच्छा से उस दोहरे आदेश का पालन करें—परमेश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से प्रेम करना—अपने घरों में और अपने दैनिक जीवन के संघर्षों में, ठीक वैसे ही जैसे स्वयं यीशु ने करके दिखाया। आइए हम अपने साथ के विश्वासियों से पूरे दिल और पूरी जान से प्रेम करें—सिर्फ शब्दों और बातों से नहीं, बल्कि कार्यों और सच्चाई से। ऐसा करते हुए, आइए हम प्रार्थना के माध्यम से शैतान की हर फूट डालने वाली चाल को पूरी तरह से नष्ट कर दें, और मसीह-विरोधी मूर्तियों के झूठ से बचते हुए खुद को पवित्र रखें (1 यूहन्ना 5:21)। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से पूरी गंभीरता से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र सैनिक—आज की बंजर ज़मीन के बीच भी—स्वर्ग के नागरिक के रूप में भरपूर, अनंत आशीषों और प्रार्थना का उत्तर मिलने की शक्तिशाली शक्ति का रोज़ाना पूरा आनंद लें, स्तुति करें, और अंततः राजाओं के राजा, प्रभु यीशु मसीह के दूसरी बार आने के शानदार दिन पर अंतिम विजय प्राप्त करें। आमीन।

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, जब हम 1 यूहन्ना (1 John) के शानदार समापन की ओर बढ़ रहे हैं, तो पवित्र आत्मा द्वारा हमारी आत्माओं पर लगाई गई अंतिम मुहर बिल्कुल स्पष्ट है। हमें पूरे दिल से—पूरी निश्चितता के साथ—यह जानना चाहिए कि यीशु मसीह, जिन्होंने हमें पाप से बचाया, स्वयं-अस्तित्व वाले, सर्वशक्तिमान और "सच्चे परमेश्वर" हैं; वे हमारे उद्धार की शाश्वत आधारशिला और स्वयं "अनंत जीवन" हैं। हमें ऐसे फरीसियों (Pharisees) जैसा नहीं बनना चाहिए जो मसीह के बारे में इस महान सिद्धांत को केवल सूखी, बौद्धिक जानकारी तक ही सीमित रखते हैं। हमारे भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा की पूरी शक्ति से प्रेरित होकर, हमें अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में इस प्रभावशाली सुसमाचार की सच्चाई—कि यीशु मसीह सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन हैं—में खुशी-खुशी और लगातार आनंद लेना चाहिए। सांसारिक मिलावटी सोच और झूठे सुसमाचारों के धुंधलके को चीरते हुए इस शानदार सच्चाई की समृद्धि का आनंद लेने और उसमें विजयी होने के लिए, हमें—सबसे बढ़कर—दिन-रात अपनी निजी प्रार्थनाओं में पूरी लगन से यह चाहना चाहिए कि यीशु मसीह (परमेश्वर के पुत्र) हमारी बंद आँखें खोलें और हम पर स्वर्गीय आध्यात्मिक समझ और ज्ञान की वर्षा करें। आइए हम उस आध्यात्मिक अंधेपन की स्थिति के लिए पूरी तरह से पश्चाताप करें जिसमें

हम अपनी उथली तर्कशक्ति या इंसानी समझ पर निर्भर थे। यीशु मसीह द्वारा ऊपर से दी गई अलौकिक और ईश्वरीय समझ पर पूरी तरह निर्भर रहकर, हमें—कृतज्ञता के आँसुओं के साथ—दिन-ब-दिन परमेश्वर पिता को—जो ज्योति और प्रेम हैं—अपने पूरे अस्तित्व के साथ सचमुच जानने के पवित्र ज्ञान में बढ़ना चाहिए। इस प्रकार, हमें उद्धार के इस अटूट भरोसे को पूरी तरह से समझना और महसूस करना चाहिए: कि हम इस दुनिया की भ्रष्ट इच्छाओं के अधीन नहीं हैं, बल्कि हम पूरी तरह से जुड़े हुए हैं—जीवन की डोर से बंधे हुए हैं—और यीशु मसीह की तेजस्वी गोद में सुरक्षित हैं, जो सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन हैं। अब, अपनी शानदार पहचान और जुड़ाव के इस भरोसे को सुसमाचार की तेज़ तलवार की तरह इस्तेमाल करते हुए, और यीशु मसीह पर एक मज़बूत चट्टान की तरह भरोसा रखने वाले सच्चे, जीवित विश्वास से प्रेरित होकर, आइए हम खुद को परमेश्वर के राज्य के उस महान दोहरे हुक्म के सामने समर्पित करें—एक ऐसा नियम जो हमारे प्रभु के लहू से लिखा गया है: "तू अपने परमेश्वर प्रभु से अपने सारे मन, अपनी सारी आत्मा और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रख... तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख" (मत्ती 22:37, 39)। आइए हम पवित्र प्रभु परमेश्वर की सबसे बढ़कर आराधना और स्तुति करें—अपने पूरे मन, आत्मा और बुद्धि से। फिर, उस ऊँचे प्रेम से शक्ति पाकर, आइए हम अपने पड़ोसियों और कमज़ोर भाई-बहनों से—काम और सच्चाई से—वैसे ही प्रेम करें जैसे हम अपने शरीर से करते हैं; और इसकी शुरुआत वहीं से करें जहाँ हम हैं: अपने घरों और काम की जगहों पर, जो हमारी आत्मा के सबसे करीब की वेदी हैं। आइए हम दिखावटी धार्मिकता के खोल को—सिर्फ़ शब्दों और खोखली बातों के उस ऊपरी दिखावे को—साहस के साथ हटा दें। इन आखिरी दिनों की आध्यात्मिक लड़ाई के बीच मसीह-विरोधी मूर्तियों के झूठ से खुद को बचाते हुए और राजा के महान हुक्म को खुशी-खुशी मानते हुए पवित्रता के रास्ते पर चलते हुए, हम—शैतान के राज वाली इस बंजर और बुरी दुनिया में रहते हुए भी—अभी और यहीं, एक शानदार स्वर्गीय जीवन का अनुभव और आनंद लेंगे, जहाँ परमेश्वर का पवित्र राज और शांति महसूस होती है; एक ऐसा अनुभव जो भले ही अधूरा हो, फिर भी बहुत शक्तिशाली और साफ़ होता है। मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से—जिन्होंने दुनिया पर जीत हासिल की और हमें अनंत जीवन दिया—दिल से प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के सभी पवित्र और नेक सैनिक उस पुत्र के साथ जीएँ, जो सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन है और उनके दिलों में पूरी तरह बसा हुआ है; कि उन्हें प्रभु द्वारा तैयार किया गया अनंत आनंद का शानदार मुकुट ज़रूर मिले; और वे आखिरकार राजाओं के राजा, प्रभु यीशु मसीह के शानदार दूसरे आगमन के दिन अंतिम जीत हासिल करें। आमीन।

निष्कर्ष

हमने 1 यूहन्ना की विशाल आध्यात्मिक गहराई को समझा है—एक ऐसा खजाना जिसे प्रेरित यूहन्ना ने आंसुओं और प्रार्थना के ज़रिए खोजा था। इस पत्र को समाप्त करते हुए, आइए हम "यूहन्ना के धर्मशास्त्र के महान सार" के सामने श्रद्धापूर्वक घुटने टेकें—एक ऐसा सत्य जो हमारी आत्मा के भीतरी हिस्से में हमेशा के लिए 'नियम के संदूक' (Ark of the Covenant) की तरह अंकित हो जाए, जो कभी धुंधला न पड़े।

(1) क्रूस पर त्रिएक (Trinity) के असीम प्रेम की पुष्टि

धर्मग्रंथ पूरी दुनिया और पूरे इतिहास में बिना किसी समझौते के यह घोषणा करता है: "परमेश्वर, अपने स्वभाव से ही, पूर्ण प्रेम है" (1 यूहन्ना 4:8, 16)। परमेश्वर पिता ने बिना किसी संकोच के अपने सबसे कीमती और एकलौते पुत्र, यीशु मसीह को इस शापित दुनिया के एकमात्र उद्धारकर्ता और प्रायश्चित के बलिदान के रूप में दिया—यह सब हमें खोजने और जीवन देने के लिए (हम, जो परमेश्वर के साथ अपने पूरी तरह से टूटे हुए रिश्ते के कारण भयानक मौत के हकदार थे) और हमारे घिनौने पापों को शुद्ध करने और उनका प्रायश्चित करने के लिए किया गया (पद 9–10, 14)। यहाँ, सुसमाचार के सबसे महान और रहस्यमय विरोधाभास का सामना करते हुए हमें दिल को छू लेने वाली रोमांचक अनुभूति होनी चाहिए। यीशु मसीह—जीवन का वचन और सच्चे परमेश्वर, जो समय और स्थान के बनने से पहले, अनंत काल से अस्तित्व में थे (1:1–3; 5:20)—कैसे इस धरती पर एक दीन प्राणी के शरीर का रूप धारण करके आए (4:2) और स्वेच्छा से क्रूस पर मरने के लिए अपना महान जीवन दे दिया? (2:2; 3:16)। यीशु मसीह—पवित्र और धर्मी, बिना किसी पाप के दाग के (2:1; 3:5)—हमारी सज़ा को मिटाने के लिए गोलगोथा की वेदी पर चढ़े और स्वयं एक अनंत बलिदान, सच्चा फसह का मेमना (Passover Lamb) बन गए। अपने घायल हृदय से बिना किसी रोक-टोक के पानी और लहू बहाकर, प्रभु ने पवित्र परमेश्वर—जो कभी पाप को माफ नहीं कर सकते थे—के न्यायपूर्ण क्रोध को

अपने शरीर पर सहा और ईश्वरीय न्याय की मांगों को पूरी तरह से पूरा किया, और इस प्रकार हमारे सभी पापों का प्रायश्चित किया (2:2; 4:10)। यह एक असीम रूप से विशाल और महान प्रेम की वास्तविकता है—जो किसी भी मानवीय श्रेणी या कहानी से परे है—जिसे पिता और पुत्र ने इतिहास के बीचों-बीच उंडेला है (3:1)। (2) पवित्र आत्मा की मुहर और अनंत जीवन की शक्ति का हमारे भीतर वास

प्रायश्चित की इस अद्‌भुत कृपा से प्रेरित होकर, प्रभु ने हमें आध्यात्मिक रूप से अनाथ नहीं छोड़ा; बल्कि, उन्होंने हमें पवित्र आत्मा का उपहार दिया—जो सलाहकार और परमेश्वर की सबसे अनमोल आत्मा है—ताकि वह हमारी आत्मा के भीतर वास करे (4:3, 13)। हम परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करने और अनंत जीवन से जुड़ने में इसलिए सक्षम हो पाए क्योंकि पवित्र आत्मा के सामर्थ्यपूर्ण कार्य के द्वारा हमारी आत्मा का सचमुच नया जन्म हुआ (5:1, 4)। क्योंकि पवित्र आत्मा ने हमारी बंद आँखों को खोल दिया, इसलिए हम पूरे भरोसे और बिना किसी शक के यह मानते और स्वीकार करते हैं कि नासरत का यीशु ही मसीह और हमारा राजा है (पद 1); जीवित परमेश्वर का पुत्र है (पद 5); और स्वयं अस्तित्व रखने वाला, सच्चा परमेश्वर और स्वयं अनंत जीवन है (1:1–2; 5:20)। जो कोई भी अपने होंठों और जीवन दोनों से इस शानदार सुसमाचार की सच्चाई को स्वीकार करता है (4:2–3, 15), उसकी पहचान में एक अद्‌भुत बदलाव आता है, जिससे उसके पूरे अस्तित्व की नागरिकता ही बदल जाती है। जैसा कि *कंटेम्पररी बाइबल* अनुवाद में बहुत सुंदर ढंग से बताया गया है, परमेश्वर की महिमा वाली संतान बनकर, अब हम एक रहस्यमय "आपसी मिलन" (एक-दूसरे में वास करने) की महिमा का आनंद लेते हैं—जहाँ हम परमेश्वर में रहते हैं, और पवित्र परमेश्वर वास्तव में हमारे भीतर वास करते हैं (4:13)। इसलिए, पवित्र आत्मा—सत्य की आत्मा जो हमारे भीतर एक मंदिर की तरह वास करती है (3:24)—हमें (जो परमेश्वर के हैं और सच्चे पिता को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं) आगे ले जाती है और पवित्रता के जीवन में सक्रिय रूप से मार्गदर्शन करती है (4:6)।

(a) सबसे पहले, पवित्र आत्मा हमें "प्रेम की गहरी संगति" में ले जाती है जहाँ हम त्रिएक परमेश्वर के साथ जीवन की सांस को वास्तविक समय में साझा करते हैं (1:3)।

(b) दूसरा, वह हमें दिखावे के वस्त्र उतार फेंकने और अपने दैनिक जीवन के हर पल में "ठोस कार्यों के द्वारा सुसमाचार की सच्चाई को जीने" के लिए प्रेरित करती है (पद 6)। (c) तीसरा, वह हमें क्रूस पर स्वार्थ भरी जलन और नाराज़गी जैसी ज़हरीली बुराइयों को खत्म करने और राजा के सबसे बड़े नियम—"एक-दूसरे से दिल से प्यार करने" के दोहरे आदेश (3:11, 23–24; 4:7; 5:1–2)—को खुशी-खुशी मानने के काबिल बनाता है।

स्वर्ग के नागरिक का प्यार, जो पवित्र आत्मा की अगुवाई में होता है, सिर्फ़ खोखली बातों और दिखावे तक सीमित नहीं होता। यह एक असरदार काम है जो सच्चे कामों और दिल की सच्चाई से दूसरे विश्वासियों को अपनाता है (3:18)। इसके अलावा, यीशु मसीह—जिन्होंने हमारे लिए अपनी जान दी—के पवित्र नक्शेकदम पर चलना अलौकिक प्यार की सबसे ऊँची मिसाल है; यह हमें अपने फ़ायदे और आराम को छोड़कर अपने भाइयों और बहनों के लिए खुशी-खुशी अपनी जान देने के लिए प्रेरित करता है (v. 16)। (3) पक्के भरोसे के पाँच हथियार जो दुनिया पर जीत दिलाते हैं

परमेश्वर की पवित्र आत्मा हमारे अंदर इस अनंत जीवन की सच्चाई को बसाती है और "मुक्ति के पक्के और शानदार भरोसे" की रक्षा करती है (1 यूहन्ना 5:13)। साथ ही, वह उस धोखे को तोड़ती है जो हमारी शारीरिक इच्छाओं की माँगों को सामने लाता है, और हमारी प्रार्थनाओं की दिशा को पूरी तरह से परमेश्वर की पसंद और इच्छा के अनुसार करती है; वह हमें "प्रार्थना का जवाब मिलने का पक्का भरोसा" देती है—पूरी जीत का यकीन जहाँ एक भी शब्द बेकार नहीं जाता (v. 14)। इस तरह, वह हमें ऐसे सिपाही बनने की ओर ले जाती है जो दुनियावी इच्छाओं—जो प्रभु के लौटने पर धुएँ की तरह पल भर में गायब हो जाएँगी—को हिम्मत से खत्म करते हैं और खुशी-खुशी सिर्फ़ परमेश्वर की पवित्र, अनंत इच्छा के अनुसार जीते हैं (2:17)। खास तौर पर, पवित्र आत्मा—जो सच्चाई की आत्मा है—हमें "आध्यात्मिक समझ के पक्के भरोसे" से लैस करती है, जिससे हम उन सभी झूठी, मसीह-विरोधी उकसावे वाली बातों और धोखेबाज़ आत्माओं को बारीकी से पहचान सकें जो "ज़माने की सोच" या "आपसी सम्मान" के बहाने सच्चाई को बिगाड़ने और उलझन में डालने की कोशिश करती हैं (2:18, 22, 26; 4:1, 6)। संस्कृति या विचारधारा की आड़ में शैतान द्वारा फुसफुसाए गए किसी भी झूठे सुसमाचार से हम विचलित नहीं होते, क्योंकि परमेश्वर के शक्तिशाली, जीवन देने वाले

वचन की तलवार—जो हमारे दिलों में बसती है—हमें अपने सर्वोच्च अधिकार से मज़बूती से थामे रखती है (2:14)। एक जीवित, जीवंत विश्वास की ढाल उठाकर, जो यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानता है, हम एक बड़ी जीत की घोषणा करते हैं; रात की प्रार्थना के अनुशासन के माध्यम से, हम दुनिया के उस क्षणभंगुर, तीन-गुना जाल—शरीर की लालसा, आँखों की लालसा, और जीवन का दिखावटी घमंड—को पूरी तरह से कुचल देते हैं (2:16–17; 5:4)। पक्का भरोसा रखें कि यह हमारी अपनी योग्यता के कारण नहीं, बल्कि इसलिए है कि यीशु मसीह—पुनरुत्थान के राजा—धधकती आग जैसी आँखों से कलीसिया की रखवाली करते हैं और अभेद्य सुरक्षा के साथ उसकी रक्षा करते हैं, कि दुष्ट शैतान और हवा की ताकतें हमारी आत्माओं के उद्धार पर उंगली उठाने की भी हिम्मत नहीं कर पातीं (5:18)।

(4) भविष्य की आशा और न्याय के दिन के लिए साहस के साथ

आइए हम भविष्य की उस प्रेरक आशा—महिमा पाने की आशा—को स्पष्ट रूप से देखें, जिसकी घोषणा बाइबल का *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन* हमारे दिलों में स्वर्गीय घंटियों की शानदार गूँज की तरह करता है: "हम अभी नहीं जानते कि हम क्या बनेंगे, लेकिन जब यीशु प्रकट होंगे, तो हम उनके जैसे होंगे और उन्हें वैसा ही देखेंगे जैसे वे वास्तव में हैं। जो कोई भी मसीह में यह आशा रखता है, उसे खुद को पवित्र रखना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यीशु पवित्र हैं" (1 यूहन्ना 3:2–3, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)। हम वे लोग हैं जो पहले ही आज़ाद हो चुके हैं, क्योंकि अतीत में पाप के प्रति पूरी तरह मर चुके हैं; साथ ही, हम शानदार विजेता हैं जिन्हें प्रभु की वापसी की सुबह पलक झपकते ही आध्यात्मिक शरीरों में बदल दिया जाएगा (फिलिप्पियों 3:21; 1 कुरिन्थियों 15:51)। अतीत और भविष्य की इस महान नींव पर खड़े होकर, आपको और मुझे—वर्तमान की वास्तविकता में—हर दिन अपने "पुराने स्वभाव" की भ्रष्ट ज़िद को क्रूस पर दफ़नाना चाहिए और खुद को पवित्र रखकर—ठीक वैसे ही जैसे यीशु पवित्र हैं—पवित्रता की दौड़ पूरी करनी चाहिए। आइए हम केवल शब्दों और खोखली बातों के पाखंडी मुखौटों को हटा दें, और इसके बजाय अपने कामों और सच्चाई के माध्यम से अपने भाइयों से सच्चे दिल से प्रेम करें। इस तरह, जब हमारे अंदर खुद को दोषी मानने की कठोर भावना और शैतान के आरोप पूरी तरह खत्म हो जाएंगे, और हमारे दिल और ज़मीर बिना किसी दोष

के पवित्र हो जाएंगे, तो हम परमेश्वर पिता—जो पूरी दुनिया का न्याय करने वाले हैं—के सामने बिना किसी हिचकिचाहट के, पूरी तरह से "स्वर्गीय और पवित्र हिम्मत" के साथ खड़े हो पाएंगे (1 यूहन्ना 3:21)।

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के प्यारे सदस्यों, जब हम प्रार्थना में घुटने टेकेंगे और प्रभु द्वारा अपने लहू से लिखे गए दोहरे आदेश को बनाए रखने के लिए वचन की तलवार उठाएंगे, तो परमेश्वर का *अगापे* (निस्वार्थ) प्रेम आखिरकार हमारे दिलों में पूरी तरह से महसूस होगा। फिर, इतिहास के अंत में उस खास सुबह—जब हम दुनिया के न्याय के सिंहासन के सामने खड़े होंगे और अविश्वासी दुनिया डर के मारे चीखते हुए बिखर जाएगी—तब हम पूरे भरोसे के साथ उठेंगे; हम यीशु की उस शांति से ताकत पाएंगे जिन्होंने दुनिया पर जीत हासिल की थी, और हमें पूर्ण उद्धार की हिम्मत मिलेगी (1 यूहन्ना 4:17)। आइए हम हर तरह की निराशा और आत्म-संतुष्टि को छोड़ दें। आइए हम यीशु मसीह—जो सच्चे परमेश्वर और अनंत जीवन हैं—से जीवन की अटूट डोर से मजबूती से जुड़े रहें। और आइए हम पूरी दुनिया को साबित करें कि हमारे पास सचमुच अनंत जीवन है; ऐसा हम दिन-ब-दिन अपने साथी विश्वासियों से पूरी ताकत से प्रेम करके करेंगे। और इस तरह, दूसरी बार आगमन की उस पवित्र सुबह—जब हमारे प्रभु यीशु मसीह, राजाओं के राजा, महिमा के साथ लौटेंगे—तो हम सभी, विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के पवित्र सैनिकों के रूप में, बिना किसी शर्म के प्रभु के सिंहासन के सामने खड़े हों, उनकी प्रशंसा और मुकुट पाएं, और हमेशा के लिए अनंत आशीष के गीत गाएं। मैं अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम में यह प्रार्थना करता हूं, जिन्होंने दुनिया पर जीत हासिल की और हमें अनंत जीवन दिया है। आमीन।